Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110464

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110464

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके मत का मतलब लोकतंत्र बचाना है: मत मत बचाइए लोकतंत्र बचाइए

मतदान: निर्वाचन का समय. आपके लिए निर्णय लेने का समय. सामयिक स्थिति के संबंध में अधिकाधिक जानने का समय और दिनमान इसमें आपकी सहायता करेगा. यह प्रति सप्ताह राजनैतिक स्थिति पर आपके सामने विश्लेषणात्मक सम्पादकीय लेख प्रस्तुत करता है. लोगों और दलों का वस्तुगत मूल्यांकन भी. मध्यावधि चुनावों के परिणाम क्या हो सकते हैं—इस पर संतुलित विचार-विमर्श.

यह सब आपको अपना मत निर्धारित करने में—अपना निर्णय अपने आप करने में—सहायक होगा. इसलिये प्रति सप्ताह दिनमान पढ़िए.

दिनमान अपनी दुनिया से सम्पर्क बढ़ाने के लिए.

'दिनमान ने अपनी, 'दस रुपये वार्षिक की बचत कीजिए' योजना की अवधि छः महीने के लिए और बढ़ा दी है. मात्र 26 रु० में वर्ष भर दिनमान प्राप्त कीजिए जबकि वैसे इसका वार्षिक चन्दा 36 रुपये है.

यहां से काटिए

प्रसार व्यवस्थापक
दिनमान
"टाइम्स हाउस"
7 बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग, नयी दिल्ली-1

मुझे आपका प्रस्ताव स्वीकार है. 26 रु० मनीआर्डर द्वारा भेजे जा रहे हैं. कृपया निम्नलिखित पते पर दिनमान भेजना शुरु कर दीजिए :

नाम .....

पता .....

..... ज़िला ..... राज्य .....

SR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

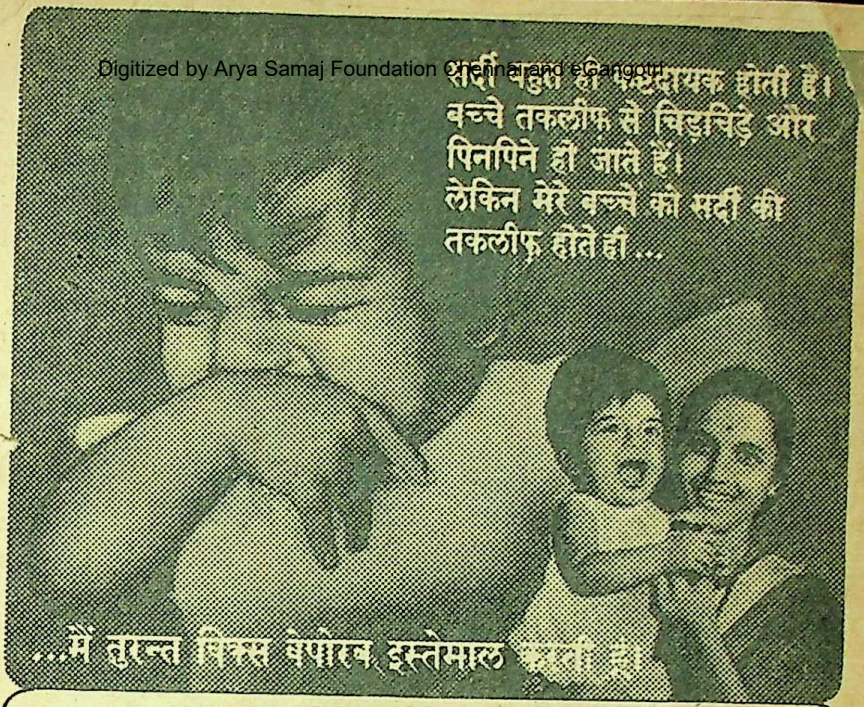

"समय पर सही इस्तेमाल-विक्स वेपोरब करे कमाल"

सर्दी के लक्षण देखते ही मैं विक्स वेपोरब बच्चे की नाक, गले, छाती और पीठ पर अच्छी तरह मल देती हूं। बच्चे को फौरन आराम मिलता है।

नाक खुल जाती है, श्वास लेने में आसानी होती है, चिड़चिड़ाना और पिनपिनाना बन्द कर बच्चा आराम से सो जाता है।

वेपोरब की यह अपनी विशेषता है कि सर्दी से आराम पहुंचाने के लिए यह एक ही साथ दो तरह से काम करता है।

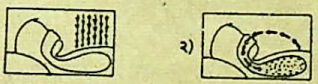

१) शरीर पर बाहर से २) अंदर श्वास द्वारा

१) शरीर पर बाहर से—विक्स वेपोरब सर्दी से जकड़े पुट्ठों को ढीला कर दर्द से आराम पहुंचाता है।

२) शरीर के अंदर श्वास द्वारा—शरीर पर मला हुआ विक्स वेपोरब शरीर की सामान्य गर्मी से औषधियुक्त भाप में बदल जाता है। यह औषधियुक्त भाप श्वास के साथ लगातार अन्दर पहुंचती रहती है जिस से नाक खुली रहती है, श्वास लेने में आसानी होती है, गले को आराम मिलता है और छाती में जमा बलगम साफ़ हो जाता है।

इस प्रकार आपको सर्दी से आराम मिलता है।—

विक्स वेपोरब

आवश्यक निर्देश

विक्स वेपोरब शरीर के सर्दी से प्रभावित भागों पर अच्छी तरह पूरी मात्रा में मलना चाहिये। विक्स वेपोरब की १९ ग्राम की शीशी बड़ों के शरीर पर ३ या ४ बार और बच्चों के शरीर पर ७ या ८ बार मलने के लिए ही पर्याप्त है।

विक्स वेपोरब नाक के ऊपर तथा आसपास और गले पर लगाइये। छाती तथा पीठ पर अच्छी तरह मलिये। जब तक सर्दी बिल्कुल साफ न हो जाय इसी प्रकार इलाज करते रहिये।

१२ ग्राम की नई बड़ी डिबिया

858

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके चेहरे को चाहिए बिनेला क्लेंज़िंग मिल्क

साबुन से चेहरा अच्छी तरह नहीं धुलता। दूसरे क्लेंज़र्स से भी चेहरे पर एक चिकनी पर्त रह जाती है, जिसे साफ़ करने के लिए साबुन इस्तेमाल करना पड़ता है।

इसलिए बिनेला क्लेंज़िंग मिल्क इस्तेमाल कीजिए! सारी खटपट दूर! यह इतना उम्दा क्लेंज़र है कि त्वचा के गहरे छिद्रों को भी साफ़ करता है। चिकनी त्वचा के लिए विशेष रूप से अच्छा, हलका व ग्रीज़ रहित बिनेला क्लेंज़िंग मिल्क 'मेकअप' व धूल को साफ़ करके आपकी त्वचा को कुदरती सौन्दर्य प्रदान करता है। बिनेला क्लेंज़िंग मिल्क से ही हमेशा चेहरा धोइए और ज्यादे खूबसूरत होइए!

बिनेला— पानी में घुलनेवाला एकमात्र प्राप्य क्लेंज़िंग मिल्क

Binella®
Cleansing Milk

ULKA-CBC-8 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की
सबसे ज्यादा बिकने वाली
पत्ती चाय

रेड लेबल

यानी बढ़िया चाय की ज्यादा प्यालियाँ

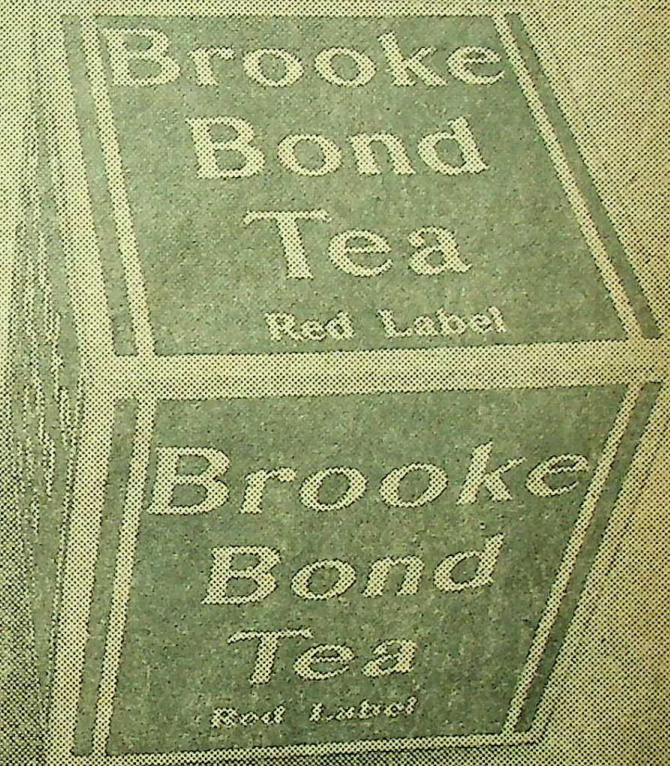

886092

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ीनिक्स

इन्हें पसन्द है

क्योंकि
मामूली लागत पर
यह एक
बेहतरीन
सौदा है

इन्हें अपनी नई फ़ीनिक्स साइकिल का सबकुछ पसन्द है।

इसका बेहद मज़बूत फ्रेम—जो हल्का पर सुदृढ़ ट्रू-वेल स्टील ट्यूब का बना है। यह ट्यूब इलेक्ट्रिक रेसिसटेन्स-वेल्डेड होता है।

चमक-दमक की इसकी निराली शोभा।

किसी साइकिल की दूकान पर चले जाइये। इस वर्ग की दूसरी साइकिलों से फ़ीनिक्स का मुकाबला कीजिये। आप खुद ही कह देंगे कि इतनी कम क़ीमत पर फ़ीनिक्स जैसी मजबूत और टिकाऊ साइकिल दूसरी नहीं है।

फ़ीनिक्स

—कम क़ीमत की साइकिलों में सबसे बढ़िया

विपणनकर्ता :
टी आई एण्ड एम सेल्स लि०
नई दिल्ली • कानपुर • लुधियाना

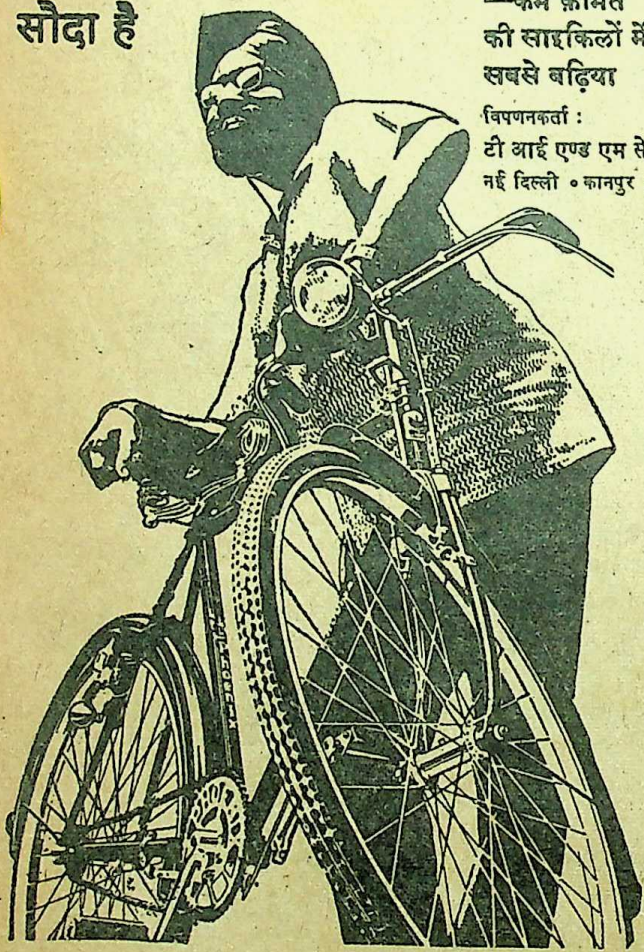

TI/5004A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर और शानदार, बनावट और कारीगरी में बेजोड़ जेम रेफ्रीजरेटर अपनी बढ़िया [illegible] के लिए बेमिसाल हैं।

विशेषताऐं :

★ इसमें मैगनेट का आसानी से खुलने और बंद हो जाने वाला आटोमेटिक दरवाजा है।

★ यह बिना आवाज किये चलता है।

★ इसमें बिजली की कम खपत होती है।

★ इसमें चीजे रखने के लिए ज़्यादा जगह है।

★ रेफ्रीजरेटर के साथ-साथ डीप फ्रीज़र भी है।

★ बर्फ और आइसक्रीम जल्दी बनाता है।

★ बिना जोड़ की चद्दर से बना यह रेफ्रीजरेटर धूल, हवा और नमी को अन्दर नहीं आने देता।

★ विशेष ढंग से पूर्णतया सील किया हुआ गारंटीयुक्त कम्प्रेसर।

२८६ लीटर और १७५ लीटर की क्षमता वाले दो माडलों में उपलब्ध है।

GEM

REFRIGERATOR
DEEP FREEZER
AIRCONDITIONER
DESERT COOLER
AIRCOOLER
WATER COOLER
AIR HEATER
VOLT-REGULATOR

विक्रेता

जनरल इक्विपमेंट मरचैंट्स लिमिटेड

प्रधान कार्यालय : २/६०, कनाट सर्कस, नई दिल्ली

शाखाएं : अहमदाबाद ★ बम्बई ★ बंगलौर ★ कलकत्ता ★ चंडीगढ़ ★ एर्नाकुलम ★ फ़रीदाबाद
हैदराबाद ★ जयपुर ★ लखनऊ ★ मद्रास ★ नई दिल्ली

CC-0. In Public Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

AIYARS-GEM 099 HN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10=700

गणित के हिसाब से यह असम्भव है। लेकिन बचत करने में यह मुमकिन है... न मानें तो आज़मा कर देखिये। 10 रुपये हर महीने बचाइये और पाँच वर्ष बाद 700 रु० प्राप्त कीजिये... जी हाँ यह आसान है... डाकघर रिकॉरिंग डिपौजिट यानी आवर्ती जमा इसीलिये शुरू की गई है। ब्याज की दर करीब $6\frac{1}{4}\%$ रखी गई है। माहवारी बचत करने की इतनी लाभदायक योजना पहले कभी नहीं थी... आप भी बचत कीजिये।

पूरी जानकारी के लिये किसी भी डाकघर में चले जाइये या राष्ट्रीय बचत के जिला संगठक से पूछताछ कीजिये।

राष्ट्रीय बचत संगठन

davp 70/39

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप को हर दिन कुछ अनूठा अनुपम अनुभव कराती है

टोब्रो वैनिशिंग क्रीम

एक श्रेष्ठ
फाउंडेशन और
तराबट
लानेवाली क्रीम —
आप के
मेक-अप को
घंटों स्थिर रखती है।

टोब्रो इंटरनेशनल ४, विल्सन रोड, बेलार्ड इस्टेट, बम्बई-१

शाखाएं : मिर्जापुर रोड, अहमदाबाद-१ ▪ ११३, गोल्फ लिंक एरिया, नयी दिल्ली-३ ▪ १, लिण्डसे स्ट्रीट, कलकत्ता-१६ ▪ १९३, माउंट रोड, मद्रास-२ ▪ ५, रेसिडेंसी रोड, बंगलोर-२५

heros'-TI-31 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमदर्द का नया
शक्तिदायक टॉनिक

लहमीना

स्त्रियों व पुरुषों
के लिये

लहमीना, चालीस शक्तिदायक द्रव्यों का एक महत्वपूर्ण मिश्रण है। इनमें से प्रत्येक द्रव्य इन्द्रियों, पुट्ठों व शारीरिक कोषों में एक नवीन शक्ति का संचार करता है। लहमीना, स्त्रियों व पुरुषों की दुर्बलता दूर करने व पुनः सामान्य रुप से शक्ति व नया जीवन प्रदान करने वाला सर्वोत्तम टॉनिक है। लहमीना, सन्तानोत्पत्ति के बाद की दुर्बलता, उकताहट, उदासीनता, अक्सर जी मिचलाना व शारीरिक अंगों में कंपन आदि जैसी सभी अवस्थाओं में उपयोगी है।

अपने थके-हारे शरीर में
फिर से नई उमंग ला कर
जीवन का आनन्द उठाइये।

हमदर्द

H-999-1DM

LOSE 5 POUNDS OVERNIGHT!

Reduce 30 lbs.....40 lbs.....50 lbs!

Almost 1 lb. a day without ever going hungry!

★ Hollywood's incredible No-effort, No Pill ONE-DAY reducing formula! Eat your fill! Go to sleep! Wake up....and you have lost 5 POUNDS OVER NIGHT! Amazing but true! *Eat, eat and eat diet.....6000 calories daily and burn upto 1 lb. body fat a day! *Delicious slimming shake formula.....helps you reduce fast! *AND MUCH MORE.....MUCH MORE!

★ Price Rs. 20/-. BUT SEND NO MONEY. Write today for FREE details. Use post card or anything! Why not act right away and send your name/address.....NOW.

GLAMOUR PLAN, N-131, Greater Kailash, New Delhi.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक, दो, तीन

लीजिए फ़ैरेक्स® पुस्तिका*

पैसे बिन!

हर नवजात शिशु की माँ के लिए अत्यंत आवश्यक!

*इसमें बताया गया है कि बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए उसका पहला (सम्पूर्ण) ठोस आहार है, **फ़ैरेक्स**– जिसमें बच्चे की कोमल पाचनशक्ति के अनुकूल संतुलित मात्रा में प्रोटीन है। विभाग एस्–१५, पोस्ट बॉक्स १६५५८, बम्बई-१८ डब्ल्यू बी के पते पर २५ पैसे के डाक-टिकिट के साथ यह कूपन आज ही डाक से भेज दीजिए। (इच्छित भाषा लिखें)

आपका नाम _____
(बड़े और साफ़ अक्षरों में)

पता _____
(बड़े और साफ़ अक्षरों में)

_____

बच्चे की उम्र _____ भाषा _____ S-15

CMGF-10-172 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के लिए

यह सुनिश्चित करने के लिए कि आम चुनाव में मतदान शान्तिपूर्ण, स्वतंत्र और निष्पक्ष हो सभी व्यवस्थाएं की जा रही हैं। उन लोगों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी, जो मतदाताओं को डराने अथवा जाली वोट डालने का प्रयत्न करेंगे।

अपने वोट के अधिकार का प्रयोग निडर और निष्पक्ष होकर कीजिए। आपका वोट गुप्त रहेगा।

हिंसा से मत डरिये
हिंसा का बहादुरी से सामना कीजिये।

अपना वोट डालने के लिए घूस अथवा प्रलोभन स्वीकार मत कीजिए।

आपका मतदान केन्द्र आपके घर के पास होगा। उम्मीदवार अथवा एजेंट की गाड़ी इस्तेमाल मत कीजिए।

याद रखिए! वयस्क नागरिक के रूप में वोट देना आपका पवित्र कर्तव्य है।

एस० पी० सेन-वर्मा
मुख्य चुनाव आयुक्त, भारत

davp 70/617

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

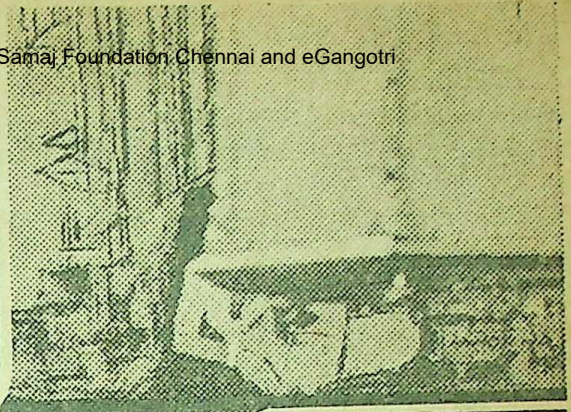

आपके
मुखमण्डल पर
रूप की जगमगाहट...
साटन ग्लो

इस तरल मेकअप के मनोहर रंग का
एक हलका-सा हाथ लगाइए।
आपके चेहरे पर सौंदर्य खिल उठेगा।
साटन ग्लो के तरल रंग दाग-धब्बों
को रूप में रंग देते हैं। और त्वचा
रेशम-सी कोमल लगती है।
हर रंगरूप को जगमगा देने वाले
७ जगमगाते शेड: ब्लश * टेण्डर ब्लश *
लाइट * क्रीम साटन * नेचुरल *
बेज़ साटन * गोल्ड टॅन

ASP/L-68

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरित प्रवाह

चुनाव आयोग ने इंदिरा कांग्रेस के लिए 'गाय व बछड़ा' चुनाव चिह्न निर्धारित किया है. पुरानी कांग्रेस को 'चर्खा कातती हुई स्त्री' चिह्न दिया गया है. ये नए चिह्न इसलिए दिए गए हैं क्योंकि पुराना कांग्रेसी चिह्न 'दो बैलों की जोड़ी' दोनों कांग्रेसों में झगड़े का कारण बन गया था, और उस पर लगभग छः महीनों से चुनाव आयोग के सामने मुकदमा चल रहा था. इस मुकदमे का फैसला सुनाते हुए चुनाव आयोग ने पुराना चिन्ह इंदिरा कांग्रेस को दे दिया. इस पर पुरानी कांग्रेस ने सर्वोच्च न्यायालय में याचिका पेश की और चुनाव आयोग के निर्णय को तब तक के लिए रोक दिया गया जब तक न्यायालय इस झगड़े पर कोई फैसला न सुना दे. परंतु मुकदमे एक रोज में तो न सुने जाते हैं न उन पर फैसला ही संभव है. इसलिए चालू चुनावों के लिए दोनों कांग्रेसों को नए चिह्न देने पड़े.

इंदिरा कांग्रेस ने 'गाय व बछड़ा' चिह्न ले कर बड़ी सूझबूझ की बात की है. पिछले चुनावों के समय जनसंघ ने गोवध विरोधी आंदोलन चला कर काफी वोट जमा किए थे. इस समय इंदिरा कांग्रेस को यदि किसी दल से खतरा है तो जनसंघ से; पुरानी कांग्रेस तो लगभग समाप्त ही सी है. क्योंकि जनसंघ ने पिछली बार गाय की पूंछ पकड़ कर चुनाव रूपी नदी पार की थी, इसलिए इंदिरा कांग्रेस जब 'गाय व बछड़े' के चिह्न का प्रचार करेगी तो जनसंघ को उस का विरोध करने में बड़ी कठिनाई होगी. जनसंघ आखिर 'गाय व बछड़े' को किस प्रकार हराने के लिए जनता से अपील कर सकता है? इस प्रकार इंदिराजी ने जनसंघ को उस की छुरी का शिकार बना दिया है.

✦

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री त्रिभुवननारायण सिंह ने जब मुख्य मंत्री पद संभाला था तो अपने पद की शपथ लेने के लिए वाराणसी के बड़े-बड़े ज्योतिषियों से पूछ कर समय निर्धारित किया. इन ज्योतिषियों के कहने से पूर्व निश्चित तिथि और समय कई बार बदला गया. ज्योतिषियों के अनुसार इस प्रकार शुभ मुहूर्त में पद ग्रहण करने से श्री त्रिभुवननारायण सिंह की गद्दी बहुत अधिक मजबूत हो जाने वाली थी.

श्री त्रिभुवननारायण सिंह उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य नहीं थे, इसलिए उन्होंने विधिवत सदस्य बनने के लिए मानीराम क्षेत्र से चुनाव लड़ा. इस चुनाव में वह इस बुरी तरह हार गए—जैसा कि शायद ही कोई मुख्य मंत्री हारा हो. अब या तो उन्हें किसी अन्य क्षेत्र से दोबारा चुनाव लड़ना पड़ेगा या अपनी गद्दी छोड़नी होगी. यदि वह ज्योतिषियों पर विश्वास न करते तो अभी चुनाव नहीं लड़ते—अभी पांच महीने तक वह बिना विधान सभा के सदस्य बने मुख्य मंत्री बने रह सकते थे.

जो व्यक्ति इस प्रकार ज्योतिषियों पर निर्भर रहता है, उस का ऐसा ही हाल होता है और आगे भी होता रहेगा. परंतु खेद है कि इस प्रकार की मिसालें सामने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विश्वास करते हैं और नुकसान उठाते हैं.

✦

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत सरकार ने सरकारीकृत बैंकों के माध्यम से नीचे की श्रेणियों के लोगों को अधिक कर्ज दिलाने के लिए एक नया निगम बनाया है. यह निगम सरकारी बैंकों के उस घाटे को पूरा करेगा जो उन के अंधाधुंध. रिण देने से होगा. सरकार का कहना है कि नीचे की श्रेणी के व्यक्तियों को कर्ज इसलिए आसानी से नहीं मिल पाता क्योंकि वे जमानत नहीं दे पाते और यदि सरकारी बैंक बिना जमानत कर्ज देते हैं तो काफी रकम डूब जाती है. इस नए निगम से बैंकों को यह सहूलियत मिलेगी कि यदि कोई कर्ज डूब जाएगा तो यह निगम उस घाटे की पूर्ति करेगा.

परंतु इस से लाभ क्या होगा, यह समझ में आना मुश्किल है. सरकारीकृत बैंक भी सरकार के हैं और यह निगम भी सरकार का है. घाटा चाहे सरकारीकृत बैंक बरदाश्त करे या नया निगम, बात तो एक ही है—घाटा अंत में सरकारी खजाने से ही पूरा किया जाएगा. नाक बजाए सीधी पकड़ने के सिर के पीछे से पकड़ने से क्या लाभ? शायद इस प्रकार सरकार जनता को इस भ्रम में रखना चाहती है कि सरकारीकृत बैंकों को कोई घाटा नहीं हो रहा है और नीचे की श्रेणियों के व्यक्तियों को मुक्त हस्त से पैसा भी मिल रहा है. सीधे शब्दों में इस घाटे की पूर्ति दूसरी मद में लिख कर की जाएगी—बजाए उसे बैंकों के चिट्ठों में 'डूबी रकम' लिखने के उसे 'जमानती निगम को कमीशन' के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा.

इस प्रकार के घाटे की पूर्ति के लिए सरकारी बैंकों ने पहले ही अपनी ब्याज की दर दो प्रति शत बढ़ा दी है और यह साबित कर दिया है कि बैंकों के सरकारीकरण से लाभ होने की बजाए नुकसान ही होता है. ब्याज की दर अधिक होने से व्यापार और उद्योग में खर्च बढ़ जाएगा, और वह खर्चा सामान की कीमत बढ़ा कर जनता पर डाल देगा. अब सरकारीकरण के बाद घाटे की जिम्मेदार जनता हो गई और फायदा उठाने वाले राजनीतिबाज और उन के पिट्ठू.

✦

पिछले दिनों देश में जितने नए बिजलीघर बने हैं, वे प्रायः जलविद्युत प्रणाली के हैं, यानी उन के टरबाइन पानी के वेग से चलते हैं. इस से पहले बिजलीघर कोयले से चलते थे. यह ठीक है कि जलविद्युत आसानी से पैदा होती है और लागत भी कम पड़ती है. परंतु इस के साथ कठिनाई भी है कि इस के बिजलीघर वर्षा पर निर्भर रहते हैं. यदि वर्षा ठीक समय पर काफी मात्रा में नहीं हुई तो बांध सूख जाते हैं और बिजलीघरों को पानी मिलना बंद हो जाता है.

कई वर्षों से उत्तर भारत में हिमाचल प्रदेश का भाखड़ा बांध और उत्तर प्रदेश का रिहंद बांध—दोनों ही पानी के अभाव से सूख से गए हैं और इस कारण इन पर बने बिजलीघरों का उत्पादन बहुत गिर गया है. फलस्वरूप पंजाब, राजस्थान, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में बिजली की खपत पर काफी रोकथाम लगाई गई है.

घरों में बिजली की खपत पर पाबंदी होने से तो केवल कुछ कठिनाई ही होती है परंतु उद्योगधंधों पर जब इस प्रकार की रोकथाम लगाई जाती है तो उत्पादन की बहुत हानि होती है. इस से न केवल बेकारी बढ़ती है बल्कि चीजों के दाम बढ़ते हैं और एक विषम चक्र बन जाता है जिसे तोड़ना काफी कठिन हो जाता है.

इसलिए अब यह आवश्यक हो गया है कि जलविद्युत बिजलीघरों के साथसाथ कोयले के बिजलीघरों को भी बनाया जाए ताकि इस प्रकार की कठिनाई न हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चारियों ने हड़ताल कर दी. इस के कारण सारा व्यापार, उद्योग और खेती ठप्प हो गई [illegible] हो गई, व्यापारियों की दुकानें खुलने से रह गईं और किसानों के पंप बंद हो गए जिस के कारण खेती सूखने लगी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज देश में यह हाल है कि हर सरकारी कर्मचारी हड़ताल करना अपना पहला और अंतिम कर्तव्य मानता है. उसे जनता की सुविधा का कोई ख्याल नहीं है. वह पहले अपना और अपने परिवार का भरणपोषण चाहता है चाहे जनता का कितना भी नुकसान हो. यह स्थिति तब है कि जब अन्य साधारण नौकरियों से सरकारी कर्मचारी को बहुत अधिक सुविधाएं और वेतन मिलता है.

इस प्रकार की सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल का जवाब पंजाब की जनता ने बहुत खूबी से दिया. गांवों में जहां बिजली बंद हो गई, वहां किसानों ने हड़ताली कर्मचारियों का सामाजिक बहिष्कार करना शुरु कर दिया और कहींकहीं तो इन लोगों का मुंह काला कर के गांव में घुमाया गया.

जब कोई व्यक्ति सरकारी नौकरी करता है तो उसे यह समझ लेना चाहिए कि वह केवल नौकरी ही नहीं कर रहा है बल्कि समाज की एक विशेष सेवा भी करता है. अगर वह नौकरी के बीच में गलत काम करता है तो वह एक निजी क्षेत्र के कर्मचारी से समाज को कहीं अधिक हानि पहुंचाता है. और जब वह नौकरी पानी, बिजली, रेल, डाकतार इत्यादि की हो तो एक प्रकार से उसे हड़ताल करने का अधिकार नहीं रहता. वह अपनी वेतन व सुविधाओं की बढ़ोतरी के लिए मांग अवश्य पेश कर सकता है पर इस के लिए वह जनता का जीवन दूभर कर दे, इस का उसे कोई अधिकार नहीं. यदि वह इस बात से सहमत नहीं है तो उसे चाहिए कि वह इस प्रकार की सेवा में अपना नाम न लिखवाए, और अन्यथा नौकरी तलाश कर ले.

की हड़तालों को सरकार तो रोकने में असमर्थ रहेगी क्योंकि उसे वोट का खयाल है [illegible] जनता को ही इस से निबटना होगा. पंजाब का यह उदाहरण सब सरकारी कर्मचारियों के लिए एक सबक होना चाहिए.

✦

भारत के स्थल सेना अध्यक्ष जनरल मानिक शा ने बताया कि आगामी तीनचार वर्षों में देश की सीमाओं पर छावनियों का जाल सा बिछा दिया जाएगा. यहां अफसर और सिपाही अपने परिवारों के साथ रह सकेंगे.

भारत सरकार का यह कदम बहुत सराहनीय है. न केवल इस से सिपाहियों और अफसरों का मनोबल बढ़ेगा बल्कि देश की सीमाओं की सुरक्षा में भी वृद्धि होगी. जहां छावनियां होंगी, उन के बचाव के साधन रखने पड़ेंगे और यदि सीमाओं पर छावनियों का जाल बिछ जाएगा तो स्वतः सुरक्षा के कदम भी बढ़ जाएंगे.

पिछली पाकिस्तान लड़ाई में यह हालत थी कि अगर जनरल चौधरी ने जम्मू के क्षेत्र में प्रत्याक्रमण न किया होता तो पाकिस्तान के टैंक एकदम दिल्ली ही आ कर रुकते. भारतीय सेना ने इस बीच कोई किलेबंदी नहीं की हुई थी. न ही इस बीच में छावनियां ही थीं और न फौजी केंद्र थे.

पाकिस्तान ने अभी हाल में नवयुवकों के लिए फौज में दो वर्ष काम करना अनिवार्य कर दिया है. इस से नवयुवकों में न केवल अनुशासन बढ़ेगा, उन के शरीर व मन भी सुदृढ़ होंगे. और यदि लड़ाई होगी तो पाकिस्तानी सेना को लाखों प्रशिक्षित सिपाही तैयार मिल जाएंगे.

भारत सरकार पर भी समयसमय पर इस प्रकार की सैनिक प्रशिक्षा अनिवार्य करने के लिए दबाव डाला जाता रहा है. परंतु सरकार इस पर कोई ध्यान ही नहीं देती. लगता है इस के लिए एक और युद्ध की आवश्यकता है. तभी हमारे नेतागण अपनी खुमारी से जागेंगे. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि शास्त्र परमात्मा की वाणी है, जो झूठी नहीं हो सकती. उस पर संदेह करने से परमात्मा नाराज हो जाएगा. जो उस में लिखा है, मानते जाना चाहिए. इसी में कल्याण है.

पर्यालोचन करने पर पता चलता है कि प्रत्येक परंपरा के शास्त्रों में नईनई बातें जुड़ती चली गईं. वैदिक साहित्य—मंत्र, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद—चार भागों में विभक्त हैं. लगभग 2,000 वर्ष तक उस में परिवर्तन होता गया. 'ऋग्वेद' का मानव प्रकृति का पुजारी था. उन दिनों अग्नि, वायु, पृथ्वी, आकाश, सूर्य, वर्षा, आंधी आदि प्राकृतिक तत्त्वों को ले कर देवीदेवताओं की कल्पना की गई. 'ऋग्वेद' उन्हीं की स्तुतियों का संग्रह है. 'यजुर्वेद' में प्रकृति पूजा का स्थान यज्ञ यानी सामूहिक अनुष्ठानों ने ले लिया. धीरेधीरे मनुष्य आत्मचिंतन की ओर बढ़ा और उसे अपने ही अंदर परमात्मा दिखाई देने लगा. आरण्यकों में साधना का यही रूप मिलता है. उपनिषदों में उस ने प्रत्येक अस्तित्व में परमात्मा के दर्शन किए.

महाभारत 1,000 वर्ष में पूरा हुआ. पहले उस में लगभग 9,000 श्लोक थे, फिर 20,000 हुए और फिर 1,00,000 से भी अधिक. पश्चिम, पूरब और दक्षिण में उस के जो संस्करण मिलते हैं उन का एकतिहाई एकदूसरे से भिन्न है. स्मृतियों की रचना भी सैकड़ों वर्षों तक चलती रही. प्रत्येक संप्रदाय ने अपने मत के समर्थन में एक स्मृति बना डाली. प्राचीन उपनिषदों की संख्या 11 थी. क्रमशः प्रत्येक धार्मिक संप्रदाय उपनिषद बनाने लगा और उन की संख्या 200 से भी अधिक हो गई. जन आगमों में महावीर के बाद लगभग 1,000 वर्ष तक परिवर्तन होते रहे. यही बात बौद्ध साहित्य की है. ऐसा होने पर भी प्रत्येक संप्रदाय अपने पूरे साहित्य को परमात्मा या मूल प्रवर्तक की वाणी मान रहा है और चाहता है कि उसे अक्षरशः सत्य माना जाए.

प्रत्येक वर्ग का साहित्य विरोधाभासों से भरा हुआ है. ब्राह्मण साहित्य में एक ओर अहिंसा, सत्य आदि नैतिक गुणों की प्रशंसा की गई है तो दूसरी ओर पशुहत्या की भरमार है. ऐत्रेय ब्राह्मण के हरिश्चंद्रोपाख्यान में नरहत्या का वर्णन भी मिलता है. वहां कहा गया है कि हरिश्चंद्र नामक एक राजा के संतान नहीं थी. उस ने वरुण की उपासना की. एक दिन देवता ने प्रकट हो कर पूछा, "महाराज अगर तुम्हारे एक लड़का हो जाए तो क्या बलि दोगे?"

नारी को मायामोह का प्रतीक मान कर परंपराओं का अंधपालन करना कहां तक ठीक है?

राजा ने कहा, "उसी को चढ़ा दूंगा. कम से कम संतान का मुंह तो देख लूंगा."

लड़का हो गया और वरुण उस की बलि मांगने आए तो राजा ने कहा, "अभी तो दूध पीता है, जरा घुटने चलने दो." वरुण फिर आए तो उस ने कहा, "बस जरा खड़ा होने दो." फिर आए तो कहा, "यह क्षत्रिय का बालक है. जरा धनुषबाण तो पकड़ने दो." जब फिर आए तो राजा के पास कोई उत्तर न रहा. उधर लड़का भाग खड़ा हुआ. वरुण नाराज हो गए और राजा को जलोदर रोग हो गया.

बालक ने जब पिता की बीमारी का समाचार सुना तो वह घर वापस आने लगा कि रास्ते में इंद्र एक ब्राह्मण के रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाओं से चिपके हुए हैं. उन का कहना है कि शास्त्र परमात्मा की वाणी है, जो झूठी नहीं हो सकती. उस पर संदेह करने से परमात्मा नाराज हो जाएगा. जो उस में लिखा है, मानते जाना चाहिए. इसी में कल्याण है.

पर्यालोचन करने पर पता चलता है कि प्रत्येक परंपरा के शास्त्रों में नईनई बातें जुड़ती चली गईं. वैदिक साहित्य—मंत्र, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद—चार भागों में विभक्त हैं. लगभग 2,000 वर्ष तक उस में परिवर्तन होता गया. 'ऋग्वेद' का मानव प्रकृति का पुजारी था. उन दिनों अग्नि, वायु, पृथ्वी, आकाश, सूर्य, वर्षा, आंधी आदि प्राकृतिक तत्त्वों को ले कर देवीदेवताओं की कल्पना की गई. 'ऋग्वेद' उन्हीं की स्तुतियों का संग्रह है. 'यजुर्वेद' में प्रकृति पूजा का स्थान यज्ञ यानी सामूहिक अनुष्ठानों ने ले लिया. धीरेधीरे मनुष्य आत्मचिंतन की ओर बढ़ा और उसे अपने ही अंदर परमात्मा दिखाई देने लगा. आरण्यकों में साधना का यही रूप मिलता है. उपनिषदों में उस ने प्रत्येक अस्तित्व में परमात्मा के दर्शन किए.

महाभारत 1,000 वर्ष में पूरा हुआ. पहले उस में लगभग 9,000 श्लोक थे, फिर 20,000 हुए और फिर 1,00,000 से भी अधिक. पश्चिम, पूरब और दक्षिण में उस के जो संस्करण मिलते हैं उन का एकतिहाई एकदूसरे से भिन्न है. स्मृतियों की रचना भी सैकड़ों वर्षों तक चलती रही. प्रत्येक संप्रदाय ने अपने मत के समर्थन में एक स्मृति बना डाली. प्राचीन उपनिषदों की संख्या 11 थी. क्रमशः प्रत्येक धार्मिक संप्रदाय उपनिषद बनाने लगा और उन की संख्या 200 से भी अधिक हो गई. जन आगमों में महावीर के बाद लगभग 1,000 वर्ष तक परिवर्तन होते रहे. यही बात बौद्ध साहित्य की है. ऐसा होने पर भी प्रत्येक संप्रदाय अपने पूरे साहित्य को परमात्मा या मूल प्रवर्तक की वाणी मान रहा है और चाहता है कि उसे अक्षरशः सत्य माना जाए.

प्रत्येक वर्ग का साहित्य विरोधाभासों से भरा हुआ है. ब्राह्मण साहित्य में एक ओर अहिंसा, सत्य आदि नैतिक गुणों की प्रशंसा की गई है तो दूसरी ओर पशुहत्या की भरमार है. ऐत्रेय ब्राह्मण के हरिश्चंद्रोपाख्यान में नरहत्या का वर्णन भी मिलता है. वहां कहा गया है कि हरिश्चंद्र नामक एक राजा के संतान नहीं थी. उस ने वरुण की उपासना की. एक दिन देवता ने प्रकट हो कर पूछा, "महाराज अगर तुम्हारे एक लड़का हो जाए तो क्या बलि दोगे?"

राजा ने कहा, "उसी को चढ़ा दूंगा. कम से कम संतान का मुंह तो देख लूंगा."

लड़का हो गया और वरुण उस की बलि मांगने आए तो राजा ने कहा, "अभी तो दूध पीता है, जरा घुटने चलने दो." वरुण फिर आए तो उस ने कहा, "बस जरा खड़ा होने दो." फिर आए तो कहा, "यह क्षत्रिय का बालक है. जरा धनुषबाण तो पकड़ने दो." जब फिर आए तो राजा के पास कोई उत्तर न रहा. उधर लड़का भाग खड़ा हुआ. वरुण नाराज हो गए और राजा को जलोदर रोग हो गया.

बालक ने जब पिता की बीमारी का समाचार सुना तो वह घर वापस आने लगा कि रास्ते में इंद्र एक ब्राह्मण के रूप

नारी को मायामोह का प्रतीक मान कर परंपराओं का अंधपालन करना कहां तक ठीक है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110464

में मिल गए और उन्होंने उसे घर लौटने से मना कर दिया. ऐसा कई बार हुआ. अंत में जब कोई चारा न रहा तो रोहित नामक वह लड़का जंगल में अजीगर्त नामक ब्राह्मण के पास पहुंचा. उस के तीन लड़के थे, जिन के नाम थे : शुनःपुच्छ (कुत्ते की पूंछ), शुनःशेप और शुनोलांगूल. उस ने सोचा, 'यदि इन में से एक मिल जाए तो मैं अपने स्थान पर बलि चढ़ा दूं.' बड़े लड़के से पिता को प्यार था और छोटे से माता को, अतः मंझले लड़के शुनःशेप को 100 गाय दे कर खरीद लिया गया.

यज्ञ शुरू हुआ और शुनःशेप को पशु के रूप में खंभे से बांधने को कहा गया लेकिन कोई बांधने वाला नहीं मिला. अजीगर्त को फिर 100 गाय दी गईं. फिर उस ने बालक को खंभे से बांध दिया. जब बलि चढ़ाने का समय आया तो काटने वाला कोई न मिला. उस के पिता अजीगर्त को फिर 100 गाय दी गई और वह अपने पुत्र की गरदन काटने के लिए तैयार हो गया.

बेचारा शुनःशेप देवताओं की स्तुति करने लगा. उस ने इंद्र की स्तुति की तो इंद्र ने कहा, "यम के पास जाओ!". यम की स्तुति की तो उन्होंने कहा, "अग्नि के पास जाओ!" अग्नि की स्तुति की तो उन्होंने कहा, "वरुण के पास जाओ!" इस प्रकार बेचारा प्रार्थना करता चला गया पर काम न बना. अंत में उस ने सभी देवताओं की एक साथ स्तुति की. तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कहां जा कर उसे छुटकारा मिला.

इस उपाख्यान से पता चलता है कि उन दिनों मनुष्य को भी बलि चढ़ाया जाता था, जिसे 'नरमेध यज्ञ' कहते थे.

'दशकुमारचरित' में इसी प्रकार का वर्णन काली के मंदिर को ले कर मिलता है. भीलों ने जंगल में एक राजा को लूट लिया. बहुत सी संपत्ति उन के हाथ लगी. वे राजा के शिशु राजकुमार को अपने साथ ले आए और उन्होंने लूट में मिली सफलता से प्रसन्न हो कर उसे देवी को बलि चढ़ाने का निश्चय किया. वे सोच रहे थे कि इसे कैसे मारा जाए—उलटा लटका दिया जाए, घुटनों चलते समय तलवार से गरदन काट दी जाए या बाणों से बींध दिया जाए?

ब्राह्मण साहित्य में तरहतरह के यज्ञ बताए गए हैं. ऐसा कोई काम नहीं है जो यज्ञों से पूरा न होता हो. यज्ञ द्वारा केवल धन और संतान की प्राप्ति ही नहीं बल्कि शत्रु का नाश करना हो या किसी स्त्री को वश में करना हो, मतलब यह कि प्रत्येक कार्य के लिए ब्राह्मण साहित्य में यज्ञों का विधान है. 'पारस्कर गृह्य-सूत्र' (3/7) में एक ऐसा यज्ञ भी आया है जिस से नौकर को भागने से रोका जा सकता है. इन सब ढकोसलों के बावजूद कहा जाता है कि इन पुस्तकों के हर आदेश का पालन करना चाहिए. हम नहीं समझते की जासूसी उपन्यासों और ऐसी पुस्तकों में क्या अंतर है!

एक ओर ब्रह्मचर्य को अच्छा कहा गया है, दूसरी ओर महापुरुषों का वर्णन करते समय उन की सैकड़ों पत्नियां बताई गई हैं. जैन धर्म 63 श्लाकापुरुषों के रूप में महापुरुषों का वर्णन करता है—नौ प्रतिवासुदेव, नौ वासुदेव, नौ बलदेव, 12 चक्रवर्ती और 24 तीर्थंकर. प्रतिवासुदेव की 16,000 रानियां बताई गई हैं. इसी तरह वासुदेव की 32,000 और चक्रवर्ती की 64,000 रानियों का वर्णन है. इन चक्रवर्तियों में चार तीर्थंकर यानी धर्मप्रवर्तक भी हैं.

बौद्ध साहित्य में यह संख्या लाखों तक पहुंच गई है. दूसरी ओर वे ही परंपराएं ब्रह्मचर्य पर इतना अधिक बल देती हैं कि यदि 60 साल का साधु तीन साल की बच्ची को भी छू लेता है तो उसे प्रायश्चित्त के रूप में दंड भुगतना पड़ता है. इस पूर्वापर विरोध में किसी को संदेह करने का साहस नहीं होता.

भारत का यह राष्ट्रीय चरित्र बन गया है, जब कि पश्चिम ने धार्मिक आज्ञाओं को धर्मस्थानों तक ही सीमित कर दिया है. पश्चिम का व्यक्ति वैज्ञानिक प्रयोगशाला में जाते ही उन्हें भूल जाता है. राजनीतिज्ञ और व्यापारी उन का तभी उपयोग करते हैं जब वे जनमानस को प्रभावित करने या किसी स्वार्थ की पूर्ति में सहायक हों.

भारत में अब भी ऐसे लोग बड़ी संख्या में हैं जो आरोग्य, संतान प्राप्ति,

पुराने सिद्धांतों को कंठस्थ कर देने वाले विद्यार्थी को श्रेष्ठ

व्यापार में लाभ आदि बातों के लिए पूजा-पाठ करते हैं. वे पुरुषार्थ को उतना महत्त्व नहीं देते जितना तथाकथित भगवान की कृपा को. ब्राह्मणों और धर्मगुरुओं को उन्होंने भगवान का दलाल मान रखा है.

धार्मिक प्रभाव को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है. एक ओर भक्तिवादी परंपराएं मनुष्य को बालक बनाना सिखाती हैं, दूसरी ओर त्यागमार्गी परंपराएं उसे बूढ़ा बनाना चाहती हैं. पहली परंपरा के अनुसार चाहे बाल सफेद हो जाएं, फिर भी मनुष्य बालक के समान गिड़गिड़ाता रहे, आंखों में आंसू भर कर उद्धार की प्रार्थना करे. दूसरी परंपरा के अनुसार वह 10 वर्ष का बालक हो या 25 साल का जवान वह अपनेआप को बूढ़ा समझे. मातापिता आदि परिवार के लोगों को स्वार्थी व मायामोह में फंसा हुआ कहे. प्रत्येक वस्तु से विरक्त हो जाए

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

और स्वाद लेना छोड़ दे. नारी को नरक की खान समझे. उस के आलिंगन की इच्छा उत्पन्न होते ही नरक के उन दृश्यों को याद करे जहां पापियों को आग से जलते हुए लोहे के खंभों से बांध दिया जाता है. सुगंध की इच्छा होने पर वैतरणी नदी को याद करे जिस में रुधिर, पीप आदि घृणित वस्तुएं बह रही हैं. जिह्वा के स्वाद की इच्छा होने पर कूट शाल्मली वृक्ष को याद करे, जिस के पत्ते तलवार की तरह तेज धार वाले होते हैं और गिरते ही अंगअंग काट डालते हैं.

शास्त्रों में प्रलोभन दिया गया है कि 'यदि इस जन्म में ब्रह्मचर्य का पालन करोगे, नारी को नरक की खान समझोगे तो मरने के बाद स्वर्ग मिलेगा. वहां हजारों की संख्या में अप्सराएं प्राप्त होंगी. जो पैदा होते ही जवान हो जाती हैं और फिर कभी बूढ़ी नहीं होतीं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, जहां बुद्धि यानी विचारशक्ति को अपने पैरों पर खड़ा नहीं होने दिया जाता.

राजनीति में परम आज्ञाकारिता का समर्थन अनुशासन के रूप में किया जाता है. विभिन्न सिद्धांतों को ले कर नएनए दल खड़े हो रहे हैं. वास्तव में देखा

के परीक्षा में उसी रूप में लिख

क्यों माना जाता है?

यह पूछा जा सकता है कि जब इस लोक में स्त्री का संपर्क बुरी बात है तो उस लोक में क्यों यह बुरी बात नहीं है? ऐसा प्रश्न करने वाले व्यक्तियों को अकसर नास्तिक कह कर चुप करा दिया जाता है. कहा जाता है कि शास्त्र जो बातें कहे उन्हें मानते चले जाओ, पूछने या शंका करने की जरूरत नहीं है.

दर्शनशास्त्र सत्य को ले कर चलता है और प्रत्येक मान्यता का तर्क द्वारा विवेचन करना चाहता है. लेकिन जब उस पर धर्म का आधिपत्य हो गया तो वह सत्य का अन्वेषक न रह कर सांप्रदायिकता के दुर्ग का पहरेदार बन गया. बहुत सी परंपराओं ने आगम को तर्क से बलवान कहा. जिस ने स्पष्ट रूप में ऐसा नहीं कहा उस पर भी शास्त्र-प्रामाण्य का आधिपत्य बना हुआ है. यह परम आज्ञाकारिता का ही एक रूप

जाए तो सिद्धांत केवल आड़ है. स्वार्थी जननायकों में प्रतिस्पर्धा चलती है. जिन्हें मंत्री पद या कोई उच्च पद मिल जाता है वे दल के समर्थक बने रहते हैं, और जिन्हें नहीं मिलता या जो ठेकेदारी आदि किसी रूप में स्वार्थपूर्ति नहीं कर पाते, वे नया दल बना कर नए आदर्शों व सिद्धांतों का नारा लगाने लगते हैं.

दूसरा वर्ग उन लोगों का है जो खुद आगे नहीं आ पाते और किसी नेता का पल्ला पकड़े रहते हैं. उन का मुख्य काम होता है सर्वसाधारण को बरगलाना. वे नेता की सच्चीझूठी प्रशंसा में लगे रहते हैं, उस के जीवन के साथ अति मानवीय घटनाएं जोड़ते हैं और ऐसा प्रकट करते हैं जैसे वह साधारण मानव न हो कर परमात्मा का प्रतिनिधि हो.

दलीय सगंठन में जब कोई व्यक्ति वास्तविकता को ले कर प्रश्न पूछता है या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्तारूढ़ नेता की बातों में संदेह प्रकट करता है तो उस के विरुद्ध अनुशासन संबंधी काररवाई की जाती है.

नेता सदा ऐसे व्यक्तियों को पसंद करते हैं जो परम आज्ञाकारी बने रहें, जिन्हें उन के हरेक काम में देशभक्ति और महात्याग दिखाई दे, जो केवल कपड़े पहनने में ही नहीं, उठनेबैठने, खानेपीने, आदि प्रत्येक बात में उन की नकल करें.

शिक्षा के क्षेत्र में परम आज्ञाकारिता का यह वातावरण प्रायः पुस्तकों को ले कर उत्पन्न किया जाता है. विद्यार्थी के मस्तिष्क में गढ़ेगढ़ाए पुराने सिद्धांत भर दिए जाते हैं और आशा की जाती है कि वे परीक्षा में उन्हीं को उगल दें. जो विद्यार्थी प्रतिष्ठित विद्वान या प्राचीन पुस्तकों को छोड़ कर अपनी बुद्धि से काम लेता है उसे अंक प्राप्त नहीं होते, उसे विद्वान होने का प्रमाणपत्र नहीं मिल सकता. इस के विपरीत जिस विद्यार्थी को तथाकथित विद्वानों की जितनी ज्यादा से ज्यादा बातें रटी होती हैं, उसे उतना ही श्रेष्ठ माना जाता है. अध्यापक का महत्त्व भी इस बात पर आंका जाता है कि उसे पाठ कितना कंठस्थ है.

जिस व्यक्ति को बहुत अधिक बातें याद होती हैं वह समस्या आने पर गढ़ागढ़ाया उत्तर दे कर शांत हो जाता है, भले ही उस से वास्तविक समाधान न प्राप्त हो. कई बार ऐसा भी होता है कि हम किसी समस्या पर तटस्थ हो कर विचार करना चाहते हैं. हमें तत्काल कोई श्लोक याद आ जाता है और समस्त शक्ति उसी के समर्थन में लग जाती है. समाधान अपनेआप में कहां तक उपयोगी है, इस बात का पता नहीं लगाया जाता.

विचारपूर्वक देखा जाए तो प्रतिभा और स्मृति में परस्पर विरोध है. यह बात ठीक है कि हमें सूक्ष्म विचार और विवेचन शक्ति का विकास करना चाहिए. उस के लिए शुरू में निश्चित प्रक्रिया अपनानी होगी और निर्धारित ग्रंथों का अध्ययन करना ही होगा, लेकिन अंत तक उन्हीं में उलझे रहना प्रगति में बाधक है.

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जिस वर्ग में जितनी अधिक शास्त्रनिष्ठा और गुरुनिष्ठा है, वह बौद्धिक दृष्टि से उतना ही पंगु है. आचार्य शब्द संस्कृत की 'चर' धातु से बना है, जिस का अर्थ है चलना या चरना. जो व्यक्ति अनुयायियों को क्षेत्र विशेष में चराता है उसे आचार्य कहते हैं. जिन पशुओं को गड़रिया या ग्वाला डंडा ले कर चलाता रहता है, उन में अपनेआप चरागाह ढूंढ़ने की योग्यता नहीं आती.

यही बात आचार्य की आज्ञा पर चलने वाले अनुयायियों की है. उन्हें पगपग पर पाप का भय बना रहता है और वे अपनी बुद्धि से काम लेना छोड़ देते हैं.

कला अनुभूति और भावनाओं को ले कर चलती है, लेकिन वहां भी परम आज्ञाकारिता का आधिपत्य है. यदि हमारी अनुभूति को शास्त्र या किसी प्रतिष्ठित आचार्य का समर्थन नहीं मिलता तो उसे अनुभूति ही नहीं माना जाता. नायिका वही हो सकती है जो नायिका भेद के अंदर आ सके!

वर्तमान युग की मांग है कि मानव अपने पैरों पर खड़ा हो. दैवी कृपा की प्रतीक्षा छोड़ कर निजी पुरुषार्थ से काम ले. भविष्य के लिए खुद अपने को उत्तरदायी समझे. शास्त्र व परंपराओं की गुलामी छोड़ कर निजी बद्धि, निजी भावनाओं को महत्त्व दे. चराने वालों की प्रतीक्षा छोड़ कर खुद ही विचरण करे. तभी कहा जाएगा कि वह पशु की भूमिका छोड़ कर मानव बन गया है. आधुनिक शब्दों में इसी को बौद्धिक लोकतंत्र कहा जाएगा. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

75 पंखड़ियों वाला गुलाब

अगर जादूगर का जादू और उस का गुलाब सच्चा था. तो फिर उस अधमरे इनसान पर उस का असर क्यों नहीं हुआ?

(स्टेज का पीछे का परदा काले रंग का. उस पर सन 1947 का कैलेंडर लटकता हुआ. स्टेज पर सामने की ओर हट कर 7′ × 3′ का टेबिल. टेबिल पर सामने के रिक्त स्थान को ढांकती, लटकती चादर. चादर की ओट में टेबिल के नीचे एक स्टूल पर एक टोकरी में गुलाब की ढेर सी पंखड़ियां और एक गुलाब का फूल. टेबिल के पास माइक.)

(परदा उठता है. जादूगर पीछे से आ कर टेबिल के पास खड़ा हो जाता है.)

मिसेज एक्स : डियर, क्या यही वह मैजिशियन है जिस की तुम तारीफ करते रहते हो?

मिस्टर एक्स : हां डार्लिंग, यही है.

मिसेज एक्स : लेकिन यह जादूगर कम, लीडर अधिक नजर आता है. इसे जादू आता भी होगा? मुझे तो लगता है, यह स्पीच अच्छी दे लेता होगा.

मिस्टर एक्स : ठीक, तुम्हारी तरह

पात्र परिचय :

(स्टेज पर)

जादूगर : उमर 58 वर्ष. सफेद चूड़ीदार पाजामा, कुरता और काली शेरवानी पहने, जिस पर बाईं ओर सीने पर टंके ढेर से मैडल. सिर पर सफेद टोपी. पैरों में काबुली सैंडल.

(दशक दीर्घा में)—

मिस्टर एक्स : अधेड़. सूट पहने. सिर पर टोप.

मिसेज एक्स : स्कर्टब्लाउज पहने. उमर 35 वर्ष. कंधे तक कटे बाल.

बाबा : उमर 8 वर्ष. हाफ पैंट हाफ शर्ट पहने. गले में टाई. पैरों में मोजेजूते पहने हैं.

अ : दुबलापतला, क्लीनशेव्ड, अधेड़ व्यक्ति. शरीर पर कुरता-पाजामा. पैरों में चप्पल.

भ : किसान की तरह दिखाई देने वाला अधेड़ इनसान. घुटने तक धोती और कुरता कई जगह से फटा. नंगे पैर. सिर पर बेतरतीबी से बिखरे खिचड़ी बाल. दायां हाथ कंधे के पास से कट कर लटकता हुआ. पेट की बाईं ओर का मांस का लोथड़ा कट कर लटकता हुआ. सीने पर गोली के कारण घाव. तीनों जगहों से रिसता खून.

इस के अतिरिक्त अनेक व्यक्ति दर्शकों के रूप में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वादू कुछ नहीं आता है. सिर्फ देखने वालों को हिप्नोटाइज कर लेता है. लेकिन हकीकत यह है, डार्लिंग कि यह बीसवीं सदी का सब से बड़ा जादूगर है.

बाबा : डैडी, इसे इतने अधिक मैडल कहां से मिले?

मिस्टर एक्स : दे आर प्रेजेंटस, माई बाय! देशविदेश की जनता राजामहाराजाओं, नेताओं द्वारा इसे भेंट किए गए हैं 30-35 वर्षों से यह अपने जादू के करिश्मों से इस देश की जनता पर छाया है. आज से पहले तक इस ने इतना अधिक तहलका मचा रखा था कि अंगरेजी हुकूमत थर्रा गई थी. उन दिनों इस के प्रोग्राम देख कर जनता पागल हो जाती थी और इस की एक आवाज पर जान कुरबान करने को तैयार हो जाती थी. आज भी यही हाल है. जनता इस के पीछे दीवानी है.

मिसेज एक्स : रीयली?

मिस्टर एक्स : यस, डार्लिंग! आजकल तो फारेन में भी इस के नाम की धूम मची है. जहां भी यह जाता है, लाखों की संख्या में लोग इस के प्रोग्राम देखने के लिए टूट पड़ते हैं.

(जादूगर मुसकरा कर दोनों हाथ जोड़ता है. दर्शकों के बीच से तालियों की गड़गड़ाहट और 'जादूगर जिंदाबाद' के नारों की गूंज. जादूगर कुछ क्षण के लिए रुक कर माइक थामता है.)

जादूगर : भाइयो और बहनो, इंतहा खुशी का मौका है. तहेदिल से शुक्रगुजार हूं आप सब का, जो आज मुल्क की आजादी के पहले दिन ही राजधानी में मेरा प्रोग्राम तय किया है, चूंकि आजाद हो गया है हमारा मुल्क, इसलिए मैं ने भी अपने प्रोग्रामों में भारी रद्दोबदल की है. वक्त की आवाज सुननी चाहिए और उस के मुताबिक इनसान को अपनेआप को ढालना चाहिए, कदम उठाना चाहिए.

(कुछ क्षण रुक कर)

आजादी हासिल करने के बाद सब से जरूरी है दिमाग से गुलामी के जरासीमों को नेस्तनाबूद करना. यहां बैठे हुए

मेरे मुल्क के लोग, बहुत से लोग अभी भी सिर पर टोपी तथा बदन पर सूट लादे हैं. बहनें स्कर्टब्लाउज पहने हैं. मैं मजबूर हूं सोचने को कि जिस्मानी तौर पर हम भले ही आजाद हो गए हों लेकिन हकीकत यह है कि अंदरूनी तौर पर, भीतर से हम गुलामी की जंजीर से वैसे ही जकड़े हैं. खैर लीजिए, शुरू हो रहा हैं प्रोग्राम.

(जादूगर छत की ओर देखता है. दोनों हाथों को सामने फैला कर मुट्ठियां बांधता है. फिर हाथों को अपने सीने की ओर खींचता है. फिर धीरेधीरे नीचे कर शेरवानी के जेबों में समा लेता है. इस बीच लोगों के सिर पर टोप के स्थान पर टोपियां आ जाती हैं. तालियों की गड़गड़ाहट.)

जादूगर : अब मैं अपना अगला आइटम पेश करने जा रहा हूं.

अ : ठहरो.

(दर्शक दीर्घा में बैठा अ उठ खड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलाब दिखाते हुए जादूगर कहने लगा, "यह गुलाब आप सब की मुहब्बत का प्रतीक है..."

होता है बाजू की सीट पर टिके भ को उठा कंधे पर लाद स्टेज की ओर बढ़ता है और जादूगर के सामने जा खड़ा होता है.)

अ : जादूगर साहब, आप के जादू के करिश्मे मैं कई वर्षों से देख रहा हूं लेकिन मेरे लिए ये महत्त्वहीन हैं. मेरी दृष्टि में इन का कोई महत्त्व नहीं, मूल्य नहीं, क्योंकि इन में जिंदगी की धड़कन नहीं है सिर्फ मसखरापन है, छिछलाहट है. आप ने समय की रफ्तार पहचानने का और आवाज सुनने का घिसाघिसाया रिकार्ड एक बार फिर बजा दिया है. मैं ऐसे कई भाषण सुन चुका हूं. मैं भी टोप को टोपी में और सफेद को लाल टोपी में बदलने का गुर जानता हूं. मैं जादू के ऐसे कई करिश्मे दिखा सकता हूं. मैं भी जानता हूं कि जनता को कोरे शब्दों के प्रवाह में कैसे बहाया जा सकता है. उन्हें कैसे हिप्नोटाइज किया जाता है.

जादूगर (आत्मविश्वास के स्वर में) : आज तक मैं ने कथनी और करनी में कोई भेद नहीं रखा है, भाई! यह आप सब जानते हैं. शायद तुम्हें यकीन न हो, लेकिन हकीकत यह है कि दुनिया की नब्ज पर मेरा हाथ चौबीसों घंटे रखा रहता है. मेरे जादू के प्रति अगर तुम्हें कोई भी शंका हो तो कहो, तुम जो भी कहोगे, मैं करने और दिखाने को तैयार हूं.

अ : मेरे कंधे पर लदे इस इनसान को पहचानते हो?

जादूगर : हां, इसे कौन नहीं पहचानेगा मेरे दोस्त!

अ : इस का दायां हाथ कट गया है. पेट के पास का मांस लोथड़े की तरह कट कर लटक रहा है. दिल के पास गहरा घाव हो गया है, जिस से हमेशा खून रिसता रहता है. जानते हो, इस की दुर्दशा का कारण कौन है? कौन इस के लिए जिम्मेदार है? (कुछ रुक कर) वह...वह तुम हो तुम...तुम!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(जादूगर गंभीरता ओढ़ लेता है. दर्शकों के बीच से ... आवाज़ें : यह पागल है? मारो, इसे निकालो!)

जादूगर (हाथ के इशारे से रोकते हुए) : आप शांत रहिए. इन्हें कह लेने दीजिए.

अ (दर्शकों की ओर इशारा कर, हंसते हुए) : इन्हें क्या मालूम! ये तो तुम्हारे नेत्र और मन की शक्ति से हिप्नोटाइज हुए कमजोर इनसान हैं. ये तो सिर्फ भेड़ की तरह सिर झुकाए चलना जानते हैं, चाहे फिर कोई भी इन्हें हांके, क्या फर्क पड़ता है! मैं तुम से पूछता हूं, जब इस व्यक्ति पर वहशियाना हमला हो रहा था, तब तुम क्या वहां मौजूद नहीं थे? क्या अपनी आंखों के सामने होने वाले कुकृत्य को देखते रहना, उस के प्रति मौन स्वीकृति नहीं है?

(जादूगर को खामोश पा कर अ उस की ओर गौर से देखता है.)

अ : मैं जानता हूं कि तुम्हारे पास इस का कोई जवाब नहीं है. इस इनसान की दुर्दशा की सारी जिम्मेदारी तुम पर है. (दर्शकों की ओर इशारा कर) तुम पर इन सब का विश्वास था, लेकिन तुम समझौतावादी बन गए थे, तटस्थ बन गए थे, बुजदिल बन गए थे. तुम्हारे मुंह से खिलाफत का एक शब्द भी नहीं फूट सका था. खैर, फिर भी तुम प्रायश्चित कर सकते हो. क्या तुम इस व्यक्ति को बचा सकते हो? तुम देख रहे हो न इस की मुमूर्षु निगाहें? क्या तुम उन में जिजीविषा की रंगीन किरणें पैदा कर सकते हो?

जादूगर : हां, मेरे भाई, हां! मेरे रहते हुए यह व्यक्ति न मर सकता था और न कभी मर सकेगा. वर्षों युगों तक यह जीवित रहेगा.

अ (पागल की तरह खिलखिला कर) : मैं इस का जीवन इसलिए नहीं मांग रहा हूं कि यह अपाहिज हो कर जीवित रहे. विकलांग तन लिए ताजिंदगी घिसटता रहे. उस कुंठाजन्य जीवन से तो मृत्यु ही श्रेयस्कर है.

जादूगर : भाई, धैर्य क्यों छोड़ रहे हो! इसे उमर के चौराहे की भटकन से निकाल जिंदगी की सही राह पर पहुंचाने में अगर मुझे किसी दुर्घटना का शिकार भी होना पड़े तो वह भी मुझे स्वीकार है. इस का जीवित रहना श्रेष्ठ और गौरवमय जीवन व्यतीत करने लायक होना जितना जरूरी तुम समझते हो, उतना ही मैं और ये दर्शक भी. क्योंकि सब के जीवनमरण का प्रश्न इस के साथ जुड़ा है. मेरी प्रतिष्ठा आबरू, जादू का सवाल है. इसे टेबिल पर लिटा दो.

(भ को अ टेबिल पर चित्त लिटा देता है. जादूगर उस के शरीर पर हाथ फेरता है. रक्तस्राव बंद हो जाता है.)

जादूगर : लो, इस के घाव से अब कभी खून नहीं बहेगा.

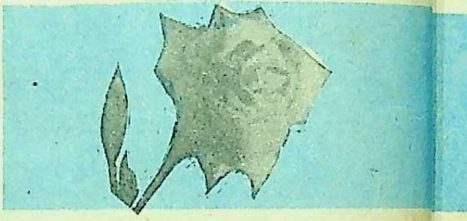

अ (व्यंग्य से) : क्या जादू का करिश्मा खत्म हुआ, जादूगर साहब? क्या तुम सिर्फ इतना ही कर सकते हो?

जादूगर : नहीं, सिर्फ इतना नहीं. मेरे जादू के कारण इस इनसान की हालत अब इस से अधिक बदतर नहीं होगी. मौत भी अगर इस के करीब आने का दुस्साहस करेगी तो मेरे द्वारा इस व्यक्ति के चारों ओर निर्मित व्यूह की लौह दीवार से टकरा कर चूरचूर हो जाएगी किंतु भेद न पाएगी. इस प्रोगाम के बाद मुझे आज ही रात लंदन में अपना प्रोग्राम देने जाना जरूरी है. मैं वचनबद्ध हूं वहां से लौट कर इस इनसान को अपने पैरों पर खड़ा करा देना मेरा काम है, फर्ज है. तुम निश्चित रहो.

अ (भ को कंधे पर लादते हुए) : खैर, इस से कोई फर्क नहीं पड़ता है. मैं तुम्हारा इंतजार करूंगा—दिनों, महीनों, वर्षों तक. मैं मरूंगा नहीं. अगर यह इनसान मर गया तो इस की लाश ले कर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तुम्हारे सामने आऊंगा. तब तुम्हें जवाब देना होगा. समझे!

(अ स्टेज पर से उतर कर हॉल के बाहर चला जाता है.)

जादूगर (दर्शकों से) : दोस्तों, जो कुछ भी गुजरा अब तक, आप की नजरों के सामने से, वह उतना ही सच है जितना मेरा जादू और उतना ही उस व्यक्ति का कहना और घायल का जीवित रहना. वह इनसान जीवित रहेगा क्योंकि उसी में हम सब का हित निहित है. उसी में हमारा भविष्य कैद है. मुझे लंदन न जाना होता तो आज ही वह घायल व्यक्ति अपने पैरों पर आप के सामने खड़ा हो गया होता. खैर, मैं अपना आखिरी आइटम पेश कर रहा हूं. भविष्य में होने वाले

जादूगर मैडलों पर हाथ फेरता है. सब मैडल गायब हो जाते हैं और दूसरे क्षण गुलाब का एक फूल निकल आता है...

प्रोग्रामों में हमारी फिर मुलाकात होगी, उम्मीद है.

(कुछ रुक कर शेरवानी पर टंके मैडलों को इशारा कर) ये जो मैडल मुझे उपहार में मिले हैं, आप लोगों की मेरे प्रति मुहब्बत, श्रद्धा और शुभेच्छा के प्रतीक हैं. आज मैं आप लोगों की अमर भेंट अपने रंग में रंग कर आप को फिर से समर्पित करता हूं.

(जादूगर मैडलों पर हाथ फेरता है. मैडल गायब हो जाते हैं. फिर दूसरे ही क्षण शेरवानी के बटन होल में एक गुलाब का फूल निकल आता है.)

जादूगर (फूल को हाथ में ले कर दर्शकों को दिखाते हुए) : यह 75 पंखड़ियों वाला गुलाब है. यह गुलाब यानी मैं यानी आप सब की मुहब्बत का प्रतीक. अपनी पंखड़ियां आप पर लुटा कर, आप पर स्वयं को कुरबान कर यह गुलाब उस मिट्टी की गोद में खो जाएगा जिस ने उसे जिंदगी दी है. यह मिट्टी में मिल जाएगा ताकि इस से गुलाबों की आने वाली पीढ़ी जन्म लेगी, हजारों, लाखों, करोड़ों गुलाबों को, जो अपनी महक से सारे विश्व को मोह लेगी. लीजिए, यह आप की अमानत आप संभालिए!

(कुछ पंखड़ियां फूल में से तोड़ बचे गुलाब को जादूगर बटन होल में लगा लेता है. फिर दर्शकों की नजर बचा कर नीचे रखी टोकरी में से गुलाब की पंखड़ियां निकाल दर्शकों की ओर फेंकने लगता है.)

(धीरेधीरे परदा गिरता है)

दूसरा दृश्य

(स्टेज पर)—

जादूगर : मेकअप के कारण चेहरे पर झुर्रियों का जाल. वेशभूषा पहले दृश्य सी. शेरवानी के बटन होल में पहले दृश्य वाला गुलाब.

(दर्शक दीर्घा में)—

अ : मेकअप के कारण चेहरे पर झुर्रिया. सिर के बाल बर्फ की तरह सफेद वेशभूषा पहले दृश्य सी.

भ : कोई परिवर्तन नहीं. पहले दृश्य की तरह.

प : अधेड़ धोती, कमीज और जोधपुरी बंद गले का कोट पहने. सिर पर पगड़ी. पैरों में पंप शू. नीचे की ओर झुकी मूंछ, छःसात दिन की बढ़ी दाढ़ी.

ज : उमर 35 वर्ष. खाकी हाफ पेंट, सफेद हाफ शर्ट पहने. पैरों में कैनवास शू. सिर पर काले रंग की टोपी. पतली नोकीली मूंछ.

स : उमर 40 वर्ष. दुबलापतला, क्लीनशेव्ड, पैरों में चप्पल. सफेद कुरता-पाजामा शरीर पर.

क : खादी की धोती और कुरता पहने. सिर पर सफेद टोपी. पैरों में चप्पल. क्लीनशेव्ड. उमर 30 वर्ष. तथा अन्य व्यक्ति.

स्टेज—पीछे तिरंगा परदा. उस पर लटकता हुआ सन 1964 का कैलेंडर. टेबिल पर सफेद चादर. पास ही माइक.)

(परदा उठता है. जादूगर पीछे से

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आ कर टेबिल के पास खड़ा हो जाता है. दोनों हाथ जोड़ कर नमस्ते करता है. फिर माइक थाम लेता है.)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जादूगर : दोस्तों, आज फिर मैं आप लोगों के सामने हाजिर हूं. इस बीच देश-विदेश में अपने कार्यक्रमों के जरिए मानवता की सेवा करते हुए जो सफलता मुझे हासिल हुई है, वह आप लोगों की मुहब्बत के कारण ही. आज मैं अपने नए आइटम्स आप के सामने पेश करूं, इस के पहले आप को कुछ वर्षों पहले के उस वाकिया की याद दिला देना जरूरी समझता हूं, जो 15 अगस्त 1947 को इसी शहर में इसी जगह प्रोग्राम के दौरान गुजरा था. वह मौत के जबड़े में फंसा अधमरा इनसान, वह मौत और जिंदगी के दोराहे पर रहबर के इंतजार में खड़ा इनसान...

महान कौन?

बहुत से विचारों वाला नहीं,
एक निश्चय वाला महान बनता है.
—काटवस

अ (दर्शकों के बीच में से खड़ा हो कर) : जादूगर, मैं यहां हूं. शायद तुम हमें पहचान गए होगे. उस घायल इनसान को, जिस का जिक्र तुम कर रहे हो, मैं ही ले कर प्रोग्राम में हाजिर हुआ था. आज भी वह इनसान मेरे पास की कुरसी पर अधमरा सा बैठा है.

जादूगर : मुझे याद है. उसे स्टेज पर ले आओ.

(अ कंधे पर लाद कर भ को स्टेज पर ले जाता है. सामने रखे टेबिल पर चित लिटा देता है.)

अ : वर्षों से मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था, जादूगर! मैं ने कहा था न कि मैं नहीं मरूंगा. आज तुम मिल ही गए. अपना वादा पूरा करने में तुम्हें सफलता मिले. मेरी हार्दिक शुभकामना तुम्हारे साथ है.

जादूगर : मुझे भी तुम्हारा ही इंतजार था दोस्त! अच्छा हुआ तुम आ गए. जीवनमरण के संघर्ष में त्रिशंकु सा लटका यह इनसान मेरे जेहन, मेरे मस्तिष्क पर छाया रहा है, हालांकि मैं जानता था कि यह कभी नहीं मर सकता, क्योंकि इस की मौत के साथ हिंदुस्तान का जर्राजर्रा मिट जाएगा. वह तो हमारे मुल्क, हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति, हमारी तरक्की और मेरी इज्जतआबरू का प्रतीक है. तुम चाहते थे और आज भी चाहते हो कि यह जिए किंतु कुंठाजन्य स्थिति में नहीं. तुम चाहते हो कि यह जिए किन्तु विकलांग, गलित शरीर लिए हुए नहीं. तुम चाहते हो कि यह जिए किंतु बैसाखी के सहारे नहीं, वरन अपने पैरों पर खड़ा हो कर, अपने भरोसे. और यही मैं चाहता हूं. यही प्रत्येक हिंदुस्तानी भी चाहता है. और, मेरे दोस्त, यकीन करो, यह जिंदगी और तरक्की की दौड़ में हारेगा नहीं. यह जिएगा और दुनिया को जीना सिखाएगा.

(कुछ क्षण रुक कर, एक बार दर्शकों पर सरसरी निगाह डाल कर) इसे मैं अपने हाथों, अपने जादू से जीवित रख सकता हूं. इसे फौलाद की तरह मजबूत बना सकता हूं लेकिन आज मैं चाहता हूं कि यह काम आप लोगों के द्वारा हो. मैं आप के द्वारा, आप को माध्यम बना कर इसे नवजीवन दूंगा. आज तक मैं आप लोगों के सहयोग से अपने सारे कार्य करता आया हूं, आज भी इस पुनीत, पवित्र कार्य करने के लिए अपने प्रतिनिधि भेजने के लिए आप को आवाज देता हूं. आप से आह्वान करता हूं. आप कोई भी चार व्यक्ति स्टेज पर भेज दें.

(दर्शक दीर्घा में से उठ कर प, ज, स और क स्टेज पर पहुंचते हैं.)

जादूगर (शेरवानी में टंके गुलाब को हाथ में ले कर) : यह गुलाब मेरी जिंदगी, आप की मुहब्बत का प्रतीक है. इस गुलाब की पंखड़ियां जितनी कोमल, जितनी नाजुक हैं उतनी ही फौलादी हैं. हर पंखड़ी की अपनी अहमियत है, अपना इतिहास है, अपना किस्सा है. इन पंख-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ड़ियों में मेरा और आप का विश्वास, उत्साह और 50 करोड़ इनसानों की जिंदादिली जीवित है इसलिए आप इस गुलाब पर यानी अपने जादूगर पर भरोसा, एतबार कर सकते हैं. इस गुलाब में 75 पंखड़ियां थीं. हर साल यह गुलाब एक पंखुरी को अपने प्रोग्राम के दौरान मिटाता रहा है. अब कुछ ही इस में बाकी हैं, जो आप की अमानत हैं, इस घायल बुजुर्ग की अमानत है. जब तक यह गुलाब है, आप का जादूगर है. जिस दिन यह गुलाब मिट जाएगा उस दिन यह जादूगर भी मिट जाएगा. बस, बाकी रह जाएगी इस की खुशबू यानी मेरा जादू, जो वातावरण में, मेरे मुल्क की मिट्टी के कणकण में आप के दिलदिमाग में मंडराती रहेगी. (कुछ क्षण रुक कर) तो लीजिए अब प्रोग्राम शुरू होता है.

(जादूगर घायल इनसान के पास पहुंचता है. उस की नब्ज टटोलता है. फिर लौट कर माइक् के पास खड़ा हो जाता है.)

जादूगर (गुलाब से पंखड़ी तोड़ कर प को देते हुए) : सेठ साहब, लीजिए यह पंखड़ी. इस का नाम मैं ने रखा है हीराकुंड. यह देखने में बहुत छोटी है लेकिन गौरीशंकर की चोटी से भी अधिक ऊंची है और चीन की दीवार से अधिक लंबी. इसे इस घायल और अधमरे इनसान के सीने पर जहां घाव है, रख कर हीराकुंड बांध का निर्माण करिए. इस से घाव भर जाएगा और खून बहना बंद हो जाएगा.

(प की आंखों में लोलुपता उभरती है. आधी पंखड़ी तोड़ कर चुपचाप वह पगड़ी के नीचे रख लेता है.)

जादूगर (एकाएक उस की ओर मुड़ कर) : क्या सोच रहे हो?

प (घबरा कर) : कु...कुछ...कुछ नहीं.

(फिर आदेशानुसार भ के सीने पर आधी पंखड़ी रख कर एक ओर खड़ा हो जाता है.)

जादूगर (गुलाब की दूसरी पंखड़ी तोड़ कर ज को देते हुए) : शायद आप का नाम ज है. यह पंखड़ी लो. पहले इस इनसान के कटे हाथ को तथा पेट के मांस के कटने को कीड़ों की उन के निश्चित स्थान पर ठीक से जमा दो. फिर इस पंखड़ी को दोनों हथेलियों के बीच मसलो. खूनी रंग का मलहम तुम्हारे हाथ में बन जाएगा, जिसे जोड़ों पर अच्छी तरह से लगा देना.

(ज के चेहरे पर विद्रोह उभरता है, लेकिन दर्शकों को अपनी ओर घूरते पा आदेशानुसार कार्य कर प के पास जा खड़ा होता है.)

जादूगर (गुलाब की पंखड़ी स को देते हुए) : कामरेड, इस मरणोमुखी इनसान को देख रहे हो. इस के सिर के बालों को पीछे चपटे कीड़ों ने किस तरह कुतर खाया है? और ये कीड़े अब माथे

महान कौन ?

महान से महान पुरुष या स्त्री 99 प्रति शत वही है जो तुम हो.

—सूक्ति

पर से रेंगते हुए इस की आंखों में घुस कर रोशनी और तेज को मिटा देना चाहते हैं. वे अंदर ही अंदर इस के मस्तिष्क में पैठ कर इसे खोखला बना देना चाहते हैं. वे चाहते हैं कि इस इनसान का दुनिया से नामोनिशान मिट जाए. तुम्हारा फर्ज है कि इन पीले कीड़ों को जड़ से मिटा दो. इस काम को तुम्हें अंजाम देना होगा. इस पंखड़ी को दोनों हथेलियों के बीच रगड़ो. बारूद और पेट्रोल की मिलीजुली गंध वाला तेल सा तरल द्रव्य इस पंखड़ी से निकलेगा. इस तेल की मालिश तुम्हें इस बुजुर्ग इनसान के सिर पर करनी है जिस से ये पीले चपटे कीड़े मर जाएंगे.

(स पंखड़ी ले कर स्टेज के नीचे जाने के लिए बढ़ता है.)

जादूगर (जोर से) : कहां भागे जा रहे हो? (दर्शकों की ओर इशारा कर)

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तुम इन लोगों के प्रतिनिधि हो. इन लोगों की इच्छा है कि यह घायल इनसान जीवित रहे. तुम्हें इन की इच्छा का खयाल रखना ही होगा. इन का कहना मानना तुम्हारे लिए लाजमी और जरूरी है. तुम फर्ज से मुंह मोड़ कर भाग नहीं सकते.

(स लौट कर अनिच्छा से कार्य कर ज के पास जा कर खड़ा हो जाता है.)

जादूगर (गुलाब की एक पंखड़ी तोड़ कर क को देते हुए) : नौजवान दोस्त, आगे बढ़ो. यह जो पंखड़ी मैं तुम्हें दे रहा हूं, इस का नाम भिलाई स्टील है. अपने साथियों की तरह तुम्हें अपनी हथेलियों के बीच में इस पंखड़ी को मसलना है. तुम अपनी हथेलियों में खौलते हुए फौलाद का अनुभव करोगे. घबराना नहीं. मेरे साथ ही साथ तुम्हारे भी इम्तिहान का वक्त है. यह पिघला हुआ, खौलता फौलाद तुम्हें घायल इनसान के शरीर पर मलना है, ताकि इस का जिस्म फौलाद सा मजबूत बन जाए.

(क भी आज्ञा का अक्षरशः पालन कर स के पास खड़ा हो जाता है.)

जादूगर (घायल व्यक्ति के सामने पहुंच कर): जागो, मेरे बुजुर्ग, मेरी उम्मीद के प्रतीक, जागो! उठो और भक्तजनों, में आस्था की नई चेतना जगा दो!

(सन्नाटा! दो मिनट...तीन मिनट...घायल इनसान नहीं जागता.

निश्चय

निश्चय किया कि झंझट खत्म.
—सूक्ति

जादूगर के चेहरे पर परेशानी के चिन्ह उभरते हैं. वह कुछ क्षण के लिए आंखें बंद कर लेता है.)

जादूगर (भ के पास पहुंच दायां हाथ पकड़ कर उठाते हुए) : उठो, मेरे बुजुर्ग, जागो! मेरे मान सम्मान के प्रतीक तुरंत जा...गो...

(भ का दायां हाथ कंधे के पास से उखड़ कर जादूगर के हाथ में आ जाता है. जादूगर परेशान हो हाथ स्टेज पर रख भ के सीने पर झुकता है. उस की आंखें अंगारे उगलने लगती हैं. चारों के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगती हैं.)

जादूगर (क्रोधमिश्रित गरजते स्वर में) : मेरी जिंदगी के सब से सुनहरे पृष्ठ पर आज कालिख पुतने जा रही है. हालांकि मैं जानता हूं कि मेरा जादू उतना ही सच्चा है जितना आप का मेरे प्रति प्यार. और इसलिए इनसान का उठ खड़ा होना भी उतना ही सच्चा और जरूरी है. ये गुलाब की पंखड़ियां कभी बेवफा और दगाबाज नहीं हो सकतीं क्योंकि इन में मेरी उमर का सारा जादू कैद है. क्योंकि इन पंखड़ियों में आप के द्वारा भेंट किया गया सच्चा प्यार जज्ब है. न चाहते हुए भी मैं कहने को मजबूर हूं कि खोट आप के द्वारा भेजे गए प्रतिनिधियों के हाथों और दिलों में है. सांप्रदायिक और हिंसक मन की कुभावनाओं और प्रवृत्तियों ने अपने कार्यों को सही तौर पर निबाहा नहीं है, नहीं तो यह इनसान अवश्य उठ बैठा होता. खैर इस गुलाब में अभी भी दो पंखड़ियां शेष बची हैं जो इस इनसान को उठ खड़ा कराने के लिए काफी हैं.

(झटके के साथ जादूगर एक पंखड़ी तोड़ भ के दिल के स्थान पर रखता है. फिर दूसरी पंखड़ी दोनों हथेलियों के बीच रगड़ता है. हथेली के खून रिसने लगता है जिसे वह इनसान पर छिटकता है.)

जादूगर (धीमी कमजोर आवाज में): जाग जाओ, मेरे बुजुर्ग! यह मेरी जिंदगी का आखिरी करिश्मा है. इस के बाद न जादूगर रहेगा और न उस का जादू. सिर्फ एक याददाश्त बाकी रह जाएगी.

(घायल इनसान भ उठ बैठता है, जिस का दायां हाथ नहीं है. स्टेज और हाल में अंधेरा हो जाता है. प्रकाश होने पर स्टेज के पीछे टंगे तिरंगे परदे के बीचों-बीच एक गुलाब का फूल नजर आता है.)

(परदा गिरता है) ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरपराध कन्या

जब अश्विनी कुमार ही च्यवन की आंखें ठीक कर के उन्हें युवा बना सकते थे तो च्यवन ने सम्राट से उन की कन्या क्यों मांगी?

घूमतेघूमते महाराज शर्याति ससैन्य अपने दलबल सहित उस वन में पहुंचे जहां महर्षि च्यवन का आश्रम था. साथ में हजारों नरनारियों का समूह था. आश्रम के समीप ही शिविर लगा दिया गया. आमोदप्रमोद के साधन जुट गए. रात को सभी ने डट कर भोजन किया. एकाएक रंग में भंग हो गया. अधिकांश लोगों के पेट में दर्द होने लगा. स्वयं सम्राट भी पीड़ा से कराहने लगे. महाराज ने तुरत इस पीड़ा का कारण जानना चाहा.

चारों ओर खोजी दौड़ाए गए. तभी महाराज को खबर मिली कि महर्षि च्यवन के नेत्रों में पीड़ा हो रही है. महर्षि के क्रोध के कारण यह प्रकोप हुआ है. आप की कन्या ने महर्षि के नेत्र फोड़े हैं. इसलिए वह कुपित हो रहे हैं. डरतेडरते सुकन्या ने स्वीकार किया कि उस ने खेलखेल में चूहों के बिल में तिनका डाला था. उस ने महर्षि को देखा तक नहीं. सभी उपस्थित लोगों ने कहा कि राजन जिन छेदों में राजकुमारी ने तिनका डाला था वे ही महर्षि के नेत्र होंगे. महर्षि महान तपस्वी हैं वह झूठ नहीं बोल सकते. राजकुमारी सुकन्या के कारण सभी को महर्षि का कोपभाजन होना पड़ रहा है. दंडनीय तो केवल राजकुमारी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महाराज ने दांत साध लिया. तुरंत मंत्री परिषद की सभा का आयोजन किया गया. मंत्री परिषद ने निर्णय किया कि महर्षि से क्षमा प्रार्थना की जाए कि अबोध राजकुमारी ने भूल से अपराध किया है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज मंत्रियों सहित महर्षि के पास पहुंचे. महाराज ने दीनतापूर्वक निवेदन किया कि अज्ञानवश राजकुमारी से यह अपराध हुआ है. उस के लिए हम सब क्षमा प्रार्थी हैं. सभी ने करबद्ध निवेदन किया कि महर्षि उन्हें क्षमा करें.

नेत्रों को सहलाते हुए महर्षि गरजे. सम्राट से बहुत अप्रसन्न हुए. क्रोध प्रकट करते हुए उन्होंने जोर से कहा, "आप की कन्या ने मेरे नेत्र फोड़ दिए हैं. नेत्र पीड़ा के कारण मेरी ध्यानवस्था भंग हो गई है. मुझे संध्या, हवन, तर्पण आदि करने हैं. अंधा मनुष्य बिना किसी की सहायता के किस प्रकार अपने दैनिक कार्य कर सकता है!" महर्षि एक ही सांस में सब कुछ कह गए.

महाराज ने महर्षि के समाने प्रस्ताव रखा कि वह उन के लिए सेवकों की व्यवस्था कर देंगे, उन के दैनिक कार्यों के लिए समुचित व्यवस्था हो जाएगी. नेत्र चिकित्सा की आज ही व्यवस्था करा देंगे एवं उन्हें भविष्य में किसी प्रकार की असुविधा नहीं होने देंगे.

महर्षि बोले, "भय, श्रद्धा, लोभ आदि से यथार्थ सेवा नहीं होती राजन! कुछ समय बाद आवेश की शांति पर सेवा का अभाव होने लगता है. आप के सेवकों से मेरी सेवा यथार्थ में नहीं होगी. नेत्रहीन को जीवन भर सेवा चाहिए और यह कार्य केवल जीवनसाथिनी ही पूरा कर सकती है," आगे महर्षि ने स्पष्ट शब्दों में कहा, "महाराज, जिस कन्या ने मेरे नेत्र फोड़ हैं वह कन्या अब मुझे ब्याह दीजिए. केवल सुकन्या ही मेरी सेवा ठीक प्रकार से जीवनपर्यंत कर सकेगी."

महाराज सहमे. एक बार उन्होंने अबोध बाला को देखा और दूसरी बार सफेद दाढ़ी वाले महर्षि को. एक ओर 14 वर्षीया अबोध, निरपराध कन्या और दूसरी ओर 60 वर्षीय सफेद दाढ़ी केशधारी महर्षि. महाराज सोचविचार में लग गए. मंत्री परिषद ने समझाया कि कन्या महर्षि को सौंप कर उन के कोपभाजन से मुक्ति पाई जाए. साथ के अन्य लोगों ने भी हां में हां मिलाई. कन्या महर्षि को अर्पित कर महाराज शर्याति सैन्यसहित राजधानी लौट गए. सुकन्या महर्षि की सेवा करने लगी. वैद्यराज अश्विनी कुमारों ने महर्षि को ऐसी बलवर्धक औषधियां खिलाईं कि कुछ दिनों में वे युवा पुरुष बन गए. तात्पर्य यह है कि महर्षि च्यवन ने वृद्धा अवस्था में युवावस्था का लाभ उठाया.

उपर्युक्त कहानी पुराण में वर्णित है. कहानी पढ़ कर पाठकों को भी पीड़ा हुई होगी. एक निरपराध कन्या के साथ कितना अत्याचार हुआ. अस्वस्थता की अवस्था में वैद्य को दिखलाना चाहिए था. पीड़ाग्रस्त महर्षि की चिकित्सा होनी चाहिए थी किंतु पीड़ा का कारण दैवी प्रकोप ही मान लिया गया.

महाराज ने महर्षि के सामने न्याय संगत प्रस्ताव रखा कि वह नेत्रों की चिकित्सा करा देंगे, सेवा के लिए सेवक देंगे. किंतु उन महर्षि कहे जाने वाले व्यक्ति को एक भी प्रस्ताव उचित नहीं लगा. उन्होंने अपनी सेवा के लिए कन्या की मांग की जो उन के सामने नातिन से भी छोटी थी. अश्विनी कुमारों ने उन्हें औषधि खिला कर वृद्धा से युवा बना दिया. उन के नेत्र भी ठीक हो गए. क्या कन्या ब्याहने की जगह वे अपने नेत्र अश्विनी कुमारों से नहीं बनवा सकते थे?

पुराण में वर्णित यह कहानी कल्पित ही हो किंतु सतयुग कहे जाने वाले समय का यह एक उदाहरण है. ●

दुनिया मूर्ख कहे तो परवा नहीं; उस बात का हमेशा ध्यान रख कि वह दुष्ट न कहे.

—सूक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिखरे मोती

उच्छृंखलता के वातावरण में पली बीनू जब एक दिन नैतिकता की सीमाओं को तोड़ कर आगे बढ़ी तो योगेश ने उसे रोकने की कोशिश की. लेकिन बीनू ने सभी सीमाओं को लांघ जाने का फैसला कर लिया...

आज शाम की गाड़ी से कनु आ रही है और दो दिन बाद बीनू भी आ जाएगी. आज ही बीनू का पत्र आशा के पास आया है. पर न जाने क्यों, बीनू के पत्र को पढ़ने के बाद से आशा के मन में एक अव्यक्त उदासी व घुटन सी भर गई है. बीनू के पत्र में बेटी के प्यार की मिठास न हो कर दो तलवारों के परस्पर संघर्ष से उत्पन्न एक खनक सी है. अपने आने की सूचना और कुशलक्षेम देने के पश्चात उस ने लिखा है : "मां, तुम्हारी बीनू इस बार केवल तुम्हारे प्यार की छाया में ही रहने को नहीं आ रही बल्कि साथ ला रही है अपने मन में दिनरात घुटते प्रश्नों का भंडार, जिन का उत्तर उसे तुम्हीं से प्राप्त करना है. मेरी आज की इस परिस्थिति के लिए मैं तुम्हीं को उत्तरदायी समझती हूं. आज मैं अपने जीवन के उस आयाम से गुजर रही हूं जहां मेरा किसी क्षण का निर्णय मुझे सृजन अथवा विध्वंस के मार्ग पर ले जाएगा."

बीनू के पत्र की इन पंक्तियों ने आशा को उद्विग्न कर दिया है. वह समझ नहीं पा रही है कि ऐसा क्या हो गया है जो आज बीनू अपनी मां को ही दोषी समझ कर उसी के पास अपने जीवन की सुखशांति का समाधान खोजने आ रही है.

पिछली बार जब वह बीनू की बेटी मीना के जन्म दिन पर उस के पास गई थी, तब तो वह बड़ी ही खुश थी और गरिमामयी गृहिणी सी उस शुभ कार्य का सारा काम संभालती फिर रही थी. उस समय तो बीनू ने किसी भी कलह का आभास नहीं दिया था, फिर एक ही वर्ष में क्या हो गया है उसे?

अपनी जिस संतान के सुख के लिए वह आज तक अपने जीवन की ऊंचीनीची राहों पर भटकती आई है, समाज से टक्कर लेती आई है, वही संतान अपनी मां को अपराधी के कठघरे में खड़ी कर के किसी दक्ष वकील की भांति उस से जिरह करने आ रही है.

कहानी

•

प्रभा अग्रवाल

कनु व बीनू के ब्याह के बाद से उन्हें सुखी जान कर आशा आश्वस्त थी और स्वयं को मातृत्व के कर्तव्य से मुक्त समझ रही थी. तो क्या यह उस की भूल थी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संभवतः नारी के कर्तव्य कभी भी समाप्त नहीं होते अपितु उत्तरोत्तर बढ़ते ही जाते हैं. पहले उसे अपने जीवन की ही चिंता थी किंतु अब अपनी बेटियों के भविष्य की चिंता उस के कर्तव्य को चुनौती दे रही है.

कनु के आ जाने से घर के एकांत व उदास वातावरण में मिठास घुल गई. राजू मेडिकल के अंतिम वर्ष में था सो उस का आना बहुत ही कम होता था. वैसे समय मिलने पर भी वह घर आना नहीं चाहता था. लखनऊ जैसे बड़े शहर में पढ़ने वाला विद्यार्थी अपने विद्यार्थी धर्म को भूल कर समय मिलते ही जलपानगृहों और गंज की रंगीनियों में अपनी सहपाठिनों के साथ खो जाता था. फिर राजू को तो घर पर कोई आकर्षण ही न था.

दोनों बहनें अपनी गृहस्थी को ले कर व्यस्त थीं. आशा अपनी दिनचर्या में व्यस्त रहती. उस ने कभी अपने बच्चों को मां की ममता का सुख दिया नहीं. दोनों बेटियों के विवाह के उपरांत आशा का जीवन एकरस हो चला था. अब तो केवल कालिज जाने और लड़कियों की कापियों तक ही उस का जीवन सीमित था. जीवन की इस ढलती सांध्य बेला में यौवन के प्रचंड मार्तंड के प्रखर ताप से अपनी देह को गरमाने वाले साथी पीछे—बहुत पीछे छूट चुके थे, और अब तो संध्या भी निशा के निविड़ अंधकार में तिरोहित हो जाने वाली थी. यह अंधकार उसे स्वयं ही पार करना था, जहां उस का कोई साथी नहीं था, कोई सहारा नहीं था.

ऐसी स्थिति में बच्चों का आगमन उस की जीवन संध्या को चांदतारों की सी झिलमिलाहट से भर देता, उस का जीवन स्पंदनशील हो उठता. पर बीनू का पत्र उसे इस स्निग्धता के रसपान से बारबार वंचित कर रहा था, दो दिन उसे दो युग से प्रतीत हो रहे थे. जब तक बीनू स्वयं आ कर उपस्थित नहीं हो जाती, आशा को पल भर भी चैन नहीं मिलने का.

कनु के आने पर आशा ने बीनू के पत्र की चर्चा की तो कनु ने कहा, "हां, मां, जब मैं बीमार था तो योगेश को साथ ले कर बीनू मुझे देखने आई थी तभी वह बड़ी क्लांत व बुझीबुझी सी लग रही थी जैसे उस के मन पर कोई बोझ रखा हो."

बीमार कनु के पास बैठी बीनू एक दिन बोली, "बड़ी भाग्यवान हो, दीदी, जो प्रशांत जैसे उदार व प्रणयी पति तुम्हें मिले हैं."

बीनू की इस बात ने कनु के पीताभ कपोलों पर लज्जा की लालिमा फेर दी, उस का दुर्बल हृदय सुख से धड़क उठा और वह बोली, "चल हट, पगली! तेरा योगेश तो हीरा है हीरा. उस के साथ तू क्या कम सुखी है! कितना खयाल रखता है वह तेरा?"

"हां, दीदी, पर अब तो सब सपना हो गया है. . ." बीनू इतना ही कह पाई थी कि तभी योगेश के वहां आ जाने पर वह चुप हो गई और फिर कोई बात न हो सकी.

बीनू की गाड़ी एक घंटा लेट थी, आशा व कनु दोनों ही बीनू को लेने स्टेशन आई थीं. कनु का बेटा प्लेटफार्म पर घूमघूम कर रेलगाड़ी के डब्बे व इंजन को बड़े चाव से देख रहा था. उस की बाल सुलभ जिज्ञासा प्रत्येक वस्तु को भलीभांति देख लेने के लिए प्रेरित कर रही थी, बीचबीच में वह कनु से भी प्रश्न पूछता

कनु और उस की मां बड़ी आतुरता से बीनू को ढूंढ़ रहे थे कि तभी पीछे से मां के गले में हाथ डाल कर बीनू जोर से बोली, "मां, दीदी, मैं आ गई."

जा रहा था. इंजन की बनावट, उस का चालक, गोल चिमनी से निकली और तीखी ध्वनि करती हुई भाप—सब कुछ उसे बड़ा अच्छा लग रहा था. उस की कल्पना में भी छोटा सा इंजन उभर आया था जिसे वह स्वयं बनाएगा. उस की कल्पना तकनीक के ऊंचे शिखर पर चढ़ना चाहती थी, आखिर वह भी तो एक इंजीनियर का बेटा था न.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

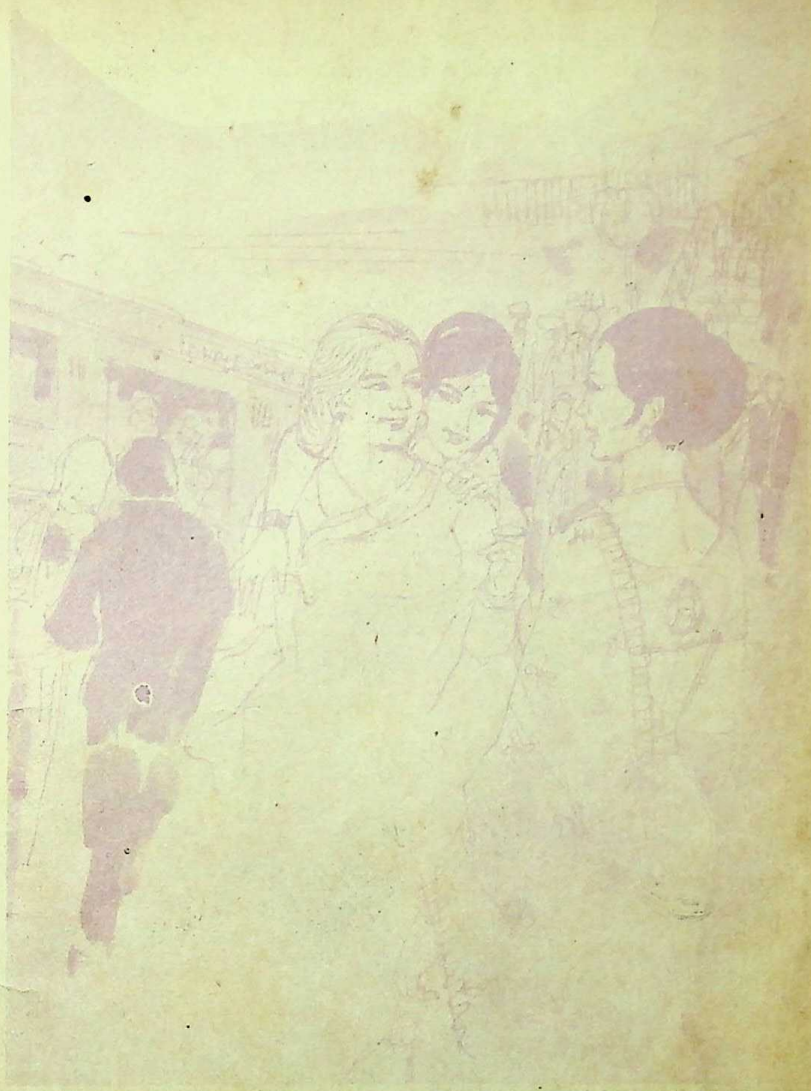

उसी समय लाउड स्पीकर पर घोषणा हुई, "दून एक्सप्रेस प्लेटफार्म नंबर एक पर शीघ्र ही पहुंच रही है."

तभी दून एक्सप्रेस का भीमकाय दैत्य जैसा विशाल इंजन अपनी घोर गर्जना से सारे प्लेटफार्म को हिलाता और जन-समुदाय के हृदयों को दहलाता आगे बढ़ गया और गाड़ी क्रमशः मंद गति होती हुई रुक गई. कनु व आशा की व्यग्र आंखें बीनू को प्रत्येक डब्बे में ढूंढ़ लेने को आतुर हो रही थीं. गाड़ी रुकते ही वह जल्दी-जल्दी विपरीत दिशा में बढ़ने लगीं तभी सहसा पीछे से गले में हाथ डाल कर बीनू बोल उठी, "मां! दीदी!"

आशा ने तुरत ही चूम कर बीनू को अपने प्यार भरे पाश में कस लिया. मां-बेटी के इस संगम को भीड़ की आंखें उत्सुकता से देख रही थीं. थोड़ी देर बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर आ कर वे टैक्सी कर के घर आ गईं.

घर आने पर बीनू मां से उस की दिनचर्या व स्वास्थ्य के विषय में पूछती रही, राजू की पढ़ाई के विषय में बातें करती रही पर जो कुछ आशा व कनु जानना चाहती थीं उस की उस ने तनिक भी चर्चा नहीं की. जब आशा से अपनी जिज्ञासा का अधिक संवरण नहीं हुआ तो वह पूछ बैठी, "क्यों री, बीनू, यह अपने पत्र में क्या लिखा था तू ने! क्या बातें करनी है तुझे अपनी मां से?"

"तनिक धैर्य रखो, मां, अब मैं आ गई हूं तो समस्या भी तुम्हारे सामने रखूंगी ही, इस के बिना मैं वापस नहीं जाने की. पर अभी नहीं, रात को बच्चों के सो जाने पर शांति से ही हो सकेंगी बातें."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक योगेश को केबिन का परदा हटा कर झांकते देख कर बीनू चौंक पड़ी और उस के हाथ से चम्मच छूट कर मेज पर गिर गई. . .

में नहीं चाहती कि दीदी का बबलू अथवा मेरी मीना अपनी इस अपरिपक्व अवस्था में ही इन बातों को जानें अथवा समझें.

उस दिन शरद पूर्णिमा थी, पूर्ण चंद्र की दुग्ध धवल, स्निग्ध चांदनी की शीतल छाया में दोनों बच्चे सुखद निद्रा के आगोश में डूब चुके थे. आशा, कनु व बीनू समीप ही चारपाई पर लेटी थीं. आशा के लिए अब अधिक प्रतीक्षा करना संभव न था. वह उठ कर बैठ गई और बोली, "बीनू बेटा, बता न अपने मन की बात! क्या उलझन है तेरे मन में? तेरे लिए तो मैं ही मां हूं और मैं ही पिता. मुझ से कोई दुराव न करना."

"हां, मां, तुम्हीं मेरी मां हो और तुम्हीं ने पिता का स्थान भी ग्रहण कर लिया था, यही मेरा दुर्भाग्य है."

"क्या कहती है, बीनू! क्या मैं ने तुझे मां का प्यार नहीं दिया? क्या कभी मैं ने तुझे किसी बात से रोका है? तेरी इच्छानुसार ही योगेश के साथ तेरा ब्याह कर दिया, तब फिर तुझे मुझ से क्या शिकायत रह गई है?"

"काश, तुम मुझे अपने मां के प्यार के साथ ही पिता का संरक्षण भी देतीं, अनुचित कार्यों के लिए मेरी वर्जना करतीं. मेरी इच्छानुसार योगेश से मेरा आंचल बांधने के मुझे विवाहित जीवन का उत्तरदायित्व निबाह सकने की शिक्षा देतीं."

"सचसच बता, बीनू, क्या तू योगेश के साथ सुखी नहीं है? मुझे तो योगेश में कोई अभाव नहीं दिखाई देता. पढ़ा-लिखा और सुदर्शन व्यक्तित्व का है योगेश, फिर तू तो पागल थी उस के लिए."

"हां मैं उस के लिए सचमुच ही पागल हो गई थी पर अब वह उन्माद व भ्रम टूट चुका है. अब हम एकदूसरे को सह नहीं सकते."

"यह पहेलियां सी न बुझा, बीनू! पूरी बात खोल कर बता तो कुछ हल भी खोजा जाए इस समस्या का," कनु बोली.

अब बीनू के स्मृतिपट पर अतीत के चित्र एकएक कर उभरने लगे. जब बीनू ब्याह कर अपनी ससुराल पहुंची थी तो द्वार पर बेटेबहू की आरती उतारती सासबहू के चांद से मुखड़े को देख कर हर्ष से गद्गद् हो उठी थी और मन ही मन योगेश की पसंद की सराहना किए बिना न रह सकी. मुंह दिखाई के समय योगेश का चचेरा भाई हरीश, भाभी की बलैयां सी लेता बोला, "लाओ, भाभी इस सलोने चांद से मुखड़े पर काजल का टीका लगा दूं अन्यथा नजर लग जाएगी."

उस के विवाह की पार्टी में उस की सहेली रमा, जो कभी योगेश को अपने प्रणय जाल में फंसा चुकी थी और बीनू से योगेश का ब्याह हो जाने से जलीभुनी बैठी थी, उसे बधाई दे कर व्यंग्य कसती हुई बोली, "अपनी इस चंपाकली को संभाल कर रखना, योगेश! कहीं गरम हवा के झोंके से शीघ्र ही मुरझा न जाए." रमा के इस व्यंग्य से बीनू तिलमिला कर रह गई थी. रमा योगेश के कालिज में ही लेक्चरार थी.

बीनू विवाह के पहले से ही किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह के बाद भी उस ने अपनी नौकरी नहीं छोड़ी. योगेश को इस में कोई आपत्ति नहीं थी. नारी की स्वतंत्रता का, उस के स्वावलंबी होने का वह पक्षपाती था और फिर आर्थिक लाभ किसे बुरा लगता है. योगेश को कालिज में थोड़े ही पीरियड्स पढ़ाने पढ़ते थे इसलिए वह प्रायः तीन बजे तक घर आ जाता था. किंतु बीनू को पांच बजे से पहले छुट्टी न मिलती. कभी-कभी योगेश बीनू के आने से पहले ही अपनी चाय बना कर पी लेता और अकेलेपन को दूर करने के लिए किसी मित्र के पास चला जाता, अथवा किसी मित्र को साथ ही अपने घर ले आता.

योगेश को अपनी चाय बनाते देख कर उस के मित्र चुटकियां लेते, "कमाऊ बीवी के पति हो न, योगेश, इस कारण यह गृहस्थी के कार्य तुम्हें स्वयं करने पड़ते हैं अन्यथा तुम्हारे कालिज से वापस आने पर भाभी स्वयं अपने हाथों गरम चाय का प्याला तुम्हें देतीं, साथ ही अपनी प्यारी मुसकान से तुम्हारे मन को तृप्त कर देतीं."

योगेश हंस कर बात को टाल देता और कभी कहता, "पढ़ीलिखी नारी केवल घर तक सीमित रहने के लिए ही नहीं है, प्रकृति ने जब उसे बुद्धि दी है तो उस का उपयोग भी होना चाहिए. गृहस्थी के यह छोटेमोटे काम तो कोई अनपढ़, गंवार नौकर या नौकरानी भी कर सकती है."

"तो तुम नौकर क्यों नहीं रख लेते अपने काम के लिए?"

"भई, आजकल नौकर तो मिलते ही नहीं हैं और जो मिलते भी हैं उन पर घर छोड़ा नहीं जा सकता, और बीनू तो सारा दिन बाहर ही रहती है." और फिर बात वहीं समाप्त हो गई.

उस दिन वर्षा थमने का नाम ही नहीं ले रही थी और योगेश को कालिज अवश्य पहुंचना था क्योंकि परीक्षाएं चल रही थीं. बीनू अपने काम पर पहले ही जा चुकी थी. आखिर योगेश वर्षा में भीगता हुआ कालिज पहुंचा. कालिज छूटने से

पासा पलट गया

मेरे पड़ोस में एक चौबेजी हैं. उन के जीवन का सिर्फ एक ही उद्देश्य है कि दूसरों का माल खाओ और खुश रहो. एक बार वह हमारे परिवार के साथ गंगाजी गए, तो उन्होंने हमारा माल खूब छक कर उड़ाया. मुझे बड़ा गुस्सा आया और मैं बदले में उन का माल काटने की सोचने लगा. मेले में ही दूसरे दिन वह मुझ से बोले, "चलो, दही ले आएं." मैं उन के साथ चल पड़ा. हलवाई से दही खरीद कर वह मुझ से कहने लगे, "मुन्ने, कुछ खा लो."

मैं ने मन में सोचा कि बदला लेने का मौका अच्छा है. अतः मैं ने खाना शुरू कर दिया. उन्होंने भी छक कर दही खाया. फिर जब हम डेरे पर लौटे तो मैं यह देख कर हैरान रह गया कि चौबेजी पिताजी से कह रहे थे कि बाकी पैसे तो मुन्ने ने खा लिए! अब मेरी समझ में आया कि पैसे पिताजी ने ही दिए थे और इस तरह उन्हें मूड़ने के चक्कर में मैं उलटा मूर्ख बन गया.

—अशोककुमार यादव, दिल्ली

✦

कुछ मास पूर्व मैं बस से यात्रा कर रहा था. यात्रियों में अधिकांश सिख ही थे, यहां तक कि बस का ड्राइवर भी. यात्रियों में एक गोरखा भी था. वह बस में सिगरेट पीने लगा तो ड्राइवर ने उस से मना किया. इस पर गोरखा बोला कि धुआं तो वह खिड़की से बाहर ही छोड़ रहा है, फिर क्या परेशानी है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले जब वह स्टॉफ रूम में बैठी थी तभी वहां पर रमा आ गई और बोली, "क्या बात है, योगेश, आज बड़े सुस्त नजर आ रहे हो?"

"हां, रमा लगता है जैसे ज्वर हो आया है, आज सुबह मैं काफी भीग गया था. बस अब घर जा कर गरमगरम चाय पी कर आराम करूंगा तो सब ठीक हो जाएगा."

"पर बीनू तो अपने आफिस में होगी, तुम्हारी चाय कौन बनाएगा? चलो मैं तुम्हारी सहायता कर देती हूं," इतना कह कर वह योगेश के मना करने पर भी उस के साथ घर आ गई. आज सुबह वर्षा के कारण महरी नहीं आई थी सो सब घर अस्तव्यस्त सा पड़ा था. बीनू तो खाना खा कर आफिस चली गई थी, उसे इतना समय कहां था कि घर की सफाई में लगती. रमा कमरों के निरीक्षण के उपरांत बोली, "घर तो खूब सजा रखा है तुम्हारी बीनू ने! ऐसी सुघड़ पत्नी लाने के लिए तुम सचमुच बधाई

"बीनू का इस में कोई दोष नहीं, वह तो आफिस के काम से ही थक जाती है. आज नौकरानी के न आने से घर का यह हाल है, रमा! तुम तो स्वयं बाहर काम करती हो इसलिए बीनू की कठिनाइयों को समझ सकती हो," योगेश ने कहा.

"मैं तो यों ही परिहास कर रही थी, तुम बुरा न मानो," कह कर रमा चाय बनाने में व्यस्त हो गई.

उस दिन शाम को बीनू आफिस में ही टाइप करती रही, कुछ आवश्यक पत्र थे जिन का उत्तर उसी दिन जाना था. कार्य समाप्त हो जाने पर उस के मालिक शांतिलाल ने कहा, "आज तो तुम्हें काफी देर हो गई है, बीनू! चलो मैं तुम्हें घर छोड़ दूं." बीनू कोई आपत्ति न कर उन के साथ घर आ गई. यों भी शादी से पहले से ही वहां काम करने के कारण वह उन से काफी खुली हुई थी. वह प्रायः उन के साथ चाय पीने चली जाती और कभीकभी पिक्चर भी चली जाती. आधुनिकता में पली बीनू सोचती कि यदि मालिक को खुश करने के लिए थोड़ा रसदान भी करना पड़े तो क्या हानि है? फिर उसे भी तो प्रतिदान मिलता ही है. घर पर मां ने भी कभी नहीं रोका उसे इस आचरण के लिए. घर आने पर गाड़ी से उतर कर वह बोली, "आइए सेठजी, अपने पतिदेव से आप का परिचय करा दूं, वह आप से मिल कर बड़े ही प्रसन्न होंगे."

"अब तो देर हो रही है, फिर कभी मिलेंगे," कह कर शांतिलाल ने गाड़ी स्टार्ट कर दी.

अंदर आने पर बीनू ने योगेश को ज्वर में पाया तो उसे दुख हुआ. अपने देर से आने का कारण बताते हुए उस ने यह भी बताया कि स्वयं फर्म का मालिक उसे घर तक छोड़ गया है. उस दिन बीनू काफी थकी हुई थी सो उस ने खाना नहीं बनाया. योगेश को ज्वर के कारण खाना ही नहीं था और घर सब अस्तव्यस्त

लेकिन वह ड्राइवर सरदार नहीं माना. फिर दोनों बस से नीचे उतर कर एक दूसरे से भिड़ गए. गोरखे ने ड्राइवर के एक जोर का मुक्का मारा कि उस सरदार की पगड़ी नीचे गिर पड़ी, और जैसे ही पगड़ी नीचे गिरी, उस में से एक माचिस और सिगरेट की डब्बी निकल पड़ी. यह देख कर तो सभी दंग रह गए. बस ड्राइवर उस सरदार की हालत तब देखते ही बनती थी.

ललितराज, नई दिल्ली ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने मित्रों के अनुभव भेजिए. प्रकाशित होने पर पांच रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन योगेश को तीव्र ज्वर था इस कारण बीनू को छुट्टी लेनी पड़ी. दिन में रमा योगेश को देखने आई तो बीनू घर पर ही थी.

आज आठ दिन हो गए हैं पर योगेश का बुखार नहीं उतरा, बीनू भी चिंतित है क्योंकि अब उसे अधिक छुट्टी नहीं मिल सकती. उसी वर्ष मीना के जन्म पर वह काफी छुट्टियां ले चुकी थी और इधर भी सात दिन हो गए थे. अंततः योगेश को दवा इत्यादि दे कर और शेष आवश्यक वस्तुएं उस के पास ही रख कर वह आफिस चली गई. आफिस में भी उस की सात दिन की अनुपस्थिति के कारण फाइलों के अंबार लग गए थे, उस दिन वह चाहते हुए भी शीघ्र न आ सकी.

इधर बीनू के न होने से उस दिन योगेश को भी पर्याप्त असुविधा हुई. शारीरिक अथवा मानसिक पीड़ा में अपने निकटतम प्रिय का सान्निध्य पीड़ा की तीव्रता को कम कर देता है और बीनू तो उस की प्राणाधिका प्रिया थी. बीनू के आफिस से आने पर आज प्रथम बार योगेश ने कहा, "बीनू, तुम्हारा नौकरी करना सच ही ठीक नहीं है. देखो न, आज तुम्हारे बिना मुझे कितना कष्ट हुआ है! अब तुम थक कर वापस आई हो तो तुम्हें मेरी परिचर्या करनी पड़ेगी और घर का काम भी करना ही पड़ेगा."

"बस, इतनी सी बात में ही परेशान हो उठे. मुझे तो तुम्हारी सेवा से कोई थकान नहीं होती और क्या तुम बीमार ही रहोगे? अब जल्दी स्वस्थ हो जाओगे."

"नहीं, बीनू, यह बात नहीं है, तुम्हें सत्य ही बाहर काम नहीं करना चाहिए. मीना के जन्म पर मां तुम्हारी नौकरी के कारण ही नाराज हो कर चली गई थीं और मीना को भी साथ ही ले गई थीं कि उस की देखभाल यहां कौन करेगा?"

"छोड़ो भी, कहां कि बातें ले बैठे? अच्छा लो, दवा पी लो, तुम्हारी दवा का समय हो गया है," बीनू बोली और उस दिन बात आगे न बढ़ सकी.

योगेश की बीमारी का समाचार पा कर मां मीना को साथ ले कर उसे देखने आ गई. बीनू अपने काम पर गई हुई थी जब मां आई थी. मां आते ही बेटे की परिचर्या में व्यस्त हो गईं. शाम को वापस आने पर बीनू सास को देख कर प्रसन्न हुई और उस ने मुक्ति की सांस ली. दोहरे कर्तव्य से वह सच ही क्लांत होती जा रही थी.

अगले दिन छुट्टी होने पर जब शांतिलाल ने उस से कहीं चल कर काफी पीने का प्रस्ताव किया तो वह सहर्ष तैयार हो गई क्योंकि आज वह योगेश की तरफ से भी मां की उपस्थिति के कारण निश्चिंत थी. आगे की सीट पर बैठते हुए बीनू ने गाड़ी का दरवाजा बंद कर लिया और शांतिलाल ने गाड़ी स्टार्ट कर दी. फिर जब शांतिलाल ने अपना बायां हाथ पीछे से बीनू के कंधे पर रख दिया तो इस पर

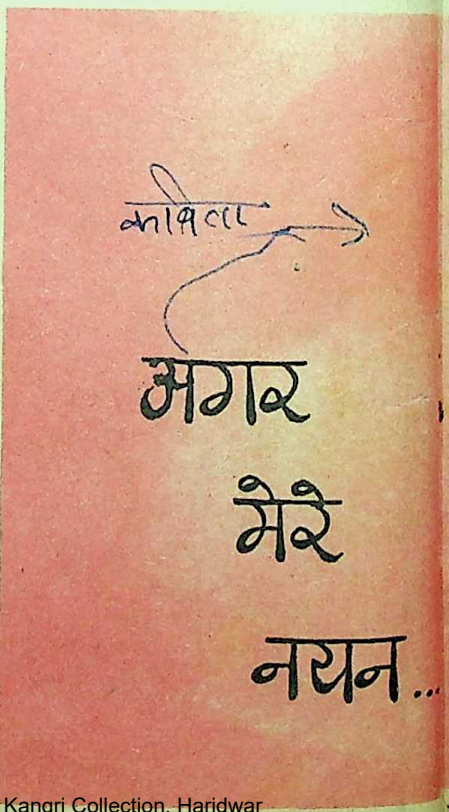

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बीनू अकंपित बैठी रही. धीरे से उसे अपनी तरफ खींचते हुए शांतिलाल बोले, "तुम भी कहां 100 रुपए कमाने वाले प्रोफेसर के चक्कर में पड़ गई, बीना! तुम्हें तो किसी रईस को पसंद करना चाहिए था. जहां गहनों, कपड़ों से सजी दिनरात मोटरों की सैर किया करतीं."

"सैर तो मैं अब भी कर रही हूं, सेठजी," और बीनू ने उन्मुक्त हास बिखेर दिया. तभी काफी हाउस आ गया और गाड़ी रुक गई. काफी पी कर शांतिलाल बीना को घर तक छोड़ने आए तो उतरते समय बीनू ने अनुरोध किया, "मेरे पति बड़े ही उदार व प्रगतिशील विचारों के हैं, वह आप से मिल कर प्रसन्न होंगे. चलिए, आज तो मेरे साथ चलना ही पड़ेगा," सेठजी उस का अनुरोध न टाल सके.

सेठ शांतिलाल ऊंचे भरे पूरे व्यक्तित्व के पुरुष थे. धनी वर्ग के अभिजात की छाप उन की वेशभूषा और मुखमंडल पर स्पष्टतः परिलक्षित होती थी. अत्यंत दुर्बल होने के कारण योगेश चारपाई पर ही लेटा रहा. शांतिलाल उस के समीप ही एक कुरसी पर बैठ गए. थोड़ी देर के औपचारिक वार्तालाप के पश्चात उन्होंने योगेश से क्षमा मांगी, "अब क्षमा चाहूंगा, वर्मा साहब! मुझे आज्ञा दीजिए. ईश्वर की कृपा से आप शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करें!" और यह कह कर अभिवादन में दोनों हाथ जोड़ दिए.

योगेश ने भी बीमारी के कारण न उठ सकने की असमर्थता प्रकट की और औपचारिक क्षमा मांगी. सेठ शांतिलाल चले गए. योगेश सचमुच ही काफी प्रभावित हुआ सेठजी की बातचीत और व्यक्तित्व से. किंतु उस की मां को बीनू का सेठजी के साथ आना अच्छा न लगा. पर वह कुछ न कह सकी. यों भी वह शांत प्रकृति की थी. योगेश के साथ

अगर मेरे नयन तुम से कहीं नाराज हो बैठे,
तो तुम अपने नयन किस के लिए सावन बनाओगी!
बिखर जाने दिए तुम ने अगर निज केश कंधों पर,
तो फिर वे उंगलियां चाहोगी जिन में ये उलझ जाएं.
किसी के पास में बंध कर के सो जाने की चाहत में,
तुम्हारा वक्ष तड़पेगा कि आ जाएं कोई बांहें.
अगर मेरे ही आलिंगन कहीं नाराज हो बैठे,
तो फिर किस चाह में अपना हृदय आंगन बनाओगी!
कली को चूमते कोई भ्रमर देखा अगर तुम ने,
तो तुम अपने गुलाबी होंठ आंचल में छिपा लोगी.
मगर जब लाज का यह आवरण तड़पाएगा तुम को,
तो अधरों पर किसी की याद का चुंबन बिठा लोगी.
अगर मेरे अधर तुम से कहीं नाराज हो बैठे,
तो तुम अपने अधर किस के लिए पावन बनाओगी!
अगर मेरे नयन तुम से कहीं नाराज हो बैठे,
तो तुम अपने नयन किस के लिए सावन बनाओगी!

—रफत अधीर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि बीनू की मां के इतिहास से वह परिचित थी. पर आजकल की पढ़ीलिखी और आधुनिकता की पक्षपाती पीढ़ी के सम्मुख उस की कुछ न चली और बीनू उस के घर की बहू बन कर आ गई. उस की मनमोहिनी देहयष्टि से सास भी प्रसन्न ही हुई थी. योगेश दिल्ली में काम करता था अतः बीनू सास के पास अधिक नहीं रही.

उस दिन कालिज में सेमीनार था, इस कारण काफी देर हो गई थी. एक वर्ष पूर्व रमा का विवाह एक इंजीनियर से हो चुका था. रमा के पति महेश उसे अपनी गाड़ी से लेने कालिज आ पहुंचे. चलते समय रमा ने योगेश से कहा कि वह उसे घर छोड़ती जाएगी. स्वस्थ हो जाने के उपरांत भी योगेश दुर्बलता का अनुभव करता था इसलिए वह सहर्ष तैयार हो गया. घर आने पर रमा व महेश भी बीनू से मिलने को गाड़ी से उतर आए. अंदर आने पर मां ने बताया कि बीनू अभी काम पर से वापस नहीं आई है.

झूठ के बाद

किसी ने अरस्तू से पूछा, "आदमी झूठ बोल कर क्या पाता है?"

"यह कि जब वह सच बोलता है, उस का कभी विश्वास नहीं किया जाता!" अरस्तू ने जवाब दिया.

"अरे भई, बीनू रानी तो अपने सेठजी की सेवा में काफी हाउस में होंगी इस समय." रमा के इस व्यंग्य से योगेश तिलमिला कर चीख उठा, "रमा! हद होती है हर बात की. बीनू मेरी पत्नी है, उस प्रकार लांछन लगाते लज्जा नहीं आई?"

"चीखते क्यों हो, योगेश? सत्य कभी छिपा नहीं रहता. क्रोध कर के तुम मुझे चुप करा सकते हो पर दुनिया को नहीं. किसकिस को तुम बताओगे कि बीनू निर्दोष है. जो काम समाज की मर्यादा की सीमाओं का अतिक्रमण करे, वही बुरा है!"

रमा की इस उक्ति से योगेश निरुत्तर हो गया, फिर रमा व महेश के चले जाने पर भी वह खिन्न मन ही रहा. उसे याद हो आया कि एक बार उस के मित्रों ने भी बीनू को सेठ शांतिलाल के साथ देख कर दबी जबान से उस का प्रसंग छेड़ा था. शुक्ला तो उस दिन चौधरी से स्पष्ट शब्दों में कह रहा था, "योगेश ने अपनी पत्नी को बड़ी छूट दे रखी है, जब इस के चोट लगेगी तब होश आएगा. कमाऊ पत्नी के आगे बिल्ली बना रहता है," और योगेश को आते देख कर चुप हो गया था.

अब उस की मां ने कहा, "बहू को नियंत्रण में रखना चाहिए, बेटा! मर्यादा का उल्लंघन करने से परिणाम भयंकर हो सकते हैं. मैं स्वयं ही तुम से यह कहना चाह रही थी. जब से आई हूं, बीनू की लापरवाही देखदेख कर जी दुखी होता है."

उस दिन की घटनाओं से योगेश ज्ञानशून्य हो रहा था. बीनू के आते ही उस पर बिगड़ उठा, "रोजरोज का देर से आना मुझे जरा भी पसंद नहीं है. कहां थी अब तक? क्या कार्य समाप्त नहीं हुआ था?"

"आज क्या हुआ है तुम्हें जो इस तरह बरस रहे हो? 300 रुपए महीने जो वेतन मुझे मिलता है तो क्या हरामखोरी करने का मिलता है? कार्य किए बिना तो कोई कुछ देता नहीं, फिर देरसबेर तो हो ही जाती है. तुम तो पुरुष हो इस बात को जानते हुए भी फिर क्यों इस तरह

(शेष पृष्ठ 139 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागते सपने

अभी सुबह के नौ बजे होंगे. डाक्टर सुधा के कमरे में आया आई.

डाक्टर ने उस की ओर पल भर के लिए देखा फिर रजिस्टर पलटती हुई बोली, "सब बच्चे ठीक हैं न?"

आया ने सिर हिला दिया.

"कोई नया बच्चा?"

"नहीं डाक्टर साहब." आया बोली, "आप से दो जने मिलना चाहते हैं. कार पर आए हैं. एक आदमी है, एक औरत."

डाक्टर सुधा ने एकटक आया को देखा, मानो उस से कुछ पूछना चाहती हो, फिर बोली, "उन्हें अंदर भेज दो!"

आया चली गई और डाक्टर सुधा की दृष्टि बरबस ही द्वार पर जम गई. वह आने वालों का मकसद तो समझ गई थी लेकिन उन्हें देखने की बेताबी थी. उस ने दराज में से एलबम निकाल कर मेज पर रख लिया.

परदा हटा कर पहले एक पुरुष ने कमरे में प्रवेश किया. उस के पीछेपीछे थी एक स्त्री. 40 से ऊपर की उमर होगी पुरुष की और 35 की होगी स्त्री. डाक्टर सुधा ने अनुमान लगाया. पुरुष टैरीन के सूट में था और स्त्री ने सिल्क की साड़ी पहनी हुई थी. वह अपनी कुरसी से उठी. दोनों को नमस्ते का उत्तर दिया और सामने पड़ी कुरसियों पर बैठने का संकेत किया. डाक्टर सुधा ने दोनों की आंखों में बारीबारी से देखा और फिर पूछा, "कहिए, मैं आप की क्या सेवा कर सकती हूं?" साथ ही उस का हाथ एलबम पर चला गया.

"डाक्टर, आप के पास तो एक ही फरियाद ले कर लोग आते हैं," पुरुष बोला, "हम दोनों निराश हो चुके हैं, हजारों रुपए दवादारू में खर्च कर चुके हैं पर हम मांबाप नहीं बन सके. हम बच्चा गोद लेना चाहते हैं."

डाक्टर सुधा ने एलबम दोनों के सामने रख दिया. पर खोलने लगी तो जैसे उसे कुछ याद आ गया. आवाज लगा कर आया को बुलाया, "माया, मधुर को लाना जरा."

आया एक बच्ची को ले आई.

वहां कई बच्चे आए और चले गए पर मधुर को कोई नहीं ले गया...और एक दिन जब वह अनाथालय जाने लगी तो सुधा की आंखों के आगे अतीत का एक पृष्ठ तैर गया...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह आते ही डाक्टर सुधा की सूती सफेद साड़ी पकड़ कर बोली, "मम्मी, तुम ने मुझे बुलाया है?"

"हां, मधुर!" डाक्टर सुधा ने बच्ची दोनों को दिखा कर कहा, "बड़ी नटखट और प्यारी बच्ची है. बड़ी मीठी बातें करती है इसलिए इस का नाम मधुर रख दिया है मैं ने..." यह कह कर उस ने दोनों को आशा भरी दृष्टि से देखा फिर पूछ बैठी, "पसंद है यह आप को? बड़ी सयानी है. अपनी बातों से दिन भर आप को हंसाती रहेगी." फिर उस ने दराज में से कुछ फार्म निकाल कर सामने रख दिए, "इन्हें आप भर दें, बच्ची ले जा सकते हैं. यहां के नियम फार्म के पीछे लिखे हैं. हमारी संस्था के डाक्टर कभी-कभी आप के पास जा कर बच्ची को देखते रहेंगे कि उसे ठीक से पाला जा रहा है या नहीं. उस के साथ व्यवहार कैसा है!"

"डाक्टर साहब," स्त्री बोली, "इस बात से आप बेफिक्र रहें, मैं बच्चे को अपने हृदय का टुकड़ा समझ कर पालूंगी. बच्चे को किसी बात का अभाव नहीं होगा. पर..." कहती हुई वह मधुर को देखने लगी जो डाक्टर सुधा की कुरसी के पीछे खड़ी हुई थी.

"पर क्या?" डाक्टर सुधा ने तत्काल ही पूछा, "आप मधुर को ले जाइए."

"कहां, मम्मी..." मधुर समझ गई कि उसी के बारे में बातें हो रही थीं, बीच ही में बोली, "मैं कहीं नहीं जाऊंगी."

"नहीं, मधुर, देख तेरे मम्मीडैडी आए हैं."

मधुर ने कुरसी के पीछे से झांक कर तिरछी चितवन से दोनों को देखा और ऊंचे स्वर में बोली, "नहीं, मेरी मम्मी तुम हो."

डाक्टर सुधा ने उस से अपनी धोती छुड़ाई और माया को आवाज लगा कर बच्ची को ले जाने को कहा. माया उसे टाफी का लालच दे कर ले गई. मधुर तो डाक्टर को भी साथ ले चलने की जिद्द कर रही थी.

डाक्टर सुधा ने प्रश्न भरी दृष्टि दोनों पर डाली. इस बार फिर पुरुष बोला, "हमें यह बच्ची पसंद नहीं है इस की आंखें ठीक नहीं हैं, नाक भी चपटी है, सूरत भी कुछ ऐसी ही है..." कहते-कहते उस ने मुंह बिचका लिया, "हमें लड़की नहीं, लड़का गोद लेना है."

"लड़का ही क्यों, लड़की नहीं चलेगी." डाक्टर सुधा ने पूछा.

मधुर को कोई दूध पिलाने और पालने को तैयार नहीं था. लेकिन डाक्टर सुधा ने जब उसे देखा तो अचानक उस के मन में हलचल हुई और...

"डाक्टर, लड़की का बोझ भारी होता है, लड़का ठीक रहेगा, बड़ा हो कर शादी कर के बहू लाएगा, घर में रौनक हो जाएगी, लड़की गोद लेंगे तो एक दिन वह हमें फिर अकेला छोड़ जाएगी," पुरुष ने कहा.

"तो ठीक है, लड़का भी लीजिए, लड़की भी गोद लें, लड़के यहां पांचछः हैं और लड़कियां 22 हैं, लड़का चुन लें और मधुर को भी ले जाएं."

"नहीं, डाक्टर, मधुर हमें पसंद नहीं आई," स्त्री बोल पड़ी, "हमें लड़की नहीं लड़का ही गोद लेना है."

जिस बात का डाक्टर सुधा को डर था, वही हुई थी. मधुर को वे भी नापसंद कर गए थे. कमरों में जा कर पालनों में झूलते बच्चों में से तीन मास का लड़का वे ले गए थे. मधुर वहीं की वहीं थी जब कि डाक्टर सुधा चाहती थी कि वे मधुर को ले जाते. लेकिन वह कर भी क्या सकती थी. उन पर जोर तो चल नहीं सकता थी. उस ने रजिस्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मधुर जब दूसरे बच्चों को किसी अजनबी के साथ जाते देखती तो रोती हुई पूछती, "मेरी मम्मी कब आएगी?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकाल कर बच्चों की संख्या घटा दी. फिर उठ कर कमरों में आ गई जहां आया बच्चों की देखभाल कर रही थी, उन्हें दूध पिला रही थी. जहांजहां डाक्टर सुधा जाती, मधुर उस की उंगली पकड़े साथ-साथ ही रहती.

यों भी डाक्टर सुधा ही नहीं वहां की हर आया मधुर को चाहती थी. उसे प्यार से गोदी में उठा कर चूमती थी. इतना अनुराग किसी को भी किसी बच्चे से नहीं होता था जितना कि मधुर से था. इस का कारण, मधुर तीन वर्षों से उन के साथ थी. इन तीन वर्षों में अगणित बच्चे कुछ दिन मेहमान रह कर चले गए थे. कोई न कोई उन्हें पसंद कर ले जाता था पर मधुर की सूरत सुंदर नहीं थी. चेहरा कुछ टेढ़ा था, ऊपर से वह लड़की थी. इसी लिए डाक्टर सुधा की लाख कोशिशें करने के बावजूद उसे कोई गोद नहीं लेता था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर सुधा की संस्था में आठ आया थीं. संस्था का काम था अवैध बच्चों का पालनपोषण करना. यह संस्था सरकार की सहायता से चलती थी जिस में कुल मिला कर 40 बच्चों को रखने का प्रबंध था पर कई बार जब बच्चों की संख्या बढ़ जाती तो फर्श पर भी बिस्तर बिछाने पड़ते थे.

शिशु सुधार संस्था के मुख्य द्वार पर लकड़ी का कमरा बना हुआ था जिस में एक पालना लटका रहता था. ज्योंही उस पालने में कोई बच्चा रखता अंदर घंटी बजने लगती, आया दौड़ कर आती और बच्चे को सीने से लगा कर अंदर ले जाती. अपने हृदय के टुकड़े को दिल पर पत्थर रख कर छोड़ जाने वाली स्त्री होती या कोई पत्थर दिल पुरुष, यह जानना उस संस्था का कार्य नहीं था. न ही उन्हें बच्चा रख कर जाने वाले की सूरत देखने की आज्ञा थी, पीछा करना तो दूर की बात थी. संस्था का केवल एक काम था—उस बच्चे को मां का प्यार देना, उसे पालना.

कुछ बच्चे पुलिस द्वारा भी लाए जाते थे जो सड़क के किनारे, नालियों में पड़े मिलते थे. वे बच्चे भी वहां पलते थे. जहां वह संस्था थी उस इलाके के शरारती लड़के रात के अंधेरे का लाभ उठा कर पालने में ईंटें रख जाते थे, आया नया बच्चा समझ कर दौड़ी आती थी पर ईंटें देख उन शरारती लड़कों को कोसती जो सड़क पर खड़े हंस रहे होते.

जिन लोगों के बच्चे न होते, वे गोद लेने की इच्छा से वहां आते. डाक्टर सुधा के साथ एक और सहायक थी—डाक्टर शर्मा. वे दोनों वहां ड्यूटी पर रहतीं. डाक्टर शर्मा विवाहिता थी इसलिए दिन की ड्यूटी अधिक पसंद करती और डाक्टर सुधा अविवाहिता सी थी, उस के लिए विशेष अंतर की बात नहीं थी. वह अधिकतर रात की ड्यूटी पर रहती.

जितने लोग भी बच्चे गोद लेने आते, डाक्टर सुधा उन के सामने तमाम बच्चों के चित्र रख देती. उस के बाद बारीबारी से वह पालने में हाथपांव मारते बच्चे दिखाती. जिसे वे पसंद करते, डाक्टर सुधा उन से फार्म भरवा कर सुरक्षित रख लेती. पर सदा से डाक्टर सुधा को अचंभा रहा था कि अधिकतर गोद लेने वाले लड़के ही गोद लेना पसंद करते थे. लड़कियों को देख कर लोग यों मुंह बिचका लेते थे मानो मुंह में कुनैन की गोली आ गई हो. कई दंपति तो उस के दफ्तर से ही खाली हाथ लौट जाते थे, जब वह डाक्टर सुधा से सुनते कि उन के पास उस समय एक भी लड़का नहीं है.

अकसर लड़कियों को गोद न लेने वाले कहते, "डाक्टर साहब, लड़की गोद ले कर परेशानियां मोल लेने वाली बात है, पहले तो यह पता नहीं कि बड़ी हो कर शक्ल की कैसी होगी. आखिर जिन की संतान होगी, उन के संस्कार तो इस में भी होंगे! पता नहीं, कैसे स्वभाव की निकले. कहीं चरित्रहीन निकली तो बेकार हमारी नाक कट जाएगी. फिर आप तो जानती हैं, हमारे देश में दहेज प्रथा बहुत है. कहां से जुटाते फिरेंगे! लड़का ही ठीक है, बड़ा हो कर कुछ काम तो आएगा, कमा कर लाएगा. हमारा बुढ़ापा भी सुख से बीत जाएगा.

ऐसी बातें सुन डाक्टर सुधा का मन जल जाता. लड़कियों के प्रति इतने हीन विचार रखने वालों से उसे घृणा हो जाती. जो लोग लड़का सिर्फ इसलिए गोद लेने आते थे कि उन के बुढ़ापे की लाठी बनेगा, उस का जी चाहता ऐसे स्वार्थियों को बच्चा गोद न लेने दे. पर वह स्वयं विवश थी मना करने का उसे अधिकार नहीं था. वह हर अच्छेबुरे को बच्चा गोद लेने देती थी.

तीन दिन पूर्व एक लड़की ने उन के परिवार में प्रवेश किया था. उस ने तो आते ही सब के लिए परेशानियां बढ़ा दी

मधुर हाथ हिलाहिला कर चिल्लाने लगी, "मैं नहीं जाऊंगी, मुझे छोड़ दो... मम्मी के पास रहूंगी"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

थीं. डाक्टर सुधा का विचार था, पैदा होते ही उसे निर्दयी मां ने फिकवा दिया था. संस्था की हर आया बच्चे को चुप कराने में असमर्थ रही थी. ऊपर का दूध वह पीती नहीं थी. उस की मां को वह कहां से पकड़ कर लाते जो उसे अपना दूध पिलाती. उस ने तो पहले ही निर्दयी बन बच्चे को फेंक दिया था. क्षणिक शारीरिक सुख के लिए सब कुछ भूल कर युवतियां अपना सब कुछ किसी को सौंप देती हैं और उस का नतीजा इन बच्चों को भुगतना पड़ता है जो दूध के लिए बिलखतेबिलखते दम तोड़ देते हैं. डाक्टर सुधा उस के पालने तक आ गई. आया उसे चम्मच से दूध पिलाने का प्रयत्न कर रही थी पर बड़ी कठिनाई से वह दूध निगलती थी.

डाक्टर सुधा आया से बोली, "रानी इसे अपना दूध दो."

"मेरे अब कहां उतरता है, डेढ़ साल का हो गया है मेरा बच्चा," कह कर रानी ने बच्ची को अपना दूध पिलाना चाहा. वह चुप हो गई. मुंह चलाने लगी पर फिर रोने लग गई. डाक्टर सुधा ने रानी को देखा तो उस की आंखों में अचानक ही एक घटना कौंध गई. डाक्टर सुधा ने देखा, मधुर उस के पास ही खड़ी थी, रोती बच्ची को देख रही थी, फिर नन्हेनन्हे हाथों से उस के गाल थपथपा कर चुप हो जाने को कहने लगती थी.

कई लड़कियां वहां दो वर्ष पूरे कर चुकी थीं. उन्हें किसी ने गोद नहीं लिया था. जो बच्चा तीन वर्ष तक गोद नहीं लिया जाता था उसे अनाथालय भेज दिया जाता था. अनाथालय कोई बच्चा जाए, यह डाक्टर सुधा नहीं चाहती थी इसलिए जो बच्चे तीन वर्ष पूरे कर लेते थे उन्हें वह बहाने बना कर कुछ दिन अपने पास रख लेती थी और जैसा भी होता, उन बच्चों को विदा कर देती थी.

पर बहुत प्रयत्न करने पर भी मधुर को वह विदा नहीं कर सकी थी. कोई उसे

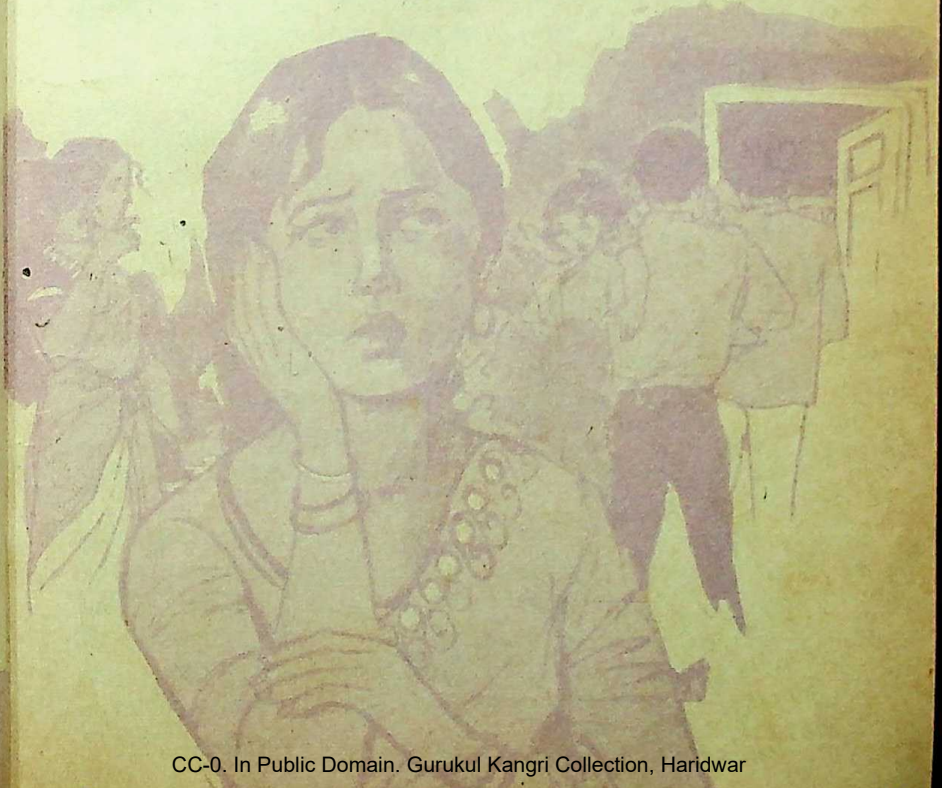

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोद लेता ही नहीं था, सब उसे कुरूप कह कर नापसंद कर जाते थे. सात मास ऊपर हो चुके थे. डाक्टर सुधा अनाथालय लिख कर भेज देती थी कि मधुर बीमार है, उसे टट्टियां लगी हैं. पर अब तो उस के पास बीमारियां भी खत्म हो गई थीं जो लिख कर भेजती. अनाथालय से मधुर को लेने के लिए कई बार आदमी आए थे पर वह उन्हें खाली लौटाती रही थी.

सुबह जब वह ड्यूटी पर आई तो उसे अनाथालय के मैनेजर का फोन मिला था. उस ने स्पष्ट कहा था कि 'मधुर को तैयार कर दें, उसे अधिक वहां रखना संस्था के नियमों के विरुद्ध है.' वह हाथ में चोंगा पकड़े रह गई थी और मधुर उसे 'मम्मीमम्मी' कहती टांगों में आ लिपटी थी. उसे देख कर डाक्टर सुधा की आंखें छलछला आई थीं.

मधुर के जाने के बाद स्वयं उस का भी दिल नहीं लगेगा. दिन भर वह अपनी बातों से उसे हंसाती थी. पर उस समय डाक्टर सुधा के सामने संस्था के नियम थे जिन का वह उल्लंघन नहीं कर सकती थी. उस ने आवाज दे कर माया को बुलाया था और मधुर के अनाथालय जाने की बात बता कर उसे नहला कर तैयार करने को कह दिया था.

तभी एक दंपत्ति आए थे. डाक्टर सुधा की आंखों में आशा जागी थी कि मधुर अनाथालय न जा कर एक अमीर खानदान की बेटी बन कर जाएगी पर वह भी मधुर को नापसंद कर गए थे.

"डाक्टर साहब," आया ने आ कर कहा, "अनाथालय से आदमी आए हैं."

डाक्टर सुधा ने मधुर को जब देखा तो वह खुश सी इधरउधर उछल रही थी, गेंद के पीछेपीछे भाग रही थी. यह देख कर उस की आंखें छलछला आईं. आया का चित भी उचाट हो गया पर मधुर को इस की परवा नहीं थी. वह नहीं जानती थी कि उस के जाने की बात सोच कर ही संस्था का सारा स्टाफ आंसू बहाने लगा था. उसे क्या मालूम था कि अनाथालय जा कर वह इतनी स्वतंत्रता से गेंद के पीछे नहीं भाग सकेगी.

डाक्टर सुधा अपने दफ्तर में आ कर गुमसुम सी कुरसी पर बैठ गई. उस ने सिर पकड़ लिया. अपनी आंखों के सामने वह मधुर को अनाथालय जाता नहीं देख सकती थी. उस के कानों में मधुर का स्वर पड़ रहा था, जो जोरजोर से कह रही थी, "मैं...नहीं जाऊंगी...मम्मी के पास रहूंगी..."

तभी मधुर हांफती हुई कमरे में आई. उस के चेहरे पर भय छाया हुआ था. आंखें भरी हुई थीं. वह आ कर कुरसी की पट्टी पकड़ कर खड़ी हो गई, बोली, "मम्मी ये लोग मुझे पकड़ने आए हैं... इन्हें मारो!"

पर डाक्टर सुधा जैसे बहरी हो गई थी. उस ने मधुर की तरफ देखा भी नहीं.

अनाथालय से आए दोनों आदमियों ने बढ़ कर मधुर को पकड़ लिया, जो डर के मारे मेज के नीचे घुस गई थी. एक ने उसे गोदी लिया और बाहर निकल गया. मधुर 'मम्मी...मम्मी' कहती रोने लगी और डाक्टर सुधा की आंखों के सामने जैसे सफेद परदा पड़ गया और उन पर कई चित्र उभरनेमिटने लगे. वह एकाएक अतीत में डूब गई.

उन दिनों, पांच वर्ष पूर्व जब वह दुलहन बनी थी. पति भी डाक्टर थे दोनों का जीवन सुखकर कट रहा था. विवाह के ठीक ग्यारहवें महीने वह एक बच्चे की मां बन गई थी. सुधा ने संस्था से दो मास की छुट्टी ले ली थी. एक वर्ष के

(शेष पृष्ठ 157 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

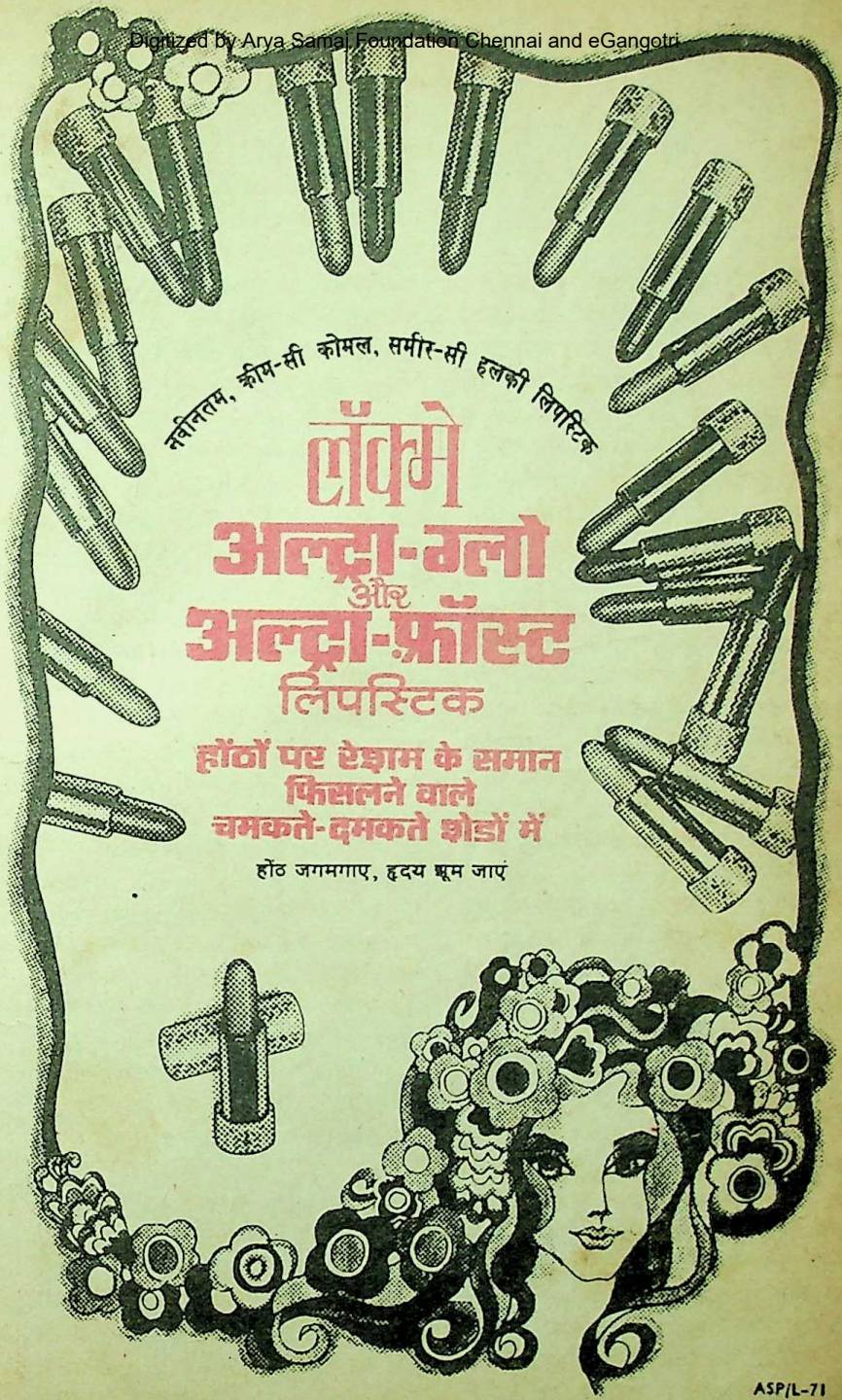

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा बचपन

धारावाहिक उपन्यास • रामेश्वर टांटिया **चौथी किस्त**

अब तक आप पढ़ चुके हैं :

पिछले अंकों में लेखक ने अपने बचपन, उस समय की राजनीतिक व सामाजिक परिस्थितियों तथा गांव के सरल जीवन का चित्रण किया था. अब प्रस्तुत है उस समय के खेलतमाशों और पर्वत्योहारों की रोचक झलक...

अब न तो पनघट हैं और न पनघट की [illegible] कुओं की [illegible] और खेलों में मैला भरा रहता है जिस में सांप बिच्छू और कनखजूरे वास करते हैं. सांप व बिच्छू आदि जहरीले जंतुओं का उस समय भी बाहुल्य था. कई प्रकार के सांपों की चर्चा रहती थी. एक पीने वाले सांप का जिक्र भी रहता था, जिस के बारे में कहा जाता कि वह सोती हुई महिला के स्तनों से और गाय के थनों से दूध पी लेता है. हम ने कभी इस प्रकार के सांप तो नहीं देखे, हां, दूसरे कई प्रकार के छोटेबड़े सांप अवश्य देखने में आते थे.

सांपों के डर के कारण गोगापीर की पूजा लगभग सभी घरों में बड़ी धूमधाम से की जाती थी. इस बारे में हमारे यहां एक लोकोक्ति है : किसी ने पूछा, 'राम बड़ा, या गोगा' जवाब मिला, 'बड़ा तो जो है वही है, पर सांपों से कौन बैर पाले! बालबच्चों का घर है, न जाने कब कोई पिरड़ा ठोंक जाए (सांप डस जाए)!'

और भी बहुत सी दंतकथाएं सांपों के बारे में प्रचलित हैं. कहा जाता है कि एक व्यक्ति ने सांप और सांपिनी को प्रेमक्रीड़ा करते हुए देखा. उस ने पत्थर मारे, सांप मर गया और सांपिन उस समय बिल में चली गई. उस के बाद कई दिनों तक उस व्यक्ति को भयानक सपने आते रहे, वह एक प्रकार से विक्षिप्त सा हो गया. अचानक एक दिन सोते में उसी सांपिन ने आ कर उसे डस लिया और थोड़ी देर बाद ही उस की मृत्यु हो गई.

बसंतपंचमी के बाद कालबेलिए (सपेरे) अपनी डोली और पूंगी ले कर हमारे गांवों में घूमने लगते. बड़े और बच्चे सभी इकट्ठे हो कर नाना प्रकार के सांपों के खेल देखते. हम सभी का अच्छाखासा मनोरंजन हो जाता. कभी-कदास जब कालबेलिया किसी दर्शक के गले में सर्प डाल देता तो उस व्यक्ति की डर के मारे घिग्घी बंध जाती, दूसरे सभी दर्शक हंसते रहते. हम बच्चे आतंक से भयभीत हो अपनेअपने घरों में भाग जाते थे.

कालबेलिए एक प्रकार की जड़ी बेचते जिस के लिए उन का दावा था कि इस जड़ी को सर्पदंश की जगह लगा देने से जहर उतर जाता है. हर गांव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा गांव

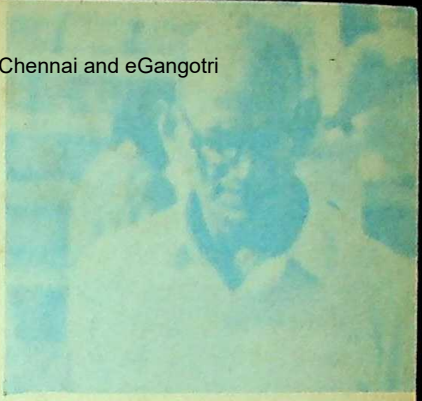

और कसबे में सांप या बिच्छू के काटने पर झाड़फूंक करने वाले सयाने या ओझा भी रहते. पता नहीं, जहर की कमी से या झाड़फूंक के विश्वास के कारण कुछ लोग किसी सांप के काटने के बाद भी बच जाते थे, लेकिन अधिकांश व्यक्ति काल के गाल में चले ही जाते.

सांपों के खेल में नेवले और सांप की लड़ाई बहुत दिलचस्प होती थी पर हम बच्चे भयभीत हो जाते. सांप का फन उठा कर फुंकार मारना और नेवले का झपट कर दांतों से प्रहार करना बड़ा ही आतंककारी लगता. जब दोनों लहू-लुहान हो जाते तो मदारी खेल समाप्त कर देता. किसीकिसी के पास बहुत बड़ा अजगर भी रहता, जिस का वजन सवा मन तक होता था.

सांपों के अलावा हमारे वहां पाटड़ा गो, चंदन गो, चितकबरा, गोहीड़ा आदि भयानक जहरीले जंतु भी होते जो जंगल, खेतों और गांवों में रहने वालों को कभीकभी काट लेते. इन का जहर बहुत तेज होने के कारण और उपयुक्त ओषधि के अभाव में लोग बेमौत मर जाते. लेकिन लोग इन जानवरों से बहुत सावधान रहते थे. यदाकदा इन जानवरों को मार डालने के समाचार मिलते रहते. मारने वाले 'हीरो' की चर्चा कई दिनों तक होती.

पीलेकाले, छोटेबड़े, कई प्रकार के बिच्छू हमारे थली क्षेत्र में बहुतायत से थे. इन का जहर 24 घंटों तक रहता.

सपेरे की बीन बजी नहीं कि सांप फन उठा कर मस्ती में झूमने लगे. . .

पहले तीनचार घंटे तो रोगी बहुत छटपटाता और रोताचिल्लाता. इन सब के अलावा कनखजूरा, टांटिया, मधुमक्खी आदि अन्य छोटेमोटे जहरीले जंतु भी थे.

हमारी जाति टांटिया क्यों हुई, इस के बारे में वहां यह कथा प्रचलित है कि हमारे किसी पूर्वज की हवेली के बाहर टांटियों का एक बड़ा छत्ता था जिस के पास से गुजरने से लोग डरते थे. उस हवेली का नाम टांटियों वाली हवेली पड़ गया और उस में रहने वाले हमारे पूर्वज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टांटिया कहलाने लगे. अंगरेजी में चूंकि टांटिया और तांतिया एक ही प्रकार से लिखा जाता है इसलिए अब हमें बहुत से व्यक्ति इतिहास प्रसिद्ध तांतिया टोपे के वशंज मान लेते हैं. एक दिन मेरे पास तंतु महासभा का भी पत्र आया. उन्होंने मुझे बधाई देते हुए लिखा कि बड़े गर्व की बात है कि हमारी जाति का एक व्यक्ति संसद का सदस्य और कांग्रेस संसदीय पार्टी का कोषाध्यक्ष चुना गया है. उन्होंने मुझे अपने शहर में आमंत्रित भी किया था. मैं ने उन्हें जवाब दिया कि 'भाई, अफसोस है, मैं आप की जातिबिरादरी का नहीं बल्कि अग्रवाल वैश्य हूं.'

अब न तो सांपबिच्छू ही उतनी संख्या में दिखाई पड़ते हैं और न झाड़-फूंक करने वालों का उतना दबदबा ही है. पक्की सड़कें हो गई हैं, झोपड़ियों की जगह पक्के, मकान बनते जा रहे हैं और धीरेधीरे जहरीले जंतुओं का ह्रास होता जा रहा है.

जैसा कि मैं ने लिखा है, हमारा कसबा बहुत बड़ा नहीं था. हां, हमारे यहां धनाढ्य वैश्यों का निवास अवश्य था. ये लोग देशावरों से धन कमा कर लाते और बड़ेबड़े मकान, हवेलियां, मंदिर और धर्मशालाएं बनवाते थे. उन हवेलियों में जो पत्थर लगता वह या तो सीकर के पास से रघुनाथगढ़ से आता या जोधपुर के खाटू गांव से. मकराने का पत्थर यानी संगमरमर बहुत ही कम हवेलियों में

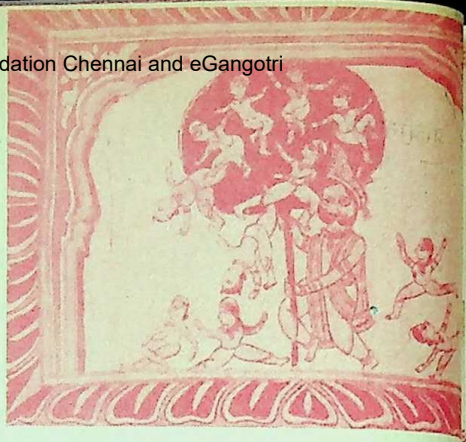

लगता. लेकिन मकराने से भी ज्यादा चमक आती सिमले की घुटाई से. सिंघराज पत्थर के चूर्ण से यह सिमला तैयार होता था.

बहुत ही सुंदर और कलात्मक ढंग के राजपूत शैली में लगभग सभी हवेलियों के बाहर और भीतर भित्तिचित्र बने होते थे. रंगों का सम्मिश्रण इतना उम्दा होता कि 100 वर्ष पहले के चित्र आज भी चमकदार और सुंदर लगते हैं. इन भित्तिचित्रों में भगवत भक्ति के अलावा ऐतिहासिक तथ्यों का भी पर्याप्त समावेश होता है.

मुझे बचपन की एक बात अच्छी तरह याद है. हमारे पड़ोस में एक नई हवेली बनी थी. उस की बाहरी दीवार पर एक बड़ा चित्र था जिस में भीम को राजपूती भेस में अंकित किया गया था. एक बड़े वृक्ष को हिला कर वह उस पर चढ़े कौरवों को गिरा रहा था. मैं जब भी उस चित्र को देखता, डर से आंख मींच लेता. आज भी वह चित्र मेरी बाल्यकाल की स्मृति को अपने में समेटे हुए वहीं अंकित है. मैं अब भी जब गांव जाता हूं तो उसे देखता हूं. भीम की राजपूती दाढ़ी, बड़ी पाग और लंबाचौड़ा घेरदार बागा देख कर हंसी आ जाती है. उस जमाने में सब से दर्शनीय मकान था सेठ संपतराम की चौपड़े की महफिल, जिस में सोने का काम किया हुआ था. हमारे यहां बाहर से परातें आतीं या अन्य जो

बचपन में पर्वत्योहारों का जो सुखद, आनंदमय रूप देखा है वैसा अब कहां! साजों की धुन पर सब स्त्रीपुरुष भेदभाव भूल कर मस्ती से झूम उठते थे...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन हवेलियों की दीवारों पर बने राजपूत शैली के सुंदर और कलात्मक भित्ति चित्रों का अपना अलग महत्व है. सैकड़ों वर्ष पहले बने यह चित्र आज भी सजीव लगते हैं.

भी यात्री आते, उस महफिल को अवश्य देखते.

इस संदर्भ में मुझे एक बात और याद आती है. हमारी हवेली का ऊपरी हिस्सा बन रहा था. चूना तैयार करने के लिए रात में छाणों (सरकंडे) की आग में एक विशेष प्रकार के पत्थर रख दिए जाते. दूसरे दिन सुबह हम बच्चे उन सफेद फूले हुए पत्थरों को चिमटों से चुन लेते और पानी के मटकों में डालते. उस समय 'बुदबुद' की आवाज आती. हमें इस आवाज से खुशी होती. लेकिन इस से भी अधिक खुशी और संतोष होता यह महसूस कर के कि हम बच्चे भी निर्माण के काम में यथा सामर्थ्य सहयोग दे रहे हैं. मुझे 55 वर्ष पहले की वह बात अच्छी तरह से याद है कि हमारे चेजारे (राजमिस्तरी) रमजान, कादर, अलाबक्श और रहीम—चारों भाई परिवार के सदस्य की तरह थे. बालिया नाम के एक बहुत परिश्रमी मजदूर की भी याद है जिसे हम चुपके से अपनी मिठाई का कुछ हिस्सा दे देते.

उस समय चूने की घुटाई इतनी महीन और चमकदार होती कि बहुत समय तक उस में चेहरा देखा जा सकता था. घुटाई करने वाली महिलाएं बहुत ही मधुर और भावपूर्ण गीत गाती रहती थीं. खेद है, मुझे वे लोकगीत इस समय याद नहीं हैं.

मकानों के वर्णन में एक बात मैं भूल गया. राजस्थान में मई और जून के महीने में इतनी भीषण गरमी पड़ती है कि तापमान 117-18 अंश तक पहुंच जाता है. दोपहर में सांयसांय कर के गरम हवा, लू और आंधी चलती रहती है. ऐसी तपन में कुछेक धनवान लोगों के कमरे में झालरदार पंखे लगे रहते, जिन्हें रस्सी से खींचा जाता. कुछ लोग खस और कांटों की टट्टियां खिड़कियों पर लगा कर उन पर पानी छिड़कते रहते. इस के अलावा कई मकानों के नीचे तहखाने बने रहते जिन में बालू और रेत बिछा कर पानी डाल दिया जाता और उस पर पलंग डाल कर दिन में लोग आराम करते या ताशचौपड़ खेलते. यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उस कड़ी गरमी में भी वहां ठंडक का अनुभव होने लगता. आज एयर कंडीशनर और एयर कूलर होने के कारण उन सब का महत्त्व समाप्त हो गया है पर पानी से भीगी हुई उस बालू व रेत की मधुर सुगंध का तो अपना अलग ही महत्त्व था.

बारत्योहार प्रत्येक समाज की लोक संस्कृति के सजीव प्रतीक हैं. इन्हीं अवसरों पर लोकमानस स्वछंद हो कर झूम उठता है. आज तो अर्थाभाव और अन्य अनेक समस्याओं के कारण इन पर्वत्योहारों का न तो पहले जैसा आनंद ही रहा और न उत्साह ही. अपने बचपन में इन त्योहारों का जो सुखद और आनंददायक रूप देखा, अनुभव किया, वह अब इतिहास ही रह गया है. तब बच्चे, बड़ेबूढ़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज सभी उन्मुक्त भाव से जातपात का भेद भुला कर इन पर्वों को मनाते तो एक स्वर्गिक आनंद का सा अनुभव होता. एक बार फिर उन मधुर स्मृतियों को इन पृष्ठों पर उतार कर उस आनंद को प्राप्त करना चाहता हूं.

राजस्थान में मुख्यतया हिंदू, जैन और मुसलमान निवास करते हैं. पाकिस्तान बन जाने के बाद उत्तरी हिस्सों (जैसे गंगानगर आदि) में थोड़े से सिक्ख परिवार भी आ कर बस गए हैं. इन सब लोगों के अलगअलग पर्वत्योहार होते हैं. लेकिन उस समय सभी एकदूसरे के त्योहारों में बड़े प्रेम से शामिल होते, आमोद-

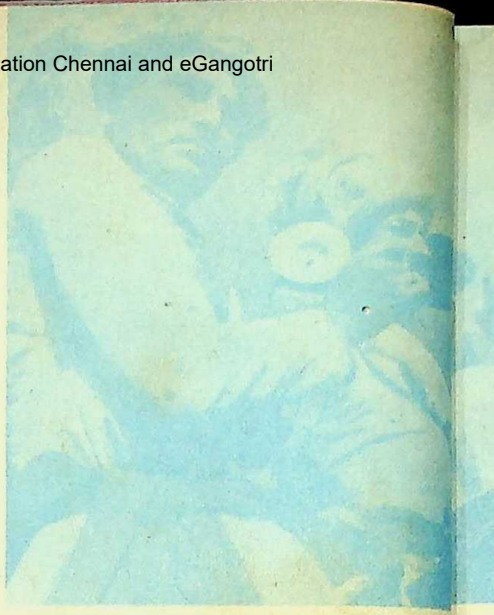

पर्वत्योहार समाज की लोकसंस्कृति के प्रतीक होते हैं. इन अवसरों पर लोकमानस स्वच्छंद हो कर झूम उठता है.

प्रमोद मनाते. मुसलमानों में कायमख्यानी, मलकानी, मेव, मेड़ात, आदि ऐसी भी उपजातियां थीं जिन में हिंदू रीतिरिवाज प्रचलित हैं. विवाह के अवसर पर ये लोग निकाह पढ़ने के साथ फेरे (भांवरें) भी लेते हैं.

इन तीनों धर्मावलंबियों के साल भर में इतने त्योहार और पर्व मनाए जाते हैं कि लगभग प्रत्येक महीने किसी न किसी प्रकार का उत्सव होता रहता है. उस समय तक न मुसलिम लीग थी, न शुद्धि आंदोलन. इसलिए मुसलमानों के पर्वों में हिंदू और जैन शामिल होते थे और हिंदुओं के त्योहारों में मुसलमान, और यह सब बिना किसी औपचारिकता या संकोच के पारस्परिक प्रेमभाव से होता था.

उस समय तक हमारे वहां आम जनता विक्रम संवत और देशी महीने ही याद रखती थी. आजकल तो खुद मुझे याद नहीं रहता कि कौन सा संवत चल रहा है, कौन सा महीना या पक्ष या तिथि है ?

वर्ष का सब से पहला त्योहार गणगौर रहता. उस समय तक होली की हुल्लड़बाजी और सर्दी की ठिठुरन समाप्त हो जाती तथा वसंत अपने यौवन पर रहता. नीम की मींझर की सुगंध भरी शीतल हवा के झोंके मन को मुग्ध कर देते.

गणगौर या गौरी पूजा मुख्य रूप से लड़कियों और महिलाओं का त्योहार है. होलिका दहन के दूसरे दिन यानी चैत्र बदी से ही गणगौर पर्व की शुरुआत हो जाती. होली की राख के छोटेछोटे पिंड बना कर उन्हें गणगौर ईसर, कानीराम और रोवां की प्रतिमाएं मान कर कुमारियां और नवविवाहिताएं नित्य बड़े सवेरे पूजतीं. पूजा के लिए दूध और फूल लाने छोटीछोटी लड़कियां गीत गाती हुई आनंदमग्न हो कर आसपास की फुलवारियों में जातीं. हम बच्चे भी कभीकभी इन के साथ चले जाते. फुलवारियों में पहुंच कर लड़कियां यह गीत गातीं.

'म्हारै माली री बाड़ी फल रही,
म्हारी मालण जायो छः पूत,
जुग जीओ ऐ बंस बधावणा.'

और घर आ कर दूब और फूलों से गौर पूजती हुई कुमारी कन्याएं सुंदर और वीर वर की कामना करतीं तथा विवाहित महिलाएं अपने सुहाग का वर मांगतीं. सुखी परिवार की कामना का यह गीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितना मधुर और भावपूर्ण है :

'गौर ए गणगौर माता खोल
किवाड़ी,
बाहर अभी रोवां पूजण वाली.
पूजो ए पूजाओ सैंयो के फल मांगो,
मांगा ए म्हे अनधन, लाछर, लिछमी.
जलबल जाभी बाबुल मांगा,
राता देई मायेड़.
कानकंवर सो बीरो मांगा,
राई सी भुजाई.
ऊंट चढ्यो बहनोई मांगा,
चुड़लै वाली बहनड़ा.' आदि.

विवाहित कन्या के लिए पहले साल अपने पीहर में गौर पूजना अनिवार्य माना जाता. इसलिए हर नववधू पहले साल अपने पीहर में ही गणगौर पूजती.

चैत बदी अष्टमी को कुम्हारिनों के घर जा कर मिट्टी की गौरी की प्रतिमाएं लाई जातीं और फिर इन्हीं प्रतिमाओं का पूजन होता. रात को एक दीप थाली में रखा जाता और उस पर एक छलनी ढक दी जाती. लड़कियां इसे ले कर बड़ेबूढ़ों के पास गीत गाती हुई जातीं और पैसे मांगतीं. इस गीत को 'घुड़ले का गीत' कहते. हम बच्चे, लड़कियों की टोली के साथसाथ रहते. हमें यह एक मनोरंजक खेल लगता. गीत की पक्तियां हैं :

'घुड़लो, घूमैलो, जी घूमैलो,
घुड़ले रे, बांध्यो सूत. घुड़लो...
सुहागण बाहर आव. घुड़लो...
प्रताप जी रे, जायो पूत. घुड़लो...'

इस 'घुड़ले' से जो पैसा इकट्ठा होता, उस का मिष्ठान्न या मेवा मंगाया जाता. उन दिनों मिठाइयां और मेवे बहुत सस्ते थे. शुद्ध घी की मिठाई एक रुपए में ढाईतीन सेर आ जाती और एक रुपए में बादाम व छुहारे भी बहुत से आ जाते. यह मेवा, मिठाई आपस में बांट ली जाती. हम भाइयों को भी बहनें बड़े चाव से खिलातीं.

चैत्र सुदी तीज या चौथ को गवरजा का विसर्जन होता. इस दिन ईसर, गौरी और रोवां (रोहिणी) की बहुत सुंदर और सजी हुई बड़ी मूर्तियां जुलूस के साथ गांव के बाजार और मुख्य मार्गों से निकाली जातीं. सच्चे हीरेमोती के गहनों और गोटे-किनारी के कीमती वस्त्रों से इन मूर्तियों को सजाया जाता. हमारे यहां गुलाबचंद-जी छाजेड़ के यहां से गवरजा की सवारी निकलती. कहते हैं कि सरदार शहर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांझीरों की यह सब से पुरानी परंपरा था. गौर की सवारी में राज्य की तरफ से तहसीलदार, थानेदार और अन्य अहलकार शामिल होते. लोग उस समय इन का इतना मानसम्मान करते, जितना शायद आज किसी गवर्नर या मंत्री का भी नहीं होता.

सैकड़ों स्त्रीपुरुष, बड़ेबूढ़े जुलूस के साथसाथ चलते—हिंदू, जैन, मुसलमान आदि सभी जाति और धर्म के. गांव के छतछज्जों पर मेला सा लग जाता. जुलूस के अंत में सुहागिन स्त्रियां गोटेकिनारी के केसरिया, कसूमल ओढ़नियां ओढ़े, मोड़दार घूंघट काढ़े मधुर गीत गाती हुई चलतीं.

इसी शाम को विभिन्न महल्लों की लड़कियां अपनीअपनी गौरों को ले कर पास के कुओं पर विदा के करुण गीत गाती हुई उन के विसर्जन के लिए जातीं. मुझे अच्छी तरह याद है, जब उन गौर प्रतिमाओं को कुएं में गिराया जाता तो हम सब सुबकसुबक कर रोने लगते जैसे घर का कोई प्रियजन बिछुड़ गया हो. हमारी बहनें रोरो कर अपनी आंखें लाल कर लेतीं.

चैत्र सुदी अष्टमी को शीतला माता का पूजन होता. हमारे यहां मान्यता थी कि शीतलादेवी की पूजा से चेचक का प्रकोप नहीं होता. ताल के मैदान में शीतला का बड़ा मंड है. हम लोग वहां पहले दिन की बनाई हुई ठंडी रसोई ले कर जाते. मंड के चारों और कान लटकाए, नीचा मुंह किए बहुत से गर्दभराज खड़े रहते. महिलाएं इन्हें पूज कर बाजरे का चूरमा खिलातीं, क्योंकि गधा शीतलाजी का वाहन है. इस संदर्भ में एक किंवदंती है कि किसी ने शीतला माता से घोड़ा मांगा. तभी दूसरे ने कहा, 'बड़े मूर्ख हो, अगर इस के पास घोड़ा होता तो यह स्वयं गधे पर क्यों चढ़ती!' शीतला पूजा या 'बासीड़े' के दिन बासी रसोई ही खाई जाती. गरम खाने से देवी के रुष्ट होने का डर रहता. पहले दिन की बनाई हुई ठंडी रसोई हमें अच्छी लगती. रबड़ीरोटी के साथ कांजी बड़ा और मीठी लपसी बड़े चाव से खाते. दूसरे दिन रामनवमी का पर्व होता. इसी दिन भगवान राम ने जन्म लिया था. हम बच्चों के लिए इस पर्व का कोई आकर्षण नहीं था. हां बड़ेबूढ़े इस दिन अपने बहीखाते बदलते.

वैसाख सुदी तीज का त्योहार 'आखातीज' (अक्षय तृतीय) बच्चों के लिए विशेष आमोदप्रमोद लिए आता. एक महीना पहले से ही वंशीधरजी पंसारी के यहां से डोरे के 'भूणिए' (रीलें) ला कर उन्हें सूतने का प्रबंध करने लगते. कई प्रकार की डोरें आती थीं : 'कृष्ण छाप,' 'हाथी छाप' और 'भूत छाप.' सब से मोटी 'कृष्ण छाप' और सब से महीन होती 'भूत छाप'. उस समय एक भूणिए का मूल्य छः पैसे या दो आने था और इस पर 300 गज डोर रहती थी. डोर को सरेस, मेथी और महीन कांच के साथ मैदे की लेही में मिला कर सूंता जाता था. आकर्षक बनाने के लिए थोड़ा सा रंग भी मिला देते. हम बच्चों के लिए डोर की सुंताई बहुत आकर्षक आयोजन था. एक लड़का चरखी लिए खड़ा रहता और अन्य दो लड़के हाथों पर लेही लिए डोर पर उसे फिराते हुए चलते रहते. गांव में चर्चा रहती कि आज अमुक के यहां बहुत अच्छी डोर सूंती गई है.

पतंगें कई प्रकार की आती थीं.

शाम होते ही सारा आकाश रंगबिरंगी पतंगों से भर जाता. बच्चे कोलाहल और उछलकूद के साथ पेंच लड़ाते और कटी पतंगों के पीछे दूरदूर तक बेसुध दौड़ते चले जाते थे...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'अधेलिया' से ले कर 'आनल' तक यानी आधे पैसे से एक आने तक की. जो लड़के आनल उड़ाते उन की बड़ी धाक रहती. जिन बच्चों के पास अपनी पतंग नहीं रहती उन में से कोई तो उड़ाने वाले की चरखी पकड़े रहता और बाकी चारों तरफ खड़े रह कर बढ़ावा देते रहते.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतंगों के पेंच लड़ाना आपसी प्रतिद्वंद्विता का एक आकर्षक खेल था. शाम के समय आसमान रंगबिरंगी पतंगों से भर जाता. 'वह काटा!' 'वह मारा!' की आवाजों से वायुमंडल गूंजता रहता. कटी पतंग के पीछे बच्चों के झुंड के झुंड दौड़ते रहते. बच्चे ही क्यों, बड़ों को भी इस तमाशे में शरीक होते देखा है. एक बार की बात है, एक पतंग कट कर जा रही थी कि एक सेठजी उसे पकड़ने के लिए लपके. लेकिन इतने में ही बच्चों ने दीवार पर चढ़ कर पतंग को पकड़ लिया.

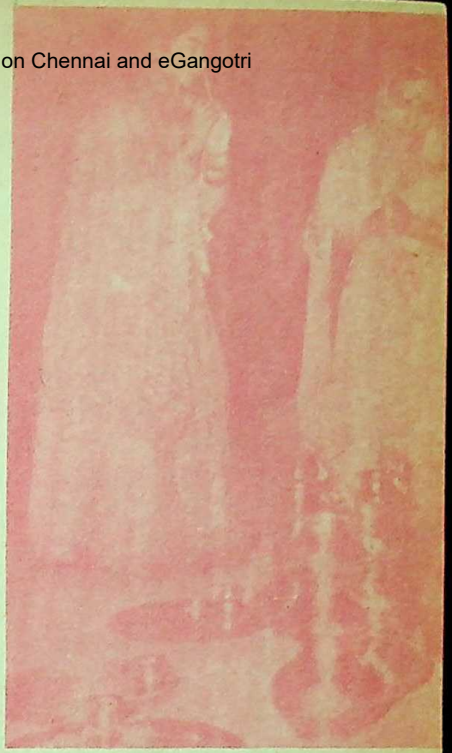

राजस्थान का सब से लोकप्रिय त्योहार गणगौर : नृत्य से पहले पूजा करती स्त्रियां

बेचारे सेठजी मुंह ताकते रह गए.

पतंग का छोटा सा रूप था—थोड़ी सी डोर के सिरे पर पत्थर या लकड़ी का टुकड़ा बांध कर कीलिया (लंगड़) लड़ाना. गरीब और छोटे बच्चे इसी में पतंग का सा आनंद ले लेते. जो लड़का 'कीलिया' लड़ाने में तेज या उस्ताद होता, वह महल्ले भर में चुनौती देते हुए ऊंची आवाज में गाता फिरता, 'कीलिया लड़ाने वाला कोई नहीं पाया, सारे गांव में फिर-फिर आया.' और इस चुनौती का सामना करने वाले भी मिल जाते. कभीकभी लड़ंत के समय हाथ से धागा तोड़ देते तो आपस में झगड़ा हो जाता. थोड़ा सा थूक कर 'थू भायला'—दोस्ती तोड़ने की—धमकी कर लेते पर थोड़ी देर बाद ही फिर दोस्त बन जाते.

आखातीज के दिन बाजरे के खीचड़े के साथ अमलवाणी (इमली का मीठा पानी) लिया जाता. शायद यह गरमी और लू से बचने के लिए लिया जाता था. अगले साल के 'सुगन' या मुहूर्त भी इसी दिन किए जाते. आखातीज का मुहूर्त अणबूझ मुहूर्त में माना जाता. कहावत थी कि 'अणबूझ्या मोहरत भला, कै तेरस कै तीज.' बहुत से विवाह इसी दिन संपन्न होते.

विवाह करने वाले पंडितों की इस दिन अच्छी मांग रहती. इसलिए बिना पढ़ेलिखे पंडितों को भी मौका मिल जाता. मेरी जानपहचान का देबू महाराज नाम का एक ब्राह्मण था. वह आखातीज के दिन गाड़िया लुहारों के यहां विवाह कराने गया. भूल से विवाह पद्धति की जगह गरुड़पुराण ले गया. जब उस ने गरुड़जी का नाम लिया तो लोगों ने पूछा, "महाराज, इस अवसर पर गरुड़जी कहां से आ गए?" उस ने झट जवाब दिया, "जहां विवाह में विष्णु और लक्ष्मी का आना जरूरी है, वहां उन के वाहन गरुड़ भी तो आएंगे." इस बात की कई दिनों तक चर्चा रही. (क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्त! मनवाला!

ऐसा है यह कैप्टन केयरफ़्री!

- चलने-फिरने में ज़्यादा आराम के लिए न फिसलनेवाला ख़ास क़िस्म का मज़बूत 'वल्काक्रेप' तल्ला।
- आपका मनपसंद काला, ब्राउन या हल्का बादामी रंग।
- भीतर मुड़े हुए ऊपरी किनारे, जो फटते नहीं और टख़नों से सरकते भी नहीं।
- रंगबिरंगे स्कॉटिश-चेक कॉटन का आरामदेह अस्तर।

आज ही अपने पास की सी.एस्.सी. दूकान से कैप्टन केयरफ़्री ख़रीदिए!

कैप्टन केयरफ़्री
साइज़ ६–१० रु. २०.५०*
साइज़ २–५ रु. १५.९५*
*टैक्स अलग

सी.एस्.सी. के जूते

बनानेवाले:
करोना साहू कं. लि.

AIYARS-CSC. 163 REV. HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य • देवेंद्र पाबले

रेडी वन टू थ्री

धंधा फोटो खींचना और काम ग्राहकों को खुश रखना लेकिन कभीकभी ऐसी सिरतोड़ मुसीबत आ जाती है कि क्या कहें!

दौड़ कर मैं अपने कैमरे के पीछे आ गया. फिर बोला, "अच्छा, साहब, रेडी! वन, टू, थ्री. ओह, ओह, यह क्या करते हैं, साहब! आप से किस ने कहा था कि आप अपनी बीवी की तरफ देखने लग जाएं. यह आप ने छठी बार मेरी फिल्म खराब करवा दी है." मैं गुस्से में आ कर बोला.

"अजी, मैं जरा जूं देखने लग गया कि जे मेरी बीवी ठीक भी बैठी है कि नहीं," हरियाणे का चौधरी बोला.

मैं ने तड़प कर कहा, "चौधरीजी, मैं आप को पहले भी समझा चुका हूं कि यह देखना मेरा काम है कि आप की घरवाली ठीक तरह से देख रही है या नहीं!"

"बुरा मत मान, भाई, बात जे है कि हमणे जे फोटू अमरीका अपने बेटे के कणे भेजना है," चौधरी ने आजिजी से कहा.

मैं सातवीं बार फिर उन दोनों को ठीक से बैठा कर आया. इस बार सावधानी के तौर पर 'रेडी! वन, टू थ्री'.. जरा धीरेधीरे बोला. तब कहीं जा कर 25 मिनट में उस जोड़े का फोटो ले पाया.

मुझ जैसे पेशेवर फोटोग्राफर को ऐसे लोगों से रोज ही वास्ता पड़ता है. धंधे का मामला होता है अतः हमारी भरसक कोशिश होती है कि किसी भी ग्राहक से जोर से या रुखाई से न बोला जाए पर कभीकभी यह जरूरी हो जाता है.

दूसरे दिन चौधरी साहब अपना फोटो लेने आए, देखते ही चौंक पड़े, "अरे भाई, जे तू ने क्या कर दिया? म्हारी चौधरानी की आंख के ऊपर या क्या है?"

मैं ने गौर से देख कर बताया, "अजी, यह तो चोट का निशान है."

"सो तो म्हणे भी पता है पर जे फोटू में क्यों आया? अरे, हमणे तण्ने कही दी है कि जे फोटू अमरीका भेजना है. वहां हमारा बेटा इस को गोरीगोरी मेमा को दिखाएगा तो वे क्या कहेंगी!"

मैं ने लाख समझाना चाहा कि 'चौधरीजी, फोटो में तो वही आता है जो चेहरे में होता है, पर उस की समझ का दरवाजा शायद बंद था. अंत में मुझे एक तरकीब सूझी. मैं उस फोटो को अंदर ले गया और बुरुश ले कर काले रंग से उस दाग को भर दिया.

अब चौधरीजी खुश हो कर बोले, "जे हुई न बात!" और वह खुशीखुशी विदा हो गया.

ऐसे ही एक दिन मैं शाम के समय अपने ग्राहकों को निबटा रहा था कि अचानक किसी के चांटा मारने की आवाज आई. सब लोग चौंक पड़े. देखा तो पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चला कि एक ग्राहक ने मेरे सहयोगी को, जो एक तरफ बैठा एक फोटो रंग रहा था, थप्पड़ मार दिया है. मेरी भी समझ में न आया. सहयोगी भी बेचारा भौचक्का रह गया. वह अपना गाल सहलाता हुआ थप्पड़ मारे जाने का कारण सोच रहा था. मैं ने आगे जा कर ग्राहक से पूछा, "क्या बात हो गई, भाई साहब!"

"अजी देखो, यह उल्लू का पठ्ठा मेरे सामने मेरी बीवी को चाटे जा रहा है," वह ऊंचे व क्रोध भरे स्वर में बोला. मैं ने घूम कर देखा तो उस की बीवी को दुकान के दरवाजे पर खड़ा देखा. अपने पति को जोरजोर से बोलता देख वह भी अंदर आ रही थी. इतने में उस ग्राहक ने मेरे सहयोगी के हाथ से रंग किए जा रहे फोटो को छीन कर मुझे दे दिया और कहा, "मैं बड़ी देर से देख रहा हूं, यह बारबार मेरी बीवी का फोटो चाटे जा रहा है."

अब जा कर मामला समझ में आया. दरअसल उस ग्राहक की बीवी के सादे फोटो को रंग किया जा रहा था. जैसे कि रंग करने वाले की आदत पड़ जाती है, जरा सा ज्यादा रंग लग जाने पर वह उसे सादे पानी के बुरुश से साफ करने की तबालत से बचने के लिए अपनी जीभ से चाट कर साफ कर लेता है. मैं उसे सारी बात समझाने लगा ही था कि उस ने फुरती से तीनों फोटो ले कर फाड़ दिए और यह कह कर चलता बना कि हमें नहीं चाहिए तुम्हारे ये फोटो.

इस धंधे में बड़े आदमियों से निपटना उतना कठिन नहीं है जितना कि बच्चों से. एक साहब मुझे एक बार अपने घर 10 दिन के बच्चे का फोटो खिंचवाने ले गए. बच्चा अपने सहारे बैठ नहीं सकता था अतः मैं ने उसे जमीन पर एक चादर बिछा कर फोटो खींचने का विचार किया. सब कुछ सैट हो गया. जैसे ही मैं फोकस ले कर बच्चे का फोटो खींचने को नीचे झुका कि उस छोटे पहलवान ने

कैमरे के पीछे खड़े हो कर 'रेडी वन, टू, थ्री' कहते हुए मैं ने बटन दबाया ही था कि चौधरी अपनी बीवी की ओर देखने लगा.

पेशाब की एक जोरदार धार मार कर मुझे और मेरे कैमरे को तर कर दिया. हड़बड़ा कर मैं पीछे हटा. 15 मिनट तक कैमरे को सुखाता रहा. उस में लगी पहली रील खराब हो गई सो दूसरी बदली. फिर कुछ दूर हट कर जल्दी से फोटो खींच कर वहां से नजात पाई. उस दिन के बाद से मैं बच्चों का फोटो खींचने किसी के घर नहीं जाता.

लेकिन फिर भी चैन नहीं है. आखिर बच्चे स्टूडियो में तो खिंचवाने आते ही हैं. कोई बच्चा कैमरे और स्टूडियो की तेज लाइटों को देख कर डर जाता है, तो बस एक बार रोना शुरू कर के चुप रहने का नाम ही नहीं लेता. मेरे साथसाथ उस के मातापिता भी पूरा जोर लगाते हैं कि किसी तरह बच्चा रोना बंद कर के मुसकरा दे. अंत में जब भी बच्चा जरा सांस लेने के लिए रुकता है तो मैं झट से बटन दबा देता हूं.

कुछ बड़े बच्चे तो और भी अधिक

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तंग करते हैं. उन को एक बार ठीक से बैठा कर या खड़ा कर के अस्ता हूं तो जैसे ही कैमरे से झांकता हूं तो खड़ा बच्चा बैठा और बैठा बच्चा खड़ा पाता हूं. कभी बच्चे को कहता हूं कि मेरे दाएं हाथ की ओर देखो तो वह एक बार उधर देख कर मेरी बाईं ओर खड़े अपने माता-पिता को देखने उधर मुड़ जाता है.

एक बार एक बच्चा अपनी स्कूली पोशाक में फोटो खिंचवाने आया. उस के हाथ में उस की स्कूल ले जाने वाली अटैची भी थी. जब मैं सब कुछ सैट कर के अपने कैमरे के पीछे आया तो बच्चे को न जाने क्या सूझा कि उस ने हाथ की अटैची नीचे रख दी. फिर तो बड़ी मुश्किल से बच्चे को इस बात के लिए राजी किया जा सका कि वह अटैची अपने हाथ में पकड़ ले. प्रायः ही बच्चों को यह कह कर कैमरे की तरफ देखने को बाध्य करना पड़ता है कि इस में एक चिड़िया निकलेगी. जब इस पर भी बच्चा अड़ा रहता है तो उस टाफी आदि का प्रलोभन दे कर सीधे खड़ा या बैठे रहने को मनाना होता है. एक बार एक मनचला बच्चा मेरा कैमरा लेने की ही जिद करने लग गया और मना करने पर जमीन पर समाजवादी कार्यकर्ताओं की तरह लेट गया. उस दिन मैं ने उस सत्याग्रही से कैसे अपना पिंड छुड़ाया, यह मैं ही जानता हूं.

वैसे लड़कियां और औरतें भी फोटो खिंचवाते समय काफी परेशान करती हैं, ऐसे सजसंवर कर आती हैं मानो किसी फैशन परेड में जा रही हों. उन्हें इस बात की तनिक भी परवा नहीं होती कि जो कपड़ा वे पहने हैं वह उन पर अच्छा लग रहा है, या नहीं. लाख समझाने पर भी अपनी मरजी का पोज बना कर बैठेंगी, फोटोग्राफर का कहना बिलकुल नहीं मानेंगी. जब अपना फोटो देखेंगी तो फोटोग्राफर को दोष देंगी कि उस ने फोटो अच्छा नहीं खींचा. उन की समझ में इतना नहीं आता कि फोटोग्राफर उन का अच्छे से अच्छा फोटो खींचने के लिए ही उन को कोई पोज सुझाता है क्योंकि हरेक का हरेक पोज में फोटो अच्छा नहीं आता.

जो लड़कियां शादी के लिए फोटो खिंचवाने आती हैं वे तो और भी तंग करती हैं. काली लड़की फरमाइश करेगी कि फोटो में उस का रंग काले से गोरा हो जाए ताकि लड़के वाले पहली बार में ही मना न कर दें. जो लड़की छोटे कद की होगी वह फरमाइश करेगी कि उस का चित्र ऐसा आए कि वह अपने कद से काफी लंबी लगे. इसी कोशिश में कई ऊंचा सा जूड़ा बना कर आती हैं. मोटी लड़की चाहती है कि उस का चित्र पतली लड़की का चित्र लगे. जिस की हड्डियां निकली होती हैं वह चाहती है कि उन हड्डियों पर कुछ मांस भी चढ़ा हुआ दिखना चाहिए. और क्या करें, साहब! अपने पेट और धंधे व स्टूडियों के नाम की खातिर कुछ ऐसे पोजों में फोटो खींचने पड़ते हैं कि उन के मन की मुराद बिलकुल पूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

न सही कम से कम कुछ हद तक तो पूरी हो जाए.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये तो हुई स्टूडियो की बात! आउट-डोर फोटोग्राफी का अपना ही मजा है. मैं अकसर ब्याहशादियों में फोटो खींचने जाता रहता हूं. वहां लोगों को अपना फोटो खिंचवाने के चक्कर में एकदूसरे के सामने आने की जो होड़ मचती है वह देखने लायक होती है. अपना फोटो खिंचवाने के लोभ में लोग भूल जाते हैं, कि जिस की शादी हो रही है उस का भी एकाध फोटो खींच लेने दें. अकसर आप ने शादीब्याह के फोटो में देखा होगा कि कुछ लोगों की शुतुरमुर्ग जैसी गरदन ही दिखाई देती है. ऐसे लोगों को हम लोग लाख चाहने पर भी टाल नहीं पाते हैं.

कई दूल्हे या दुलहन फोटो खिंचवाने के इतने शौकीन होते हैं कि वे सारे समय कैमरे और कैमरे वाले को ही देखते रहते हैं और ब्याह की रस्मों में गड़बड़ा जाते हैं. लड़की वाले भी फोटोग्राफर की अच्छी खातिर करते हैं. उन के मन में कहीं यह आकांक्षा छिपी रहती है कि शायद फोटोग्राफर हम पर खुश हो जाए और हमारा भी एकाध फोटो खींच ले.

ब्याहशादी के रेलपेले में फोटो खींचना कोई आसान काम नहीं. मगर कई फोटो ऐसे होते हैं जो जरूर ही खींचने होते हैं. जैसे जयमाला का चित्र. मैं कई बार यह फोटो लेने के लिए समय से ठीक स्थान पर नहीं पहुंच पाता हूं या फिर ठीक से फोकस नहीं मिला पाता हूं. तब मैं एक ही काम करता हूं. जब जयमाला होने लगती है तो मैं चिल्ला पड़ता हूं, "रोको, रोको, अभी माला मत डालना, मैं ने फोटो नहीं खींचा है."

फौरन दूल्हादुलहन के हाथ रुक जाते हैं. सब की निगाह मेरी तरफ उठ जाती हैं और मैं आराम से दूल्हादुलहन को घेरे खड़े लोगों को पीछे हटा कर, फोकस मिला कर कहता हूं, "हां, अब डालो माला." अगर कभी माला डल चुकी होती है तो मैं उन से इस क्रिया को पुनः दोहराने के लिए कहता हूं. फोटो की खातिर दोबारा जयमाला डाली जाती है.

एक दिन एक शादी में एक शरारती सा नौजवान मेरे पास मुसकराता आया. मैं घबराया कि यह जरूर किसी युवती का फोटो खिंचवाना चाहता है. जिसे यह बाद में मुझ से ले जाएगा. कुछ गड़बड़ हो गई तो मैं बेकार में मारा जाऊंगा. मगर उस ने कोई ऐसी बात नहीं की. वह तो मुसकराता हुआ बोला, "भाई, एक बात तो बताइए, जब आप फोटो खींचने लगते हैं तो होंठों में क्या बुदबुदाते हैं? कोई मंत्र आदि पढ़ते हैं क्या?"

मैं थोड़ा शरमा सा गया. सच कहूं तो झेंप गया. मैं ने सफाई देते हुए कहा "नहीं, भैया, यह बात नहीं है. दरअसल मैं कोई मंत्र नहीं पढ़ता, फोकस मिलाने के

> अचानक थप्पड़ मारने की आवाज सुन कर मैं ने चौंक कर देखा. चौधरी मेरे सहायक को बुरी तरह डांट रहा था.

लिए हिसाब लगाता हूं कि कितना अपर्चर देना है और कितनी स्पीड और यह कि कैमरे और व्यक्ति के बीच में फासला कितना है. यह मैं इसलिए करता हूं कि फोटो अच्छा और फोकस में आ जाए."

मेरा उत्तर सुन कर वह नौजवान जैसे मुसकराता हुआ आया था वैसे ही चला गया.

आम तौर पर लोग अपनी जरूरत का अंदाज दे देते हैं कि उन्हें शादी के किसकिस वक्त के कितने फोटो चाहिए. फोटोग्राफर उसी हिसाब से फोटो खींच लेता है. एक बार एक मारवाड़ी सज्जन मेरे पास आए और अपने बेटे के विवाह के फोटो खींचने की बात करने लगे. सब से पहले उन्होंने रेट पूछा. मैं ने बताया, "प्रति फोटो छः रुपए."

वह थोड़ा चौंक कर बोले, "अजी साहब, यह तो बहुत ज्यादा है!"

मैं ने उन्हें समझाया, "अजी, बाजार में कोई एक पैसा भी कम ले तो है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

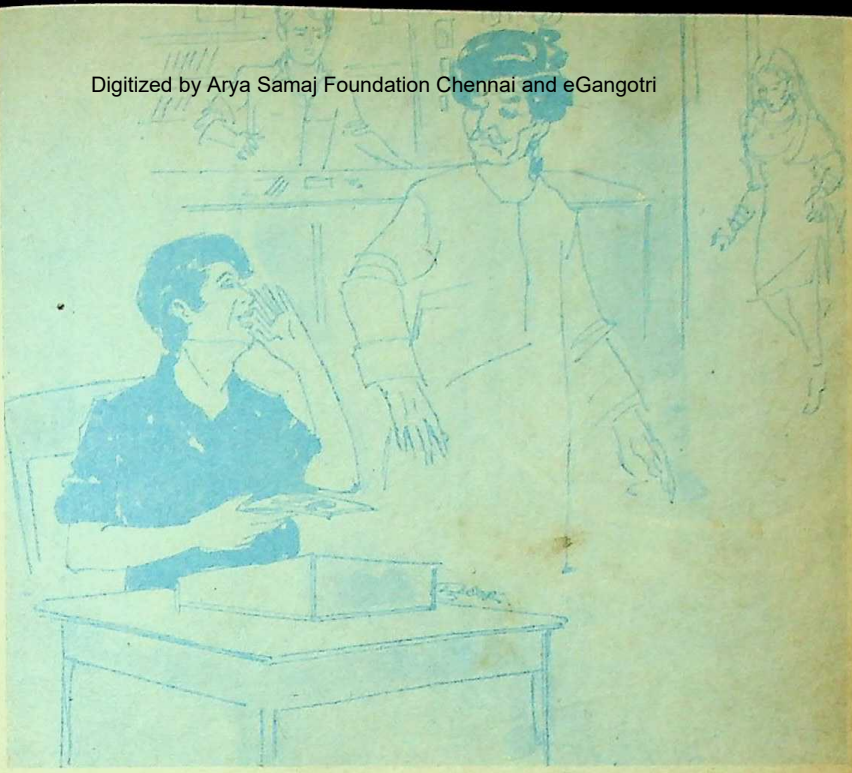

बिलकुल पैसे नहीं लूंगा."

इस पर उन्हें मेरी बात का विश्वास तो शायद नहीं हुआ पर वह उस के जवाब में कुछ कह भी न सके. फिर वह बुदबुदाने लगे, उन के होंठ फड़फड़ाने लगे और अपनी उंगलियों पर कुछ गिनने लगे. फिर कुछ आंखें बंद करने के बाद वह बोले, "अच्छाजी? म्हाकी शादी में 16 फोटो खींच दीजो!"

मैं ने उन का नामपता नोट कर लिया. निश्चित हो कर मैं समय से पहुंच गया. मैं ने धीरेधीरे फोटो खींचने शुरू किए. अचानक मुझे लगा कि वह सज्जन मेरे आगेपीछे ही फिर रहे हैं और जब भी मैं कोई फोटो खींचता हूं वह मन ही मन बुदबुदाते भी हैं. मैं डरा कि शायद वह मेरे रेट ज्यादा होने की बात सोच कर बड़बड़ा रहे हैं. खैर, बारात रवाना हुई. मैं भी बारात के साथसाथ फोटो खींचता चला. जब बरात लड़की वालों के घर के पास पहुंची तो मैं ने फोटो खींचने के लिए अपना कैमरा साधा. वह आंधी की फुरती से मेरे पास दौड़े आए और घबराए स्वर में बोले, "अजी बस करो ना, आप 16 फोटो खींच चुके. अब और मत खींचो."

मुझे अचानक हंसी आ गई. मैं ने उन्हें समझाया, "अजी, आप इस की चिंता मत करो कि मैं कितनी फोटो खींचता हूं. आप को जितनी चाहिए हों उतनी ही लेना. 16 से ऊपर बेचने के लिए मैं कोई जोरजबरदस्ती नहीं करूंगा."

बड़े ही अनमने मन से वह चले गए. ऐसे लोगों का इलाज मुझे मालूम ही था. अतः जब मैं 32 फोटो तैयार कर के ले गया तो अपने घर वालों के आग्रह पर वह बेचारे मारवाड़ी सज्जन कुछ न कर सके और उन्हें मुझे 32 फोटो के पैसों के साथ एलबम के पैसे भी देने पड़े.

क्या करें, फोटोग्राफी का धंधा ही ऐसा है. सब को किसी न किसी तरह से खुश करना पड़ता है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

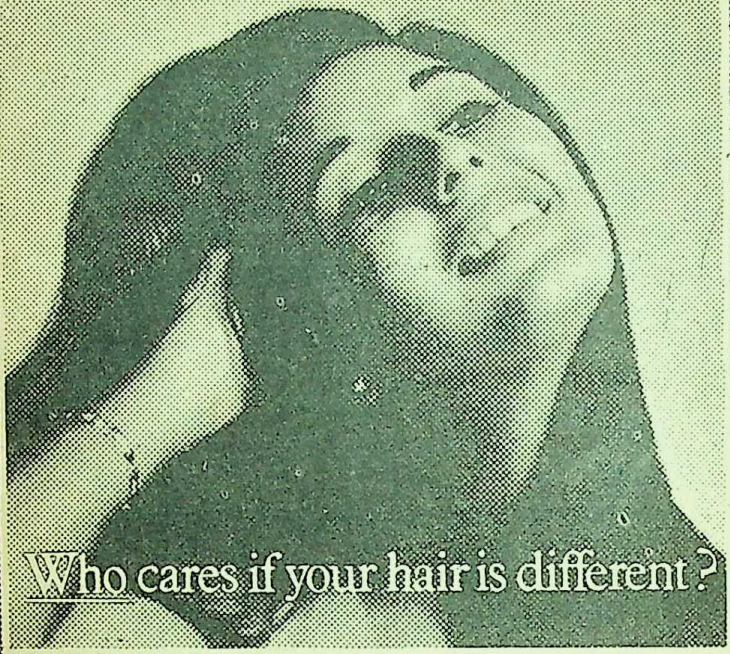

Sunsilk cares
with 3 special shampoos

Pick the one that's perfect for you

Sunsilk Lemon Shampoo for Greasy Hair

Sunsilk Tonic Shampoo for Dry Hair

Sunsilk Beauty Shampoo for Normal Hair

Sunsilk-
more than a shampoo, a cosmetic for your hair

LINTAS-SS. 11-77

Quality Products by HINDUSTAN LEVER

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालन पोषण सही कीजिए;

बच्चों को बोर्नविटा दीजिए!

बच्चों को शक्ति रोज़ मिलती है जो कि सामान्यतः पढ़ाई और खेलकूद में ही ख़र्च होती है। इस शक्ति को बराबर बनाए रखने के लिए उन्हें हर दिन बोर्नविटा देना चाहिए। स्वादिष्ट और पौष्टिक बोर्नविटा कोको, दूध, मॉल्ट और शक्कर का सन्तुलित मिश्रण है।

शक्ति, उत्साह और स्वाद के लिए–

कैड्बरिज़ बोर्नविटा!

Bensons/4664 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

• Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासुदेव

टूटा हुआ पुल

महेश अपने अतीत को कहीं गहरे में दबा देना चाहता था लेकिन उस की वर्तमान परिस्थितियां बारबार उसे अतीत की ओर धकेल देती थीं...

अब तक आप पढ़ चुके हैं :

नौकरी की तलाश में महेश दिल्ली चला आया और अमरदास के पास ठहर गया. अभी वह इसी दुविधा में था कि नौकरी का क्या होगा—उस का अमरदास की बेटी सरला से परिचय हुआ और सरला ने महेश के मन में कई प्रश्न उठा दिए...

अब आगे पढ़िए :

चारपाई पर लेटा महेश सोने का प्रयास कर रहा था पर नींद थी कि उसे मानो चिढ़ा रही थी. उस के सामने अंधेरे में चमकती हुई दो आंखें घूम रही थीं. उसे याद नहीं आ रहा था, उस ने वे आंखें कहां देखी थीं. एक क्षण उस ने सोचा, शायद उस का भ्रम हो. पर दूसरे ही क्षण जैसे किसी ने फिर उस के मस्तिष्क पर प्रहार किया. वह परेशानी से तकिए पर सिर हिलाने लगा. यह भ्रम नहीं था. उस ने उन आंखों में पहले अवश्य झांका था. उस ने कसमसा कर करवट बदल ली. पर सामने अंधेरे की परत ओढ़े दीवार पर वही आंखें चमक रही थीं. उसे लगा, वे आंखें निरंतर उसे बुलाए जा रही थीं. जैसे उन आंखों की गहराई में उस के जीवन का अर्थ छिपा था. उन आंखों की छाया में उस के सपनों की सार्थकता थी. शायद उन्हीं आंखों में उस के अकेले और विवश थके हुए मन के लिए स्नेह का पुट था. एकाएक उसे सब स्मरण हो आया. वह चौंक कर उठ बैठा. साथ में बुरी तरह सिहर उठा.

वह लोहे के पलंग की एक पाटी को पकड़े सिसकसिसक कर रो रहा था. उस की सिसकियां अस्पताल के जनरल वार्ड में गूंज रही थीं. आसपास की चारपाइयों पर लेटे मरीज उसे उदासी से घूर रहे थे. जन्म से ले कर अब तक उस के आंसू पोंछने वाली मां चारपाई पर पड़ी विवशता से उसे देख रही थी. वह बारबार उठने का प्रयास करती पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

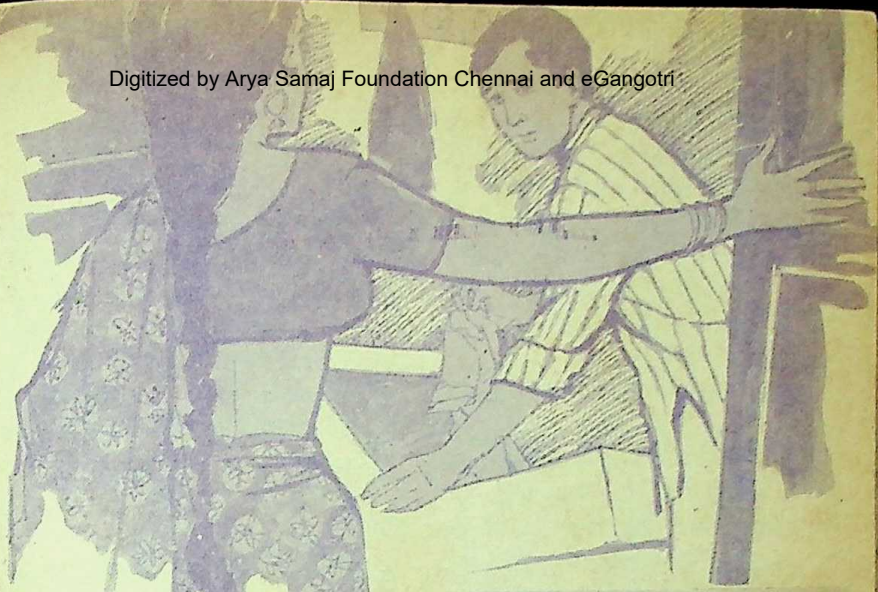

उस ने ट्रंक खोला और उस में अपने कपड़े रखने लगा. तभी सरला ने आ कर पूछा, "क्या आप जा रहे हैं?"

फिर कराह कर लुढ़क जाती. वह मां की इस विवशता को देख और भी जोरजोर से चीख उठा. उसी समय एक नर्स एक ओर से लपकती हुई आई और उस की बांह पकड़ कर उसे घसीटने लगी. उस ने नर्स को धक्का दे कर स्वयं को छुड़ा लिया और मां से लिपट कर जोरजोर से चीखने लगा. लेकिन नर्स ने जबरदस्ती उसे मां से छुड़ाया था तो वह ऐसे चीखा था जैसे कोई बकरे को जिबह करने लगा हो. नर्स की बांहों में छटपटा कर वह फिर मां की ओर लपका पर एकाएक रुक गया. उसी समय वही दो आंखें उस के सामने आ गई थीं और वह रोना भूल कर स्तब्ध हो खड़ा रह गया था. नर्स ने उस की चुप्पी का लाभ उठाया था और उसे धीरेधीरे खींचती हुई अस्पताल के बड़े दरवाजे से बाहर छोड़ आई थी तो वह फिर होश में आ गया था कि वह कहां पर था. उसे याद नहीं था, वह कैसे घर पहुंचा था पर उसे लगा था वे आंखें निरंतर कितने दिन तक उस के आसपास रही थीं. यह तब वर्ष पहले हुआ था, जब वह बालक था. शायद इसलिए वैसी ही आंखें सामने पा कर उस की आंखें गीली हो गई थीं. उस ने एक सिगरेट और सुलगाया और चारपाई पर लेट गया. सुनीता भाभी से वह अब तक अपरिचित रहा था. अब उसे लग रहा था वह सुनीता भाभी को एक लंबे अरसे से जानता था, हालांकि देखा आज ही था. उसे मां की याद आ गई, घर याद आया. निर्मला बहन का पीला सूखा सा चेहरा याद आ गया. बापू की याद आते ही उस का मन बुझ गया. वह सैनेटोरियम की किसी चारपाई पर पड़े अपने सीने को सहला कर खांसी से पैदा होने वाली जलन से लड़ रहे होंगे.

एक हूक सी उस के हृदय में उठी पर उस ने करवट बदल कर उसे दबाने का प्रयास किया. वह उन के लिए घर से दूर हो कर अनजान लोगों के बीच झांक रहा था. वह चाहता था, उन्हें याद न करे. बीते हुए समय की प्रत्येक याद उसे तड़पा सकती थी, सहला नहीं सकती थी. उन के चेहरों से उसे डर लगने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लगता था और वह स्वयं से लड़ कर अपने निर्बल व हारे मन पर काबू पाने का प्रयास करने लगता था. उस ने अपनी बीती बचपन बहुत दूर कहीं गहरे में दबाने का निश्चय किया था और इसी निश्चय को ले कर वह दिल्ली चला आया था कि वह पुराने सपनों की नींवों पर नए सपनों के महल बनाएगा. तब वह नींव जमीन में धंस जाएगी और वह उसे सदा के लिए भूलने का प्रयास करेगा.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन का आरंभ एक नए निश्चय के साथ हुआ. उसे सुबह से ही लग रहा था कि वह भीतर से बदलता जा रहा है. विश्वास की प्रथम सीढ़ी पर उस ने कदम रख दिए. उस ने मन ही मन अपना निश्चय दोहराया कि जब तक दिल्ली में नौकरी नहीं मिल जाती, वह दिल्ली से नहीं लौटेगा. वह जान गया था कि अमरदासजी उसे नौकरी नहीं दिलवाएंगे. पहली स्थिति होती तो वह शायद कब का उसे टाल चुके होते पर अब जरा किसी ठोस बहाने से टालेंगे, ऐसा वह जानता था. उन के वार्तालाप से लगता था जैसे वह बड़ेबड़े उत्तरदायित्व निबाहने के आदी हों. पर इतना तो उन के स्वभाव से वह भी परिचित हो गया था कि वह उन व्यक्तियों में से थे जो उन्हें बहानों से निबाहने का प्रयास करते थे.

दोपहर को वह नौकर के साथ कोठी में अकेला ही था, सरला कालिज गई हुई थी और उस की मम्मी अभी अलीगढ़ से न लौटी थी. जब नौकर उस के कमरे में आया तो वह सिगरेट सुलगाए छत की कड़ियां गिनने में मग्न था.

"साहब, आप को टेलीफोन पर बुला रहे हैं."

फोन का चोंगा पकड़ते समय उस के हाथ थोड़ा सा कांपे तो उस ने उसे और भी कस कर पकड़ लिया

"हैलो!"

"कौन, महेश?"

"जी, हां." उसे लगा कान वाले सिरे के पास साक्षात अमरदासजी आ बैठे थे.

"मैं अमरदास बोल रहा हूं. हां भाई, मैं ने जो एक बात की थी, सुन रहे हो न?"

"जी, हां." महेश का मन धड़कने लगा.

"उन्होंने कहा है कि फार द टाइम-बीइंग दफ्तर में कोई जगह खाली नहीं है. मुझे तो तुम्हारा कार्य अवश्य करवाना था. मैं ने उन से बहुत कहा तो तुम्हारा प्रार्थना-पत्र उन्होंने अपने पास रखवा लिया है. उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया है कि जब भी कोई स्थान खाली हुआ, वह तुम्हें ही रखेंगे. सुन रहे हो न?"

"जी, हां." इस बार उस का स्वर धैर्यहीन हो गया.

"लगता है, तुम्हारा कार्य हो जाएगा. पर 15–20 दिन लगना साधारण सी

बात है. जब भी स्थान खाली हुआ मैं बालकृष्णजी के पास पत्र भेज दूंगा. हां सुनो, इस बार पत्र मिलते ही आ जाना. और हां दिनेश तुम्हें अपने यहां आने के लिए कह गया था. सरूप से कहना, वह तुम्हें बस में बैठा देगा. सुन रहे हो, न?"

"जी," उस के मन में आया कि फोन का चोंगा वह दीवार से दे मारे. यदि अमरदासजी उस के सामने होते तो वह उन के चेहरे के भाव तो देख ही लेता. उसे लगा, जैसे उस छोटे से चोंगे ने उन के पूरे व्यक्तित्व पर पूरा परदा डाल दिया था. वह उन की आवाज ही सुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता था और उसी के बारे में सोच सकता था जो उसे कहा जा रहा था.

"और हां, बालकृष्णजी को मेरी नमस्ते कहना."

"जी, बहुत अच्छा." उस ने टूटते स्वर को संभालने का प्रयास करते हुए धीरे से चोंगा रख दिया.

इस नई पैदा हुई स्थिति के विषय में वह क्या सोच सकता था. अब दिनेश भैया के यहां जाने और उन से वापसी किराए के पैसे लेने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं था. वह स्वयं यहां पर नएनए आए थे इसलिए नौकरी के विषय में उन से किसी सहायता की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी. पर वह घर जा कर मां से क्या कहेगा? उसे याद आया, जब वह घर से ट्रंक उठाए निकला था तो मां की आंखें आकाश की ओर झांकते हुए

"सीधी तो कोई नहीं जाती. रास्ते में बदलनी पड़ेगी. साथ में आप के पास ट्रंक भी है. स्कूटर से चले जाइएगा. ढूंढ़ने में भी कोई तंगी नहीं होगी."

"हूं," वह कुछ सोचने लगा, फिर पूछा, "स्कूटर वाला कितने पैसे लेगा?"

"यही कोई ढाईतीन रुपए."

"ढाईतीन!" वह बुदबुदाया और जेब में पड़े दो रुपयों का जोड़तोड़ करने लगा.

"निजामुद्दीन काफी दूर है," सरूप कुछ मुसकराया.

"अच्छा, अच्छा," महेश ने उसे गहरी दृष्टि से देखा और बैठक से बाहर निकल कर कमरे में आ गया. कोट को उतार उस ने खूंटी पर टांगा और चारपाई

फोन पर अमरदासजी की टालने वाली बात सुन कर महेश क्रोध से लाल हो गया. उस के मन में आया कि वह फोन के चोंगे को दीवार से दे मारे. अगर अमरदासजी उस के सामने होते तो...

न जाने किस अज्ञात देवता के प्रांगण में उस की सहायता के लिए झुकी हुई थीं. बहन चाहे उस के बाहर जाने के समाचार को सुन कर काफी दिन उदास रही थी पर वह जानता था कि मन ही मन उस के उज्जवल भविष्य के लिए वह अवश्य प्रार्थना कर रही थी.

"साहब, खाना लगा दूं," सरूप उस की विचार तंद्रा को भंग करने के विचार से आगे बढ़ आया तो वह चौंका. दूसरे पल ही वह लुधियाना से दिल्ली आ गया.

"अभी ठहरो. हां सुनो, यहां से निजामुद्दीन कौन सी बस जाती है?"

पर लेट गया. तो क्या वह दिनेश भैया के घर चला जाए? 15 दिन वह वहां रह सकता था, जानता था कि दिनेश भैया बुरा नहीं मानेंगे. पर यह भी तो हो सकता था कि अमरदासजी का यह आश्वासन भी मात्र बहाना ही हो, जैसा कि संभावना थी. तब वह क्या करेगा?

इसी उधेड़बुन में काफी समय बीत गया, तो उस के मन में विचार उभर आया कि अब वह यहां क्या कर रहा है, जब कि अब यहां पर ठहरने का कोई अर्थ नहीं था. क्या वह सरला के वापस लौट आने की प्रतीक्षा नहीं कर रहा था? वह इस प्रश्न की सत्यता से स्वयं को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

छिपाने लगा. उस ने आखिर ऐसी धारणा कैसे बना ली थी कि यदि वह उस से बिना मिले चला गया तो उसे दुख होगा. आखिर उसे उस से लेनादेना ही क्या था? वह तो शायद उसे अपनी किसी कहानी का पात्र समझ कर कुरेद रही थी. और वह था कि न जाने क्या-क्या सोच रहा था? उसे स्वयं पर क्रोध आ गया. वह दिल्ली कोई काम ढूंढ़ने आया था, या इधरउधर की कड़वीमीठी बातें सुनने. यहां पर रुकना व्यर्थ था. उस ने ट्रंक खोला और खूंटी पर लटके कपड़े उस में डालने लगा.

"क्या आप जा रहे हैं?"

उस ने सिहर कर कनखियों से देखा. सरला दरवाजे पर खड़ी उस की पीठ को घूर रही थी. एक क्षण उस के हाथ रुके, फिर वह पाजामा तह करने लगा.

"जी हां," उस ने रुखाई से उत्तर दिया.

"खाना खा लीजिए, कपड़े बाद में भी ठीक हो जाएंगे."

"बस अब हो गया." उस ने कंबल को लपेट कर ट्रंक में रख दिया और फिर उसे ताला लगा कर चाबी पैंट की पिछली जेब में डाल ली. जब वह सीधा हुआ तो वह कमरे में आ चुकी थी. लगता था, सरूप ने उसे सब कुछ बता दिया था.

"आप को निजामुद्दीन जाना है?"

"जी, शायद. . ." वह हिचकिचाया, कहीं वह भी साथ न चल दे.

"शायद, क्या मतलब? आप वहां नहीं जाएंगे?"

"कह नहीं सकता, हो सकता है कि चला भी जाऊं." उसे स्वयं पर क्रोध आया. वह उस से एक छोटा सा झूठ तक नहीं बोल सका.

"कमाल है," वह मुसकराई, "आप क्षणक्षण में अपना विचार बदल लेते हैं."

"मिस सरला," इस बार उस का स्वर कड़वा हो गया, "क्या मुझ पर कहानी लिखने का विचार है?"

"हो सकता है, लिख भी दूं," वह उस के कड़वेपन से प्रभावित हुए बिना शान्त स्वर में बोली.

"मुझ पर कहानी मत लिखिएगा, कोई नहीं पढ़ेगा. हां यदि थोड़ा सा रोमांस जोड़ दें तो शायद, कोई पढ़ ले. पर वह मैं ऐसा नहीं करूंगा."

"यह मुझ पर छोड़ दीजिए. . . क्या बात है, इतना क्रोध किस पर आ रहा है!"

"स्वयं पर. क्योंकि सब का दोषी आप के शब्दों में, मैं स्वयं को मान लेता हूं."

उस ने कस कर ट्रंक का हैंडल पकड़ा और चल कर दरवाजे के पास आ गया. ठिठकते हुए बोला, "हां कल से आज तक के लिए जो कष्ट आप को दिया उस के लिए क्षमा चाहता हूं."

"देखिए, मिस्टर महेश, मुझे आप को रोकने का अधिकार तो नहीं पर खाना तो खाते जाइए."

उस भीड़ में एक व्यक्ति की पीठ उसे जानीपहचानी सी लगी. उसे लगा यह तिलकराज है जो लड़कियों को घूर रहा है.

"जी, धन्यवाद. हां, आप की भी बालकृष्णजी को नमस्ते पहुंचा दूं!"

सरला उस के बदले व्यवहार पर आश्चर्यचकित रह गई. कल तो इस के मुंह से दो शब्द कठिनाई से निकल रहे थे, आज वह उस पर ऐसे व्यंग्य वाक्य छोड़ रहा था जैसे उस का उत्तरदायी उसे ठहराना चाहता हो. "जी, धन्यवाद," उस ने उलझन भरे स्वर में कहा जैसे उस के कहने का अर्थ न समझ पाई हो.

वह ट्रंक उठा कर तेजी से बाहर चला गया तो वह वहीं खड़ी हतप्रभ सी देखती रह गई. कहीं उस ने उसे गलत तो नहीं समझ लिया. पर उस का व्यक्तित्व कैसा था जो प्रतिक्षण एक नया रूप ले कर सामने आता था. उस ने कमरे के फर्श पर दृष्टि डाली, जहां पर 10–12 सिगरेट के टुकड़े पड़े हुए थे.

"एबसर्ड," वह बुदबुदाई.

सरूप उस की चिल्लाहट सुन कर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

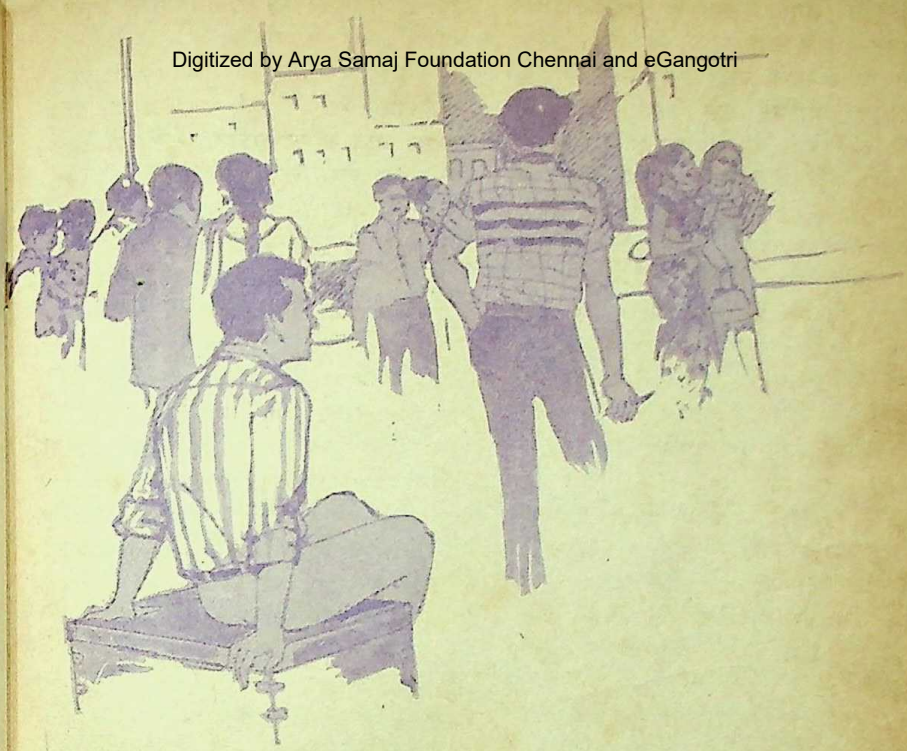

भागता हुआ चला आया.

"तुम ने उसे कुछ कहा तो नहीं था?"

"जी, किसे?" वह आश्चर्य से उस का मुंह देखने लगा.

"उन्हें, जो यहां पर ठहरे हुए थे."

"जी भला मैं उन्हें क्या कहता!"

"तुम्हें अधिक बातें करने की आदत जो है, शायद तुम ने कोई ऐसीवैसी बात कही हो."

"जी मैं ने तो उन्हें कुछ नहीं कहा, चाहे तो उन से पूछ लीजिए."

"वह तो चले गए. . . पर उन का कोट तो यहीं खूंटी पर टंगा है."

"अरे, हां!"

वह मुसकराई, "जरा उतारना इसे."

सरूप ने जब कोट उतार कर उस के हाथ में दिया तो कितने ही विचार उस के मन में कौंध गए. इतना तो लगभग निश्चित था कि वह इसे वापस लेने अवश्य आएगा.

"देखो, तुम मेज पर शीघ्रता से खाना लगा दो."

सरूप जब बाहर चला गया तो वह स्वयं को कोट की जेबें टटोलने से न रोक पाई. बाहर की जेबों में दो बीड़ियों के बंडल, एक सिगरेट की डब्बी, एक माचिस और एक पुराना सा रूमाल था. भीतरी जेब में एक पैन, दो रुपए का एक मुड़ातुड़ा नोट और दिनेशजी की कोठी का पता तथा सिगरेट की एक खाली डब्बी जो उस ने कल अपने तकिए के पास रखी थी. खाली डब्बी को उस के कोट की जेब में देखते ही वह मुसकरा दी और कोट उठाए अपने कमरे की ओर मुड़ गई.

तेजी से लंबे कदम उठाता महेश बस स्टैंड के पास आ कर ही रुका और ट्रंक को सड़क पर टिका इधरउधर देखने लगा. उत्तेजना से उस का सारा शरीर कांप रहा था. पास से गुजरते एक व्यक्ति को सिगरेट पीते देख कर उस का मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हुआ कि उसे भी एक सिगरेट पीना चाहिए. पर दूसरे ही क्षण उस का जेहन फ़क्क रह गया. कोट तो वह वहीं भूल आया था. एक ही क्रम से वह कितनी बातें सोच गया. 'वह समझेगी कि मैं कोट जानबूझ कर भूला हूं?' उस ने स्वयं को टटोला पर ऐसी भावना उस के मन में नहीं आई थी. अचानक ही उसे लगा था कि वे लोग उस से सहानुभूति जताने के साथसाथ उस का मजाक भी उड़ा रहे थे. अचानक ही उसे क्रोध का दौरा पड़ा था और वह कोट को खूंटी पर से उतारना भूल गया था. अब? तो क्या वापस लौट जाए? जाना तो पड़ेगा ही.

उस ने मन ही मन दो रुपए के नोट को गाली दी. दिनेश भैया का पता भी तो कोट की जेब में था. ऐसा कोई रास्ता नहीं था, जिस से वह बिना पैसों और पते के उन की कोठी पर पहुंच जाता. अचानक उस का मन भर आया कि सभी लोग उसे अकेला व विवश मान कर उस का मजाक उड़ाने पर तुले हुए हैं. काश, वह स्वयं को इतना असमर्थ न मानता और न ही उस घर में जाता! अपने शहर में वह भूखा तो नहीं मर रहा था. कभी न कभी तो उसे वहां पर ही नौकरी मिल जाती. वहां वह बेकार था, पर था तो अपनों के बीच. उस शहर की एकएक ईंट से वह परिचित था. पर इस शहर में वह अनजान लोगों की भीड़ में घिर गया था.

वह कितनी ही देर तक सड़क की की ओर मुंह किए बुत बना खड़ा रहा. थोड़ी देर पश्चात उस ने ट्रंक उठा कर कंधे पर रखा और वापस लौट पड़ा. वह उस का थोड़ा सा और मजाक उड़ा लेगी न, बस! कोई बात नहीं, वह ट्रंक को बरामदे में टिका, उस कमरे से कोट उठा कर बिना उस से मिले वापस आ जाएगा. उस ने कोई अपराध तो नहीं किया, जिस के लिए वह उसे कैद कर लेगी.

कोठी के सामने आ कर वह ठिठका. पर उस का स्वयं का व्यवहार उस के प्रति क्यों रूखा हो गया था? आखिर उस का क्या दोष था? क्या वह उस से केवल इसी कारणवश नहीं उलझा था कि वह अमरदासजी की बेटी थी? उस ने धीरे से भिड़ा हुआ कोठी का मेन गेट खोला, दबे पांव रास्ता पार कर बरामदे में अपना ट्रंक रखा और बिना कोई आहट किए उस कमरे की ओर बढ़ा. पर उसे पता नहीं चला कि वह बैठक के जालीदार दरवाजे के पीछे खड़ी उसे हंस कर देख रही थी. खूंटी पर अपना कोट न पा कर वह परेशान हो उठा और चारपाई के नीचे देखने लगा.

"कहिए किस से मिलना चाहते हैं?"

वह उछल कर सीधा हो गया, जैसे चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया हो. वह उसे दरवाजे में खड़ी गंभीरता से ऐसे देख रही थी मानो उसे अभी देखा हो.

"मैं जानबूझ कर नहीं भूला था!" वह घबरा गया.

"क्या?"

"कोट."

"कैसा कोट?"

"जी, वह काले रंग का है, यहां पर टंगा हुआ था." उस ने खूंटी की ओर इशारा किया.

"वह उधर खाने के कमरे में पड़ा है."

"जी, मैं आप को विश्वास दिलाता हूं, मैं जानबूझ कर नहीं भूला था." वह विवशता से हाथ मलने लगा.

"मैं कब कह रही हूं. क्रोध में लोग स्वयं को भूल जाते हैं, आप तो कोट ही

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भूले थे. आइए, अपना कोट ले लीजिए!" वह अपनी मुसकराहट छिपाती हुई वापस मुड़ गई तो वह पीछे झुककर उस के पीछे चल पड़ा. उस ने ध्यान से अपने हाथों को देखा जो अपराधी भाव से कांप रहे थे. कमरे में पहुंचते ही वह खाने की मेज पर जा बैठी तो वह उसे परेशानी से देखने लगा.

"जी, मेरा कोट."

"बैठिए, थोड़ा सा खाना खा लीजिए, फिर कोट भी मिल जाएगा."

"मुझे भूख नहीं है," वह हिचकिचाया.

"आप बहाना भी नहीं बना सकते," वह खिलखिला कर हंस पड़ी, "जब आप सोचते हैं तो बूढ़े लगते हैं, जब बोलते हैं तो बिलकुल बच्चों जैसी आवाज में बहाने बनाते हैं."

"जी मैं कुछ नहीं जानता, आप मेरा कोट लौटा दीजिए."

"क्या बच्चों जैसी रट लगा रखी है," वह कुछ रोष से बोली, "मैं जानती हूं, आप ने अब तक खाना क्यों नहीं खाया था."

"सो क्या आप समझती हैं, मैं आप की प्रतीक्षा कर रहा था?"

"आप फिर झगड़ने पर उतारू हो गए हैं! मैं ने आप को यह कब कहा है? सरूप, जल्दी से खाना ले आओ!... आप बैठिए न!" सरला ने आग्रह से कहा.

इस बार वह खामोशी से बैठ गया.

थोड़ी देर चुपचाप खाते रहे. वह हैरान हो रहा था कि आज उसे पानी का गिलास उलटने, चावल गिरने, चम्मच फिसलने का जरा भी ध्यान न रहा था.

"मिस्टर महेश, अगर आप बुरा न मानें तो एक बात पूछूं, आप को मुझ पर क्रोध क्यों आया था?"

पर महेश ने मौन धारण कर लिया. वह उस की ओर देखे बिना खाता रहा, जैसे उस ने कुछ सुना ही न हो. उस के अपने मस्तिष्क में ही आंधी उठ रही थी. खाना समाप्त हुआ तो वह मेज से उठ खड़ा हुआ.

"अब तो कोट दे दीजिए."

"हां, हां, अवश्य! पर आप ने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया."

"मुझे आप पर नहीं, स्वयं पर क्रोध हो आया था."

"स्वयं पर," वह थोड़ा सा गंभीर हुई, केवल इसलिए कि आप नौकरी की तलाश में यहां क्यों चले आए. पर आप ने अभी देखा ही क्या है? स्वयं पर क्रोधित होने से संसार नहीं बदल जाता."

"जी, बहुत अच्छा, आप की बात भी याद रखूंगा."

"हां तो अब आप घर वापस जाएंगे?"

"जाना ही पड़ेगा."

"पहले दिनेशजी के यहां जाएंगे न?"

"हां," इस बार अनुमोदन में उस ने सिर हिला दिया.

"मम्मी आज आ गईं तो शायद हम लोग भी कल वहां आएं. आप खड़े क्यों हो गए हैं? मैं आप का कोट लाती हूं."

वह फिर कुरसी पर बैठ गया तो उसे एकाएक घर की याद सताने लगी. छोटा

जो साज पे गुजरी है...

अश्कों में जो पाया है वो गीतों में दिया है,
इस पर भी सुना है कि जमाने को गिला है.
जो तार से निकली है, वो धुन सब ने सुनी है,
जो साज पै गुजरी है वो किस दिल को पता है.

—साहिर लुधियानवी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सा कमरा जो छोटा न हो कर उस का संसार था. सब से बड़ी बात थी कि वह उस का अपना था, जहां पर वह स्वतंत्रता से अपने सपनों को मनचाहे रंग दे सकता था, उसे रोकनेटोकने वाला कोई न था. कमरे में उस की सांसें, उस का भविष्य, उस के जीवन का प्रत्येक बीता क्षण अंकित था. उसे लगा जैसे उस कमरे में और बाहर के संसार में बहुत अंतर था, जिसे उस ने कभी भी समझने का प्रयास नहीं किया था. अब बाहर आते ही पहले फाके में वह बिखर गया था.

"यह लीजिए अपना कोट."

वह कोट ले कर बाहर की ओर मुड़ा, फिर कुछ सोच कर ठिठक गया. "मुझ से कोई असभ्यता हुई हो तो क्षमा चाहता हूं," उस का स्वर भर्रा गया.

"जी, ऐसी कोई बात नहीं."

"नमस्ते," उस ने अपने दोनों हाथ जोड़ दिए.

"नमस्ते!" वह स्वयं की चिंता में लीन था नहीं तो वह अवश्य इस बार ध्यान देता कि सरला के मुंह से यह शब्द कितना कांपता सा निकला था.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खराब पहिया

धन का दायां हाथ परिश्रम और बायां हाथ किफायत है.

—सूक्ति

✦

गाड़ी का सब से खराब पहिया सब से ज्यादा शोर करता है.

—फ्रैंकलिन

वह कंधे पर ट्रंक उठा तेजी से सड़क पर चलने लगा. वह इस बार वेस्ट पटेल नगर के स्टाप पर भी खड़ा नहीं हुआ बल्कि सड़क के किनारे चलता हुआ ईस्ट पटेल नगर के बस स्टाप पर पहुंच गया. उसे पता नहीं कि वह क्या सोच रहा था पर वह खोयाखोया चलता ही रहा था. उस के मन में आया कि वह दिशाहीन तब तक चलता ही रहे जब तक कि टांगें पूरी तरह साथ न छोड़ दें, वह भरभरा कर गिर पड़े और गहरी नींद में सो जाए. एक उभरी हुई ईंट से उस का पांव ठोकर खा गया तो वह ठिठका और एकाएक गुमसुम खड़ा रह गया. शरीर में छाई सारी की सारी उत्तेजना एकाएक समाप्त हो गई. उसे लगा कि वह बुरी तरह से थक गया था. भीतर ही भीतर बाहर आने को कुछ कुलबुलाने लगा. उस ने सुस्ताने के लिए ट्रंक जमीन पर टिकाया और सिगरेट सुलगा लिया. एक क्षण वह खड़ा रहा पर फिर टांगों को समेट, लंबी सांस ले, ट्रंक पर ही बैठ गया.

सड़क पर तेजी से बसें, कारें, स्कूटर शोर करते हुए भाग रहे थे. पूरा वातावरण उन वाहनों के शोर में डूबा हुआ था. उसे लगा, यह शोर नीचे कुचली जा रही सड़क की कराहट थी जो प्रति क्षण क्रमशः तेज होती जा रही थी. उस ने जोर से सिर हिलाया जैसे वह भीतर से उठती किसी आवाज को समझा कर दबाने का प्रयास कर रहा था. कितनी बसें आईं और प्रतीक्षा करते मुसाफिरों को अपने वक्ष में समेट आगे बढ़ गईं. कितने मुसाफिर बस स्टाप पर आए और चले गए—वहां पर वह बैठा सब कुछ देखता रहा और स्वयं में डूबताउतराता रहा. वह नहीं जानता था कि निजामुद्दीन की ओर कौन सी बस जाती थी. किसी से पूछने का साहस वह नहीं कर पाया. दिन ढलने के साथसाथ आनेजाने वालों की भी वृद्धि होती गई और सड़क पर वाहनों का शोर और अधिक तेजी से बढ़ने लगा पर वह सिगरेट के कश लेता भीड़ में खोयाखोया सा बैठा लोगों के चेहरों को देखता रहा.

उस समय काफी भीड़ हो गई थी. उस भीड़ में एक व्यक्ति की पीठ उसे जानीपहचानी सी लगी. उसे लगा, हो न हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तिलकराज ही है. उस की तरफ उस की पीठ थी और शायद वह सामने खड़ी दो युवतियों को घूर रहा था. वह ट्रंक से उठ खड़ा हुआ. आखिर वहम मिटा लेने में कोई दोष नहीं था. वह शेड का चक्कर लगा दूसरी ओर पहुंचा तो उस का भ्रम सत्य निकला. उस का मन धड़क उठा. वह तिलकराज ही था, जो ढीठता से सामने खड़ी लड़कियों को ताक रहा था.

महेश ने धीरे से उस का कंधा थपथपाया तो उस ने उस की तरफ मुड़ कर देखा.

"अरे, तुम," तिलकराज स्तब्ध रह गया और दूसरे ही क्षण उसे खींच कर आलिंगन में ले लिया. उस की बांहों में महेश की हड्डीपसली चरमरा उठी. साथ में उस के मुंह से धारा प्रवाह गालियों की बौछार निकली. उस का यही ढंग था जब भी किसी से मिलता था, प्रत्येक बार नई गालियों से उस का स्वागत करता था. "तुम यहां कैसे आ गए. वाह, यार, महेश ही हो न?"

आसपास खड़े व्यक्ति उन्हें आश्चर्य से देखने लगे तो महेश ने कसमसा कर स्वयं को उस के बाहुपाश से छुड़ाया और उस का हाथ पकड़ वहां पर ले आया जहां उस का ट्रंक पड़ा था. दोनों सट कर जब ट्रंक पर बैठ गए तो महेश ने जेब से सिगरेट की डब्बी निकाली.

"वाह, बेटा, क्या ठाट हैं! कैप्सटन का सिगरेट पीने लगे हो."

"अरे यह. . ." उस की आवाज लड़खड़ाई, "बीड़ी पिओगे,"

"बीड़ी क्या यारों के लिए रखी है? बेटा, मैं भी गोल्ड फ्लैक पीता हूं," उस ने जेब से सिगरेट का पैकेट बाहर निकाल हवा में उछाला, "मगर किसी को बताना नहीं इस डब्बी में चारमीनार के कारतूस हैं."

"तू नहीं बदलेगा!" महेश हंस पड़ा.

"ला तेरा कैप्सटन का सिगरेट पीते हैं."

दोनों ने सिगरेट सुलगाए, और जब महेश ने धुआं बाहर फेंका तो उसे लगा, उस के साथ उस का गबार भी निकल गया है.

"हां अब बताओ, तुम इस शहर में कैसे आ गए."

धन क्या है?

किसी की किस्मत की डोर दूसरे के हाथ में नहीं है.

✦

क्या तुम जानना चाहते हो कि धन क्या है! जाओ कुछ उधार ले आओ.

—सूक्ति.

"नौकरी ढूंढ़ने आया हूं."

"कोई मिली?"

"नहीं."

"नहीं क्यों!"

"काम नहीं बना."

"यहां नौकरियां पेड़ों पर तो नहीं लगतीं. किसी फर्म की चिट्ठी आई थी?"

"किसी की भी नहीं. मैं किसी का पत्र ले कर एक व्यक्ति के यहां गया था."

"और उस ने बहाना बना कर टाल दिया!"

"तुम कैसे जानते हो?"

"मैं जानता हूं, तुम्हारे साथ ऐसा ही होगा. अरे तुझे कोई क्यों नौकरी दिलवाने लगा!"

"क्यों मुझ में क्या दोष है."

"कोई दोष नहीं तभी तो कह रहा हूं. तुम धीरेधीरे यह सब समझ जाओगे. खैर अब जा कहां रहे हो!"

"निजामुद्दीन."

"वहां क्या करने जा रहे हो?'

"वहां पर एक परिचित हैं."

"क्या वहां जाना आवश्यक है?"

"नहीं, ऐसा कोई विशेष तो नहीं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"तो फिर मेरे साथ चलो."

"तुम्हारे साथ?" महेश धीरे से हंसा, "क्या कोई ठिकाना ढूंढ़ लिया है?"

"हां भाई, अब मैं इस शहर का बाशिंदा हूं. घरबार, व्यापार सब यहीं है," तिलकराज ने कृत्रिम गंभीरता से कहा. पर दूसरे ही क्षण हंस पड़ा.

"यहां तुम क्या करते हो?"

"पहले यहां से उठो, कोठी चल कर बताऊंगा. बस आ रही है."

महेश ट्रंक उठाने लगा तो तिलकराज ने उसे धीरे से धकेल स्वयं ही उठा लिया. ट्रंक टांगों के पास रख वह डंडा पकड़ बस में खड़े हो गए. तिलकराज ने एक हाथ से उस का कंधा दबाया और मुसकराने लगा.

"जाना कहां है?"

"पास ही रंगरपुरा," तिलकराज ने दो टिकट लेते हुए कहा.

"यह रही हमारी कोठी!" तिलकराज ने ट्रंक को चारपाई पर फेंका तो वह बुरी तरह चरमरा उठी. महेश ने झुकेझुके ही कमरे का निरीक्षण किया, छोटी सी कोठरी जिस में कठिनाई से दो चारपाइयां आ सकती थीं. उस में एक ओर एक चारपाई पड़ी थी और एक कोने में मुड़ा-तुड़ा टीन का ट्रंक. बाकी स्थान पर वे दोनों खड़े हुए थे. पूरा कमरा धूल से भरा पड़ा था और फर्श पर कितने ही सिगरेट के टुकड़े पड़े थे. कमरे की अनगढ़ दीवार पर कितने ही काले धब्बे उस से रगड़ कर सिगरेट बुझाने के परिणाम स्वरूप पड़ चुके थे. छत टीन की थी और उस की ऊंचाई, महेश ने अनुमान लगाया कि यदि वह सीधा खड़े होने का प्रयास करे तो उस का सिर अवश्य छत से टकराएगा. उस ने तिलकराज के छोटे कद का निरीक्षण किया और छत को देखने लगा. तिलकराज के और छत के बीच लगभग तीन इंच का अंतर था.

"छत काफी नीची है."

"नहीं यार, तुम्हारा कद लंबा है."

दोनों ने कहकहा लगाया और फिर चार पाई पर बैठ गए.

"हां अब सुनाओ, तुम इस शहर में कैसे आ गए?"

"महेश भाई, क्या बताऊं तुम्हें, बस आ ही पहुंचा हूं. दो साल से यहां पर हूं और यहां के जीवन से बेहद तंग आ चुका हूं. पर जानते हो, जिस ने यहां का पानी एक बार पी लिया वह यहां से जा नहीं सकता. प्रत्येक रात थकान से चूर हो कर चारपाई पर लेटता हूं तो यही निश्चय करता हूं कि सुबह होते ही शहर छोड़ दूंगा. लेकिन सुबह और यहां का व्यस्त जीवन—बस उसी में गुम हो जाता हूं. कई बार सोचता हूं, अकेली जान हूं, यहां से कहीं और जा कर करूंगा ही क्या! यहां की भीड़ में हर आदमी अकेला है सो सोचता हूं, इन के बीच व्यस्त रह कर मेरा अकेलापन भी कट जाएगा."

महेश चुपचाप सामने लगे फिल्मी पोस्टर को देखता रहा.

"जब लुधियाना में था तो खाने के लिए एड़ियां रगड़नी पड़ती थीं. कचहरी के पुल पर साइकिलें ढोढो कर दसवीं पास की, वह भी थर्ड डिवीजन में. भला मुझे वहां कौन नौकरी देता. पहले यहां पर आ कर इस शहर में खूब धक्के खाए. कई दिन लगातार भूखा रहा. नींद से बोझल हो रात को किसी पार्क में लेटता तो सिपाही वहां से निकाल देते. तीन महीने जूता घिसाने के पश्चात एक साबुन के छोटे से कारखाने में मुनीम लगा हूं, तब से वहीं हूं. पहले रात को कारखाने के बरामदे में सो जाता था

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अब किसी भांति यह कोठरी जुट गई है."

"कितना किराया देते हो?"

"25 रुपए."

"इस का!" महेश आश्चर्य से फिर उस कोठरी का निरीक्षण करने लगा.

"हां और तुम्हें क्या बताऊं, यह भी कितनी कठिनाई से मिली है. पीछे दूध की डेरी है नहीं तो इस का किराया और भी अधिक होता."

"हूं, कारखाने वाले कितनी तनख्वाह देते हैं?"

"100 रुपए. अकेली जान हूं, गुजारा ठाट से हो जाता है. तनख्वाह वाले दिन एकाध बोतल भी जुट जाती है."

"तो शराब भी पीने लगे हो?"

"इस में क्या दोष है. कम से कम एक दिन ऐसा आ जाता है जब पी कर मैं कमरे का दरवाजा बंद कर के जी भर कर रोता हूं, सब को गालियां देता हूं. नहीं तो अकेले में बिना नशे के रोया भी तो नहीं जाता."

महेश की आंखें भीग गईं. तिलकराज ने कितनी यातनाएं झेली थीं, उस से अब छिपा नहीं था. पर महेश के अतिरिक्त उस ने स्वयं का दुख किसी से नहीं कहा था. अन्य व्यक्तियों की दृष्टि में वह एक अनाथ, आवारा और गालियां देने का शौकीन बदमस्त युवक था.

"अरे हां," तिलकराज ने स्वयं के स्वर को भरसक संयत करते हुए कहा, "तुम दसवीं पास करने के बाद क्या करते रहे?"

"कालिज में प्रवेश ले लिया था. तुम तो जिस दिन परिणाम निकला था उसी दिन गायब हो गए थे. मुझे कालिज में 30 रुपए की छात्रवृत्ति मिलने लगी थी."

"फिर छोड़ क्यों आए?"

"कुछ नहीं, यार," महेश ने उदासी से लंबा सांस खींचा, "बापू फिर धर्मशाला चले गए. मां अब कुछ भी करने के योग्य नहीं रही."

"देखो, महेश," इस बार तिलकराज गंभीर हुआ, "घबराने से काम नहीं चलेगा. इतना बड़ा शहर है. कोई न कोई काम तुम्हारे लिए ढूंढ़ेंगे. जब तक काम पर नहीं लगता उस की चिंता तुम मुझ पर छोड़ दो."

"तुम्हारा अपना गुजारा कठिनाई से होता है. मैं भी तुम पर बोझ बन जाऊं!"

"तुम गधे ही रहोगे," इस बार तिलकराज ने उस की बांह पकड़ ली. "तुम मुझ पर क्या बोझ बनोगे. अबे, जहां दो रोटियां मैं खाता हूं वहीं से तुम भी खा लेना, फिर रहने के लिए यह कोठरी तो है ही. तुम्हारे अंक अच्छे आए थे तुम्हें कोई अच्छी सी नौकरी मिल जाएगी. उठ, जरा चाय पी आएं."

गली में फैली फिसलन को सावधानी से पार करते हुए वे दोनों सड़क पर आ गए तो महेश ने लंबा सांस खींचा.

"यह गली भी अपने महल्ले जैसी है."

"हां ऐसे गलीकूचे लगभग प्रत्येक शहर में हैं. लोग भी लगभग वैसे ही हैं."

एक दुकान पर चाय पी कर वे दो घंटे करोलबाग के क्षेत्र में घूमते रहे. फिर वे थक कर अजमलखां पार्क में जा बैठे.

"हां अब तुम्हारे लिए नौकरी ढूंढ़ने का कार्यक्रम बनाते हैं."

"क्या कोई जानता है?"

"हां," तिलकराज ने हंस कर सिर हिलाया और जेब में सिगरेट ढूंढ़ने लगा.

"यार, मेरे पास तो समाप्त हो गई है."

"सिगरेट तो नहीं, बीड़ी है." महेश

मित्र कौन?

मित्र वह है जो कि विपद में सहायता करता है न कि वह जो दया दिखाता है.

—सूक्ति

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ने जब से बंडल निकाला, उस के ऊपर से कागज फाड़ा और फिर बंडल को दोनों हाथों में धीरे से दबा कर दो बीड़ियां निकाल लीं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां बताया नहीं, किसे जानते हो?" महेश ने गहरा कश ले कर धुआं सीने में उतार लिया.

"भगवान को."

महेश ने उस की पीठ पर मुक्का दे मारा. "उसे तो सभी जानते हैं."

"पर वह केवल मुझे जानता है. हां छोड़ यार, मार भगवान को गोली. कल मैं तुम्हें 10–12 अर्जियां अपने कारखाने से टाइप करवा कर ला दूंगा. ऐसे करना जहां भी जरा सी आशा दिखाई दे वहीं पर एक के ऊपर उस का नाम लिखा और टिका दी."

"मगर किस फर्म में?"

"कोई भी हो. दो जगह हैं, जहां पर अधिक आशा है. एक तो अजमेरी गेट के पास आसफअली रोड और दूसरी कनाट प्लेस व कनाट सर्कस. अधिकतर दफ्तर वहीं हैं."

"ऐसे बिना परिचय के कौन रखेगा?"

"जिसे आवश्यकता होगी."

"पर..."

"तुम अभी से घबरा रहे हो. पर देखो, मैं तुम्हें पहले ही बता दूं, नौकरी करनी है तो ढीठ बनना पड़ेगा. इतने संकोची बनोगे तो कोई दरवाजा भी पार करने नहीं देगा. वहां तुम्हारा पाला अद्भुत लोगों से पड़ेगा. वे तुम्हें अजीब बातें कहेंगे पर घबराना नहीं, यह समझ लेना कि वे सब अपने बाप से कह रहे हैं. देख, महेश, पहलेपहल यह बड़ा अजीब लगता है. पर, यार, इस से घबरा कर यदि तेरेमेरे जैसे लोग हिम्मत हार बैठे तो भूखे मर जाएंगे. कोई बड़ी इमारत या रोबदार दफ्तर देख घबरा न जाना. मन को समझाने की बात है. यही समझ लेना, यह सब उन्होंने तुम्हारे लिए ही किया है. जो लोग नौकरियां करते हैं वे खुदा के विशेष कृपापात्र नहीं, हमारेतुम्हारे जैसे ही हैं. गर्जना या व्यंग्य करना उन का काम है क्योंकि वे काम पर लगे हैं. उन की बातों को सहना और उन की मांबहनों से मन ही मन रिश्ते जोड़ना यह काम ढूंढ़ने वालों के क्षेत्र में आता है. जो कोई सीधे मुंह तुम से बात न करे उसे मन ही मन भयंकर गाली दोगे तो तुम्हारे मन से भड़ास निकल जाएगी. क्या समझे!"

"वह तो ठीक है. पर ये जगहें जो तुम ने बताई हैं, ढूंढ़ूंगा कैसे?"

"तुम आदमी हो या घनचक्कर! इस बार तिलकराज भन्ना उठा. पूछते-पूछते तो आदमी ईरान पहुंच जाता है."

"अरे नाराज क्यों होते हो?"

"नाराज क्या, तुम भी कमाल के आदमी हो. थोड़ा सा साहस भी नहीं जुटा पाते. एक अकेले आदम ने सारी धरती बसा दी और तुम हो कि लुधियाना से आ कर यहां एक नौकरी भी नहीं ढूंढ़ सकते. मुझ से तीन बार कहो, नौकरी ढूंढ़ूंगा."

"अरे भाई ढूंढ़ूंगा," महेश ने खिसिया कर मुसकराते हुए कहा.

"तुम्हारे पास कितने पैसे हैं?"

"दो रुपए."

"मेरे पास पांच रुपए हैं और मुझे वेतन मिलने में चार दिन पड़े हैं. इन चार दिनों में सात रुपए से गुजारा करना है. ढाबे वाला एक थाली के आठ आने लेता है, इस तरह तो उस साले के ही आठ रुपए हो जाते हैं. ठहर यार, यदि हम केवल रात को ही खाना खाएं तो यह बने

खिजां ने लूट लिया दिल की आरजू का चमन,
कहां है ए मेरी खोई बहार देख तो ले.
—साहिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चार रुपए. दो पैकेट प्रति दिन चार-मीनार के. दो रुपए हुए इन के बाकी एक रुपया चाय के लिए. तुम्हें पैदल मार्च करना पड़ेगा."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कर लूंगा."

"शाबाश, बहुत अच्छा लड़का है," तिलकराज ने उस की पीठ थपथपाई. "निकाल दो रुपए."

महेश ने कोट की भीतरी जेब में हाथ डाला और भीतर का सारा सामान बाहर निकाल लिया.

"अच्छा कैप्सटन का एक और पैकेट लिए फिरते हो?"

"खाली है."

"धत तेरे की! अरे खाली कहते हो," तिलकराज ने पैकेट खोला तो उछल पड़ा. "अरे यह क्या है?" उस ने 10-10 के दो नोट पैकेट से निकाल कर उस के सामने हवा में उछाले तो लपक कर उस ने वह पैकेट उस के हाथ से ले लिया.

नोट के कागज पर एक वाक्य लिखा हुआ था, जो वह ऊपर खंभे पर लटकते बल्ब की रोशनी में वह पढ़ गया : 'कोई उलटासीधा अर्थ मत निकालना!' महेश के चेहरे का रंग एकाएक उड़ गया और उस की आवाज भरभर्रा गई, "यह नोट मुझे दो."

"पर तुम्हें यह हो क्या गया है?"

"कुछ नहीं, यार, ये लोग अब भी मेरा मजाक उड़ा रहे हैं."

"कौन हैं वे लोग?"

"पर महेश चुपचाप उस डब्बी को देखता रहा. वह अब तक पिछले दो दिन की घटनाएं भूल चुका था. लेकिन अब कल और आज के बीच व्यतीत हुआ समय उस के सामने तैर गया. वह निचला होंठ दांतों के नीचे दबा बाहर आते गुबारे को रोकने का प्रयास करने लगा.

"अब, कुछ बोलेगा भी," तिलकराज ने डब्बी को खोला और बुदबुदाया.

"कोई उलटासीधा अर्थ मत निकालना यह क्या चक्कर है?"

"कुछ नहीं."

"फिर तुम्हें यह एकाएक कैसे दौरा पड़ गया?"

महेश फिर चुप हो गया. वह सोच रहा था, ये नोट सरला ने उस के जाने के पश्चात रखे होंगे. पर क्यों? वह क्यों नहीं चाहता था कि उसे पता चले कि उस के पास केवल दो रुपए हैं! वह उस के सामने क्यों नहीं खुलना चाहता था? वह क्यों चाहता था कि वह जान जाए कि वह उस की सहायता के बिना भी जी सकता था? वही क्यों उस पर स्वयं के विचारों को थोप देने का प्रयास कर रही थी? वह उस से क्यों खुलना चाहती थी? और ये नोट उस ने क्यों रखे थे!

"तुम ने सारा बजट गड़बड़ कर दिया, अब दोनों समय खाना खाना पड़ेगा."

"नहीं, नहीं," महेश चौंकता सा बोला, "ये रुपए वापस करने हैं."

"किसे!" तिलकराज उत्सुक हो उठा.

"गलत मत समझना, दरअसल किसी और के हैं."

"वह तो तुम्हारी बात से ही लगता है पर वह है कौन?"

"है कोई."

"कमाल है, तुम मुझ से छिपा रहे हो. मैं ने तो तुम्हें चारपाई के खटमल तक बता दिए हैं. तुम मुझे यह भी नहीं बता सकते."

तुम ने कितने सपने देखे, मैं ने कितने गीत बुने,
इस दुनिया के शोर में लेकिन दिल की धड़कन कौन सुने
—साहिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रत्येक बात का मजाक नहीं उड़ाते."

"पर ऐसी क्या बात है?"

"कोई उलटासीधा अर्थ मत निकालना. कमरे में चल कर बताऊंगा."

"कमरे में क्यों, यहां क्यों नहीं!"

"बात यह है," वह एक बार हिचकिचाया पर बाद में धीरेधीरे उसे पूरी बात बता दी. तिलकराज चुपचाप बीड़ी के कश लेता रहा.

"एक बात पूछूं," तिलकराज ने गंभीर होते हुए पूछा, "तुम ने यह खाली डब्बी जेब में क्यों रखी थी."

"वह तो अचानक ही," महेश गड़बड़ा गया.

तिलकराज मुसकरा दिया. "देखो, महेश, यह जो तुम ने सब बताया, कम से कम यदि कोई और होता तो मैं काल्पनिक ही मानता. पर तुम झूठ नहीं बोलते, यह भी मैं जानता हूं पर. . ."

"पर क्या!"

"तुम ने यह पैकेट जानबूझ कर जेब में रखा था. तुम मन ही मन उसे अचेत रूप से चाहने लगे थे. पर जो तुम ने सोचा है वह तुम्हारा वहम ही हो सकता है. एक ही दृष्टि में तो कोई किसी से प्यार नहीं करने लगता. तुम में और उस में जमीनआसमान का अंतर है. सच कहूं तो गलती तुम्हारी है जो प्रत्येक बात को स्वयं के दिए अर्थों में ढाल लेते हो. हो सकता है, उस का स्वभाव ही ऐसा हो, कई व्यक्ति ऐसे भी होते हैं. बस अंतर यह है कि वह लड़की है इसलिए तुम भावुक हो उठे हो. इन 20 रुपयों को रखने के पश्चात, तुम समझते हो, उस की दृष्टि में हीन बन जाओगे पर यह भी तुम्हारी गलती है. मैं यह नहीं कहता कि उस के रुपए मत लौटाओ. अवश्य उसे वापस कर देना पर मुझे मिलने के पश्चात. तब तक ब्याज के रूप में यह ही मन उस का शुक्रिया अदा कर सकते हो."

"पर"

"उस ने तुम्हें सच कहा था, प्रत्येक बात को सहजता से लेना चाहिए. वह कहीं भागी तो नहीं जा रही है, रुपए उस को अवश्य लौटाएंगे. यार, तुम्हें तो उसे धन्यवाद देना चाहिए, जिस ने समय पर तुम्हारी सहायता कर दी. मान लो, यदि तुम्हें दिनेश भैया भी न मिलते और मैं भी नहीं मिलता तो तुम वापस कैसे लौटते?"

"किसी तरह चला जाता."

"कैसे चले जाते?" इस बार तिलकराज बुरी तरह झल्ला उठा. "पता नहीं, तुम्हें अपने खोल से बाहर निकल कर जीना कब आएगा. इतने भावुक हुए तो अपना बेड़ा पार समझो. तुम उसे उस के रुपए लौटाना चाहते हो तो यह लो और जा कर उसे लौटा आओ!" उस ने दोनों नोट उस के आगे फेंक दिए.

महेश ने सामने पड़े नोटों को देखा फिर उन्हें तिलकराज की मुट्ठी में दबा दिया. "नौकरी लगने के बाद लौटा देंगे."

इस बार तिलकराज ने कोई उत्तर नहीं दिया तो महेश घास का एक तिनका तोड़ मुंह में डाल कर चबाने लगा. रात का अंधेरा पार्क में भरता जा रहा था और उस के साथ ही पार्क खाली होता जा रहा था. आसमान से ठंडक उतर कर पार्क की घास पर बिछती जा रही थी. महेश ने दृष्टि ऊपर उठा दी. पार्क में गहन चुप्पी थी और उसे लगा, दूर से आता सारा शोर उस चुप्पी को तोड़ने में असमर्थ था. दिल्ली में जैसा तिलकराज ने उसे बताया था, ऐसे कोने बहुत कम थे जो इस भीड़ भरे शहर का भाग नहीं थे. उसे लगा, यह पार्क भी उन हिस्सों में था जो दिल्ली के मध्य हो कर भी लगता था उस से कट कर जीते थे.

"चलो, चलें, ठंडक बढ़ रही है," महेश ने तिलकराज को रोका.

"हूं," वह उठ कर खड़ा हो गया और दोनों ढाबे की ओर चलने लगे.

—क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

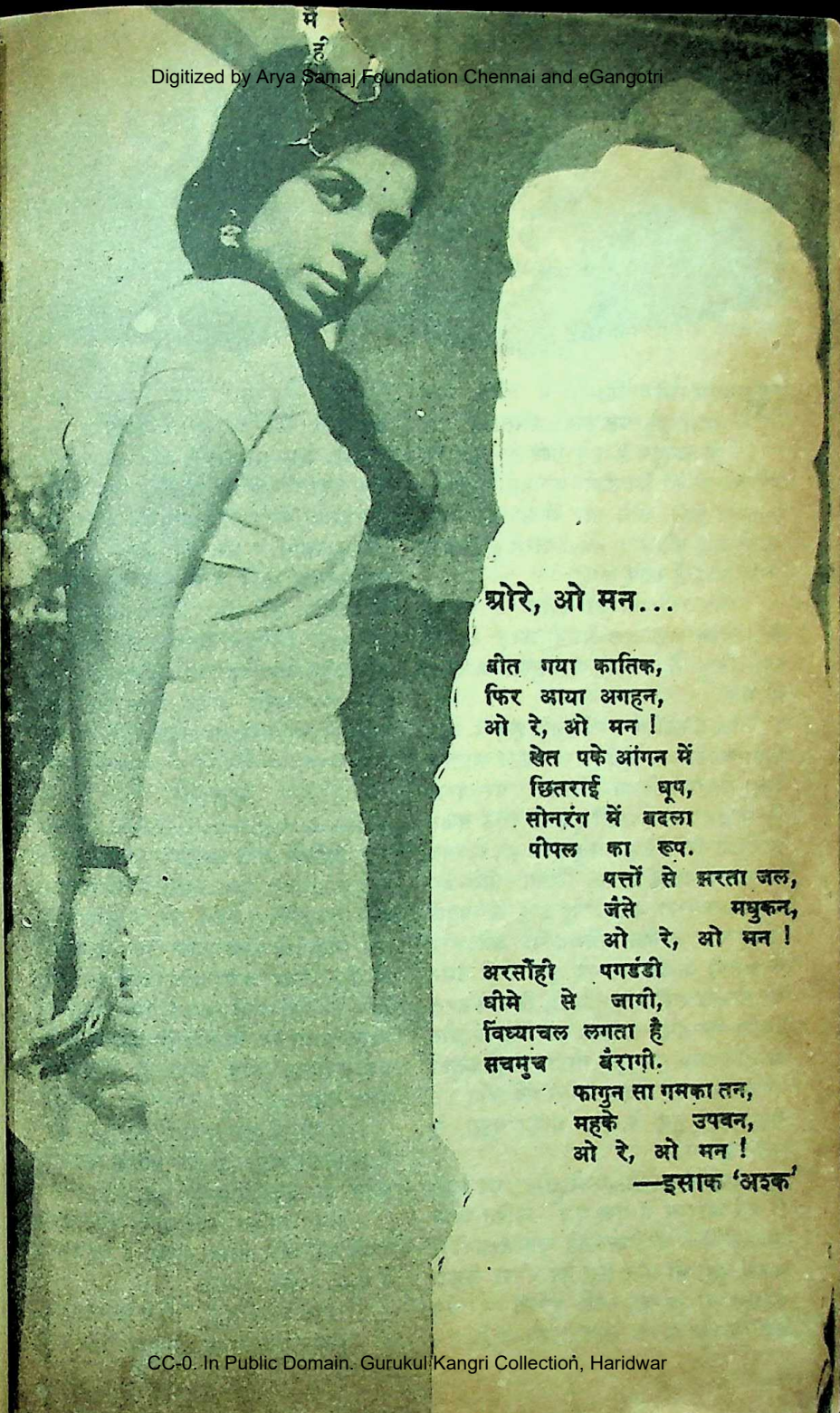

ओरे, ओ मन...

बीत गया कातिक,
फिर आया अगहन,
ओ रे, ओ मन !
खेत पके आंगन में
छितराई धूप,
सोनरंग में बदला
पीपल का रूप.
पत्तों से झरता जल,
जैसे मधुकन,
ओ रे, ओ मन !
अरसौंही पगडंडी
धीमे से जागी,
विध्याचल लगता है
सचमुच बैरागी.
फागुन सा गमका तन,
महके उपवन,
ओ रे, ओ मन !

—इसाक 'अश्क'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविस्मरणीय रेलयात्रा

जयपुर और दिल्ली के बीच एक वातानुकूलित डब्बा चलता है. जब मैं जयपुर से इस डब्बे में चढ़ा तो परिचारक की शिष्टता पर हर्ष मिश्रित आश्चर्य हुआ. धीमे स्वर में उस ने नीचे वाली सीट की तरफ संकेत करते हुए कहा, "यह सीट है आप की."

भीतर रोशनी की चमक के कारण मेरी आंखें कुछ क्षण अच्छी तरह देख न पाईं किंतु मैं स्थिति का तुरत अभ्यस्त हो गया.

खिड़कियों के परदे गिरे हुए थे और बहुत साफ थे. फर्श पर बिछा कारपेट अभी घिसा नहीं था. बिस्तरों पर खादी की सफेद चादरें बिछी हुई थीं और सफेद खादी के ही तकिए लगे हुए थे. हर बिस्तर के पायंते सफाई से तह किया नीले रंग का कंबल रखा था. किंतु डब्बे में पहले से ही चार व्यक्ति मौजूद थे. प्रवेशद्वार के सामने वाली बर्थ पर एक बड़ी उमर की संभ्रांत स्त्री लेटी हुई थी, जिस ने बहुत ज्यादा मेकअप कर रखा था. उस की सीट के नीचे फर्श पर एक मोटी कालीकलूटी औरत बैठी थी जिस ने ऐसे गंदे और फटे कपड़े पहने हुए थे, जो शायद मुद्दत से धुले नहीं थे.

उस के सामने वाली सीट पर कोने में बड़े आराम से एक वृद्ध व्यक्ति घुटने सिकोड़े बैठा था. उस की चांद रोशनी में चमक रही थी और उस का पीला चेहरा बताता था कि वह कोई कुरसी पर बैठ कर करने वाली नौकरी करता है. उस ने पहले ही कपड़े बदल लिए थे और इस समय पीले रंग वाला पाजामा पहने हुए था, जिस पर नीली गोट थी. वह कुछ बोल रहा लगता था, क्योंकि उस के बराबर वाली सीट पर बैठा युवक बहुत ध्यान और सम्मान से उस की बातें सुन रहा था. उस के चेहरे से वे भाव हट नहीं रहे थे, क्योंकि उसे और भी बातें सुनने की संभावना थी. वृद्ध व्यक्ति कोई सरकारी अधिकारी लग रहा था और वह अपने नीचे काम करने वाले लोगों की चाटुकारिता का अभ्यस्त लगता था.

कहानी

डब्बे में मेरा अचानक प्रवेश वृद्ध को कुछ अरुचिकर लगा. उस ने मेरी तरफ बड़ी हेय दृष्टि से देखा. उस के बुद्धिमानीपूर्ण भाषण के बीच आने वाला मैं कौन? मैं थोड़ा घबरा गया और डब्बे से बाहर जाने के लिए लगभग मुड़ गया किंतु तभी ध्यान आया कि मैं ने इसी डब्बे में अपनी बर्थ सुरक्षित करा रखी है. मैं फौरन पलट पड़ा.

"मेरी भी इस डब्बे में एक सीट है," मैं ने किसी व्यक्ति विशेष को न संबोधित करते हुए हवा में कहा.

दोनों व्यक्ति एकदूसरे की तरफ देखने लगे और पीला पाजामा पहने वृद्ध ने कहा, "कैसी सीट?"

"नीचे वाली सीट," मैं ने उत्तर दिया. पीला पाजामाधारी वृद्ध अब और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फैल कर बोला, "ओह, हां, मैं तुम्हारी सीट पर बैठा हूं. थोड़ी देर में ही मैं ऊपर वाली अपनी बर्थ पर चला जाऊंगा. आप को कोई एतराज तो नहीं?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पष्ट था कि मेरी तरफ से उसे आपत्ति की कोई संभावना नहीं थी. बिना मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किए उस ने अपना भाषण फिर से जारी कर दिया, "हां तो मैं कह रहा था, मैं काफी अरसे तक इस विषय में शंकित रहा. शुरू से ही मुझे उस पूरी योजना की उपयोगिता और व्यावहारिकता के बारे में गंभीर संदेह था.

ह. रा. पसरीचा

वास्तव में अभी तक संदेह बना रहा, किंतु हाल ही में मेरी राय में कुछ परिवर्तन आया."

"क्या अब आप को कोई संदेह नहीं रहा?" युवक ने पूछा.

"नहीं, अब कोई संदेह नहीं रहा. पूरी योजना के बारे में मेरे विचार बदल गए हैं."

"मैं ने अभी जो पैकेट दिया था, कहां रख दिया वह?" उस ज्यादा मेकअप करने वाली महिला ने अचानक काली-कलूटी, नौकरानी से पूछा.

"लाल सूटकेस में," चियड़े कपड़ों वाली नौकरानी ने कहा.

"पर मैं ने दूसरे सूटकेस में रखने को कहा था, नहीं कहा था क्या?"

सभी की आंखें दोनों स्त्रियों की तरफ मुड़ गईं. पीले पाजामाधारी को भाषण में विघ्न पड़ना अच्छा न लगा और उस ने अपनी नाराजगी जाहिर भी की. उस के इस असम्मान पर युवक का जबड़ा नीचे लटक गया. इस बुरे ढंग से एक प्रवर सरकारी अधिकारी की बातों में कोई कैसे विघ्न डाल सकता है? नौकरानी अपना सिर खुजलाने लगी. सजी हुई महिला ने तीखे स्वर में कहा, "कोई बात नहीं. एक गिलास पानी ला."

थर्मस में से एक गिलास पानी उंड़ेला गया और महिला को दे दिया गया.

वह पानी का बड़ा सा घूंट ले कर बोली, "बहुत गरमी है अंदर. गरमी में गाड़ियों को गरम और सर्दी में ठंडा रखते हैं यह रेलवे वाले."

उस की इस गंभीर उक्ति पर चियड़े में लिपटी नौकरानी ने सिर हिलाया. महिला गटगट की आवाज करती हुई पानी पी गई. सब लोगों की दृष्टि उसी पर टिकी हुई थी.

इस दौरान मैं अपने सहयात्रियों का निरीक्षण कर रहा था कि किस ने क्या पहन रखा है और कौन कैसा दिखाई दे रहा है. वृद्ध व्यक्ति पीला पाजामा पहने हुए था, अधेड़ महिला ने बहुत मेकअप कर रखा था, उस की नौकरानी चीथड़ों में थी और युवक कोई मामूली पद पर सरकारी नौकर लगता था. भारत में वार्तालाप करने के दौरान एक विशिष्ट प्रवृत्ति यह है कि बात करने वाले एकदूसरे को नामों से संबोधित नहीं करते. बात किसी विशेष को संबोधित कर के नहीं की जाती. शायद यह उस विशिष्ट गुण का परिचायक है जिस में बहुत सारे लोग एक साथ बिना दूसरे की बात सुने जोरजोर से हाथ हिलाते हुए बोलते हैं. इस क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ में लगा हुआ है.

पीले पाजामाधारी को वार्तालाप में

उजड्ड किस्म के सहयात्री, उलजलूल अजीबगरीब बातें और तरहतरह के झूठ—क्या कुछ नहीं मिला मुझे उस छोटे से सफर में!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह का हस्तक्षेप बहुत खला किंतु ज्यों ही वे दोनों स्त्रियां चुप हुईं, उस ने अपना भाषण जारी कर दिया, "इस काम के सिलसिले में मैं ने बहुत यात्रा की है. मैं सभी राज्यों में गया हूं और वहां के मुख्य मंत्रियों से बातचीत की है. मेरा संदेह धीरेधीरे खत्म हो गया है. मेरा दृष्टिकोण बदल गया है. अब मुझे उस योजना की संभावनाओं का अनुमान हो रहा है. प्रगति और विकास का बहुत बड़ा क्षेत्र है. हमें अपने देश का विकास तेजी से करना है. निस्संदेह इस के लिए बहुत ज्यादा धन की जरूरत है. किंतु धन क्या है? धन किस लिए है? हमें निडर हो कर धन लगाना पड़ेगा ताकि हमारे देश का विकास हो सके."

मैं सीट के एक कोने में दबा हुआ बैठा था, जिस से मुझे कुछ असुविधा होने लगी. मैं बीच में हस्तक्षेप करना चाहता था. किंतु शब्दों का प्रवाह इतना तेज था और वह चापलूस युवक इतने मनोयोग से शब्दों को पी रहा था कि हस्तक्षेप करना व्यर्थ लगा.

"कठिनाइयां अवश्य सामने आएंगी लेकिन हम कठिन परिश्रम करेंगे और उन पर काबू पा लेंगे. उस योजना से हमारे गांवों को बहुत लाभ पहुंचेगा. ग्रामीण भारत को विकसित करने का और कोई उपाय नहीं. मुझे विश्वास है कि इस योजना से हम अपनी उपज बढ़ा सकेंगे."

"क्या आप जयपुर इसी सिलसिले में आए थे?" युवक ने पूछा.

"हां, किंतु एक विशेष अवसर और था. एक विचारगोष्ठी थी पंचायत राज्य पर. अखिल भारतीय कार्यक्रम था. पूरे देश से लोगों को बुलाया गया था. श्री अशोक मेहता और इस विभाग से संबद्ध मंत्री इसी गाड़ी में यात्रा कर रहे हैं, वे अगले डब्बे में हैं."

"सच!" नवयुवक उत्साहित होता हुआ बोला. शायद किसी मंत्री के निकट होना ही उस के जीवन की साध थी. एक

> "मेरी भी इस डब्बे में एक सीट है." मैं ने उन दोनों व्यक्तियों के पास खड़े हो कर कहा.

मंत्री के साथ उसी गाड़ी पर यात्रा करने का महत्त्व अभी तक मेरी समझ से बाहर था.

"हम ने इस विषय पर काफी विस्तार से विचार किया," पीला पाजामाधारी बोलता गया. "इन कांफ्रेंसों में काफी श्रम पड़ता है और कभीकभी कईकई कांफ्रेंसों में एक साथ जाना पड़ता है. जरा उस समय के मानसिक बोझ का अनुमान लगाइए. क्या आप ने गुजरात के मुख्य मंत्री का भाषण पढ़ा?"

उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह बोलता गया, "उन्होंने बड़े विस्तार से बातें समझाई हैं. समाचारपत्रों ने उन का भाषण सही ढंग से उदधृत न कर के अन्याय किया है. उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि व्यय, अपव्यय और आपातकालीन स्थिति की परवा किए बिना यह योजना अवश्य कार्यान्वित होगी. मैं उन से सहमत हूं. सोचें तो, आपातकालीन स्थिति से इस योजना का क्या संबंध! हमें हर स्थिति में देश का विकास करना है."

"आपातकालीन स्थिति कहां है?" मैं जरा तीखा बोलने का लोभ संवरण न कर सका.

"यहां, भारत में." पीले पाजामाधारी ने व्यंग्य से कहा, "क्या, आप ने चीनी आक्रमण के बारे में नहीं सुना है?"

"इस दुर्घटना को हुए बहुत समय बीत चुका है. वे आए और उन्हें जो चाहिए था, वह उन्होंने ले लिया. अब आपातकालीन स्थिति कहां है?"

नवयुवक विषय को बदलना चाहता था. उस ने मुझ से पूछा, "क्या आप भी इसी सिलसिले में जयपुर आए थे?"

"नहीं, मैं षड्यंत्रों में हिस्सा नहीं लेता," मैं ने उत्तर दिया.

नहीं जानता, ऐसा मैं ने क्यों कहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

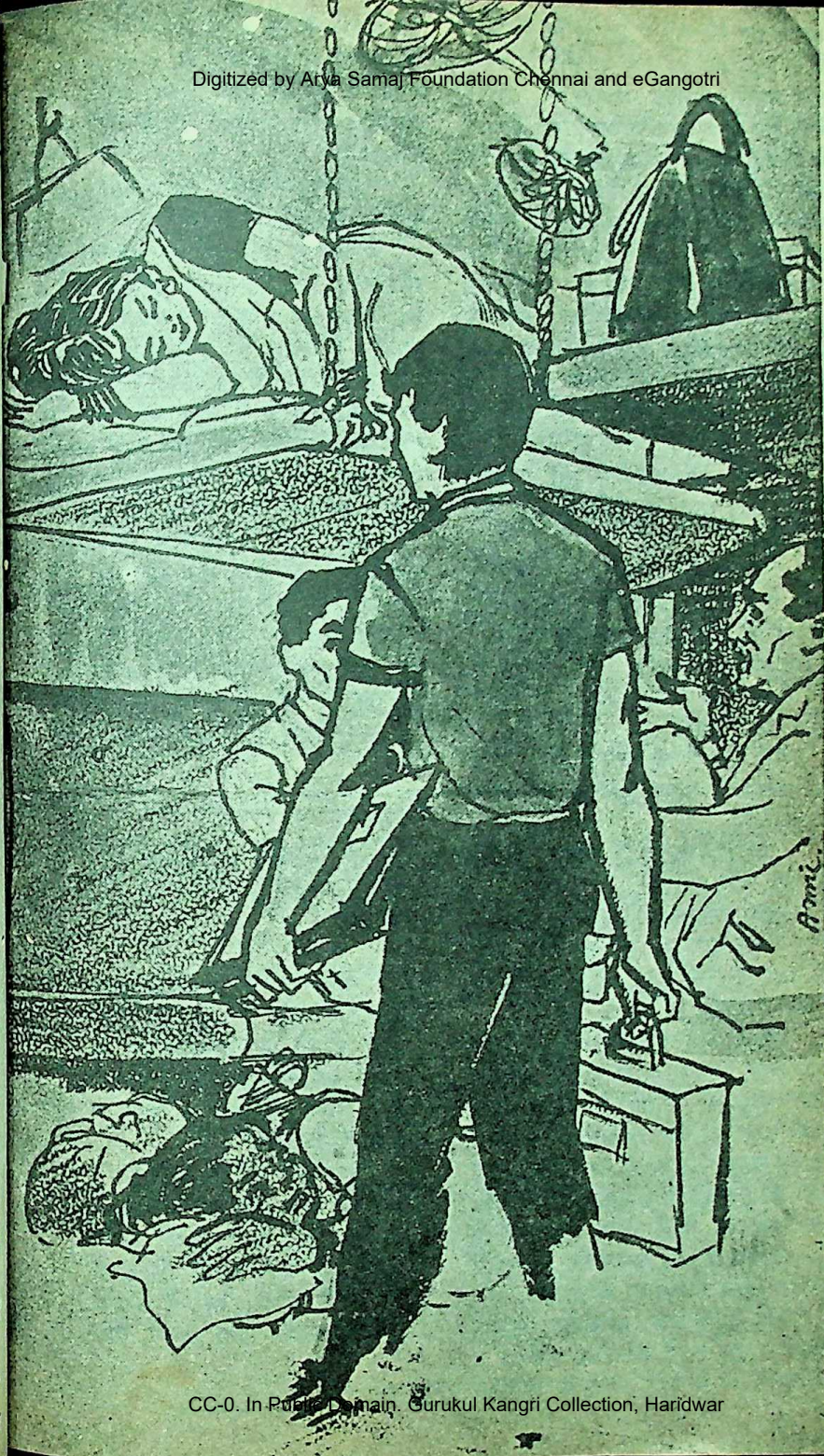

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद इस का कारण यह था कि मैं भिचे-भिचे बैठा तंग आ गया था और मैं अपनी सीट खाली करवाना चाहता था. शायद मेरा मन पीले पाजामाधारी के दिखावे के विरुद्ध विद्रोह करना चाहता था. मेरे उत्तर से डब्बे की हवा में तनाव आ गया. पीले पाजामाधारी का धाराप्रवाह भाषण झटके से बीच में रुक गया. उस ने हेय और कठोर दृष्टि से मेरी ओर देखा, जैसे मुझे उस दृष्टि से खामोश कर देगा. मैं बिलकुल न झिझका और मैं ने बिना पलक झपकाए सीधा उस की तरफ देखा. उस ने रुक्षता से पूछा, "इसे षडयंत्र कहने के पीछे आप का क्या मंतव्य है?"

काश! मेरी बात पर कोई ध्यान न देता! किंतु अब पीछे हटने का प्रश्न नहीं उठता था.

"क्योंकि इन कांफ्रेंसों से कोई लाभ नहीं, केवल कुछ सरकारी अफसरों और मंत्रियों को यात्रा भत्ता देने और मनोरंजन प्रदान करने का बहाना मिल जाता है. इन में काम की तो कोई बात होती नहीं." मैं ने लग्गी लगाई.

"मैं आप से सहमत नहीं हूं."

"आप के सहमत होने की मुझे आशा भी नहीं है."

"तुम्हारे अनुसार इन विचारगोष्ठियों से कोई लाभ नहीं?"

पीला पाजामाधारी इस में अब बुरी तरह उलझ गया था. उस का स्वर ऊंचा हो गया था और उस में से नाराजगी झलक रही थी.

एक सरकारी कर्मचारी से बहस करना व्यर्थ लगा. एक सरकारी नौकर हर उस विचारधारा को आसानी से अपना लेता है जो सत्ता की ओर से आए और जिस का उस समय में चलन हो. भारतीय जनता सत्ता की पूजक है और शताब्दियों से लोग इसी मनोवृत्ति के हैं. दास भाव उन में बहुत अधिक है और कर्मचारी के रूप में वफादार होने में उन का कोई सानी नहीं.

फिर भी मैं उस चमकदार गुब्बारे में सुई से छेद करने का लोभ संवरण न कर पाया. मैं ने कहा, "इस के विपरीत मेरे खयाल से इन से बहुत लाभ होता है. विशेष कर मंत्रियों और उन पिट्ठुओं को. जनता के पैसे पर मुफ्त यात्रा करने को मिलती है और गुलछर्रे उड़ाने को धन मिलता है."

"आप के अनुसार, इस योजना का कोई उद्देश्य नहीं, क्यों यही न?"

"बिलकुल नहीं. इस का अर्थ भी है, और उद्देश्य भी. इस योजना का उद्देश्य है, देश के हर गांव में जनता के धन से सत्तारूढ़ दल के प्रचार का ढांचा खड़ा करना. गांव में उस दल के पदाधिकारी सरकारी प्रभाव और सरकारी जीप की मदद से सही प्रत्याशियों के लिए वोट प्राप्त करने वाले सफल एजेंट सिद्ध होते हैं सही प्रत्याशी से मेरा अभिप्राय आप समझ गए होंगे."

क्रोध और भावातिरेक से पीले पाजामाधारी में जैसे जान पड़ गई हो. उस का शरीर तन गया और उस ने लगभग चिल्लाते हुए कहा, "बकवास बंद करो. तुम मुझे सरकारी पिट्ठू कहते हो, मेरा अपमान करते हो. हम मैत्रीपूर्ण वार्तालाप कर रहे थे, तुम नाहक बीच में आ पड़े."

हमें शर्म आती है!

जैसलमेर के सुप्रसिद्ध रामदेवरा के मेले में प्रति वर्ष भांग पीने वालों की प्रतियोगिता का मुंडन कर के चांदी के वरक लगा कर जुलूस के रूप में मेले में घुमाया जाता है.

इस बार मेले में जोधपुर व बीकानेर के भंगेड़ियों की प्रतियोगिता हुई, जिस में नौ किलो भांग घुटी और सैकड़ों की संख्या में लोगों ने पी. इस में सब से अधिक लगभग सवा किलो भांग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"इसे आप मैत्रीपूर्ण वार्तालाप कहते हैं?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या कहेंगे आप इसे? क्यों?"

"मेरे खयाल से मैं इसे आत्मालाप कहना चाहूंगा."

"मैं इसे वार्तालाप कहता हूं."

"जहां तक मैं समझ पाया हूं, आप भाषण दे रहे थे और यह निरीह युवक सुन रहा था," मैं ने नवयुवक की तरफ संकेत करते हुए कहा.

"मैं उसे कुछ बातें समझा रहा था."

"क्षमा कीजिए, किंतु वार्तालाप में एक से अधिक व्यक्ति हिस्सा लेते हैं, वरना वह आत्मालाप कहलाता है. शायद आप ने कभी यह महसूस नहीं किया होगा कि भाषण देना राष्ट्रीय शौक बन गया है. हमारे नेता हर 'ऐरेगैरे नत्थू खैरे' को भाषण देने से कभी नहीं थकते. वे भौतिकवादी पश्चिम को अध्यात्म का हमेशा उपदेश देते रहते हैं. आप भी उन्हीं के महान पदचिह्नों पर चल रहे हैं. हो सकता है, किसी दिन आप इस देश के राष्ट्रपति बन जाएं. जितना अधिक आप भाषण देंगे और जनता को गुमराह करेंगे, उतने ही अधिक आप समृद्ध होते जाएंगे."

"जनता को गुमराह कौन कर रहा है?"

"सरकार, उस के मंत्री. आप अभी-अभी यही कर रहे थे. क्यों ठीक नहीं?"

"बहुत हो चुका. मंत्री जनता को गुमराह कर रहे हैं! कोई ठोस उदाहरण देने की कृपा करेंगे क्या?"

"चार वर्ष तक चीनी आक्रमण के बारे में जनता को अंधकार में रखने के बारे में आप का क्या खयाल है? अंधकार में रखना तो छोटा वाक्य है. उन्होंने देशद्रोहपूर्ण गद्दारी की है."

"किंतु मैं एक ऐसी बात जानता हूं, जिसे आप बिलकुल नहीं जानते और वह मैं आप को बताता हूं."

पीले पाजामाधारी के चेहरे पर एक चमक आ गई. उसे लगा कि उस ने मुझे घेर लिया है. उस ने सन 1913-14 की शिमला कांफ्रेंस पर भाषण देना शुरू किया. उस के इतिहास का पूरा विवरण देने लगा और इस बात पर उस ने जोर दिया कि चीनियों ने इस समझौते पर कभी हस्ताक्षर नहीं किए थे.

जोधपुर के 'भैयाजी,' ने पी. अत: उन का मुंडन कर के तथा चांदी के वरक लगा कर के जुलूस के रूप में घुमाया गया.

भांग पीने वालों में अधिकांश बीकानेर से लगभग 125 मील पैदल यात्रा कर के पहुंचते हैं. इस बार बीकानेर से लगभग 2,000 यात्री पैदल पहुंचे.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर

प्रेषक : प्रभात कुमार अग्रवाल, बीकानेर

✦

दमोह में घंटाघर के पास एक प्रमुख कांग्रेसी कार्यकर्त्ता को पुलिस ने रंगे हाथ सट्टे की बुकिंग करते हुए पकड़ा. पुलिस ने दुकान पर छापा मार कर उस के पास से भारी मात्रा में सट्टे की बहियां और रकम बरामद की तथा उसे पकड़ कर थाने ले गई. पर अदालत में चालान कांग्रेसी कार्यकर्त्ता के लड़के के नाम से प्रस्तुत किया गया.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली

प्रेषक : महेशचंद्र, दिल्ली

इस स्तंभ में प्रकाशनार्थ अपने अनुभव या समाचारपत्रों में प्रकाशित उपयुक्त समाचारों की कतरनें भेजें. प्रकाशित होने पर पांच रुपए मूल्य की पुस्तकें उपहार स्वरूप दी जाएंगी. —संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित नेहरू चीन से मित्रतापूर्ण संबंध बनाए रखने के [illegible] थे और उस ने बांडुंग कांफ्रेंस में हुई घटनाओं को विस्तार से बताया. फिर उस ने चाऊ एन लाई की भारत यात्रा के बारे में बोलना शुरू किया और दिल्ली में उस के सम्मान में हुए आयोजनों का विस्तार से वर्णन किया.

अपने भाषण की रौ में वह बुरी तरह बह गया. उसे पता भी नहीं चला कि वह क्याक्या कह रहा है. उस ने स्वीकार किया कि चीन के प्रधान मंत्री ने बहुत से आश्वासन दिए और बाद में वह उन आश्वासनों से फिर गया. फिर उस ने यह भी स्वीकार किया कि इधर दिल्ली में चाऊ एन लाई के सम्मान में भोज दिए जा रहे थे और उधर चीनी सैनिक भारतीय प्रदेश पर कब्जा किए बैठे थे. फिर भी भारत सरकार ने चीनियों को नाराज न करने का फैसला किया क्योंकि वे शक्तिशाली थे.

हम बेमन से पीले पाजामाधारी के मुंह से निकल रहे शब्दों को सुन रहे थे. अपने से ऊंचे अफसर के ज्ञान के विस्तार को देख कर छोटे सरकारी नौकर का मुंह खुले का खुला रह गया था, मैं बुरी तरह ऊब गया था.

गाड़ी छकछक करती हुई धीमी रफ्तार से आगे बढ़ रही थी और उस की उबा देने वाली नीरस आवाजें लगातार सुनाई दे रही थीं. जब वह सांस लेने के लिए क्षण भर को रुका, मैं अवसर से लाभ उठा कर कहने लगा, "क्या मैं यह पूछने की गुस्ताखी कर सकता हूं कि आप ने अपने इस लंबे भाषण में आक्रमण को जनता से छिपाए रखने के बारे में क्या कहीं कोई हवाला दिया? उसी बात पर ही तो आप का बेतुका भाषण शुरू हुआ था!"

पीले पाजामाधारी की मेरी दो टूक बातों से सिट्टीपिट्टी गुम थी और इस के अतिरिक्त वह इसलिए भी थोड़ा घबरा गया था कि उस ने विषय से एकदम परे हट कर बातें की. जलती आग में घी डालने का लोभ मैं संवरण न कर सका. मैं ने कहा, "अधिकांश भारतीयों का यही स्वभाव है, बड़ीबड़ी बातें करना और ढेरों शब्द उगलना. लेकिन मतलब की बात एक नहीं. कभी भी वे विषय में बंध कर नहीं बोलते. विचारों की स्पष्टता और अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता उन के बूते से बाहर है."

"क्या मतलब? मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व है," पीले पाजामाधारी मेरी तरफ देखते हुए चीखे. मुझे पीटने की छड़ी उस के हाथ लग गई थी. सभी भारतीय पक्के राष्ट्रवादी हैं. वे भारत या भारतीयों के विरुद्ध एक शब्द नहीं सुनना चाहते, चाहे बात कितनी भी सही हो. वह कहने लगा, "तुम्हारे जैसे लोग ही देश को पतन के मार्ग पर ले जाते हैं..."

"यदि मैं देश को पतन के रास्ते पर ले जा रहा हूं तो इस का कारण तुम और तुम्हारे राजनीतिक मालिक हैं जो 17 साल से देश आजाद होने के समय से इसी काम में जुटे हुए हैं. और बिना किसी रोकरुकावट के उन्होंने अपना काम पूरा कर दिया है."

क्रोध के मारे पीले पाजामाधारी के मुंह से कुछ न निकल पा रहा था. इस तरह की बकवास का उत्तर देने के लिए उस के पास शायद शब्द नहीं थे. उचित

जुल्फ और रुखसार...

जिंदगी सिर्फ मुहब्बत नहीं कुछ और भी है,
जुल्फ और रुखसार की जन्नत नहीं कुछ और भी है,
भूख और प्यास की मारी हुई इस दुनिया में—
इश्क ही एक हकीकत नहीं कुछ और भी है.

—साहिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्युत्तर देने के बोझ से उन्हें डब्बे के परिचारक ने बचाया.

"तुम कहां सोओगी?" उस ने फटे कपड़े पहनने वाली स्त्री से पूछा.

"मैं यहीं नीचे लेट जाऊंगी." उस ने फर्श की तरफ संकेत करते हुए कहा.

"नहीं, तुम इस डब्बे में यात्रा नहीं कर सकतीं. यह वातानुकूलित है."

"किंतु मैं अपनी मालकिन को अकेली नहीं छोड़ सकती. उन की एक टांग खराब है और वह मेरी मदद के बिना एक पग भी नहीं उठा सकतीं. इस के अलावा साहब ने कहा था कि मैं इन्हें एक मिनट भी अकेला न छोड़ूं."

"कौन साहब?" परिचारक ने पूछा.

गाढ़े मेकअप वाली महिला पर परिचारक द्वारा खड़े किए हंगामे का कोई प्रभाव नहीं पड़ा. किंतु ज्यों ही फटे वस्त्रों वाली स्त्री ने सहायता को उस की तरफ देखा, उस ने फटे स्वर में कहा, "डिवीजनल सुपरिंटेंडेंट."

दो शब्दों ने मंतर का काम किया. परिचारक दोनों स्त्रियों की तरफ देख कर मुसकराया और खामोशी से डब्बे के बाहर चला गया.

इस घटना से पीले पाजामाधारी को विचित्र प्रकार की आत्मतुष्टि हुई. उस के अहं को बहुत बल मिला और वह बिना एक शब्द कहे चुपचाप ऊपर वाली सीट पर चला गया. कुछ ही क्षणों में डब्बे में खामोशी छा गई.

हर व्यक्ति धीरेधीरे सोने की तैयारी करने लगा. गाढ़े मेकअप वाली महिला पसर कर आराम से लेट गई. फटे कपड़ों वाली नौकरानी फर्श पर ही लुढ़क गई. पीले पाजामाधारी ने एकदो बार खांसा और फिर उस ने दीवार की तरफ अपना मुंह कर लिया. थोड़ी देर बाद ही नवयुवक का नींद में सांस लेने का लयबद्ध स्वर सुनाई देने लगा.

मैं मानसिक रूप से विचलित था, इसलिए सो न सका. इस शाम को हुई बातचीत के बारे में सोच रहा था. मैं अपने को दोष दे रहा था पीले पाजामाधारी से उलझने का मेरा क्या मतलब था? मैं इस से बच सकता था. मुझे इतनी आसानी से अपने को उत्तेजित नहीं होने देना चाहिए था. सरकारी मशीन के लाखों पुरजों में से एक से बहस करने का कोई लाभ नहीं. इस तरह कोई किसी को अपने से सहमत नहीं करा सकता. इस बातचीत से फल यही निकला कि मैं ने अपने को परेशानी में डाल लिया. पीले पाजामाधारी पर इस का कोई असर नहीं पड़ा.

सोचते हुए मैं ने महसूस किया कि खेद प्रकट करने और भूल जाने वाला यह पहला अवसर नहीं है. पहले भी ऐसे बहुत से अवसर आए हैं. कभी उत्तेजित न होने का मेरा दृढ़ निश्चय कुछ क्षण तक ही ठहर सका और बाद में मेरे संयम का बांध टूट गया. फिर भी बरसों के अभ्यास से मैं ने अपना स्वभाव काफी सुधारा है.

शुरू की बातबात पर फट पड़ने का स्वभाव बदला और उस का स्थान एक विशेष प्रकार के वाक्यसंयम ने ले लिया. अपने देशवासियों से व्यवहार में मुझे अपने इस स्वभाव से बहुत लाभ हुआ, जो स्वभाव से ही बहुत बातूनी और बातबात पर

भटके हुए सुकून के लम्हे जो मिल गए,
मुरझा कर रह गया है तेरी याद का कंवल
ये देखना है उमर ठहरती है अब कहां?
इक मोड़ पै है जिंदगी इक मोड़ पर अजल.

मुरझा
कर
रह गया...

CC-0.An Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भड़कने वाले हैं, मौन स्वभाव उन्हें आसानी से गड़बड़ा देता है. उन की समझ में एकदम प्रतिक्रियाहीन की बात नहीं आती.

भारत में वार्तालाप, तथाकथित बौद्धिक वर्गों में वार्तालाप बहुत ही नीरस और अर्थहीन होता है. अध्ययन और ज्ञान के अभाव से लोग विचलित हुए बिना अपनी राय बड़े अधिकार से दे देते हैं. यह उस पुराने जमाने की थाती है जब हर विषय पर कानून बना देने के लिए सरकारी नौकर होना ही पर्याप्त था. सभी राजनीतिक नेता एकदम निश्चित हैं कि चुनाव में सफल होने के बाद विशेषज्ञों की अवहेलना का अधिकार मिल जाता है. इसलिए नया राजनीतिक नेता जनता को सलाह देने के किसी भी अवसर से नहीं चूकता. दूसरे देशों के नेताओं को भी परामर्श देने से वह पीछे नहीं हटते. उन का विश्वास है कि भारत फिर से एक बार जगद्गुरू होने का गौरव प्राप्त करेगा.

इस मामले से मैं ने महसूस किया कि पीले पाजामाधारी के झूठे आत्मविश्वास, दिखावे तथा उद्धत व्यवहार को देख कर उस का संयम टूट गया. अधिकांश सरकारी अफसर सेवा से बाहर के सभी व्यक्तियों को मंद बुद्धि क्यों समझते हैं? दूसरों को...थोड़ी बहुत बुद्धिमानी और निर्णय शक्ति रखने का अधिकार वे क्यों नहीं देना चाहते? भारत सरकार के अफसरों की अहमन्यता और आत्मप्रवंचना असहनीय है. हमारी जनता में जो खोखलापन है, उस का सही प्रतिनिधित्व यही सरकारी अफसर करते हैं.

इस विचार ने मुझे काफी आश्वस्त कर दिया और मैं सोने जा ही रहा था कि अचानक सरसराहट की आवाज सुन कर जग पड़ा. आंखें खुलते ही मैं ने देखा कि गाढ़े मेकअप वाली महिला अपनी टांगों पर खड़ी हुई है. बिना जरा सी लंगड़ाए वह सीधे बाथरूम की तरफ बढ़ गई. उस की लंगड़ी टांग दूसरी टांग की तरह ही स्वस्थ थी. चाटुकार नवयुवक ने यह जताने के लिए अपनी सीट पर [illegible] कि वह जाग रहा है. पीला पाजामाधारी [illegible] हो गया. किसी ने एक शब्द भी न कहा और फिर खामोशी छा गई.

जब दोबारा मेरी आंख खुली तो खिड़कियों पर लटके परदों से हलकी रोशनी छन रही थी. सुबह हो चुकी थी और यात्रा भी समाप्त होने वाली थी. गाड़ी खड़खड़ाती हुई आगे बढ़ रही थी. रात की यात्रा की कटु स्मृतियों को पीछे छोड़ कर मैं शीघ्र ही दिल्ली पहुंचने वाला था, यह सोच कर राहत मिली. मुझे जल्दी घर पहुंच कर हजामत कर के नहाना था और कपड़े बदल कर दफ्तर पहुंचना था. यदि गाड़ी समय पर दिल्ली पहुंच जाए तो उसे इतना ही समय मिल पाएगा कि जल्दी से नाश्ता कर लिया जाए.

मैं फौरन उठ कर बाथरूम की ओर बढ़ गया. ताकि खराब होने से पहले ही निबट लिया जाए. अधिकांश भारतीयों का स्वभाव है कि वे बाथरूम को गंदा कर देते हैं और बिना पानी छोड़े बाहर निकल आते हैं.

निबटने के बाद जब मैं बाहर निकला तो सामने गाढ़े मेकअप वाली महिला खड़ी मेरे निकलने की प्रतीक्षा कर रही थी. अपनी नौकरानी को साथ रखने का उस का उद्देश्य सिद्ध हो गया था, इसलिए अब लंगड़ा बने रहने के बहाने की कोई आवश्यकता नहीं थी.

गाड़ी के गुड़गांव पहुंचने तक तीनों कपड़े बदल चुके थे और एकदूसरे से आंख चुराए खामोश बैठे थे. रात की बातचीत अभी भी दिमागों में ताजा बनी हुई थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धुंध भरी सुबह थी. बाहर ढीले परदे की तरह कोहरा लटका हुआ था. कहीं कोई हलचल नहीं थी जिस से वातावरण का खालीपन गहरा हो गया था. चापलूस नवयुवक ने खामोशी को तोड़ा, "गाड़ी समय से चल रही है?" उस ने पूछा.

"मेरा खयाल है कि समय से ही है, थोड़ाबहुत इधरउधर हो सकता है."

"शायद हम समय पर पहुंच जाएं."

"लगता तो यही है. किंतु निश्चित हो कर नहीं कहा जा सकता."

"क्यों?"

"भारत में गाड़ियां अपने गंतव्य के निकट आतेआते धीमी हो जाती हैं ताकि देर से पहुंचे!"

"अच्छा!"

"पिछली बार गाड़ी आधा घंटे स्टेशन पर ही खड़ी रही. दिल्ली बिलकुल सामने थी. ऐसा मेरे साथ कई बार हो चुका है."

"शायद संयोग हो."

"लेकिन मेरा खयाल आप से विपरीत है. मैं निश्चय से कह सकता हूं कि रेलवे कर्मचारियों ने एक अलिखित नियम बना लिया है जिस में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि गाड़ियां देर से पहुंचें. गाड़ियां समय पर पहुंचने से उन की बदनामी होती है!"

"आम तौर पर सभी गाड़ियां अपने गंतव्य पर देर से ही पहुंचती हैं. क्यों ठीक कह रहा हूं न?"

"मैं लंबे फासले की गाड़ियों की बात कर रहा था. रास्ते भर वे लगभग समय से चलती हैं, किंतु गंतव्य के निकट पहुंचते ही उन की गति धीमी होने लगती है और कुछ समय बाद वे लगभग रेंगने लगती हैं. ये गलत स्थानों पर रुकने लगती हैं. गलत स्टेशनों पर या स्टेशनों के बीच में वे रुकती हुई चलती हैं. गंतव्य एकदम सामने आ जाता है. देर होती रहती है. बहुत ही क्रोध आने लगता है. यदि आदमी के पास सामान न हो तो वह गाड़ी के पहुंचने के पहले पैदल चल कर गंतव्य पर पहुंच सकता है."

गाड़ी पालम के छोटे से स्टेशन में घुस रही थी. वह स्टेशन पर न रुकी और सीधी बढ़ती चली गई. मैं ने राहत की सांस ली. मुझे हर निकलने वाले स्टेशन की गिनती करने की आदत है. इस स्टेशन को मैं जरा जल्दी ही गिन गया. प्लेटफार्म खत्म होते ही गाड़ी रुक गई. मैं ने अर्थ भरी दृष्टि से चापलूस नवयुवक की तरफ देखा. अभी कुछ मिनट शेष थे और घबराने की इतनी जरूरत नहीं थी. 20 मिनट तक गाड़ी रुकी रही और एकएक मिनट बहुत कठिनाई से बीता. अंत में गाड़ी चलनी शुरू हुई.

अब कोई संदेह नहीं रहा था कि गाड़ी देर से पहुंचेगी. मैं ने नवयुवक को फिर देखा जिस ने बेमन से सिर हिला कर अपनी स्वीकृति जताई. मैं ने सोचा कि दफ्तर पहुंचने के लिए मुझे जरा भागदौड़ करनी पड़ेगी, फिर भी मैं समय पर दफ्तर पहुंच जाऊंगा.

किंतु गाड़ी कोई अवसर नहीं छोड़ रही थी. गति पकड़ने के लिए वह बिलकुल तैयार नहीं थी. वह धीरेधीरे रेंग रही थी और अंत में क्लाथ मिल के पीछे आ कर बिलकुल रुक गई.

मैं परेशान हो कर खिड़की से बाहर देख रहा था. हजामत, स्नान और दफ्तर हर मिनट के साथ और पीछे खिसकते जा रहे थे. पहली बार मुझे पता चला कि क्लाथ मिल ब्रिटानिया बिस्कुट फैक्टरी के पास है. मुझे यह भी नहीं पता था कि ब्रिटानिया बिस्कुट दिल्ली में बनते हैं. ब्रिटानिया बिस्कुट से मेरा इतना ही संबंध था कि मैं ने उस का बड़ा सा बोर्ड

पक्षी और बादल

पक्षी चाहता है—"मैं बादल होता!"
बादल चाहता है—"मैं पक्षी होता!"
—टैगोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कनाट सर्कस में देखा था. दफ्तर से आते समय मैं प्रति दिन उसे देखता था. और तेज रंगों में बनी हाथ जोड़े उस भारतीय स्त्री पर मुझे अकसर क्रोध आता था. मेरे लिए वही ब्रिटानिया बिस्कुट थी.

दोनों कारखानों के दरवाजे रेलवे यार्ड की तरफ खुलते थे और खिड़कियों के नीचे पांचछः बच्चे और बड़े एकदूसरे के निकट उकड़ूं नंगे बैठे हुए थे. उन के चेहरे कारखाने की दीवार की तरफ थे और उन की पीठ गाड़ी की तरफ ताकि गाड़ी में बैठे सब लोग यह दृश्य अच्छी तरह देख सकें.

खुली हवा के शौचालयों का दृश्य अभी मेरी आंखों के सामने नाच रहा था कि गाड़ी दिल्ली के प्लेटफार्म में घुसी. पहली बार दिल्ली आने वाले के लिए दिल्ली का यह कैसा परिचय है! ●

"मोटे क्यों नहीं होगे? जब से सरकारी फार्म में नियुक्त हुए हैं भैंसों से ज्यादा दानाघास के रुपए खुद ही खा जाते हैं."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कसम पुराण

कोई आप पर विश्वास नहीं कर रहा हो या आप का कोई बहाना कारगर नहीं हो रहा तो बस कसम खाइए...झूठी ही सही!

"तो आप नहीं मानेंगे ?"

"ऊं हूं."

"आप को हमारी कसम."

बस साहब, अब आगे मानमनुहार नहीं हो सकती. प्रियतम महोदय किसी भी कारण से कितने भी रुष्ट क्यों न हों, प्रियतमा के 'आप को हमारी कसम' कह देने के बाद फौरन मान जाते हैं जैसे कोई बड़ा देश परमाणु बम के प्रहार की धमकी दे और फिर बढ़चढ़ कर बतियाने वाला छोटा देश चीं बोल जाए.

प्रेमिका अपनी कसम दे और प्रेमी महोदय के कान पर जूं भी न रेंगे. निश्चय ही उन का अपराध उतना ही गुरुतर है जितना मार्शल ला लागू हो जाने पर चांदनी चौक की सैर की इच्छा रखने वाले किसी सज्जन का. संभवतः यही कारण है कि प्रेम के बुद्धिमान और अनुभवी रोगी 'कसम' का गोला दागे जाने पर फौरन हथियार डाल देते हैं और फिर मनुहार धारा उल्टी दिशा में प्रवाहित होने लगती है.

'कसम' एक अचूक अस्त्र है. आप आफिस टाइम समाप्त होने के बाद दोस्तों के साथ गप्पें मारते रहें या किसी के घर ताश पर जम गये. देर में वापस घर लौटते समय आप का दिल उसी तरह धड़क रहा होगा जैसे इंटरव्यू देने जाते हुए एक उम्मीदवार का. रहरह कर अपनी पत्नी का चंडी रूप हाथ में जानलेवा शस्त्र बेलन लिए हुए, आप की आंखों के सामने से गुजर रहा होगा, दिसंबर की रात में भी आप पसीनेपसीने हो रहे होंगे. लेकिन यदि आप कसम विद्या के जानकार हैं तो बेधड़क, निर्भय घर जायेंगे, कालबेल दबायेंगे, धैर्यपूर्वक दरवाजा खुलने का इंतजार करेंगे क्योंकि निश्चय ही आप की पत्नी काफी देर बाद दरवाजा खोलेगी और मेघ गर्जन को भी मात करने वाले शब्दों में पहला सवाल होगा, "इतनी देर कहां लगाई?"

आप चेहरे पर बिना घबराहट का भाव लाए, टाई की नाट ढीली करते हुए

व्यंग्य

देवेश भारद्वाज

कहेंगे, "वह बात यह थी कि खन्ना छुट्टी पर गया हुआ है, अरोरा की पत्नी की हालत सीरियस थी, फोन आया था इस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लिए वह हास्पिटल चला गया. परसों बड़े साहब दौरे पर आने वाले हैं इसलिए साहब ने कहा, 'शर्माजी, आप आज जरा ओवरटाइम कर लें नहीं तो परसों तक काम नहीं हो पाएगा.' बस इसी कारण जरा देर हो गई."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप देखेंगे कि आप की पत्नी के चेहरे पर अविश्वास और क्रोध की झलक व्याप्त होगी. वह कहेगी, "हर दिन कोई न कोई बहाना बनाते हो. आज बहाना नहीं चलेगा."

"नहीं, भई, बहाना नहीं कर रहा हूं, तुम्हारी कसम," आप विश्वास दिलाएंगे, और बस उफनती उमड़ती नदी में भाटा आना शुरू हो जाएगा.

इस अचूक एवं अमोघ अस्त्र का आविष्कार किस ने किया और यह हुआ कब, इस का ठीक पता तो शायद कोई भी नहीं दे पाए. लेकिन यह विद्या प्राचीन काल में भी जानीमानी थी, इस के प्रमाण जरूर मिलते हैं. बल्कि मुझे तो ऐसा लगता है कि सुनहरे निषिद्ध फल को खाने जैसी भूल भी शैतान के दिमाग की उपज नहीं रही होगी. कौन जाने आदम ने ही अपनी कसम दे कर हौवा को विवश किया हो.

रामायण काल में भी इस के प्रचलित होने के प्रमाण मिले हैं. भगवान राम ने अपनी सौगंध दे कर सुमंत्र को रथ वापस ले जाने और लक्ष्मण ने जो कुछ भी कहा है वह दशरथ को नहीं कहने को कहा था. कैकेई ने भी मंथरा को भरत की सौगंध दे कर खुशी के वातावरण में दुखी होने का कारण पूछा था. जगहजगह कभी राम ने, कभी लक्ष्मण ने, कभी हनुमान ने यहां तक की करीबकरीब हरेक पात्र ने किसी न किसी की सौगंध खाई है.

द्वापर में भी यह प्रथा प्रचलित थी. बालकृष्ण के माता यशोदा के पास दाऊ की शिकायत ले कर जाने पर उन्हें 'गो धन' की सौगंध का सहारा ले कर यह विश्वास दिलाना पड़ा कि वह कृष्ण की मां है और कृष्ण उन का ही लड़का, पर एक बात देख कर आश्चर्य होता है कि राजनीति के जानेमाने विद्वान कृष्ण इस विद्या से भली भांति परिचित नहीं थे. अन्यथा युद्ध क्षेत्र में अर्जुन को क्षात्र धर्म लिए प्रेरित करने को 'गीता' जैसी लंबी उपदेश माला प्रारंभ करने का रिस्क लेने की जगह कहते, "हे धनंजय! उठा गांडीव और क्षत्रियोचित कर्तव्य कर, तुम्हें मेरी कसम." कृष्ण के प्रति श्रद्धा रखने वाला अर्जुन निस्संदेह कसम तोड़ने की कल्पना भी नहीं कर सकता था. युधिष्ठिर भी या तो इस विद्या से अनभिज्ञ थे या धर्म-

> 'नहीं, भई नहीं, बहाना नहीं कर रहा हूं, तुम्हारी कसम," इतना सुनते ही पत्नी शांत हो जाएगी.

परायण होने के कारण उन्होंने इस विद्या का प्रयोग नहीं किया वरना अपना राज्य वापस लेने के लिए कृष्ण को दूत की जगह न भेज कर खुद जाते और कहते, "दुर्योधन! तुम्हें जुए के पासों की कसम, हमें हमारा राज्य वापस कर दो."

कसम के कई रूप भी हैं या यों समझ लीजिए कि एक पूरा परिवार ही है. जब जैसा प्रसंग होता है उसी के अनुकूल इस परिवार के किसी सदस्य की सेवाओं का लाभ उठाया जाता है जैसे युद्ध में जाते हुए पुत्र को मां अपने दूध की लाज रखने की 'सौगंध' देती है, तो कोई सिपाही धरती मां की 'आन' ले कर विदा होता है. प्रतिज्ञा, शपथ, आन, सौगंध आदि 'कसम' के नजदीकी या दूर के संबंधी हैं. उठतेबैठते, सोतेजागते न जाने कितनी बार हमारा इन से वास्ता पड़ता है. यहां तक कि अदालत में भी गीता की शपथ खाई जाती है. राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री और सभी नेताओं को भी शपथ ग्रहण करनी पड़ती है. कहां तक कहा जाए—धरती की, हिमालय की, गंगा की, राखी की, मांबाप के चरणों की और पता नहीं किसकिस बात की सौगंध खाई जाती है.

ऐसा विश्वास किया जाता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

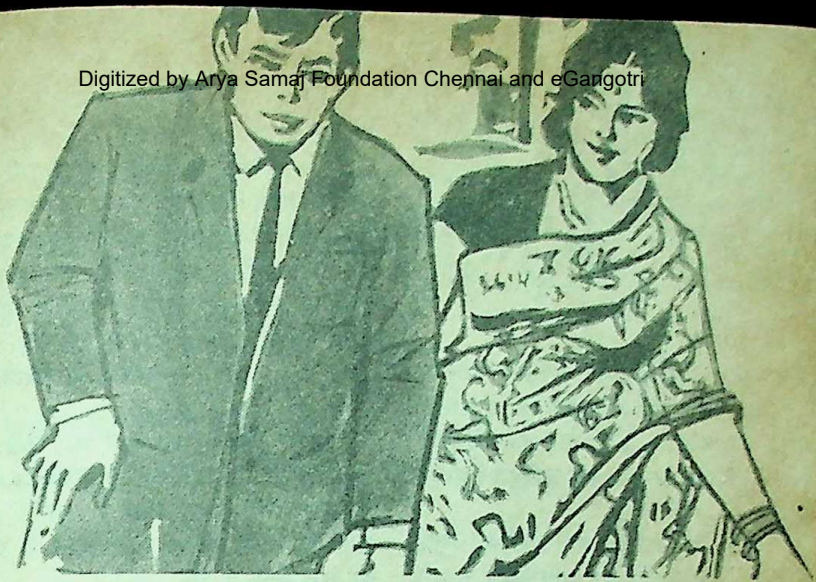

यदि किसी व्यक्ति की झूठी कसम खाई जाए तो उस की जान खतरे में पड़ जाती है. प्रारंभ में शायद देवीदेवताओं की सौगंध खाने की प्रथा नहीं चली थी लेकिन आजकल तो उन की कसमें भी धड़ल्ले के साथ खाई जाती हैं. कुछ तो शायद इसलिए कि देवीदेवता 'अमर' हैं अतः झूठी कसम खाने से उन के किसी अनिष्ट की संभावना वैसे ही नहीं रहती और अगर फिर 'बाई दि वे' कुछ हो भी जाए तो 33 करोड़ में से 100-200 के इधरउधर हो जाने से कोई खास फर्क नहीं पड़ता. आजकल तो भगवान की कसम खाना आम बात हो गई है.

"अरे, भई, आज सिन्हा साहब पीरियड नहीं लेंगे."

"जा यार, क्यों गप्प मारता है! वह और पीरियड न लें. अरे वह तो संडे को भी और कोई नहीं तो अपने बीवीबच्चों का ही पीरियड लेना शुरू कर देते हैं."

"नहीं, गुरु, ठीक कह रहा हूं."

"बाई गाड?"

"हां, हां, बाई गाड."

बस साहब, बात मान ली जाती है. यह है भगवान की कसम का जरा पाश्चात्यकरण.

फिल्मी गीतों में भी 'कसम' की महत्ता को स्वीकारा गया है. 'कसम तुम्हारी, मैं रो पड़ूंगी,' 'खाई है रे हम ने कसम,' 'आप को हमारी कसम, लौट आइए!' आदि गाने इस के प्रमाण हैं. हीरोइन की कसम तो वह संजीवनी है जिस के सहारे हीरो बयाबान पार कर के, पहाड़ों को लांघ कर, नदी को तैर कर, जलती आग से निकल कर, महाकाल से टकरा कर भी हीरोइन पाने को जीवित रहता है.

जैसेजैसे जमाना बदलता है, कसम खाने वाली चीजों में भी परिवर्तन होता रहता है. हो सकता है, भगवान की कसम, जब किसी व्यक्ति की कसम या 'बाई यू' कल तक आउट आफ डेट हो जाए और उस की जगह लोग नईनई कसमें खानी शुरू कर दें—नेता लोग कुरसी की, माली बगीचे की, कवि अपनी कविता की, क्लर्क अपने टाइपराइटर की. कोई अतापता नहीं धीरेधीरे पेन, पेंसिल, टार्च, पंखा, कार, बंगला और न जाने किनकिन चीजों की कसमें खाई जाने लगेंगी. कल्पना कीजिए, जब मंत्री महोदय संसद में वक्तव्य देंगे, "मैं अपनी कुरसी की सौगंध खा कर कहता हूं कि हम ने चीन को सीमा अतिक्रमण न करने के लिए न केवल बड़े पत्र भेजे हैं बल्कि माओ की लाल किताब की कसम भी दी है!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे महल्ले में एक महिला बीमार थी. कंपाउंडर उसे पेंसिलीन का इंजेक्शन लगा कर गया. कुछ ही देर बाद महिला को कै आई और उस की तबीयत बिगड़ने लगी.

उस के शरीर का रंग भी कुछ बदलने लगा. पड़ोस की महिलाओं ने उसे कपड़े उढ़ा कर नीचे से अजवायन के धुएं से सिंकाई शुरू कर दी. महिला और अधिक घबराई किंतु पड़ोसिनों ने एक न सुनी. उक्त महिला का पति उस समय घर पर न था.

महिला ने डाक्टर को बुलवाने को कहा किंतु पड़ोसिनों को तो अपने उपचार पर अधिक भरोसा था. कुछ देर बाद जब बीमार महिला की पुतलियां ऊपर चढ़ गईं और मरणासन्न हो गई तब एक व्यक्ति को उस के पति के पास तथा एक को डाक्टर के पास दौड़ाया किंतु जब तक डाक्टर आया तब तक उस के प्राण पखेरू ही उड़ गए. डाक्टर ने बताया कि महिला को पेंसिलीन के इंजेक्शन का "रिऐक्शन" हो गया था.

यदि तुरत उसे अस्पताल भिजवा दिया जाता तो उस के प्राण बचाए जा सकते थे किंतु महिलाओं की अज्ञानता उस बेचारी महिला की मौत का कारण बन गई.

—गोविंदप्रकाश खरे, टीकमगढ़

✦

मैं एक दिन एक परिचित को देखने अस्पताल गई थी. वहां मैं ने बहुत सी नर्सों को आपस में जोरजोर से बातें करते देखा.

उन में से एक ने कहा, "सासें भी कैसीकैसी कलहछली होती हैं."

मालूम करने पर पता चला कि सुबह किसी औरत के बच्ची हुई थी. यह उस की तीसरी लड़की थी. बच्ची होते ही उस की सास चिल्लाई, "हाय री बहुआ!" यह सुनते ही बहू घबड़ा गई. वह अच्छी-भली थी, लेकिन इस से उसे ऐसा धक्का लगा कि उस की तबीयत खराब होती चली गई और 3-4 घंटे में मर गई.

—आशा, कांचरापाड़ा

✦

अभी पिछले रविवार की बात है. मैं अखबार पढ़ रहा था कि अचानक एक हट्टाकट्टा भिखारी दरवाजे के बाहर आ खड़ा हुआ और बोला, "भगवान के नाम पर एक पैसा दे दो."

मैं उसे देख कर दंग रह गया कि ऐसा हट्टाकट्टा आदमी भीख क्यों मांग रहा है. मैंने उस से पूछा, "तुम्हारे हाथपैर ठीकठाक हैं फिर तुम भीख क्यों मांगते हो?"

उस ने बड़े करुण स्वर में कहा, "बाबूजी, हमें कोई काम देता ही नहीं."

मैं ने फिर पूछा, "दिन भर में कितना मांग लेते हो?"

"यही कोई दसबारह आने."

मैं ने कहा, "मैं देता हूं तुम को काम. चलो, 20 किलो पत्थर के कोयले तोड़ दो. मैं तुम्हें दो रुपए दूंगा, चलो करो काम."

यह सुनते ही वह यह कहते हुए चलता बना कि "हम से नहीं होगा यह काम."

—जीवन सहगल, दिल्ली

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने मित्रों के अनुभव भेजिए. प्रकाशित होने पर पांच रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सास ससुर

लेख
सुरेशकुमार
यादव

अपने को सदैव ऊंचा दिखाने की भावना के शिकार हो कर और अपने सासससुर का अपमान कर के कहीं आप अपने परिवार में अशांति और तनाव का वातावरण तो नहीं बना रहे?

जी हां, सासससुर हमारे समाज के वे प्रधान अंग हैं जिन के तिरस्कार से कभीकभी सफल दांपत्य जीवन झंझटों में पड़ जाता है.

लेकिन यह तिरस्कार की भावना क्यों? किस लिए? क्या आप समझते हैं कि पत्नी के कारण आप ने उन्हें खरीद लिया है?

महेश बाबू जब अपनी ससुराल पहुंचे तो जाते ही किसी अफसर की तरह हुक्म दिया, "जरा सिगरेट मंगवा दीजिए!"

बेचारे ससुरजी आखिर करते भी क्या? सिगरेट ही नहीं, सिगरेट का पैकेट मंगवाया गया और महेश बाबू ने बड़ी शान के साथ सिगरेट जलाई. ससुरजी तो यह सोच कर चुप हो गए, 'आखिर अपनी बेटी जो ब्याही है.'

लेकिन महेश बाबू की पत्नी अपने पिता के इस तिरस्कार को सहन नहीं कर सकी. उसे मन ही मन बड़ा दुख हुआ, 'क्या इन की निगाह में मेरे पिता की यही इज्जत है? मैं इन के पिता को अपने पिता समान मानती हूं, लेकिन यह मेरे पिता का इतना भी लिहाज नहीं रखते कि कम से कम उन के सामने तो सिगरेट न पिएं!' एकांत में मिलने पर पत्नी ने कुछ चिढ़े हुए ढंग से कहा, "आज तो आप ने पिताजी के सामने सिगरेट पी."

"तो इस में कौन सी गुस्ताखी हो गई," महेश बाबू ने बात को यों ही उड़ाते हुए कहा.

जब ससुराल से पत्नी को ले कर महेश बाबू घर पहुंचे तो बहू ने न सास के पैर छुए, न ससुर के. महेश बाबू मन मसोस कर रह गए. आखिर उन्होंने पत्नी से पूछ ही लिया, "तुम ने आते ही माताजी व पिताजी के पैर क्यों नहीं छुए?"

"तो इस में उन की इज्जत को कौन सा फर्क पड़ गया!" पत्नी ने भी उसी ढंग में उत्तर दिया.

इस प्रकार वह खींचातानी शुरू हुई कि दोनों हर बात में एकदूसरे की मीनमेख निकालते. और बात बढ़ती गई. . . .

इस प्रकार की उपेक्षा की भावना ही सफल दांपत्य जीवन में जहर घोल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाखों गृहिणियां

अपना सभी स्वादिष्ट व पौष्टिक खाना अत्यंत शुद्ध तेल पोस्टमेन से पकाती हैं।

पिछले ४० वर्षों से वे ऐसा ही करती आ रही हैं क्योंकि पोस्टमेन—

- बिल्कुल स्वच्छ गंधहीन और १००% शुद्ध मूंगफली का तेल है।
- हाइड्रोजन के उपयोग से जमाया नहीं जाता। विटामिन ए व डी से भरपूर होता है।
- किफ़ायती है— बचे हुए तेल को फिर से इस्तेमाल किया जा सकता है।

पोस्टमेन के डब्बे पर उत्कृष्टता के प्रतीक के रूप में सरकारी एग्मार्क की छाप लगी रहती है। स्वास्थ्य, स्वाद, किफ़ायत के लिए सिर्फ़ इसी तेल से खाना पकाइये।

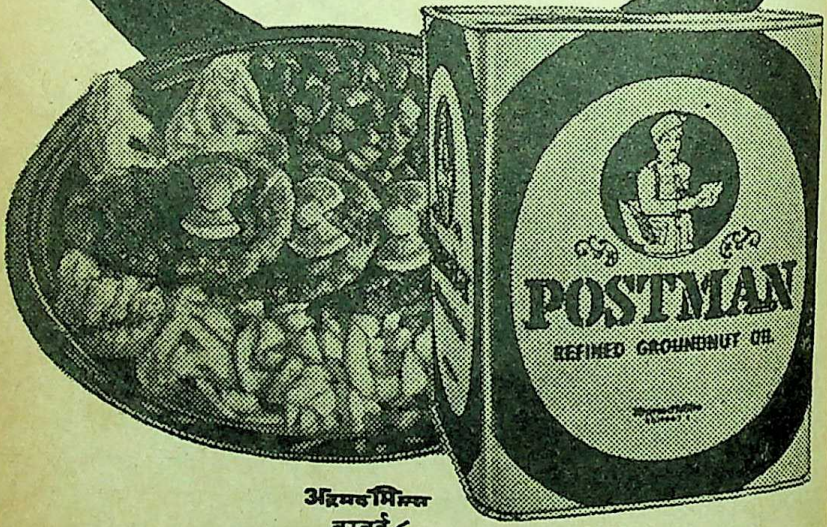

अहमदमिल्स
बम्बई ८

पोस्टमेन: भारत का सबसे ज़्यादा बिकनेवाला खाना पकाने का विश्वसनीय तेल

everest/1073d/AM hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

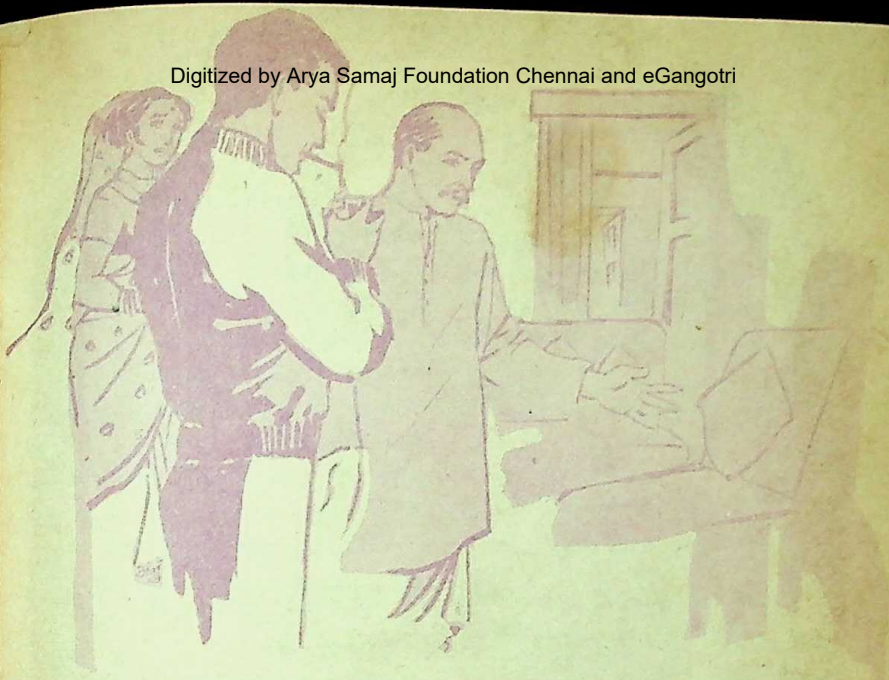

देती है. यदि आप चाहते हैं कि आप की पत्नी हमेशा आप के मातापिता को अपने मातापिता की तरह समझे और हर समय उन का आदर करे व कहा माने, तो जरा सोचिए कि क्या आप अपनी जगह पर सही हैं? आप का उस के माता-पिता के प्रति कैसा व्यवहार है? आप का उस के मातापिता के प्रति बेरुखापन क्यों? वे भी तो आप के मातापिता के समान हैं.

राजन जब बीबी को लेने ससुराल पहुंचा तो ससुरजी ने विनम्र स्वर में कहा, "जरा एक दिन रुक जाइए, आज बच्ची की बड़ी बहन आई है, मिल लेने दीजिए."

"नहीं मैं बिलकुल इंतजार नहीं कर सकता, भेजना हो तो आज ही भेजें या फिर रहने दें अपनी बेटी अपने पास," राजन ने तुनकते हुए कहा.

ससुरजी ने जब जमाई साहब का इस तरह बिदकना देखा, बेटी को भेजना ही उचित समझा. पिता की विनम्र प्रार्थना इस तरह ठुकराई जाती देख पत्नी के मन को चोट सी पहुंची.

घर पहुंच कर बीबी ने कहा, "अगर ससुर ने महेश को सिगरेट का पैकेट मंगवा दिया तो उस ने बड़ी शान से उन के सामने ही सिगरेट सुलगाई. एक दिन रुक जाते तो आप का क्या बिगड़ जाता!"

"वाह मैं कोई फालतू था, जो रुक जाता," राजन का इस प्रकार का उत्तर पत्नी के हृदय को छलनी कर गया.

फिर राजन के किसी रिश्तेदार की शादी थी. उस ने पत्नी से चलने को कहा, पत्नी ने भी वही बात दोहराई, "मैं कोई फालतू नहीं, आप चाहें तो चले जाइए!"

फिर खींचातानी का सिलसिला बढ़ता ही गया. . .

लेकिन आप को इस प्रकार आखिर ससुर की उपेक्षा करने से मिलता क्या है? सिर्फ पत्नी को दुख पहुंचाना ही आप का उद्देश्य है, वह बात दूसरी है. राजन अगर न भी रुका, या न रुकना चाहता था तो उसे कह देना चाहिए था कि कुछ जरूरी काम है, अभी रुकना संभव नहीं. या और कोई बात बना देता जिस से पत्नी के मन को ठेस न पहुंचती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कहीं आप उन दकियानूसी बातों के चक्कर में तो नहीं कि अगर सासससुर की हर बात मानी जाए तो लोग उंगली उठाते हैं. यह सब बेकार की बातें हैं, इन्हें अपने दिमाग से हमेशाहमेशा के लिए निकाल दीजिए.

मैं ने कई ऐसे लोगों को देखा है जो ससुराल में बना खाना या चाय नहीं लेते, अगर उन से कहा भी जाता है तो कहते हैं कि उन्हें इस तरह का खाना या चाय पसंद नहीं. भले ही उस से अच्छा खाना उन्होंने कभी न खाया हो. एक घमंड की भावना इस प्रकार के लोगों में दिखाई देती है. वे यह सोचते हैं अगर वहां खाना खाते तो उन की नाक नीची न हो जाती!

ऐसे लोगों की समझ में यह नहीं आता कि इस में नाक नीची होने जैसी बात कौन सी है. साससुर आप के माता-पिता समान हैं, आप को उन के यहां खाना खाने या चाय पीने में हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए.

परिहार साहब छः साल से ससुरजी को राखी के त्योहार पर पत्नी को नहीं ले जाने दे रहे थे. बड़ी मुश्किल से सातवां बार भेजा, लेकिन तीसरे ही दिन लेने पहुंच गए. आखिर पत्नी तुनक कर पति से कह उठी, "मैं छः साल से न आई, और अब आई तो आप दो ही दिन में मुझे बुलाने आ गए."

यही बात ससुरजी ने भी दोहराई.

"आप भेज रहे हैं, या नहीं?" परिहार साहब ने चिढ़ कर कहा.

"मुझे क्या एतराज है, अगर थोड़े दिन और रहने देते तो ठीक रहता," ससुरजी ने रुंधे हुए कंठ से कहा.

फिर पत्नी ने आग्रह किया, "दो दिन ही रुक जाइए, फिर चले चलेंगे."

लेकिन परिहार साहब के मुंह पर सिर्फ एक शब्द था, 'नहीं.'

पत्नी के मन में यह बात गांठ बन कर रह गई. वापस ससुराल पहुंचते ही उस ने अपनेआप को उदासीन बना लिया, न किसी से हंसनाबोलना, न कहीं आना-जाना. परिहार साहब अपनी परेशानी किसे बताते, यह परेशानी तो उन की खुद की ही मोल ली हुई थी.

साससुर की उपेक्षा न करने का यह मतलब नहीं कि आप उन के गुलाम ही हो जाएं, जो बात आप 'नहीं' में कहना चाहते हैं उसे विनम्रता से कहें, यदि विनम्रता से नहीं तो साधारण ढंग से कह सकते हैं. काटने दौड़ने जैसी भाषा में बात करना उचित नहीं. जब कि साससुर के प्रति विनय और शिष्टाचार से रहने से आप उन की निगाहों में तो योग्य रहेंगे ही पत्नी की निगाहों में भी महान बन जाएंगे. ●

लेखकों के लिए सूचना

●सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफसाफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.

●प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

●प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

●स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

●यद्यपि सभी रचनाओं की पूरी सुरक्षा की जाती है, फिर भी कार्यालय किसी रचना के खोए या नष्ट हो जाने का उत्तरदायी नहीं होगा.

रचनाएं इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,
दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेख • लीला रूपायन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों का मार्ग दर्शन कौन करे?

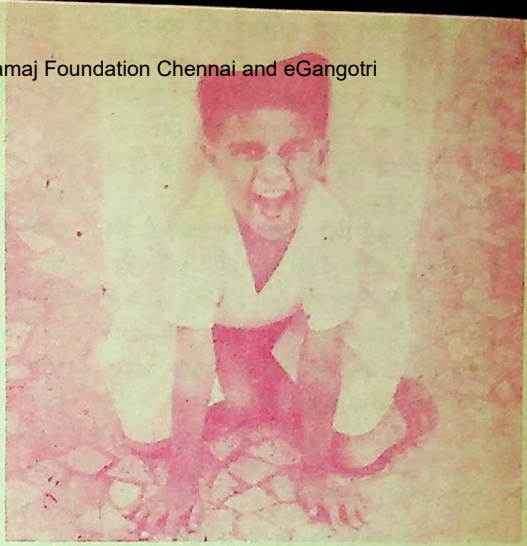

मातापिता, आया या अध्यापक?

बच्चों के लिए अच्छा खानाकपड़ा उपलब्ध कर देने तथा स्कूल में अध्यापक के सहारे छोड़ देने से क्या मातापिता का कर्तव्य पूरा हो जाता है?

यह प्रश्न जितना टेढ़ा है उतना जटिल भी. इसे यदि थोड़ी गहराई से सोचा जाए तो सही अर्थों में बच्चों का कोई मार्गदर्शक रहा ही नहीं. केवल आज का वातावरण ही उन का मार्गदर्शन कर रहा है. आज का वातावरण बच्चों को कहां ले जाएगा, इस का कोई ओरछोर नहीं. यह समस्या आज की सब से बड़ी समस्या बन गई है, जो अजगर की तरह मुंह खोले खड़ी है. बच्चों में उच्छृंखलता, अनुशासनहीनता, कर्तव्य-विमुखता, उद्दंडता का कोई अंत नहीं. इन सब का जिम्मेदार कौन है—मांबाप, अध्यापक वर्ग, हमारा थुलथुला समाज या हमारा शासन.

देखा जाए तो इन सब का सामूहिक कर्तव्य है कि बच्चों का मार्गदर्शन करें. जब तक सभी अपनाअपना कर्तव्य निबाहते रहे, बच्चों का सही मार्गदर्शन होता रहा पर अब राजनीतिबाजों ने अपने निजी स्वार्थों के चक्कर में वातावरण को दूषित कर दिया है. इस बिगड़े हुए वातावरण में से यदि मांबाप या शिक्षिकों ने बच्चों को निकालने का प्रयत्न किया तो वह और उलझते चले गए. इस उलझन से बच्चे अपनी चिंतन शक्ति खो बैठे और पराधीन हो गए.

दरअसल सरकार की भी जिम्मेदारी होती है कि बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए अच्छे विद्यालय हों. आज के ही बालक कल देश के रक्षक या कर्णधार बनेंगे लेकिन आज सब कुछ उलटा चल रहा है.

सब से पहले हम मांबाप को ही लें! ऐसा तो कोई मांबाप नहीं चाहता कि संतान उद्दंड हो. फिर भी आजकल के व्यस्त जीवन में वे इतने घिरे रहते हैं कि उन्हें आंख उठा कर देखने का समय ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नहीं मिलता. वे तो बस इतना ही जानते हैं कि बच्चों को अच्छा कपड़ा और अच्छी शिक्षा चाहिए. बस इतने से ही उन के कर्तव्य की समाप्ति हो जाती है. जब वे बच्चों की तरफ ध्यान देते हैं तो समय बहुत आगे निकल चुका होता है. उस समय होता क्या है, सारा दोष शिक्षा या अध्यापक वर्ग पर थोप दिया जाता है.

स्थिति को सही रूप से देखा जाए तो इस के लिए दोनों ही वर्ग उत्तरदायी हैं. मातापिता दिखावटी दुनिया में सांस ले रहे हैं और दिखावट में ही उन का समय निकल जाता है. बच्चे पहले भी होते थे लेकिन पूरा परिवार एक इकाई की तरह रहता था. सब का सुखदुख हरेक का सुखदुख बन जाता था. सभी एकदूसरे को समझने की चेष्टा करते थे. एकदूसरे की प्रतीक्षा रहती थी. अतः बच्चों के सामने यह उदाहरण होता था कि घर में, परिवार में एक हो कर रहना है, एक हो कर जीना है.

फिर धीरेधीरे जब पाश्चात्य सभ्यता का हमारी अपनी सभ्यता पर प्रभाव पड़ने लगा तो समाज ने सोचा कि नारी को गृहस्थी के घुटे वातावरण से निकाल कर उसे अधिक अनुभवी, अधिक निपुण, अधिक शिक्षित बनाया जाए. वह अनुभवी और शिक्षित तो किसी सीमा तक बनी पर उस में वह निपुणता न आ सकी जिस की उस से अपेक्षा थी. वह घर से तो निकली पर उस के कदम रुके क्लब में जा कर. वह मां जो घर की शान थी क्लब की शान बन गई, सोसाइटी की रौनक बन गई. अब वह मां बच्चों का मार्गदर्शन कैसे करे जो स्वयं का मार्ग भूल गई.

आया के भरोसे बच्चे को छोड़ कर माताएं निश्चित हो जाती हैं लेकिन क्या अशिक्षित आया उसे सभ्य बना सकती है?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

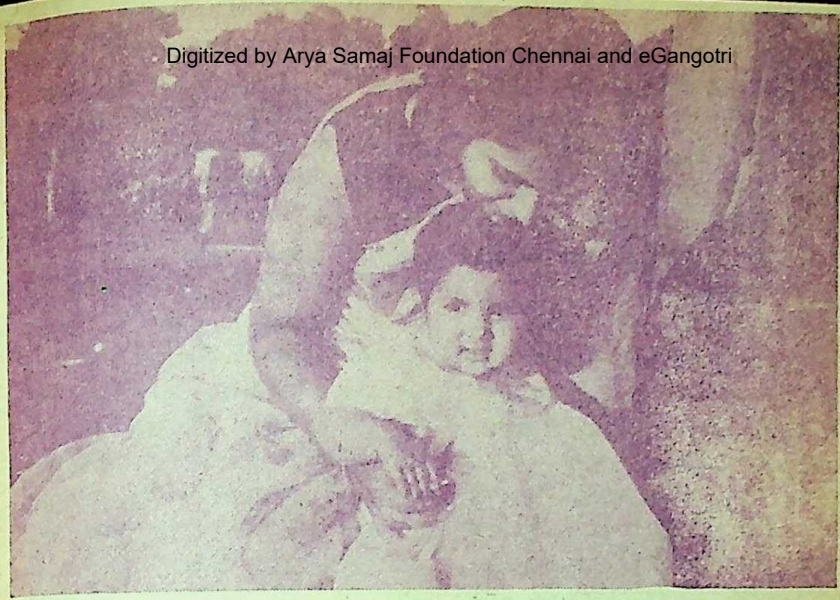

अगर मां बच्चे की देखभाल ठीक से करे तो उस का भविष्य अंधकारमय क्यों होगा?

मां के अपने दायरे हैं, बच्चों की अपनी जरूरतें हैं. मांबाप बच्चों को अपने स्वच्छंद जीवन में एक रुकावट समझते हैं, बच्चे घर में एकाकीपन अनुभव करते हैं. फिर वे एक अनजानी खुशी ढूंढने बाहर भागते हैं. इस भागमभाग में वह गलत वातावरण के चक्रव्यूह में फंस जाते हैं.

एक फैशन और जोर पकड़ रहा है. वह यह कि माताएं अपने बच्चों को आया के भरोसे छोड़ कर निश्चिंत हो जाती हैं. उन का खयाल है कि चलो अब बच्चे सुरक्षित हो गए! लेकिन माताएं यह क्यों नहीं सोचतीं कि वह आया जो अशिक्षित है, आप के बच्चों को क्या शिक्षा दे सकती है, कैसे सभ्य बना सकती है. जो मार्गदर्शन मां दे सकती है, वह क्या आया दे सकती है?

पुरुष का कार्यक्षेत्र तो बाहर का है. पुरुष घर में उसी प्रकार आता है जैसे एक मुसाफिर थकाहारा, भूखाप्यासा, आराम करने या पेट भरने के लिए किसी सराय में चला जाए. पुरुष को बाहर की चिंताओं से ही छुट्टी नहीं मिलती. घर में भी वह चिंताओं से घिरा रहे तो उस का जीवन उस के लिए ही बोझ बन कर रह जाए. उस के ऊपर पहले ही बहुत बड़ा उत्तरदायित्व होता है—रोजी कमाने का, सब को देखने का. उसे वह यथासामर्थ्य निबाहता भी है.

लेकिन इस का यह तात्पर्य नहीं कि पुरुष घर से आंखें मूंद ले, केवल बाहर का ही काम देखे. उसे अपने घर, बच्चों व अपनी पत्नी के प्रत्येक कार्य का ज्ञान होना चाहिए. जहां मां का प्यार बच्चे को उद्दंड बना देता है वहीं पिता की एक कठोर आवाज उसे भटकने से बचा लेती है. मेरा तात्पर्य यह नहीं कि वह घर में बंदी हो कर रह जाए, सभा सोसाइटी में जाए ही नहीं. पर बाहर की क्लब–सोसाइटी से पहले उस का अपना भी एक क्लब है, जिस के सदस्य हैं उस के अपने बच्चे.

यदि बच्चों को मां अच्छी तरह पालने के साथसाथ अच्छा नागरिक भी बनाए तो इसी में मां बनने की सार्थकता है. नारी पुरुष से अधिक व्यावहारिक और कुशल होती है. उसे ज्ञात है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों का मानसिक निखार, बौद्धिक विकास किस प्रकार हो, इस का सुंदर भविष्य मां के हाथों में होता है. बच्चे जितने उन्नत व बलशाली मां की छत्रछाया में बन सकते हैं उतनी और किसी में शक्ति नहीं कि वह सही अर्थों में बच्चों का मार्गदर्शन कर सके.

आज के युग में मां अपनी सजधज के लिए अपने पड़ोसियों या मित्रों से आगे निकलने के लिए एक होड़ में लगी रहती है. बच्चे इस प्रवृत्ति से लाभ उठा लेते हैं, मां तो अपने में व्यस्त है फिर उन्हें भी जो मिलता है वे उसे मित्र बना लेते हैं. मांबाप के पास इतना अवकाश नहीं वे देखें कि बच्चों को संगति कैसी मिली है. संगति अच्छी न होने से उन का आचरण बिगड़ता चला जाता है. कभी किसी पड़ोसी ने या स्नेही ने इस बात की शिकायत कर दी तो मां लालपीली हो कर अपने हितैषी से ही बिगड़ उठती है कि 'मेरे बच्चे तुम से देखे ही नहीं जाते!' यह सब देखसुन कर बच्चों को शह मिलती है और वे एक कदम और आगे निकल जाते हैं. इस लापरवाही का नतीजा यह होता है कि बच्चे उद्दंड हो जाते हैं. मां की लापरवाही उन्हें चोरउचक्का तक बना देती है.

आजकल माताओं में एक दुर्बलता और भी देखी गई है. कुछ माताएं अपने बच्चों से कोई काम नहीं लेतीं. वे इस बात से डरती हैं कि यदि किसी ने उन के बच्चों को काम करते देख लिया तो लोग उन्हें छोटा समझने लगेंगे, सोसाइटी में उन का मान कम हो जाएगा. वे यह नहीं समझतीं कि मिलजुल कर काम करने की यही भावना बच्चों में विश्वास पैदा करती है, सहानुभूति जाग्रत करती है, उन्हें अनुभव प्रदान करती है. उन को मार्गदर्शन मिलता है--दूसरों से स्नेह करने का, अपने परिवार में एक हो कर जीने का. इस में कोई छोटापन या हीनता नहीं, अपनी मां को किसी कार्य में सहायता देना कोई अपमानजनक नहीं बल्कि मां के प्रति एक सच्चा लगाव है. काम करना बच्चों का स्वभाव बन जाता है, फिर वह किसी कार्य से जी नहीं चुराते. काम को सिरदर्द नहीं समझते, कर्तव्य विमुख नहीं होते, अनुशासनहीन नहीं होते. यहीं तो मां बच्चों का सही मार्गदर्शन करती है.

अब लीजिए अध्यापक वर्ग को! स्कूलकालिज पहले भी होते थे, अब भी हैं. और इन में पढ़ने के लिए छोटेबड़े घरों के बच्चों को भेजा जाता है. पहले अध्यापक वर्ग अपना एक कर्तव्य समझता था जिस की आज के युग में सब से बड़ी कमी है.

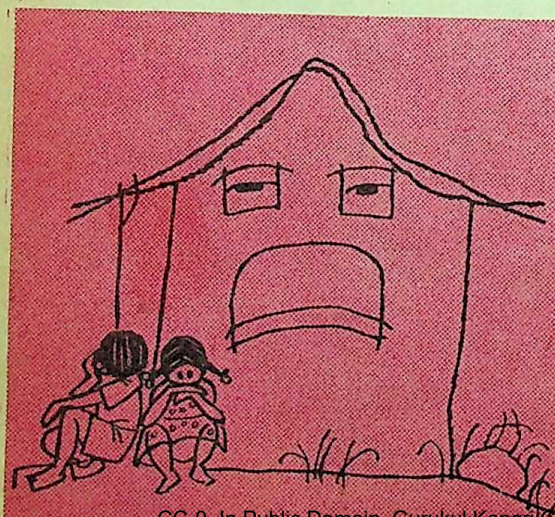

आप का घर
सूना है
अगर
आप के घर में
चंपक
नहीं आता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पहले छात्र को अच्छे सांचे में ढालने में अध्यापक जीजान से जुट जाते थे. उन को पता था कि आज का उन का यह छात्र कल का अच्छा नागरिक बनेगा. अच्छा नागरिक होगा तो अच्छे समाज की रचना होगी. अच्छा समाज होगा तो हमारा देश उन्नत होगा. अध्यापकगण जीजान से जुट जाते थे. अपने पास कुछ बचा नहीं रखते थे, अपने अंतर का सब कुछ छात्र के अंतर में उंड़ेल देते थे.

जहां मां एक अच्छा इनसान पैदा करती है वहीं अध्यापक एक अच्छा नागरिक पैदा करता है. अध्यापकों में एक होड़ सी होती थी कि दूसरा स्कूल-कालिज कहीं उन के स्कूलकालिज से आगे न निकल जाए. उन का परीक्षाफल दूसरों से अच्छा होना चाहिए. इस होड़-बाजी में छात्र वर्ग लाभ में रहता था—विद्यार्थी स्कूलकालिज से बाहर आते थे तपे हुए सोने की तरह चमक लिए.

लेकिन आज बिलकुल इस के विपरीत है. आज सही अर्थों में 'टीचर्स' नहीं रहे, आज पैसा बनाने वाले लेक्चरर रह गए हैं. आज शिक्षा को व्यापार का रूप दे दिया गया है. मांबाप बच्चों को अच्छे से अच्छे स्कूलकालिज में भेजते हैं कि बड़ी प्रतिस्पर्धा व प्रतियोगिता का युग है, बच्चों को अच्छी शिक्षा मिलनी चाहिए लेकिन होता इस के विपरीत है. मांबाप की चिंता का स्तर देख कर, अध्यापकों का आचरण देख कर मांबाप किंकर्तव्यविमूढ़ रह जाते हैं. आखिर किस तरह वह वातावरण बच्चों को मार्गदर्शन दे सकता है!

अध्यापक वर्ग अपने कर्तव्य से विमुख हो गया है. उन का कार्य है महीने के पश्चात सरकार से पैसा लेना. बच्चे पढ़ें या न पढ़ें, उन की क्या हानि है! जब अध्यापक ही कर्तव्यपरायण नहीं, समय के पाबंद नहीं तो छात्र ही कैसे अनुशासित रहें! बच्चे अपनी कक्षा में जाते हैं, अध्यापक गायब. लान में या कामनरूम में अध्यापकों की गप्प-गोष्ठी चल रही है. बच्चों को क्या चाहिए, उन की बन आती है, वे भी सिनेमा हाल में जा बैठते हैं या फिर सड़कों की खाक छानते हैं. बच्चों को पता है इस समय उन्हें कोई देखने सुनने वाला नहीं! सब अपनेअपने में व्यस्त हैं.

और जब बच्चों की परीक्षा आ जाती है तो उन के कोर्स पूरे नहीं होते. यहां अध्यापक समय का लाभ उठा कर छात्रों को घर पर पढ़ने बुलाते हैं, मांबाप समय की नजाकत को समझ कर मुंहमांगे पैसे देते हैं. अध्यापक जो बच्चे को घर पढ़ाएगा वह क्यों अपने छात्र को फेल

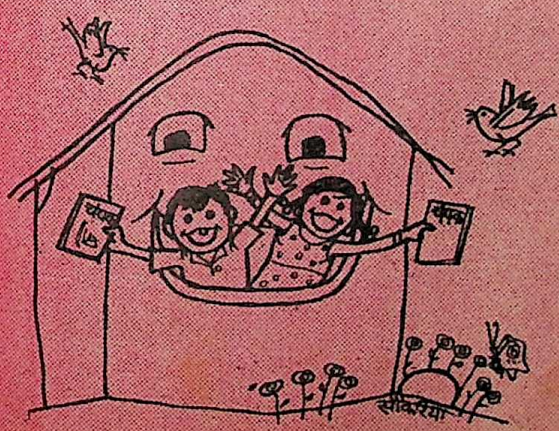

अपने बच्चों के
मनोरंजन के लिए
व उन्हें अच्छा नागरिक
बनाने के लिए

चंपक

खरीदिए.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

करेगा! इस व्यापार में बच्चों की नींव कमजोर रह जाती है. जो बच्चे अध्यापक के घर नहीं जा पाते वे फेल हो जाते हैं, या फिर परीक्षा में नकल करने की चेष्टा में कई गलतियां कर बैठते हैं. किसी ने नकल करते पकड़ लिया तो नौबत चाकू-छुरी तक पहुंच जाती है. उस समय गुरु और शिष्य का नाता शत्रुता का रूप ले लेता है.

यह सब देख कर लगता है, हमारे बच्चों का मार्ग दर्शन ठीक से नहीं हो रहा है. जब अध्यापकगण ही अपने कर्तव्य से विमुख हो गए तो हमारे बच्चों का भविष्य क्या होगा, देश का क्या होगा? बच्चे जो बड़े हो कर कल देश के उत्तराधिकारी बनने वाले हैं वे देश को किस गढ़े में धकेल देंगे! बच्चों को सच्चा मार्गदर्शन कौन देगा, यह सोच कर अपने देश की तसवीर जब हमारी आंखों के सामने आती है और अपने बच्चों की ओर जब दृष्टि जाती है तो समय कुछ कदम और आगे बढ़ गया होता है, उस समय सिवा हाथ मलने के कुछ नहीं कर पाते.

आज हमारी राजनीति भी कम उत्तरदायी नहीं. युवकों को गुमराह करने में उस का भी हाथ है. हमारे नेताओं ने अपनी गद्दी के लिए बच्चों को खिलौना बना डाला है. अपना स्वार्थ साधने के लिए उन से जो भी बन पड़ता है वे करते हैं. देश के ये कर्णधार क्यों नहीं सोचते कि बच्चों का कार्यक्षेत्र राजनीति नहीं, विद्यालय है. उन्हें बहुत कुछ जानना है, सीखना है. वे अच्छा सीखेंगे तो देश को कुछ अच्छा देंगे. बिना शिक्षा के तो उन की राजनीति भी अधूरी है. जब हमारे बच्चों को यही ज्ञान नहीं कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है तो वे यह कैसे जानेंगे कि इस राजनीति का उद्देश्य क्या है?

इसलिए आज के राजनीतिबाज को, अध्यापक वर्ग को, मांबाप, को समय रहते चेत जाना चाहिए. उन्हें इन मासूम बच्चों को अपने हाथ का खिलौना नहीं बनाना चाहिए, जिसे न तोड़ते बने, न देखते बने. हर वर्ग का अपना कर्तव्य है, अपना कार्यक्षेत्र, और उस कार्यक्षेत्र में रहते हुए अपनेअपने कर्तव्य को हरेक को बड़ी निपुणता और सूझबूझ से निबाहना चाहिए. बच्चों का मन बड़ा स्वच्छ होता है. उन्हें सही मार्गदर्शन मिले तो यह देश के लिए बड़े गौरव की बात होगी.

हमारे बच्चों को होनहार, कर्तव्य-परायण, अनुभवी व सच्चा नागरिक बनना है, चोरउचक्का या उच्छृंखल नहीं, जो राह चलने वाले के लिए भी मुसीबत बन जाएं! ■

मंत्री की साख!

मिर्जापुर में उत्तर प्रदेश सरकार के एक मंत्रीजी को कार के लिए उधार पेट्रोल न मिल सका. अंत में उन्हें एक थानाध्यक्ष ने अपनी जिम्मेदारी पर उधार दिलाया.

पेट्रोल डीलर ने यह कहते हुए पेट्रोल देने से इनकार कर दिया कि उन के पेट्रोल पंप से अनेक मंत्रियों ने लगभग 15 सौ रुपए का पेट्रोल उधार लिया लेकिन काफी समय हो जाने व बारबार तकाजे भेजने के बाद भी उन्होंने पैसा नहीं चुकाया. पिछले उधार की पुष्टि मंत्रीजी के ड्राइवर ने भी की.

✦

इटली के एक विशेषज्ञ प्रो. कार्ला सरतोरी के अनुसार वोलीविया की एक महिला की उमर संसार भर में सब से अधिक है. इस की उमर 203 वर्ष है.

इस के बाद रूस के एक पुरुष का नंबर है जो 195 वर्ष का है. तीसरे नंबर पर ईरान का एक पुरुष है जो 190 वर्ष का है.

प्रोफेसर सरतोरी के अनुसार जल्द बूढ़े होने का कारण यह है कि आधुनिक व्यक्ति अपने पुरखों की तरह पर्याप्त मेहनत नहीं करते.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल अपराध बड़ी तेजी से बढ़ रहे हैं. चोरी और गुंडागर्दी के किस्से तो अकसर ही सुनने और देखने में आते हैं.

आज मैं आप के सामने कुछ सुझाव पेश कर रही हूं. जो आप की तथा आप के घर व संपत्ति की सुरक्षा में सहायता कर सकते हैं.

यदि आप को घर के बाहर किसी चोर या अजनबी का अंदेशा हो तो पहले भली भांति चुपचाप उस को देखिए. पूरी जानकारी के बिना रात को दरवाजा कभी न खोलें.

अपने टेलीफोन के पास हमेशा पुलिस विभाग का तथा अपने पड़ोसी व अन्य महत्त्वपूर्ण टेलीफोन नंबर लिखे हुए रखिए.

ही हो जाए! इसलिए बाहर की तरफ खुलने वाले दरवाजों में तो हमेशा ताला ही लगाइए.

कीमती सामान वाले बकसे अपने सोने के कमरे में ही रखने का प्रबंध कीजिए. बाक्स रूम हमेशा ऐसे कमरे को बनाइए जो आप के सोने के कमरे के पास ही हो तथा उस में कम से कम खिड़कियां, दरवाजे व रोशनदान हों व उस कमरे के दरवाजे बाहर की तरफ न खुलते हों.

पुलिस विभाग के अधिकतर अनुभव यही बताते हैं कि चोर से बचने के लिए बंदूक इतनी लाभकारी नहीं है जितना कि

लेख • सरला माथुर

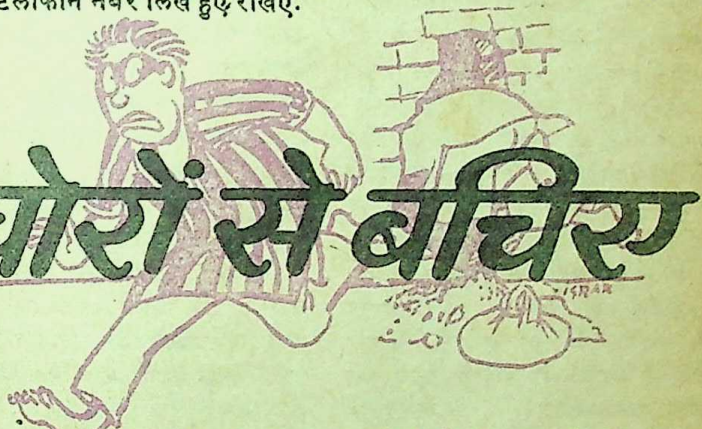

चोरों से बचिए

चोर या बदमाश को देख लेने के बाद कभी भी यह सोच कर निश्चिंत मत रहिए कि आप के पड़ोसी ने पुलिस विभाग को सूचित कर दिया होगा. यदि आप के पास टेलीफोन की सुविधा हो तो यह काम स्वयं ही करें.

किसी दूसरे का ताला मांग कर लगा लेने की आदत कभी न डालिए, घर के बाहर के दरवाजों के ताले हमेशा किसी अच्छी कंपनी के ही लगाइए. बाहर की तरफ खुलने वाली खिड़कियों में हमेशा ताला लगा रहना चाहिए. क्योंकि हो सकता है कि आप लोग आंगन की तरफ बैठे हों और बिना ताले वाली खिड़कियां खोल कर पैसे, घड़ी, पर्स, ट्रांजिस्टर वगैरा छोटीमोटी चीजों को चोरी हो

छोटीमोटी गलतियों का खयाल रख कर बहुत बड़े खतरे से बच सकते हैं.

कुत्ता. अतः यदि असुविधा न हो तो कुत्ता पाल लेना चाहिए. जब कभी भी घर से बाहर जाना हो तो कोई चिट या नोट लिख कर मत जाइए. या बोर्ड पर आउट वाले कार्ड लगा कर जाना भी चोरों को न्योता देना है. घर से बाहर जाने से पहले एक बार फिर चैक कर लीजिए कि कोई खिड़की या दरवाजा बिना ताले का तो नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गैरेज में ताला लगाना कभी न भूलें क्योंकि खाली गैरेज आप की अनुपस्थिति की सूचना चोरों को दे सकता है. यदि घर से बाहर रात को कहीं जाना हो तो कम से कम एक लाइट तो अंदर के किसी स्थान की जरूर जली छोड़िए. बाहर जाने के लिए टाइमर्स भी बहुत उपयोगी होते हैं जो कि आप के बाहर जाने पर स्वयं लाइट को समय पर जला व बुझा देते हैं.

चाबियां कभी भी फूलदान में, पायदान के नीचे, लेटर बाक्स में, दरवाजों के ऊपर, बिजली के मीटर के अंदर या इसी प्रकार की और किसी जगह पर रख कर कभी न जाएं. चोरों के लिए ये जगहें कोई नई नहीं होतीं. वे सब से पहले इन्हीं जगहों पर चाबी ढूंढ़ते हैं.

जब कभी भी ज्यादा समय के लिए घर से बाहर जाना हो तो दूध वाले, डाकिए तथा अखबार वालों को सूचित करना कभी मत भूलिए, क्योंकि इधर-उधर बिखरे हुए अखबार व चिट्ठियां ही आप की अनुपस्थिति की सूचना दे सकते हैं. इसलिए अपने किसी साथी से पत्र लेते रहने को कह जाइए, या फिर पोस्ट आफिस वालों को तब तक के लिए पत्र जमा रखने को कह जाइए. यदि संभव हो सके तो अपने लान की देखभाल का प्रबंध उसी प्रकार का रहने दीजिए जैसा कि आप अपने सामने रखते हैं.

अपने किसी विश्वसनीय पड़ोसी को अपने बाहर जाने की सूचना व एक चाबी दे जाइए ताकि वह समयसमय पर आप के सामान की देखभाल करता रहे. किसी के भी यह कहने पर कि आप के पतिदेव या अन्य किसी रिश्तेदार या दोस्त ने रुपए, साइकिल या घर की और कोई चीज जल्दी मंगवाई है. ऐसी बातों में नहीं आना चाहिए. यदि उस व्यक्ति के पास आप के पतिदेव की लिखी हुई चिट न हो तो घर की कोई चीज मत दीजिए. कोई भी चीज सिर्फ उस समय देनी चाहिए जब आप भली भांति अपने पतिदेव के हस्ताक्षर व उस व्यक्ति विशेष के बारे में पूरी जान कारी कर लें.

कुछ सामान्य बातें भी ध्यान में रखें. रात को घर के बाहर, आप घर में हों या कहीं गए हों, रोजाना एक लाइट जली रखिए. जो महिलाएं अकेली रहती हैं उन को अपने सरनेम्स या संक्षिप्त नाम ही टेलीफोन डायरेक्ट्री या लेटर बाक्स पर लिखवाने चाहिए.

यदि आप को किसी बदमाश या चोर पर किसी प्रकार का शक हो तो उस का नाम पुलिस की रिपोर्ट बुक में लिखवा दीजिए. ताकि पुलिस उस पर ध्यान रखे. क्योंकि दिन में भी अकसर जब पति-पत्नी दोनों नौकरी पर जाते हैं और बच्चे स्कूल चले जाते हैं तब चोरों को कई बार चोरी का मौका मिल जाया करता है.

घर में कभी भी जरूरत से ज्यादा रुपए, जेवर या अन्य मूल्यवान वस्तुएं न रखें. सेफ डिपाजिट लाकर्स में अपने गहने रखवाइए. रखवाने से पहले गहनों की फोटोग्राफी जरूर करवा लीजिए ताकि आप के पास गहनों का पूरापूरा सबूत रहे.

> दरवाजा खोलने से पहले दरवाजे में बने चोरसूराख से अवश्य देख लेना चाहिए.

रुपए व जेवर कभी भी, चीनीदानी, दरवाजों, तसवीरों के पीछे, शृंगार बाक्स में या इसी प्रकार की अन्य किसी जगह मत रखिए क्योंकि चोरों को तो इन स्थानों की जानकारी आप से कहीं ज्यादा होती है. इन जगहों की तलाशी तो वह जरूर ही लिया करते हैं.

यदि बारबार गलत नंबर कह कर टेलीफोन आए तो पुलिस या टेलीफोन एक्सचेंज को इस बात की सूचना दीजिए और ऐसे समय में अपना फोन नंबर या पता न बताइए और न ही कभी यह बताइए कि घर में आप अकेली हैं. ऐसे समय यदि टेलीफोन करने वाला यह पूछे कि आप कौन हैं, तो जब तक फोन करने

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले की ठीक जानकारी न हो जाए तब तक अपना नाम न बताइए. चोर रात को अकसर तार का बहाना बना कर भी दरवाजा खुलवा लिया करते हैं, ऐसे समय पहले चोरसुराख या खिड़की से बात कर के पूरी जानकारी कर लीजिए, एकदम से दरवाजा कभी न खोलें.

बहुत रात हो जाने पर किसी अजनबी का फोन या गलत नंबर वाली टेलीफोन काल्स आने पर सचेत रहिए. कई बार चोर यह पता करने को कि घर पर आप के अलावा और भी कोई है या नहीं इस जानकारी के लिए टेलीफोन किया करते हैं और अपनेआप को फोन ठीक करने वाला बताया करते हैं. ऐसे समय में 'क्षमा कीजिए गलत नंबर' कह कर फोन रख देना ही ठीक रहता है.

कार या अन्य गाड़ियों की चोरी, ज्यादातर अपनी लापरवाही के कारण ही हुआ करती है. कार की चाबी कभी भी कार के अंदर कभी मत छोड़िए. अतिरिक्त चाबियां कभी भी कार के अंदर अन्य किसी स्थान पर मत छिपाइए. कार बंद कर देने के पश्चात विंड विंग्स और खिड़कियों का एक बार फिर निरीक्षण कर लीजिए. अकसर लोग कैमरा, बायना कुलर्स, कपड़े तथा इसी प्रकार की मूल्यवान वस्तुएं कार में ही छोड़ जाया करते हैं, यह आदत कभी नहीं डालनी चाहिए. कभी भी ऐसी वस्तुएं कार में छोड़ कर चोरों को निमंत्रण मत दीजिए.

यदि गैरेज है तब तो ठीक है और यदि नहीं है तो अपनी कार रखने के लिए प्रकाश वाले किसी स्थान का प्रबंध कीजिए और रात्रि को कार में ताला लगाना कभी मत भूलिए.

नौकर रखने से पूर्व उस का कोई विशेष शारीरिक चिह्न पहचान के लिए ध्यान में रखिए. उस की एक फोटो व उस के घर का पूरा पता भी अपने पास रख छोड़िए. वैसे नौकर हमेशा किसी विश्वसनीय व्यक्ति का लाया हुआ ही रखें. जो नौकर हर समय आप के पास रहते हैं उन्हें आप के घर की सब चीजों व जगहों की जानकारी हो उन्हें रात को बहुत देर तक उन के साथियों के साथ घूमने का अवसर देना भी ठीक नहीं रहता. जहां तक हो, यह ध्यान रखना चाहिए कि अपने पर्स, जेवर, रुपए व अन्य कीमती चीजों के बकसे किसी घरेलू नौकर, धोबी व अन्य पड़ोसियों वगैरा के सामने कभी न खोलें.

घर के नौकरों व मालियों वगैरा को भी यह समझा देना चाहिए कि वे आप के पतिदेव के बाहर जाने की सूचना व अन्य किसी प्रकार की महत्त्वपूर्ण बात का भेद किसी को न बताएं.

सोने से पहले घर के सब दरवाजे व रसोईघर के सब सामान का निरीक्षण स्वयं कर के सोएं. यह काम नौकरों पर कभी न छोड़ें.

रात को सोने से पूर्व अपने पास अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चप्पल व सुरक्षा का कोई साधन अपने पास जरूर रखिए. अकसर चोर या बदमाश यह देखने के लिए ही कि आप सोए हुए हैं या जगे हुए, मकान पर पत्थर फेंक कर देखा करते हैं. ऐसे समय में सचेत रहने के लिए उसी समय चप्पलें व डंडा इत्यादि ढूंढ़ना मुश्किल हो जाता है. इसलिए हमेशा सोने से पूर्व ही इन चीजों का पास में रखना बहुत जरूरी है.

अपने घर पर फेरी वालों को ज्यादा बढ़ावा कदापि न दें और खासकर उस समय पर जब आप के पतिदेव या अन्य कोई मर्द घर पर न हो.

रात्रि को यदि कुछ समय के लिए भी कहीं जाना हो तो घर पर किसी के रहने का प्रबंध पहले से ही कर लीजिए. क्योंकि अकसर नट व कठपुतलियों के तमाशे वाले तमाशा दिखा कर महल्ले के लोगों को एकत्रित कर लिया करते हैं और उन्हीं के कुछ साथी सूने घर ढूंढ़ कर चोरी कर लिया करते हैं.

सफर करते समय कभी भी सब पैसे अपने बटुए में रखना और लोगों के सामने बटुए को खोलना व रुपए गिनने का काम कभी न करें. सामान उठाने वाले कुली का नंबर अपने पास नोट कर लीजिए. गाड़ी में किसी को भी अपना हितैषी समझ कर अपने कीमती सामान की बात किसी को न बताएं या अन्य यात्रियों के निरीक्षण में अपने सामान को छोड़ कर स्वयं निश्चिंत हो कर कदापि नहीं सोना चाहिए. सफर करते समय कीमती जेवर न तो खुद पहनिए और न ही अपने बच्चों को पहनाइए. गाड़ी के दरवाजे व खिड़कियां बंद रखिए.

टैक्सी व टैंपो में घूमते समय टैक्सी वाले के यह कहने पर कि 'साहब, टैक्सी खराब हो गई है, जरा धक्का लगाइए,' हमेशा औरतों को पहले उतर जाना चाहिए क्योंकि अकसर ऐसे झूठ बोल कर टैक्सी वाले स्त्रियों के बैठे रहने पर ही टैक्सी चला कर ले जाया करते हैं. इसलिए हमेशा सावधान रहिए और टैक्सी में बैठने से पहले टैक्सी का नंबर नोट कर के अपने पास रख लीजिए.

जहां तक हो सके, बहुत एकांत जगह पर और बहुत रात तक पिकनिक के लिए मत जाइए. क्योंकि ऐसा भी होता है कि चोर लोग पहले से ही पीछे लग जाया करते हैं और एकांत स्थान पा कर घेर लिया करते हैं.

आज के इस जमाने में जब रोजमर्रा चोरीडकैती के क़िस्से बढ़ते जा रहे हैं तो सब से अच्छा तो यही है कि अपना व अपनी संपत्ति का बीमा भी करवा लीजिए ताकि आए दिन इन बढ़ते हुए खतरों से बचा जा सके.

ये थोड़ी सी सावधानियां आप के लिए बहुत लाभप्रद सिद्ध हो सकती हैं. ●

कहीं गूंजेगी शहनाई...

मुझे तो जिंदगी भर अब तेरी यादों पे जीना है
तुझे भी क्या कभी गुजरे जमाने याद आएंगे.
कहीं गूंजेगी शहनाई तो लेगा दर्द अंगड़ाई,
हजारों गम, तेरे गम के बहाने याद आएंगे.

—साहिर लुधियानवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुपर सर्फ़ से एक बार धुल कर कपड़े जितने सफ़ेद होते हैं अन्य पाउडरों की धुलाई से नहीं होते

प्रयोग शालाओं में व्यापक परीक्षणों द्वारा बार बार यह सिद्ध हो चुका है कि बराबरी के दावेदार पाउडरों की धुलाई के मुक़ाबले में सुपर सर्फ़ से धुले कपड़े कहीं अधिक सफ़ेद होते हैं. सुपर सर्फ़ आप के कपड़ों को ऐसी जगमग सफ़ेदी देता है जो दूसरों के लिए मधुर इर्ष्या का विषय बन जाती है. पाउडर ख़रीदना है तो उत्तम ही क्यों, सर्वोत्तम क्यों नहीं.
भारत का सर्वोत्तम पाउडर सुपर सर्फ़ ही लीजिए.

सुपर सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं

(नील, पाउडर आदि की ज़रूरत नहीं)

लिंटास-SU. 115-77 HI

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौवन की ललकार....

कल देश, समाज, परिवार
आप के हाथ में होंगे...

कल की तैयारी के लिए

मुक्ता

आज से ही पढ़िए

मुक्ता की कहानियां, लेख, कविताएं,
स्तंभ मनोरंजन करते हैं, प्रेरणा
देते हैं, जीवन में आगे बढ़ाते हैं और
व्यक्तित्व का विकास करते हैं.

मुक्ता पढ़िए—आगे बढ़िए

हर समाचारपत्र विक्रेता से प्राप्य
दिल्ली प्रेस • नई दिल्ली-५५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नमूने की प्रति मंगाने के लिए तीस पैसे के डाक टिकट भेजिए.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रेश स्कूल की संस्थापिका श्रीमती मीरा महादेवन

इंटरव्यू • नीलमसिंह

मजदूरों के बच्चे भी पढ़-लिख कर दूसरे बच्चों की तरह शिक्षित और सुयोग्य बन सकते हैं लेकिन इन के पालनपोषण और शिक्षा के बारे में सोचता कौन है?

दिल्ली तेजी के साथ बढ़ता हुआ महानगर है. सन 1945 में इस की आबादी तीनचार लाख थी, आज लगभग 40 लाख है. तेजी से होने वाले इस विकास के साथसाथ समस्याएं भी बढ़ी हैं. एक ओर भव्य और बहुमंजिली इमारतें बनी हैं, तो दूसरी ओर उन के आसपास ही टूटीफूटी झुग्गीझोंपड़ियां, जिन में लाखों की संख्या में रहने वाले मजदूर इस विकास के खोखलेपन की परतें उधेड़ते हैं. संपन्न वर्ग के लोगों के लिए अच्छे से अच्छे स्कूल हैं, मजदूरों के बच्चों के लिए गंदी गलियां व फुटपाथ हैं.

जहां कहीं भी कोई बड़ी इमारत बन रही हो, वहां देश के इन नन्हे नागरिकों को उन की जीर्णशीर्ण दशा में भली भांति देखा जा सकता है. श्रीमती मीरा महादेवन ने भी इन्हें देखा और इन की इस दशा ने इन्हें सोचनेविचारने पर मजबूर कर दिया. फिर उन्होंने इन बच्चों को शिक्षित करने का निश्चय किया. दिन के उस दौर में इन्हें स्वस्थ वातावरण में बहलाए रखने के लिए जब कि उन के मजदूर मांबाप काम पर होते हैं, एक क्रेश स्कूल की स्थापना हुई—कुछ दिनों बाद दूसरा स्कूल खुला, फिर तीसरा...और यह संख्या बराबर बढ़ती जा रही है.

श्रीमती मीरा महादेवन से क्रेश स्कूल के बारे में इन पंक्तियों की लेखिका ने जो बातचीत की वह इस प्रकार है :

प्रश्न : क्रेश स्कूल खोलने की प्रेरणा आप को कैसे मिली और इसे आप ने कार्यान्वित कैसे किया?

उत्तर : मैं गांधीजी से बहुत प्रभावित रही हूं. मेरे पति यहां गांधी प्रतिष्ठान में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन मंत्री हैं. गांधीजी ने अहमदाबाद में जो सत्याग्रह किया था तब अपने भाषणों के दौरान यह कहा था कि 'हरेक बच्चे को दूध मिलना चाहिए.'

मेरे मन में गांधीजी का यह वाक्य बराबर गूंजता रहा. गरीब तबका हमेशा मेरी निगाहों में रहा है. कुल दो चार रुपए रोज कमाने वाले राजमजदूर और पत्थर व गारा ढोने वाली मजदूर औरतों के बच्चों की समस्याएं मुझे कुरेदती रहीं, क्योंकि इन बच्चों का भविष्य इस देश और समाज के भविष्य के साथ जुड़ा है. अतः मैं ने यह निश्चय किया कि मैं अपने देश की सब से गरीब जनता से यह काम शुरू करूं और उन के बच्चों की देखभाल व शिक्षा इतने असरदार व व्यवस्थित ढंग से करूं कि अनपढ़ मजदूर औरतें अपने बच्चों को मेरे स्कूल में भेजने में गर्व व निश्चितता का अनुभव करें. डाक्टर सुशीला नैयर ने मुझे इस कार्य के लिए बहुत प्रोत्साहन दिया.

प्रश्न : क्या आप अपने स्कूलों के बारे में विस्तार से बताएंगी?

उत्तर : हां, हां. मैं दिल्ली में 10 वर्षों से हूं लेकिन अपने इस विचार को कार्यरूप में परिणत करने का अवसर मुझे तीन साल पहले मिला. मैं ने सब से पहला स्कूल ओखला के निर्माण कार्य स्थल पर अगस्त 1968 में खोला. इस स्कूल में दो अध्यापिकाएं और एक सहायक है. बच्चों की संख्या 75 है.

दूसरा स्कूल हौजखास में मई 1969 में खोला. इस स्कूल में दो अध्यापिकाएं, दो आयाएं और एक पार्ट टाइम सहायक है. बच्चे अब इस में 175 के करीब हो गए हैं.

तीसरा स्कूल चाणक्यपुरी में कैनेडियन हाई कमीशन की बन रही इमारत के पास में है. इस स्कूल में दो अध्यापिकाएं और दो आयाएं हैं. इस में 100 बच्चे हैं. इसे नवंबर 1969 से शुरू किया गया है.

प्रश्न : आप के इन स्कूलों में क्या दिनचर्या रहती है और इन बच्चों को किनकिन विषयों की शिक्षा दी जाती है?

उत्तर : स्कूल सवा नौ बजे से साढ़े चार बजे तक लगता है. वैसे पढ़ाई साढ़े नौ से ही शुरू हो पाती है. पहले डेढ़ घंटे स्कूल की सफाई तथा बच्चों को नहलानेधुलाने में लग जाते हैं. सुबह दलिया बनता है. यह सभी काम हम सब मिल कर करते हैं. संगीत, ड्रामा, नाचगाना, खेलकूद, पढ़ाई के सभी विषय सिखाएपढ़ाए जाते हैं और हौसला बढ़ाने के लिए इनाम भी दिए जाते हैं.

प्रश्न : आप का यह स्कूल किस तरह से चलता है और इस के लिए धन की जो जरूरत पड़ती है उस की पूर्ति आप कहां से करती हैं?

उत्तर : इस काम के लिए हमें सब से पहले 2,000 रुपए अमेरिकन क्लब

क्रेश स्कूल में स्वास्थ्य लाभ करता हुआ बालक ग्यारसी. जिस के बारे में उस के मांबाप का विश्वास था कि वह कभी ठीक नहीं हो सकता.

की प्राइवेट वेलफेयर सोसाइटी से मिले थे. बाद में केंद्रीय मंत्री श्री कोदरदास कालीदास शाह ने 1,000 रुपया दिया. वैसे मुझे जो भी सहायता मिलती है वह विदेशियों से ही मिलती है. लेकिन जिस जगह भी मैं ने स्कूल खोला है वहां के निर्माण कार्य के ठेकेदारों से मैं ने स्कूल के लिए खर्च लिया है और लेती हूं.

हौजखास के स्कूल के लिए हर महीने 900 रुपए वहां का ठेकेदार देता है. मैं इन्हीं रुपयों में पूरा खर्च चलाती हूं. क्योंकि मैं सोशल वर्क के नाम को बदनामी से बचाना चाहती हूं इसलिए मैं कोशिश करती हूं कि खर्च कम से कम हो. काम करने वाली सभी सेवाभावी हैं. मैं व्यवस्था पर खर्चा नहीं करना चाहती, यह मेरा सिद्धांत है. स्टेशनरी पर बहुत कम खर्च है. सिर्फ एक लड़की टाइपिस्ट रखी है जिसे सिर्फ पारिश्रमिक भर देती हूं.

शुरूशुरू में मैं ने सोशल वेलफेयर बोर्ड से भी संबंध स्थापित किया. लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

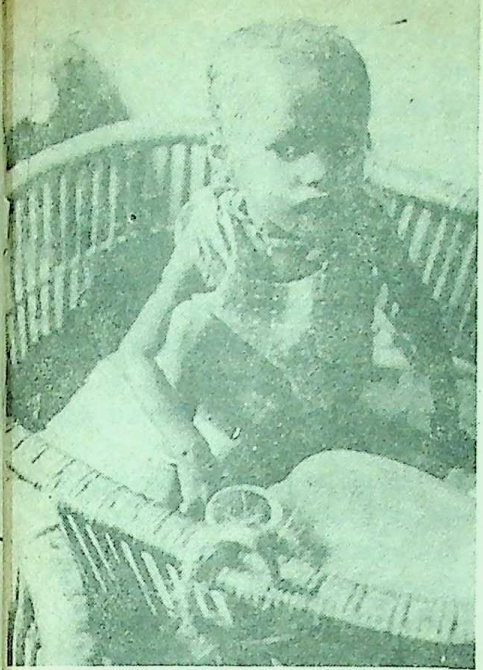

कोई नतीजा नहीं निकला. हमारे देश में पांचपांच लाख के फौआरे तथा पार्क बनाए जा रहे हैं. लेकिन निचले वर्ग के इन बच्चों और महिलाओं पर कोई एक पैसा भी खर्च करने को नहीं सोच रहा. न इस वर्ग के बच्चों को उपयुक्त भोजन मिलता है और न तन ढंकने के लिए कपड़े.

प्रश्न : यह तो ठीक है कि यह वर्ग पिछड़ा और गरीब है, लेकिन क्या इतना गरीब है कि अपने बच्चों को अच्छी तरह खाना और थोड़ाबहुत दूध भी न पिला सके ?

उत्तर : नहीं, इस में औरतों के अंधविश्वास और कुछ विचित्र आदतें भी काम करती हैं. एक बच्चा है—ग्यारसी. उस की मां न तो उस की ठीक से देखभाल करती थी और न ठीक से खिलातीपिलाती थी क्योंकि उस के दिमाग में इस अंधविश्वास ने घर किया हुआ था कि उस का यह बच्चा मर जाएगा. मैं इस बच्चे को अपने यहां ले आई. उसी की देखरेख तथा जाने से ग्यारसी कुछ दिनों में ही ठीक होने लगी और अब वह बिलकुल ठीक है.

प्रश्न : आप को इस काम में परेशानियां भी काफी आती होंगी?

उत्तर : हां, सब से ज्यादा परेशानी मजदूर माताओं को यह विश्वास दिलाने में आती है कि हम उन के बच्चों को लिखानेपढ़ाने व सीखनेसिखाने के बदले उन से कुछ नहीं लेंगे. जब हम उन से यह कहते हैं कि हम तो सिर्फ यही चाहते हैं कि उन का बच्चा साफसुथरा रहे, तंदुरुस्त रहे और कुछ पढ़नालिखना व उठनाबैठना सीख जाए तो इस पर उन्हें विश्वास नहीं आता और वे कभीकभी बड़े विचित्र सवाल कर डालती हैं. वे यहां तक कह बैठती हैं कि क्या हमें इस काम के लिए सरकार ने नौकरी दे रखी है या हमें पैसे मिलते हैं? कुछ चंचल व तेजतर्रार महिलाएं यह भी कह देती हैं कि क्या हमें अपने घर पर कोई काम नहीं है और क्या हमारे अपने बालबच्चे नहीं हैं?

उन की इन शंकाओं को दूर करने में कभीकभी तो हमें बहुत परेशानी उठानी पड़ती है लेकिन हम इन शंकाओं को एकदो हफ्ते में अपने कार्य व व्यवहार द्वारा दूर कर देते हैं.

लेकिन कुछ माताएं तो अपने बच्चों को हर तरह समझानेबुझाने के बाद भी स्कूल में भेजने को तैयार नहीं होतीं. हौजखास के स्कूल में एक लड़की पढ़ती है, सूरजा. वह अभी कम उमर की ही है लेकिन उस का विवाह हो चुका है. पढ़ने में वह खूब तेज व होशियार है. लेकिन पहले तो उस की मां स्कूल में भेजने के लिए तैयार ही नहीं हुई लेकिन एक दिन जब सूरजा बीमार हुई तो मैं ने उस की मां से कहा, "मैं इस का इलाज तभी करूंगी जब कि तुम इसे पढ़ने के लिए स्कूल भेजोगी." तब कहीं जा कर उस की मां राजी हुई. अब वह अकसर आ कर बड़े उत्साह से पूछती है, "बहनजी, हमारी सूरजा कैसी पढ़ रही है?"

इस के अतिरिक्त शिक्षा पाने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बच्चों में से सभी प्रखर बुद्धि के नहीं होते हैं. अगर किसी प्रखर बुद्धि वाले बच्चे को हम बड़ा इनाम दे दें तो ये औरतें फौरन ही लड़ने आ जाती हैं. इसलिए पुरस्कार बांटते समय हमें सभी बच्चों को एक सा इनाम देना होता है. जो बच्चे बहुत होशियार होते हैं उन को अलग से इनाम देते हैं, लेकिन डरतेडरते कि कहीं कोई लड़ने न आ जाए.

प्रश्न : आप को बहुत सी मजदूर महिलाओं से संपर्क करना पड़ता है तो क्या उन में हिंदूमुसलमान और ऊंचनीच या जाति का भेदभाव होता है? और क्या वह आप के स्कूलों में कुछ असर डालता है?

उत्तर : हिंदूमुसलमान की समस्या तो हम सुलझा नहीं पाए हैं लेकिन कोशिश हम बराबर करते रहे हैं जैसे जानबूझ कर हम मुसलमानों व हरिजनों की झोंपड़ियों में जा कर पानी पी लेते हैं ताकि उन पर इस का अनुकूल असर हो. कई बच्चे भी पूछते हैं कि हमारी जाति क्या है, तो हम जानबूझ कर कह देते हैं कि मुसलमान. इस पर बच्चे कहते हैं, तो छि:!

हमारे यहां अधिकतर हरिजन बच्चे होते हैं. सफाई के समय हर बच्चे को कहा जाता है कि वह सफाई का काम करे. लेकिन अन्य बच्चे हरिजन बच्चों के साथ सफाई कराने तथा अन्य काम करने से इनकार कर देते हैं. कभीकभी तो कईकई दिन उन के मन से इस छुआछूत की दूषित भावना को निकालने में लग जाते हैं.

लेकिन बच्चे बाद में मान जाते हैं. वैसे मैं ने महसूस किया है कि इन के अंदर निषेध की भावना कम है और जातिवाद की भावना भी इतनी तीव्र नहीं है. शुरूशुरू में दोपहर के भोजन के समय माताएं यह जरूर कह देती हैं कि उन के बच्चे को हरिजन बच्चे के साथ नहीं बैठाया जाए लेकिन बाद में वह इस बात पर ज्यादा जोर नहीं देतीं और न ही इस बात का ज्यादा खयाल करती हैं.

हम हर शुक्रवार को सरस्वती पूजा करते हैं. इस में सब मुसलमान बच्चे भी हाथ जोड़ कर बैठ जाते हैं, तो मुसलमान मजदूर महिलाएं कोई एतराज नहीं करतीं.

प्रश्न : एक प्रांत से दूसरे प्रांत में आने पर उन्हें कैसा महसूस होता है और क्या ये मजदूर औरतें आपस में लड़तीझगड़ती भी हैं?

उत्तर : मैं ने एक राजस्थानी महिला से पूछा, "दिल्ली में ठीक लगता है?"

उस ने उत्तर दिया, "हम तो गैरों में बैठे हैं. यहां तो हम सिर्फ कमाने और पेट भरने के लिए आए हैं. थोड़ाबहुत पैसा हो जाने पर अपने देश लौट जाएंगे."

इसलिए उन्हें लड़नेझगड़ने की न तो जरूरत है और न फुरसत.

प्रश्न : आप के स्कूल की प्रगति कैसी है?

उत्तर : सभी स्कूल सफलतापूर्वक चल रहे हैं और सभी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या बढ़ती जा रही है. हौजखास के स्कूल में पढ़ने वाले सभी बच्चे अच्छी तरह पत्र आदि लिख लेते हैं. माताएं यह जान कर बहुत खुश होती हैं कि ससुराल जा कर उन की लड़की उन्हें पत्र लिख सकेगी. अधिकतर सातआठ वर्ष के बच्चे विवाहित हैं. मैं ने यह नियम बनाया है कि हर बच्चा साफ रहे और अपनेआप को साफ रखने का काम

बात ऐसे बनी

मेरे पिताजी के एक मित्र श्री रामभरोसे प्राय: रोजाना ही हमारे घर पर आ टपकते थे. कभी कहते, "अरे भई, शर्माजी, जरा अपना अखबार तो देना!" कभी आते तो कहते, "शर्माजी, आजकल तो आप दफ्तर पैदल जाते हैं, साइकिल जरा हमें दे दीजिए."

इसी प्रकार वह रोज आते और कुछ न कुछ मांग कर ले जाते. हम सब उन से परेशान थे.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

करे. मैं इस बात की पूरी निगरानी रखती हूं कि रोज साफ रहने वाला बच्चा अगर एक दिन ठीक ढंग से नहीं आया तो क्यों, मैं उस से जानकारी प्राप्त करती हूं. नित्य प्रति हम बच्चों को नहलाते हैं, ढंग से रखते हैं. चारपांच दिन बाद बच्चा खुद ही यह सब करने लगता है.

इसी तरह हौजखास के स्कूल में एक लड़का है बोधू. वह चौथे दर्जे में पढ़ता है. उस की उमर केवल 13 साल की होगी लेकिन उस की शादी हो चुकी है. वह पढ़ने में तेज है. स्कूल के सारे इनाम उसे ही मिलते हैं.

ये बच्चे ज्ञान के भूखे हैं, मन लगा कर काम करते हैं व समझदार और संवेदनशील भी हैं. हौजखास के स्कूल में एक विवाहित अध्यापिका थोड़े अच्छे ढंग से तथा जरा बड़ी बिंदी लगा कर पढ़ाने आती हैं और दूसरी अध्यापिका बहुत सादे ढंग से इस पर एक दिन ओमी नाम का एक बच्चा बिंदी की एक शीशी खरीद कर लाया और उन अध्यापिका को देते हुए बोला, "बहनजी, आप भी बिंदी लगा कर आया कीजिए."

बाद में पता चला कि ओमी व और बच्चों ने चार आने इकट्ठा कर के बिंदी की शीशी खरीदी थी.

प्रश्न : भविष्य के क्रेश स्कूल की रूपरेखा तथा अपनी अन्य योजनाओं के बारे में कुछ प्रकाश डालिए.

उत्तर : मुझे इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए पैसा चाहिए. वह किसी भी दान-अनुदान के रूप में भी हो सकता है जैसे बच्चों के लिए कपड़ेलत्ते, पढ़ने की पुस्तकें, खेल के समान तथा खानेपीने की वस्तुएं आदि.

गत तीन दिसंबर से तीन जगहों पर—दो कर्जन रोड, एक भगवानदास रोड तथा पार्लियामेंट स्ट्रीट पर क्रेश स्कूल और खुल रहे हैं.

अगर ठेकेदार सहयोग करते हैं तो इन नए क्रेश स्कूलों की स्थापना से और बहुत से बच्चे शिक्षा प्राप्त कर के अपने आप को समृद्ध कर सकते हैं.

यह सब कार्य मैं मानवीय धरातल पर कर रही हूं. मेरा विश्वास व्यावहारिक काम में है क्योंकि व्यावहारिक कार्य से ही सिद्धांत निकलता है. मैं सोशल वर्क नहीं कर रही हूं, यह तो सामाजिक प्रक्रिया है. हमारे देश का निचला तबका ज्ञान का भूखा है. गरीब इलाके के बच्चे अगर किसी संगठन के अंतर्गत नहीं आते तो उन को यह लाभ आखिर कहां से मिलेगा? हमें तो सिर्फ क्रेश की जरूरत

एक दिन मैं भी उन के घर जा पहुंचा और बोला, "चाचाजी, जरा अपना रेडियो तो देना, आज अपनी छुट्टी है. सोचा, कुछ गाने सुनेंगे."

वह तपाक से बोले, "अरे, शर्म नहीं आती यह कहते कि गाने सुनेंगे! चलो, भागो! और घर जा कर कुछ पढ़ोलिखो."

मैं चुपचाप उन के यहां से लौट आया.

दूसरे ही दिन वह हमारे यहां आए और पिताजी से कहने लगे, "शर्माजी, आज कोई रोमांटिक उपन्यास तो देना."

पिताजी कुछ कहते या कोई उपन्यास निकाल कर देते, इस से पहले ही मैं ने तपाक से कहा, "चाचाजी, शर्म नहीं आती, इस उमर में रोमांटिक उपन्यास पढ़ते! घर जाकर रामायण या गीता पढ़िए."

यह सुनते ही चाचाजी का चेहरा मारे शर्म के लाल हो गया. वह तुरत ही वापस चले गए. वह फिर हमारे यहां नहीं झांके. ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने मित्रों के अनुभव भेजिए. प्रकाशित होने पर पांच रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

—संपादक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. मैं इस काम को और अधिक से अधिक फैलाना चाहती हूं. मैं चाहती हूं कि हरेक बच्चे को स्वास्थ्यवर्धक भोजन मिले. मैं चारपांच लाख रुपए चाहती हूं ताकि इस काम को सुचारू रूप से चला सकूं. मैं चाहती हूं कि बहुत सारे बच्चों को, जिन्होंने कभी अपने हाथों से गेंद पकड़ी तक नहीं उन्हें हम कम से कम एक गेंद तो खेलने के लिए दे सकें. गेंद भी उन के बड़े सपनों में से एक है.

अंत में मीराजी ने एक बात मुझ से भी पूछते हुए कहा, "मुझे यह बताइए, क्या बात है कि दिल्ली की महिलाएं हमारे साथ स्वयंसेविका के रूप में नहीं आतीं, जब कि 22 विदेशी महिलाएं मेरे साथ हैं. वे अपनी गाड़ियों में हमारा महीने भर का सामान हमारे साथ खरीदवा कर पहुंचा जाती हैं. उन को साफ रखने में मदद करती हैं लेकिन हमारी बहनें इधर झांकती तक नहीं, क्यों?"

मैं ने बातचीत के दौरान पाया कि श्रीमती मीरा महादेवन में एक लगन है और वह यह कि उन्हें कार्य में अटूट निष्ठा है जिस के लिए वह पूरी क्षमता और शक्ति के साथ लगी हुई हैं. मीराजी महाराष्ट्र के अच्छे सुशिक्षित और संपन्न घराने से संबंध रखती हैं. वह एक कुशल गृहिणी और सफल मां हैं. उन के घर की आधुनिकता व सुव्यवस्थितता उन की सुसंस्कृत रुचि का परिचय देती है. जब मैं उन से विदा लेते हुए उठी तो मैं ने उन के ड्राइंगरूम की बुक शेल्फ पर लगी मोटीमोटी किताबों की ओर इशारा करते हुए पूछा, "क्या ये पुस्तकें पढ़ने के लिए हैं या..."

मैं अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाई थी कि उन्होंने मुसकराते हुए कहा, "साहित्य में मेरी बहुत रुचि है और वह भी पढ़ने में अधिक है, लिखने में कम. वैसे मैं ने हिंदी में कुछ उपन्यास भी लिखे हैं जिन में से दो प्रकाशित हो चुके हैं. अब तो स्कूलों के काम से ही समय नहीं मिल पाता लेकिन लिखनेपढ़ने की इच्छा मन में बराबर बनी रहती है." ●

अमृतांजन

बड़ी तेज़ी से काम करता है !

सरदर्द, मोच, सर्दी-जुकाम और पेशियों के दर्द से शीघ्र छुटकारा पाने के लिये अमृतांजन मालिश कीजिये। पिछले ७५ वर्षों से भी अधिक समय से यह एक निर्भरयोग्य घरेलू दवा है। अमृतांजन की एक शीशी हमेशा पास रखिये। इसके अलावा यह किफायती 'जार' और कम कीमत वाले डिब्बों में भी मिलता है।

अमृतांजन — सर्दी-जुकाम और दर्द के लिये १० दवाओं का एक अपूर्व मिश्रण !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर मौसम में नयी ज्वाला गर्मी

चार्मिस

ऑल-परपज क्रीम से

अपने रूप को सम्हालें, उसे संवारें

खुश्क मौसम, गर्मी, सर्दी और धूल से आप की चमड़ी खराब हो सकती है! अपने अनोखे पोषक तत्वों से और मृदु प्रभाव से हर मौसम में नयी चार्मिस क्रीम आप की चमड़ी को सम्हालती है, उसे संवारती-निखारती भी है। कोमल, मुलायम त्वचा और मनमोहक रूप के लिए आप को हर रोज चार्मिस की जरूरत है। किफायती चार्मिस ऑल-परपज क्रीम का एक जार आज ही खरीदिये!

CH.APC.G.2.HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

साल में एक बार इन आकर्षक पुरस्कारों में से कोई भी पुरस्कार जीत सकता है!

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्की, दिल्ली

जूही, नई दिल्ली

सरिता शिशु संगम

सरिता शिशु संगम के ये नन्हेमुन्ने कितने खुश हैं! क्यों न हों? सरिता शिशु संगम के सदस्य बनने पर इन के फोटोग्राफ सरिता में छपते हैं, जिन्हें देश भर में लाखों लोग देखते हैं. सदस्य बनने के लिए इन्हें कोई फीस भी नहीं देनी पड़ती. साल में २० उपहार कूपन भेजने पर बिना कुछ भी खर्च किए इन्हें ५० आकर्षक उपहारों में से कोई सा भी उपहार मिल सकता है.

बैटरी चालित रेल

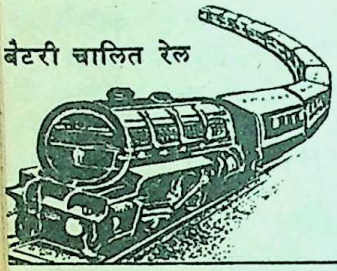

कोको माल्टीन

माया ट्वायज सैट

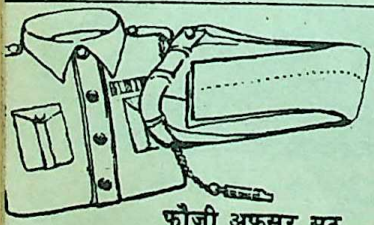

फौजी अफसर सूट

उपहार कूपन

बेबी का नाम .....

सदस्य संख्या .....

पिता का नाम व पता .....

.....

.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

★ तथा अनेक आकर्षक पुरस्कार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

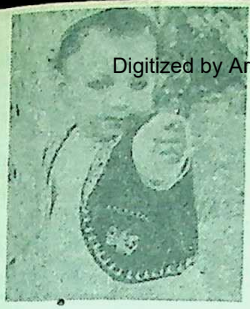

अमिताभ, बंगलौर

अनुपम, वाराणसी

शोनु, राउरकेला

बबलू, दिल्ली

पुष्पलता, देवास

दिपेंद्र, जबलपुर

आप के बच्चे को सदस्य बना लिया जाए तो उपहार कूपन संभाल कर रखना शुरू कर दीजिए. ३१ दिसंबर या ३० जून तक २० कूपन प्राप्त होने पर सदस्य को उपहार वितरण योजना में शामिल कर लिया जाएगा. एक नंबर का केवल एक उपहार कूपन स्वीकार किया जा सकेगा. एक साथ २० कूपन आने आवश्यक हैं. केवल चुने गए फोटो ही प्रकाशित किए जाएंगे.

पुरस्कार १ जनवरी व १ जुलाई को लाटरी द्वारा निकाले जाएंगे. इस तरह ५० सदस्यों को जनवरी में व ५० को जुलाई में पुरस्कार वितरित किए जाएंगे.

सदस्यता फार्म

बेबी का नाम .....

जन्म तिथि .....

वजन .....

पिता का नाम व पता .....

.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

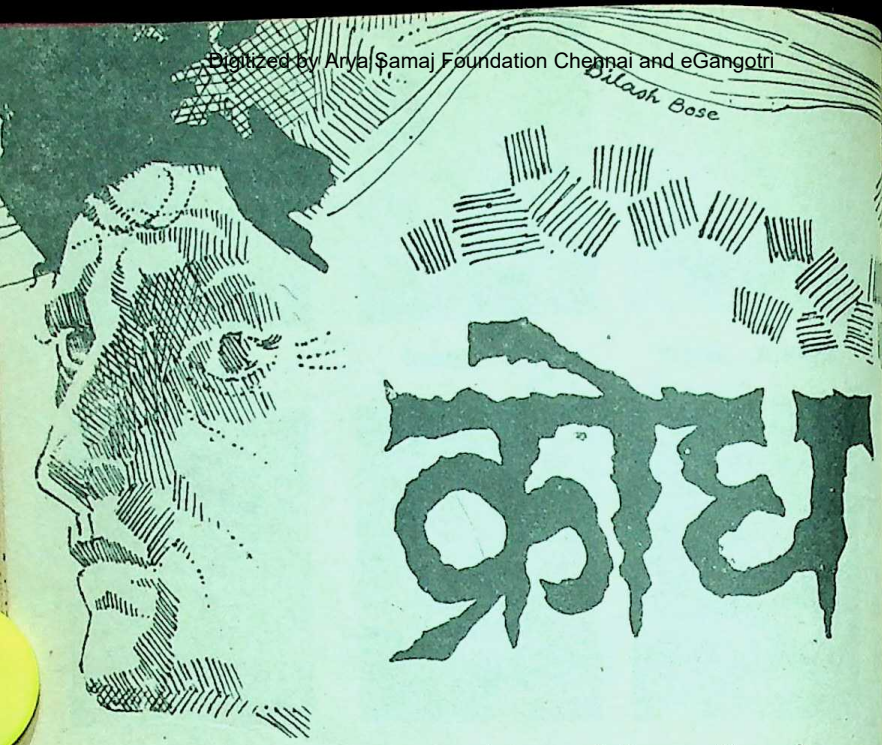

न चाहते हुए भी हमें जीवन में कई बार अप्रत्याशित घटनाओं का सामना करना पड़ता है. उस समय हम अपने को न केवल पूर्ण रूप से असमर्थ अनुभव करते हैं बल्कि अपनी असमर्थता पर हमें क्रोध भी आता है. घटनाओं का किसी के भी जीवन में आना एक स्वाभाविक क्रिया है क्योंकि जीवन बनता ही घटनाओं से है. ये घटनाएं किसी व्यक्ति विशेष के जीवन में ही सामने नहीं आतीं बल्कि सभी मनुष्यों के जीवन में इस प्रकार की घटनाओं का स्फुटित होना एक प्रकार से अनिवार्य ही है. अंतर केवल इतना ही है कि किसी निश्चित समय में कोई घटना किसी व्यक्ति पर कम प्रभाव डालती है और किसी पर अधिक.

वैसे तो मनुष्य स्वाभाव से ही प्रसन्न और संतुष्ट रहना चाहता है, पर ऐसा होता नहीं. क्योंकि प्रसन्नता और संतोष, जो कि स्वयं उस के हृदय की वस्तुएं हैं, वह दूसरों से प्राप्त करने की आशा करता है. उस की बुद्धि जहां तक पहुंच सकती है, वह वहीं तक सोच सकता है, आगे नहीं. निश्चित है कि मनुष्य की कल्पना जहां तक जाएगी, वह वहीं तक पहुंचने का प्रयत्न भी करेगा. इस के अतिरिक्त देखा यह भी जाता है कि उस के प्रयत्नों में यथार्थता की मात्रा कितनी है. क्योंकि किसी वस्तु की कल्पना कर लेना तो सुगम है, लेकिन महत्त्व तो उस वस्तु के लिए किए गए प्रयत्न और उत्साह का ही है. कल्पना तो की जा सकती है क्योंकि कल्पना का मूल है मन और मन किसी भी गतिशील वस्तु से भी अत्यधिक गतिशील है. और आश्चर्य तो यह है कि इतना गतिशील होते हुए भी मन प्रत्येक क्रिया का अनुभव उसी समय करता है जब घटना क्रियात्मक और सक्रिय होती है. चाहे वह घटना अल्पकालीन हो या दीर्घ पर उस का प्रतिबिंब मन के परदे पर पड़े बिना नहीं रह सकता.

अब प्रश्न यह उठता है कि हमें किसी अप्रत्याशित और दैनिक जीवन में होने वाली घटनाओं पर क्रोध क्यों आता है. किसी प्रकार की असमर्थता भी किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातबात पर क्रोध करना आप के मानसिक स्वास्थ्य के लिए ही नहीं आप के व्यक्तित्व के लिए भी हानिकारक हो सकता है!

सीमा तक स्वाभाविक हो सकती है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए उस घटना का सामना करने के सभी प्रकार के साधन जुटा पाना एक प्रकार से असंभव ही है. पर उस असमर्थता पर क्रोध का किसी भयानक भूचाल के समान समस्त शरीर को ग्रसित कर लेना यदि एक मानसिक दुर्बलता नहीं तो और क्या है?

उदाहरण के लिए एक आधुनिक नवयुवक बस में यात्रा कर रहा है. कुछ देर बाद जब बस कंडक्टर उस से "कहां जाना है" पूछ कर टिकट काट कर उसे देने लगता है तो उसे उस कथित नवयुवक के मुंह पर हवाइयां उड़ती नजर आती हैं. नवयुवक का हाथ पैंट की कभी इस पाकेट में और कभी उस पाकेट में चलता नजर आता है. पर व्यर्थ. पूछने पर पता लगता है कि साहब का पर्स ही गुम है. बस यात्री अनायास ही इस घटना से उस नवयुवक की ओर आकर्षित हो जाते हैं. यात्रियों का समूह है. कुछ मनचलों का होना भी स्वाभाविक है. कोई पूछ ही लेता है, "पर्स खो गया है या जनाब, घर से ही नहीं लाए?"

लेख

नरेंद्र अरोरा

तभी किसी अधेड़ मनुष्य की आवाज कानों से टकराती है, "आज कल तो लोगों का धंधा ही यही हो गया है."

लेडीज सीट पर बैठी कालिज की छात्राएं क्यों पीछे रहें, वे व्यंग्य कसती हैं, "शक्ल देखी है! देवानंद बनता है और पाकेट में 20 पैसे नहीं हैं."

और फिर कहीं से हंसी की दबी स्वर और कहीं खुसुरफुसुर. कहने का तात्पर्य यह है कि ये सब बातें उस व्यक्ति के सम्मुख एक ऐसी विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देती हैं जो उस व्यक्ति की विचारशक्ति को ही उस समय के लिए समाप्त नहीं कर देतीं बल्कि मानसिक विकारों को उस व्यक्ति पर नियंत्रण कर लेने का पूरा अवसर भी देती हैं. बस कंडक्टर एकदो बार "शिष्टाचार" के नाते फिर टिकट पूछता है पर उस नवयुवक को जैसे कुछ पता ही नहीं. वह उसी तरह अपनी जेबें टटोल रहा है, जब कि उसे अच्छी तरह विश्वास हो गया कि किसी भी पाकेट में पर्स या पैसे नहीं हैं.

जनसमूह का उस समय इस प्रकार का व्यंग्य कसना यद्यपि सभ्यता के एकदम विरुद्ध है फिर भी घटित व्यक्ति को चाहिए कि वह ऐसी विषम स्थिति में अपनी 'विचारशक्ति' या दूसरे शब्दों में 'विवेक' न खोए. बस कंडक्टर को वह शांतिपूर्वक इस बात का विश्वास दिला सकता है कि उस का पर्स कहीं खो गया है या घर में भूल से रह गया है : हां, इस के विपरीत उस बदहवासी और क्रोधित स्थिति में बस कंडक्टर या किसी व्यक्ति को विश्वास दिलाना असंभव तो नहीं पर अत्यंत कठिन हो जाता है, क्योंकि इस प्रकार की स्थिति में उस व्यक्ति पर क्रोध का शासन अधिक और विवेक का कम होता है. उस के मस्तिष्क में केवल अपनी भूल या लापरवाही और इस से उत्पन्न हुई परिहासजनक स्थिति का चित्र ही घूमता दृष्टिगोचर होता है और कुछ नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कुछ इसी प्रकार की घटनाओं का सामना प्रायः सभी को करना पड़ता है. कभी किसी रेस्तरां में खाना खाने के बाद बिल के पैसे ही पूरे नहीं होते, "टिप" की तो बात ही निरर्थक है. या फिर कभी किसी सिनेमा की बुकिंग खिड़की पर जभी एक लंबी क्यू में भाग्य से किसी का नंबर आता तो है पर टिकट के लिए पूरे पैसे ही नहीं निकलते आदि. ऐसी स्थिति में हमें चाहिए कि हम उस अप्रत्याशित घटना से उत्पन्न विषमता में किसी का व्यंग्य और उपहास न कर के उसे वहीं शांतिपूर्वक और युक्ति से समाप्त कर दें.

स्पष्ट है कि उस क्रोधित अवस्था में हमारा रूप बड़ा परिहासजनक हो जाता है क्योंकि जैसे ही भाव बदलता है, विचार भी बदल जाता है और विचार के साथ-साथ रक्तप्रवाह भी. जैसे ही हम क्रुद्ध हुए, क्रुद्ध मन बहुत सा रक्त तुरत ही हमारे गालों तक पहुंचा देता है. शरीर के किसी भी भाग पर दृढ़ता से विचार केंद्रित कर के और रक्तपेशियों को फैला कर, वहां रक्त पहुंचा देना सहज है. सामान्य स्थिति में रक्त शरीर के प्रत्येक अंग में बराबर जाता है. पर मन का संतुलन बिगड़ जाने से रक्तप्रवाह का संतुलन भी बिगड़ जाता है. यह केवल किताबी बात नहीं वरन प्रकृति का एक नियम है.

इस बात से यह स्पष्ट हो जाता है कि विचार के प्रभाव से रक्त का संतुलन सहज में बदल जाता है. अतः तत्संबंधी शरीर की दूसरी क्रियाएं भी प्रभावित होती हैं. हम जानते हैं कि क्रोध या चिंता का गुर्दों पर कितनी जल्दी प्रभाव पड़ता है. परिणामस्वरूप क्रोध न केवल मानसिक स्थिति ही असंतुलित करता है बल्कि शरीर को भी अस्वस्थ बनाता है. इस लिए विचारकों का कहना है कि अस्वस्थ शरीर में मन भी अस्वस्थ होता है.

कुछ आलोचकों का कहना है कि इस प्रकार की अप्रत्याशित घटनाओं में क्रोध का आना स्वाभाविक ही है, यह मानसिक दुर्बलता नहीं. लेकिन इस तथ्य को यदि हम सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो पता चलता है कि यह तर्क सर्वथा निरर्थक और निराधार है. स्वाभाविक हमेशा वही वस्तु प्रतीत होती है जिस का हम आरंभ से या दीर्घ काल से अभ्यास कर रहे होते हैं. फिर देखने में ऐसा आता है कि वही वस्तु हमारी दिनचर्या का एक अंग बन गई है, जिसे हम किसी व्यक्ति की प्रकृति या स्वभाव के नाम से पुकारते हैं.

उदाहरण के लिए एक व्यक्ति सुबह चार बजे उठता है. वह खुली हवा में जा कर व्यायाम आदि करता है. घर के कुछ काम आदि भी करता है. फिर व्यापार या नौकरी में भी काफी समय व्यतीत करता है. सायंकाल कुछ अध्ययन आदि कर के लगभग 11-12 बजे सोता है. कहने का तात्पर्य यह है कि प्रातः से रात्रि तक काम में व्यस्त होने के पश्चात भी व्यक्ति थकान या बोझ अनुभव न कर प्रसन्न दिखाई देता है. लेकिन एक दूसरा व्यक्ति है जो सूर्योदय के बाद उठता है आलस्य में ही किसी भी काम से निवृत्त

> मातापिता के बातबात पर क्रोध और लड़ाईझगड़ा करने का बच्चों के मस्तिष्क पर दूषित प्रभाव पड़ता है.

हो कर अपने धंधे पर जाता है. बाहर भी सारा समय आलस्य में ही गुजारता है. घर आते ही बीवीबच्चों पर क्रोध बरसाने लगता है और फिर जैसेतैसे खाना खा कर चादर तान लेता है. इस प्रकार प्रातः से रात्रि तक वह आलस्य और क्रोध के साम्राज्य में विचरता रहता है.

इस उदाहरण को सूक्ष्मदृष्टि से देखने से अनुभव होगा कि दोनों व्यक्ति कुछ ऐसी ही बातों का अभ्यास करते हैं जो उन का स्वभाव बन गई प्रतीत होती हैं. सीधा देखने में तो ये बातें स्वाभाविक ही लगती हैं पर वास्तव में महत्ता तो है उस 'समय विशेष' की और 'अभ्यास' की जो उस व्यक्ति ने किया. स्वभाव तो बाद की वस्तु है. पहले होती है इच्छा. इच्छा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

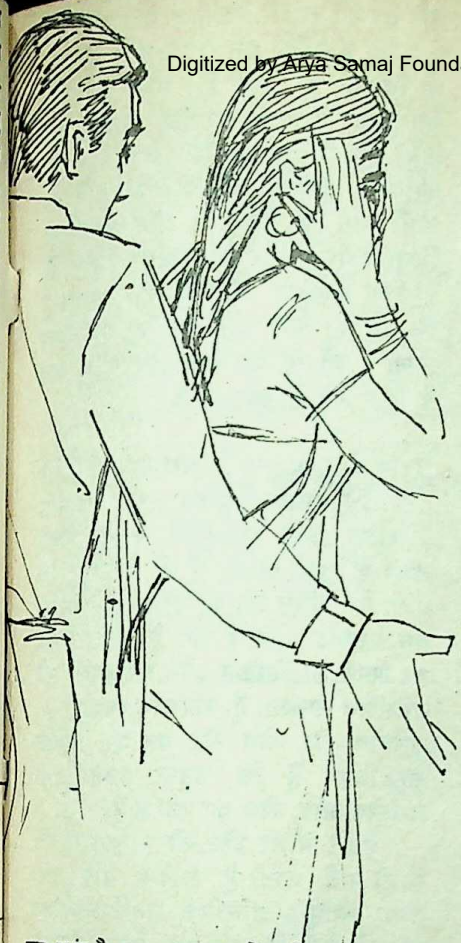

का मूल है मन. इच्छा से फिर उत्पन्न होता है प्रयत्न. प्रयत्न से होता है साधन. और साधन से होता है अभ्यास. अभ्यास पराकाष्ठा है. अभ्यास के पश्चात कुछ होना बाकी नहीं रह जाता. अभ्यास ही अंत में स्वभाव बन जाता है. इस बात से यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी विशेष प्रकार के गुण या अवगुण का अभ्यास करने से स्वभाव भी उसी प्रकार का बन जाता है.

कुछ आलोचकों का कहना है कि क्रोध एक मानसिक दुर्बलता न हो कर संस्कारों का एक चेतन रूप है. यह तर्क किसी सीमा विशेष तक ही ठीक हो सकता है, पूर्णतया नहीं.

मनुष्य के मन के तीन भाग होते हैं: चेतन, अर्धचेतन और अवचेतन. चेतना में से गुजर कर ही कोई वस्तु सशक्त बनती है. यों तो क्रोध भी चेतना का ही एक रूप है, पर यह रूप अस्थायी है. अब यदि यह विचार ही मन में न रहे कि क्रोध हमारे गुणों से पृथक है और हमें इस बात का भी दृढ़ता से विश्वास हो जाए कि उस ने वास्तविक स्थान से कट कर ही यह रूप धारणा किया है तो फिर क्रोध करने का कोई कारण ही नहीं रह जाता.

और भी सूक्ष्मता से देखने से पता चलता है कि किसी भी एक विकार या अवगुण के क्रियात्मक होते ही दूसरे अन्य विकार या अवगुण भी उस का अनुकरण करते हैं. यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है.

स्वेट मार्डन का कथन है कि जितना हम भय और शंका प्रकट करते हैं उतना ही हम अपने मन को नकारात्मक बनाते हैं और भय को आक्रमण का अवसर देते हैं. इस से हमारी शारीरिक और मानसिक

शक्तियों का ह्रास होता है. हरेक विचार हरेक भाव तरंग है. जो दूसरे मस्तिष्कों की वैसी ही तरंगों से अपना संबंध स्थापित करती है. यदि हम एक बार निराश या क्रोधित होना शुरू करते हैं तो बराबर निराश या क्रोधित होते चले जाएंगे, क्योंकि हमारे विचार दूसरे निराश और क्रोधित मस्तिष्कों की तरंगों से संबंध स्थापित कर के हमारी निराशा और क्रोध को बढ़ाते रहेंगे. लेकिन यदि हम स्वास्थ्य और प्रसन्नता की बात सोचते हैं तो वह और भी स्थानों से अधिक मात्रा में हमारे पास आएगी. इसलिए कई मनोवैज्ञानिकों और विचारकों ने क्रोध, भय, शंका आदि अवगुणों को नकारात्मक ही बताया है. स्वेट मार्डन का यह कथन कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी काम के अयोग्य बना लेते हैं, इस बात की पुष्टि करता है, क्योंकि ये नकारात्मक विचार ही असफलता के जन्मदाता हैं. असफलता का भय मनुष्य के भीतर से वह तत्व बाहर खींच लेता है जिस के बिना मनुष्य व्यर्थ है.

इस के विपरीत जब हम कोई सकारात्मक विचार सोचते हैं, जैसे "मैं अवश्य करूंगा," तो हम यह भी कहते हैं, "मैं कर सकता हूं." इन्हीं सकारात्मक विचारों से मनोबल या आत्मविश्वास दृढ़ होता है. आत्मविश्वास ही वह विलक्षण चुंबक है जो सफलता को अपनी ओर खींचता है. प्रत्येक सफलता के मूल में किसी सकारात्मक विचार का होना निश्चित है. यह एक कटु सत्य है.

कारण और प्रभाव आपस में संबंधित हैं, ऐसा प्रकृति का नियम है. अतः किसी भी कारण से प्रभाव और प्रभाव का कारण अनिवार्य है.

इसी नियम को आधार मान कर हम देखते हैं कि क्रोध के इस भयंकर और व्यापक रूप का प्रभाव केवल व्यक्ति विशेष के लिए ही नहीं बल्कि किसी देश या राष्ट्र के लिए भी विनाशकारी सिद्ध हो सकता है. अतः हम जब भी किसी स्थिति विशेष में होते हैं तो दूसरे मस्तिष्कों की भाव तरंगों का भी हमारे उस स्थिति विशेष पर सक्रिय प्रभाव पड़ता है. इस प्रकार एक क्रोधित व्यक्ति जब इस प्रकार की भाव तरंगों से विशेष प्रभावित होता है तो उस क्रोधित अवस्था का दूसरों पर भी प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता. यह भिन्न बात है कि किसी पर उस का प्रभाव कम और किसी पर अधिक पड़ता है.

दूषित या कलुषित वातावरण का कारण इतना धन नहीं होता, जितना अपनी इच्छाओं के प्रति असंतोष होता है. असंतोष से भी सभी प्रकार के विकारों का उदय होता है. पिता के विचार पुत्र से. इसलिए नहीं मिलते क्योंकि वह परिवार की पुरानी मर्यादाओं का उल्लंघन कर रहा है और धनोपार्जन के धंधे से भी विमुख हो रहा है. कभी उस को अपने बेटे की संगति पर शक होता है तो कभी उस के चरित्र पर. कभी उस के कर्तव्य न निबाहने पर क्रोध आता है तो कभी उस के विपरीत और आधुनिक विचारों पर. और पुत्र सदैव पिता से इसलिए असंतुष्ट और क्रोधित रहता है कि उस का पिता बीते युग का एक ऐसा प्राणी है जो नए युग के वातावरण में उस के सांस लेने में रुकावट है.

यदि बेटा व्यापार के साथसाथ न केवल ऊंचे समाज में प्रवेश करना चाहता है बल्कि कभी राजनीति में भी प्रवेश करने के स्वप्न देखता है तो परिवार का बंधन उस समय उस को संसार की कठिनतम रुकावट दिखाई देता है. उस समय वह अपने को शिक्षित और घर वालों को अशिक्षित समझता है. परिणाम स्पष्ट हैं— असंतोष और क्रोध और यह एक प्रकृति का नियम है कि अतृप्त इच्छाएं ही असंतोष और क्रोध का कारण हैं.

देखने में तो दोष की अधिकता बेटे में ही पाई जाती है लेकिन यदि इसी तथ्य को हम आधुनिक मनोविज्ञान की दृष्टि से देखें तो हमें यह स्पष्ट अनुभव होगा कि दोष बेटे का नहीं बल्कि उस के मातापिता का ही अधिक है, क्योंकि जन्मकाल से ही इस प्रकार के निरंकुश विचारों का प्रभाव बेटे पर पड़ता आ रहा है.

जन्म से न कोई धनवान होता है, न निर्धन और न योग्य या अयोग्य. यह तो उस समय परिवार का वातावरण, मातापिता का स्वभाव और संगति का प्रभाव ही है जो मनुष्य को ऐसा बनाता है. संगति का प्रभाव भी बाद की बात है. पहले तो मातापिता का स्वभाव और घर का वातावरण ही महत्त्वपूर्ण वस्तुएं हैं. क्योंकि मातापिता के गुणों का बच्चों में जाना स्वाभाविक है, ऐसा प्रकृति का नियम है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन इस नियम का उल्लंघन केवल उसी स्थिति में हो सकता है जब बच्चे पर उस के मातापिता के गुणस्वभाव के विपरीत किसी संगति का प्रभाव पड़ता है. फिर भी इस नियम का उल्लंघन पूर्ण रूप से नहीं होता, क्योंकि मातापिता के कुछ गुण या अवगुण बच्चे के मन पर दृढ़ता से छाप लगा ही देते हैं.

क्रोध का प्रभाव बच्चों पर प्रायः विपरीत ही पड़ता है. घर के दूषित वातावरण से उन्हें इस बात का अनुभव हो जाता है कि उन के मातापिता बातबात पर क्रोध और लड़ाईझगड़ा आदि करते हैं. इस बात का उन के अपरिपक्व मस्तिष्क पर जितना मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है उतना किसी और वस्तु का नहीं. निश्चित है कि उन की जरा सी गलती पर उन को भी अपने मातापिता के क्रोध का ग्रास बनना पड़ता है.

परिणामस्वरूप बच्चा उसी अपरिपक्व अवस्था में एक ऐसी संगति ढूंढ़ने या बनाने का प्रयास करता है जिस का उस के अपरिपक्व मस्तिष्क पर स्वतंत्र और पूर्ण रूप से प्रभाव पड़ता है. मातापिता के क्रोध से उस के हृदय में भय उत्पन्न होता है. परिणामस्वरूप वह शीघ्र ही झूठ बोलने लगता है और फिर धीरेधीरे मस्तिष्क उन सभी विकारों को दृढ़ता से ग्रहण करता जाता है जिन्हें हम किसी भी परिपक्व मस्तिष्क में देखते हैं.

और आश्चर्य की बात तो यह है कि इस प्रकार परिवार का बच्चा इस प्रकार के विचार स्वयं ही ग्रहण नहीं करता बल्कि वे सब अपरिपक्व मस्तिष्क जो उस के सपर्क में है, सभी एकदूसरे पर क्रियात्मक और सक्रिय प्रभाव डालते हैं. एक बच्चा झूठ बोलना सीखता है तो दूसरा छिप कर चोरी करना. कोई बातबात में गाली

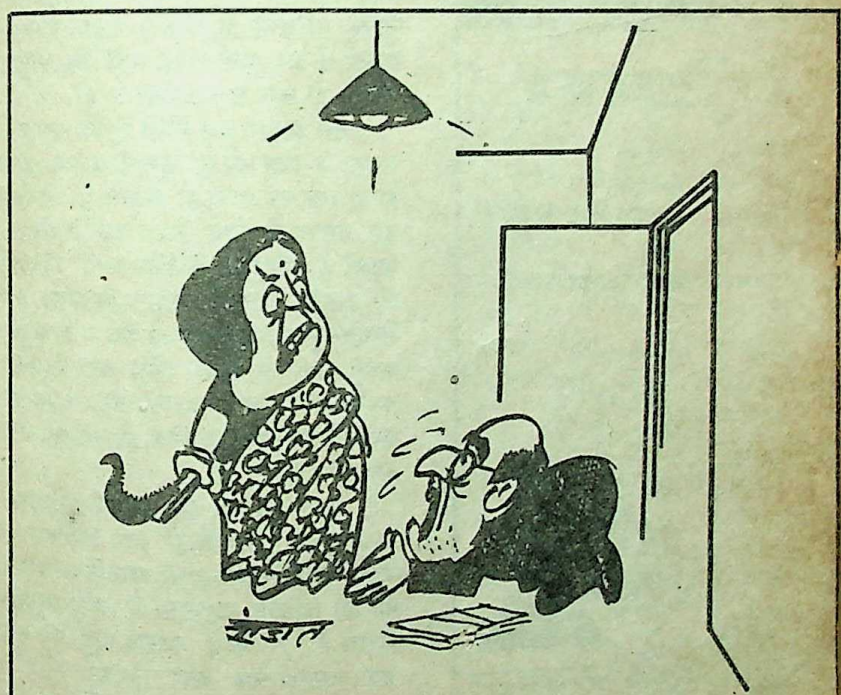

"आज माफ कर दो. मैं कसम खा कर कहता हूं: कल से ठीक समय पर दफ्तर से घर लौटूंगा."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकालता है तो कोई [illegible] झगड़ा [illegible] है.

लेखक ऐसे कई परिवारों को जानता है जो इस प्रकार के विकारों से पूर्णतया ग्रसित हैं. उन में से एक ऐसे परिवार विशेष से भी लेखक परिचित है जिस में एक बच्चे की उमर है सात वर्ष, लेकिन वह मुश्किल से चार या साढ़े चार वर्ष का दिखाई देता है. अपने मातापिता के सामने भी झूठ बोलने में उसे संकोच नहीं होता. पढ़ाई से वह उतना ही घबराता है जितना कबूतर बिल्ली से. कहने का तात्पर्य यह है कि इतनी छोटी उमर में इस प्रकार के विकार उस के मस्तिष्क में शीघ्रता से घर कर रहे हैं.

आरंभ में इन सब विकारों का अभ्यास स्थान होता है परिवार. धीरेधीरे सारा महल्ला इन विकारों से ग्रसित हो जाता है. तत्पश्चात बारी आती है शहर की और अंत में है राष्ट्र. यही नहीं यदि किसी मस्तिष्क के विकार महान प्रभावशाली हैं तो कोई संदेह नहीं कि समूचा संसार ही उस से प्रभावित न हो.

इस प्रकार हम देखते हैं कि इन सब प्रकार के विकारों का मूल है अज्ञान. ज्ञान के अभाव का नाम ही अज्ञान है. लेकिन इस अज्ञान में क्रोध तत्त्व सब से प्रभावशाली है. क्रोध ही से फिर अन्य विकारों की उत्पत्ति होती है. महान विचारक संत तिरुवल्लुवर का कथन है कि यदि मनुष्य अपने मन में उठते क्रोध पर नियंत्रण करना और उस से बचना सीख जाए तो सभी दैवीय गुण स्वयंमेव ही उस की ओर आकर्षित होंगे.

अतः जब हमें इस बात का विश्वास व अनुभव दृढ़ता से हो जाए कि क्रोध न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक संसार को भी आघात पहुंचाता है व असंतुलित करता है, तो कोई कारण नहीं कि हम इस नकारात्मक और भयंकर रोग से छुटकारा पाने के लिए हृदय से प्रयत्न न करें. यदि हम ऐसा नहीं कर सकते तो वह केवल हमारी मानसिक दुर्बलता ही होगी. ●

ऐटेक्स

ऐटेक्स काजल
ऐटेक्स कुमकुम पेस्ट
ऐटेक्स कुमकुम पेस्ट 5 IN 1
ऐटेक्स बिंदी
ऐटेक्स बिंदी (SPECIAL)

ARAVIND LABORATORIES
P. B. 1415., MADRAS-17

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशभक्ति

एकांकी • मधुकर खेर

स्थान : भारत का एक प्रमुख नगर.

समय : सुबह नौ बजे.

(सेठ भागमल अपनी दुकान पर बैठे हैं. सेठजी कपड़े के बड़े भारी व्यापारी हैं. उन की दुकान का सामने का कमरा बहुत लंबा है. बराबर वाले कमरे में सेठजी, मुनीम और कुछ रोकड़िए काम करते हैं. लंबे कमरे में फरश पर कालीन और गद्दे बिछे हुए हैं. दीवारों से लगे तकिए रखे हैं. महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, राजेंद्रप्रसाद तथा टंडनजी के चित्र टंगे हैं. एक तरफ किसी अखबार से काट कर शीशे के चौखटे में जड़ा हुआ उस राज्य के मंत्री मंडल का चित्र टंगा है. सेठजी की गद्दी पर टेलीफोन लगा हुआ है. दीवारों पर गेरू से 'शुभ लाभ' तथा 'श्री लक्ष्मीजी की जय' लिखा हुआ है. रामायण की अनेक चौपाइयां तथा 'अहिंसा परमो धर्मः' जैसी अनेक पंक्तियां दीवारों पर दृष्टिगोचर होती हैं. सेठजी के पास बैठे मुनीम और दूसरी तरफ बैठे रोकड़िए काम कर रहे हैं. सेठजी सुबह का अखबार पढ़ रहे हैं.)

भागमल : मुनीमजी, अखबार वगैरा भी पढ़ते हो या सिर्फ रोकड़ ही लिखते रहते हो?

मुनीम : म्हारी रोकड़ किस अखबार से कम है? अखबार में कोई खास खबर है क्या?

भागमल : खास खबर क्या! अरे, हिंदुस्तान में अकाल पड़ने के लक्षण पूरे देश को दिखाई दे रहे हैं और तुम हो कि खास खबर पूछते हो! फसल भी कम हुई है और पानी भी बिलकुल नहीं बरसा है. इस बार तो त्राहित्राहि मच कर ही रहेगी.

मुनीम : सो तो है ही! कांग्रेस राज में इस के सिवा और किस बात की आशा की जा सकती है! म्हारी तो साफ राय है कि कांग्रेस राज से अंगरेजी राज लाख गुना अच्छा था.

(टेलीफोन की घंटी बजती है.)

भागमल (टेलीफोन पर) : हलो! जी, हां, मैं भागमल ही हूं...अजी नहीं, मैं किस लायक हूं...अच्छा, तो यह सभापतिजी ने कहा है! कृपा है उन की... जी, हां, हां, मैं 12 बजे तक दुकान पर ही रहूंगा, आप अवश्य पधारिए. (भागमल टेलीफोन रख देता है. उस के चेहरे से अत्यधिक प्रसन्नता टपकती है.) मुनीमजी, नगर कांग्रेस कमेटी के प्रेसीडेंट का फोन आया है. मुझे कालाबाजार

देशभक्ति की आप कोई भी परिभाषा बताएं लेकिन सेठ भागमल तो अपने को देशभक्त कहता ही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विरोधी समिति का सभापति बनने को कह रहे हैं. मैं ने उन्हें दुकान पर बुलाया है. किसी को सामने भेज कर अच्छी चाय तैयार रखने को कहो.

मुनीम (रोकड़िए से) : श्यामलाल, जरा दरबान को चाय के लिए भेज दो. हां, सेठजी, कालाबाजार रोकने की बड़ी जरूरत है.

भागमल : यदि कांग्रेस चाहे तो एक दिन में कालाबाजार रुक सकता है. सच तो यह है कि व्यापारी की चाल व्यापारी ही जानता है. मिनिस्टरों और लीडरों की अपील से कालाबाजार नहीं रुक सकता. मुनीमजी, यह हिंदुस्तान है—यहां सीधी उंगली से घी नहीं निकलता. यदि सरकार मुझे अधिकार दे, तो मैं एक दिन में कालाबाजार बंद करवा सकता हूं.

मुनीम : म्हारी भी यही राय है. सरकार कहती है कि बाजार में गेहूं नहीं हैं. यदि कांग्रेस सरकार मुझे एक कोड़ा देदे तो खड़ेखड़े पूरा शहर गेहूं से भर सकता हूं.

(तीन लड़कों का प्रवेश. उक्त तीनों हाई स्कूल के छात्र हैं. ये स्कूल की ओर से असम की सहायता कोष के लिए चंदा जमा करने निकले हैं. एक लड़का सेठजी की ओर एक सूची बढ़ाता है.)

भागमल (बिना सूची लिए) : आप को जो कहना हो, जबानी ही कह दीजिए.

पहला लड़का : हम लोग अपने स्कूल की तरफ से असम सहायता कोष के लिए चंदा करने निकले हैं. इसी सिलसिले में आप की सेवा में भी आए हैं.

मुनीम : असम सहायता कोष के नाम पर न जाने कितने लोग चंदा जमा करने निकले हैं. भले और बुरे की पहचान करना भी कठिन हो गया है.

भागमल : अरे, मुनीमजी, यदि इन चंदों का यही हाल रहा, तो आगे चल कर हमें तुम्हें भी अपने लिए चंदा मांगना पड़ेगा. चंदा देने वाले चंदा देतेदेते थक गए हैं, लेकिन चंदा मांगने वालों का नंबर दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है. खैर, ये लड़के तो किसी स्कूल के हैं. तुम लोग किस स्कूल में पढ़ते हो?

दूसरा लड़का : हम गवर्नमेंट हाई स्कूल में पढ़ते हैं और एन. सी. सी. की ओर से चंदा जमा करने निकले हैं. हम लोग अपने लिए यह चंदा नहीं मांग रहे हैं, बल्कि असम के भूकंप से पीड़ित व्यक्तियों के लिए चंदा चाहते हैं. हमारे चंदे की एकएक पाई असम के ही लिए लगगी.

> भागमल : आप लोगों ने व्यर्थ ही कष्ट किया. आज्ञा मिलते ही मैं आप की सेवा में आ जाता.

मुनीम : आजकल के मास्टर भी कितने कामचोर है, जो छोटेछोटे बच्चों को दरदर की ठोकरें खाने भेज कर खुद आराम से घर में पड़े रहते हैं. कैसी उलटी बात है!

भागमल : मुनीमजी, पूरा हिंदुस्तान उलटा जा रहा है, तो बेचारे मास्टरों की ही क्या बात! खैर, बच्चों को निराश नहीं करना चाहिए. एक रुपया दे दो.

(तीनों विद्यार्थी विस्मित हो जाते हैं.)

भागमल : और देखो, सूची में मेरा नाम लिखने की कोई जरूरत नहीं है. मैं दान दे कर वाहवाही नहीं लूटना चाहता. तुम लोग बच्चे हो, इसलिए मैं तुम्हारा दिल नहीं दुखाना चाहता. वैसे मैं चंदा देने के पक्ष में नहीं हूं. क्यों, मुनीमजी, यदि दैवी कोप से भूकंप आया है तो हम-तुम क्या कर सकते हैं!

दूसरा लड़का : अभी तक हम जहां-जहां गए, हमें पांच रुपए से कम नहीं मिले हैं. आप जैसे लखपति से एक रुपया ले कर हम अपना सिलसिला नहीं बिगाड़ना चाहते. गरीब से गरीब आदमी ने भी इस कार्य में दिल खोल कर दिया है.

तीसरा लड़का : यदि आप जैसा व्यक्ति एक रुपया देगा, तो दूसरों से तो हमें आशा ही छोड़ देनी चाहिए.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

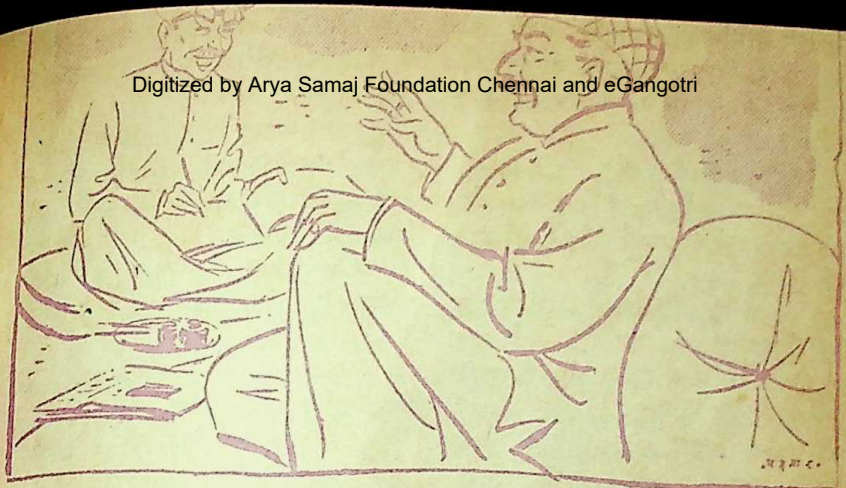

भागमल : मैं जितना आप को दे रहा हूं, उतना दूसरे किसी को मैं ने कभी न दिया होगा. आप लोग विद्यार्थी हैं, इसी लिए मैं एक रुपया भी दे रहा हूं.

मुनीम : बाबू साहब, कहने में क्या लगता है? जब खुद कमाओगे, तब पैसे की कीमत पता लगेगी. जो एक रुपया आप को छोटा सा लगता है, वह हमें घंटों सिर खपाने के बाद मिलता है. कांग्रेस सरकार के टैक्सों ने तो सब को लूट लिया है. कोई चंदा दे भी तो कहां से!

तीसरा लड़का : हम आप का एक रुपया नहीं ले सकते. कलक्टर साहब की ही आज्ञा से हम लोग चंदा लेने निकले थे. सरकार के बारे में आप ने जो कहा है तथा और भी सब बातें हम उन्हें बता देंगे. आप उन्हीं को अपना रुपया भेज दीजिएगा.

भागमल (घबराहट से) : तो आप लोग कलक्टर साहब के कहने पर चंदा लेने निकले हैं?

मुनीम (नम्रता से) : आप लोग खड़े क्यों हो गए? आराम से बैठिए.

पहला लड़का : हम लोगों को और भी कई जगह जाना है. देर हो रही है.

भागमल : आप लोगों ने पहले क्यों नहीं बताया? क्षमा कीजिएगा, इधरउधर के कई लुच्चेलफंगे आते रहते हैं, इसी लिए वैसी बातें की थीं. राष्ट्रीय सरकार के प्रति मेरी पूरी श्रद्धा है और उस के हर कार्य में सहायता करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं.

मुनीम : यदि यह आप पहले ही बता देते तो इतनी देर न ठहरना पड़ता.

भागमल : मुनीमजी, इन्हें 11 रुपए दे दो. सचमुच असम में लोगों को बड़े कष्ट भुगतने पड़ रहे हैं. असम सहायता कोष में चंदा देना प्रत्येक देश-भक्त का कर्तव्य है. मुनीमजी, सूची में मेरे नाम के सामने 11 रुपए लिख दो.

(मुनीमजी 11 रुपए दे कर सूची में लिख देता है. तीनों छात्र अभिवादन कर के मुसकराते हुए चले जाते हैं.)

भागमल : कांग्रेस राज में ये अफसर भी खुल कर खेलने लगे हैं. जिस चीज पर देखो चंदा लगा देते हैं. न जाने इन चंदों में कितना इन लोगों के घर में जाता होगा.

मुनीम : देखते जाइए. अब तो आदमी के पैदा होने पर और मरने पर भी टैक्स लगेगा. अभी हुआ ही क्या है!

(नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बाबू रामलाल कांग्रेस कमेटी के मंत्री हरिशंकर के साथ प्रवेश करते हैं. सेठजी उठ कर दोनों को नमस्ते कर गद्दी पर बैठने का संकेत करते हैं.)

भागमल : चलिए, इसी बहाने आप के दर्शन तो हुए. आप लोग तो कभी हम पर कृपा ही नहीं करते. मुनीमजी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जल्दी से चाय मंगवाइए.

हरिशंकर : आप वगैरह रहने दीजिए, हम लोग जरा जल्दी में हैं. यहां कांग्रेस की ओर से कालाबाजार और भ्रष्टाचार का विरोध करने को एक समिति बनाई जा रही है. जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष महोदय ने आप का नाम उक्त समिति के सभापति पद के लिए सुझाया है. हम लोगों की भी हार्दिक इच्छा है कि आप यह भार संभालें.

भागमल : आप लोगों की इच्छा मेरे लिए आदेश ही है. कांग्रेस की हर आज्ञा मानना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं. किंतु इस कार्य में एक व्यापारी के सभापति होने से लोग तरहतरह की बातें कहेंगे और विरोधियों को भी अवसर मिल जाएगा. इन बातों पर भी यदि आप लोग विचार कर लें तो अच्छा होगा.

रामलाल : सब बातों पर भली भांति विचार करने के बाद ही हम लोगों ने आप का नाम स्वीकार किया है. इस के सिवा जिला कांग्रेस कमेटी के सभापति पंडित रमाशंकरजी ने भी आप का ही नाम सुझाया है. आप को उन की बात तो माननी ही पड़ेगी.

हरिशंकर : पंडितजी स्वयं जिलाधीश के साथ मुख्य मंत्री के जन्म दिवस पर दी जाने वाली थैली के लिए चंदा जमा करने निकले हैं. अतः उन के आने पर स्वयं उन्हीं से बातें कर लीजिएगा. यह ज्यादा ठीक होगा.

भागमल : वैसे तो आप लोगों की आज्ञा ही पर्याप्त है. पंडितजी की तो मुझ पर विशेष कृपा है. मैं आप लोगों की आज्ञा के बाहर थोड़े ही हूं.

(होटल का नौकर ट्रे में दो कप चाय ला कर रामलाल तथा हरिशंकर को देता है. दोनों चाय पीने लगते हैं.)

रामलाल : सेठजी, आप अपने यहां के सब नौकरों को कांग्रेस का सदस्य तो बना दीजिए. और आप स्वयं इस बार मंडलेश्वरी के लिए खड़े होइएगा.

भागमल : मैं स्वयं तो बरसों से कांग्रेस का सदस्य हूं. मैं ने कांग्रेस की सदैव सेवा की है. सन पैंतालीस में सरकार ने बहुत दबाव डाला कि मैं अपनी दुकान पर यूनियन जैक लगाऊं, लेकिन मैं ने साफ मना कर दिया. आप को याद होगा प्रधान मंत्री जब 15 अगस्त को अपने नगर में आए थे, तब मेरी दुकान पर उन्होंने ही तिरंगा झंडा लगाया था.

हरिशंकर : ये बातें हम लोगों के लिए नई नहीं हैं. ये तो उन्हें बताइए जो आप को न जानते हों.

रामलाल : आप से यह इसलिए कहा कि आजकल नगर में सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट, महासभाई वगैरा जोर पकड़ रहे हैं. आप के यहां के सब नौकर कांग्रेस के सदस्य बन जाएं तो ठीक रहेगा.

भागमल : मैं तो इन लोगों को अपने पास फटकने तक नहीं देता. मेरे नौकर भी मेरी ही भांति हैं. मैं ने अंगरेजों से साफ कह दिया था कि मेरी दुकान पर तिरंगा ही लहराएगा . इतना ही नहीं, मैं ने उन के जाते समय गवर्नर साहब से कह दिया था कि अपनी दी हुई रायसाहबी भी लेते जाओ. कांग्रेस के राज में हमें न तो तुम्हारी जरूरत है, न तुम्हारी उपाधियों की. आप लोगों की चाय तो ठंडी हो रही है.

> चंदू : जो भी हो, भाई, मुझे लीडरों से बहुत डर लगता है. न मालूम कब कैसा बखेड़ा खड़ा कर दें.

(रामलाल तथा हरिशंकर चाय पी लेते हैं और होटल का नौकर ट्रे ले जाता है.)

भागमल : आप रसीद बुक भेज दीजिएगा. मैं पहली तारीख को सब नौकरों की तनख्वाह से चंदे के चारचार आने काट लूंगा.

हरिशंकर : चंदा तो आजकल लगता ही नहीं. आप नौकरों की एक सूची भेज दीजिएगा. हम प्रमाणपत्र भेज देंगे. आप के लिए भी कर्मठ सदस्यता का कोरा फार्म भेज देंगे. भर कर भेज दीजिएगा.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

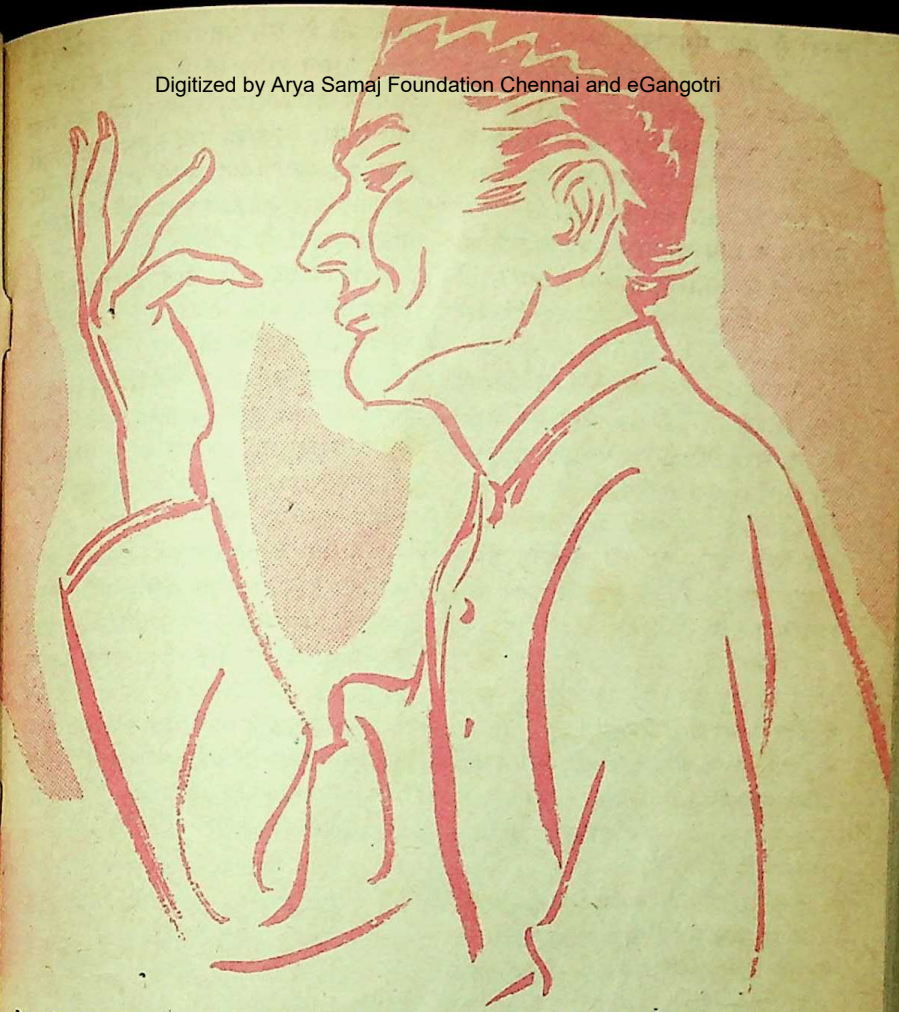

रामलाल : अच्छा तो सेठजी, हम लोग अब चलेंगे.

भागमल : अजी, बैठिए भी. जल्दी क्या है. बड़े दिनों बाद तो आप लोगों के दर्शन होते हैं.

हरिशंकर : अब आज तो छुट्टी दीजिए. अभी कई जगह जाना है.

(रामलाल तथा हरिशंकर अभिवादन कर के चले जाते हैं. भागमल मुनीम की ओर देख कर हंसता है. मुनीम भी मुसकरा पड़ता है.)

भागमल : मुनीमजी, रोकड़ पर कलम ही घिसते रहे या हमारी बातें भी कुछ सुनी? पंडित रमाशंकर ने मेरा नाम सुझाया है. पंडितजी अपने मुख्य मंत्री के दाहिने हाथ हैं. पंडितजी की मुझ पर बड़ी कृपा है.

मुनीम : सो तो ठीक है, पर मंडलेश्वरी का चुनाव लड़ने में विरोधी वार फंड की बात उठाए बिना तो मानेंगे नहीं.

भागमल (तेज स्वर में) : इस से क्या होता है ? रामलाल और हरिशंकर भी तो सन बयालीस में माफी मांग कर छूटे थे. इन पंडितजी ने भी तो लड़ाई में लोहा चोरी से सप्लाई किया था.

मुनीम : सो तो सवा सोलह आने ठीक है :

भागमल : सब ठीक है, मुनीमजी. हिंदुस्तान में राजनीति के बिना काम नहीं चलता. राजनीति के कुछ दांवपेच सीखो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तब सब बातें समझ में आएंगी.

(दुकान के सामने कार आ कर खड़ी होती है. जिलाधीश तथा पंडित रमाशंकर को उतरते देख कर सेठ भागमल स्वयं उन के स्वागत के लिए दौड़ते हैं. मुनीम तथा सब रोकड़िए उठ खड़े होते हैं. सेठजी का जिलाधीश तथा पंडित रमाशंकर के साथ प्रवेश.)

भागमल : आप लोगों ने व्यर्थ कष्ट किया. आज्ञा मिलते ही मैं स्वयं आप की सेवा में आ जाता. पंडितजी, आप के लिए दूध मंगा लेता हूं और साहब के लिए चाय.

रमाशंकर : यह सब रहने दीजिए. हम आप से मुख्य मंत्री के जन्म दिवस पर दी जाने वाली थैली के लिए चंदा लेने आए हैं.

भागमल : मैं तो स्वयं वह ले कर आने वाला था. अभी एन. सी. सी. के बच्चे आए थे. मैं ने खड़ेखड़े दे दिया. मैं आप के हुक्म के बाहर थोड़े ही हूं. आप जो कहें दे दूंगा.

रमाशंकर : हमें एक लाख रुपए जमा करने हैं. यही फिर चुनाव के काम में आएंगे. क्यों, त्रिपाठीजी, सेठजी से दो हजार काफी होंगे ?

जिलाधीश : इस से कम तो हम लोग सेठजी से ले ही नहीं सकते.

भागमल : मैं तो स्वयं चेक भेजने वाला था. हां, पंडितजी, रामलालजी भ्रष्टाचार विरोधी समिति के लिए आए थे.

रमाशंकर : आप उस के सभापति हो जाइए. विरोधी बहुत गुलगपाड़ा मचाते हैं. इसलिए वह आप को बना रहे हैं. भरोसे का आदमी सभापति होना चाहिए.

भागमल (चेक लिखते हुए) : उन्होंने कर्मठ सदस्यता का फार्म भेजने को कहा है और मंडलेश्वरी का चुनाव लड़ने को भी. सो आप की जैसी आज्ञा हो.

रमाशंकर : वह सब हो जाएगा. आप चिंता न करें.

भागमल (चेक देते हुए) : पंडितजी, यदि धोतियों का नया स्टाक मुझे मिल जाता, तो बड़ी कृपा होती.

जिलाधीश : वह भी मिल जाएगा. अब हम लोग चलेंगे. अभी एक पार्टी में जाना है.

(भागमल स्वयं पंडित रमाशंकर और जिलाधीश को कार तक पहुंचाने जाता है. दुकान में वापस आ कर भागमल विस्मय में डूबे मुनीम की ओर देख जोर से हंस पड़ता है.)

मुनीम : पूरे दो हजार ले गए पंडितजी. इन लोगों से भगवान बचाए.

भागमल : तुम निरे घोंघे हो, मुनीमजी. पंडितजी को दो हजार रुपए दिए तो क्या—हजारों का अपना काम बन जाएगा. अब देखना धोतियों का नया स्टाक मुझे ही मिलेगा. अब तो पौ बारह हैं.

मुनीम : म्हारी राय में यह सब ठीक ही है.

भागमल : मुनीमजी, मुख्य मंत्री की थैली में रुपए देने के बाद अब किसी सरकारी अफसर की भी हिम्मत हमें छेड़ने की नहीं होगी. मुनीमजी, रोकड़ बही लिखने से ही काम नहीं चलेगा. कुछ राजनीति भी सीखो.

(चंदू नामक एक दलाल का प्रवेश. यह व्यक्ति चेहरे से ही बहुत चलतापुरजा दिखाई देता है. इसे दुकान में आते देख सेठ भागमल तथा मुनीम—दोनों बहुत प्रसन्नता दिखाते हैं.)

भागमल : आओ, भाई चंदू. बहुत दिनों बाद दिखाई दिए.

चंदू : सेठ, तुम अब बड़े आदमी हो गए हो. तुम्हारे पास आते डर लगता है.

फैशन

दिनेश ने एक पेंट बनवाई, जिस की एक टांग टाइट तथा एक टांग ढीली थी. उस के मित्र सुरेश ने उस का कारण पूछा तो दिनेश ने बताया कि "कभी टाइट का तो कभी ढीले का फैशन होता है, इसी कारण मैं ने दोनों एक साथ ही बनवा ली हैं."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तुम कालाबाजार समिति के प्रेसीडेंट जो हो गए हो.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनीम : अरे वाह, चंदू ! सेठजी को पकड़वाओगे? वह कालाबाजार समिति नहीं, कालाबाजार विरोधी समिति है. सेठजी उसी के प्रेसीडेंट हैं.

चंदू : जो भी हो. भाई, मुझे लीडरों से बहुत डर लगता है. न जाने कब कैसा बखेड़ा खड़ा कर दें.

भागमल : मैं तो तेरे ही फायदे के लिए इस बखेड़े में पड़ा हूं और तू है कि बहकीबहकी बातें कर रहा है.

चंदू : सेठ, तुम किस के फायदे के लिए प्रेसीडेंट बने हो, यह मैं भी समझता हूं. मैं ने कोई कच्ची गोलियां थोड़े ही खेली हैं. खैर, हटाओ इन बातों को, मुझे तीन थान हरक चाहिए. किसी भी तरह हरक दिलाओ.

मुनीम : म्हारी राय में तो अब हरक दुकान में एक अंगुल भी बाकी नहीं है.

चंदू : मुनीमजी, तुम मेरे और सेठजी के बीच में मत आओ. यदि हरक नहीं मिलेगा, तो मैं यहीं अनशन कर दूंगा यदि सेठजी लीडर बन सकते हैं, तो मैं भी अनशन कर सकता हूं.

भागमल : तेरे लिए इंतजाम तो करना ही पड़ेगा. पर देख, भात खातेखाते पेट फूल गया है. दो बोरे गेहूं कहीं से दिला.

चंदू : गेहूं की तो कुछ पूछो ही नहीं. अभी उस दिन मिनिस्टर साहब को एक बोरा गेहूं भिजवाया, तब उन को रोटी मिली. सब से मजे की बात तो यह है कि कलक्टर साहब तक को मुझ से गेहूं लेना पड़ा. गेहूं तो बाजार में है ही नहीं.

भागमल : मैं यह सब नहीं जानता. तू शाम को दो बोरे गेहूं ले कर घर पर आना, वहीं तुझे तेरी चीज भी मिल जाएगी. याद रख, खाली हाथ लौटा तो तेरी भाभी तेरी वह गत बनाएगी कि तू भी याद रखेगा. तेरे लिए यह खबर उसी ने भेजी है.

चंदू : हाई कमांड का हुक्म तो मानना ही पड़ेगा. सेठ, भात अलग देना है. हरक निकाल क्यों नहीं देते? इस बार क्या मेरा फट्टा पलटा कर ही दम लोगे? तुम्हारे पीछे कुछ हमें भी मिल जाएगा.

भागमल : शाम को घर पर ही सब बातें होंगी. यहां सब बातें नहीं की जा सकतीं. और देख, जो व्यापारी अपने खिलाफ हों उन की एक सूची दे देना. एकएक से समझूंगा यदि तलाशी न लिवा दी तो कहना.

('देशबंधु' नामक दैनिक पत्र के प्रतिनिधि का प्रवेश.)

भागमल : आइए, संपादकजी, बहुत दिनों बाद आप के दर्शन हुए हैं. कहिए, कैसे कष्ट किया?

चंदू : अच्छा, सेठ, मैं चलता हूं. शाम को मिलूंगा.

भागमल : मेरा काम मत भूलना. और देख, सामने की दुकान में संपादकजी के लिए चाय भेजने को कहते जाना.

(चंदू का प्रस्थान.)

प्रतिनिधि : हमें अभीअभी यह समाचार ज्ञात हुआ है कि आप भ्रष्टाचार विरोधी समिति के सभापति बने हैं, इसलिए संपादकजी ने आप का वक्तव्य लेने को भेजा है.

भागमल : आप से हमारा कोई आज का संबंध तो है नहीं. आप ही मेरे नाम से वक्तव्य तैयार कर के दे दीजिएगा. कालाबाजार और मुनाफेखोरी की निंदा करते हुए उस में कालाबाजार करने वालों के लिए कड़ी धमकी भी जोड़ दीजिएगा.

(होटल का नौकर चाय का कप प्रति-

झूठी खबर

नेताजी : आप ने अपने अखबार में मेरे बारे में छापा है कि मैं झूठा और बेईमान हूं.

संपादकजी : आप तो हमेशा कहते हैं कि हमारे अखबार में सच्ची खबरें छपती ही नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

निधि को देता है.)

प्रतिनिधि : इधर कुछ दिनों से आप का विज्ञापन नहीं आया. इस ओर यदि ध्यान रख सकें, तो सुविधा होगी.

भागमल : मुनीमजी, कल एक पृष्ठ का विज्ञापन भेज देना.

प्रतिनिधि : अच्छा, तो मैं चलूंगा. कल के अंक में आप का वक्तव्य निकल जाएगा.

भागमल : संपादकजी से मेरी नमस्ते कहिएगा.

(प्रतिनिधि अभिवादन कर के चला जाता है. होटल का नौकर कप ले जाता है.)

भागमल : मुनीमजी, हरक की एक गांठ यदि चंदू के हाथों निकलवा दी जाए तो क्या हर्ज है? इस का कमीशन देना पड़ेगा. पर तिगुनीचौगुनी कीमत मिल रही है.

मुनीम : म्हारी राय में निकाल देना ही ठीक होगा. जोखिम की चीज है.

रोशनी न मिली

दागे दिल से भी रोशनी न मिली,
ये दिया भी जला के देख लिया.
—वफा मेरठी.

जितनी जल्दी निकल जाए, उतना ही अच्छा है.

भागमल : ठीक है. आज सब बातें पक्की कर लूंगा.

(दो सोशलिस्ट नेताओं का प्रवेश. दोनों भागमल को नमस्ते करते हैं.)

भागमल : आइए, नेताजी. मेरी दुकान पर आज धावा कैसे?

पहला : धावा तो मुनाफाखोरों की दुकान पर होगा और सो भी धरना दे कर बिनदहाड़े.

भागमल : कहिए, आप की क्या सेवा कर सकता हूं?

दूसरा : अगले महीने में जयप्रकाशजी आ रहे हैं. उन्हें हम लोग थैली दे रहे हैं. उसी के लिए कम से कम सौ रुपए आप से लेने का ठान कर हम लोग आए हैं.

भागमल : अजी नेताजी, सौ नहीं एक सौ एक और सो भी नकद. लेकिन मेरा नाम सूची में न रख कर गुप्त रखिएगा. कांग्रेसी चूहे बहुत फैले हैं. तिल का ताड़ बना देते हैं.

पहला : हम लोग किसी मिनिस्टर के लिए तो चंदा कर नहीं रहे हैं, जो नाम छापें. आप का नाम गुप्त रखा जाएगा.

(पहला व्यक्ति भागमल को 101 रुपए की सोशलिस्ट पार्टी की छपी रसीद देता है और भागमल 10-10 के 10 और एक का नोट देता है.)

दूसरा : अच्छा, तो अब चलेंगे, सेठजी.

(दोनों अभिवादन कर के चले जाते हैं.)

मुनीम : यह भी 101 ले गए.

भागमल : आजकल कांग्रेस का पलड़ा कमजोर हो रहा है. क्या भरोसा कि सोशलिस्ट ही चुनाव जीत जाएं. मुनीमजी, व्यापारी को तो कांग्रेसी, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, महासभाई—सभी को सांठ कर रखना चाहिए. न जाने कब किस से क्या काम आ पड़े.

मुनीम : सो तो ठीक है.

भागमल : भाई, हम तो भले की बात करते हैं. सरकार का साथ देना देशभक्ति है. अंगरेजों की सरकार थी तो उस का साथ देते थे. आज कांग्रेस सरकार है, तो उस के साथ हैं. कल को दूसरी सरकार आएगी तो हम उस का भी साथ देंगे. सरकार का साथ दे कर ही तो व्यापारी अपनी भलाई के साथसाथ देशभक्ति निभा सकता है.

मुनीम : म्हारी भी राय यही है.

भागमल : अरे भाई, सरकार और व्यापारी अलगअलग थोड़े ही रह सकते हैं. खैर, 12 बज रहे हैं. दुकान बंद कर दो.

(सेठजी को उठते देख मुनीम तथा रोकड़िए भी उठ जाते हैं.)

(परदा गिरता है.) ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिखरे मोती

(पृष्ठ 44 से आगे)

बिगड़ रहे हो?" बीनू बोली.

"हां, मैं पुरुष हूं और सब जानता हूं कि बाहर काम करने वाली अधिकतर स्त्रियां कैसा जीवन जीती हैं, और समाज में उन की कैसी प्रशंसा होती है? और ऐसी प्रशंसा से शायद तुम भी परिचित होगी."

"तो तुम्हें मेरे विषय में कोई भ्रम है. मैं तुम्हें इतना संकीर्ण नहीं समझती थी."

"क्या तुम अपने सेठजी के साथ प्रायः काफी हाउस नहीं जाया करती हो?"

"हां अवश्य जाती हूं और तुम्हें इस का पता भी है पर तुम ने मुझे आज तक कभी नहीं रोका. फिर आज ही यह आंखें क्यों दिखा रहे हो?"

"यदि नहीं रोका तो आज रोक रहा हूं. अब तुम्हें आफिस से सीधा घर आना होगा," इतना कह कर योगेश अपने स्टडी रूम में चला गया और एक सिगरेट जला कर धुएं के छल्ले बनाता हुआ छत में आंखें गड़ा कर विचारमग्न हो गया. बीनू भी उस दिन कुछ न खा सकी. दोचार दिन बाद मां ने योगेश से कहा, "बेटा, अब मैं जाऊंगी, वहां तेरे बाबूजी को कष्ट होता होगा. उन की बीमारी वर्षा के कारण उभर आई है. आज उन का पत्र आया है, तू मेरे जाने का प्रबंध कर दे," और फिर मां चली गई.

इस बार मां मीना को जानबूझ कर ही छोड़ गई क्यों कि वह समझती थी कि इस बच्ची के कारण बीनू बंध जाएगी और निश्चित समय पर घर आएगी. मां की इस दूरदर्शिता का परिणाम भी दृष्टिगोचर होने लगा. बीनू अब प्रायः समय से ही घर लौटती, कुछ तो योगेश की प्रतारणा के कारण और कुछ मीना के कारण, क्योंकि अभी मीना आया से हिली नहीं थी. वह सदा मां की याद में प्रायः रोती ही रहती थी. शाम को मीना की याद व चिंता उसे शीघ्र घर लौटने को विवश कर देती.

योगेश के चचेरे भाई हरीश की बदली दिल्ली हो गई थी. कोई घर न मिलने के कारण वह योगेश के यहां आ गया था. थोड़े समय में मीना उस से घुलमिल गई. हरीश को बच्चे लगते भी बड़े प्यारे थे. और फिर मीना तो ऐसी भाभी की बेटी थी जिस के रूपरंग पर वह विवाह पर ही मुग्ध हो गया था. हरीश अपने भैयाभाभी पर बोझ न बन जाए इस कारण बच्ची के लिए प्रायः टाफी, बिस्कुट व खिलौने लाता रहता और कभीकभी कोई उपहार भाभी के लिए भी.

पिछली बार की कहासुनी से योगेश व बीनू के प्रणयसेतु में कुछ दरार सी पड़ गई थी. हरीश के आगमन से बीनू के संत्रस्त मन को थोड़ी सांत्वना मिली. हरीश का बच्ची के प्रति अपरिमित लाड़दुलार बीनू को कृतज्ञता व स्नेह से आप्लावित कर देता और फिर देवर का नेह भाभी के लिए भी कम नहीं था.

मां के जाने के बाद बीनू न सेठ के साथ बाहर जाने को एकदो बार तो टाल दिया पर सेठजी को बीनू का संगतिसुख व्याकुल कर रहा था, वह पुनः अनुरोध कर बैठे. अब बीनू की दशा बड़ी दयनीय थी. इधर पति का भय व बच्ची का ध्यान उधर नौकरी चली जाने की चिंता. आखिर वह शांतिलाल की फर्म में नौकर ही थी, उन का असंतोष उस की नौकरी समाप्त कर सकता था और फिर वह भी तो नारी है, उस के भी हृदय है जिस में रसकेलि की चाह है. उस की थोड़े समय की संगति से यदि किसी को सुख मिलता है और अपरोक्ष रूप से बीनू को भी लाभ मिलता है तो उस में क्या हानि है? बीनू को विचारमग्न देख कर शांतिलाल बोले, "किस कल्पनालोक की सैर कर रही हो, बीनू रानी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ नहीं, यों ही!" बीनू चौंक कर बोली और सेठजी के साथ गाड़ी में आ बैठी. रास्ते में सेठजी से योगेश के साथ हुए कलह का वर्णन करते हुए बोली, "सेठजी, बड़ी विषम स्थिति में फंस गई हूं."

शांतिलाल उस के कंधे पर हाथ रखते हुए मिश्री घुले शब्दों में बोले, "चिंता क्यों करती हो, बीनू! तुम पढ़ीलिखी, स्वयं अपनी अजीविका कमाने वाली नारी हो, तुम्हें किस का डर है? अब पुरुषों की दासी बन कर रहने का युग बीत गया," और उन्होंने बीनू की पीठ पर थपकी दे कर उसे आश्वस्त कर दिया. उस दिन शांतिलाल उसे गेलार्ड में ले गए. एक कैबिन के अंदर बैठ कर उन्होंने बैरा को दो आइसक्रीम व वैजीटेबिल कटलेट्स लाने का आर्डर दे दिया, फिर बोले, "बीनू, तुम तो विवाह के पहले से ही मेरी फर्म में काम कर रही हो, यह तो तुम्हारे पति को पता ही था फिर क्यों वह तुम्हें बांधना चाहता है?"

"चिढ़ उन्हें मेरी नौकरी से नहीं है किंतु मेरी स्वतंत्रता उन्हें खलती है. पुरुष हैं न, अपना पूर्ण अधिकार चाहते हैं," बीनू बोली.

"अधिकार का मतलब यह तो नहीं कि तुम उस से बिना पूछे कहीं आओजाओ नहीं, यह तो उस का शोषण है. तुम बाहर काम करती हो तो हर समय किसी के साथ कहीं जाने के लिए उस की आज्ञा लेती फिरो, यह कैसे संभव हो सकता है और फिर मैं तुम्हें कोई भगाए थोड़े ही ले जा रहा हूं," कह कर बीनू पर शांतिलाल ने कटाक्ष फेंका.

तभी किसी ने केबिन का परदा उठा कर झांका. योगेश से बीनू की आंखें चार होते ही उस के हाथ से चम्मच छूट कर गिर पड़ा. योगेश परदा छोड़ कर आगे बढ़ गया. वह अपने मित्र के साथ काफी पीने आया था. बाहर हाल में जगह न होने के कारण वह कैबिन में बैठने योग्य स्थान ढूंढ रहा था कि सहसा बीनू व सेठजी से उस का साक्षात्कार हो गया. फिर बीनू कुछ से कुछ भी न खा सकी और शांतिलाल से अनुरोध कर के शीघ्र ही घर वापस आ गई. इस घटना के बाद योगेश दो दिन तक बीनू से नहीं बोला था.

मां को संक्षेप में इन बातों का आभास दे कर बीनू ने कहा, "मां मुझे योगेश एक चिड़िया की भांति कैद कर के रखना चाहता है और मैं कैद में जी नहीं सकती. पत्नी हूं तो यह मतलब नहीं कि उसी के इशारे पर नाचूं. आखिर मेरा भी व्यक्तित्व है, मेरी भी कुछ आकांक्षाएं हैं, सारा दिन मेहनत कर के कमा कर लाती हूं. मुझे भी कुछ स्वतंत्रता चाहिए."

"पर तू तो योगेश को बड़ा ही प्रगतिशील व स्वतंत्र विचारों का बताती थी, तो अब क्या हुआ?" आशा बोली.

"हां, मां, मैं उन्हें ऐसा ही समझती थी पर अब पुरुष का वास्तविक रूप मेरे सम्मुख खुल गया है. जब पुरुष के अपने ही निहित स्वार्थ, अपने अधिकार का प्रश्न आ जाता है तो वह उतना ही कृपण, उतना ही हृदयहीन, उतना ही संकीर्ण बन जाता है जितना कभी पहले था, प्रगतिशीलता केवल ढोंग ही जान पड़ती है," बीनू बोली.

बीनू के जूड़े में गुलाब का फूल लगा कर हरीश उस के कंधे पर हाथ रखते हुए झुका था कि तभी योगेश आ गया.

"नहीं, बीनू, नहीं! कनु जैसे बिखर पड़ी, ऐसा न सोच, यह तेरा भ्रम है, एकपक्षीय विचार है. कभी तूने सोचा है कि यदि आज सेठ की पत्नी को तेरी इस स्वतंत्रता का पता चल गया तो उस पर क्या बीतेगी. क्या वह तुझ से, तेरे नाम मात्र से ही घृणा नहीं करने लगेगी? बीनू, तूने कभी नारी की नारी के प्रति घृणा नहीं देखी है, मैं उस घृणा का रूप अच्छी तरह पहचानती हूं. तुझे नहीं मालूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मैं अपने विद्यार्थी जीवन में उस रूप का साक्षात दर्शन कर चुकी हूं."

फिर मां की ओर उन्मुख हो कर वह बोली, "क्षमा करना, मां, मुझे इस कटु सत्य के लिए जो मैं ने झेला है. एक दिन शर्मा अंकल मुझे अपने साथ कालिज छोड़ने ले जा रहे थे तो उन्हें कार्यवश पहले अपने घर जाना पड़ा. उन के घर जाने पर उन्होंने अपनी पत्नी से मेरा परिचय कराया. 'देखो, शीला, यह श्रीमती सिन्हा की पुत्री हैं,' और मेरी तरफ देख कर बोले, 'यह तुम्हारी आंटी हैं.' शीला आंटी ने मुझे उस क्षण जिस दृष्टि से देखा था वह मैं आज तक नहीं भूली हूं, उन के उस दृष्टि निक्षेप में क्रोध, अपमान, पीड़ा, तिरस्कार एवं घृणा का ऐसा अदभुत सम्मिश्रण था कि उस दृष्टि को मैं सह न सकी और अपमानित हो कर कुंठावश अपनी आंखें नीची कर ली थीं. मां! उन्हें शर्मा अंकल के साथ तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

घनिष्ठता का पता था."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कनु के इस अभियोग की आशा वह न सकी, "क्या कहती है, कनु? मैं ने शर्मा की पत्नी से उस का अधिकार कभी भी नहीं छीनना चाहा था. हम तो केवल मित्र थे, इस से अधिक कुछ नहीं, फिर उन्हें क्यों मुझ से ईर्ष्या थी?"

"यह तुम्हारी भूल थी, मां, जिसे तुम स्वीकारना नहीं चाहतीं. दो अपरिचित स्त्रीपुरुष, जिन का आपस में रक्त का संबंध न हो, कभी भी शुद्ध मित्रता की भावना पर दृढ़ नहीं रह सकते. स्त्री और पुरुष की स्थिति आग और फूस जैसी ही है फिर धुआं क्यों नहीं उठेगा? सच कहना, मां! आज तुम्हारा ही खून तुम से प्रश्न कर रहा है, क्या तुम ने शर्मा अंकल या वीरेंद्र अंकल से कभी मानसिक अथवा सामीप्य की तृप्ति नहीं पाई? यदि ऐसा नहीं था तो क्यों तुम हमें उन के आने पर पढ़ने के कमरे में भेज दिया करती थीं? उन के साथ तुम चोरी से समाज की निगाहें बचा कर क्यों चलती थीं. बता सकती हो, तुम ने हमारे पिता का साथ क्यों छोड़ा था?"

"देख, कनु, तू अधिक बात न बढ़ा. मैं ने तुम्हें शिक्षा दिलाई थी कि कल को तू स्वावलंबी बन सके, उचित रूप से सोचसमझ कर भलेबुरे का निर्णय कर सके. इसलिए नहीं कि तू मुझ ही को ले कर छानबीन करने लगे. आखिर मैं तुम्हारी मां हूं, मैं ने जो कुछ किया तुम्हीं लोगों के भविष्य की चिंता के लिए किया."

"यदि तुम्हें हमारे भविष्य की चिंता होती तो हमारे पिता का साथ छोड़ कर इधरउधर न भटकतीं. तुम ने केवल अपने सुख की चिंता की थी, तुम ने सहना नहीं चाहा था और आज उस का परिणाम हमें भुगतना पड़ रहा है."

आशा के नारीत्व की शीतल छाया में क्षणिक विश्राम ले कर आगे बढ़ जाने वाले साथियों की कमी नहीं थी किंतु कोई भी ऐसा साथी नहीं मिला जो उसे अपनी बलिष्ठ भुजाओं का सहारा दे कर जीवन पथ के अंतिम छोर तक उस का साथ देता. सत्य तो यह है कि विवाहित पुरुष उस के सामीप्य लाभ से ही तृप्त हो कर चले जाते और अविवाहित पुरुष उस का हाथ थामने से उस की संतानों के कारण पीछे हट जाते थे. आशा की उच्छृंखल प्रकृति पुरुष के सहारे के बिना तुष्ट नहीं हो सकी. निष्ठा का महत्त्व उस ने नहीं जाना तो वह निष्ठावान कैसे रहतीं? या फिर शायद स्वयं उस के पति द्वारा उस के प्रति किया विश्वासघात उसे उद्दंड बना गया था.

आज से 26 वर्ष पहले आशा धनवान घर के लाड़ले बेटे की बहू बन कर आई थी. उस के रंगरूप की सराहना सभी करते थे. स्वयं हीरालाल भी कम अनुरक्त नहीं था अपनी प्रिया के प्रति. दो वर्ष तक युवा दंपति रसकेलि के उन्मुक्त उपभोग का आनंद लूटते रहे, तदुपरांत कनु व बीनू के जन्म के बाद आशा हीरालाल व बच्चों में बंट गई और वह अपने रंगरूप के प्रति भी सजग न रह सकी. पर भ्रमर प्रकृति का हीरालाल कली के मकरंद को ही चूस कर तृप्त होने वाला था. कली का बाह्य सौंदर्य उस के लिए वृथा था. वह बाहर भटकने लगा.

धनी पिता की संतान को अर्थ साधन की कोई कमी न थी. विवाह से पहले भी वह कामिनियों के संग रह चुका था. आशा के आ जाने पर वह मुग्ध भ्रमर

कल का दिन किस ने देखा है,
आज का दिन हम खोएं क्यों?
जिन घड़ियों में हंस सकते हैं,
उन घड़ियों में रोएं क्यों?
—साहिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भांति उस के मोहपाश में बंध गया था, जो कली के प्रस्फुटित होते ही उसमत्त उड़ाने भरने लगा. प्रारंभ म आशा को कुछ पता न चला. वह उस जमाने के अनुरूप घर ही में व्यस्त और सीमित रहती. पर शनैःशनैः घटनाओं के क्रम से उसे हीरालाल के बाहरी संबंधों का ज्ञान होने लगा.

आशा के पिता ने उसे उस जमाने की ऊंची शिक्षा दी थी. रूपगर्विता आशा का स्वाभिमान इस अपमान की चोट को झेल न सका और वह दिनरात घुटने लगी. हीरालाल का मित्र रामगोपाल आशा से बड़ी सहानुभूति रखता था, उस की सहानुभूति पीड़ा के क्षणों में आशा के तप्त हृदय पर चंदन का सा लेप करती. हीरालाल से टूटता मन राम गोपाल की सहानुभूति से जुड़ने लगा. क्रोध व प्रतिशोध की भावना से उफनती आशा आत्मसंयम का विवेक खो बैठी और पागलों की तरह रामगोपाल की ओर खिंचती चली गई.

राजू के जन्म के बाद तो वह खुल कर हीरालाल से झगड़ बैठी और अलग होने की धमकी दी. हीरालाल तो स्वयं ही अपनी राह का कांटा दूर करना चाहता था ताकि वह स्वतंत्र हो कर रंगरलियां मना सके. आशा रामगोपाल के सहारे घर छोड़ बैठी पर वह सहारा कुछ दिनों बाद ही छूट गया. अब आशा स्वयं को बुरी तरह पराजित व टूटा हुआ अनुभव करने लगी. पुरुष जाति के प्रति उस का विद्रोह दिन दूना बढ़ने लगा. विश्वासघात एवं प्रवंचना का विष उसे भीतर ही भीतर सालने लगा और वह विषमयी होती गई. अंततः एक दिन वह नागिन बन कर समाज को डंक मारने लगी. निर्दोषियों से पुरुष से बदला लेना चाहती थी पर यह भूल रही थी कि पुरुष जिस समाज का एक अंग है, उस की संतानें उसी समाज का दूसरा अंग हैं. उसे यह ध्यान न रहा कि उस का विष स्वयं उसी की संतान के जीवन को विषाक्त कर देगा. वह आंखें मूंद कर जीवन पथ पर बढ़ती चली गई.

"कनु, तुझे नहीं मालूम कि मैं तेरे पिता को कितना प्यार करती थी! उन्होंने भी आरंभ के दिनों में मुझे कम नहीं चाहा था पर तेरे व बीनू के जन्म के बाद वह मुझ से दूर हटने लगे. उन के जीवन में अन्य सस्ती नारियों का प्रवेश हो चुका था, मैं इस चोट को न सह सकी और मेरे पत्नीत्व का, नारीत्व का अभिमान चोट खा कर जाग उठा. मुझे प्रति पल यही भासित होता कि पुरुष नारी को केवल भोग्या के रूप में ही स्वीकार करना चाहता है, उस के इस भोग में उमर के बढ़ने से अथवा संतान के जन्म से तनिक भी शिथिलता आई कि अन्यत्र सुख खोजने निकल पड़ता है, साहचर्य की उसे आवश्यकता नहीं है. वह तो केवल अपनी तुष्टि ही ढूंढ़ता फिरता है.

"मैं उस चोट से आहत हो कर ज्ञानशून्य हो रही थी और तिलमिला उठी थी. नारी जब सच्चे हृदय से अपने जीवनसाथी को प्यार करती है तो उसे भी उसी सच्चे और एकनिष्ठ प्यार की अपेक्षा होती है. यह आदानप्रदान दोनों पक्षों की ओर से ईमानदारी से होना चाहिए. यदि इस व्यापार में पुरुष की तरफ से विश्वासघात होता है तो नारी टूट जाती है," इतना कह कर आशा चुप हो गई.

"मैं तुम्हारी इस बात से पूर्ण रूप से सहमत हूं, मां! पर यह तो सोचो कि तुम ने टूट कर फिर स्वयं अपने नारीत्व के बल पर उठने की चेष्टा क्यों नहीं की! तुम ने पिता से अलग हो कर सात्विक जीवन क्यों नहीं जिया? क्यों नहीं तुम गर्व से सिर उठा कर समाज में चल सकीं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यदि तुम नैतिकता एवं निष्ठा का जीवन जीतीं तो जो अपमान, पिता का जो अभाव हमें झेलना पड़ा है वह न होता. तुम ने एक पुरुष का आश्रय छोड़ कर दूसरे पुरुषों का सहारा लेना चाहा, इस से क्या यह प्रमाणित नहीं होता कि तुम स्वयं अपनी आकांक्षाओं का पोषण करती रहीं, उन का दमन नहीं कर सकीं. तुम ने अपनी स्वतंत्रता के हेतु कभी यह नहीं सोचा कि तुम्हारी बेटियां अपनी उमर की सीढ़ियां चढ़ती बड़ी हो रही हैं, वे क्या अनुभव करती रही हैं और उन के चरित्र का निर्माण किस नींव पर खड़ा हो रहा है?"

कनु की ये बातें आशा को अच्छी नहीं लगीं. वह बोली, "तुम लोगों को मैं ने किस बात की कमी रखी, कनु, जरा बता तो? अच्छा खाया, अच्छा पहना स्वतंत्रता से रहीं, ऊंची शिक्षा पाई और अच्छा घरवर. फिर कमी कहां रह गई?"

"केवल खानेपीने, पहननेओढ़ने और स्वतंत्रता में ही जीवन का सुखसार नहीं होता, मां! मानसम्मान तथा मर्यादा-हीन जीवन पशु के जीवन समान ही होता है. जानती हो, मां, कालिज में हमारी सहपाठिनें पिता का प्रश्न उठने पर हमारी तरफ देख कर हंसती थीं, जब कभी शर्मा अंकल हमें कालिज छोड़ने जाते थे तो वह उन्हें हमारा डैडी कह कर चिढ़ाया करती थीं. और, बीनू! उस दिन की बात तू भी नहीं भूली होगी जब यूनिवर्सिटी का परीक्षा का फार्म भरा जा रहा था तो पिता के नाम के प्रश्न को ले कर कमला बोली थी, 'शर्मा अंकल का नाम लिख दो न बीनू!' और तभी शीला बोल उठी थी, 'शर्मा अंकल का नाम न लिखना चाहो तो वीरेंद्र अंकल का नाम लिख दो.' इस बात को ले कर बीनू का उन से खूब झगड़ा हुआ था, घर आ कर यह रात भर मुझ से चिपट कर रोती रही थी."

"हां, दीदी, मुझे वह घटना ज्यों की त्यों अभी तक याद है, उस की कटु स्मृति मेरे मानस पट से कभी नहीं पुंछ सकती."

"तब क्यों तू भी उसी मार्ग का अनुकरण कर रही है? तेरे सामने भी बेटी है अपने असयम से, अपनी अदूरदर्शिता से तू उस का भविष्य बिगाड़ कर रख देगी," कनु बोली.

"यही चिंता तो मुझे भी है पर समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं? योगेश अब बातबात में बिगड़ उठता है और मुझे सीमाओं में बांधना चाहता है. मुझ से नौकरी छोड़ देने को कहता है."

"नौकरी कभी मत छोड़ना, बीनू, इस तरह तो तू अपने हाथपैर कटा बैठेगी और पति पर अवलंबित हो कर उस की दासी बन जाएगी," आशा बोली.

"भगवान के लिए बीनू को ऐसी शिक्षा न दो, मां, जिस से वह अपनी बेटी

को अनाथ बना दे. मैं भी तुम्हारी बेटी हूं पर जो कहती हूं उसे सोच कर देखो कि उचित है या नहीं. योगेश को जब बीनू की सेठजी के साथ घनिष्ठता पसंद नहीं तो जब तक यह वहां काम नहीं छोड़ देती तब तक कलह होता ही रहेगा," कनु बोली.

"मेरी नौकरी छूट जाने से जो 300 रुपए महीने की आय कम हो जाएगी तो क्या योगेश को बुरा नहीं लगेगा और स्वयं मुझे पराधीनता का अनुभव नहीं होगा?"

"यह तेरा दंभ है, बीनू! जहां तक मैं समझती हूं, योगेश ऐसा नहीं है जो तुझे अपना बोझ समझे और कम आमदनी के कारण परेशान हो, और फिर तू तो उस की पत्नी है, उस की प्रत्येक वस्तु की तू भी उतनी ही अधिकारिणी है जितना कि वह स्वयं है. पतिपत्नी का ही तो संसार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

में एक ऐसा नाता है जहां त्याग, समर्पण तथा एकता की असीम भावना होती है, दोनों में कहीं दुराव, छिपाव अथवा अलगाव नहीं होता है और दुर्भाग्यवश जब किन्हीं कारणों से इन नियमों में व्याघात उत्पन्न होता है तभी यह नाता टूटने लगता है. सच बता, बीनू, क्या अपने सेठजी से तेरे संबंध नितांत औपचारिक हैं; और तू मित्रता की सीमा से कभी आगे नहीं बढ़ी?"

अब बीनू क्या उत्तर दे कनु के इस प्रश्न का? विवाह के पहले से बीनू वहां काम करती आ रही है, उच्छृंखलता के वातावरण में पली बीनू ने नैतिकता की सीमाओं की कभी चिंता नहीं की थी, वह उन बंधनों को संकीर्णता के लक्षण समझती

चेहरा

अगर तुम्हारा चेहरा मुसकराना चाहता है तो मुसकराने दो; अगर नहीं तो उसे मजबूर करो.

—सूक्ति

थी और तदनुरूप ही उस का आचरण रहा था. सेठ शांतिलाल के साथ भी उस का संपर्क नैतिकता की सीमा लांघ जाया करता था. विवाह के उपरांत उस ने इस संबंध को सीमा में बांधना चाहा था किंतु उस का यह प्रयास बिखरे जल को पात्र में भर लेने की व्यर्थ चेष्टा जैसा था. अपनी इस चाहना के लिए उसे बड़ा त्याग करना पड़ता और वह था नौकरी का त्याग, जिसे उस का दंभ नहीं करने देता था.

योगेश पहले तो उस से अनभिज्ञ था पर समाज ने उस की आंखों में उंगली डाल कर सत्य का ज्ञान करा दिया था. अब वह बीनू को कहीं भी सीमा से बढ़ते देख लेता तो आपे से बाहर हो जाता. दो माह पूर्व मीना के जन्मदिन पर हरीश मीना के लिए ढेर सारे खिलौनों व कपड़ों के साथ ही बीनू के लिए भी साड़ी लाया था. साड़ी बीनू को बहुत पसंद आई थी इस कारण उस दिन उस ने वही साड़ी पहन ली. तैयार हो कर बीनू शृंगार मेज के शीशे में देख कर अपना जूड़ा बना रही थी कि तभी हरीश वहां आ गया और बोला, "लाओ, भाभी! तुम्हारे जूड़े में यह फूल खोंस कर तुम्हारे शृंगार को फिनिशिंग टच दे दूं," और इस के साथ ही उस ने गुलाब का वह फूल बीनू के जूड़े में खोंस दिया. फिर वह उस के कंधे पर हाथ टिका कर पीछे से झुक कर छोटा शीशा उठाने लगा तभी संयोगवश योगेश वहां आ पहुंचा और हरीश का यह आचरण उसे क्रोध से आपादमस्तक सिहरा गया.

उस समय तो वह कुछ न बोला पर रात में पार्टी के बाद बीनू से उस की काफी कहासुनी हो गई थी, यहां तक कि वह मां पर भी आक्षेप करने से नहीं चूका, "यदि मेरे साथ बंध कर नहीं रह सकती तो अपनी मां की तरह तुम भी मुझे छोड़ कर जाने के लिए स्वतंत्र हो."

मीना पास ही खड़ी थी जो माता-पिता के इस झगड़े से सहम गई थी, मां का आंचल पकड़ कर वह बोली, "पापा तुम से क्यों नाराज होते हैं, मम्मी? तुम पापा को छोड़ कर नहीं जाना, नहीं तो मुझे फिर पापा कहां मिलेंगे? मुझे पापा की याद आएगी न, मम्मी!"

बेटी के ये शब्द बीनू को जड़मूल से हिला कर रख गए, अपने बचपन के बीते दिनों की याद उस के अंतर को कचोट गई. वह अपनी बेटी को पिता की छत्रछाया से वंचित नहीं करना चाहती थी. पर उस की अहं भावना और उद्दंड प्रकृति योगेश से सामंजस्य नहीं स्थापित करने दे रही थी. बड़ी विषम स्थिति थी. क्या करे और क्या न करे? अनिश्चय की त्रासदायक स्थिति से घबरा कर मां के पास जाने का निर्णय कर उसे पत्र द्वारा अपने आने की सूचना दे दी थी. सौभाग्य से तभी कनु उस से बोलने पहले ही मां से

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मिलने वहां आ पहुंची थी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीनू को निरुत्तर पा कर कनु बोल उठी, "मैं जानती थी, बीनू, तू मेरे इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकेगी. तेरा यह मौन ही सब से बड़ा उत्तर है. तू योगेश के विश्वास का दुरुपयोग कर रही है. मेरी बात मान जा, बीनू! छोड़ दे यह नौकरी और उस सेठ का साथ. आवश्यकता पड़ने पर नौकरी दूसरी भी मिल सकती है पर खोया हुआ विश्वास नहीं लौटाया जा सकता, अपनी स्वतंत्रता को सीमित कर ले. मेरी अच्छी बहन, तू गहन गंभीर सरिता का रूप धारण कर ले जो अपनी जीवनदायिनी शक्ति से अपने चारों ओर जीवन, सुख व शांति बिखेरती अपने पथ पर दृढ़ रह कर अबाध गति से चलती चली जाती है. मेरा कहा मान ले, बीनू, अन्यथा तेरे व योगेश के प्रणय की दरार और गहरी हो जाएगी और फिर इधरउधर का आया हुआ गंदला जल तेरे गृहस्थ जीवन को डुबो देगा."

सब से बड़ी भूल

अत्याचार व भय दोनों कायरता के दो पहलू हैं

✦

सब से बड़ी भूल कोई कोशिश न करना है.

—सूक्ति

फिर मां की ओर देख कर कनु बोली, "मां, नारी स्वयं जननी है, शक्तिरूपा है, उसे किसी का सहारा नहीं चाहिए. यदि आवश्यकता है तो केवल धैर्य, त्याग, सहनशीलता, साहस और आत्मविश्वास व निष्ठा की. अपने इन गुणों के बल पर वह पूरे समाज से टक्कर ले सकती है."

कनु पनडुब्बी की भांति आशा के मानस सागर में जमी हुई काई और उथली सतह पर जमी झाड़झंखाड़ को अपने एक-एक वाक्य से चीरती उस की अतल गहराई में डूबे रत्नों के उस अपार भंडार को खोज लाने में सफल हो रही थी, जिस से आशा अनभिज्ञ थी. कनु के इस प्रयास से आज वह अपनी रत्नराशि देख कर चकित थी जिस का उपयोग वह अपने जीवन में न कर सकी और कीचड़ काई में ही उलझ कर रह गई थी.

महान पश्चात्ताप से अभिभूत हो कर आशा कुछ समय तक जड़वत बैठी रही, उसे लग रहा था कि वह स्पंदनशून्य हो जाएगी. कनु व बीनू की बातों के प्रहार से उस के मस्तिष्क की शिराएं झनझना उठी थीं. उस के जीवन के इतिहास के काले अक्षर सत्य की धूप में चमक कर स्पष्ट हो उठे थे.

पर कनु की इन बातों से बीनू के तप्त हृदय पर शीतल जल के छींटों का सा प्रभाव पड़ा. वह अब शांत हो चली थी, उस के मन का तूफान और पीड़ा का झंझावात थमने लगा था. उसे अपने भविष्य के मार्ग पर अनिश्चिय की जो धुंध दिखाई दे रही थी वह आत्मा की उज्ज्वलता से कटने लगी थी. उस का भ्रम जाल टूट चुका था और वह शांत हो कर सो गई.

फिर उस रात कनु व बीनू के सो जाने पर भी आशा न सो सकी. विचारों के बवंडर उसे हिलाए दे रहे थे. उस का सारा जीवन बालू की दीवार की भांति सत्य की एक ही लहर से पल भर में धराशायी हो गया था. उसे लग रहा था कि झूठे दंभ के जिस शिखर पर बैठ कर वह स्वयं को ऊंचा समझ रही थी, बेटियों के तर्क के एक ही धक्के से वह पल मात्र में अतल गहराई में आ पड़ी थी, जहां से उस का उद्धार अब संभव नहीं है. उस का जीवन असंयम के कच्चे धागे में पिरोई गई उस माला के दानों के सदृश है जो टूट कर दूरदूर तक बिखर चुके हैं और पुनः पिरोए नहीं जा सकते. आत्मग्लानि व पश्चात्ताप की पीड़ा से व्याकुल हो कर आशा तकिए में मुंह छिपा कर फूटफूट कर रो उठी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म समीक्षा

★ पूरब और पश्चिम

निर्माता : विशाल इंटरनेशनल प्रोडक्शंस
निर्देशक : मनोजकुमार
मुख्य कलाकार : अशोककुमार, सायरा बानो, मनोजकुमार, प्राण, प्रेम चोपड़ा, निरूपा राय, विनोद खन्ना, भारती, मदन पुरी, मनमोहन, कामिनी कौशल और राजेंद्रनाथ

देशभक्ति के वातावरण में पला एक बालक भारत (मनोजकुमार) बड़ा होता है तो अपने साथियों के साथ 26 जनवरी के उत्सव में शामिल होने के लिए दिल्ली आता है. यहां वे एक प्रोग्राम पेश करते हैं. मंच पर गोपी (भारती) दुल्हन के भेस में नाचती है तो साथ ही गीत भी चलता है 'दुल्हन ससुराल चली, पहने तीन रंग की चोली' यहां शायद गीत कोई अन्य पात्र गाता पर भारत (यानी मनोज) यह गीत गाने का लालच नहीं छोड़ सका और वह खुद मंच पर गाने लगता है, पर पूरबी सभ्यता का इतना ही पालन करता है कि 'दुल्हन' की जगह पर बीचबीच में 'बहन ससुराल चली' गाने लगता है. लेकिन यहीं एक बात समझ में नहीं आई कि भाई की नजर बारबार बहन की चोली पर ही क्यों पड़ती है.

चोली को भी तीन रंगों में रंग कर निर्माता 26 जनवरी के साथ अच्छा जोड़ गया है. हालांकि कहानी की दृष्टि से यहां बहन शब्द का प्रयोग अनुचित है क्योंकि निर्माता बाद में गोपी के दिल में भारत के लिए प्रेम की गलतफहमी पैदा होती दिखा गया है जो भाई के लिए कदापि नहीं हो सकती.

चित्र का नायक विज्ञान की पढ़ाई के लिए लंदन जाता है. इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप में वह पश्चिम की वैज्ञानिक प्रगति का लोहा मान लेता है, पर फिर भी उसे संतोष है कि पश्चिम ने यह सारी तरक्की उसी 'जीरो' (गणित का शून्य) के बल पर की है जो भारत ने पश्चिम को उधार दिया था. वह खुश है कि हमारे मूलधन पर कितना बड़ा ब्याज बन गया है! क्योंकि उसी जीरो के बल पर ही आज पश्चिम चांद पर जा पहुंचा है. लेकिन हमारा नायक (और उस के देशवासी) तो उस जीरो पर चढ़ कर लंदन भी न जा सके. उस के लिए भी उन्हें पश्चिम में बने हवाई जहाज का सहारा लेना पड़ा!

हमारा नायक वैसे तो विज्ञान का छात्र है, पर उसे अवैज्ञानिक बातों में अधिक विश्वास है. शत्रु का जो मुकाबला 'रघु पति राघव राजा राम' से किया जा सकता है वह हथियारों से नहीं, यह भी वह चित्र में ही बता देता है. 'जय जगदीश हरे' की आरतियों में 'सुख संपत्ति'

★★★★अद्वितीय ★★★★अति उत्तम ★★★उत्तम ★★साधारण ★बेकार ○निकृष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त कर सकता है वह पश्चिम की तरह बड़े परिश्रम से नहीं प्राप्त की जा सकती. इस निष्कर्ष पर भी वह वैज्ञानिक अध्ययन के बाद ही पहुंचा है. और फिर जब भी हम पर कोई संकट आए 'रघु पति राघव राजा राम' का महान अस्त्र हमारे पास है चिंता की क्या बात!

हमारे पास तन ढकने को भले ही कपड़े न हों, खाने को रोटी न हो, पर मन की शांति के लिए 'हरे राम, हरे कृष्ण' की धुन तो है. 'जब आवे संतोष धन सब धन धूरि समान' आर्थिक उन्नति की क्या

पिछले बारह महीनों में

★★★ आराधना, खामोशी

★★बालक, दो भाई, सात हिंदुस्तानी, हीर रांझा, गोपी, जीवनमृत्यु, सफर, भाईभाई, नानक नाम जहाज है, सत्यकाम, भुवन शोम, मेरा नाम जोकर

★ प्यार ही प्यार, प्यासी शाम, गुस्ताखी माफ, इश्क पर जोर नहीं, रात और दिन, सचाई, मन की आंखें, बंधन, धरती, दो रास्ते, जवाब, खिलौना, जहां प्यार मिले, कब, क्यूं और कहां?, सच्चा झूठा, पवित्र पापी, मां और ममता, हिम्मत, गीत, शराफत, परदेसी, बचपन, मस्ताना, जानी मेरा नाम, आन मिलो सजना

O माधवी, शर्त, जालसाज, गंवार, दि ट्रेन, हमजोली, मां का आंचल, तुम हसीन मैं जवां, कोई गुलाम नहीं, प्यार

आगे बढ़े जा रहे हों. हम तो भारत को उधार ले जा रहे हैं जहां उसे भूखप्यास ही न लगे. हमारे लिए इस से अधिक संतोष की क्या बात हो सकती है कि आज कुछ पलायनवादी पश्चिमी युवक भी हमारी तरह 'हरे कृष्ण, हरे राम' का कीर्तन करने लगे हैं.

पश्चिमी सभ्यता बुरी है क्योंकि वहां शराब और सिगरेट को बुरा नहीं माना जाता. पर क्या भारत में शराब और सिगरेट की खपत दिन ब दिन नहीं बढ़ती जा रही है? क्या प्राचीन भारत में शराब व भांग पर कोई पाबंदी थी? यदि यूरोप में आज नग्नता का प्रदर्शन किया जाता है, तो हमारे यहां तो प्राचीन काल से यह चला आ रहा है. खजुराहो और कोणार्क मंदिरों के चित्र इस के स्पष्ट उदाहरण हैं. नायक की ऐसी खोखली बातों का जब लंदन के भारतीयों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता तो वह उन्हें भारत ले आता है.

यहां पर भी जब उन पर कोई असर होता नजर नहीं आता तो हिमालय की चोटी पर बने बद्रीनाथ मंदिर में ले जाता है. विज्ञान का छात्र भारत जितनी अवैज्ञानिक बातों में स्वयं विश्वास करता है उस से भी अधिक अवैज्ञानिक घटनाओं द्वारा उन्हें भारतीय सभ्यता में रंगता है.

इन में से एक अच्छेखासे व्यक्ति मिस्टर शर्मा (मदन पुरी) हैं, जिन का लंदन में लाखोंकरोड़ों का व्यापार चलता है, पर वह बिना कोई कारण बताए लंदन वापस जाने से इनकार कर देते हैं. उन्हें यह भी परवा नहीं कि वहां उन के कर्मचारी महीने का वेतन लेने के लिए उन की जान को रो रहे होंगे. लेकिन देखने की बात है कि भारतीय सभ्यता का जो पुजारी अपनी करोड़ों की संपत्ति की परवा नहीं करता, कर्मचारियों का क्या सोचेगा. (वास्तविकता तो यह थी कि वह तो बेचारा मदन पुरी था. उसे तो भारतीय फिल्मों में भारत में ही काम करना है. इंगलैंड जा कर, क्यों रहे. अगर कोई मिस्टर शर्मा होगा तो भारत (मनोज) के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

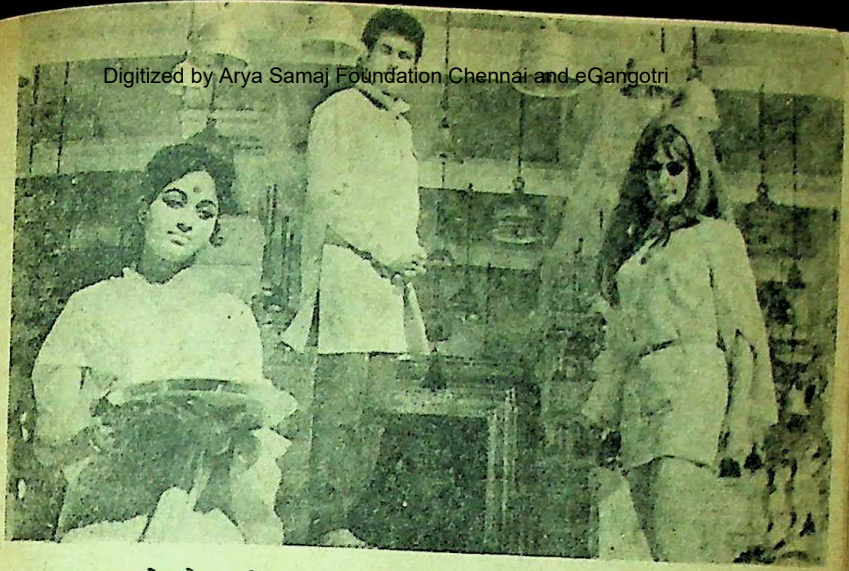

क्या पूरब के लोग 'हरे राम, हरे कृष्ण' के बल पर ही पश्चिम का मुकाबला कर सकेंगे? 'पूरब और पश्चिम' में मनोजकुमार, सायरा बानो और भारती.

कहने से ऐसे रुकेगा भी नहीं.)

मिस्टर शर्मा की लड़की प्रीति (सायरा बानो) है. नायक उसे अपने प्रेम जाल में बांध लेता है. बापबेटी को रोक लिया तो मां (शम्मी) कैसे जाएगी? प्रीति का भाई तो लंदन में ही साधु हो चुका था और बाप के काम में हाथ बंटाने की बजाए 'हरे राम, हरे कृष्ण' करता फिरता था. ऐसा कामचोर युवक भारत में आ कर वापस कैसे जाता? हरनाम (प्राण) वापिस जाने की बारबार सोचता है पर बेटे का मोह उसे भी रोक लेता है. एक ओंकार (प्रेम चोपड़ा) ही रह जाता है जिसे इंगलैंड वापस जाने से रोका नहीं जा सकता था सो निर्देशक उस से हत्या करवा देता है. अब वह भी कैसे बच कर जाएगा!

निर्माता ने शशि गोस्वामी की इस अवैज्ञानिक कहानी में ऐसी घटनाएं डाली हैं जो उस से भी अधिक अवैज्ञानिक हैं जिस से चित्र शुद्ध भावमूलक हो गया है. सब से बड़ी त्रुटि यह है कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति को तर्क के आधार पर ऊंचा साबित करने की बजाए दर्शकों की भावनाओं को उभारने की कोशिश की गई है. जिस से मनोज के संवाद और पट कथा दोनों नारेबाजी और प्रचारवाद की पुट लिए हुए लगने लगते हैं.

नए गीतकार संतोष आनंद के साथ इंदीवर और प्रेम धवन के गीत हैं जिन में एक आध को छोड़ कर कल्याणजी आनंदजी किसी भी गीत को सरस धुन नहीं दे सके. फोटोग्राफी जरूर प्रशंसनीय है, पर वह भी कई जगह फ्लेट हो जाती है. रवि खन्ना की कंपोज की गई मारपीट भी अस्वाभाविक है.

'जय जवान, जय किसान' का गीत गाने वाला 'उपकार' का निर्माता निर्देशक मनोजकुमार 'पूरब और पश्चिम' में आ कर 'रघु पति राघव राजा राम' गाने लगता है, जो बताता है कि निर्माता लालबहादुर शास्त्री से ऊपर उठ कर महात्मा गांधी बनने के लालच में पड़ गया है. पर वह शायद दीवार पर लिखा यह नहीं पढ़ सका कि आज तो लालबहादुर शास्त्री का युग भी बीत चुका है जब कि गांधी तो उस से भी बीस साल पुराना था. देश और जनता की नई मांग को न समझने वाले निर्माता निर्देशक मनोज की हालत उसी चौबे जैसी हुई है जो चौबेजी बनने गए थे पर दुबे भी नहीं रहे थे. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपरेशन कैसे किया जाता है?

श्याम आनंद 'प्रभात'

रोगी को रोग से छुटकारा दिलाने के लिए या तो उसे खाने व पीने के लिए दवा दी जाती है, या उस के शरीर में चीरफाड़ की जाती है. इलाज के लिए शरीर में चीरफाड़ करने को आपरेशन कहते हैं, और इस चिकित्सा प्रणाली को सर्जरी.

आपरेशन एक या दो आदमियों का काम नहीं है. डाक्टरों, नर्सों और विशेषज्ञों का पूरा दल मिल कर यह काम करता है. हरेक व्यक्ति अपने कार्य का विशेषज्ञ होता है.

आपरेशन से पहले रोगी की व उस के रोग की पूरी जांच की जाती है. एक ही रोग होने पर अलगअलग रोगी पर उस रोग का कम या ज्यादा असर हो सकता है. उस रोगी को एक से अधिक रोग भी हो सकते हैं. जिस रोग का इलाज करना हो उस के अलावा दूसरे रोगों का भी खयाल रखना पड़ता है. जैसे मधुमेह (शूगर) वाले रोगियों का यदि किसी दूसरे रोग के कारण आपरेशन करना हो तो पहले मधुमेह को ठीक करते हैं. जिस रोगी को खांसी ज्यादा आती है, उस की खांसी का इलाज पहले करते हैं, आपरेशन वाले रोग का बाद में.

इस सब के लिए रोगी की कई प्रकार से जांच की जाती है. एक्सरे से उस के शरीर के अंदर का चित्र ले लिया जाता है जिस से रोग का ठीक स्थान जानने में सुविधा होती है. खून की जांच से रोग का पता तो लगता ही है, इस से यह भी पता चल जाता है कि रोगी को किस तरह के खून की जरूरत है. आपरेशन के समय उसी तरह का खून पास रखा जाता है ताकि रोगी में खून की कमी हो जाने पर उसे ठीक खून दिया जा सके. खून की रफ्तार और रक्तचाप (ब्लडप्रेशर) से सर्जन की कठिनाइयां दूर हो जाती हैं.

एक्सरे और खून की जांच के अलावा पेशाब की जांच भी होती है और जरूरत पड़ने पर मल व थूक की जांच भी की जाती है. यह सारी जांच पूरी हो जाने पर आपरेशन का दिन नियत कर दिया जाता है.

आपरेशन से पहले वाले दिन की शाम से ही रोगी को आपरेशन के लिए तैयार किया जाता है. पहले दिन की शाम को रोगी को बिलकुल हलका खाना दिया जाता है. खास तौर पर ऐसी चीजें नहीं दी जाती जिस से कब्ज होने का डर हो.

इस क्रम में आप 'सर्जरी की कहानी' (15 नवंबर, 70) तथा 'आपरेशन के औजार' (15 जनवरी, 71) पढ़ चुके हैं. अब पढ़िए आपरेशन करने की आधुनिक विधि.

आपरेशन थियेटर में लिटाते समय रोगी के हाथपांव फूल रहे थे. लेकिन जब आपरेशन हुआ तो उसे पता भी नहीं चला...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

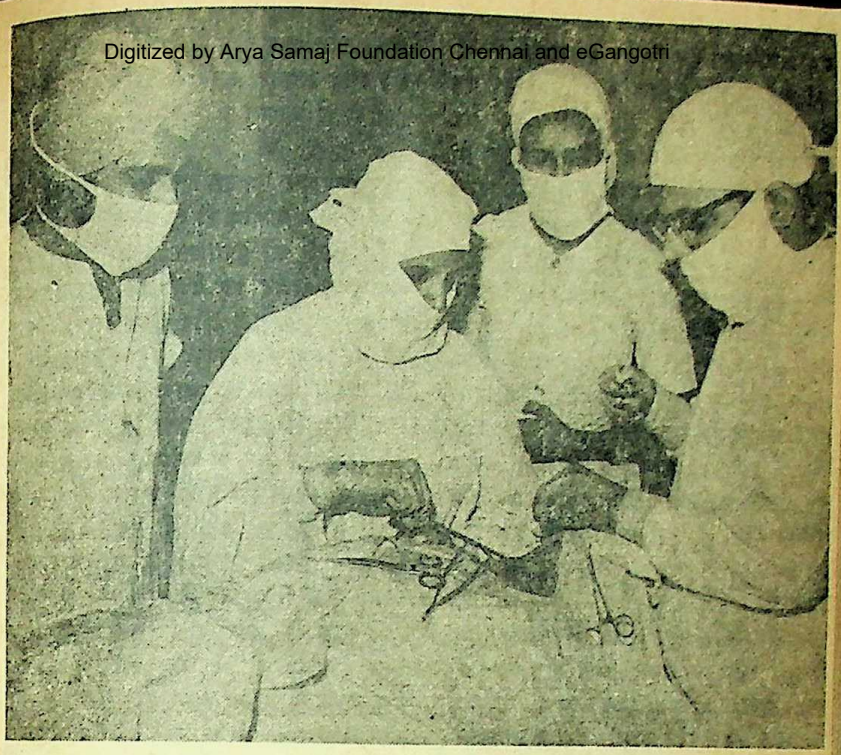

जिस अंग का आपरेशन होना हो उस अंग के बाल सेफ्टीरेजर से साफ कर दिए जाते हैं और उस पर स्पिरिट लगा कर पट्टियां बांध दी जाती हैं ताकि उस अंग पर जीवाणु न रहें.

आपरेशन वाले दिन सुबह रोगी को एनीमा देते हैं जिस से पेट साफ हो जाता है. पेट साफ न हो तो आपरेशन के बाद रोगी का जी मितला सकता है व वमन हो सकता है जिस से टांके टूटने का खतरा तो होता ही है बुखार भी अधिक हो जाता है.

आपरेशन से कुछ देर पहले रोगी को कुछ गोलियां व इंजेक्शन दिया जाता है. इस से रोगी को हलकी नींद आ जाती है. इस तरह वह शारीरिक और मानसिक रूप से पूरी तरह आराम कर लेता है. इसी अवस्था में उसे एक स्ट्रेचर पर लिटा कर 'आपरेशन थिएटर' (आपरेशन करने वाले कमरे) में ले जाते हैं और 'आपरेशन टेबिल' पर लिटा देते हैं.

जिस मेज पर रोगी को लिटाया जाता है उसे किसी भी दिशा में घुमाया जा सकता है. मेज के ऊपर बिजली का एक बहुत बड़ा हंडा (बल्ब) व कई छोटी बतियां फिट होती हैं. इस तरह से रोगी पर पड़ने वाली रोशनी में छाया नहीं बनती. रोगी को इस मेज पर लिटा कर व घुमा कर उसे ठीक जगह पर फिट कर दिया जाता है. नर्स एक बार शरीर के उस हिस्से पर स्प्रिट या कोई जीवाणु-नाशक दवाई लगाती है और आपरेशन वाले हिस्से को छोड़ कर बाकी शरीर को सफेद चादर से ढक देती है.

आपरेशन टेबिल के पास ही एक मशीन में बेहोश करने वाली दवाइयां व गैस होती हैं. एक डाक्टर रोगी को गैस सुंघा कर बेहोश कर देता है. इस मशीन में दवाई से भीगे हुए स्पंज भी रहते हैं. इन स्पंजों को शरीर के जिस हिस्से पर मला जाता है वह सुन्न हो जाता है. इसी तरह किसी अंग को सुन्न करने के लिए इंजेक्शन का प्रयोग भी किया जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

है. किस चीज़ का कब प्रयोग करना है यह आपरेशन परामर्श करता है.

आपरेशन टेबिल से थोड़ी दूर पर छोटीबड़ी कई मेजें होती हैं जिन पर आपरेशन करने के लिए औजार रहते हैं. इन मेजों में पहिए लगे होते हैं और जरूरत पड़ने पर नर्स मेज को सर्जन के पास खींच लाती है या दूर ले जाती है. इन औजारों को भाप द्वारा जीवाणुविहीन कर लिया जाता है.

आपरेशन थियेटर में रहने वाले सर्जन, डाक्टर व नर्स सभी एक खास तरह की सफेद या हरी पोशाक पहनते हैं. पांव में स्लीपर, हाथों में दस्ताने. नाक पर नकाब पहनना हरेक व्यक्ति के लिए जरूरी होता है. इस से डाक्टरों के शरीर पर के जीवाणु रोगी के घाव में नहीं पहुंच पाते.

आपरेशन शुरू होने से पहले एक डाक्टर रोगी का ताप (टेंपरेचर) लेता है, नाड़ी देखता है और रक्तचाप का रिकार्ड रखता है. इन सब बातों की जांच आपरेशन के दौरान भी की जाती है.

मुख्य सर्जन ही रोगग्रस्त हिस्से में चीरा देता है. जिस हिस्से को बाहर निकालना हो या बदलना या कोई और काम करना हो, मुख्य सर्जन ही करता है. उस के सहायक चाहे डाक्टर हों, चाहे नर्स, चाहे फर्श साफ करने वाला नौकर, सभी प्रशिक्षित होते हैं. सर्जन को बोलने की कोई जरूरत नहीं पड़ती. सारा काम इशारों से चलता है.

आपरेशन करने वाले डाक्टरों के साथ कभीकभी छात्रों को भी आपरेशन देखने की इजाजत दे दी जाती है. अमरीका आदि बड़े देशों में टेलीविजन का प्रबंध होता है और छात्र सारी क्रिया को परदे पर देख सकते हैं.

आपरेशन के बाद घाव को टांके लगा कर सी दिया जाता है. फिर रोगी को रिकवरी रूम में लाया जाता है. इसी कमरे में रोगी को होश आता है. यदि रोगी में खून की कमी हो गई हो तो खून भी दिया जाता है. होश में आने पर उसे अपने वार्ड में पहुंचा दिया जाता है.

वार्ड में पहुंचने के बाद एक बार फिर रोगी के शरीर की जांच होती है. इस जांच से देखा जाता है कि उस का रोग ठीक हुआ है या नहीं, या आपरेशन के कारण अन्य कोई और गड़बड़ी तो नहीं हुई.

धीरेधीरे रोगी की कमजोरी कम होती जाती है और जब वह स्वस्थ हो जाता है तो उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी जाती है. ●

आप के बच्चों के लिए
अनुपम उपहार
चंपक
नन्हे नागरिकों का मनोरंजक मासिक
दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली

अखिल भारतीय प्रतियोगिता में
प्रथम पुरस्कार प्राप्त
अचार 6 रंगा (रजि.)
लाहोरी अचार, गोभी, शलगम (मीठा)
सरदार सिंह कुलदीप सिंह गांधी
रबारी बावली, दिल्ली-6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

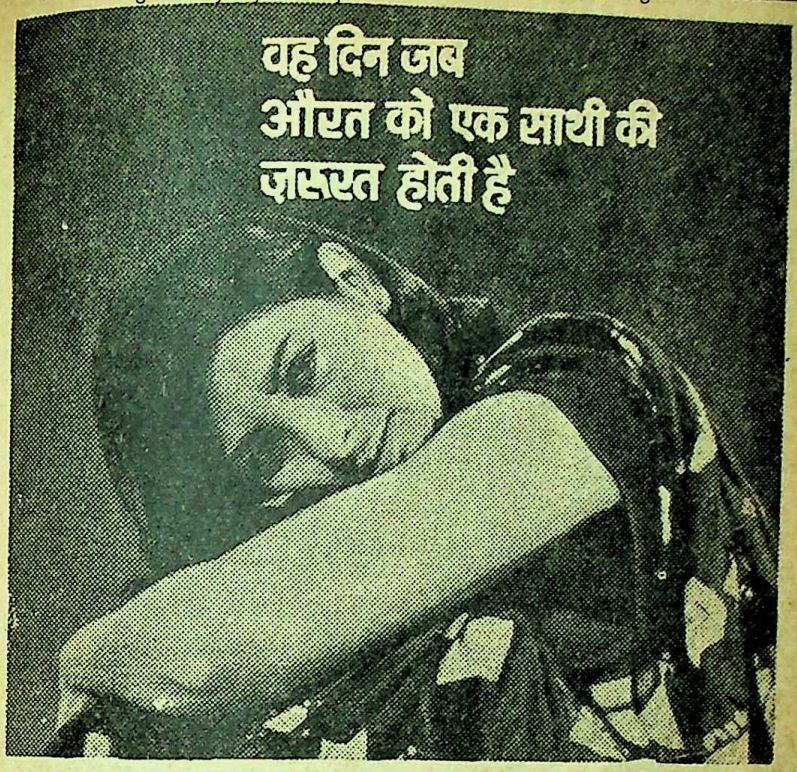

यह दिन भी और दिनों की ही तरह हैं...लेकिन ऐसा नहीं है। आप चाहती हैं कि कोई ऐसा साथी हो जो आपकी पीड़ा को समझ सके। जो आपको दर्द, परेशानी और उदासी से छुटकारा दिलाये। ऐसा साथी जो उन दिनों की पीड़ा भुला देने में आपकी मदद करे। आपका ऐसा साथी माइक्रोफ़ाइन्ड 'ऐस्प्रो' ही है, जो आपको इन सभी तकलीफ़ों से तुरंत आराम पहुंचाता है।

'ऐस्प्रो' शीघ्र असर करता है, क्योंकि यह माइक्रोफ़ाइन्ड है। आराम पहुंचाने वाले तत्वों को ३० गुना अधिक बारीक किया गया है, जिससे वे शीघ्र घुलकर जल्द और अधिक देर तक आराम पहुंचा सकें। माइक्रोफ़ाइन्ड 'ऐस्प्रो' आज के उपलब्ध दर्द निवारकों में अत्यंत आधुनिक है, और सुविधाजनक फ़ॉइल स्ट्रिप में मिलता है।

माइक्रोफ़ाइन्ड 'ऐस्प्रो' दर्द को जल्दी खींच निकालता है और परेशानी से आराम पहुंचाता है।

'ऐस्प्रो' रखिए-निश्चिन्त रहिये

A.G.41 HN (R)

मिनोलता ® उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

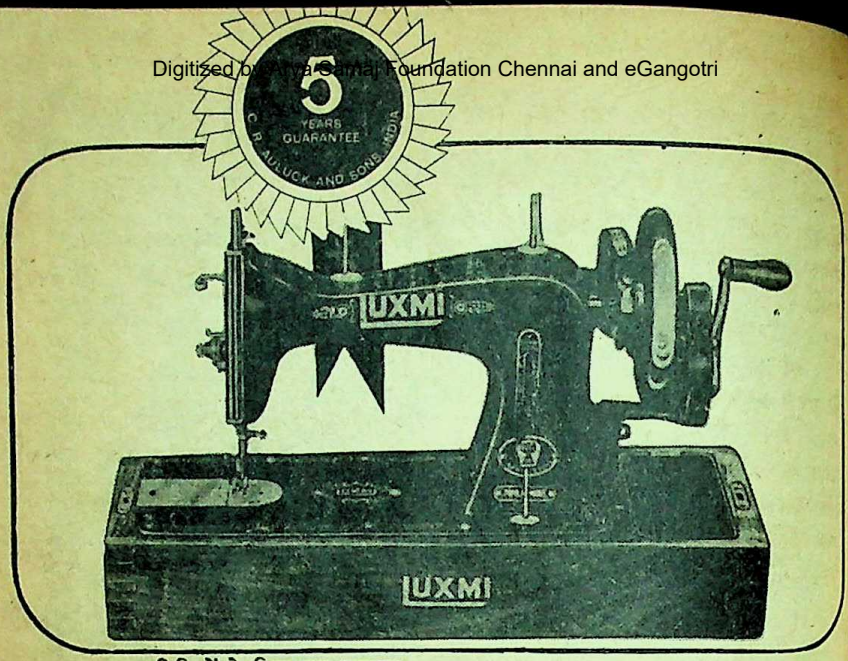

गृहिणियों के लिए एक वरदान

LUXMI सिलाई मशीन

उच्च स्तर की कार्यकुशलता के लिए विशेषज्ञों की देखरेख में निर्मित.

विशेषताएं :

- अधुनातन सेंट्रल बोबिन सिस्टम.
- रेशमी, सूती, ऊनी, टेरीलीन व मोटे कपड़ों की सिलाई कर सकती है.
- सभी स्तरीय पुरजे इस मशीन में डाले जा सकते हैं. हाथ से चलने वाले उपकरणों के लिए स्टैंड या बिजली की मोटरों से युक्त तीनों रूपों में उपलब्ध हैं.

सी. आर. औलक एण्ड सन्स पोस्ट बाक्स २९, ४२६ इंडस्ट्रियल एरिया ए. लुधियाना-३

लक्ष्मी पंखे व एम्ब्राइडरी मशीन के निर्माता

FORTNIGHTLY OF NATIONAL RESURGENCE :

CARAVAN

Outspoken, provocative articles on current affairs; outstanding short stories of Indian life and times—a "must" reading for a wide-awake, thinking Indian.

★ INSPIRING ★ EDUCATIVE ★ ENTERTAINING

At all newsstands. Published by Delhi Press, New Delhi-1

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप के पत्र

बरसों से आप की संपादन कला और व्यवस्था पटुता का प्रशंसक रहा हूं. आप ही हैं कि सरिता को यहां तक लाए हैं. मैं उसे हिंदी की बहुत बड़ी सफलता मानता हूं और उस का श्रेय आप को है. संस्कृत में एक कहावत है कि 'क्वचित रूपवती सती' कोई ही सुंदरी सती रह पाती है. आप ने सरिता को रूपसी बनाया पर रूपजीवा नहीं बनने दिया.

सरिता की दुकान पर आप के बिकने के बहुत अवसर थे लेकिन आप बिकते तो क्या, झुके भी नहीं. आप आप ही हैं और सरिता सरिता ही है. मुझे आशा है कि आप बहुत दिनों तक हमारी पत्रकारिता को शोभामय बनाते रहेंगे.

—कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, सहारनपुर

✦

रजत जयंती अंक जैसी सामग्री सचमुच ही अन्य पत्रिकाओं में दुर्लभ है, किंतु 'भारतीय जनमानस के शोषक' (लेख : सखा बोरड़) जहां एक ओर उन के उदास विचारों का प्रकटीकरण करता है वहां दूसरी ओर उन के वाकजाल का दिग्दर्शन भी देता है. युगों से निर्मित भारतीय धार्मिक चिंतनधारा ने यदि भारत को रसातल में पहुंचाया है तो फिर ऐसी कौन सी चिंतनधारा है जिस को अपना कर भारत उन्नति के शिखर पर चढ़ सकता है. उन की नजर में अध्यात्म, धर्म व नैतिकता यदि पतन का मार्ग है तो अधर्म और अनैतिकता को अपना कर ही हम लोग अपनी उन्नति करें.

भारत की हर चीज में जो लोग प्रगति के नाम दोष ढूंढ़ने की चेष्टा करते हैं उन्हें अब हम क्या कहें. यहां के राजनीतिज्ञ, नेता, रिषिमुनि व साहित्यकार (व्यापारी वर्ग का नाम उन्होंने नहीं लिखा, शायद कुछ प्रलोभन हो) सभी उन की दृष्टि में पाखंड, मनोमालिन्य व प्रतिहिंसा की सृष्टि करते हैं तो सखा साहब के ये विचार भी भारतीय जनमानस को कोई नई दृष्टि प्रदान करेंगे, ऐसा लगता नहीं.

—बाबूलाल अग्रवाल, फोटोग्लोस्टर

हिंदी में गृहस्थों के लिए सरिता एक मात्र ऐसी पत्रिका है, जो अपनी सामग्री से नए समाज का निर्माण करने की दशा में अग्रसर हो रही है.

—कमलेश, कुरुक्षेत्र

✦

रजत जयंती अंक अपनेआप में एक अनूठा अंक रहा. इस अंक में लेख, कहानियां व अन्य सामग्री प्रेरणादायक व शिक्षाप्रद रही.

'दीपशिखा' (एकांकी : रेवतीशरण शर्मा) को बहुत तन्मयता से पढ़ा. ऐसा लगा कि अगर यह एकांकी इस अंक में नहीं होता तो शायद यह विशेषांक अधूरा ही रहता. 'स्वीडन से चिट्ठी' में देश की आंतरिक स्थिति को खूब खुल कर बताया गया है. काश देश इस लेख से कुछ सबक ले सके.

—गोपाल पेसवानी, धौलपुर

✦

भारत का अंधविश्वासी समाज अपनी रूढ़िवादी परंपराओं से सबक ले कर अपनी प्रगति कर रहा है. इस का प्रमाण ही यह है कि आज सरिता गौरवशाली 25 वें वर्ष में प्रवेश कर रजत जयंती मना रही है.

—क. क. उपाध्याय, जबलपुर

✦

सरिता की पाठ्यसामग्री भारतीय संस्कृति पर कितनी दृढ़ रूप से आधारित है इस का इस की बढ़ती लोकप्रियता स्वयं ही प्रमाण है, और इस का पाक्षिक रूप धारण करना इस का ज्वलंत उदाहरण है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता की शताब्दी मनाई जाएगी, उस दिन की प्रतीक्षा है और यह आशा की जाती है कि यह अपनी तार्किक अकाट्य उक्तियों से भारतीय संस्कृति को कपोल-कल्पित आधार से उठा कर भौतिक उपलब्धियों वाले वैज्ञानिक आधार पर दृढ़ता से टिका सकने में समर्थ हो सकेगी.

—रामदत्त थानवी, जोधपुर

✦

रजत जयंती अंक में प्रकाशित 'सिख समाज किस ओर?' (लेख : अर्जुनसिंह बख्शी), पढ़ कर सिखों को अपनी रूढ़िवादिता के बारे में सोचने का अवसर मिलेगा.

—हरजीतसिंह भूटानी, तमकुर

✦

1 जनवरी, 71 अंक में 'मेरा बचपन : मेरा गांव' (आत्मकथा : रामेश्वर टांटिया) की शुरुआत बहुत ही नाटकीय ढंग से की गई है. आत्म कथा में अपने परिवार की लंबी चौड़ी गाथा का लोभ विरले लेखक ही संवरण कर पाते हैं. श्री बच्चन की आत्मकथा में भी यही कमजोरी है.

श्री टांटिया ने अपने परिवार और स्वयं को सामाजिक जीवन की पृष्ठभूमि में रखा है, जो एक उच्च स्तर के लेखक के योग्य ही है.

बीकानेर—राजस्थान के तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक जीवन और सरदार शहर के तत्कालीन जनजीवन की दिलचस्प झांकी एक उपन्यास का मजा देती है. श्री टांटिया एक साधारण आदमी से एक बड़े उद्योगपति बने हैं. उन की आत्मकथा ही प्रेरणाप्रद सिद्ध होगी.

—इंदु दुगड़, कानपुर

✦

1 जनवरी, 71 अंक के 'सरित प्रवाह' में प्रकाशित गोवध संबंधी संपादकीय विचारों से मैं सहमत हूं. गो माता के नाम पर जनता को किस तरह से बेवकूफ बनाया जाता है, इस का एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूं.

दिल्ली के एक उपनगर में कुछ साधु गायों को साथ ले कर मकानों के चक्कर लगाते हैं और गो माता के नाम पर धन मांगते हैं. उस धन को वे अपने काम में लाते हैं और गायों का दूध भी पीते हैं. गाएं दिन भर में जो चरें वही बहुत है.

—दीवानसिंह, नई दिल्ली

✦

1 जनवरी, 71 अंक में प्रकाशित '1970 का हिंदी साहित्य' (लेख : सुदर्शन चोपड़ा) में लेखक ने उपन्यासकार श्री रानू के किसी भी उपन्यास का उल्लेख नहीं किया.

मैं लेखक की जानकारी के लिए यह बता देना चाहता हूं कि श्री रानू जैसे लेखकों के उपन्यास शायद ही किसी से पीछे हों. श्री रानू का उपन्यास 'सूर्यमुखी' तो संसार के किसी भी उपन्यास का मुकाबला कर सकता है.

—आई. यू. शाह, गाजीपुर

✦

15 दिसबंर, 70 अंक में प्रकाशित 'पति परमेश्वर' (लेख : वीणा दीपाली) पढ़ कर लेखिका की विक्षिप्त मानसिक स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है. उन्हें इसी अंक में प्रकाशित 'दर्द' (कहानी : वीरेंद्र सक्सेना) पढ़ने पर शायद कुछ मिल जाए. 'दर्द' नारी समाज के दृष्टिकोण को विशाल करने में सहायता करती है. —बाला बवेरिया, जबलपुर

✦

1 जनवरी, 70 में प्रकाशित 'मृगजल' (कहानी : रामदेव श्रीवास्तव) में कालिज के एक जिम्मेदार प्रिंसिपल का जो चरित्र दिखाया गया है, वह सर्वथा अविश्वसनीय है.

—प्रेम आहूजा, अंबाला छावनी

पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादक,
सरिता,
दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-55

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागते सपने

(पृष्ठ 50 से आगे)

भीतर ही उसे इतनी खुशियां मिली थीं कि उसे अपने पागल होने का भय होने लगा था. पहले विवाह हुआ फिर एक लड़के की मां बन गई. दोनों ने निर्णय किया, सुधा नौकरी छोड़ देगी, बच्चे का पालनपोषण करेगी.

पर एक दिन खुशियों का वसंत पतझड़ में बदल गया. अपने पति और चार मास के बच्चे के साथ वह चिड़ियाघर देख कर लौट रही थी. पति स्कूटर तेज रफ्तार से दौड़ा रहे थे. एकाएक सुधा को झटका लगा और बच्चा उस के हाथ से दूर जा गिरा. वह चीख उठी.

जब सुधा की आंख खुली, उस ने खुद को अस्पताल में पाया. उस के मस्तक पर पट्टियां बंधी थीं. बाईं कलाई टूट गई थी. अपने गिर्द डाक्टरों और नर्सों को देख वह घबराई, जब कुछकुछ याद आया तो बोली, "मेरे पति कहां हैं! मेरा बच्चा?"

"सब ठीक हैं," डाक्टर की बगल में खड़े सुधा के भाई सुरेंद्र ने भर्राए स्वर से कहा, "तुम चिंता न करो!"

तीसरे दिन सुधा को ज्ञात हुआ कि उन के स्कूटर को डी. टी. यू. की बस ने चकनाचूर कर दिया था. पति की मृत्यु वहीं हो गई थी और बच्चा! वह भी वहीं ठंडा हो गया था. सुधा ने रोतेरोते कमरा सिर पर उठा लिया था. पर रोने से क्या होता था, उसे सब्र करना पड़ा.

लगभग 15 दिन बाद वह ठीक हो कर घर आ गई. उस की छुट्टी अभी शेष थी पर घर उसे अब काटने को दौड़ता था. उस ने अस्पताल जाना शुरू कर दिया. अपनी ड्यूटी संभाल ली.

वहां बच्चों को देखती तो उसे हर बच्चा अपना बच्चा लगता. वह बच्चों को दिन भर गोद में लिए कमरों में टहलती. वही उस का घरबार बन गया था. वहीं रहती, दोदो दिन तक घर न जाती. अपना बच्चा खोने पर वह हर बच्चे को देख अपने सपने संजोती थी पर उस के सपने मर चुके थे.

उसे विधवा हुए छः मास बीत गए थे. लेकिन तब भी उस के दूध उतरता था. उस का सारा ब्लाउज भीग जाता था. उस समय सुधा अपनी धोती में मुंह छिपा कर रोती. उन्हीं दिनों उस की सहायक डाक्टर शर्मा ने विवाह किया. डाक्टर सुधा ने रात की ड्यूटी करनी आरंभ कर दी.

उस रात बहुत बारिश हो रही थी. कमरों के बाहर पानी जमा हो गया था. डाक्टर सुधा अपने कमरे में बैठी थी. दिल बारबार अपने पति और बच्चे की तरफ दौड़ रहा था. इसलिए मन बहलाने के लिए उस ने ट्रांजिस्टर बजा दिया था. तभी घंटी बज उठी. डाक्टर सुधा अपनी कुरसी छोड़ बाहर जाने लगी.

शीशे में से उस ने एक छाया देखी जो भीगती हुई बाहर चली गई थी. तभी एक आया पानी में भीगती गई और पालने में से बच्चा उठा कर ले आई. बच्चा जोरजोर से रो रहा था. डाक्टर सुधा भी पास आ गई. आया बोली, "चमारों की छोकरी है, मैं ने उसे पहचान लिया था, मोहिनी थी."

"वह कौन थी, यह बताने की जरूरत नहीं है, सीता," डाक्टर सुधा आया से बोली, "छोड़ने वाली छोड़ गई, हमें इसे पालना है."

"डाक्टर साहब, यह हरामी औलाद है, पता नहीं मोहिनी ने कितने यार बना रखे हैं. महल्ले भर में बदनाम है." सीता कहती रही. डाक्टर सुधा ने उसे डपट दिया वह चुप हो गई.

बच्ची रो रही थी उसे देख कर डाक्टर बोली, "इस के दूध का प्रबंध करो!"

आया ने आ कर बच्ची संभाल ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अपने पालने में डाल कर उसे दूध पिलाने लगी. पर बच्ची थी कि चुप होने का नाम ही नहीं लेती थी.

रात काफी बीत रही थी. डाक्टर सुधा अपने कमरे में आ गई. कुरसी पर बैठेबैठे उसे नींद आने लगी तो वह उठ कर अपने बिस्तर पर चली गई. कई बच्चों के रोने का स्वर उस के कानों में पड़ रहा था पर इस से उस की नींद उचाट नहीं हुई. वह आदी हो चुकी थी. बिस्तर पर पड़ते ही नींद आ गई.

रात का अंतिम पहर था जब डाक्टर सुधा की नींद खुल गई, उस का ब्लाउज दूध उतरने के कारण भीग गया था. वह तौलिए से अपनी गीली कमर पोंछने लगी. फिर उस ने सोने का प्रयत्न किया पर नींद नहीं आई. बच्चे भी सब सो रहे थे पर एक बच्चे के रोने का स्वर वह सुन रही थी. डाक्टर सुधा को संदेह हुआ कि अवश्य ही आया सो रही होगी, तभी बच्चा रो रहा है. वह यह देखने के लिए उस कमरे की तरफ चल दी, जहां से रोने का स्वर आ रहा था.

पर उस ने देखा. माया बच्चे को कंधे से लगाए कमरे में चक्कर लगा रही थी. बच्चा चुप होने का नाम नहीं लेता था. डाक्टर को देखते ही बोली, "ऊपर का दूध पीती नहीं, इस की मां कहां से पकड़ कर लाऊं. मैं तो हार गई हूं. डाक्टर साहब! यदि इस ने दूध न पिया तो जल्दी ही चलती बनेगी."

यह वही बच्ची थी जिसे बारिश में भीगती मोहनी छोड़ गई थी. डाक्टर सुधा ने बच्ची को देखा. रोने से उस के नन्हे-नन्हे गालों पर आंसुओं की पगडंडियां सी बन गई थीं. रोतेरोते वह हिचकियां लेने लगी थी. डाक्टर का मन पसीज उठा. चम्मच उठा कर उसे स्वयं दूध पिलाना चाहा पर उस ने दूध नहीं पिया बल्कि और बिलख कर रोने लगी.

डाक्टर सुधा उसे कंधे से लगा कर कमरे में टहलने लगी तभी उस ने महसूस किया कि बच्ची अपने नन्हेनन्हे हाथ उस के वक्ष पर फेर रही थी. डाक्टर ने एकाएक उसे अपनी गोद में लिटाया और अपना दूध पिलाने लगी. जैसे बच्ची को अमृत मिल गया. वह तुरत चुप हो गई. डाक्टर के चेहरे पर मुसकान खेल गई. पर माया का चेहरा उतर गया.

"यह क्या, डाक्टर! यह अछूतों का बच्चा है, हरामी है, पता नहीं इस के रगों में कितनों का खून बह रहा है. अपना दूध इसे मत पिलाओ जब इसे इस की मां ने ही दूध नहीं दिया..."

"माया, जानती हो तुम क्या कह रही हो. तुम्हारा काम बच्चे पालना है, यह देखना नहीं कि वह अछूतों का है या ठाकुरों या सेठों का. यहां जो भी बच्चा

आता है. वह हमारे लिए इनसान का बच्चा होता है." डाक्टर स्नेह से बच्ची की पीठ थपथपाती बोली, "समाज के भय से जो भी इसे यहां छोड़ गई है, इस आशा से नहीं कि बच्चा दूध के लिए मरेगा! वह जानती है, यहां काम करती हर स्त्री इस बच्चे की मां है. इसे जीवन देना हमारा फर्ज है."

फिर डाक्टर सुधा बच्चे को गोद में लिए अपने बिस्तर पर आ गई.

सुबह वही बच्ची मुसकरा रही थी. डाक्टर सुधा का दूध पी कर वह पलने लगी और जब एक दिन डाक्टर के दूध उतरना बंद हो गया तब तक उस ने ऊपर का दूध पीना सीख लिया था.

वही बच्ची बड़ी हो कर मधुर बन गई. उस की रगों में अब डाक्टर सुधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

का रक्त भी था. उस ने उसे नया जीवन दिया था. वह यह भी जानती थी एक दिन उसे कोई गोद ले लेगा और वह भी चली जाएगी.

लेकिन ढाई वर्ष बीत गए, मधुर की कुरूपता उस के लिए अभिशाप सिद्ध हुई. उसे किसी ने भी गोद नहीं लिया. वह जब अन्य साथियों को अजनबी लोगों की गोद में जाता देखती तो तोतली भाषा में डाक्टर सुधा से पूछती, "वो...कहां ले जा रहे हैं?"

"वो उस के मम्मीडैडी हैं. साथ ले जा रहे हैं."

"मेरी मम्मी कब आएगी?"

"तेरी मम्मी को चिट्ठी लिखी है, वह भी जल्दी ही आएगी."

पर यह उत्तर बारबार सुन कर मधुर के कोमल व नन्हे मन को ठेस लगती थी एक दिन फिर यही उत्तर सुना तो रो पड़ी, "तुम झूठी हो, मेरी मम्मी क्यों नहीं आती."

"रोती क्यों हो, तेरी मम्मी तो कब की आई हुई है, मैं जो हूं तेरी मम्मी!"

"सच," मधुर उस की टांगों में लिपट कर बोली, "मम्मी, मेरी मम्मी!"

उस दिन से मधुर डाक्टर सुधा को मम्मी कहने व मानने लगी थी. हमेशा उस के साथ रहती, साथ खाती, साथ सोती, बेहद घुलमिल गई. डाक्टर सुधा को भी लगता जैसे सचमुच ही मधुर उस की अपनी बच्ची थी, उसी के पेट से जनमी थी.

अब वही मधुर तीन वर्ष सात मास साथ रहने के बाद अनाथालय जा रही थी. डाक्टर सुधा जाने कितने ऐसे बच्चों को मांबाप दे चुकी थी उस की तमाम जिंदगी में यह पहला अवसर था कि उस ने मधुर को अनाथालय के हवाले कर दिया था.

मधुर का स्वर उस के कानों में गूंज रहा था, "मम्मी, मुझे ये लोग दूर ले जा रहे हैं! मुझे बचाओ, मम्मी! ओ, मम्मी..." वह रोती हुई चिल्ला रही थी.

डाक्टर सुधा कुरसी पर बैठी सब सोच रही थी. मधुर की पुकार बारबार उस की तंद्रा तोड़ रही थी. मधुर का स्वर सुन वह अधिक न बैठ सकी. लपक कर उठी और खिड़की में से देखने लगी.

मधुर ने डाक्टर सुधा को खिड़की में देख लिया था वह अपने दोनों हाथ हिला कर डाक्टर सुधा को पुकारने लगी. "मम्मी के पास जाऊंगी...छोड़ दो मुझे," वह अपने हाथ पांव चलाती हुई मचलने लगी. जब कोई चारा न मिला तो छोटेछोटे हाथ उस आदमी की पीठ पर बरसाने लगी, पर व्यर्थ. 'गेट के बाहर मोटर खड़ी थी. उस तक वे अनाथालय के लोग पहुंच चुके थे. कार का द्वार खोल कर वह अंदर बैठ गए. मधुर ने खिड़की में से सिर और हाथ निकाल कर डाक्टर सुधा को पुकारा, "मम्मी, मुझे बचा लो, मैं तुम्हारे पास रहूंगी."

डाक्टर सुधा अपना मन अधिक कठोर न कर सकी. वह मधुर का क्रंदन और आंसू अधिक नहीं देख सकती थी. पूरे जोर से चिल्लाई "ठहरो!" वह खिड़की को छोड़ द्वार की तरफ लपकी.

कार के पास पहुंच कर ही उस ने दम लिया. मधुर को बांहों में ले कर बोली, "मधुर अनाथालय में नहीं जाएगी, मैं इसे गोद लेती हूं यह मेरी बच्ची है..."

उस ने मधुर के आंसुओं से नहाए चेहरे पर चुंबनों की बौछार कर दी. मधुर सुबकियां लेती रो रही थी. ●

पुरुषार्थ

कुरीति के अधीन होना कायरता है उस का विरोध करना पुरुषार्थ है.

—गांधी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बवासीर
की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये
हडेन्सा
इस्तेमाल कीजिए!

DOL-327 HIN.

वैवाहिक विज्ञापन

सरिता सारे देश में एक लाख से ऊपर समृद्ध कुटुंबों में पढ़ी जाती है. इसलिए उपयुक्त वरवधू तलाश करने के लिए 'सरिता' में वैवाहिक विज्ञापन बहुत सुविधाजनक व कमखर्च साधन है.

पाठकों की सेवा के लिए साधारण विज्ञापन दरों की अपेक्षा वैवाहिक विज्ञापनों की दर भी बहुत कम रखी गई है.

वैवाहिक विज्ञापनों के प्रकाशन के नियम निम्नलिखित हैं:

● वैवाहिक विज्ञापन की दर ४५ पैसे प्रति शब्द प्रति अंक है. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन अंगरेजी पाक्षिक 'कैरेवान' में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल १० पैसे प्रति शब्द अतिरिक्त देना होगा.

● मूल विज्ञापन के साथ 'विज्ञापन नंबर. . . मारफत, सरिता, नई दिल्ली-५५' शब्द भी आवश्यक हैं. विज्ञापनदाता के निजी पते वाले विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते.

● वैवाहिक विज्ञापनों का मूल्य मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर से भेजिए. चैक स्वीकार नहीं किए जाते.

● विज्ञापन यथासंभव शीघ्रता से प्रकाशित किए जाते हैं. उत्तर आतेआते और विज्ञापनदाताओं के पास उन्हें भेजने में भी कुछ समय अवश्य लग जाता है. किसी विशेष अंक में विज्ञापन प्रकाशित कराने के लिए प्रकाशन तिथि से एक महीना पहले आदेश भेजना आवश्यक है.

● विज्ञापनदाताओं के पास उत्तर भेजने के लिए अलग से कोई शुल्क नहीं लिया जाता.

● विधवाओं और परित्यक्ताओं के वैवाहिक विज्ञापन आधे मूल्य पर स्वीकार किए जाएंगे.

विज्ञापन का शुल्क व विवरण साफसाफ लिख कर, इस पते पर भेजिए:

विज्ञापन विभाग,
सरिता, नई दिल्ली-५५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वैवाहिक विज्ञापन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

23 वर्षीया, बी. ए., सुशील, सुंदर, गोरी, स्वस्थ, ब्राह्मण कन्या हेतु उच्च शिक्षित, छोटे परिवार का या एकाकी, कन्या के गुणों को प्राथमिकता देने वाले ब्राह्मण युवक की आवश्यकता है. लिखें : मारफत वि. नंबर 726, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

26 वर्षीय, अग्रवाल, सेकंड क्लास सिविल जज, व फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट हेतु योग्य कन्या चाहिए. लिखें : मारफत वि. नंबर 737, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

27 वर्षीय, अहमदाबाद के गुजराती वैश्य, प्रतिष्ठित, सुसंपन्न विद्वान, एम. ए., पीएच. डी. प्रोफेसर के लिए सुशिक्षित, गौरवर्ण, शाकाहारी, सुंदर वधू चाहिए. जाति व प्रांत का बंधन नहीं. फोटो सहित लिखें : मारफत वि. नंबर 738, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

26 वर्षीया, एम. एससी. तथा बी. एड. कन्या के लिए वर की आवश्यकता है. जाति का कोई बंधन नहीं. लिखें : मारफत वि. नंबर 739, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

23 वर्षीय, माथुर वैश्य, एम. काम., बैंक में कार्यरत नवयुवक के लिए सुंदर, सुशील, सुशिक्षित तथा स्वस्थ वधू चाहिए. फोटो व जन्मपत्री अवश्य भेजें. लिखें : मारफत वि. नंबर 740, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

25 वर्षीय, उत्तर प्रदेशीय, खत्री सिख, फर्म प्रोप्राइटर, 1,500 रुपए माह की निश्चित आय, स्वस्थ, सुंदर, 5'-10'' कद वाले युवक के लिए अनुपातित ऊंचाई वाली स्वस्थ, सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्य में दक्ष, सिख परिवार की कन्या चाहिए. फोटो व पूर्ण विवरण सहित पत्रव्यवहार करें : मारफत वि. नंबर 741, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

25 वर्षीय, श्रीवास्तव कायस्थ, मध्य प्रदेश सरकार की सेवा में कार्यरत, 250 रुपए मासिक वेतन पाने वाले नवयुवक के लिए शिक्षित, सुंदर कन्या की आवश्यकता है. कन्या की उमर 18 वर्ष से अधिक न हो. लिखें : मारफत वि. नंबर 742, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, सहायक विकास अधिकारी, बीसा अग्रवाल, वर के लिए वधू तथा 21 वर्षीया एम. ए., कन्या के लिए वर की आवश्यकता है. पूर्णविवरण सहित पत्रव्यवहार करें : मारफत वि. नंबर 743, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

26 वर्षीय, बी. एससी. कैमिकल टेक्नोलोजी (यू. के.) वीर राजपूत के लिए सुंदर, सुशील व सुशिक्षित वधू चाहिए. दहेज का बंधन नहीं. और उक्त युवक की 19 व 21 वर्षीया, सेकंडरी तक शिक्षित बहनों के लिए सुंदर, व सुशिक्षित वरों की आवश्यकता है. अध्यापक व इंजीनियर को प्राथमिकता दी जाएगी. सगाई भारत में तथा विवाह इंगलैंड में होगा. फोटो सहित पूर्ण विवरण शीघ्र लिखें : मारफत वि. नंबर 744, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

25 वर्षीय, मैट्रिक, कृषि में संलग्न हरियाणा वासी, चौहान राजपूत युवक के लिए स्वस्थ, सुंदर, सुशील व गृहकार्यों में दक्ष सजातीय कन्या चाहिए. लिखें : मारफत वि. नंबर 746, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

30 वर्षीय, नागपुर निवासी, 300 रुपए मासिक आय वाले पंजाबी खत्री वर के लिए वधू की आवश्यकता है. दहेज बंधन नहीं. लिखें : मारफत वि. नंबर 747, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

मध्य प्रदेश शासकीय सेवा में रत 23 वर्षीय, अग्रवाल डाक्टर के लिए सुंदर, मेडिकल स्टूडेंट या ग्रेजुएट वधू चाहिए. जाति बंधन व दहेज नहीं. फोटो सहित लिखें : मारफत वि. नंबर 748, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

30 वर्षीय, तलाकशुदा प्रजापति, वरिष्ठ केंद्रीय क्लास वन गजडेट अफसर के लिए योग्य वधू चाहिए. जाति व दहेज बंधन नहीं. लिखें : मारफत वि. नंबर 749, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

20 वर्षीया, भटनागर कायस्थ, संपन्न परिवार की एम. ए. (इंगलिश), सुंदर व आकर्षक व्यक्तित्व वाली कन्या के लिए सुयोग्य वर की आवश्यकता है. लिखें : मारफत वि. नंबर 750, सरिता, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रियदर्शिनी, माहेश्वरी कन्या के लिए, जिस का रंग बहुत गोरा, शरीर इकहरा और कद 5'-4" है, उपयुक्त वर की आवश्यकता है. कोई बंधन नहीं. प्राध्यापक को प्राथमिकता. फोटो सहित शीघ्र पत्रव्यवहार करें : मारफत वि. नंबर 753, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

25 वर्षीया, राजकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्यापिका, संगीत व चित्रकला में स्नातक, गृहकार्य में कुशल, कद 5'-6" शरीर इकहरा, रंग गेहुंआ—सांवला, चेहरे पर हलके चेचक के दाग वाली राजपूत कन्या के लिए शाकाहारी वर की आवश्यकता है. जातिबंधन व दहेज नहीं. भाई सब इंसपेक्टर, बहनोई प्रोफेसर. फोटो तथा पूरे विवरण सहित पत्रव्यवहार करें : मारफत वि. नंबर 754, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

19 वर्षीया, माहेश्वरी, इंटर में पढ़ रही सुशील कन्या के लिए वर चाहिए. योग्यतानुसार अच्छी सर्विस या व्यापारउद्योग स्थापित करने में सहयोग संभव है. लिखें : मारफत वि. नंबर 755, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

एक बड़े व्यवसायी, 22 वर्षीय, श्रीवास्तव, बी. काम. नवयुवक के लिए सुयोग्य, गृहकार्य में निपुण वधू की आवश्यकता है. लिखें : मारफत वि. नंबर 756, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

24 वर्षीय, पंजाबी खत्री, ग्रेजुएट व एम. ए. में पढ़ रहे, स्थायी सरकारी कर्मचारी, 300 रुपए प्रति माह वेतन पाने वाले, स्वस्थ एवं सुंदर, नवयुवक के लिए विधवा, परित्यकता या शिक्षा, दहेज आदि का बंधन कोई नहीं. लड़के की टांग पोलियो के कारण कमजोर है, जिस के कारण से लाठी का सहारा ले कर चलता है. लिखें : मारफत वि. नंबर 757, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

25 वर्षीय, ग्रेजुएट 350 रुपए प्रति माह पाने वाले, स्थायी राजकीय कर्मचारी, जो एल. एल. बी. प्रथम वर्ष का विद्यार्थी भी है, गोयल गोत्रीय (पिता गजटेड अफसर) नवयुवक के लिए सुंदर व शिक्षित कन्या की आवश्यकता है. जाति व दहेज बंधन नहीं. फोटो सहित पत्रव्यवहार करें : मारफत वि. नंबर 758, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

25 वर्षीया, सुंदर, सुशिक्षित, दिल्ली के समृद्ध खत्री परिवार की कन्या के लिए वर की आवश्यकता है. लिखें : मारफत वि. नंबर 759, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

32 वर्षीय, संपन्न खत्री, दिल्ली स्थित निजी व्यापार वाले, मासिक आय 1,000 रुपए से अधिक, दो बच्चों वाले विधुर के लिए सुंदर, वधू की आवश्यकता है. बच्चों की उमर चार व ढाई वर्ष है. निस्संतान विधवा भी पत्रव्यवहार कर सकती है. जाति बंधन नहीं. लिखें : मारफत वि. नंबर 760, सरिता, नई दिल्ली-55.

✦

22 वर्षीय, गौड़ ब्राह्मण (भार्गव गौत्र) मांगलिक नवयुवक के लिए हरियाणा वासी गृहकार्य में दक्ष 17-18 वर्षीया, कन्या की आवश्यकता है. लिखें : मारफत वि. नंबर 761, सरिता, नई दिल्ली-55

महिलाओं का सौभाग्य चिन्ह!

दरबार गंध (रजि०)

निर्माता : रामबीर कं०, बंबई-४

राजवैद्य शीतल प्रसाद एण्ड संस, दिल्ली की प्रसिद्ध

हेमपुष्पा

स्त्रियों को स्वस्थ बनाने वाली अनुभूत औषधि

राजवैद्य शीतलप्रसाद एंड संस

१३३१, चांदनी चौक, दिल्ली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

अंक 465
सितंबर (प्रथम) 1974

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

स्वाधीनता विशेषांक

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

सरिता शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है.

प्रकाशनार्थ भेजी गई रचनाओं की सुरक्षा के लिए कार्यालय उत्तरदायी नहीं है. टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएं लौटाई जाएंगी.

दिल्ली प्रेस समाचार पत्र के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व गाजियाबाद में मुद्रित व प्रकाशित.

संपादन, प्रकाशन कार्यालय : दिल्ली प्रेस बिल्डिंग, झंडेवाला रोड, नई दिल्ली.

एक प्रति : 2.00 रु.
वार्षिक : 40.00 रु.
दो वर्ष : 75.00 रु.
विदेशों में : (समुद्री डाक से)
एक वर्ष : 60.00 रु.
मुखपृष्ठ : प्रदीप्तचंद्र

कथा साहित्य

नगाड़े पर चोट — हरमोहेंद्रसिंह 'गोविंदपुरी' 35
मकड़ी का जाला — लीला रूपायन 41
पहचान — अशोक दत्त 'सुमन' 68
कच्चातीवू से कश्मीर तक — गोविंद शर्मा 77
समाजवाद की खोज — कुसुम गुप्ता 83
बदला — नसरीन बशीर 94
राहत कार्य पर... — ओमप्रकाश गुप्ता 142

धारावाहिक उपन्यास

डाल से बिछुड़े — रमेश गुप्त 132

लेख

आजादी का सत्ताइसवां वर्ष — ओमप्रकाश 34क
भारतीय बुद्धिजीवी — सच्चिदानंदसिंह 'आनंद' 23
विदेशों में बसे भारतीय — कुसुम मेघवाल 29
मिलाद शरीफ — मुकारबखान 'आजाद' 51
फेफड़े — कुलदीपकुमार 60
कशमकश का सिलसिला — कमला सपोलिया 99
काम का बोझ — सरन 107
सीपियों वाला कुरता — शकुन 111
बच्चे की स्मरणशक्ति — शिवनंदन कपूर 113
ग्रामीण औरतें — रामकुबेर सिंह 121
पशुपक्षियों का स्वास्थ्य निरीक्षण — करुणा सेठी 124
अंगों का फड़कना — हरकृष्ण 129

कविताएं

अंधविश्वास — गोपाल बैरागी 65
एकांत में... — सुधेश 67
सम्मान — इसाक अश्क 82
कुछ ऐसा करो... — कुसुम शर्मा 120

स्तंभ

सरित प्रवाह 19
जीवन की मुसकान 33
अब हंसने की बारी है 55
बच्चों के मुख से 59
श्रीमतीजी 74
पाठकों की समस्याएं 93
इन्हें भी आजमाइए 109
पासा पलट गया 130
चंचल छाया 149
आप के पत्र 157

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके बच्चे को बढ़ने के लिए तिगुनी शक्ति चाहिए !

कुरकुरे, स्वादिष्ट प्रोपॅक बिस्किट
आपका बच्चा हर समय पसन्द करेगा !

विकास के लिए प्रोटीन
स्वास्थ्य के लिए विटामिन
हड्डियों और दांतों की मजबूती के लिए कैल्शियम
स्वस्थ रक्त के लिए लौह तत्त्व

अपने बच्चे को प्रोपॅक बिस्किट दूध के साथ या भोजन की तरह खाने दीजिए। कुछ स्कूल भी ले जाने दीजिए। आपको देख कर प्रसन्नता होगी कि वह कितनी तेजी से बढ़ता है और पढ़ाई-लिखाई और खेलकूद दोनों में सबसे आगे रहता है।

प्रोपॅक®
स्वीटीज़

हल्के, आसानी से हजम हो जाने वाले प्रोपॅक बिस्किट स्फूर्तिदायक प्रोटीन, विटामिन कैल्शियम और आयरन से भरपूर हैं।

यूनिकेम का उत्पादन

INTERADS/UC/214

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

UBM/3173 HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घावों को छूत लगने का खतरा रहता है

नयी

सुरक्षा के लिए

बैन्ड-एड पट्टियाँ लगाइए

ब्रान्ड

जिन्हें अब
जल्द घाव भरने के लिए
मर्क्युरोक्रोम
औषधियुक्त किया गया है

NEW STANDARD STRIP
BAND AID
PROTECTS AGAINST INFECTION
MEDICATED DRESSING WITH MERCUROCHROME

बच्चे तो धूल-मिट्टी में खेलते ही रहते हैं। मगर एक जगह धूल-मिट्टी का लगना खतरनाक है और वह जगह है — खुला घाव।

सभी छोटे-मोटे कटाव, खरोंच और रगड़ के घावों पर नयी बैन्ड-एड* पट्टियाँ लगाइए। अब इन्हें जाँची-परखी कारगर एन्टिसेप्टिक, मर्क्युरोक्रोम औषधियुक्त किया गया है — जो चोट-खायी त्वचा के घाव जल्द भरने और आराम पहुँचाने में मदद करती हैं।

सावधानी बरतिए — नयी बैन्ड-एड* पट्टियाँ लगाइए।

नयी
बैन्ड-एड* पट्टियाँ
हमेशा पास रखिए।

A Johnson & Johnson product

*TRADEMARK © J & J '73

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

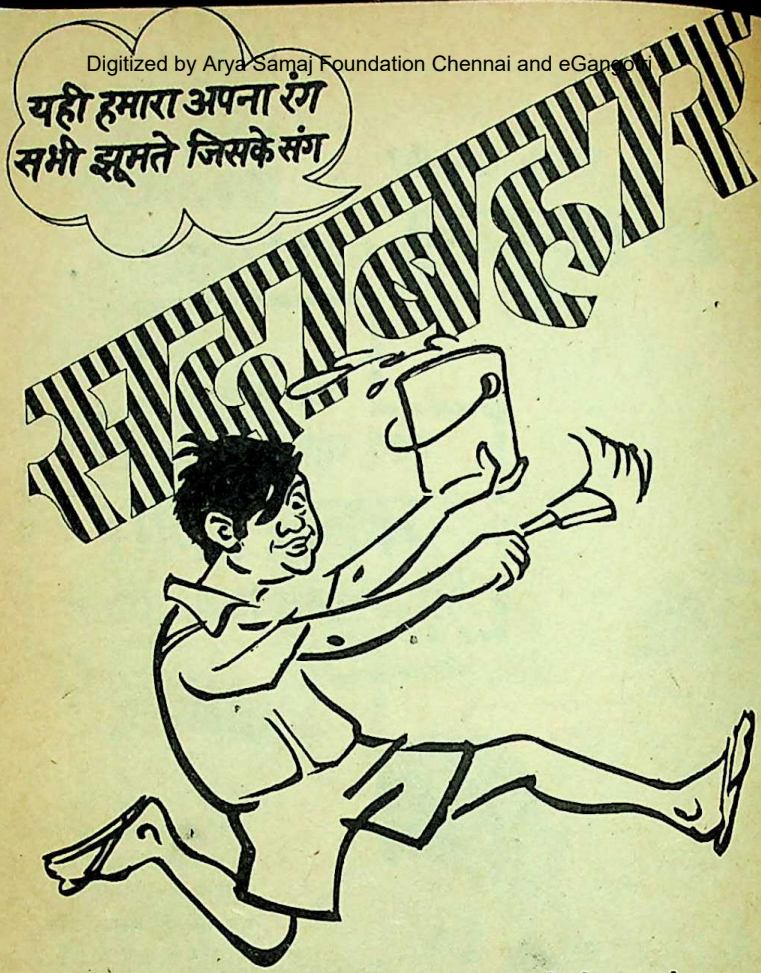

सब की पसंद के हमारे रंग पिछले सात सालों से सबसे ज़्यादा बिक रहे हैं।

भारत में पहली बार, दीवारों के लिए अद्भुत प्लास्टिक जैसे फ़िनिशवाला रंग, एक्रिलिक पेण्ट में कम दाम का पहला रंग और 'मैजिकटच' के ९९९९ रंग-संयोग तो हमारे कई चमत्कारी उत्पादनों में से हैं।

हम हमेशा इस प्रयत्न में लगे रहते हैं कि कुछ नया कर गुज़रें। इसीलिए लोग कहते हैं: हमारा अपना रंग, सदाबहार — **एशियन पेण्ट्स**

AIYARS-A. 491 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजाज लाइटिंग

इनामी योजना

५०,००० रुपये के इनाम जीतिए

आपको क्या करना है :

- नीचे लिखे ६ वक्तव्यों के सामने उचित जगह पर सही या गलत के खाने में ✓ निशान लगाएं।
- बजाज लाइटिंग के संबंध में अधिकतम १० शब्दों का वाक्य लिखें।
- पूरा प्रवेश पत्र 'बजाज लाइटिंग इनामी योजना, पोस्ट बैग नं. १०१५३, बंबई ४०० ००१ के पते पर पोस्ट करें।
- आपका प्रवेश पत्र मिलने पर आपको बजाज लाइटिंग उत्पादनों का १०% रियायती कूपन भेजा जायेगा।

यहां से काटें

मुफ़्त प्रवेश

साथ ही बजाज लाइटिंग उत्पादनों का १०% रियायती कूपन प्रत्येक भाग लेनेवाले को

वक्तव्य	सही	गलत
१. कुल मिलाकर फ्लोरेसेंट ट्यूब साधारण बल्बों से ज्यादा किफायती है।		
२. बजाज बल्ब और ट्यूब दुनिया के उत्तम लैंपों की बराबरी करते हैं।		
३. २३० वोल्ट मेन सप्लाई पर २३० वोल्ट का बल्ब इस्तेमाल करने से अधिकतम कुशलता प्राप्त की जा सकती है।		
४. बजाज नाइट-लैंप में एक घंटे में शून्य पावर की खपत होती है।		
५. बजाज के स्पेंडर-कोटिंग वाले बल्ब 'मिल्की व्हाइट' कहलाते हैं।		
६. बजाज केवल लाइटिंग उत्पादनों के विक्रेता हैं।		

केवल हिन्दी या अंग्रेजी में वाक्य लिखें

साफ, बड़े अक्षरों में भरें

नाम _____

पता _____

_____

_____

स्त्री/पुरुष _____ उम्र _____

इनाम

२ प्रथम पुरस्कार — बजाज स्कूटर

४ द्वितीय पुरस्कार — बजाज कुकिंग रेंज

२० तृतीय पुरस्कार — बजाज बहार डीलक्स टेबल पंखे

१०० अतिरिक्त पुरस्कार — बजाज डीलक्स प्रेशर कुकर ५.५ ली.

१०० बजाज नाइट लिट लैंप — पहले १०० प्रवेश पत्रों पर

नियम :

- बजाज इलेक्ट्रिकल्स लि., उनके विक्रेता व एडवरटाइजिंग एजेंट के कर्मचारी व परिजन इसमें भाग नहीं ले सकते।
- एक व्यक्ति केवल एक प्रवेश पत्र भेज सकता है।
- गुम हुए, फटे, या देर से पहुंचे प्रवेश पत्रों की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जायगी।
- सर्वश्रेष्ठ वाक्य के संबंध में निर्णायकों का मत अंतिम होगा।
- इनाम जीतने वालों को डाक द्वारा सूचना दी जायगी।

अंतिम तिथि ३१ अक्तूबर १९७४

बजाज-१९७४ में रोशनी की दुनियाका सरताज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्निल प्रिंट्स

बॉम्बे डाइंग रूपदर्शिका

रंगारंग क़िस्मों की बहार. एक से एक ख़ूबसूरत नये डिज़ाइन और मनमोहक रंग. बॉम्बे डाइंग निर्मित सुपर फ़ाईन पॉप्लिन, लॉन, कैम्ब्रिक और पॉलिएस्टर/कॉटन ब्लेंडस. पॉलिएस्टर और कॉटन डेनिम में २० मनभावन रंग छटाएँ.

रूप का ऐसा जादू जगाते हैं कि देखने वाले ठगे रह जाएँ.

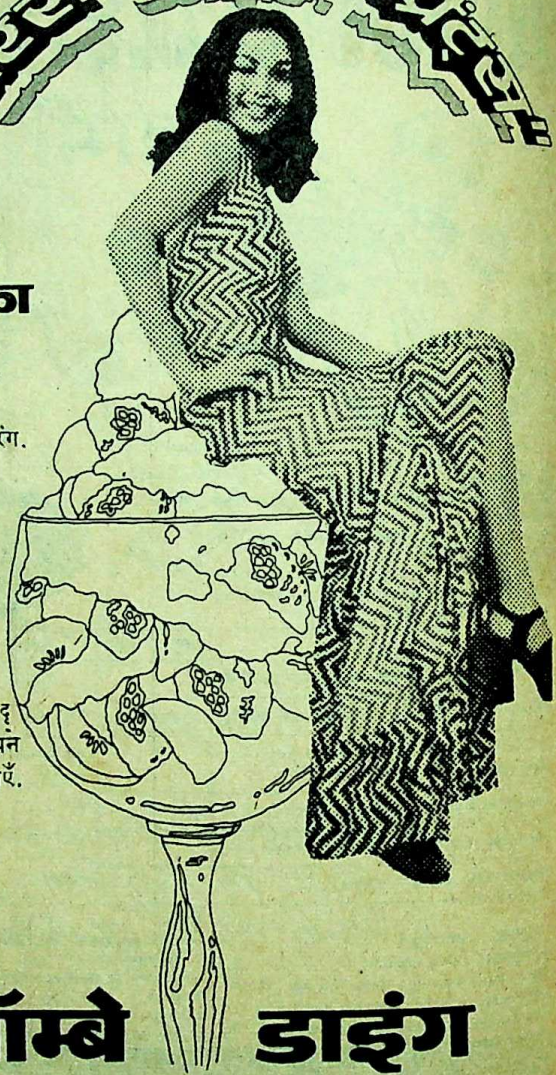

बॉम्बे डाइंग

BD. 7211

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राज़ जान के जिसे
सदा छुपाया है, वह रूप बन के
चेहरे पे झलक आया है !

चेहरा है या शबनम में नहाया हुआ फूल?
दिये की लौ सा झिलमिल जगमगाया हुआ रूप!
ग़र हल्के से सहला लें चेहरे पर यह क्रीम,
रच जाए, बस जाए, निखर जाए रूप!

सब देखते रह जाएं,
न राज़ जान पाएं,
बस, आँखों में बस जाए
ये सलोना रूप!

बिनाका® वैनिशिंग क्रीम

CV/23/hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RAAS/B/124 A HN

माता-पिताओं!

क्या आप अपने होनहार लड़के या लड़की को उच्च शिक्षा सिर्फ़ इसीलिए नहीं दे पा रहे कि आपके पास पूँजी नहीं है?

तो सुनिए—बैंक ऑफ़ इंडिया के पास **शिक्षा-संबंधी ऋण** देने की सुविधा है और वह भी उदार शर्तों पर—ताकि होनहार विद्यार्थी भारत में स्नातक/स्नातकोत्तर कोर्स और विदेशों में स्नातकोत्तर अध्ययन कर सकें.

विशेष उदार शर्तें—
अनुसूचित जातियों अनुसूचित वर्गों व आदिवासियों वग़ैरह विद्यार्थियों के लिए.

अधिक जानकारी के लिए हमारी पास की शाखा में पधारिए

बैंक ऑफ़ इन्डिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BCCM-21 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हमें पसंद हैं क्योंकि यह कड़ी है

इसके अलावा यह सुगंधित भी है

लिपटन की येलो लेब्ल — पसंद ज़ाहिर है क्योंकि इसमें दोनों मौजूद हैं

LYC-56 HIN

अगर आपको चाहिये सुगंधित और उन्हें चाहिये कड़ी, तो ऐसी चाय लीजिये जिसमें दोनों हों मौजूद हों—यानी लिपटन की येलो लेब्ल ऐसे माहिरों द्वारा ब्लेंड की हुई चाय जो यह जानते हैं कि एक ही चाय में सबसे बढ़िया तरीके से दोनों खूबियाँ कैसे लाई जा सकती हैं।

LIPTON

सिर्फ़ पैकेट की चाय ही रहती है तरोताज़ा और खुशबू से भरपूर

लिपटन यानी अच्छी चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां की ममता की नहीं समानता...

उसी तरह अद्वितीय है उषा सिलाई मशीन

आपके परिवार को आपके स्नेह की आवश्यकता है···अपना स्नेह और अधिक प्रकट करने के लिए आपके लिए आवश्यक है—उषा सिलाई मशीन।

सिलाई के पैसे बचाइए व अनमोल समय भी, क्योंकि उषा सिलाई मशीन :

- श्रेष्ठ इंजिनियरिंग द्वारा विधिपूर्वक बनाई जाती हैं, और इसलिए वे लम्बे समय तक चलती हैं और मरम्मत भी नहीं मांगती।
- आपके पास पहुँचने से पहले दो हजार बार जांची और परखी जाती हैं।
- बिक्री के उपरान्त सर्विस के लिये हर जगह प्रबन्ध है।
- हाथ, पैर, और बिजली से चलने वाले कई मनपसंद मॉडलों में मिलती हैं।

मूल्य रु० २५०/- या अधिक

SHRIRAM

जब खरीदें उषा ही खरीदें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर जीवन का रहस्य

हर समय, हर तरह अपने अन्दर की
प्रकट होने दीजिए। मोदीकौटन
सुन्दरता का उपहार है जो आप
घर या बाहर उजागर करते हैं।

मोदीकौटन आपके लिए सर्वोत्तम वस्त्रों की भेंट
है–कौप्रिक, कैप्र, फ्रिफाल...मौसम बहार की रंगीनियों
और अनोखे प्रिन्टों का विस्फोट। फैशनेबिल से
फैशनेबिल व्यक्ति भी आपकी और देखने के लिए
मजबूर होंगे एवं ईर्ष्यालु होने लगेंगे। यही है आप की पहचान
जिन्दगी की खूबसूरत बनाते हैं।

मोदीकौटन

खूबसूरत ज़िन्दगी के लिए खूबसूरत वस्त्र

Interads/MC/1/74

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वो दो जो मेरी साँसों में बसा करते हैं—

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

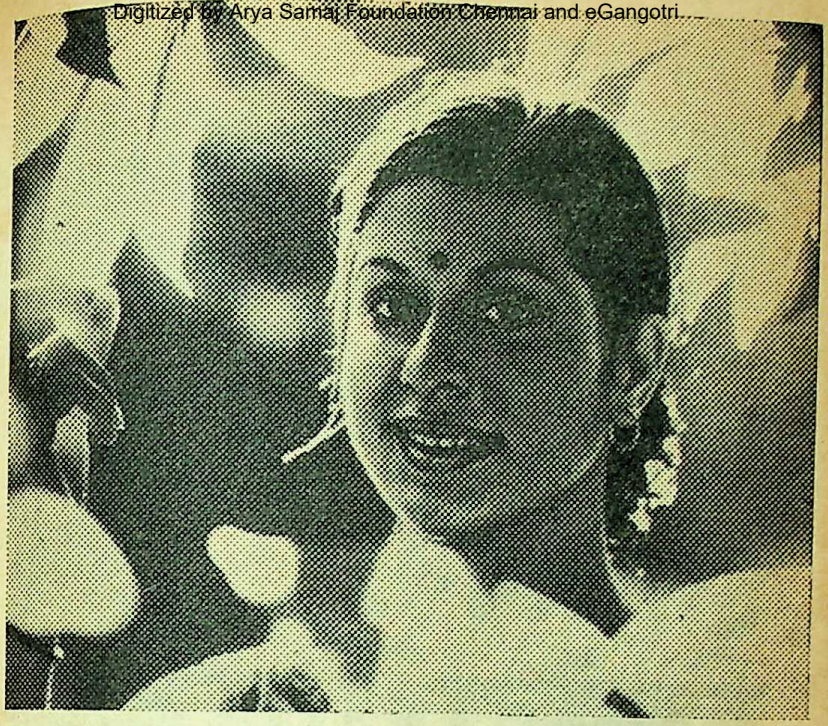

एक तुम...

सच, बिनाका ग्रीन की निर्मल ताज़गी में बसीं मेरी साँसें... और मेरी हर साँस में समाए तुम! मुझे तुमसे प्यार है... मुझे बिनाका ग्रीन से प्यार है क्योंकि क्लोरोफ़िलयुक्त बिनाका ग्रीन में पाये जाने वाले प्राकृतिक गंधनाशक से मेरी साँसों में फूल खिल जाते हैं ...आह! वह बहार... तुम्हारे साथ गुज़रे वह सुनहरे क्षण... वह महका महका सा मेरी साँसों का मधुबन!

एक बिनाका ग्रीन...

महकी साँसों का मधुबन

बिनाका टूथब्रश की गोल बनायी गयी नोकें आपके मसूड़ों को छिलने से बचाती हैं।

CIBA

Rediffusion/CG/66 g Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

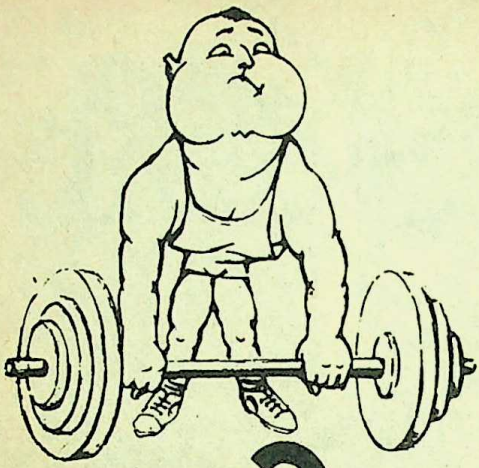

हम अपनी जिम्मेदारी का बोझ सँभाल लेंगे

चार्टर्ड ही है आपका अपना बैंक—जहाँ आपको हमेशा मित्रवत्, तत्पर, विनम्र और व्यक्तिगत सेवा की सुविधायें प्राप्त होती हैं। हम अपने सभी खातेदारों का एक समान ख्याल रखते हैं, चाहे वे बड़े हों या छोटे। और आपकी हर समस्या को हल करने में हम अपनी जिम्मेदारी हमेशा बड़ी खूबी से निभाते हैं।

स्टैण्डर्ड एण्ड
चार्टर्ड बैंकिंग ग्रूप का एक सदस्य

दि चार्टर्ड बैंक

...जहाँ सेवा ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है

अमृतसर, बम्बई, कलकत्ता, कालीकट, कोचीन, दिल्ली, कानपुर, मद्रास, नई दिल्ली, सम्भाजी (गोआ)

SEKAI/2A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरे की लालिमा, गुलाब शरमाए
देखूँ जब दर्पण, मन झूम-झूम जाए

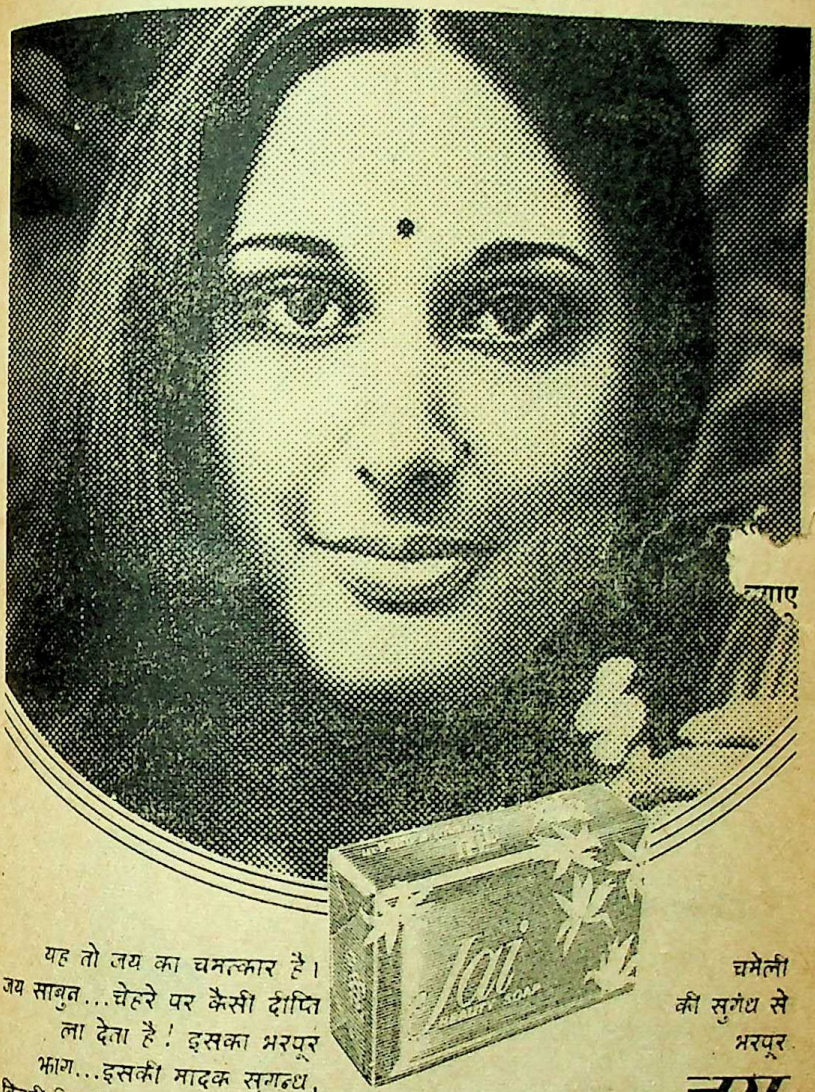

यह तो जय का चमत्कार है। जय साबुन...चेहरे पर कैसी दीप्ति ला देता है! इसका भरपूर झाग...इसकी मादक सुगन्ध, कितनी प्रिय! जय से उन्मुक्त यौवन का द्वार, रूप का शृंगार। जय का स्पर्श, सौन्दर्य का स्पर्श!

चमेली की सुगंध से भरपूर

जय

सौंदर्य-साबुन

टाटा का जय साबुन

OBM-7002 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तथा खांसी और सर्दी से पीछा छुड़ाइए

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

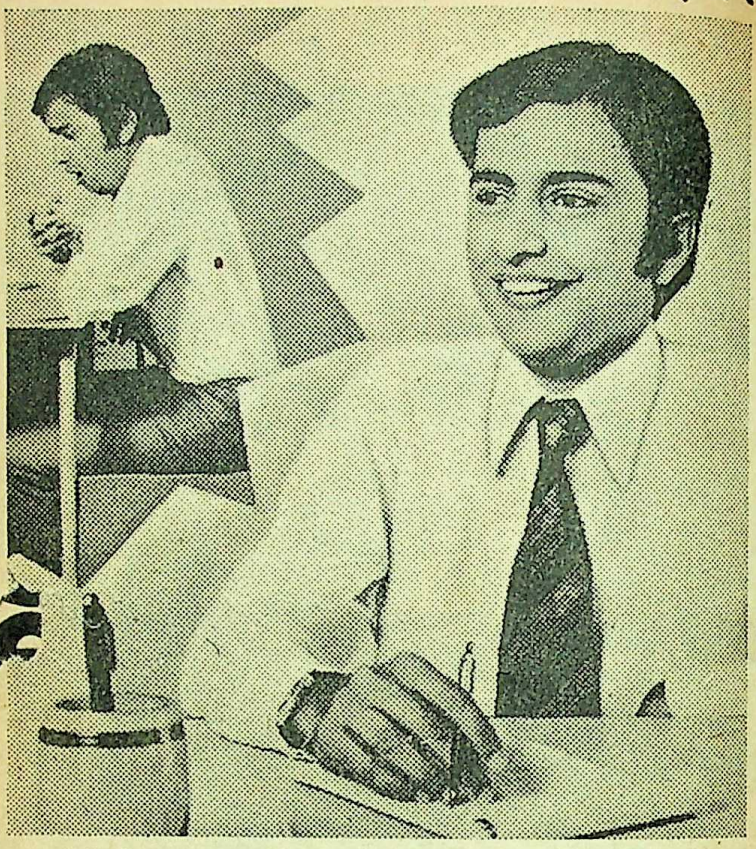

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड

रेड लेबल

डाक्टर वॉटरबरीज कम्पाउण्ड–रेड लेबल की सिफ़ारिश करते हैं क्योंकि इसमें ये दो ख़ूबियाँ हैं :

१ वॉटरबरीज कम्पाउण्ड खांसी और सर्दी-जुकाम दूर करती है क्योंकि इसमें क्रियोज़ोट और गायकॉल मिले हैं.

२ वॉटरबरीज कम्पाउण्ड में मिली ताक़त देनेवाली चीज़ें प्रतिरोधक शक्ति बढ़ातीं हैं तथा स्वास्थ्य और शक्ति फिर से लौटा लातीं हैं.

इसे रोज़ाना लीजिए

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड विश्वसनीय स्वास्थ्यवर्धक

रेड लेबल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरित प्रवाह

अमरीका के राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन को अंत में, हार कर, अपने पद से इस्तीफा देना ही पड़ा. यद्यपि आखिर तक उन की कोशिश यही रही कि वह पद पर बने रहें. वाटरगेट कांड, जिस के कारण श्री निक्सन को गद्दी छोड़नी पड़ी, लगभग दो वर्ष पहले शुरू हुआ था, और देखा जाए तो इस में कोई विशेष बात नहीं थी--श्री निक्सन के चुनाव अधिकारियों ने यह जानना चाहा कि विरोधी दल, ड्रेमोक्रेटिक पार्टी, की क्या चुनाव प्रणाली और क्या हथकंडे हैं, उसे कितना रुपया मिला, कौन उस के मुख्य समर्थक हैं इत्यादि, ताकि श्री निक्सन अपने डेमोक्रेटिक प्रतिद्वंद्वी, श्री मैकगवर्न से बाजी जीत जाएं.

साधारणत: ये पैंतरेबाजियां सभी दल करते हैं, पर श्री निक्सन का जुर्म यह था कि उन्होंने पहले यह मानने से साफ इनकार कर दिया कि उन्हें इस जासूसी के बारे में कुछ भी पता है या यह सब उन के आदेशों पर हुआ. परंतु एक के बाद एक भेद खुलते गए. समाचारपत्रों के संवाददाताओं ने खोजबीन शुरू की और श्री निक्सन का जुर्म प्रकट होता गया.

श्री निक्सन को आशा थी कि इस लड़ाई में कम से कम उन का दल, रिपब्लिकन पार्टी, तो उन का अंत तक समर्थन करता ही रहेगा—जैसा कि हमारे देश में प्रत्येक कांग्रेसी मंत्री और पदाधिकारी इस बात से आश्वस्त रहता है कि वह चाहे जितना पैसा बना ले, बनवा दे और चाहे जितनी बेईमानी कर ले, कांग्रेस दल उस का समर्थन करता ही रहेगा. परंतु जब श्री निक्सन के कारनामों पर से एकएक कर के परदे हटते गए तो किसी भी रिपब्लिकन के लिए यह संभव नहीं रहा कि वह जनमत की अवहेलना कर के श्री निक्सन का समर्थक बना रहे. जब यह स्थिति आ गई तो श्री निक्सन सिवा इस्तीफा देने के करते भी क्या?

वैसे जो अभियोग उन पर लगाए गए हैं, उन के कारण उन्हें काफी लंबी जेल की सजा और जुर्माना हो सकता है, पर ऐसा होगा, इस की उम्मीद कम ही है.

जहां श्री निक्सन के इस्तीफे से अमरीकन जनमत की शक्ति का पता चलता है, समाचारपत्रों की स्वतंत्रता का आभास होता है और न्यायपालिका की निष्पक्षता का सबूत मिलता है, वहां यह बात रहरह कर कचोटती है कि जनतंत्र में चुनाव प्रणाली इतनी खर्चीली क्यों हो जिस के लिए करोड़ों रुपए की आवश्यकता हो, यह समस्या केवल अमरीका की ही नहीं. उन सभी देशों की है, जहां सरकार का चुनाव जनमत के आधार पर होता है और जहां जनता उम्मीदवार चुनने व वोट देने में स्वतंत्र है (रूस की तरह नहीं, जहां केवल सत्तारूढ़ दल के मनोनीत व्यक्ति ही उम्मीदवार बन सकते हैं और जनता में से जो लोग उस उम्मीदवार को वोट नहीं देते, उन्हें परोक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

में तरहतरह के दंड भुगतने पड़ते हैं. इसी लिए वहां कम्युनिस्ट दल के नेताओं को 99.9 प्रतिशत वोट मिलते हैं और कम्युनिस्ट पार्टी को पैसे की चिंता नहीं होती.)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में भी आम चुनाव इतने खर्चीले हो गए हैं कि सिवा सत्तारूढ़ दल के अन्य किसी के लिए भी इतना पैसा जमा करना असंभव है और इसी कारण अब यह आवाज उठ रही है कि या तो चुनावों का खर्च सरकार बरदाश्त करे या किसी और प्रणाली का आविष्कार किया जाए. क्योंकि अमरीका, ब्रिटेन, जरमनी इत्यादि में कोटे, लाइसेंस व परमिट का इतना जाल नहीं बिछा हुआ है और न वहां सरकारीकरण की तलवार उद्योगपतियों के सिर पर लटकती रहती है, इसलिए प्रायः सभी दलों को रुपया मिल जाता है. पर यह बात तो मानी हुई है, यहां भी और विदेशों में भी, कि जो उद्योगपति पैसा देगा, वह बदले में कुछ न कुछ अवश्य चाहेगा—और सत्तारूढ़ राजनीतिबाज काफी कुछ फायदा करा सकता है.

'कई उम्मीदवार और एक व्यक्ति एक वोट जिसे वह गोपनीय तरीके से जिसे चाहे दे सके'—यह जनतंत्र प्रणाली एकदो या दसबीस वर्ष में ही नहीं बन गई थी. इसे सैकड़ों वर्ष लगे थे. इस के दोष हटाने में भी कई दशक लग सकते हैं, पर इसी लिए यह भी नहीं कहा जा सकता कि तानाशाही या कम्युनिस्ट-फासिस्टवाद इस से अच्छा है.

✦

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वराहगिरि व्यंकट गिरि ने 14 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने रेडियो भाषण में कहा, "चुनावों में रुपए की शक्ति का बोलबाला हो गया है. मेरे विचार से यही हमारे जनजीवन में भ्रष्टाचार और भ्रष्ट प्रभाव का कारण है."

इस से कुछ दिन पहले युवक रैली में प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा कि अच्छे उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अच्छे साधनों की आवश्यकता है; अच्छे उद्देश्य गलत तरीकों से नहीं प्राप्त किए जा सकते.

देश के दो सर्वोच्च पदाधिकारियों की ये दोनों बातें बिलकुल सही हैं. सिद्धांत रूप में इन्हें सभी जानते हैं और सभी मानते हैं.

यदि श्रीमती इंदिरा गांधी, जो भारत के अब तक के इतिहास में सब से अधिक शक्तिशाली शासक हैं—अशोक, अकबर व जवाहरलाल नेहरू से भी बढ़ कर—अपने वक्तव्य में वास्तव में विश्वास करती हैं तो क्या वह यह फैसला नहीं कर सकतीं कि भविष्य में कांग्रेस चुनावों के लिए, या अपने संगठन के लिए किसी उद्योगपति या व्यापारी से कोई छिपाया हुआ धन नहीं लेगी और सारे चुनाव जनता से खुले आम, छोटी रकमों से जमा किए हुए चंदे से ही लड़ेगी, चाहे धनाभाव के कारण वह चुनाव हार ही क्यों न जाए?

हमें पूर्ण विश्वास है कि यदि ऐसा हो जाए तो कांग्रेस कभी हारेगी ही नहीं, बल्कि बड़े बहुमत से जीतेगी, इंदिराजी को प्रधान मंत्री पद से कोई भी नहीं हटा सकेगा और जो जनता आज उन से डरती है, वह उन्हें खुले दिल से अभूतपूर्व प्रेम और आदर देगी.

और यदि एक मिनट के लिए यह मान भी लिया जाए कि कांग्रेस को बहुमत नहीं मिलेगा, तो भी क्या? क्या देश में या कांग्रेस संगठन के लिए कोई प्रलय आ जाएगा? इस के विपरीत कांग्रेस से वे सब व्यक्ति, जो केवल धन और शक्ति के लालच में आ कर उस में सम्मिलित हो गए हैं, वहां से निकल भागेंगे, जिस से कांग्रेस पहले से अधिक सुदृढ़ और सुव्यवस्थित हो कर अधिक सम्मान प्राप्त कर सकेगी.

✦

पिछले 9 अगस्त को दिल्ली में कांग्रेस द्वारा एक युवक रैली-प्रदर्शन का आयोजन किया गया जिस के लिए कांग्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेताओं ने सारे देश से युवकयुवतियों को इकट्ठा किया. दिल्ली के आसपास के राज्यों से तो लड़कलड़कियों को सरकारी आदेश पर सरकारी बसों और रेल से लाया गया—रेल का किराया देने का तो प्रश्न नहीं था, बसों को पुलिस जब चाहे जबरदस्ती घेर ही सकती है.

कहा जाता है कि यह रैली दिल्ली विश्वविद्यालय में 12 अगस्त को होने वाले छात्र संघ के चुनावों को प्रभावित करने के लिए आयोजित की गई थी. कुछ लोगों का विचार है कि इस को वर्तमान कांग्रेस नेताओं की लोकप्रियता का प्रदर्शन करने और बिहार में श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे छात्र संघर्ष के उत्तर में आयोजित किया गया था. परंतु लगता है, दोनों मुद्दों में यह रैली असफल रही. चुनावों में 'प्रतिक्रियावादी' जनसंघ द्वारा नियंत्रित विद्यार्थी परिषद ने 'प्रगतिवादी' कांग्रेसकम्युनिस्ट की विद्यार्थी कांग्रेस को मुंह की खिलाई और सारे पद प्राप्त कर लिए (यह सब दिल्ली में हुआ जहां समाजवाद व प्रगतिशीलता के बड़े से बड़े मठाधीश विराजमान हैं और जिन की शक्ति और साधन असीमित हैं.) जहां तक बिहार आंदोलन का संबंध है, वहां उसे किसी तरह प्रभावित करने की बजाए रैली के सदस्यों ने दुर्व्यवहार से कांग्रेसी आयोजकों को बदनाम कर दिया.

समाचारों के अनुसार जब रैली के सदस्य एक स्पेशल ट्रेन में दिल्ली से बंबई लौट रहे थे तो उन के पास खैर टिकट तो थे ही नहीं, उन्होंने हर स्टेशन पर सामान बेचने वालों की दुकानें लूट लीं, बिना पैसे दिए सामान छीन लिया, मुसाफिरों को मारापीटा. जब पुलिस ने इन की तलाशी ली तो समाचारों के अनुसार इन युवकयुवतियों के पास विदेशी शराब की बहुत सी बोतलें और गर्भ निरोधक 'निरोध' के पैकेट पाए गए. लूट का सामान तो खैर था ही.

लोक सभा में विपक्षी दलों ने इस पर काफी होहल्ला मचाया, पर सब बेकार. जब कांग्रेसी सरकार हर रोज नए शराब बनाने के कारखाने खुलवा रही है और 'निरोध' का प्रचार कर रही है तो इन 'कल के नागरिकों' को शराब पीने और 'निरोध के' प्रयोग का प्रशिक्षण देने में क्या आपत्ति हो सकती है? रहा सवाल दुकानदारों को लूटने का, तो वह आपत्ति भी लचर है. आखिर समाजवाद भी तो यही मानता है कि जिन के पास संपत्ति है, उन से उसे छीन कर जिन के पास नहीं है, उन्हें बांट दी जाए. इन बेचारों ने भी तो सामान छीन कर केवल अपनी भूख ही मिटाई. यह कौन सा न्याय है कि दुकानदार टोकरियां भरे खाने का सामान प्लेटफार्म पर इधर से उधर प्रदर्शित करते रहें और 'युद्धक्षेत्र' से लौटे जवान और उन की युवतियां ललचा कर उन्हें देखती रहें. इन दुकानदारों को तो पहले ही जमाखोरी, मुनाफाखोरी और पूंजी जमा करने के अभियोग में जेल भेज दिया जाना चाहिए था!

✦

श्री जयप्रकाश नारायण के बिहार में विधान सभा भंग कराने व भ्रष्टाचार मिटाने के आंदोलन ने एक बार फिर गांधीजी द्वारा चलाए गए 1930 और 1942 के आंदोलनों की याद ताजा कर दी है.

आज भी स्थिति लगभग वैसी है, जैसी उन दिनों थी. तब सत्ता में ब्रिटिश सरकार थी, जिसे हटाना लगभग असंभव सा लग रहा था. वह सरकार भारतवासियों का कल्याण करने का बड़े जोरशोर से दावा करती थी. अपने समर्थकों को वह खिताब देती थी, जागीरें देती थी, तरहतरह से धन देती थी और विरोधियों को जेल में बंद करती थी, उन के जुलूसों पर लाठियां, गोलियां बरसाती थी. हजारों भारतीय ब्रिटिश सरकार का समर्थन करते थे और जनता उन्हें 'टोडी बच्चा' कह कर पुकारती थी.

आज भी सत्तारूढ़ राजनीतिबाज वही ब्रिटिश जमाने की चालें चल रहे हैं; पैसा बांट रहे हैं, पद्मश्री, पद्मभूषण आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यानी कोटे, परमिट व लाइसेंस, देते हैं, उन के साथ 'टोडी बच्चों' की एक बहुत बड़ी जमात है, जो दिल से तो जानते हैं कि वे सत्तारूढ़ अधिकारियों को समर्थन दे कर गद्दारी कर रहे हैं, पर स्वार्थवश और कुछ नहीं कर पा रहे हैं.

जनता जैसे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ थी, आज कांग्रेस के नेताओं के खिलाफ है. तभी तो मंत्रियों की सुरक्षा के लिए बड़ी संख्या में पुलिस की आवश्यकता होती है. उस जमाने में भी चुनावों द्वारा सत्ताधारियों को नहीं हटाया जा सकता था; आज भी चुनावों द्वारा उन को हटाना संभव नहीं दिखाई दे रहा है, क्योंकि पैसे के बल पर, सरकारी मशीन का दुरुपयोग कर के सत्ताधारी किसी न किसी तरह वोट जमा कर ही लेते हैं.

उस जमाने में ब्रिटिश सरकार और 'टोडी बच्चे' (इन में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी भी शामिल थी) गांधीजी को प्रतिक्रियावादी, कानून व्यवस्था के विध्वंसक, नवयुवकों को गुमराह करने वाले, बुद्धि से सठियाए, पूंजीपतियों से सांठगांठ रखने वाले इत्यादि कह कर गालियां देते थे. आज भी श्री जयप्रकाश नारायण को बिलकुल वही 'खिताब' मिल रहे हैं.

✦

भारत सरकार ने आदेश दिया है कि सभी सरकारी दफ्तरों में कागज की खपत में 40 प्रतिशत कटौती की जाए. यह बहुत उचित कदम है क्योंकि देश में कागज के उत्पादन का प्रमुख भाग सरकार 'जीम' जाती है.

नौकरशाही या सरकारशाही चलती ही कागज पर है. यदि इस का यह 'खाद्य पदार्थ' कम कर दिया जाए तो यह मुरझा जाती है और उसी अनुपात में जनता को कम परेशान करती है, उस की खूनपसीने की कमाई का कम दुरुपयोग करती है.

आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकारी अमला (यानी कर्मचारी समूह) घटाया जाए और वेतनमान घटाया जाए. पिछले वर्षों से जो महंगाई तीव्र गति से बढ़ रही है, उस का एक मात्र कारण है सुरसा की तरह बढ़ता हुआ सरकारी अमला और जनजीवन पर उस का खून पीने वाला शिकंजा. कर्मचारी बढ़ते हैं तो उन के लिए मकान, दफ्तर, फरनीचर, चपरासी, यातायात, अस्पताल और न जाने क्याक्या जुटाना पड़ता है. और फिर वे कागज खाते हैं, लोहा खाते हैं और वे सभी वस्तुएं हजम करते हैं, जिन का बाजार में आज अभाव है, जिन की जमाखोरी और मुनाफाखोरी आज समस्या बन गई है. जनता की आवश्यकता की चीजें सरकार द्वारा छीनी जा कर इन कर्मचारियों, दफ्तरों और संस्थानों को भेंट कर दी जाती हैं या हड़प ली जाती हैं. क्योंकि ये वस्तुएं कागजी रुपया छाप कर या नए टैक्स लगा कर बाजार से छीनी जाती हैं, इसलिए मूल्य बढ़ते जाते हैं और जनता भूखी होती चली जाती है. केवल राजनीतिबाज, सरकारी कर्मचारी व इन की मिलीभगत से ठेकेदार, सप्लायर या उद्योगपति पनपते हैं.

यदि आज सरकारी कर्मचारियों की संख्या में दस प्रतिशत कमी कर दी जाए (यह कमी केवल चपरासियों व क्लर्कों तक सीमित न रह कर ऊपर अफसरों व मंत्रियों तक होनी चाहिए) और टैक्स भी दस प्रतिशत काट दिए जाएं तो दूसरे दिन बाजार में कीमतें 20 प्रतिशत घट जाएंगी.

कोई कारण नहीं कि समाजवाद यानी सरकारवाद के झूठे और गलत सिद्धांतों के कारण जनजीवन का हर काम सरकारी कर्मचारियों को सौंपा जाए और न केवल एक रुपए की बजाए दस रुपए खर्च किए जाएं, साथ ही काम भी गलत और आधा करवाया जाए. सरकार का मुख्य काम तो विदेशी आक्रमण से सुरक्षा व आंतरिक कानून व व्यवस्था होना चाहिए, बाकी काम जहां तक संभव हो जनता स्वयं करे. ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

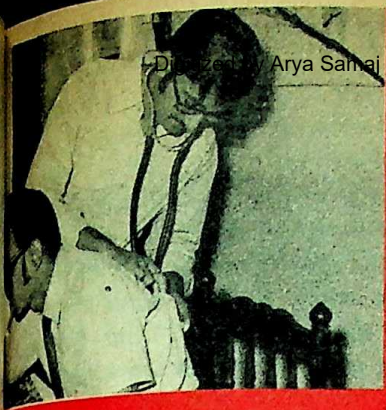

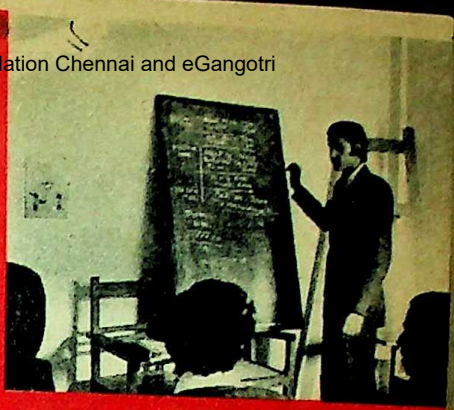

भारतीय बुद्धिजीवी

पलायनवादी क्यों?

आज हमारे देश को स्वतंत्र हुए 27 वर्ष बीत गए. हम स्वतंत्रता की रजत जयंती भी धूमधाम के साथ मना चुके हैं. लेकिन धूमधाम में प्रदर्शन मात्र दिखाई दिया था, जीवन का उत्साह दृष्टिगोचर नहीं हुआ, क्योंकि उस समय भी देश चारों ओर से अनेक समस्याओं से घिरा हुआ छटपटा रहा था. इन समस्याओं का कारण यह है कि देश का बुद्धिजीवी वर्ग इन से विमुख था और आज भी है. स्वतंत्रता के पूर्व देश के सभी वर्गों के व्यक्तियों में देश के प्रति सम्मान था, सब का ध्येय एक था, सब का लक्ष्य एक था, सब का गंतव्य एक था—स्वतंत्रता की प्राप्ति और उस समय सभी की कल्पना थी कि अपना देश समृद्ध हो और सभी क्षेत्रों में विकास कर के विश्व में अपना खोया हुआ अग्रगण्य स्थान प्राप्त करे. इसी भावना को समक्ष रख कर हमारे देश के नागरिकों ने एकता, साहस और देशप्रेम के धागों से बनी रस्सी द्वारा स्वतंत्रता को परतंत्रता के समुद्र से निकाल लिया और उस के बाद अपने दायित्वों की इतिश्री मान ली.

हमारा देश कृषिप्रधान है इसलिए यहां साक्षरता का भी कम ही प्रसार हुआ. इसी कारण अन्य राष्ट्रों की तुलना में यहां बुद्धिजीवी व्यक्ति भी कम संख्या में हैं, किंतु खेद तो इस बात का है कि जो हैं भी, उन्होंने अपनी बुद्धि का उपयोग देश की समस्याओं के लिए करना छोड़ दिया है. आज का बुद्धिजीवी वर्ग स्वार्थ के संकुचित घेरे में फंस गया है और येन केन प्रकारेण शासक वर्ग द्वारा बांटी जाने वाली पद्मश्री, पद्मभूषण आदि उपाधियों और पुरस्कारों को प्राप्त करने के जुगाड़ में या अन्य किसी प्रकार से अपनी जेब भरने की फिराक में रहता है तथा उस ने देश और समाज की समस्याओं के संबंध में सोचना ही छोड़ दिया है. आज हमारे देश में शिक्षक, पत्रकार, लेखक, डाक्टर, इंजीनियर, वकील, वैज्ञानिक आदि बुद्धिजीवी देश की समस्याओं से विरत हैं

लेख • सच्चिदानंदसिंह 'आनंद'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्योंकि उन्हें स्वयं की समस्याओं से ही अवकाश नहीं मिलता, देश की समस्याओं से, देश की प्रगति से उन का कोई संबंध नहीं. आज का बुद्धिजीवी वर्ग अपनी वाक्पटुता के द्वारा बेचारी गरीब जनता और अशिक्षित लोगों को बहुत बुरी तरह ठग कर अपना उल्लू सीधा कर रहा है तथा इसी को वह अपना बुद्धि का वैभव मान रहा है.

शिक्षकों की भूमिका

देश के बुद्धिजीवी वर्ग में सब से महत्त्वपूर्ण स्थान है शिक्षक का, क्योंकि वही भावी पीढ़ी का निर्माता है और उसी की शिक्षा पर देश का भविष्य निर्भर है. इस में संदेह नहीं कि देश में विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की वृद्धि के साथसाथ शिक्षकों की भी बाढ़ सी आ गई है, जो प्रति वर्ष तथाकथित शिक्षित बेकारों की संख्या में निरंतर वृद्धि कर रहे हैं. वे हमारे देश के प्रमुख बुद्धिजीवी हैं, किंतु दुर्भाग्य यह है कि देश में अनेक शिक्षा संस्थाएं राजनीतिक आधार पर अथवा व्यावसायिक उद्देश्य से खुल रही हैं और उन में शिक्षकों की नियुक्तियां जातिवाद, भाईभतीजावाद के आधार पर या रिश्वत और सिफारिश के बल पर होती हैं, और उन्हें भी पूरा वेतन नहीं दिया जाता. ऐसे शिक्षक भला समाज को क्या देंगे और समाज की किन समस्याओं का समाधान करेंगे? वे तो समाज में ऐसे भावी नागरिकों को जन्म देंगे, जो उन्हीं की भांति भ्रष्ट और रिश्वतखोर होंगे.

शिक्षकों की इस नियुक्ति प्रणाली के कारण ऐसे शिक्षकों की संख्या अधिक बढ़ गई है, जिन को पढ़ानेलिखाने की बात तो दूर, किसी व्यक्ति से सभ्यतापूर्ण व्यवहार करना भी नहीं आता. ये शिक्षक कक्षा में भी पढ़ाने के स्थान पर गंदी राजनीति की बातें करते हैं, अपनी उन्नति के लिए अधिकारियों की चमचागीरी करते हैं, देश के भावी नागरिकों के जीवन के साथ खिलवाड़ करते हैं और अपने विषय को छोड़ कर व्यर्थ की बातों में अपना समय पूरा कर देते हैं. यदि इतिहास का शिक्षक हुआ तो खेलकूद की बातें करेगा और यदि अंगरेजी का अध्यापक हुआ तो पीरियड भर टाई की नाट ठीक करेगा, जेब में से रूमाल निकाल कर बीस बार नाक का पसीना पोंछेगा और छत्तीस कोने का मुंह बना कर भारतीय भाषाओं को गाली देगा.

शिक्षा का गिरता स्तर

इन का पढ़ानालिखाना तो उसी दिन समाप्त हो जाता है, जिस दिन ये स्थायी हो जाते हैं. गुटबंदी और राजनीति से समय बचता है तो ये लड़कियों के चक्कर में पड़ जाते हैं, नहीं तो काफी हाउस सलामत रहें. कुछ अध्यापक तो गुंडागीरी के बल पर अध्यापकी करते हैं, जिन को अपने आका, राजनीतिक नेताओं, का बल प्राप्त रहता है. परिणमतः अच्छे और योग्य अध्यापक भी अपनी इज्जत बचाने के डर से चाहते हुए भी अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर पाते. यही कारण है कि शिक्षा का स्तर दिन पर दिन गिरता जा रहा है.

न जाने कहांकहां से, किनकिन परिस्थितियों से गुजर कर क्याक्या सपने संजोए हजारों लड़के हर साल आते हैं और उन्हें कितना बड़ा धक्का लगता है, जब वे यहां का हाल देखते हैं. कुछ कड़वे अनुभवों तथा कागज के बेमानी टुकड़ों के अतिरिक्त क्या हाथ लगता है उन के? उत्तर पुस्तकें जांचने वाले अध्यापक भी वही लापरवाही दिखाते हैं और कभीकभी तो अपनी बीवियों, अपने चहेते छात्रों से यह उत्तरदायित्वपूर्ण काम कराते हैं, जिस से परीक्षार्थियों के प्रति न्याय भी नहीं हो पाता. शिक्षा संस्थाओं के इसी

उपाधि, पुरस्कार और पैसा कमाने के चक्कर में उलझा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्छृंखल दूषित वातावरण, अध्यापकों की लापरवाही, छात्रों की निरर्थक बहसों, गंदी राजनीति और घर के अभावपूर्ण जीवन के कारण प्रति दिन बढ़ता हुआ असंतोष प्रत्येक नवयुवक के भीतर विद्रोह को जन्म दे रहा है, जिस से अनेक समस्याएं बढ़ रही हैं. अतएव देश का यह तथाकथित बुद्धिजीवी शिक्षक देश की समस्याओं से विमुख ही नहीं, बल्कि उन का जन्मदाता बन रहा है.

व्यक्तिगत कुंठाओं से घिरा कवि : जनता को समझने में असमर्थ

पत्रकार कितने स्वतंत्र?

बुद्धिजीवी वर्ग में पत्रकार का स्थान भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है. वह जनमत का निर्माता है तथा देश को सही दिशा दे कर समस्याओं के निराकरण में योग दे सकता है. खेद है, वे भी आज देश की समस्याओं से विमुख हैं. वे भी अपने स्वार्थों को ले कर किसी न किसी गुट से बंधे हैं. सच बात कहने या प्रकाशित करने में वे हिचकते हैं, किसी पर सीधी चोट नहीं कर सकते. जो पत्रकार पराधीन युग में एक पैर सदा जेल में रख कर स्वाधीनता का अलख जगाते थे, उन को आज सच कहने का भी साहस नहीं होता. वे जनता को भुला कर सत्ताधीशों की सहीगलत नीतियों का समर्थन मात्र करते हैं, झूठी प्रतिष्ठा के चक्कर में प्रचारबाजी में लग जाते हैं और येन केन प्रकारेण पैसा कमाना अपना उद्देश्य समझते हैं. यहां तक कि अनेक पत्रकार तो कागज को काले बाजार में बेचने में भी नहीं हिचकते. वे अपने नैतिक कर्तव्यों के प्रति आंखें मूंद कर काम करते हैं तथा प्रत्येक निर्भीक और ईमानदार व्यक्ति की परछाईं से भी दूर भागते हैं. वे सस्ता साहित्य प्रचारित करते हैं, जिस से भावी पीढ़ी पतन के गर्त में गिरती है. उच्च कोटि की बातें और जनता को जागरूक करने वाले विचार उन की दृष्टि में ही नहीं आते और यदि आते भी हैं तो उचित पारिश्रमिक के अभाव में अनछपे ही रह जाते हैं. प्रेस की स्वतंत्रता होते हुए भी उस का कोई अर्थ नहीं रह गया है.

समाचारपत्र और पत्रिकाएं फिल्मी विज्ञापनों और प्रेम कहानियों के संग्रह मात्र बन कर रह गए हैं. कोई विद्रोही आवाज उठने ही नहीं दी जाती और विवशतावश उठने देनी ही पड़ जाए तो उसे अत्यंत उपेक्षित स्थान मिलता है, इसलिए पत्रकार का व्यवसाय जनता और देश के लिए बेमानी हो गया है. उस से देश की प्रगति और देश की समस्याएं सुलझाने में किंचित मात्र भी योगदान नहीं मिलता. इस प्रकार बुद्धिजीवियों का यह वर्ग भी देश की समस्याओं से विमुख ही है.

आज के लेखक भी देश के प्रति सजग नहीं हैं. वे चाहे कवि हों या कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, निबंधकार या और कुछ, ऐसे साहित्य का सृजन कर रहे हैं जिस का देश की समस्याओं से कोई संबंध नहीं. कविगण तो पश्चिम में पनपने वाले वादों के चक्कर में हैं, जिस से एक के बाद दूसरे वाद का जन्म होता जाता है, जिस का जनता की विचारधारा से कोई संबंध नहीं. पराधीन भारत के

बुद्धिजीवी देश की समस्याओं के बारे में कैसे सोच सकता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कवियों ने जनता में स्वाधीनता के लिए उत्सर्ग की प्रेरणा दी थी, क्रांति की ज्वाला सुलगाई थी, किंतु आज का कवि अपनी व्यक्तिगत कुंठाओं को ले कर बैठ गया है और उन्हें भी इस प्रकार अभिव्यक्त करता है कि किसी की समझ में कुछ नहीं आता. आखिर उस के लिखने का अर्थ क्या है?

साहित्यकार कुंठा के शिकार

एक समय था, जब हिंदी प्रदेश में मैथिलीशरण, नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी आदि कवियों की वाणी जन-जन के कंठ में गूंजती थीं और युवक उन को गातेगाते, हंसतेहंसते बलिबेदी पर चढ़ जाते थे, किंतु आज एक भी कवि ऐसा नहीं है जिस की कविता आज की समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रेरणा दे सके. आज का कथा साहित्य तो और भी निकृष्ट हो गया है. कथाकार यौन जीवन के कुत्सित और अश्लील चित्र खुल कर खींचते हैं तथा उन्मुक्त प्रेम का मनोविज्ञान और यथार्थता के नाम पर चित्रण करते हुए नवयुवकों और नवयुवतियों में वासनात्मक प्रवृत्तियों को उद्दीप्त करते हैं जिस के परिणाम भ्रूणहत्याओं, आत्महत्याओं और व्यभिचार के अड्डों के रूप में आए दिन दिखाई देते हैं. यदि साहित्कार सजग हो जाएं तो देश की समस्याओं के सुलझने में देर न लगे. बुद्धिजीवियों का यह वर्ग भी देश की समस्याओं से विमुख हो गया है.

डाक्टर भी बुद्धिजीवी वर्ग का प्राणी है. आज पैसे के बल पर अयोग्य छात्रों को अच्छे अंक दिलवा कर या प्रतिव्यक्ति (कैपीटेशन) फीस दे कर मेडिकल कालिज में भरती करा दिया जाता है जो ठोंकपीट कर कभी न कभी डाक्टर हो ही जाते हैं. ऐसे डाक्टर क्या रोग का निदान करेंगे और क्या चिकित्सा करेंगे? वे चिकित्सा के नाम पर रोगियों को सस्ती से सस्ती दवा देंगे और दोगुनेतिगुने पैसे वसूल करेंगे.

आजकल डाक्टर लोग नकली दवाओं के एजेंटों से दोस्ती रखते हैं और उन से नकली दवाएं ले कर रोगियों को देते हैं, फिर रोगी मरे या जिए उन की बला से. उन्हें तो चिंता होती है केवल अपनी आय बढ़ाने की, उसे छिपा कर आय कर बचाने और इस प्रकार सरकार से चोरी करने की. इसी लिए अनेक डाक्टर रोगी की बीमारी दूर करने की बजाए उसे और बढ़ा देते हैं जिस से वह बारबार उन के पास आए और उस से मनमाना पैसा ले कर उसे ठगा जा सके.

कई डाक्टर तो मैं ने ऐसे देखे जो नाड़ी एक रोगी की देखते थे, इस्टेथस्कोप दूसरे के लगाते थे और हाल तीसरे का पूछते थे तथा दवा चौथे की लिखते थे. आश्चर्य होता है ऐसी अद्भुत प्रतिभा पर. क्या ऐसा डाक्टर किसी रोगी के साथ न्याय कर सकता है? अनेक डाक्टर तो आधी शल्य चिकित्सा कर के रोगी के संबंधियों से मनचाहे पैसे ऐंठ कर उसे पूरा करते हुए देखे गए हैं, जैसे मानवता से उन का दूर का भी संबंध नहीं रहता. सरकारी अस्पतालों में अच्छी कीमती दवाएं, टानिक, इंजेक्शन या तो पीछे के रास्ते से किसी दुकान पर पहुंच जाते हैं या विशिष्ट व्यक्तियों या नातेरिश्तेदारों में बंट जाते हैं. बेचारा साधारण व्यक्ति रंगीन पानी भरी बोतल या सस्ती गोलियां ही पा सकता है. उसे अच्छी दवा तभी मिलती है, जब वह कैसे ही सही, उन की जेब गरम करता है.

डाक्टरों की उदासीनता

भारत कृषिप्रधान या गांवों का देश है. उस की वास्तविक प्रगति गांवों की प्रगति पर निर्भर है. किंतु आज जो डाक्टर मेडिकल कालिज से निकलता है, वह गांवों में नहीं जाना चाहता. गांवों में अस्पतालों की इमारतें तो खड़ी हैं लेकिन डाक्टर नहीं हैं. कारण यही है कि गांवों में जेबें भरने की वे सुविधाएं और शारीरिक सुख के वे साधन नहीं हैं जो नगरों में उपलब्ध हैं. फिर गांवों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का निराकरण

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे हो? अतएव बुद्धिजीवियों का यह वर्ग भी देश की समस्याओं से विमुख है.

इंजीनियर भी बुद्धिजीवियों में प्रमुख हैं, जिन पर देश के सभी निर्माण कार्य निर्भर हैं और जो देश की प्रगतिशील योजनाओं को साकार करने वाले हैं. खेद है कि वे भी देश की समस्याओं से विरत हों कर स्वार्थरत हो गए हैं. तभी तो आए दिन बड़ेबड़े बांधों में दरारें पड़ती हैं, देश की करोड़ों एकड़ भूमि बाढ़ के प्रकोप से चौपट हो जाती है, खेती के साथ जनधन की अपार हानि होती है, अनेक इमारतें असमय ही ध्वस्त हो जाती हैं. इस का कारण यही है कि इंजीनियर ठेकेदारों के हाथ बिक जाते हैं, निम्न स्तर का घटिया सामान इस्तेमाल करते हैं. सीमेंट के स्थान पर राख और बालू लगाते हैं और देश के धन को दोनों मिलबांट कर खाते हैं.

इंजीनियरों में बेकारों की संख्या भी कम नहीं है. क्योंकि वे केवल सरकारी नौकरी की ही फिराक में रहते हैं जहां हरामखोरी के लिए पूरा अवकाश है. अपने और अपने देश के विकास के लिए नएनए विकल्प सोचने और स्वतंत्र उद्योग चलाने में वे अपनी बुद्धि और अपने श्रम तथा साहस का प्रयोग नहीं करते. फलतः समस्याएं सुलझने के स्थान पर और भी उलझती जा रही हैं, बल्कि यह समाज स्वयं ही एक समस्या बन गया है.

वकीलों द्वारा अन्याय को बढ़ावा

यदि स्वतंत्रता के इतिहास को देखें तो बुद्धिजीवियों का यह वर्ग, जिसे वकील कहते हैं, स्वाधीनता संग्राम में अग्रणी रहा है, किंतु आज यह वर्ग भी देश की समस्याओं से विमुख हो गया है. न्याय और समता का प्रसार करना इस वर्ग का कर्तव्य है, किंतु समाज में जितना अन्याय यह वर्ग अपनी रोटीरोजी के लिए करवा रहा है, उतना दूसरा नहीं. अनेक वकील तो अपने एजेंट या गुंडे पाल कर रखते हैं, जो झगड़े कराते हैं और फिर उन्हें अपने वकील के पास लाते हैं जिन से वे कमीशन पाते हैं. कानून का सहारा न ले कर अपने पक्ष को गलत या सही ढंग से जिताने के लिए ये न्यायाधीशों को रिश्वत दिलाते हैं, विभिन्न प्रकार की तिकड़में भिड़ाते हैं. किंतु देश की समस्याओं के प्रति उन की कोई रुचि नहीं है.

यदि सच पूछा जाए तो कानून का ज्ञाता तथा अधिक तर्कशील होने के कारण यह वर्ग देश की समस्याओं को सुलझाने में सर्वाधिक योग दे सकता है. किंतु आज तो इन की कृपा से जजों के लिए प्रयुक्त 'न्यायमूर्ति' शब्द, इस शब्द का ही अपमान प्रतीत होता है, क्योंकि यह देखा जाता है कि बहुधा निरपराध व्यक्ति दंड का भागी हो जाता है और अपराधी खुले

पतन

जिस मनुष्य की बुद्धि का विकास नहीं होता अथवा जो बुद्धिद्रोही या अविवेकी होता है वह मनुष्यता से गिर जाता है. —कौटिल्य

आम पैसे के बल पर मूंछों पर ताव देता हुआ न्याय व्यवस्था की खिल्ली उड़ाता है और सरेआम न्याय के इन ठेकेदारों को गाली बकता है. न्याय महंगा होने के कारण सर्वसाधारण को उपलब्ध भी नहीं हो पाता. इसलिए यह थोथी, झूठी न्याय प्रणाली देश की शक्तियों का अपव्यय करने का साधन ही सिद्ध होती है. इस का कारण इस बुद्धिजीवी वर्ग का देश की समस्याओं से विमुख होना ही है.

आज के वैज्ञानिक युग में वैज्ञानिक भी एक महत्त्वपूर्ण बुद्धिजीवी हैं, जो अपने क्षेत्र की समस्याओं से विलग हो कर देश की सामान्य समस्याओं पर कभी विचार ही नहीं करता. यहां तक कि क्षेत्रीय समस्याओं से विरत हो कर वह अपने निजी उद्देश्य पूर्ति हेतु देश का त्याग करने में भी संकोच नहीं करता. इस के अतिरिक्त वह पश्चिम की नकल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

करने में ही अपनी प्रतिभा का सदुपयोग मानता है. नए अनुसंधानों के लिए उस का स्वाभिमान जाग्रत नहीं होता. आत्म-विश्वास और निष्ठा की कमी उसे अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक नहीं रहने देती. इस स्थिति में उस से देश की समस्याओं के समाधान की अपेक्षा करना मृगमरीचिका ही है.

देश के इन सभी बुद्धिजीवियों पर विचार करने से हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि आज का भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग अपने निहित स्वार्थों में ही लीन है; देश और समाज की उन्नति से उसे कोई मतलब नहीं. नई पीढ़ी को कोसना और अपनी परंपराओं से चिपके रहना इन की आदत हो गई है. इसी कारण देश आगे नहीं बढ़ रहा है. ऐसा लगता है कि समस्त बुद्धिजीवी वर्ग बुद्धिहीन हो गया है और विवेक की लाश को अपने कमजोर कंधों पर ढो रहा है. तभी तथाकथित नेता मनमानी कर रहे हैं और स्वराज्य विडंबना मात्र बन कर रह गया है. यह देश का दुर्भाग्य नहीं, तो क्या है? जिस देश का बुद्धिजीवी वर्ग सोया हो, उस के विकास का स्वप्न ही देखा जा सकता है. •

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

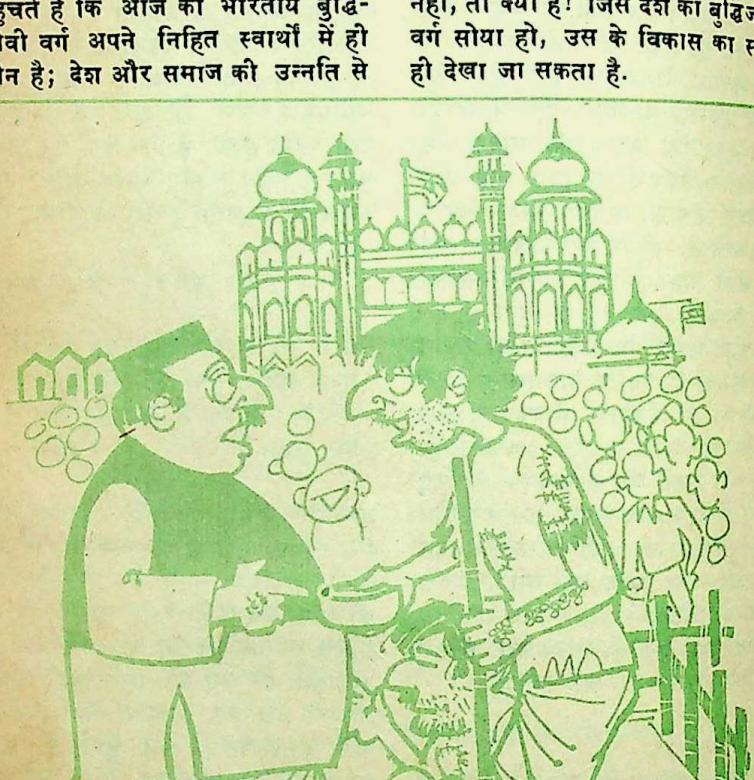

"स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस और बड़ेबड़े मेले के दिनों में मेरा बिजनेस बहुत बढ़ जाता है, इसलिए मैं इन दिनों भीख मांगने के लिए एकदो सहायक रख लेता हूं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशों में बसे भारतीय

विदेशी सरकारों ने जब चाहा उन्हें खदेड़ दिया...लेकिन भारत सरकार ने उन के लिए क्या किया?

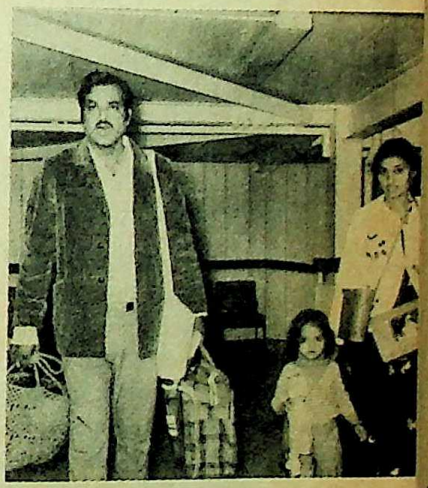

लेख
•
कुसुम मेघवाल

भारतीय मूल के लगभग 55 लाख व्यक्ति विदेशों में बसे हैं जिन में से अधिकांश के पुरखे ब्रिटिश शासनकाल में भारत से गए थे. उन लोगों के हितों की रक्षा करने और विदेशी सरकारों द्वारा इन्हें अपमानित कर बाहर निकाल देने की कठोर नीति का विरोध करने में भारत सरकार लगभग उदासीन ही है. उन के संबंध मे भारत सरकार की न कोई नीति है, और न कोरे आदर्शों से बोझिल विदेश नीति में इन के हितों की रक्षा का कोई ध्यान रखा जाता है.

देश विभाजन के साथ ही पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान से अल्पसंख्यकों के निष्कासन से यदि भारतीय नेताओं ने कुछ सबक लिया होता तो उन्होंने विदेश में रहने वाले इन भारतीयों के संबंध में कोई स्पष्ट एवं सम्मानजनक नीति निर्धारित की होती. वे इस संभावना पर भी विचार करते कि ब्रिटिश उपनिवेशों की समाप्ति के साथ ही पाकिस्तान की तरह अन्य देशों में भी भारतीयों पर निष्कासन की चोट पड़ सकती है.

युगांडा से निष्कासन

पिछले दिनों युगांडा के राष्ट्रपति ईदी अमीन ने एशियाई लोगों को तीन महीने की अवधि में अपने देश से बाहर निकल जाने को विवश किया. उन में 4,500 के लगभग भारतीय प्रवासी भी थे. इन लोगों को अपनी लाखों रुपए की संपत्ति को न केवल मिट्टी के मोल बेच कर भागना पड़ा था, बल्कि उन में से कइयों को वहां के फौजियों से पीड़ित व अपमानित भी होना पड़ा था.

ये वही लोग थे, जो वहां के व्यापार व उद्योग के आधारस्तंभ थे. वहां की औद्योगिक व व्यापारिक प्रगति में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. ऐसे 53,000 एशियाइयों में से निष्क्रमण की अवधि समाप्त होने पर केवल 700 ही वहां बचे. 76,000 की जनसंख्या वाले युगांडा से 53,000 लोगों का निष्कासन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

छोटी बात नहीं थी. निष्कासन के बाद वहां डाक्टरों, शिक्षकों व अन्य कर्मचारियों की भारी कमी पड़ गई. चीजों के भाव भी बहुत बढ़ गए. एक एशियाई दुकानदार जिस कमीज को 50 रुपए में बेचता था, वह उन के चले जाने पर 180 रुपए में मिलती थी. उसी प्रकार स्त्रियों के 'बासूति' नामक वस्त्र का मूल्य 180 रुपए से बढ़ कर 400 रुपए हो गया. इस कीमत पर भी 'युगांडा युगांडा-वासियों के लिए' की बहशियाना मांग पूरी हो कर रही.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहली घटना नहीं

भारतीय मूल के लोगों को इस से पहले भी केन्या, तनजानिया और बर्मा में ऐसी दुखद स्थिति का सामना करना पड़ा था.

परतंत्र देशों के स्वतंत्र होने और वहां के पिछड़े हुए निवासियों के उन्नति करने के साथ ही विदेशियों को निकाल बाहर करने की नीति कई देशों में अपनाई गई और निकट भविष्य में भी अपनाई जा सकती है. पर भारतीय नेताओं ने इस संबंध में कोई बुद्धिमत्तापूर्ण नीति अपनाने और समस्या का कोई कारगर हल खोजने का प्रयास नहीं किया. ऐसी स्थिति में कई देशों में बसे भारतीय अपनेआप को अधर में लटके हुए महसूस करते हैं.

उपनिवेश बनाने नहीं गए

भारतीय अंगरेजों, फ्रांसीसियों, डचों और पुर्तगालियों की तरह विदेशों में उपनिवेश बनाने नहीं गए, वरन वे वहां मजदूरी और व्यापार करने के लिए गए थे. उन्होंने उन देशों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और वे वहां की महत्त्वपूर्ण इकाई बन गए. फिर भी कई देशों के मूल निवासी भारतीयों को उसी नजर से देखते हैं, जिस नजर से हम कभी अंगरेजों को देखते थे. वे लोग नहीं चाहते कि विदेशी उन के देश में धन कमाएं. बर्मा, श्रीलंका, केन्या, युगांडा आदि के भारतीयों को वहां के निवासी अपना शोषक मान कर उन्हें बाहर निकालना चाहते हैं और निकाल रहे हैं. समय बदलने के साथ अन्य देशों में भी ऐसा हो सकता है.

बर्मा से आरंभ

सन 1948 में बर्मा ब्रिटिश दासता से मुक्त हो स्वतंत्र गणराज्य बना. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद धीरेधीरे बर्मा सरकार का रुख भारतीयों के विरुद्ध होता गया और उन्हें बर्मा छोड़ना पड़ा. 1963 और 1965 के बीच बर्मा सरकार की राष्ट्रीयकरण की नीति से प्रभावित हो 96,000 भारतीय भारत लौटे.

1951 में वहां सात लाख भारतीय थे. अब वहां केवल 65 हजार भारतीय हैं. बर्मा से लौटे भारतीयों में से अधिकांश दक्षिण भारत के मूल निवासी थे. उन के रिश्तेदारों के सहयोग के कारण उन्हें पुनः वहां बसने में कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई.

युगांडा से निकाले गए इन भारतीयों का भविष्य क्या होगा?

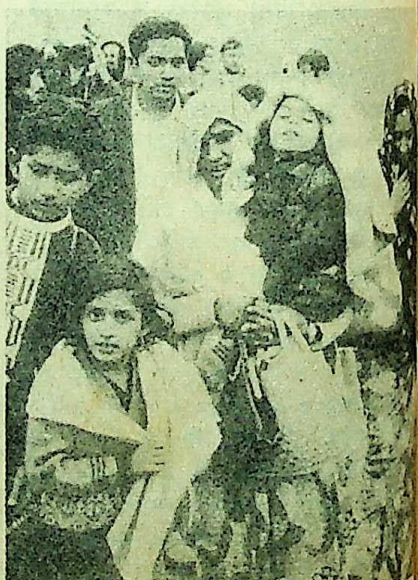

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1955 में श्रीलंका में लगभग 10 लाख भारतीय थे, जिन में अधिकांश तमिलनाडु के थे. आरंभ में अंगरेज मालिक उन्हें वहां रबर व चाय बागान के श्रमिकों के रूप में ले गए थे. बाद में कई संपन्न व्यापारी भी वहां पहुंच गए. जब तक अंगरेज रहे, तब तक उन की कोई समस्या नहीं थी—1930 की विश्व-व्यापी मंदी में भी नहीं—किंतु उन के जाते ही भारतीयों को श्रीलंका से निकाल बाहर करने की नीति अपनाई गई.

1948 में श्रीलंका की स्वाधीनता के साथ ही भारतीयों ने वहां की नागरिकता पाने की कोशिश की, पर वे सफल न हो सके. 1965 में भारत सरकार व श्रीलंका सरकार के बीच एक समझौता हुआ जिस के अनुसार भारत प्रति वर्ष 5 लाख, 25 हजार लोगों को भारत की नागरिकता देगा व उन्हें 15 सालों में भारत बुलाएगा. तीन लाख को श्रीलंका की नागरिकता दी जानी थी, पर जिस गति से काम हो रहा है, उसे देख कर लगता है कि यह समझौता मात्र कागजों पर ही रह जाएगा. 1968 में श्रीलंका में 10,71,600 भारतीय थे, जिन में से 32,400 भारत के नागरिक थे. शेष 10,39,200 भारतीयों में से कई लाख ऐसे थे जो श्रीलंका में ही पैदा हुए थे और कभी भारत नहीं आए थे, पर वे श्रीलंका सरकार की अन्यायपूर्ण नीति व भारत सरकार की ढिलाई के कारण वहां के नागरिक न बन सके.

अन्य देशों में भारतीय

1968 के अनुमानित आंकड़ों के अनुसार मारीशस द्वीप में पांच लाख भारतीय हैं, जो वहां बहुसंख्यक (67 प्रतिशत) हैं. उन की 'लेबर पार्टी' के हाथ में अभी वहां का शासन है. मारीशस को छोटा भारत भी कहा जाता है.

ढाई लाख भारतीय फिजी द्वीप में रहते हैं, जो वहां की जनसंख्या का 50 प्रतिशत है. गायना में भी भारतीय वहां की कुल जनसंख्या के 50 प्रतिशत हैं. उन की संख्या 3,50,000 है. तीन लाख भारतीय ट्रिनिडाड व टोबेगों में बसते हैं, जो वहां की जनसंख्या का 36 प्रतिशत है.

फिजी की अर्थव्यवस्था में भारतीयों का महत्त्वपूर्ण योगदान है, लेकिन वे वहां कब तक सुरक्षित रह सकेंगे?

इंगलैंड, अमरीका व कनाडा में कुल मिला कर लगभग तीन लाख भारतीय हैं, जिन में से दो लाख अकेले इंगलैंड में हैं.

दक्षिणी अफ्रीका के देशों में 5,50,000 भारतीय रहते हैं. पूर्वी अफ्रीका के तीन देशों केन्या, तनजानिया व युगांडा में 1968 के आंकड़ों के अनुसार 3,50,000 भारतीय थे, मध्य अफ्रीका के मलावी, जांबिया व रोडेशिया देशों में 26,000 भारतीय बसे हैं.

मलेशिया में 8,00,000 व सिंगापुर में 1,30,000 भारतीय रहते हैं. हांगकांग में 8,200, वियतनाम में 8,000 और थाइलैंड में 20,000 भारतमूलक लोग रहते हैं. इन के अतिरिक्त इंडोनेशिया, दुबाई, बेहरीन, सूडान, ईराक, अफ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गानिस्तान, न्यूजीलैंड आदि देशों में एक-एक हजार से ऊपर भारतमूलक लोग रहते हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसमानी आदर्श पर नीति

विश्व शांति और विश्वबंधुत्व के नाम पर जो भारत शत्रु देश चीन को संयुक्त-राष्ट्र संघ का सदस्य बनाने के लिए वर्षों तक वकालत करता रहा हो, वही बर्मा, केन्या व युगांडा से निष्कासित किए गए भारतवंशियों के साथ हुए अन्याय को चुपचाप देखता रहा. उन देशों की सरकारें उन्हें अपने देश का नागरिक नहीं मानतीं तो यह उन का आंतरिक मामला कैसे माना जा सकता है? भारत सरकार ने कभी संयुक्त राष्ट्र संघ में इस संबंध में आवाज तक नहीं उठाई, न उन देशों पर ही कोई दबाव डाला.

76,000 की जनसंख्या वाले युगांडा के 23,000 अफ्रीकी मूल के युगांडा-वासियों के हितों की रक्षा के लिए वहां की सरकार ने 53,000 एशियावासियों को तीन महीनों में अपमानित व त्रस्त कर के बाहर निकाला. तब अफ्रीकी देशों की मित्रता का दम भरने वाला भारत कैसे चुप बैठा रहा? अल्पसंख्यक की हितरक्षा के लिए बहुसंख्यकों को इस प्रकार निकाल बाहर करना कि उन्हें अपनी संपत्ति को मिट्टी के मोल बेच कर भाग खड़ा होना पड़े, उस देश का आंतरिक मामला कैसे माना जा सकता था?

अफ्रीकी देशों में

दक्षिण अफ्रीका में गोरों द्वारा और पूर्वी अफ्रीका में कालों द्वारा भारतमूलक लोगों को परेशान किया जाता है. वहां की सरकार उन्हें दूसरे दर्जे का नागरिक मानती है. उन्हें संपत्ति खरीदने, मकान बनाने, होटल चलाने की स्वीकृति देने में भेदभाव बरता जाता है. नौकरी, शिक्षा, खेल आदि में भी उन्हें समान अवसर नहीं मिलते.

ये वही लोग हैं, जिन्होंने अफ्रीका को आबाद किया है. मोंबासा, लेक विक्टोरिया, न्याजा रेलवे लाइन के निर्माण में 25,000 भारतीयों ने अपने प्राण गंवाए थे. इस तथ्य को ब्रिटिश प्रधान मंत्री चर्चिल ने भी स्वीकारा था, किंतु उन की स्थिति आज त्रिशंकु जैसी हो गई है. वहां की सरकार की नीति तो अन्यायपूर्ण है ही, भारत सरकार का रवैया भी कम अफसोसजनक नहीं है.

अफ्रीकी देशों में रहने वाले भारत-वंशी अपने देश और देशवासियों से कितना ही प्रेम क्यों न करते हों, भारत सरकार ने अफ्रीकी देशों के साथ जो विदेश नीति अपनाई है, उस से कतई संतुष्ट नहीं हैं.

समस्याओं की संभावना

पहले बर्मा से, फिर केन्या से और अब युगांडा से भारतीयों को निष्कासित किया गया. श्रीलंका में बसे दस लाख से ऊपर भारतवंशियों की स्थिति भी अधर में लटके जैसी है.

कई देशों में बसे भारतीयों के सामने निष्कासन जैसी कोई समस्या नहीं है, पर इस की क्या गारंटी है कि वहां भी समस्याएं नहीं उठ खड़ी होंगी. बर्मा केन्या व युगांडा में घटी घटनाओं के समय भारत सरकार ने जो दब्बूपन दिखाया है, उस से और भी किसी देश की सरकार का भारतीयों के साथ वैसा व्यवहार करने का साहस हो सकता है.

निष्कासन पर न सही, पर उन के साथ हुए दुर्व्यवहार को ले कर तो संबंधित देश पर दबाव डाला ही जा सकता था. उन की संपत्ति व सम्मान की रक्षा के लिए तो कोई ठोस कदम उठाए ही जा सकते थे. आदर्श के नाम पर दलाई लामा को शरण दे कर 70 करोड़ जनशक्ति वाले चीन से दुश्मनी मोल लेने जैसी विदेश नीति अपनाने वाले भारत की इस नीति में अपने ही 55 लाख रक्त बंधुओं के लिए कोई स्थान न होना कितना हास्यास्पद और दुखद है!

इस दब्बू नीति के कारण पूर्वी पाकिस्तान के अल्पसंख्यक हिंदुओं को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वहां की सरकार की मुसलिमपरस्त नीति के कारण बड़ा दुर्व्यवहार सहना पड़ा. अब वह बंगला देश बन गया है. वहां की 13 प्रतिशत जनसंख्या हिंदू है, पर वहां स्थिति यह है कि ढाका के बाजारों में कोई हिंदू अपने मौलिक पहनावे व विशिष्ट चिह्न को धारण किए नजर नहीं आता.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे छोटे से पड़ोसी देश नेपाल की 87.7 प्रतिशत जनसंख्या भारतमूलक है. वहां के महाराजा त्रिभुवन कभी नेपाल का भारत में विलय चाहते थे—आज वहां का नेपाली समाज भी 1960 के बाद वहां बसे भारतीयों को दी जाने वाली सुविधाओं का विरोध करने लगा है. इस से स्पष्ट है कि किसी भी देश की सरकार कभी भी वहांबसे विदेशियों को निष्कासित करने की नीति अपना सकती है.

संपर्क कहां रहा?

महात्मा गांधी ने पराधीन भारत में भी विदेशी भारतीयों को भारत से जोड़ने का काफी प्रयास किया था, किंतु स्वतंत्र भारत में उन्हीं के अनुयायी कहलाने वाले नेतागण अपनी कुरसी बचाने और घर भरने की राजनीति में ऐसे फंसे कि उन्हें इस ओर ध्यान देने की फुरसत ही नहीं रही.

विदेशों में रहने वाले भारतवंशियों के सामने जब कभी कोई गंभीर समस्या खड़ी होती है, तब भारतीय नेता कड़ा विरोधपत्र भेजने या उपदेश देने जैसा वक्तव्य जारी करने में ही अपने कर्तव्यों की इति समझ लेते हैं. सामान्य स्थिति में विदेशों में रहने वाले भारतीयों के दुख-सुख में साथ देने का काम भारतीय दूतावासों पर छोड़ दिया जाता है, जिन से प्रायः विदेशों में रहने वाले भारतीयों को वह सौजन्य व सद्व्यवहार नहीं मिल पाता जो दूसरे दूतावासों से मिलता है. भारतीय दूतावासों में भी उन्हें वैसी ही लालफीताशाही के दर्शन होते हैं जैसे यहां के प्रशासनिक ढांचे में मिलते हैं.

जीवन की मुसकान

हमारे गांव के एक संबंधी अकसर हमारे यहां एकाध दिन के लिए ठहरते थे.

एक बार जब वह लौट कर गए तो जाने के तीसरे ही दिन उन की एक्सप्रेस चिट्ठी आई, "आते समय मैं अपना काला झोला वहीं छोड़ आया हूं, अगर मिले तो उठा कर रख लेना."

हम ने उन का झोला इधरउधर काफी ढूंढ़ा, पर न मिला. हम ने भी यह सोच कर कि पुराने थैले के पीछे कौन अपना दिमाग खराब करे उन्हें लिख दिया, "थैला यहां नहीं है."

बात आईगई हो गई. और वह पहले की तरह ही हमारे यहां आतेजाते रहे.

दीवाली के मौके पर घर की सफाई की तो थैला बड़ी अलमारी के पीछे पड़ा मिला. ज्यों ही हम ने वह थैला उठाया उस में से सौसौ के दस नोट सरसर करते हुए नीचे गिर पड़े. हम सब चौंक पड़े और हम ने वह थैला ज्यों का त्यों उठा कर रख दिया.

अगली बार जब वह संबंधी फिर आए तो भाई साहब वही थैला उन्हें लौटाते हुए बोले, "चाचाजी, आप ने हमें यह क्यों नहीं लिखा कि उस में हजार रुपए के नोट हैं. अगर आप यह लिख देते तो हम उसी समय थैला ढूंढ़ कर आप को भिजवा देते. वह तो अच्छा हुआ कि चूहों ने नोट काटे नहीं."

यह सुन कर वह मुसकरा कर बोले, "इसलिए नहीं लिखा कि अगर यह थैला कोई और उठा कर ले जाता तो मैं शर्म के तुम खुद अपने पास से ये रुपए देते और मैं यह नहीं चाहता था कि मेरी असावधानी का दंड तुम्हें भोगना पड़े."

—अरविंदकुमार गर्ग, मेरठ ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मारीशस (जिसे छोटा भारत भी कहते हैं) की सुंदर और उपजाऊ धरती पर सांस्कृतिक साम्राज्य स्थापित करने के लिए दुनिया का सभी बड़ी ताकतें पूरा जोर लगा रही हैं. फ्रांस, इंगलैंड, रूस, अमरीका और चीन इस दौड़ में एकदूसरे से जम कर स्पर्धा कर रहे हैं, किंतु भारत सरकार इस ओर से उदासीन ही है.

मारीशस में 67 प्रतिशत भारतीय हैं, पर वहां हिंदी भाषा का एक भी पत्र नहीं निकलता. दूसरी ओर फ्रांस वहां फ्रांसीसी साहित्य वितरित कर रहा है, यह सोचने की बात है.

इन्हीं दिनों श्रीलंका सरकार ने एक नया नियम बनाया है, जिस के अनुसार श्रीलंका में भारत से उतनी ही पुस्तकें व पत्रपत्रिकाएं मंगाई जा सकेंगी जितनी भारत श्रीलंका से मंगाता है. यह वहां के तमिलभाषी भारतमूलकों को परेशान करने व उन की सांस्कृतिक हत्या करने की नई चाल है. इस से उन के भारत से संपर्क शिथिल होंगे. लेकिन भारत सरकार इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रही है.

भारत के प्रति भक्ति कब तक?

विदेशों में बसे भारतीय भारत सरकार की इस उपेक्षा और उन के जीवनमरण के प्रश्नों की ओर बरती गई उदासीनता को सहते हुए भी भारत के भक्त हैं. वे यहां के सुख में सुखी व दुख में दुखी होते हैं. किंतु यह एकतरफा प्रेम कब तक निभ पाएगा, कहा नहीं जा सकता.

भारतीय प्रवासियों की नई पीढ़ी को भारत से न सुरक्षा एवं सहानुभूति मिलती है, न यथोचित संपर्क. विदेशी समाचार-पत्रों के आधार पर यह धारणा बनती जा रही है कि भारत मूर्खों, भ्रष्टाचारियों, निर्धनों व अशिक्षितों का देश है. तब वे कब तक भारत के भक्त बने रहेंगे, कहा नहीं जा सकता.

55 करोड़ जनशक्ति वाला देश कठिन समय में अपने रक्तबंधुओं की कोई सहायता न कर सके, उन्हें पीड़ित व अपमानित करने वाले देश का आंतरिक मामला बता कर दब्बू व खामोश बना बैठा रहे तो दुनिया के देश उसे कमजोर नहीं, तो और क्या कहेंगे?

क्यों नहीं भारत सरकार विदेशों में रहने में रहने वाले भारतीयों के हितों के संरक्षण की ठोस नीति अपनाती? कठिनाई के समय वे भारत की ओर आशाभरी दृष्टि से देखते हैं, किंतु भारत सरकार उन की पीठ पर कहां रहती है? इस का अर्थ अन्य देश यही लगाते हैं कि भारतवासी कमजोर हैं, कायर हैं. ●

लालफीताशाही का चक्कर

फैजाबाद के नगरपालिका के एक मिस्त्री अब्दुल सत्तार ने जिला पूर्ति कार्यालय में एक आवेदनपत्र दिया कि उस के पुत्र की शादी है, अतः उसे चीनी का एक स्पेशल परमिट दिया जाए.

लगभग दस दिनों तक उसे कार्यालय में दिलासा दिया जाता रहा कि उसे परमिट दे दिया जाएगा. शादी के एक दिन पहले उस ने जब परमिट के लिए फिर मांग की तो उसे बताया गया कि चीनी का परमिट उसे नहीं मिल सकता, क्योंकि पूर्ति निरीक्षक ने उस के आवेदनपत्र पर अपना यह नोट अंकित कर दिया है कि आवेदक की तो मृत्यु हो चुकी है.

मिस्त्री सत्तार ने बहुत हाथपैर मारे. जिला पूर्ति अधिकारी के आगे जा कर रोयागाया भी, लेकिन सभी ने उस से कहा पूर्ति निरीक्षक की रिपोर्ट को देखते हुए उसे चीनी का विशेष परमिट दिया ही नहीं जा सकता.

—स्वतंत्र भारत, लखनऊ. (प्रेषक : श्रीप्रकाश मिश्र, हरदोई)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • ओमप्रकाश

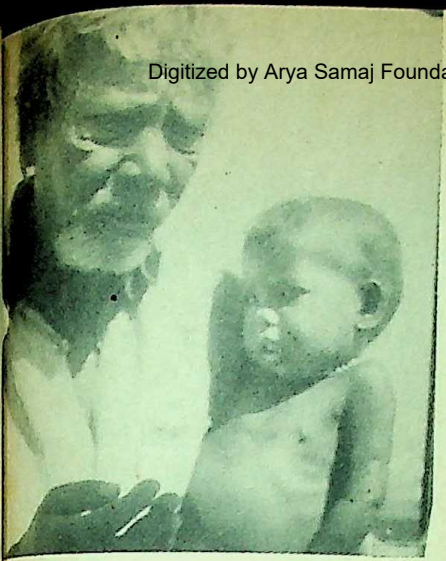

छाया • प. क. इसरानी

आजादी का सत्ताइसवां वर्ष

राजनीतिक अनैतिकता, आर्थिक विपन्नता, चोर-बाजारी, भ्रष्टाचार, लाल फीताशाही, भुखमरी और गरीबी के अलावा हमारी उपलब्धियां और क्या हैं?

15 अगस्त, 1974 को आजाद हिंदुस्तान 27 वर्ष का हो गया. 27 वर्ष की घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक संपन्नता और सामाजिक समानता के स्वप्न रिसरिस कर समाप्त हो रहे हैं. धर्मनिरपेक्ष प्रजातंत्र का दावा करने वाली, एक ही दल की तानाशाह सरकार केवल अनैतिकता और भ्रष्टाचार का साम्राज्य स्थापित करने में सफल रही है.

यह कोई पूर्वाग्रह सहित भड़ास नहीं है. इस वर्ष कीमतें 29 प्रतिशत बढ़ गईं. इस वर्ष की पैदावार 30 लाख टन कम रही जब कि खाने वालों की संख्या में साढ़े तीन करोड़ की बढ़ोतरी हो गई. इस कमी को पूरा करने के लिए 40 लाख टन अनाज आयात करना होगा. इस पर 700 करोड़ रुपया खर्च आएगा. यह खर्च पिछले वर्ष की तुलना में तिगुना होगा.

साथ ही तेल की कीमत चौगुनी और खाद का मूल्य पांच गुना बढ़ गया है. इस प्रकार विदेशी मुद्रा की हमारी राशि और आवश्यकता में 1,000 करोड़ रुपए का अंतर आ जाएगा. इन्हीं बातों को मद्देनजर रखते हुए विश्व बैंक ने अपनी गोपनीय रिपोर्ट में कहा है कि भारत को पांचवीं पंचवर्षीय योजना में 12 अरब रुपए की विदेशी मदद की जरूरत होगी. यह राशि योजना की घोषित अनुमानित आवश्यकता पांच अरब रुपए से ढाई गुना है.

जहां एक ओर कीमतें बढ़ीं और दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं का अभाव हुआ, वहां यहां का आम आदमी और मजदूर बेसब्र हो गया. यह बेसब्री बंबई की कपड़ा मिलों की 41 दिनों की हड़ताल, पश्चिम बंगाल की जूट मिलों की 33 दिनों की हड़ताल, तमिलनाडु के कपड़ा मजदूरों की 20 दिनों की हड़ताल, जीवन बीमा निगम के दो महीनों के आंदोलन और सात दिनों की आंशिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तालाबंदी में झलकी. इस की पराकाष्ठा हुई देश भर के रेलवे कर्मचारियों के 20 दिवसीय आंदोलन में, जिस में होने वाला नुकसान मांगों से कहीं ज्यादा रहा.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार में जनविद्रोह

केवल मजदूरों का ही नहीं, आम जनता के सब्र का प्याला भी छलक उठा. पहले गुजरात की गांधीवादी जनता ने केंद्रीय सरकार के 'सूबेदार' चिमनभाई पटेल की भ्रष्ट सरकार के विरुद्ध विद्रोह का नारा बुलंद किया और वहां की सफलता से प्रेरित हो कर श्री जयप्रकाश-नारायण के नेतृत्व में देश के सब से पिछड़े राज्य बिहार में जनविद्रोह की ज्वालाएं भड़क उठीं, जिन की आग अभी तक शांत नहीं हुई है.

इस पूर्णतया अंधकारमय वर्ष में उपलब्धि की एकमात्र किरण मई में की गई परमाणु परीक्षण में दिखाई दी. यह भारतीय वैज्ञानिकों की ठोस उपलब्धि थी. इस की गोपनीयता और सर्वांग सफलता पर देश तो रोमांचित हुआ ही, परमाणु शक्ति को अपनी बपौती समझने वाले बड़े राष्ट्र भी झल्ला उठे.

चालाक केंद्रीय नेतृत्व ने देश की खराब स्थिति को पोखरन के परमाणु विस्फोट में दबाना चाहा. यह विस्फोट, जो भारत की तथाकथित शांति नीति में स्पष्ट परिवर्तन था, एक क्षणिक सनसनी के अलावा कुछ और पैदा न कर सका क्योंकि वनस्पति घी, कोयले और गेहूं की लाइनों में इस से कोई कमी नहीं हुई और 56 करोड़ पेटों के गड्ढों को राजस्थान की मरुभूमि की रेत भर नहीं पाई.

राशन की लंबी लाइन में खड़े लोग : आखिर यह इंतजार कब खत्म होगा?

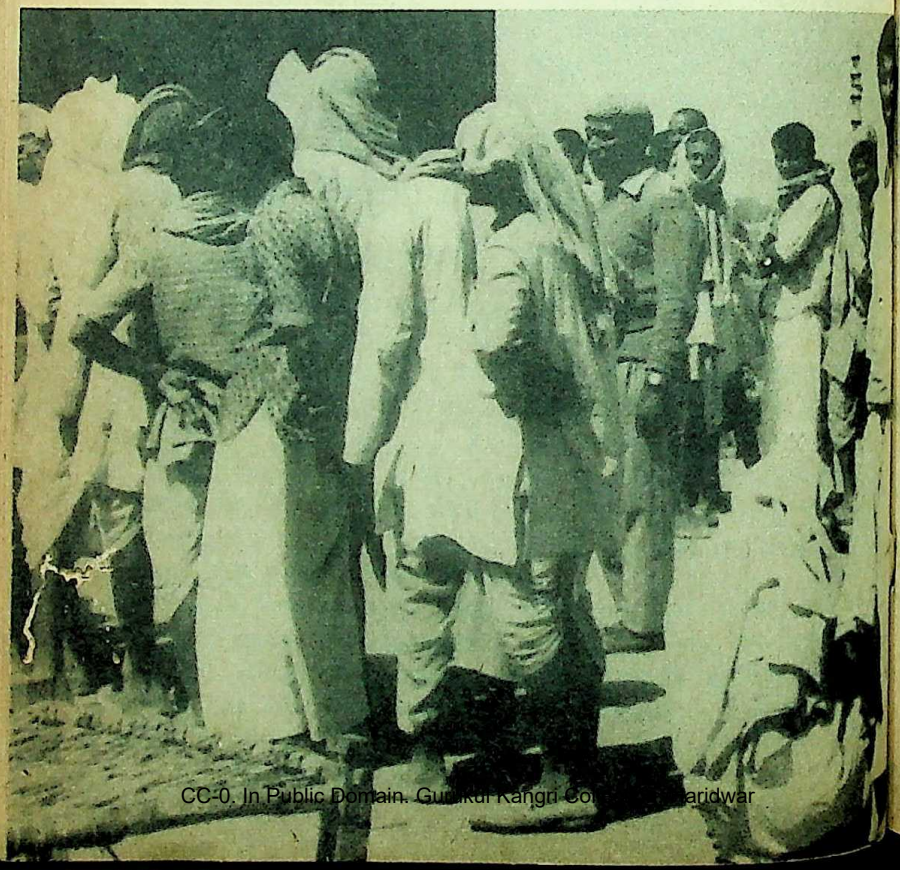

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

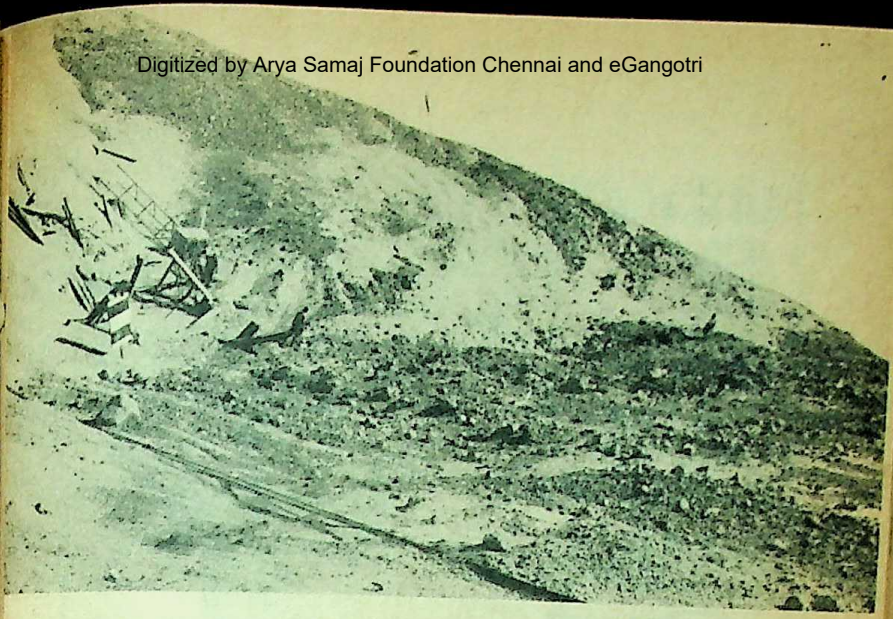

परमाणु विस्फोट एक उपलब्धि रही पर गरीबी का विस्फोट कब रोका जाएगा?

जब इस पटाखे से पर्याप्त तालियां नहीं बजीं तो यहां की समाजवादी सरकार ने अध्यादेशों का सहारा लिया. उस ने ऋणों में कटौती की, वेतनवृद्धि पर आंशिक रोक लगाई, लाभांशों को कम कर दिया और जबरन बचत का शिकंजा कस दिया. शायद सरकार प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कीन्स की इस टिप्पणी पर अमल कर रही थी कि मुद्रास्फीति सरकारों के अर्थाभाव से पैदा होती है, इसलिए सरकार को पैसा जुटाना चाहिए. पर शायद सरकार उसी के इस दूसरे सिद्धांत को भूल गई कि मुद्रास्फीति को दूर करने के लिए अधिक कराधान कोई इलाज नहीं है, क्योंकि वह पहले ही आसमान को छूने वाली कर दरों से बटोरे हुए धन के इस्तेमाल का औचित्य सिद्ध नहीं कर पाई है.

सरकार ने 1971 में कोयला खानों का सरकारीकरण किया था. तब से उत्पादन प्रति वर्ष 775 लाख टन चला आ रहा है जब कि 1965 में 970 लाख टन का लक्ष्य निर्धारित किया गया था. कुछ तो कोयला कम निकला और जो निकला वह वितरित नहीं हुआ. वितरित भी कैसे होता? 4,00,000 उपलब्ध रेल वैगनों में से 20 प्रतिशत खराब पड़ी हैं. इस सब के ऊपर, कोयला अधिकरण को लगभग 20 करोड़ रुपए वार्षिक का नुकसान हो रहा है, जहां पहले निजी कोयला स्टाक करने वाले लाखों रुपए कमा रहे थे और कोयला सस्ता बेच रहे थे.

सरकार की खाद्य नीति

कोयले की कमी हुई तो सीमेंट, स्टील, बिजली और रसायनों के उत्पादन पर असर पड़ा. खाद्यान्न के मोर्चे पर सरकार पहले ही असफल रही थी. कुल मिला कर नतीजा यह निकला कि सरकार ने समाजवाद की स्थापना हेतु अलाभकारी मदों में जो 20,000 करोड़ रुपया खर्च किया था, वह बेकार गया. सरकार ने इस वर्ष गेहूं के थोक व्यापार को अपने हाथ से छोड़ कर सिद्ध कर दिया कि उस की नीति असफल रही है.

हमारे स्टील कारखाने केवल 65

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैरों में मोच?

आयोडेक्स मलिए, जो पीड़ा हरे, अच्छा करे

दूसरे बाम पीड़ा से आराम भले पहुंचाएं, आयोडेक्स आराम पहुंचाने के साथ साथ अच्छा भी करती है. क्योंकि इसमें आयोडीन मिली है.

जोड़ों और मांसपेशियों की पीड़ा के लिए एकमात्र बाम — आयोडेक्स.

आयोडेक्स मलिए-अपने काम पर चलिए

लिंटास-IODEX. 3-75 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उन की क्षमता 90 से 100 लाख टन के बीच है. [illegible] उत्पादन में कमी के कारण अन्य औद्योगिक उत्पादनों में 30 से 90 प्रतिशत तक का अंतर पड़ा. बिजली में कमी का सीधा संबंध कोयले के उत्पादन से रहा क्योंकि हमारे देश में अधिकांश बिजली तापबिजलीघरों में बनती है जो कि कोयले से चलते हैं. यह बात उल्लेखनीय है कि अधिकांश राज्य बिजली बोर्ड घाटे में चलते रहे जब कि निजी कंपनियां निश्चित उपभोक्ता दर के बावजूद मुनाफा देती रहीं. उधर बोर्डों के हिसाब तक तैयार नहीं रहते थे और अनेक शिकायतें मिलीं कि उन की एकतिहाई बिजली चोरी चली जाती है.

बेरोजगारों की सूची

आलोच्य वर्ष में प्रति दिन 57,000 शिशु पैदा हुए और भारतीय समाजवादी सरकार ने 10,000 नौजवानों को हर रोज बेकारों की सूची में जोड़ा. इस पर [illegible] एकाधिकार के कारण हो रहा है. वस्तुतः एकाधिकार के कारण जो पूंजी बाजार में लगाई जा रही है, वह कुल पूंजी का पांच प्रतिशत है.

बिहार और गुजरात के आंदोलनों में छात्रों ने नेतृत्व अपने हाथ में ले कर वर्तमान शिक्षा पद्धति में अपनी पूर्ण अनास्था प्रकट कर दी. केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री नूरुलहसन ने संसद में घोषणा की कि वर्तमान परीक्षा प्रणाली निरर्थक और प्रभावहीन है. यह हम पिछले 50 वर्षों से सुनते आ रहे हैं, पर आज तक सरकार ने कोई विकल्प प्रस्तुत नहीं किया. मेरठ विश्वविद्यालय, काशी विद्यापीठ और दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपतियों ने खिन्न हो कर त्यागपत्र दे दिए. उधर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कालिजों और विश्वविद्यालय के अध्यापकों के वेतनों में किसी शर्त और प्रगति के बिना प्रोत्साहन के रूप में वृद्धि कर के अपनी तुष्टिकरण की नीति का एक और उदाहरण पेश किया. सरकार इस

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के पेट की
ख़राबियों से बचाव का
आसान साधन

हमदर्द
ग्राइप
वॉटर
५ प्राकृतिक द्रव्य मिश्रित

हमदर्द

HDG.248.4 H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इस देश का अध्यापक वर्ग और छात्र समुदाय, जो कि कभी भी सरकार के लिए बहुत बड़ा खतरा हो सकता है, काबू में रहे. लेकिन यह पग न केवल अध्यापकों को गैरजिम्मेदार बनाएगा अपितु छात्रों में भी अनुशासनहीनता और उच्छृंखलता को बढ़ावा देगा. इस के लक्षण दिल्ली के श्यामलाल कालिज की घटनाओं में परिलक्षित होने शुरू हो गए हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनैतिक अंकुश

जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों के नाम पर राज्यों में कार्यपालिकाएं न्यायपालिकाओं और अन्य सार्वजनिक संस्थाओं पर अपना अनैतिक अंकुश जमा रही हैं. केंद्र ने सर्वोच्च न्यायालय की गरिमा और निष्पक्षता को, सत्तारूढ़ दल की नीतियों के अनुकूल चलने वाले न्यायाधीशों की वरिष्ठता से पहले नियुक्ति कर के जो आघात पहुंचाया था, वह राज्यों में भी चल रहा है. हरियाणा में स्वनामधन्य बंसीलाल ने केंद्र का अनुकरण किया. उन के अलावा पश्चिम बंगाल में सिद्धार्थ शंकर रे और मध्य प्रदेश में प्रकाशचंद्र सेठी ने भ्रष्टाचार के आरोपों को स्पष्ट नकार दिया. नागालैंड में कांग्रेस ने अनैतिक रूप से मंत्रिमंडल भंग करवा दिया. उड़ीसा के मनसबदार राज्यपाल ने लोकतंत्र की हत्या करते हुए विपक्ष को सरकार बनाने का मौका न दे कर जनता पर मध्यावधि चुनाव थोप दिए. उपराष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी गया. मध्यावधि चुनाव उत्तर प्रदेश में भी हुए पर क्या बहुगुणा सरकार इस समस्या से राज्य को उबार पाएगी?

सिक्किम में जन संघर्ष

नई दिल्ली ने सिक्किम के चोग्याल के विरुद्ध जनसंघर्ष में जनता का साथ दिया और वहां संसदीय प्रजातंत्र की स्थापना करवाई, पर उन्हीं दिनों भूटान नरेश के राज्याभिषेक समारोह में भाग लेने के लिए राष्ट्रपति को भेज दिया. शायद सिक्किम के चोग्याल के विपरीत भूटान नरेश अभी नई दिल्ली की नकेल में रहने को सहमत हैं.

भारत के दस करोड़ मुसलमानों को खुश रख कर अपने वोट पक्के करने वाली यहां की धर्मनिरपेक्ष सरकार ने इजराइल के विरुद्ध अनैतिक और हठधर्मी युद्ध में अरबों का समर्थन किया. जब इतने से बात न बनी तो श्री फखरुद्दीन अली अहमद को केवल उन के मुसलमान होने की योग्यता पर राष्ट्रपति पद के लिए अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया. इसी वर्ष धर्मनिरपेक्ष सरकार की ठीक नाक के नीचे दिल्ली के सदर बाजार में आजादी के बाद सब से घिनौने दंगे हुए और सरकार ने दोचार पुलिस अधिकारियों का तबादला कर के मुक्ति पा ली.

कार्यपालिका, न्यायपालिका, चुनाव आयोग, राष्ट्राध्यक्ष (संवैधानिक ही सही) और उत्पादन तथा वितरण पर एकाधिकार कर के दुनिया के सब से बड़े प्रजातंत्र होने का दंभ करने वाली सरकार ने आजादी के 27वें वर्ष में एक ऐसा संविधान संशोधन विधेयक प्रस्तुत किया, जो जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को छीन लेगा. इस के अनुसार दल के निर्देश को न मानने वाले विधायक और संसद सदस्य की सदस्यता समाप्त कर दी जाएगी. स्वतंत्रता को इस से बड़ी श्रद्धांजलि और क्या हो सकती है? •

दृढ़ प्रतिज्ञा

दृढ़ प्रतिज्ञा एक गढ़ के सदृश है जो भयानक प्रलोभनों से हमारी रक्षा करता है और दुर्बलता एवं अस्थिरता से हमें बचाता है.

—महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूम मच गई

Luxor POP

की लिखाई ने
धूम मचाई
मनमोहक रंगों
व छः आकर्षक
डिजाइनों में
विशेष रूप से
आप के लिए
बनाए गए
नवीनतम पाप साइज पैन

जमाने के साथसाथ चलिए
लक्सर पाप से लिखिए

एक्यूटेक इनकार्पोरेटेड न्यू जर्सी (अमरीका)
की तकनीकी जानकारी के अंतर्गत निर्मित.

Luxor POP PEN

SEKAI 707

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RILAXON®

आराम—जिसकी हरेक को जरूरत है...
दाम—जो आपको सुलभ है...
रिलक्सन में ही पायेंगे !

रिलक्सन की विशेषताएँ :

- इतना भी नरम नहीं कि आप धँस जायें—शरीर के वजन के अनुरूप लचीला
- अधिक उपयोग से दबकर भी नष्ट न होने वाला
- शीतल-सुखद
- कीमत भी इतनी कम

- गद्दे
- तकिये
- गद्दियाँ
- मसनदें
- बेक-रेस्ट
- अन्डरले

हेस्टिंग्स मिल लिमिटेड (कॉयर एण्ड फेल्ट डिविज़न)
१४, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता-७००००१
फोन : २२-६८६१ तार RILAXON टेलेक्स 7538-CA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगाड़े पर चोट

बारू हरिजन की लड़की की अस्मत लुटने पर हरिजनों ने न्याय चाहा तो जमींदारों ने उन पर बहुत सी पाबंदियां लगा दीं...लेकिन मुट्ठी भर हरिजनों ने एक दिन पूरे गांव को हिला कर रख दिया...

कहानी
•
हरमोहेंद्र सिंह 'गोविंदपुरी'

"आह! भाइयो, मारे गए...लूटे गए, जल्दी उठो," बारू हरिजन अपने मुंह पर तमाचे मारता हुआ चिल्लाया. उस की चीत्कार से पूरी हरिजन बस्ती की नींव हिल उठी. उनींदे लोग अपनी चारपाइयां छोड़ कर भागते हुए उस के घर की ओर आने लगे. अनेक स्वर वायुमंडल में गूंज उठे, "क्या हो गया है?" लेकिन किसी के पास कोई उत्तर नहीं था. सब एकदूसरे का मुंह ताक रहे थे. बारू हरिजन को झंझोड़ते हुए वे चीखे, "अबे, ससुरे, कुछ बोल भी. कौन सी आफत टूट पड़ी है, जो आसमान सिर पर उठा रखा है?"

"भाइयो, मैं मारा गया...मैं लुट गया...मेरा सर्वस्व खो गया," वह फूट-फूट कर रोने लगा.

"कुछ बता भी, कौन सी बला ने तुझे पकड़ लिया है?" हट्टाकट्टा नवयुवक ताव खाता हुआ चीखा.

"मेरी नन्ही को...बदमाश...सोते में ही चारपाई से उठा कर ले गए हैं. कहर हो गया है, भाइयो. मुझ पर प्रलय टूट पड़ा है."

"कौन थे वे?" अनेक आवाजें एक साथ उठीं.

"चार थे वे. तीन को तो मैं ने पहचाना नहीं, मगर चौथे को अच्छी तरह देख लिया है. वह अपने सरपंच दयालसिंह का मंझला बेटा कुलवंतसिंह था."

"अरे, वह मुंहजला हरामी कुलवंत! अब उस की हिम्मत यहां तक बढ़ गई है?" एक बुजुर्ग गुस्से से कांपता हुआ कह उठा. "हमारी बहूबेटियों की अस्मत अब इस गांव में सुरक्षित नहीं. अगर तुम लोगों में थोड़ीबहुत भी गैरत है, अभी पूरी बस्ती इकट्ठी हो कर सरपंच की हवेली पर चले. सरपंच हो चाहे कोई लाट साहब, हमें किसी से दब कर नहीं रहना है. पता नहीं, हमारी बच्ची पर वे नरपशु क्याक्या जुल्म ढा रहे होंगे."

"वे गए किधर हैं?" किसी ने पूछा.

बारू ने रोतेरोते बताया, "सब गांव की ओर भागे हैं. हाय, मेरी बेटी बाज के हाथों पड़ी चिड़िया की भांति तड़प रही होगी."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पूरी हरिजन बस्ती गांव की ओर उमड़ पड़ी. इस बस्ती में हो रहे शोर-शराबे की आवाज गांव वालों के कानों तक पहुंच गई थीं, इसलिए हलकीहलकी फुसफुसाहट कहींकहीं सुनाई पड़ रही थी. पूरी बस्ती के लोग सरपंच सरदार दयालसिंह की विशाल हवेली के आगे आ कर जमा होने लगे.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरदार दयालसिंह एक तगड़ा जमींदार था. आसपास के गांवों में उस का सिक्का चलता था. वह प्रांत में सत्तारूढ़ दल का सक्रिय सदस्य था. थाने के सिपाही से ले कर मंत्रियों तक उस की पहुंच थी. वह सफेद कुरतापायजामा और पगड़ी पहनता था. उस के चेहरे पर अधकटी दूधिया दाढ़ी थी. उस की आंखों से नृशंसता और क्रूरता टपकती रहती, चौबीसों घंटे शराब में धुत रहता. सब उस के नाम से डरते. असमय यह शोर सुन कर सरपंच आंखें मलता हुआ बाहर आया. आसपास भीड़ देख कर वह उत्तेजित हो कर बोला, "यह कैसा शोर मचा रखा है तुम लोगों ने? कौन सा तूफान आ गया है, जो तुम सब लोग बौखलाए हुए भागे आए हो?"

कुछ समय पहले जो लोग शेर की तरह दहाड़ रहे थे, दीनों की भांति हाथ जोड़ कर खड़े हो गए. उन में से एक बुजुर्ग हरिजन ने आगे बढ़ कर नम्रतापूर्वक कहा, "सरदार साहब, गुस्ताखी माफ हो. अपने बारू की बेटी को गांव के कुछ लड़के जबरन उठा कर ले आए हैं. बहुत जुल्म हुआ है, जनाब."

"कौन लड़के हैं वे?" सरपंच दयालसिंह की आंखों में खून उतर आया.

सब आतंकित हो कर एकदूसरे के साथ सट गए. भीड़ की आंखें झुक गईं. लगता था सब की जबान पर ताला लग गया हो.

सरपंच गर्जन भरे स्वर में फिर बोला, "सब को सांप क्यों सूंघ गया? तुम लोग खामोश क्यों हो? अरे, भड़वा लोगो, कुछ बोलो भी."

उसी पहले वाले बुजुर्ग ने डरतेडरते कहा, "सरदार बहादुर, बारू कहता है कि उन लड़कों में आप का बेटा कुलवंतसिंह..."

"क्या बकते हो, नाथू!" सरपंच सिर से ले कर पांव तक कांपता हुआ बोल उठा, "अगर यह बात झूठी हुई तो तुम्हारी जबान खिंचवा लूंगा, घरबार कुर्क करवा लूंगा. जानते हो तुम लोगों ने किस की पगड़ी पर हाथ डाला है? कहीं का नहीं छोड़ूंगा, कमबख्तो, जिस थाली में खाते हो, उसी में छेद करते हो. हट जाओ, मेरे सामने से सभी. मैं देखता हूं, तुम्हारी बातों में कितनी सचाई है." सरपंच का चेहरा सुर्ख हो गया और मुंह से झाग निकलने लगी.

इतने में गांव की गलियों में से दौड़ते हुए कुछ हरिजन नौजवान वहां आ पहुंचे. वे हांफते हुए कहने लगे, "नन्ही बलवंत अमली के कोठे पर बेहोश पड़ी है. उस का तनबदन खून से लथपथ है. बदमाश उस की बुरी गत बना कर भाग खड़े हुए हैं."

सरपंच के पीछेपीछे लोग बलवंत अमली के घर की ओर चल पड़े.

नन्ही बलवंत के दलान में पूरी तरह नग्न अवस्था में मूर्छित पड़ी थी. उस के गोरे शरीर में से रक्त निकल कर आसपास की भूमि में समा गया था. नन्ही—अट्ठारह वर्षीया, तीखे नयननक्श वाली सुंदर बाला थी. उस का कोमल बदन दरिंदों ने बुरी तरह मसल डाला था. किसी ने उस के बदन पर सफेद चादर ओढ़ा दी. बलवंत अमली भी घर छोड़ कर भाग चुका था.

गांव के जाट सरदार भी एकएक कर के वहां पहुंचने लगे. उन में से कुछ बहुत हीन दृष्टि से हरिजन बस्ती के लोगों को एक ओर खड़े देख रहे थे. सरपंच दयालसिंह मौका पा कर वहां से खिसक गया.

हरिजनों ने लड़की को एक चारपाई पर डाला और उसे ले कर अपनी बस्ती की ओर चल पड़े. रात आधी से ज्यादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

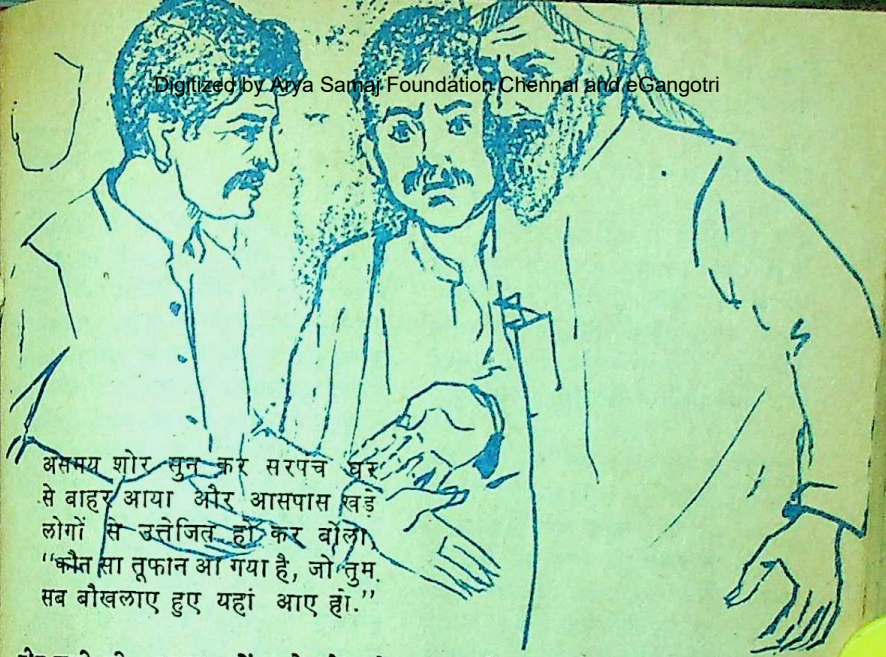

असमय शोर सुन कर सरपंच घर से बाहर आया और आसपास खड़े लोगों से उत्तेजित हो कर बोला, "कौन सा तूफान आ गया है, जो तुम सब बौखलाए हुए यहां आए हो."

बीत चुकी थी. आकाश में नन्हेनन्हे तारे टिमटिमा रहे थे, लेकिन धरती के इस भाग में हाहाकार मची हुई थी.

दूसरे दिन ग्राम पंचायत की बैठक इस घटना पर विचार करने के लिए हुई. पंच नजरें नीची किए बैठे थे, और सारी हरिजन बस्ती न्याय के लिए उन की ओर ताक रही थी, लोगों के चेहरों पर आशा की एक क्षीण सी झलक थी— शायद यहां से न्याय मिल ही जाए.

सरपंच साहब अपनी अधकटी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए उठ खड़े हुए और कहने लगे, "पंचो, बारू हरिजन ने दरख्वास्त दी है कि उस की बेटी नन्ही के साथ मेरे बेटे कुलवंतसिंह, गुरुद्वारे के ग्रंथी सतनाम सिंह के बेटे जगतारसिंह, स्कूल मास्टर धर्मसिंह के बेटे चैनसिंह और बतनसिंह जमींदार के बेटे नाहरसिंह ने बलात्कार किया है. मैं ने खुद इस सारी घटना की खोजपड़ताल की है, जिस के बाद मैं इस फैसले पर पहुंचा हूं कि बारू की लड़की नन्ही का चरित्र दोषपूर्ण था. उस ने लड़कों को खुद बरगलाया और बहकाया. जांच से यह भी पता चला कि वह अपनी इच्छा से अमली के घर तक आई. वहां संयोग से ये सब लड़के नशापानी पी कर मौजमेला कर रहे थे. लड़की ने वहां पहुंच कर इन की भावनाओं को भड़काया. जवान खून था, फिसलते देर न लगी, क्योंकि लड़की पतित और दुश्चरित्र थी, इसलिए लड़कों का दोष नाम मात्र का ही है. यह झूठ है कि लड़के हरिजन बस्ती में घुस कर लड़की को उठा लाए. लेकिन इन हरिजनों के आक्रोश को देखते हुए मैं पंचायत के सामने यह प्रस्ताव रखता हूं कि चारों लड़के इन लोगों से माफी मांगें, गांव के गुरुद्वारे में इन की शुद्धि की अरदास की जाए और ये गुरुद्वारे में सवा ग्यारहग्यारह रुपए दान दें. अगर पंचायत चाहे तो हरिजनों की शांति के लिए गुरुद्वारे में अखंड पाठ रखवाया जाए. इस महायज्ञ पर जो खर्च आएगा उस का आधा मैं देने को तैयार हूं."

कुछ चमचे जाट सरदार सरपंच साहब की न्यायप्रियता से मोहित हो कर प्रसन्नता प्रकट करने लगे.

हरिजनों में एकदम बेचैनी छा गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सरपंच की बातें उन के जख्मों पर नमक छिड़क गईं. सरपंच समेत सभी गांव विचारविमर्श करने के लिए उठ कर एक ओर चले गए. वापसी पर सरपंच की बातों को पंचायत द्वारा किए गए निर्णय में बदल दिया गया. एकाएक सारे के सारे हरिजन उठ कर खड़े हो गए. उन में से एक तेजतर्रार नौजवान आगे बढ़ कर बोला, "हमें यह फैसला नहीं मंजूर. हम में अगर शक्ति होगी तो न्याय प्राप्त कर लेंगे." इतना कह कर उस ने पलट कर अपने साथियों से चलने को कहा.

शाम होतेहोते हरिजन बस्ती के लोग नन्ही व उस के पिता बारू हरिजन को ले कर थाने पहुंच गए. सरपंच को उन के इस कदम की भनक पड़ गई थी. उस ने थानेदार को टेलीफोन पर सारी घटना बता कर इन लोगों का दिमाग दुरुस्त करने की ताकीद कर दी. थानेदार सरपंच का दुमछल्ला था. उस ने सब हरिजनों को बाहर धूप में बैठा दिया. झूठमूठ कई लोगों के बयान लिए और फिर जल्दी ही वह अपने असली रंग में आ गया. उस ने उन्हें सरपंच से समझौता कर लेने के लिए समझाया. सरपंच के साथ टक्कर में उन लोगों की ही हानि होगी, यह भी कहा. लेकिन सब लोग रिपोर्ट लिखवाने और दोषियों को दंड दिलवाने के लिए कटिबद्ध थे. थानेदार की बात का उन पर प्रभाव नहीं पड़ा.

किसी को भी टस से मस न होते देख कर थानेदार उग्र हो उठा. उस ने उन सब की पिटाई आरंभ कर दी. थाने की दीवारें मासूमों और बेगुनाहों की चीखों से कांप उठीं. मारमार कर लोगों का उस ने भुरता बना डाला और धक्के मारमार कर उन्हें थाने से बाहर निकाल दिया. रात होतेहोते अपमानित और प्रताड़ित हो कर वे सब गांव वापस चले आए. उन के चेहरों पर क्रोध, ग्लानि और अत्याचार से उत्पन्न पीड़ा स्पष्ट झलक रही थी. अन्याय की चक्की में पिस कर उन की आत्माएं क्रंदन कर उठीं. सारी बस्ती पर घोर निराशा छा गई. उस रात किसी ने भी न कुछ पकाया और न कुछ खाया.

दूसरे दिन बस्ती में एक नया समाचार आ पहुंचा कि गांव वालों ने हरिजनों पर अपने खेतों में से घासफूस खोदने पर पाबंदी लगा दी है. जमींदारों ने यह भी फैसला किया है कि जो भी हरिजन खेत में घास खोदता पाया जाए, उस की खूब पिटाई की जाए, उस का मुंह काला कर के सारे गांव में घुमाया जाए. सरपंच दयालसिंह ने जमींदारों की सभा में मूंछों पर ताव देते हुए कहा, "देखते हैं कि ये दो कौड़ी के आदमी कैसे नहीं ठीक होते. ये कमीने हमारा ही खाते हैं और हमें ही काटने को दौड़ते हैं."

हरिजन लोग जो पहले भी अपमान और ग्लानि की अग्नि में सुलग रहे थे, इस नए 'फरमान' को सुन कर सकते में आ गए. बच्चे और स्त्रियां रोने लगीं. पुरुषों के चेहरों पर मुरदनी छा गई. घरों में मौत का सा सन्नाटा पसर गया.

एक दिन सारी बस्ती जुड़ कर बैठी. सभी ने जमींदारों के अत्याचारों के सामने न झुकने का निर्णय लिया. उन्होंने एक स्वर में इस गांव के जमींदारों के घरों और खेतों में मजदूरी न करने का निश्चय किया. फसल बोने, काटने और संभालने के लिए हम कहीं और काम कर लेंगे. सारी बस्ती एक सूत्र में बंध गई. आसपास के गांवों के हरिजनों को भी उन्होंने इस गांव में काम करने से रोक दिया. उन्हें अपने ऊपर हुए भीषण जुल्म और अंधेरगर्दी की बातें बताईं. हरित क्रांति के फलस्वरूप पंजाब का जमींदार आरामतलब और पराश्रित हो गया था. धान के खेतों में बोआई के लिए मजदूरों की जरूरत थी, लेकिन कोई भी हरिजन मजदूर जमींदारों की लाख मिन्नतों के बावजूद काम करने के लिए राजी न हुआ. निकटवर्ती गांवों के मजदूरों के इनकार करने पर जमींदारों के पांवों तले से जमीन खिसकने लगी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवानी के साथ-साथ दर्द और तकलीफ़ की परेशानी भी आती है

तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन आपके आड़े समय काम आती है

आप अपने कॉलेज का कोई भी उत्सव छोड़ना नहीं चाहतीं। परन्तु आज जबकि कॉलेज में एक शानदार फ़िल्म-शो होने वाला है, आप कमर के दर्द, बेचैनी और बेआरामी के कारण मुरझाई हुई-सी हैं। तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन ऐसे ही नाज़ुक अवसरों पर काम आती है।

एनासिन बहुत गुणकारी है, क्योंकि यह केवल दर्द से आराम नहीं दिलाती बल्कि दर्द के साथ होने वाली उदासीनता को भी दूर करती है। एनासिन आपको जल्दी आराम और चैन दिलाती है और आपके चेहरे पर फिर वही मुस्कान आ जाती है।

अपने नाज़ुक दिनों में दर्द की बेचैनी और बेआरामी से पड़े रहना पुराने ज़माने की बात है। आज ज़माना बहुत आगे जा चुका है। तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन आपको जल्दी आराम दिलाती है। और आप अपना रोज़ का काम-काज आराम से कर सकती हैं।

लड़की होना भी कभी-कभी एक मुसीबत मालूम होती है। परन्तु आप ऐसे आड़े समय एनासिन से काम लेकर अपनी उलझन दूर कर सकती हैं, और जीवन का पूरा आनन्द ले सकती हैं। ज़रूरत के समय के लिए अपने पर्स में हमेशा एनासिन रखिए— यह बहुत बड़ी सुविधा है।

तेज़ असर और विश्वसनीय

एनासिन

भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा

Regd. User of TM: Geoffrey Manners & Co. Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्षा ऋतु समाप्त होने को थी. धान की बोआई का समय गुजरता जा रहा था. हजारों का नुकसान होने का भय मंडराने लगा. हरिजन मजदूरों के बिना स्वयं जमींदार इतना कठोर परिश्रम करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे. सारा-सारा दिन नंगे पांव पानी में कमर झुका कर धान की बोआई करना कोई हंसी-खेल न था. सरपंच दयालसिंह की 25 बीघे जमीन परती पड़ी थी. वह हर तरफ दौड़धूप कर के देख चुके थे. आखिर हार कर बैठ गए. किसी भी गांव वाले को कोई भी बाहर का मजदूर काम करने को न मिला. हरिजन बस्ती के लोग दूसरे गांवों में जा कर मेहनतमजदूरी करते और शाम को घर लौट आते. उन का गुजरबसर मजे में हो रहा था. उन के इस अनोखे आंदोलन से जमींदार स्तंभित रह गए. वे हरिजन बस्ती की ओर संदेश पर संदेश भेज रहे थे, अपने किए पर क्षोभ व पश्चात्ताप व्यक्त कर रहे थे, लेकिन प्रत्युत्तर न पा कर हताश हो जाते.

ग्राम पंचायत का इजलास भीषण संकट के समाधान के लिए चौपाल तले आ जुटा. गंभीर विचारविमर्श के बाद सब ने एक स्वर से हरिजनों पर खेतों से घास खोदने पर लगाई गई पाबंदी हटा देने का निर्णय किया. बारू हरिजन को 2,000 रुपए हरजाना और उस की पुत्री की अस्मत लूटने वाले लड़कों को उचित सजा देने की शपथ उठाई.

ग्राम पंचायत के सब सदस्य सरपंच दयालसिंह की अगवानी में हरिजनों की बस्ती की ओर चल दिए. सरपंच पिटे हुए मोहरे की तरह अपनी सारी हेकड़बाजी भूल चुका था. गांव के सब जमींदार उसे दोष दे रहे थे. सब ने एक स्वर में उस से कहा, "तुम ने ही यह बिगाड़ पैदा किया है, तुम्हीं बिगड़ी को बनाओ."

सारी पंचायत ने बस्ती में पहुंच कर अपने गलों में गमछे डाल कर क्षमा की भीख मांगी. सरपंच दयालसिंह ने दोनों हाथ जोड़ कर नम्रतापूर्वक हरिजनों से प्रार्थना भरे स्वर में कहा, "भाइयो, हम सब ने आप पर जो अत्याचार, जुल्म और कहर ढाए हैं, उन के लिए हम बड़े शर्मिंदा हैं. हम सब इकट्ठे हो कर आप पर हुए जुल्मों का प्रायश्चित्त करने आए हैं. मुझे विश्वास है, आप हमारी गलतियों को भूल कर हमें क्षमादान देंगे. भाइयो, सारी ग्राम पंचायत ने सर्वसम्मति से यह फैसला किया है कि आप लोग बेखटके हमारे खेतों से घास खोदने जा सकते हैं. उन बदमाशों को, जिन में मेरा पुत्र भी सम्मिलित था, बारू की पुत्री की अस्मत लूटने के आरोप में दंडस्वरूप बारू को 2,000 रुपए देने होंगे. उन की सार्वजनिक भर्त्सना की जाएगी. मुंह काला कर के गांव भर में उन का जुलूस निकाला जाएगा. इस के बाद वे सारी बस्ती से क्षमा की भीख मांगेंगे."

सारी बस्ती में गूढ़ विचारविमर्श होने लगा. कुछ तेजतर्रार नौजवान गांव वालों की कोई भी बात सुनने को तैयार नहीं थे, लेकिन बस्ती के प्रौढ़ बुजुर्गों ने सब को समझाया कि पंचायत की बात मान लेने में कोई हर्ज नहीं है. उन का कहना था, "ये लोग अपने किए कर्मों पर पश्चात्ताप कर रहे हैं. बारू की बेटी की अस्मत लूटने वालों को सजा भी दी जा रही है, इसलिए इस हालत में हमारे लिए इतना कुछ भी कम नहीं है. यह सचाई की बुराई पर विजय है."

सारी बस्ती हर्षित हो विजयोल्लास में झूमने लगी. कहीं से कोई नगाड़ा उठा लाया. जैसे ही नगाड़े पर चोट पड़ी, बस्ती के पांव स्वयमेव थिरकने लगे. किसी ने एक ऊंची बोली लगाई. फिर क्या था, भांगड़ा शुरू. बारू के कुम्हलाए चेहरे पर मुसकराहट खेल गई. उस की जवान बेटी नन्ही को ऐसा लगा मानो किसी ने उस के तपते हृदय पर बरफ का ढेला रख दिया हो. नगाड़े का स्वर ऊंचे से ऊंचा होता जा रहा था. उस पर पड़ती हर चोट जमींदार सरदारों को अपने चेहरों पर पड़ती चपतें मालूम हो रही थीं. ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकड़ी का जाला

उमा के मन पर अपने मायके की रईसी का परदा पड़ा था, लेकिन एक दिन उस का सारा नजरिया ही बदल गया...

पूरे घर में खुशी का वातावरण छाया हुआ था. पूरी कोठी रोशनी से नहा रही थी. आने वाले मेहमानों का तांता लगा हुआ था. आंगन में ढोलक की थाप पर गीत गाए जा रहे थे, लेकिन उमा का मन किसी बात में नहीं लग रहा था. इतनी व्यस्तता में भी उस की आंखें बाहर गेट की ओर उठ जाती थीं. उस का मन बारबार आशा और निराशा में डूबउतरा रहा था, 'क्या सच में वहां से कोई नहीं आएगा? क्या उन लोगों को यहां से निमंत्रणपत्र नहीं गया होगा? लेकिन नहीं, उस ने तो अपनी आंखों से फहरिस्त देखी थी. सब से ऊपर उन्हीं लोगों का नाम लिखा था. फिर क्यों नहीं आया कोई वहां से? सच में अगर कोई न आया तो?' और वह घबरा कर कमरे में चली गई.

आज उस की अपनी ही आत्मा उसे धिक्कारने पर तुली हुई थी, क्यों, उमा, आज चार महीने बाद क्यों उस घर की याद आ रही है? अभी तक क्या सो रही थी? आज क्यों तड़प रही है? याद रख, अब तू इसी तरह तड़पा करेगी और कोई हमदर्दी करने वाला भी नहीं होगा. देख लिया न सब को, जिन की अमीरी के घमंड में आ कर तुम ने उन लोगों को अपमानित किया था? परख लिया न. तो अब भुगत बैठ कर. उन बेचारों का दोष ही क्या था? तेरी हर बात को, तेरा बचपना समझ कर वे टाल जाते थे और तू उन्हें दबाती ही चली गई. याद है तुझे, तू ने आतेआते उन लोगों से क्या कहा था?'

मुझे सब याद है. वह मेरी भूल थी. मैं उस भूल के लिए हर तरह का प्रायश्चित्त करने को तैयार हूं. मैं क्या अपने कठोर शब्दों को भूल सकती हूं? मुझे तो अपनी की हुई एकएक गुस्ताखी याद है. शायद मेरी शादी को छः महीने हुए थे, जब मैं ने पहली बार उन लोगों का अपमान किया था. उस दिन उन के घर में मेरी पहली सालगिरह पड़ी थी और मैं दो दिन पहले ही सालगिरह मनाने का प्रोग्राम तैयार कर रही थी. तभी थकाहारा अजीत आया था. मेरे हाथ में नामों की फहरिस्त देख कर बोले थे, "उमा, बड़ी लंबी नामों की फहरिस्त बनाई है. इन से मिलने जाना है या इन्हें पत्र लिखने वाली हो?"

"न मिलने जाना है, न पत्र लिखने हैं. इन्हें मैं एक पार्टी देने वाली हूं."

"कैसी पार्टी?" अजीत विस्मय से बोला था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"सालगिरह की पार्टी."

"किस की सालगिरह है?"

"मेरी."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम अपनी सालगिरह मनाओगी? इतने लोगों को बुलाओगी? मैं तो इन में से किसी को पहचानता भी नहीं," अजीत उसी तरह हैरानी से बोला था.

"तुम कैसे पहचानोगे. ये सब तो मम्मीपापा के परिचित हैं. ये हर साल मेरी सालगिरह पार्टी में आते हैं."

"लेकिन, उमा, पहले की बात और थी. अब तुम्हारी शादी हो गई है. अब तुम अपने बच्चों की सालगिरह की पार्टी करना. तुम्हारी सालगिरह की पार्टी भी क्या शोभा देगी?"

"क्यों नहीं शोभा देगी? क्या मैं बूढ़ी हो गई हूं?"

"लेकिन मेरे मातापिता क्या इस बात से सहमत होंगे?"

"क्यों नहीं होंगे? उन का नाम भी तो इस में लिखा है. देखो, सब से नीचे."

"तुम समझीं नहीं, उमा. मेरा मतलब यह था कि क्या वे तुम्हारी सालगिरह मनाना स्वीकार करेंगे?"

"क्यों, खर्चा करने से घबराते हैं? जो बात हर वर्ष होती है, वह अभी भी होगी."

"सवाल खर्चे का नहीं है, सवाल है सम्मिलित परिवार का. तुम उस घर में अकेली लड़की थीं--तीन भाइयों की एक बहन. लेकिन मैं तो यहां अकेला नहीं हूं. मेरे बड़े भाईभाभी हैं, उन के तीन बच्चे हैं, मेरी दो छोटी बहनें हैं और एक छोटा भाई है. हमारे घर में इस तरह जन्मदिन नहीं मनाए जाते."

"बिलकुल मनाते ही नहीं हैं?"

"ऐसी बात नहीं, मनाते हैं. हमारे मातापिता अपने हाथ से उपहार देते हैं--आशीर्वाद के साथ. फिर पूरा परिवार एक साथ बैठ कर मुंह मीठा कर लेता है."

"बस, हो गई जन्मदिन की पार्टी. न बाबा न. मैं तो धूमधाम से मनाऊंगी, नहीं तो मेरी सब सहेलियां तुम्हारा मजाक उड़ाएंगी."

"मैं किसी बाहर वाले के मजाक से नहीं डरता, उमा. लेकिन परिवार के किसी सदस्य की वजह से घर का वातावरण बोझिल हो, इस से डर जरूर लगता है. लाओ, यह फहरिस्त मुझे दो और पार्टी को भूल जाओ. चलो, अम्मा को बता देते हैं कि परसों तुम्हारी सालगिरह है."

"कुछ कहने की जरूरत नहीं है. मैं अपने घर जा कर मना लूंगी."

"इस घर के अलावा तुम्हारा कोई और घर भी है, उमा?"

"हां. मेरे पापा का घर क्या मेरा घर नहीं है?"

"नहीं. वह मायका होता है, यानी कि मां का घर. तुम्हारा घर यह है, जहां तुम्हें सारा जीवन काटना है. और यह सारा जीवन अपने पति से समझौता कर के काटोगी तो हम दोनों सुखी रहेंगे और परिवार से भी जुड़े रहेंगे."

"जब तुम्हीं मुझ से समझौता नहीं कर पा रहे हो तो मैं कैसे करूंगी?"

"मैं गलत समझौते पर अपने दस्तखत कभी नहीं करता, उमा."

"और तुम भी सुन लो. मैं भी गलत दबाव में आ कर घुटघुट कर जीवन को परिवार से जोड़ने वाली नहीं. यदि तुम्हें अपने इशारों पर नाचने वाली ही चाहिए थी तो और लड़कियों की कमी थी क्या? इतने बड़े घर की ओर निगाह उठाने की क्या जरूरत थी? मैं कल पापा के घर चली जाऊंगी और वहीं जा कर अपनी सालगिरह मनाऊंगी. तुम्हारी इच्छा मेरी खुशी में साथ देने की हो तो चले आना."

"तुम्हारी खुशी में तो मैं हमेशा ही साथ दूंगा, लेकिन परिवार की खुशियां छीन कर नहीं. रही ऊंचे घर की ओर देखने की बात, तो इसे भाग्य की विडंबना ही कह सकती हो कि मैं ने ऊपर देखा है या तुम्हें ही नीचे खिसक कर आना पड़ा है. और कल तुम तब तक पापा के घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नहीं जाओगी, जब तक मैं इस की इजाजत नहीं दूंगा. यह मेरी आज्ञा है." और अजीत कमरे से बाहर हो गया था.

न जाने अजीत की बातों में कैसा आदेश था. उस ने सालगिरह की पार्टी का विचार त्याग दिया था लेकिन सालगिरह के दिन उस ने सारा दिन मुंह फुलाए रखा था. न ही उस ने खाना खाया था, न ही वह किसी से बोली थी. अजीत ने सब से झूठ बोल कर कि उमा की तबीयत ठीक नहीं है, सब को उस के कमरे में जाने से मना कर दिया था.

शाम को जब उमा के मातापिता उस के लिए उपहार ले कर आए थे, तब पूरे परिवार ने भी अपने छोटेबड़े उपहार दे कर उसे प्यार और आशीर्वादों से सराबोर कर दिया था. फिर पूरे परिवार ने मिल कर एक छोटी सी पार्टी दी थी. उमा के मन में दो दिनों से छाई उदासी न जाने कैसे तिरोहित हो गई थी. उस ने हंसतेखेलते अपने मातापिता को विदा किया था. जातेजाते मम्मी ने उसे कहा था, "बेटी, तुम ने मेरे दूध की लाज रख ली. मैं बहुत घबरा रही थी कि कहीं तुम जिद कर के बड़ी पार्टी का आयोजन न कर डालो. तुम्हारे भाईभाभी ने मुझ से शर्त लगाई थी, 'उमा हर साल शानदार सालगिरह पार्टी देती थी. अब भी वह ज़रूर देगी.' मैं ने उन्हें कहा था, 'मेरी उमा समझदार लड़की है. वह घर के मुताबिक ही काम करेगी. वह नासमझ नहीं है.'"

तब उमा ने मन ही मन अजीत को ढेरों धन्यवाद दे डाले थे. गुस्से से ही सही, अच्छा हुआ अजीत ने उसे मायके नहीं जाने दिया, नहीं तो मम्मी कितनी नाराज होतीं.

उमा अकेली बैठती तो हमेशा अपने मन को समझाती रहती. उसे अब इसी घर में रहना है. उस के ससुराल भले ही ज्यादा अमीर न हों लेकिन किसी से कम भी तो नहीं हैं. कितना प्यार करते हैं ये लोग आपस में. कितना विश्वास है इन्हें

"तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे मेरे हाथों में कारूं का खजाना दे दिया हो..." उमा ने कहा तो अजीत बौखला उठा.

एकदूसरे पर. उसे भी अपना प्यार और विश्वास इन सब को देना होगा. बाहर से तो वह आई है. समझौता तो उसे ही करना पड़ेगा. इसी में उस की भलाई भी है. परंतु न जाने, सब के सामने जाते ही उसे क्या हो जाता. वह अपनेआप को उन लोगों से श्रेष्ठ समझने लगती. कभीकभी तो अपने भाग्य को भी कोस बैठती. कहां जा कर उस की तकदीर का फैसला हुआ है.

एक दिन अजीत ने उमा को 50 रुपए देते हुए कहा था, "लो, यह तुम्हारा जेब खर्च है. इसे तुम जैसे चाहो, खर्च कर सकती हो."

"तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे मेरे हाथों में कारूं का खजाना दे दिया हो. 50 रुपए की कीमत क्या होती है? इतने तो हम पापा के घर में नौकरों को बख्शीश दे दिया करते थे."

"वह पापा का घर था, यह पति का है, जिस पर पत्नी के अतिरिक्त औरों की भी जिम्मेदारी है, उमा,"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अजीत ने सहज भाव से कहा था.

"भाई साहब कमाते हैं, पिताजी कमाते हैं, फिर तुम्हीं ने जिम्मेदारी का बीड़ा क्यों उठा रखा है?"

"देखो, उमा, तुम इस घर की अब बहू हो. तुम्हें भी हर बात को देखते हुए अपनी जिम्मेदारी का एहसास होना चाहिए. मेरी तीन बहनें शादी के लायक हैं. जब तक हम बेटे बाप के कंधे से कंधा मिला कर काम नहीं करेंगे तो इन की डोलियां इस घर से कैसे उठेंगी?"

"यह जिम्मेदारी निभाना मेरे बस का रोग नहीं है. हमारे घर में तो सब कुछ अकेले पापा ही करते हैं. मेरे भाइयों को वह किसी तरह की उलझन में नहीं डालते. वह तो कहते हैं, 'जब तक मैं हूं, तुम्हें चिंता नहीं करनी चाहिए.' बात यह है, अजीत, कि बड़े लोगों की बड़ी बातें होती हैं. छोटे लोग छोटीछोटी बातों के पीछे अपने जीवन का सुख खो बैठते हैं."

"बड़ा...बड़ा...बड़ा...यह तुम बड़े घर की लड़कियों जैसी बातें करती हो? बड़े घर की बेटियों के दिल इतने छोटे होते हैं? शादी से पहले पापा से पूछ क्यों नहीं लिया था कि जिस घर में वह तुम्हें दे रहे हैं, वह तुम्हें सोने के पालने में झुलाएगा या नहीं?"

"पापा को क्या पता था कि जिसे दूर से देख कर पानी का भ्रम हो रहा है, वह मृगमरीचिका की तरह रेतीला मैदान ही निकलेगा," उमा ने भी उसी तरह कड़वाहट से जवाब दिया था.

"इस घर में तुम पहली बहू नहीं आई हो. तुम से पहले भी एक बहू आ चुकी है. देखा है भाभी को? वह क्या छोटे घर की बेटी हैं? हां, वह अच्छे संस्कारों में पली हैं, जो तुम्हें विरासत में नहीं मिले," अजीत ने बड़ी कटुता से कहा था.

"तुम बातबात में मेरा अपमान करते हो. अपनी भाभी के साथ मेरा मुकाबला करने की तुम्हें क्या जरूरत है?" उमा क्रोध से बोली थी.

"तुम मेरा, मेरे परिवार का अपमान क्यों करती हो? माना, तुम्हारे पापा बहुत रईस आदमी हैं, पर मेरे पिताजी भी कोई भिखमंगे नहीं हैं," अजीत को भी गुस्सा आ गया था.

इसी तरह नोकझोंक होते हुए भी अजीत उमा को दिल से प्यार करता था. जब वह अच्छे मूड में होती तो उसे समझा भी देता, "देखो, उमा, यह हाथ देख रही हो? अपने ही शरीर का एक अंग है. इस की पांचों उंगलियां बराबर नहीं हैं. इसी तरह सब लोग बराबर के अमीर भी नहीं हो सकते. उन्नीसबीस का अंतर तो रहता ही है. आदमी को अपनी सीमाएं कभी नहीं लांघनी चाहिए. लांघने पर सिवा टूटने के कुछ नहीं मिलता. तुम्हें मुझ से या मेरे परिवार से सम्मान व प्यार न मिलता होता तो तुम्हारा रोष किसी हद तक उचित होता. परंतु ऐसा तो कुछ भी नहीं है. तुम अपने पापा की रईसी के चक्रव्यूह में से नहीं निकल पा रही हो."

उमा अजीत की बातें सुनती तो हंस देती. कई बार वह नाराज भी हो जाती तो अजीत बात को मजाक में टाल जाता. एक दिन अजीत शाम को देर से घर आया था तो उदास उमा को देख कर बोला था, "क्या बात है? आज यह चेहरा मुरझाया हुआ क्यों है?"

"क्या करूं, इतना बड़ा दिन अकेले काटे नहीं कटता," उमा ने उदासी से कहा था.

"किसी और चीज को काटने का सवाल होता तो ठीक था, उमा, दिन काटने की छुरी तो अभी वैज्ञानिकों ने तैयार नहीं की है. मैं क्या कर सकता हूं?" अजीत बड़ी मासूमियत से बोला था.

"ऊंहूं. तुम तो हर बात मजाक में उड़ा देते हो. सच कहती हूं, तुम देर से आते हो तो मैं बड़ी बोर हो जाती हूं."

"क्यों बोर होती हो? मां हैं, भाभी हैं, तुम्हारी ननदें हैं, सब के बीच उठा-बैठा करो न. वे जरा रूढ़िवादी हैं. तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाँतों के डाक्टरों की राय में

नियमित रूप से दाँत ब्रश करने और मसूढ़ों की मालिश करने से मसूढ़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न दूर ही रहती है

देखिए, फोरहॅन्स टूथपेस्ट नियमित इस्तेमाल करनेवालोंने अपने आप क्या लिखा है:

'बारह साल की उम्र से ही मैने फोरहॅन्स से दाँत साफ़ करने शुरू कर दिये थे। आज मैं बीस साल का होने जा रहा हूँ। पहली बार फ़ोरहॅन्स इस्तेमाल करते समय मेरे मसूढ़ों में कुछ तकलीफ़ थी। अब वह तकलीफ़ नहीं रही। पहले, रात के समय दाँतों को ब्रश करने की मेरी आदत नहीं थी। बाद में रोज रात को १० बजे पढ़ाई करते समय आपके विज्ञापन सुन-सुनकर मेरी यह 'नयी आदत' पड़ गयी है।'

(सही) एस. मित्तल,
बी.ई. (इलेक्ट्रिकल), पटियाला।

'...लगभग एक साल पहले मैंने देखा कि मेरे दाँत पीले पड़ने लगे हैं, हालांकि मैं सिगरेट नहीं पीता...मेरे पिताजी ने,... जो पिछले ३० साल से "फ़ोरहॅन्स" से ही दाँत साफ़ करते रहे हैं, मुझे दूसरे टूथपेस्ट के बजाय "फ़ोरहॅन्स" से दाँत साफ़ करने की सलाह दी। कमाल है! मेरे दाँत जितने साफ़ और अच्छे होने चाहिए, वैसे हो गये। मुझे यह कहना पड़ेगा कि आपके आश्चर्यजनक टूथपेस्ट—**फ़ोरहॅन्स**—में वे सभी गुण हैं जिनका आप प्रचार करते हैं। इसका रहस्य यह है कि यह **दाँतों के डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट है।**"

(सही) एस. एस. चटर्जी, एम.ए.
कोयम्बटूर।

(इन पत्रों की फोटोस्टॅट कॉपी आप जैफ़ी मैनर्स एण्ड कं. लि. के किसी भी कार्यालय में देख सकते हैं)

दाँतों की समुचित देखभाल के लिए रोज सवेरे और रात को फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट और फ़ोरहॅन्स डबल-एक्शन टूथब्रश इस्तेमाल कीजिए...और नियमित रूप से डाक्टर की सलाह भी लेते रहिए!

मुफ़्त! "आपके दाँतों और मसूढ़ों की रक्षा" नामक रंगीन सूचना-पुस्तिका।

अपनी प्रति* प्राप्त करने के लिए (डाक-खर्च के लिए) २५ पैसे के टिकट इस कूपन के साथ इस पते पर भेजिए: मैनर्स डेण्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१

नाम: _____ उम्र: _____

पता: _____

S-9

* कृपया जिस भाषा की पुस्तिका चाहिए, उसके नीचे रेखा खींच दीजिए: अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गुजराती, उर्दू, पंजाबी, बंगाली, आसामी, तामिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़।

फ़ोरहॅन्स दाँतों के डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

129 F&182 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रोबदार मर्दों की शान—एल्पार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास के साथ आगे बढ़नेवाले रोबदार मर्द... जो अपनी मंज़िल जानते हैं...
और सफलता जिनके कदम चूमती है.

एल्पार के तरह-तरह के सूटिंग— नये ज़माने के मर्दों पर छा जानेवाले...
आकर्षक रंगों के बेहतरीन डिज़ाइनोंवाले सूटिंग. साथ ही शर्टिंग और साड़ियां भी.

सिर्फ़ एल्पार ही पैसा लौटाने की बेजोड़ गारंटी देता है—
यही एल्पार का एक और फायदा है.

everest/735/PTM-hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी तरह उन्हें भी माडर्न बना दो न. तुम बोर होने से बच जाओगी और उन्हें घर बैठे माडर्न होने का लाभ मिल जाएगा."

कुछ दिन बाद ही उमा की तबीयत एकाएक खराब हो गई थी. उस ने घर को सिर पर उठा लिया था, "आप लोग न किसी डाक्टर को घर बुलाते हैं, न ही मुझे ले जाते हैं. मैं खाना नहीं खा रही. मुझे उलटियां हो रही हैं. किसी को मेरी चिंता नहीं. मैं अपने पापा के घर होती तो डाक्टरों की भीड़ लग गई होती."

"डाक्टर के पास जाने की कोई जरूरत नहीं, बेटी. दोतीन महीनों में सब अपनेआप ठीक हो जाएगा," सास ने उसे समझाया था.

"दोतीन महीनों में यह तो अच्छी हो जाएगी, लेकिन तुम्हारा बेटा जरूर पागल हो जाएगा, मां. इसे किसी डाक्टर के पास ले जा," पास खड़ा अजीत वितृष्णा से बोल उठा था.

"डाक्टर क्या कर लेगा, अजीत?

"शहर भर में आप के 'नए' छापों की बहुत चर्चा है. कृपया मेरी चिनोन की नई साड़ी पर एक बढ़िया से डिजाइन का छापा मार दीजिए."

उमा मां बनने वाली है. और दोतीन महीने यह तकलीफ इसी तरह रहती है," मां ने सख्त आवाज में कहा था.

जब एक प्लेट में नीबू का अचार ले कर उस की सास उस के पास गई थी तो वह भड़क उठी थी, "आप नीबू के अचार को दवा समझती हैं? आप क्या डाक्टर हैं? यह क्यों नहीं कहतीं कि आप मेरे लिए एक पैसा भी खर्च नहीं करना चाहतीं? मुझे नहीं बनना मां. इस तरह तो मैं चार दिन भी नहीं जी सकूंगी," और उमा रो पड़ी थी.

उसे अच्छी तरह याद है कि इस के बाद उस ने भयंकर तूफान खड़ा किया था. वह अपनी मां के यहां हो कर आती थी तो घर आ कर अजीत के लिए मुसीबत खड़ी कर देती थी, "देखा, मेरी भाभी को भी बच्चा होने वाला है. मेरी मम्मी ने टानिकों व दवाइयों के ढेर लगा दिए हैं. सुबहशाम उसे फलों का रस पिलाया जाता है ताकि बच्चा तंदुरुस्त पैदा हो. सारा दिन मम्मी उसे पलंग से उठने नहीं देतीं. उस की सेवा करने के लिए एक नौकर अलग से पापा ने रख दिया है. और आप के यहां नौकर के नाम पर एक महरी है जो दोनों वक्त के बरतन साफ कर देती है. आप की माताजी का कहना है, 'हाथ से काम करने से शरीर तंदुरुस्त रहता है. सारा दिन लेटी मत रहा करो. आगे चल कर प्रसव में तकलीफ होगी.' फल के नाम पर क्या मिलता है मुझे? एकदो केले, एकाध संतरा. यह क्यों नहीं कहते कि पैसा बचा रहे हैं ताकि बेटियों की बड़े घरों में शादी की जा सके? बड़े घरों की बहुएं ला कर आप लोग उन का सुखचैन लूट लेते हैं. कभी आज तक अपने बेटे से नहीं कहा, 'जा, जरा उमा को स्कूटर पर घुमा ला. भैया भाभी को रोज गाड़ी में घुमाने ले जाते हैं. यहां तो सारा दिन बस, काम ही काम. मेरे पापा को भी न जाने मेरे साथ क्या दुश्मनी थी, जो मेरे लिए यह महरी का जाला ढूंढा."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारी कमेंटरी खत्म हो गई, उमा?" अजीत ने उसे छेड़ते हुए कहा था.

"तुम मेरी हर बात हवा में उड़ा देते हो और मेरा अपमान कर देते हो. तुम्हारी क्या मेरे प्रति कोई जिम्मेदारी नहीं है?" उमा भड़क उठी थी.

"मेरा सारा परिवार शीर्षासन लगा कर भी तुम्हारा खयाल करे न, तब भी तुम्हारी पापा की गलियों में भटकती आत्मा को शांति नहीं मिलेगी. मेरी तो समझ में नहीं आता कि तुम चाहती क्या हो. कहने को तुम अच्छीखासी पढ़ीलिखी हो, लेकिन बातें ऐसी करती हो, जैसे बिलकुल नादान हो. तुम्हारी भाभी को दवाइयों की जरूरत होगी, इसी लिए उसे दवाइयां दी जा रही होंगी. उस के लिए डाक्टरों ने आराम की सलाह दी होगी. अगर मां ने तुम्हें चलनेफिरने को कहा है, उमा, तो इस में तुम्हारी ही भलाई है. तुम क्यों सोचती हो कि यह घर वाले तुम्हारे अपने नहीं हैं. तुम्हारी आदत बन गई है, न स्वयं चैन से रहोगी, न मुझे रहने दोगी."

"मुझे तो मेरी मम्मी के यहां पहुंचा दो. तुम लोग मेरी दशा कभी नहीं समझोगे," और उमा रो पड़ी थी.

अजीत ने उसे कितने प्यार से समझाया था और सास ने भी मनाया था परंतु उस की जिद के आगे सब हार गए थे, "बस, मुझे मम्मी के यहां पहुंचा दो. यहां मेरा दम घुट जाएगा."

हार कर अजीत ने उस के मम्मी-पापा को बुलवा लिया था और सारी समस्या उन के सामने रख दी थी. मम्मी ने भी उसे बहुत कहा था, "बेटी, घर का जैसा वातावरण होता है, अपने को उसी के अनुसार ढाल लेना ही अक्लमंदी है. हमारे यहां तू अकेली थी, तेरी हर इच्छा पूरी हो जाती थी. इस घर की तू जिम्मेदार बहू है. घर की सीमा लांघ कर उस की मर्यादा को कम नहीं करना चाहिए. उच्छृंखलता को छोड़, बेटी, गरिमामयी नारी बन."

"नहीं, मम्मी. मैं एक पल भी इस घर में रहने को तैयार नहीं. आप साफ-साफ क्यों नहीं कह देतीं कि उस घर में अब मेरी कोई जगह नहीं है," उमा भड़क उठी थी.

"पागलपन नहीं करते, उमा. तेरी यही हठ है तो चल मेरे साथ," और उमा की मम्मी ने उस की सास से माफी मांगते हुए कहा था, "आप इसे मेरे साथ भेज दीजिए. अपनी जिद को यह अभी तक नहीं छोड़ पाई. मैं जल्दी इसे वापस भेज दूंगी."

"हमारे यहां सातवें महीने गोद भरने की रस्म होती है. अब यह चली जाएगी तो लोग क्या कहेंगे. आप के यहां कब तक भागभाग कर जाएगी. रहना तो आखिर इसे इसी घर में है. इसे वहम हो गया है कि इस का यहां कोई खयाल नहीं रखता. यह अकेली बहू होती तो मैं इसे सिर आंखों पर बैठाती लेकिन घर में बड़ी बहू है, कल को दिनेश की शादी होने वाली है. मेरे लिए तो सभी बहुएं बराबर होंगी. चाहे वे छोटे घर की हों या बड़े घर की. मुझे मेरे बेटों से सरोकार है, बहुओं के पीहर से नहीं," सास ने उमा की मम्मी से कहा था.

यह सुनते ही पहले तो उमा मुंह देखती रह गई थी, फिर एकदम तड़प कर बोली थी, "आप सुन रही हैं न, मम्मी. आप अभी भी मुझे इस घर में रहने को कहेंगी, जो सभी को एक ही लाठी से हांकना चाहता है? मुझे कोई रस्मवस्म नहीं करवानी. मेरी डिलीवरी भी यहां मत करवाइए, मम्मी. यह किसी दाई को बुला कर मेरी मुसीबत कर डालेंगी. यह घर नहीं, मम्मी, मकड़ी का जाला है," और वह मम्मी की गोद में सिर रख कर रो पड़ी थी.

इस के बाद मम्मी ने एक शब्द भी नहीं कहा था. वह उस की सास के सख्त शब्दों से नाराज थीं या बेटी की गुस्ताखी से, इसे उमा आज तक नहीं समझ पाई. उमा बिना किसी से पूछे, बिना किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एस्ट्रेला - शक्ति

ऐसी शक्ति जिसकी आवाज़ें आपके कानों में गूँज रही है

ऐसी शक्ति जिसकी रोशनी आप खुद देख सकते हैं

अपने ट्रांज़िस्टर और टॉर्च में एस्ट्रेला-शक्ति का कमाल तो देखिए!

एस्ट्रेला बैटरियों की शक्ति 'जैसे गागर में सागर'

एस्ट्रेला बैटरीज़ लि. बम्बई-४०० ०१९

CMEB-2-152 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ओर देखे चुपचाप मम्मी के साथ चली आई थी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीहर में आ कर उमा कुछ दिन तो निश्चिंत रही थी, लेकिन उस के बाद उस की बेचैनी बढ़ने लग गई थी. उमा अकसर देखती, मम्मी सारासारा दिन अपनी बहू में व्यस्त रहती हैं, उस की ओर उस का कभी ध्यान ही नहीं जाता. कई बार तो ऐसा भी होता कि मम्मी उसे कह देती, "उमा बेटी, जा, अपनी भाभी को भी फल काट दे और खुद भी खा ले. हां, देखना, उसे उठने मत देना." और कभीकभी उसे बगीचे में टहलने का भी आदेश मिल जाता, "उमा, सुबह थोड़ी देर घूम लिया करो.

उमा देखती, हैरान होती. क्या वह सब के लिए गैर हो गई है? सब भाभी की देखभाल में लगे रहते हैं. उस के लिए किसी के पास समय नहीं है. जिस अवस्था में भाभी है, वह भी तो उसी अवस्था में है. फिर उस की ओर से लापरवाही क्यों?

तभी एक दिन डाक्टर की बातों ने उस की आंखों पर पड़ा परदा खींच कर सरका दिया था. डाक्टर मम्मी को कह रही थी, "आप अब चिंता न करें, खतरा टल गया है. बच्चा भी, लगता है, पहले से बढ़ गया है: मैं तो खुद घबरा गई थी कि इतनी अच्छी खुराक के बाद भी बच्चा बढ़ क्यों नहीं रहा. अब आप इन्हें थोड़ाथोड़ा पैदल घूमने दिया करें."

उस के बाद भाभी के लड़का हुआ था. सारा परिवार बच्चे और उस की मां में व्यस्त हो गया था. घर खुशियों से भर उठा था. उमा के ससुराल खबर भिजवा दी गई थी, लेकिन वहां से कोई नहीं आया था. उमा सब कुछ चुपचाप देखती और उदास सी अपने कमरे में आ कर लेट जाती. फिर बच्चे के नामकरण संस्कार का प्रोग्राम बना था. मम्मी ने ही उमा से कहा था, "उमा, भाई के साथ चली जा, उन लोगों को निमंत्रणपत्र दे आ."

"मैं नहीं जाऊंगी, मम्मी. इन दो महीनों में मेरी किसी ने सुध ली है? आप ही चली जाइए."

"दोष तो तेरा था, बेटी. ये रिश्ते क्या टूटने वाले होते हैं? तू चली जाएगी तो उस के दिल का मलाल हट जाएगा."

"उमा ठीक कहती है, मम्मी. जब वही लोग नहीं आए तो यह क्यों जाए. उन्होंने तो ऐसा समझा है, जैसे यह किसी गएगुजरे बाप की बेटी हो," पास खड़े भाई ने उमा की तरफदारी की थी.

नामकरण का दिन आ गया मेहमान आते जा रहे थे. उमा सब का स्वागत कर रही थी. ढोलक की थाप पर गीत गूंज रहे थे. उमा का मन उचाट हो कर बाहर की ओर भाग रहा था. अभी तक वहां से कोई आया क्यों नहीं? क्या भैया ने निमंत्रणपत्र नहीं भेजा? फहरिस्त में तो नाम सब से ऊपर लिखा था. उस ने अपनी आंखों से देखा था. 'फिर वे क्यों नहीं आए?' जैसे एक ही आवाज गूंजगूंज कर उस का मन मथे जा रही थी और वह घबरा कर कमरे में चली गई थी.

"उमा बेटी, देख कौन आया है?" मम्मी ने हृदय मंथन करती उमा को जैसे बचा लिया हो.

"कैसी हो बहू?" सास ने उस का माथा चूमते हुए कहा.

"अच्छी हूं, मां. आप कैसी हैं? वह नहीं आए?" उमा ने धड़कते दिल से पूछा.

"कौन, अजीत? वह नहीं आया. उसे कुछ काम था. मैं ही चली आई."

"मां, मैं आप के साथ घर चलूंगी. मुझे ले जाएंगी न?" उमा ने सहमीसहमी आवाज में पूछा.

"तू चलेगी, उमा?" मां ने भरे गले से पूछा.

"हां, मां. सातवां महीना शुरू हो गया है न, और आप को रस्म करनी है," उमा ने आंखों में आए आंसुओं को छिपाते हुए कहा.

"हां, बेटी, करनी है," और मां ने दोनों बांहें फैला कर उमा को अपने में समेट लिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख : मुकारबख्श 'आजाद'

मिलाद शरीफ

पीरशहीदों के बेतुके मनगढ़ंत किस्सों और कब्र-कयामत की काल्पनिक बातें कर के क्या मुल्लामौलवी मुसलमानों को गुमराह नहीं कर रहे हैं?

उस दिन जब मैं जयपुर से अपने गांव धनकोली लौटा तो बस अड्डे पर ही मुझे मुराद मिल गया. उस ने छूटते ही मुझे दावत दी कि उस के यहां आज 'मिलाद शरीफ' है और उस में मुझे शरीक होना है. मैं ने हंस कर उसे टालना चाहा, "भाई, मुझे महफिल में क्यों बुलवा रहे हो, मसजिद के इमाम साहब कहीं नाराज हो बैठे तो? कई कट्टरपंथी मुंह बिसूरेंगे, क्योंकि मैं उन के मतलब की कोई भी बात नहीं कह सकूंगा."

मगर वह नहीं माना, बोला, "मैं दराब को आप के पास भेज दूंगा. आप नहीं आए तो कोई नवयुवक नहीं आएगा, शायद औरतें तो बिलकुल नहीं आएंगी. आप के बिना औरतों के हकहकूक पर धर्म के ठेकेदारों से बहस कौन करेगा. क्या आप मुसलिम औरतों को बराबरी का हक नहीं दिलवाना चाहते? कृपया जरूर आइए."

"ठीक है, मगर मौलवी लोगों को यह सब पसंद नहीं," मैं हंसा.

"तो फर्क क्या पड़ता है? अब जमाना बदल गया है. बेचारी मुसलिम औरतों को क्या हमेशा ही यह अपमानजनक जिंदगी जीनी होगी?"

बात ठीक थी, मगर आजकल जो कुछ भी महफिलोंमिलादों में होता है, उस का मुझे कटु अनुभव है. फिर भी शिष्टाचारवश मैं ने कह दिया, "भाई, कोशिश करूंगा. वैसे मैं सफर से लौटा हूं और काफी थका हुआ हूं. इस गरमी में इस बार मुझे लगातार कई प्रोग्राम देने पड़े हैं. सचमुच, मैं काफी परेशान हो चुका हूं."

"कुछ भी हो, आप को तशरीफ लानी ही होगी. बहाने नहीं चलेंगे. अब मैं चलता हूं. मुझे महफिल का और मुल्लामौलवियों के खानेपीने का इंतजाम करना है," और वह हंसता हुआ चला गया तो मैं भी अपने मकान की ओर बढ़ा.

मिलाद शरीफ का आयोजन मुसलमान अपने मांगलिक मौकों पर ही करते हैं, मसलन—किसी के घर बच्चा पैदा हो, खतना हो, सगाई या शादी हो, कोई त्योहार विशेष हो, नया मकान बने, बच्चा या बच्ची कुरान शरीफ की पढ़ाई खत्म कर लें, मकान बदला जाए, दुलहन आए या जाए, किसी के घर गमी हो जाए तो मरने वाले की रूह की शांति के लिए यह आयोजन मुल्ला लोग करवा देते हैं. कोई सफर में जाए या सफर से लौटे, हज कर के आए, रोग से छुटकारा पाए, किसी की दिली मुराद पूरी हो, तो भी ऐसा होता है. गरज यह कि हर विशेष मौके पर यह आयोजन करवाना प्रत्येक मुसलमान अपना फर्ज समझता है. उद्देश्य इतना ही होता है कि घर पर खुदा का जिक्र हो जाए, जिस से अलाबला दूर रहे और मकान पर बारह महीने रहमत का मेह बरसता रहे.

मुसलमानों की धारणा है कि जिस घर पर मिलाद पढ़ी जाती है, वहां हजरत मोहम्मद साहब की पाक रूह आती है, आप अपना और खुदा का जिक्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सुनने के वास्ते दौड़े आते हैं. उस महफिल में मोहम्मद साहब के कदम मुबारक पड़ते हैं और उन्हीं की बरकत से तमाम हाजरीन (श्रोता) के गुनाह माफ हो जाते हैं. ऐसा लोगों का विश्वास है और लोग इसी लिए मिलाद में शरीक होते हैं. मौलवियों के अनुसार इस महफिल में खुदा के रसूल का ही जिक्र होना चाहिए, मगर होता क्या है, यह सभी जानते हैं. पीरशहीदों के बेतुके मनगढ़ंत किस्से लोग खूब नमकमिर्च लगा कर बयान करते हैं. फिल्मी धुनों पर गजलें पढ़ी जाती हैं. यही वजह है कि समझदार, पढ़ेलिखे लोग वहां बहुत कम होते हैं और मुसलिम अव्यवस्था पर वहां बात नहीं होती. इसलिए जब महफिल खत्म होती है तो श्रोता को यों लगता है, मानो उसे कुछ भी नहीं दिया गया, उसे अपनी नींद यों ही गंवानी पड़ी. कुछ लोग तो एक ही बात हमेशा दोहराते हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैसियत के अनुसार

मिलाद शरीफ की शानोशौकत आयोजक की हस्ती पर निर्भर है. साधारण लोग स्थानीय मुल्लाओं से मिलाद पढ़वाते हैं. एक तख्त लगा दिया जाता है और रोशनी कर दी जाती है. हाजरीन के वास्ते बिछायत करवा दी जाती है और साधारण शिरनी (प्रसाद) बांट दी जाती है. कुछ जरा बड़े लोग मिलाद पढ़ाने के लिए बाहर से मौलवी बुलवाते हैं, बिजली की रोशनी करते हैं और माइक लगवाते हैं. तख्त पर गावतकिए और बैठने वालों के लिए शानदार बिछायत होती है. भिश्ती पानी छिड़कता है और इत्र की खुशबू माहौल पर छाई रहती है. शरबत, चाय और ठंडे पानी का भी दौर चलता रहता है. शिरनी में दाख, छुआरे, काजू, मिश्री, शक्कर और बताशे होते हैं. मिलाद पढ़ने वाली वही पार्टी उत्तम समझी जाती है, जिस में सुरीली आवाज में नातें पढ़ने वाले ज्यादा हों. कुछ लोग तो गजलें सुनने या फिर शिरनी लेने ही आते हैं, मौलवी क्या कहता है, उन की बला से. मौलवियों की तकरीरों में जीवन संघर्ष का कोई संदेश नहीं होता. उन की आवाज में बुजदिली होती है और तमाम बातें अत्यंत निराशावादी होती हैं. वे बारबार उसासें छोड़ते हैं और कहते हैं, "हमें मरना है, मुसलमानो, दुनियावी धंधे छोड़ो और अपनी आखिरत (परलोक) सुधारो."

मिलाद शरीफ का आयोजन एक धार्मिक अंधपरंपरा है. मुसलमानों में यह बड़ी कमजोरी है कि वे मजहब के नाम पर कुछ भी तरमीम (संशोधन) नहीं चाहते. इस आयोजन में मुल्लामौलवियों की अपनी स्वार्थपरता है. ऐसे आयोजनों पर ही उन्हें बढ़िया खाना, लिबास और नजराना मिलता है. शुरू में मिलाद शरीफ के उद्देश्य अच्छे रहे होंगे, मगर आज यह 'रात्रि का शोर' मात्र रह गया है. अंधविश्वासियों के अनुसार ऐसा करने से सवाब (पुण्य) हासिल होता है और गुनाह करने वाले का पाप सहज ही में धुल जाता है. लेकिन असलियत यह है कि किसी के टूटे संबंध, टूटी गृहस्थी व टूटी जिंदगी इस से कभी नहीं जुड़ी है.

उद्देश्यहीनता क्यों?

आज से करीब चौदह सौ साल पहले अरब में अंधविश्वासों और ढकोसलों का साम्राज्य था. ऐसे आड़े वक्त में हजरत मोहम्मद साहब ने अरबों को संगठित कर सही मार्ग सुझाया और उन्होंने अपने इस पाक अभियान में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की. इसी वास्ते मोहम्मद साहब का इतना सम्मान मुसलमानों के अलावा अन्य संप्रदायों में भी है. हजरत और उन के अनुयायियों ने मुसलमानों को संगठित करने के लिए समयसमय पर ऐसे आयोजन किए थे, मगर तब और आज की महफिलों में रातदिन का अंतर है.

मिलादों में आज पीरों की करामातियों, मोजिजों और नातनज्मों के अलावा कोई प्रेरणादायक बात होती ही नहीं. तब ऐसे आयोजन होने से लोगों की आपसी फूट और रंजिश मिट जाती थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

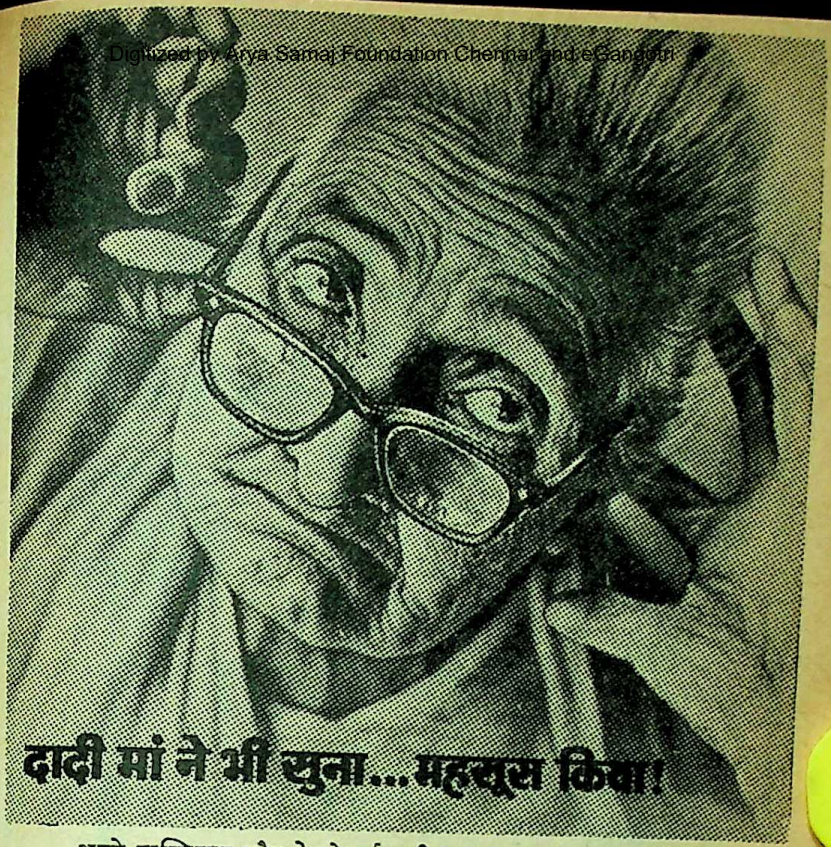

अपने ट्रान्सिस्टर और टेप-रेकार्डर की आवाज का फर्क—जो कमाल था, नई शक्तिशाली निप्पो हायपर और हाइ-टॉप बैटरियों का !

...खैर क्यों न हो, निप्पो बैटरियां, जापानी निर्माता नॅशनल के अनोखे पेटन्टेड फॉर्मूले से बनी हैं.

- एक सा वोल्टेज ...एक सी आवाज
- मेटल कवर... लीकेज से बचाता है
- ज्यादा समय चलती है, बिना इस्तेमाल भी अधिक टिकती है.

हाइ-टॉप—थोड़े से ज्यादा खर्च में बहुत ज्यादा टिकाऊ

निप्पो अद्भुत आवरण में अपार शक्ति

जापानी संस्था मत्सुशिता इलेक्ट्रिक के सहकार्य से,

इन्डो नॅशनल लिमिटेड द्वारा निर्मित

everest/329/INL-hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओरिएन्ट

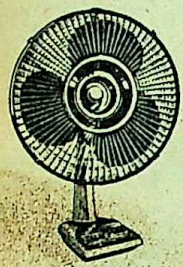

डेस्क पंखा

अब आकर्षक

आफ-सीजन दामों में खरीदिये

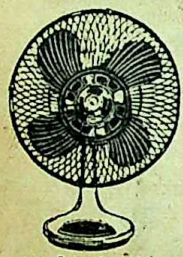

सुपर डीलक्स टेबल पंखा

स्टैण्ड पंखा

डीलक्स टेबल पंखा

ऑल परपज पंखा

ओरिएन्ट पंखा

विश्व विख्यात

ओरिएन्ट पंखा

ओरिएन्ट जनरल इन्डस्ट्रीज़ लि० ६, घोर बीबी लेन, कलकत्ता-१४

फैक्ट्री : कलकत्ता और फरीदाबाद

CC/OM/73 MAN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन में कोई मैल नहीं रह जाता था. इस प्रकार बात बढ़ने की बजाए वहीं खत्म हो जाती थी. ऐसे आयोजन पर मुसलमान अपनी प्रगति और कमियों पर गौर किया करते थे और अपना सुधार करते थे. एक जगह पर व एक साथ बैठ कर नमाज पढ़ने के पीछे भी यही राज है. मगर आज उन उद्देश्यों का पालन कहां होता है?

वक्त गुजरने के साथ ही आज ये उद्देश्यपूर्ण बातें निरर्थक हो कर केवल परिपाटी मात्र रह गई हैं. पुण्य होता है और पाप धुलते हैं, बस, इसी गलतफहमी में अब मिलाद पढ़ाई जाती है.

वास्तव में यह एक अजीब दलील है. मिलादों में आज क्या नसीहतें होती हैं? शायद कुछ नहीं. तब फिर विज्ञान के इस युग में क्या यह सब कुछ बेतुका सा नहीं लगता? और तो और, वहां किसी प्रकार का स्वस्थ मनोरंजन भी नहीं होता. बेशक मिलना तो दूर की बात है. हां, ऐसे आयोजनों से अंधविश्वासों व ढकोसलों को बल जरूर मिलता है और सांप्रदायिक भावना को प्रोत्साहन मिलता है. ऐसे आयोजनों में अपने मजहब को सर्वोपरि बता कर अन्य धर्मों पर कीचड़ उछाला जाता है. यह कटु सत्य है और इसे कोई नकार नहीं सकता.

पीरशहीदों के किस्सों, गजलों और कब्रकयामत की काल्पनिक बातों से भयभीत कर के ये मिलाद पढ़ने वाले लोग मुसलमानों से क्या करवाना चाहते हैं, यह वही जानें. ऐसे कहानीकिस्से सुन कर पढ़ेलिखे लोग मन ही मन हंस पड़ते हैं. सच तो यह है कि मिलाद पढ़ने वाले बहुत से लोगों को तो यह भी ज्ञान नहीं है कि अरब देश किधर है, वहां चौदह सौ साल पहले क्या स्थिति थी और आज क्या हो रहा है. उर्दू की कुछ किताबें पढ़

अब हंसने की बारी है

बेटा : पिताजी, एक शादी में कितना खर्च आता है?

पिता : पता नहीं, बेटा, मैं तो अभी तक खर्च कर रहा हूं.

✦

एक दुकानदार से एक स्त्री की तूतूमैंमैं हो गई. स्त्री गुस्से में भर गई और बोली, "तुम ने मेरी बेइज्जती की है... पांच मिनट के अंदर माफी मांग लो, नहीं तो..."

"अगर पांच मिनट में माफी न मांगू तो?" दुकानदार ने गंभीरता से पूछा.

"तो कितना समय चाहिए तुम्हें उस के लिए?" वह बोली.

✦

एक अभिनेता विशेष प्रसिद्ध न था. जब उस की मृत्यु हुई तो फिल्म उद्योग के बहुत से लोग उस की अरथी के साथ गए. उस अभिनेता के एक मित्र ने गहरी सांस लेते हुए कहा, "अगर उसे यह पहले पता होता कि उस की अरथी के साथ इतनी भीड़ इकट्ठी हो जाएगी तो वह कब का मर चुका होता."

✦

पेरिस के एक बाजार में एक आदमी हाथ में एक लिफाफा पकड़े बेतहाशा दौड़ा जा रहा था. पुलिसमैन को शक हुआ. उस ने उसे रोका और पूछा, "कहां जा रहे हो? इस लिफाफे में क्या है?"

"इस में मेरी प्रेमिका के कपड़े हैं." वह बोला, "मुझे डर है कि देर हो जाने से कहीं फैशन ही न बदल जाए."

✦

"सर, आप की लड़की ने मुझ से विवाह करने का प्रस्ताव रखा है," लड़का डरतेडरते बोला.

"तो इस में मैं क्या कर सकता हूं? दोष तुम्हारा ही है. जब तुम हर वक्त उस के आसपास मंडराते रहोगे तो वह इस के सिवा कर भी क्या सकती है?" ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लीं और कुछ नातनज्में रट लीं और आ गए नसीहत देने.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोलेभाले लोग उन्हें बड़े विश्वास और श्रद्धा से यों देखते हैं मानो वे अभी-अभी सातवें आसमान से टपके हों. मिलाद पढ़ने वाले ये लोग अपने बयानों और रवायतों की पुष्टि यों करते हैं मानो वे सभी कुछ खुदा के घर अपनी आंखों से देख कर आए हैं.

पेशेवर

मुसलमानों की धारणा है कि इस तथाकथित महफिल में आज भी मोहम्मद साहब की सवारी आती है. यह विश्वास चौंका देने वाला है और इस पर किसी भी तरह यकीन नहीं आता. यह मात्र प्रलोभन है, एक चालाकी है, ताकि धर्म-भीरु लोग इस बहाने मिलादें पढ़वाएं और मिलादों में जरूरत आएं. समझ में नहीं आता कि जहां हर तरह के लोग—रिश्वतखोर, सूदखोर, कामचोर, गिरह-कट आदि—आते हैं और बगुलाभक्त मिलादें पढ़ते हैं, वहां हजरत मोहम्मद साहब की पाक सवारी क्यों कर आती होगी? निस्संदेह यह किस्सा बनाया हुआ है और भोलेअनपढ़ लोगों को भूलभुलैया में रखने का षड्यंत्र है.

मिलादें पढ़ने वालों को आप पेशेवर ठग कह सकते हैं, क्योंकि उन का उद्देश्य मुसलमानों का कल्याण करना नहीं है. वे तो इस समाज को ले डूबना चाहते हैं. उन्हें इस बात से कोई सरोकार नहीं है कि ऐसे आयोजनों से हम उन्नति की ओर बढ़ रहे हैं या अवनति की ओर. उन्हें तो गिजा, लिबास और भरपूर नजराना चाहिए, बस. इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु निर्लज्ज हो कर वे ऐसी अवैज्ञानिक बातें उगलते फिरते हैं.

सन 1960 में एक ऐसी ही महफिल में मैं आमंत्रित था. मैं जयपुर गया. जब वहां मैं ने धर्म के ठेकेदारों का हाल देखा तो दंग रह गया. ये लोग इसे कमाई का एक जरिया मानते हैं. उस दिन के बाद ऐसी महफिलों से मेरा विश्वास उठ गया.

अब मुख्य बात हमारे सामने यह आती है कि ऐसी धार्मिक महफिलों से फायदानुकसान क्या है? इन महफिलोंमजलिसों का स्वरूप क्या हो? वर्तमान में ये आयोजन कौन सी भूमिका अदा करें? इन प्रश्नों पर हमें निष्पक्ष और तटस्थ हो कर विचार करना होगा. ऐसा सोचने पर अपनेआप हमारी समझ में आ जाएगा कि ये महफिलें मुसलमानों के वास्ते कौन सी भूमिका अदा करती रही हैं. सचमुच ऐसे आयोजनों से अन्य धर्मावलंबियों के प्रति नफरत पैदा की जाती है, इन से सांप्रदायिकता की भावना उठती है, संकीर्णता और दकियानूसी विचार प्रबल होते हैं, जातिवाद को प्रोत्साहन मिलता है, 'राष्ट्रीयता' में खलल पड़ता है.

ऐसी भावनाएं नागरिक को अपने कर्तव्य का पालन नहीं करने देतीं और देश के प्रति वफादारी पर, आंशिक रूप से ही सही, चोट जरूर करती हैं. इस प्रकार स्वस्थ समाज और देश के निर्माण में सहयोग के स्थान पर विघटन की भावना सिर उठाने लगती है. सहयोग और आपसी प्रेम में घुन लग जाता है, जो हमारे पाकीजा रिश्तों और कर्तव्यों को खोखला बना देता है.

समय के साथ बदलाव क्यों नहीं?

यदि ये महफिलें जुटाई जाएं तो अरब की उस जमाने की स्थिति और आज के संसार की स्थिति की तुलनात्मक विवेचना की जानी चाहिए. हमें अपनेआप ही भान हो जाएगा कि अमुक बातों की तब आवश्यकता थी, मगर आज नहीं. सो जिन बातों की हमें आज जरूरत है, वे बातें हम अपनाएं और शेष तमाम बातों को उदारतापूर्वक त्याग दें, इसी में हमारी भलाई है. अब हमें ऐसी नसीहतें देनी हैं, जिन से प्रेरणा पा कर मुसलमान संकीर्णता और धार्मिक अंध-विश्वास से ऊपर उठें और वक्त की पुकार को पहचानें. ऐसा करने पर मुल्ला-मौलवियों का व्यक्तिगत नुकसान तो होगा, मगर उन्हें अपनी कौम के वास्ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़े की क्वालिटी परखने का

निश्चित उपाय

क्या है?

यह है एक आसान उपाय–हमेशा, कपड़ों पर 'टेरीन'® ट्रेडमार्क ज़रूर देखिए। ताकि बाद में आपको कोई परेशानी न हो और न ही शिकायत का मौक़ा मिले। क्योंकि हम पहले से ही पूरी सावधानी बरतते हैं। हम पूरी तरह जाँच-परख कर तसल्ली कर लेते हैं कि कपड़ा हर तरह से उम्दा है। इसलिए, 'टेरीन' ट्रेडमार्क देखकर ही कपड़े ख़रीदिये। इसके लिए आपको पैसे नहीं देने पड़ते, और इसमें आपही का फ़ायदा है।

TERENE

® 'टेरीन'–केमिकल्स एण्ड फ़ाइबर्स ऑफ़ इंडिया लिमिटेड का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है।

CHAITRA-CAFI-252 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंगर* की असली सुइयों पर ही सिंगर का नाम होता है

सिंगर* का नाम देख कर ही सुइयां खरीदिए, वही असली सुइयां होती हैं। बिना गर्म हुए, ५० लाख टांकों से भी अधिक साफ़, सुगठित सिलाई। **सिंगर*** सुई की नोक 'अति-सूक्ष्म' बनाई जाती है और प्रत्येक सुई बनावट में समान, श्रेष्ठ और पूर्णतया विश्वसनीय है। भिन्न प्रकार की सिलाई, कढ़ाई के लिए अलग अलग नम्बरों की सुईयां उपलब्ध हैं जो हर मशीन में आसानी से लग जाती हैं।

सारे भारत में मिलती हैं

SINGER SEWING MACHINES

सिंगर* जो पेश करती है वह चीज़ बढ़िया होती है

उत्पादक:
सिंगर-टीवीएस लिमिटेड, मदुराई

व्यापार-संबंधी जानकारी के लिए, कृपया सम्पर्क करें:
सिंगर स्युइंग मशीन कम्पनी
२०७, वी. एन. रोड, बम्बई-४०० ००१

* सिंगर कम्पनी का ट्रेडमार्क

maa. SSM.17A Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्याग करना ही पड़ेगा, अन्यथा कौम की दुर्दशा के वे ही जिम्मेदार होंगे और आने वाली पीढ़ियां उन्हें माफ नहीं करेंगी.

क्या ही अच्छा हो यदि प्रत्येक मुसलमान अपने हर मांगलिक मौके पर कुछ न कुछ बचत कर के उसे बचत खाते में डाल दे और वक्त आने पर वह धन अपनी औलाद की तालीम पर लगाए. आज हजयात्रा से ज्यादा अहमियत प्रतिभावान बच्चों को विदेश भेज कर तालीम दिलवाने को मिलनी चाहिए, अन्यथा धर्म के नाम पर हम अज्ञात रूप से पिसते रहेंगे.

हमें अपनी माली, समाजी और सियासी दशा पर सामूहिक रूप से गंभीरता से विचार करना है, स्त्रियों को समानता का हक दे कर अपनी तरक्की में उन्हें हमसफर बनाना है. मजहब और सामाजिक व्यवस्था बिलकुल अलगअलग हैं. हर पारिवारिक और सामाजिक मसले पर मजहब की मुहर लगाने में कोई तुक नहीं है. मिलादें पढ़ते युग बीत गए हैं, मगर हम अभी तक फूट और संकीर्णता पर फतह नहीं पा सके हैं. शिया और सुन्नी का मतभेद अभी तक खत्म नहीं हुआ. हजरत मोहम्मद साहब की रूह मिलादों से नहीं, बल्कि मुसलमानों की खुशहाली से खुश होगी. लिहाजा वक्त के साथ कदम मिला कर चलना ही हमारा मजहब है. ●

बच्चों के मुख से

हम लोग अपने खाने के लिए देसी घी का एक पूरा टीन खरीद लेते हैं, जो कई महीने चल जाता है. सुविधा के लिए घी को गरम कर के व साफ कर के डालडा के छोटे डब्बे में भर लेते हैं ताकि टीन से प्रति दिन घी न निकालना पड़े.

एक दिन मैं छोटे डब्बे में घी डाल रही थी कि मेरी पुत्री ने पूछा, "मम्मी, यह क्या कर रही हो?"

इस से पहले कि मैं कुछ उत्तर दे पाती, मेरा छः वर्षीय पुत्र बोल पड़ा, "देखती नहीं, घी का डालडा बन रहा है. बाजार में डालडा की बहुत कमी है, इसलिए मम्मी घर में डालडा बना रही हैं."

—सरोजकुमारी अग्रवाल, वाराणसी

✦

एक दिन मैं डेरी से दूध लेने जा रहा था कि मेरे साथ चार वर्षीय पुत्र विनीत भी चल पड़ा.

ग्वाला भैंस लगा रहा था. बछड़े को थोड़ा सा दूध पिला कर उस ने बाकी दूध दुहा और ग्राहकों के बरतनों में डाल दिया. घर पहुंचते ही विनीत ने दूध न पीने की घोषणा कर दी, "मम्मी, पापा बछड़े का जूठा दूध लाए हैं. जूठा दूध कौन पिएगा?"

—सत्यस्वरूप दत्त, जमशेदपुर

✦

मेरा सात वर्षीय छोटा भाई किसी की बात को याद रखने तथा बात पकड़ने में बहुत होशियार है. एक दिन वह नई निकर पहन कर जमीन में घिसट रहा था कि माताजी ने उस से कहा, "नई चीज को नहीं घिसना चाहिए, खराब हो जाती है. चलो उठो."

थोड़े दिन बाद हमारी मौसीजी हमारे घर आईं. उन का छःसात मास का लड़का भी था. थोड़ी देर बाद वह जमीन पर घिसटने लगा तो जल्दी से मेरे भाई ने उसे उठा लिया और बोला, "क्यों जमीन पर घिसटता है? नया है, खराब हो जाएगा."

और घर में हंसी का फव्वारा छूट पड़ा.

—राजीवकुमार अग्रवाल, बरेली ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेफड़े

लेख • कुलदीपकुमार

आप को दिल टूटने का डर की भी बातें करते हैं, लेकिन के फेफड़ों पर क्या गुजरती है,

जीवित रहने के लिए सांस लेना आवश्यक है. पहली सांस के साथ ही नवजात शिशु अपने आगमन की सूचना देता है. फिर तो सांस लेने का यह क्रम निरंतर चलता ही रहता है.

सांस लेते समय हम समस्त वायु अपने भीतर खींच लेते हैं, लेकिन हमारा शरीर इस वायु के केवल एक अंश—आक्सीजन—का ही उपयोग करता है. यह तो आप को ज्ञात ही है कि किसी भी वस्तु के जलने के लिए आक्सीजन आवश्यक होती है. हमारे शरीर की असंख्य कोशिकाओं में भी रातदिन अनवरत एक अग्नि प्रज्वलित रहती है. इस में जलता है शरीर में संचित भोजन और उत्पन्न होती है ऊर्जा (शक्ति). इस ऊर्जा से ही शरीर के अनेक कार्यकलाप—अंग संचालन कार्य—संभव हो पाते हैं. इसी अग्नि को प्रज्वलित रखने के लिए हम सांस लेते हैं. इसी लिए आक्सीजन को 'प्राणवायु' कहते हैं.

शरीर में प्राणवायु लाने, ले जाने का महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं दो अदद फेफड़े. एक औसत वयस्क शरीर की असंख्य तंग गलियों और अंधेरे बंद कमरों में दिन-रात, जीवनपर्यंत, प्राणवायु पहुंचाने वाले फेफड़ों का अपना भार होता है कुल एक किलोग्राम. आप समझते हैं कि आप के फेफड़े गुब्बारे की तरह खोखले होते हैं, पर वास्तव में वे स्पंज की भांति होते हैं—मुलायम और लचीले किंतु खोखले नहीं. यदि स्पंज की भांति उन्हें भी पानी में छोड़ दिया जाए तो वे तैरने लगते हैं.

आप समझते होंगे कि आप के दोनों फेफड़े बराबर होंगे, पर आप को यह जान कर आश्चर्य होगा कि आप का दायां फेफड़ा बाएं फेफड़े से बड़ा है. दाएं फेफड़े के तीन भाग होते हैं और बाएं के केवल दो. दाएं फेफड़े का भार भी अधिक होता है. बाएं फेफड़े को कुछ स्थान हृदय के लिए भी छोड़ना पड़ता है.

बचपन में फेफड़ों का रंग हलका गुलाबी होता है, लेकिन वर्षों तक धूल, धुएं और अन्य गंदगी के संपर्क में रहते-रहते उन के भीतर कारबन जमा हो जाता है और वे मटमैले हो जाते हैं. यदि सिगरेटबीड़ी भी पी जाए तो कहना ही क्या. प्रत्येक फेफड़े के ऊपर एक पतली झिल्ली का दोहरा आवरण चढ़ा रहता है, जिसे 'प्लूरा' कहते हैं.

फेफड़ों में वायु नाक से हो कर जाती है. नाक से प्रवेश करने के बाद वह गरदन में स्थित श्वासनली से होती हुई फेफड़ों में चली जाती है. श्वासनली टंटुए के नीचे से आरंभ होती है और वक्षगुहा में घुस कर दाईं व बाईं दो शाखाओं में विभाजित हो जाती है. प्रत्येक शाखा अपनी ओर स्थित फेफड़े में चली जाती है. यहां इस का बारबार विभाजन हो कर एक जाल सा बन जाता है, जैसे किसी पेड़ के तने से पहले बड़ी शाखाएं निकलती हैं और उन से छोटी शाखाएं निकलती हैं, फिर और छोटी. श्वासनली की सूक्ष्मतम शाखाएं वायुकोष से संबंधित होती हैं. फेफड़ों में इतने वायुकोष होते हैं कि यदि उन्हें सीधा कर के भूमि पर फैला दिया जाए तो वह एक बैडमिंटन कोर्ट जितना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान घेर लें, जब कि फेफड़े एक घन फुट से भी कम स्थान लेते हैं.

प्रत्येक वायुकोष की भित्तियों में सूक्ष्म रक्तवाहिनियों का एक बहुत ही सघन जाल बिछा रहता हैं. ये रक्तवाहिनियां इतनी सूक्ष्म होती हैं कि रक्त की लाल कणिकाएं (आर. बी. सी.) उन में से एक पंक्ति बना कर ही निकल सकती हैं. आलपिन के सिरे जितनी एक छोटी सी बूंद में लगभग 50 लाख कणिकाएं होती हैं. वायुकोषों की तुलना रेलवे प्लेटफार्म से की जा सकती है, जहां मालगाड़ियों से माल उतारा व चढ़ाया

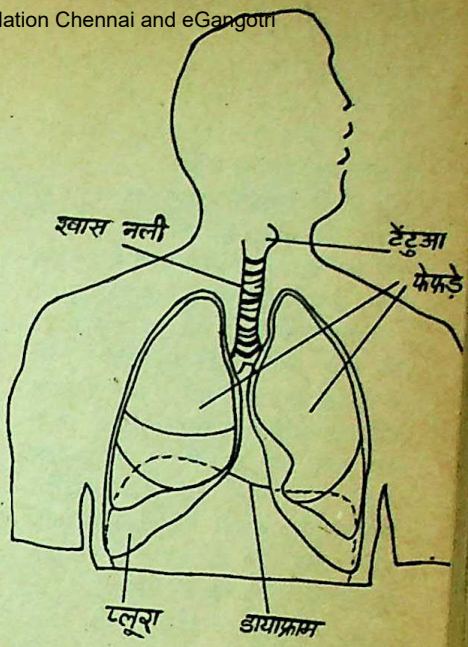

रहता है, जिगर के टुकड़े होने जरा सी असावधानी से आप यह भी कभी सोचा है?

जाता है. लाल रक्त कणिकाएं रेल के डब्बे हैं. आक्सीजन है चढ़ाया जाने वाला सामान और कारबन डाई आक्साइड है उतारा जाने वाला सामान. रेलवे प्लेटफार्म और फेफड़ों में स्थित इन वायुकोषों में अंतर है तो बस एक बात में—वायुकोषों में यह उतारचढ़ाव पलक झपकने से भी कम समय में हो जाता है.

फेफड़े चारों ओर से 12 जोड़ी पसलियों से घिरे रहते हैं. नीचे की ओर उदर और वक्षगुहा को अलगअलग करने वाली मजबूत मांसपेशी को कहते हैं—डायाफ्राम. फेफड़ों के चारों ओर वक्षगुहा में वायु का दबाव बाहरी वातावरण के दबाव से कुछ कम होता है. डायाफ्राम और पसलियां मिल कर एक धौंकनी का कार्य करती हैं. जब पसलियां ऊपर उठती हैं और डायाफ्राम नीचे गिरता है तो वक्षगुहा का आयतन बढ़ जाता है, जिस से उस के भीतर वायु का दबाव और भी कम हो जाता है, बाहर से वायु फेफड़ों के भीतर खिंच आती है और वे फूल जाते हैं. कुछ क्षणों के बाद पसलियां अपने पूर्वस्थान पर आ जाती हैं और डायाफ्राम ऊपर उठ जाता है. इस से वक्षगुहा का आयतन कम हो जाता है और फेफड़ों पर दबाव पड़ता है और उन के भीतर से वायु बाहर निकल जाती है.

सांस तो स्त्रीपुरुष सब लेते हैं लेकिन सांस लेने में स्त्री का वक्ष अधिक उठतागिरता है. इस का कारण यह है कि पुरुष के शरीर में डायाफ्राम अधिक कार्य करता है. विशेष आवश्यकता होने पर ही (भागदौड़, व्यायाम आदि में) पसलियां अधिक उठतीगिरती हैं. स्त्री के शरीर की स्थिति उस के विपरीत है. वहां पसलियां ही मुख्य कार्य करती हैं.

सांस लेने में नाक एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य करती है. बाहरी वायु में धूल के कण और पराग आदि तो होते ही हैं, इन के अतिरिक्त अनगिनत कीटाणु भी उपस्थित रहते हैं. इतना ही नहीं, कभी यह वायु एकदम सूखी और गरम होती है, तो कभी बहुत ठंडी. स्पष्ट है कि यदि वायु सीधी फेफड़ों में चली जाए तो वे थोड़े समय में ही रोगग्रस्त हो जाएं. आप की नाक इस वायु को हानिरहित कर के फेफड़ों के सेवन योग्य बनाती है. अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देखिए कि यह सब कैसे होता है.

नाक के अगले भाग में स्थित बाल वायु में आने वाले मोटे धूलकणों को रोक लेते हैं. नाक के पिछले भाग में एक तरल द्रव निकलता रहता है. बचेखुचे धूलकण यहां चिपक जाते हैं. इस पिछले भाग में ही 'लाइसोजाइम' नामक एक पदार्थ भी होता है, जो कीटाणुओं को नष्ट कर देता है. लेकिन नाक केवल एक कुशल छननी ही नहीं है, एयरकंडीशनर (वातानुकूलन यंत्र) भी है. यदि बाहर की वायु अधिक ठंडी है (जाड़ों में) तो नाक उसे गरम कर देती है और यदि वह अधिक गरम है (गरमियों में) तो नाक उसे ठंडा कर देती है. फेफड़ों में जाने वाली वायु बहुत नम होनी चाहिए अन्यथा वह फेफड़ों को सुखा ही देगी. बाहरी वायु आम तौर पर सूखी होती है लेकिन नाक उसे नम कर देती है.

फेफड़ों की सुरक्षा

फेफड़ों की सुरक्षा की इतनी तैयारी होते हुए भी कुछ कीटाणु बच कर निकल जाते हैं. इन से निबटने के लिए सुरक्षा की द्वितीय पंक्ति है श्वासनली. श्वासनली की भीतरी सतह पर एक झिल्ली होती है, जिस पर असंख्य छोटेछोटे बाल (सिलिया) लगे रहते हैं. इन बालों में नीचे से ऊपर की ओर गति होती है. श्वासनली की यह झिल्ली एक तरल सा द्रव (श्लेष्म) स्रावित करती रहती है. सिलिया की गति के कारण यह द्रव धीरेधीरे छाती से गले की ओर बहता रहता है. नाक से बच कर आए हुए कीटाणु आदि इस द्रव में चिपक जाते हैं और ऊपर की ओर बहने लगते हैं. गरदन से ऊपर पहुंच कर यह श्लेष्म मुंह में आ जाता है, जिसे खांस कर बाहर निकाला जा सकता है.

आप को 'दिल के टूटने' का डर लगा रहता है, 'जिगर के टुकड़े' हो जाने की बात भी आप करते हैं, लेकिन फेफड़ों की बात आप कभी नहीं करते. सचाई तो यह है कि आप को फेफड़ों की ही सब से अधिक चिंता होनी चाहिए. दिल और जिगर आसानी से नहीं बिगड़ते जब कि आप के फेफड़े बहुत नाजुकमिजाज हैं. जराजरा सी बात पर वे रूठ जाते हैं और आप की नींद हराम कर देते हैं. फेफड़ों के सब से बड़े दुश्मन हैं—धूल, धुआं, तरहतरह की गैसें और कीटाणु. लेकिन इन से भी बड़े दुश्मन हैं खुद आप (यदि आप सिगरेटबीड़ी पीते हैं.) धूल और कीटाणुओं पर तो आप का कोई जोर नहीं, लेकिन सिगरेटबीड़ी तो आप अपनी इच्छा से पीते हैं.

फेफड़ों पर अत्याचार

धूम्रपान फेफड़ों के साथ मनुष्य का सब से बड़ा अत्याचार है. शरीर के अन्य अंगों से हम वही कार्य लेते हैं जिस के लिए उन्हें प्रकृति ने बनाया है, किंतु फेफड़ों से अप्राकृतिक कार्य लिया जाता है. सांस लेने के लिए नाक एक आवश्यक अंग है. वह बाहरी वायु को हानिरहित कर के उसे फेफड़ों के योग्य बनाती है. लेकिन सिगरेट, बीड़ी या हुक्का तो मुंह से पिए जाते हैं, इसलिए उन का धुआं सीधे श्वासनली में चला जाता है.

सिगरेट के गरमगरम धुएं से श्वासनली की भीतरी सतह में जलन होती है. इस से बचने के लिए वह पहले से अधिक मात्रा में श्लेष्म साबित करने लगती है. उधर इस गरम धुएं के कारण श्वासनली की सिलियों की गति मंद हो जाती है. इतना ही नहीं, वर्षों तक सिगरेट पीने से तो बहुत सी सिलियां नष्ट हो जाती हैं. अब स्थिति यह हो जाती है कि श्लेष्म बनने तो अधिक लगा किंतु उसे ऊपर की ओर बहाने वाली सिलियां सुस्त हो गईं. ऐसे में क्या होगा? यदि किसी नली में पानी जमा होता जाए और उस की निकासी न हो तो क्या होगा—नली भी सीधी खड़ी हुई? यदि यह श्लेष्म (कफ) ऊपर न जा पाएगा तो वह नीचे (छाती में) गिरेगा. नीचे अर्थात फेफड़ों में. यदि ऐसा हो जाएगा तो व्यक्ति अपने ही कफ में 'डूब' जाएगा.

इस स्थिति से बचने का केवल एक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर सुहाने कपड़े — अरविंद के कपड़े

सुंदर दुकानें : मे. वेंकटेश, २४३-२४४, नेताजी सुभाष चंद्र बोस रोड, मद्रास-१ ● मे. गौतमकुमार एण्ड कम्पनी, ४२४, कालबादेवी रोड, बम्बई-२ ● अरविंद मिल्स रिटेल शॉप, रिलीफ रोड, अहमदाबाद ● मे. मोहन ब्रदर्स, क्लाक टावर, चांदनी चौक, दिल्ली-६ ● मे. मोहन ब्रदर्स एसोसिएट्स, १०२११, अजमल खान रोड, लाल माई चौक, करोल बाग, दिल्ली ● मे. भवरलाल मुथा एण्ड सन्स, चौड़ा रस्ता, जयपुर ● मे. चंदूलाल दुर्गा प्रसाद, बांकीपुर, पटना-४ ● मे. बंसल ब्रदर्स, जी. टी. रोड, नकोदर चौक, जालंधर सिटी. ● मे. रंरबरीस, २६-बी, वेस्ट टावर स्ट्रीट, मदुराई. ● मे. आनंद टेक्सटाइल्स, बड़ा बजार, त्रीची-८ ● मे. इन्दिरा टेक्सटाइल्स, 'डी' ब्लॉक सी.बी.ए.बी. कॉम्प्लेक्स, डिस्ट्रिक्ट आफिस रोड, बेंगलोर-९.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्थॉल ट्वायलेट पाउडर आपको शरीर की दुर्गंध से संरक्षण देता है और गर्म से गर्म मौसम में भी आपको दिन भर तरोताज़ा रखता है। इसकी भीनी-भीनी खुश्बू आपको हर समय मनमोहक रखती है।

गोदरेज निर्मित

सिन्थॉल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ही उपाय है—खांसी. खांसने से श्वासनली में [illegible] बाहर आ जाता है. इसी लिए धूम्रपान करने वाले व्यक्ति अधिक खांसते हैं—रात भर के जमा कफ को निकालने के लिए. देखा जाए तो यह खांसी उन के जीवन की रक्षा करती है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्य रोग

फेफड़ों के कुछ सामान्य रोग हैं: निमोनिया, क्षय (टी. बी.), दमा व ब्रोंकाइटिस. कुछ समय पूर्व तक निमोनिया एक प्राणघातक रोग था. बहुत अधिक व्यक्ति इस के कारण मरते थे. एंटीबायोटिक दवाओं के फलस्वरूप अब यह पहले जितना भयानक नहीं रहा.

टी. बी. के विषय में तो सब जानते ही हैं. 'फलां को टी. बी. हो गई है,' पिछले जमाने में यह मालूम होते ही सोच लिया जाता था कि अब वह नहीं बचेगा. भारत जैसे निर्धन देश में, जहां आदमी को दो जून का भोजन भी नसीब नहीं होता, आज भी टी. बी. आम पाई जाने वाली बीमारी है. सेनेटोरियम और अस्पताल तपेदिक के रोगियों से भरे रहते हैं. लेकिन जो भी हो, अब यह रोग भी पहले जैसा घातक नहीं रहा है.

ब्रोंकाइटिस बहुत सामान्य बीमारी है. श्वासनली की भीतरी सतह कीटाणुओं के आक्रमण से सूज जाती है और इस कारण रोगी खांसता रहता है. इसी तरह प्लूरिसी, दमा आदि अन्य कई रोग फेफड़ों से संबंधित हैं.

फेफड़ों की सब से भयंकर बीमारी है—कैंसर. वैसे तो कैंसर शरीर के किसी भी भाग में हो सकता है, पर फेफड़ों का कैंसर बहुत अधिक होता है. आंकड़े बताते हैं कि धूम्रपान करने वालों में यह रोग अधिक होता है.

अपने शरीर के इतने महत्त्वपूर्ण अंग—फेफड़ों—को स्वस्थ बनाए रखने के लिए आप क्या करते हैं? शायद उतना भी नहीं, जितना अपने बालों या नाखूनों के लिए करते हैं. यहां तक कि आप इन का पूरा उपयोग भी नहीं करते. हां, यह सत्य है कि आप अपने फेफड़ों का केवल एक भाग ही प्रयोग में लाते हैं. एक बार सांस लेने में आप लगभग 30 घन इंच वायु अपने भीतर खींच लेते हैं जब कि आप के फेफड़ों में लगभग 230 घन इंच स्थान है.

यह बहुत अनुचित तो नहीं; शरीर

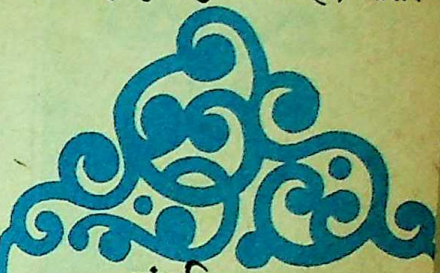

अंधविश्वास

मैं
वह विश्वास हूं, जो अंधा है,
मैं
बहकाता हूं भोले लोगों को
गलियों में, बाजारों में,
चौकों में, चौबारों में,
मरघट और श्मशानों में,
उजाड़ कब्रिस्तानों में,
वहम—
मेरा आलंबन है
डर—
मेरा उद्दीपन,
गल्प कहानियों ने मुझे जन्म दिया है.
अभी तक मैं संपन्न और खुशहाल था
परंतु
कुछ समय से मुझे खतरा महसूस हो रहा है
विज्ञान मुझे घायल कर रहा है,
प्रगतिशीलों ने मुझे पागल किया है,
मुझे खतरा है
तो सिर्फ...नई पीढ़ी वालों से...

—गोपाल बैरागी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Foundation Chennai and eGangotri

उसकी
सुन्दरता का
रहस्य हो

ऐटेक्स्

सौंदर्य प्रसाधन

तीस साल से ज़्यादा मशहूर
"ऐटेक्स्" श्रेष्ठ गुणों के लिए
विश्वसनीय

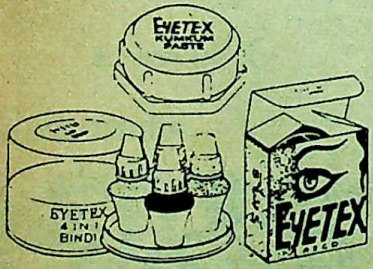

Aravind Laboratories
MADRAS-33 AL-1

को जितनी आवश्यकता होती है, उस हिसाब से सांस की गति व गहराई घट-बढ़ जाती है. लेकिन किसी मशीन को जंग लगने से बचाने के लिए यह आवश्यक है कि उस का पूरा उपयोग किया जाए. इसी प्रकार फेफड़ों को स्वस्थ बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि उन के प्रत्येक भाग को कार्यशील रखा जाए. इस का एक सरल उपाय है—प्राणायाम. प्रति दिन सुबह गहरी और लंबी सांस ले कर फेफड़ों को वायु से भर लीजिए. कुछ देर सांस रोके रखिए, फिर धीरेधीरे उसे छोड़ दीजिए. दोचार बार ऐसा कीजिए.

यदि आप धूम्रपान करते हैं तो बिना एक दिन की भी देर किए धूम्रपान बंद कर दें. इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है कि धूम्रपान करने वालों को कैंसर अधिक होता है. जब तक आप धूम्रपान बंद नहीं करते, आप के फेफड़े स्वस्थ नहीं हो सकते. यह मत सोचिए कि आप पिछले 20 वर्षों से धूम्रपान कर रहे हैं और अब तक जो हानि होनी थी, वह हो चुकी. आप के शरीर में टूटफूट को ठीक करने की अपार शक्ति है. यदि आज भी आप धूम्रपान बंद कर दें तो आप के फेफड़े अपनी क्षतिपूर्ति कर लेंगे.

हमेशा नाक से सांस लीजिए, खुली हवा में घूमिए, हवादार घर में रहिए और पौष्टिक भोजन कीजिए. तब आप को यह यादरखने की आवश्यकता भी न होगी कि आप के सीने में दो फेफड़े हैं. ●

क्या आप जानते हैं?

● 24 घंटों में आप 21,600 बार सांस लेते हैं.

● आप का दायां फेफड़ा बाएं फेफड़े से बड़ा है.

● आप के फेफड़ों में 7,25,000,000 वायुकोष होते हैं.

● धूम्रपान फेफड़ों के साथ आप का सब से बड़ा अत्याचार है.

● धूम्रपान करने वालों को फेफड़ों का कैंसर अधिक होता है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकांत में

आइए एकांत में बैठें कभी दोचार क्षण,
जिंदगी के दर्द को भूलें कभी दोचार क्षण.
जिंदगी में क्या कमी विष और ज्वाला की,
सुधा चंदन फिर न क्यों घोलें कभी दोचार क्षण.
स्वर्ग की अमराइयों का रस बहुत हम पी चुके,
इस धरातल पर उतर डोलें कभी दोचार क्षण.
चांद की ऊंचाइयों को छू बहुत इतरा रहे,
हम किसी का हृदय भी छू लें कभी दोचार क्षण
हम सभी के सब हमारे मीत हैं, यह ठीक है,
किंतु पहले किसी के हो लें कभी दोचार क्षण.
रीति परिपाटी नियम के दास जीवन भर रहे,
क्यों न हम निर्द्वंद्व हो जी लें कभी दोचार क्षण.
आप का शहनाइयों से जन्म का संबंध है,
बीन टूटे हृदय की सुन लें कभी दोचार क्षण.

—सुधेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहचान

कहानी • अशोकदत्त 'सुमन'

सवेरे से ही घर का वातावरण तनावपूर्ण था. प्रत्येक प्राणी अपनेआप में खामोश था. अभी तक पिताजी का कमरा बंद था. किसी में इतना साहस नहीं था कि द्वार खटखटा दे. उन्होंने खिड़कियां व द्वार बंद कर के परदे डाल दिए थे इसलिए अंदर का दृश्य देख पाना भी संभव न था. माताजी ने कई बार द्वार खटखटाना चाहा, लेकिन सब से छोटे पुत्र अजय ने रोक दिया था. वह जानता था कि पिताजी क्रोध में मुंह फुलाए बैठे हैं, द्वार खोलते ही माताजी पर बरस पड़ेंगे. बच्चे बीच में बोलेंगे तो पासपड़ोस वालों को रोज की भांति फिर तमाशा देखने को मिलेगा.

विजय दिल्ली के एक होटल में 'बार मैनेजर' था. उस की रात की ड्यूटी चल रही थी. सवेरे आठ बजे तक लौट आता था. संजय पिछली रात अपने मामा के यहां रोहतक चला गया था और सब से बड़ा पुत्र, आकाश, बंबई में रहता था. दोनों लड़कियों में से नीना विवाहित थी, रीता दसवीं की छात्रा थी.

माताजी, अजय और रीता सहमे हुए से विजय की प्रतीक्षा में थे. वही पिताजी का सामना कर सकता था. बाहर धुंध इतनी थी कि चारपांच कदमों से आगे दिखाई नहीं देता था. इस बार तो सर्दी भी कड़ाके की पड़ी थी.

रीता व अजय बिस्तरों में घुसे पुस्तकें सामने रखे पड़े थे. माताजी रसोईघर में गैस पर सब्जी चढ़ाती बड़बड़ा रही थीं. कोई भी पिताजी के क्रोध का शिकार होना नहीं चाहता था. विजय की पत्नी मायके गई थी. हो सकता है, वह उसे लिवा लाने करोलबाग चला गया हो.

कमरे के अंदर होती हलचल से स्पष्ट था कि कभी गोदरेज की अलमारी तो कभी ट्रंक खुलते थे. पिताजी अवश्य कुछ हेरफेर कर रहे थे.

अभी छः माह भी नहीं हुए थे पिताजी को रिटायर हुए. प्रथम श्रेणी के गजटेड अफसर थे. रिटायरमेंट के बारे में सुन कर परिवार के हर सदस्य को प्रसन्नता हुई थी. जब तक पिताजी सरकारी अफसर रहे, उन के जीवन में काम ही काम रहा. सवेरे आठ बजे उन का स्कूटर घर से निकलता तो सांझ सातआठ बजे के बाद लौटते. खाना खाने के बाद फिर फाइलों में उलझ जाते जिन्हें वह सदा ही साथ रखते. ठीक दस बजे सो जाते. तब आकाश घर आता, पर पिताजी से अधिक बातें न हो पातीं. दूसरे बच्चे भी स्कूल की फीस, महीने का खर्च लेने ही उन के पास आते या कभीकभार इधरउधर की बात हो जाती, नहीं तो पिताजी तो छुट्टी के दिन भी घर से निकल जाते. उन के पीछे घर में क्या कुछ होता, उन्होंने कभी देखना न चाहा. इस के लिए समय भी नहीं मिलता था. माताजी खुश हुईं, बोलीं, "चलो,

रिटायर होने के बाद पिताजी ने घर में भी आफिस का तनावपूर्ण हो गया और पिताजी बारबार यही सोचने लगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अब तो यह घर बैठा करेंगे."

रीता बोली, "पिताजी, कभी वार्षिक उत्सव पर नहीं आए, अब स्कूल आया करेंगे."

पिताजी जिस रोज अवकाश प्राप्त कर के लौटे, हर्ष के साथ परिवार व पड़ोस में मिठाइयां बांट कर उन का स्वागत किया गया. मित्र व संबंधी बधाइयां देने आते तो पिताजी मन ही मन प्रसन्न होते कि परिवार में उन का कितना मान-सम्मान है. अगले दिन वह लंबी तान कर सोते रहे थे. कहां तो पहले वह सवेरे साढ़े पांच बजे उठ कर बेड टी मांगते थे, और कहां साढ़े आठ बजे तक बिस्तर भी नहीं छोड़ा था. माताजी ने उठाना चाहा तो बोले, "अब तो सारी उमर सो कर काटनी है. तीन बेटे कमाते हैं. पेंशन में भी 400 रुपए मिलेंगे."

"तब तो आप आलसी हो जाएंगे," माताजी ने कहा.

"जो चाहो कहो. उमर भर कलम घिसाई की है. कोल्हू के बैल की तरह घर से दफ्तर और दफ्तर से घर तक के चक्कर लगाता रहा हूं. अब इन बूढ़ी हड्डियों को आराम दूंगा."

सुबह पिता जी चाय पी कर टहलने लगे. रीता स्कूल जा चुकी थी. आकाश भी दफ्तर चला गया था. विजय का कुछ पता नहीं था. वह बता कर नहीं गया था. संजय भी घर पर नहीं था. बस, अजय, माया, विजय की पत्नी शीला ही थीं.

"सीता, सुबहसुबह बच्चे कहां गए?"

"अपनेअपने काम पर," माताजी रसोईघर में से बोलीं.

"और शीला?"

"कपड़े धो रही है," माताजी रोटियां बेलती हुई बोलीं.

पिताजी के कदम बच्चों के कमरों की ओर बढ़े. उन्हें इतना भी स्मरण नहीं था कि कितने अंतराल के बाद इस ओर आ रहे थे. अजय कुरसी पर बैठा किसी पत्रिका के पन्ने उलट रहा था. पिताजी पर उड़ती दृष्टि डाल फिर पत्रिका में खो गया. यह पिताजी को अच्छा न लगा.

"क्या यही तहजीब है?" वह क्रोध में बोले. "मुझे पास खड़ा देख कर भी तुम कुरसी से नहीं उठे. क्या तुम यही बड़ों का मानसम्मान करना जानते हो!"

अजय उठ खड़ा हुआ और अपलक पिताजी को देखने लगा. पिताजी ने पत्रिका ले ली, "यह पढ़ाई हो रही है! कौन लाता है ऐसी पत्रिकाएं?"

"आकाश भैया. उन की कहानी प्रकाशित हुई है."

"आकाश...उसे काम ही क्या है? दिन भर अखबार वालों के पीछे आवारा-गरदी करता है," उन्होंने मुंह बिचका लिया. "आने दो, उस से भी पूछ लूंगा, आइंदा ऐसी किताबें मैं नहीं देखना चाहता."

पिताजी ने बढ़ कर अलमारी खोली, जिस में पड़ी पत्रिकाओं को उलटनेपलटने लगे. वह एकाएक गरज उठे, "जा, मां को बुला कर ला."

"क्या बात है? क्यों सुबहसुबह अजय पर बिगड़ रहे हो?" मां ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा.

"क्या कबाड़ इकट्ठा कर रखा है! इन में से एक भी पुस्तक काम की है?"

"यह आकाश की किताबें हैं," माताजी ने कहा, "उस की प्रकाशित कहानियां."

पिताजी ने सारी किताबें फर्श पर पटकनी आरंभ कर दीं. अजय स्तब्ध खड़ा रहा. माताजी मना करती रहीं. सारी रद्दी अजय से इकट्ठी करवाई और बेच डाली. पिता जी बड़बड़ाते रहे, "कभी मेरा दफ्तर तुम देखतीं, कितनी सफाई वहां रहती थी. कहीं भी फालतू कागज

'डिसिप्लिन' लागू करना चाहा तो घर का वातावरण कि शायद वह इस घर के लिए बोझ बन गए हैं...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नहीं मिलता था, और यहां ढेर लगा रखा है. तुम्हें तो घर की सफाई से कुछ लेनादेना नहीं, पर निश्चित रहो, मैं घर को ठीक कर दूंगा...और वह शीला, उसे भी अक्ल नहीं है. यदि अक्ल रही भी होगी तो तुम ने चाट ली होगी."

"पिताजी, आप क्यों भाभी के सामने माताजी का अपमान कर रहे हैं?" अजय बोल उठा.

"ज्यादा टरटर मत कर," पिताजी की भवें तन गईं. "घर भूतों का निवास बना रखा है."

अजय वहां से चला गया. पिताजी के जो मुंह में आता, माताजी को सुनाते गए, "आज मेरा पहला दिन है, मैं रिटायर हुआ हूं, पर मेरे बच्चों को इतनी भी अक्ल नहीं है कि आज तो घर से बाहर न निकलें, मेरे पास बैठें. पर सब मेरी आंख खुलने से पहले ही दफा हो गए."

पिताजी यों तो पहले भी क्रोध में आते थे, बहुत कुछ बोलते भी थे, पर शांत भी जल्दी हो जाते थे. पर उस दिन तो जैसे उन्होंने घर को हिला डालने का बीड़ा उठा लिया था. माताजी रुआंसी हो गईं और रसोई में आ गईं. शीला कपड़े धो कर सहमी सी कमरे साफ करने लगी और उस के सिर पर खड़े पिताजी कह रहे थे, "इस सोफे के पीछे धूल की परतें जमी हैं. छत पर लटके मकड़ी के जाले और शीशे कभी साफ किए हैं? कालीन की मिट्टी झाड़ कर आ..."

मस्तक झुकाए शीला कमरे साफ करती रही. वह जहांजहां जाती, पिताजी पीछे हो लेते और की हुई सफाई में त्रुटियां दिखाते रहते.

शीला बोली, "पिताजी, आप चल कर आराम करें. मैं सारा घर चमका देती हूं."

"क्या खाक चमकाओगी! डेढ़ वर्ष से यहां हो, कितनी गंदगी इकट्ठी हो गई है."

पिताजी पहली बार शीला से इस ढंग से पेश आए थे. वह आश्चर्यचकित थी. कमरे में धूल उड़ रही थी. वह बोल उठी, "पिताजी, मैं आप को शिकायत का मौका नहीं दूंगी. कमरे से बाहर चलें. धूल उड़ रही है, आप को सांस चढ़ जाएगी."

"अच्छा, तो मेरा समीप ठहरना भी बुरा लगता है," वह तुनक कर बोले. "यह मेरा घर है और मुझे ही यहां से चले जाने को कहा जा रहा है."

"नहीं, पिताजी, मुझे भय है, आप की तबीयत खराब न हो जाए." उस का चेहरा दयनीय बन गया.

"हां, तुम तो चाहोगी ही कि मैं बीमार हो जाऊं." वह क्रोधवश पांव पटकते चले गए और शीला ठगी सी खड़ी अपने ससुर को देखती रह गई.

उस ने गलत नहीं कहा था. पिताजी को धूल भरी हवा में रहने से सांस चढ़ने लगती थी. ब्लड प्रेशर के मरीज थे वह. अधिक सर्दी भी उन पर आक्रमण कर

"अच्छा, तो मेरा समीप ठहरना भी बुरा लगता है! यह मेरा घर है और मुझे ही यहां से चले जाने को कहा जा रहा है," पिताजी तुनक कर बोले तो सब उन का मुंह देखते रह गए.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देती थी, मगर वह गलत अर्थ लगा गए थे.

"शीला, इन की यही आदत है. बुरा मत मानना," माताजी द्वार पर खड़ी स्नेहसिक्त स्वर में बोलीं.

पिताजी क्रोध में भरे बिस्तर पर जा लेटे. कुछ देर बाद बेचैनी अनुभव होने लगी. फिर बिस्तर छोड़ कमरों में चक्कर लगाने लगे. कभी कोई ट्रंक खोल लेते, तो कभी किसी अलमारी की वस्तुओं को उलटनेपलटने लगते.

दिन का खाना ले कर शीला जब उपस्थित हुई तो बोले, "तेरी मां कहां है?"

"पड़ोस में गई हैं धूप सेंकने."

"धूप सेंकने!" पिताजी की भवें तन गईं. "उसे मेरी तनिक भी परवा नहीं. जा, उसे बुला कर ला."

पिताजी ने खाना एक ओर सरका दिया और व्यग्रता से सीता की प्रतीक्षा करने लगे.

माताजी के लौटते ही वह बरस पड़े, "मैं घर में अकेला बैठा मक्खियां मार रहा हूं और तुम पड़ोस में जा बैठी हो. क्या तुम ने मुझे नौकर समझ रखा है, जो घर की निगरानी करूं?"

"दो घड़ी धूप में क्या जा बैठी कि तुम ने घर को सिर पर उठा लिया है," वह बोलीं, "तुम जा कर कहीं घूमफिर आओ घंटा, दो घंटा..."

"मैं जिंदगी भर तो घूमता ही रहा हूं. अब आराम करने का वक्त है," वह बोले, "तुम भी घर में बैठा करो."

"क्यों? क्या मेरा दिल नहीं करता कि मैं दो घड़ी औरतों में बैठ कर..."

"ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं है," वह बोले, "मुझे यह बात पसंद नहीं है."

"मगर यहां तो सदा से यही होता आया है."

"मैं यह नियम बदल दूंगा," पिताजी ने दृढ़ता से कहा तो माताजी की आंखें छलछला आईं. वह आरंभ से ही बहुत कोमल हृदय की थीं और किसी का भी ऊंचा स्वर वह नहीं सहन कर पाती थीं.

माताजी चाह कर भी घर से बाहर न जा सकीं. पिताजी भोजन से निबट कर सो गए.

चार बजे उठे तो रीता स्कूल से लौट आई थी. अब उस की बारी थी. वह पुस्तकें रख कर लेटी ही थी कि माताजी चाय बना कर ले आईं. पिताजी की नजर पड़ गई. उन्हें चाय नहीं दी गई थी क्योंकि वह शुरू से ही चाय कम पीते थे.

"दिन में चाय कितनी बार बनती है? सुबह से दस बार तो मैं देख चुका हूं. चीनी पांच रुपए किलो हो रही है. क्यों घर का बेड़ा गरक करने पर तुली हो तुम!"

रीता को चाय तो पीने दी उन्होंने, पर लंबाचौड़ा भाषण भी सुना दिया. वह भी हैरान थी कि पिताजी कैसी बातें कर रहे थे. वह आंखों में आंसू लिए बिस्तर पर लेटी रही. पिताजी शायद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ़ १ पैसे में १ साड़ी या ३ कमीजें हिम जैसी सफेद बनाने के लिए-

मॅक्सिम*

सभी कपड़ों के लिए
असरदार व्हाइटनर

कितना किफायती!

किसी भी कपड़े में नये कपड़े की सफेदी के लिए मॅक्सिम की औसतन एक बूंद काफी है और जानती हैं, मॅक्सिम की हर एक शीशी में लगभग १२०० बूंदें होती हैं! मतलब यह कि मॅक्सिम सबसे किफायती, तीव्र, नीला, तरल व्हाइटनर है। खास ड्रॉपर वाली प्लास्टिक शीशी इसे और भी किफायती बना देती है। क्योंकि ड्रॉपर की वजह से एक बूंद भी जरूरत से ज्यादा नहीं गिरने पाती। इस तरह बचत की बचत और न ही कपड़े नीले होने पाते।

'टेरीन'	✓
'टेरीन'/कॉटन	✓
नायलॉन	✓
रेशमी	✓
ऊनी	✓
सूती	✓

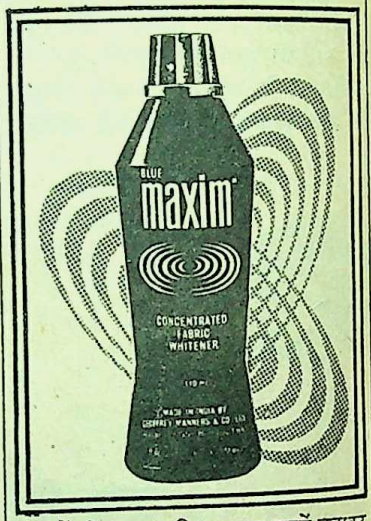

सभी तरह के कपड़ों के लिए

मॅक्सिम को आप सभी तरह के कपड़ों के लिए इस्तेमाल कर सकती हैं। 'टेरीन', 'टेरीन'/कॉटन, नायलॉन, ऊनी, रेशमी व सूती सभी तरह के वस्त्रों को मॅक्सिम इतना सफेद बना देता है कि वे एकदम नये नजर आते हैं। फिर कपड़ों पर मॅक्सिम के धब्बे भी नहीं पड़ते।

इस्तेमाल का तरीका एकदम आसान

मॅक्सिम को आप एकदम आसानी से इस्तेमाल कर सकती हैं। पहले कपड़ों को साबुन या डिटरजण्ट से साफ धोकर अच्छी तरह खंगालिए। फिर बाल्टी भर (५ लिटर) साफ पानी में १०-१५ बूंदें मॅक्सिम मिलाइए। (कपड़े ज्यादा पीले पड़ गये हों तो मॅक्सिम की कुछ बूंदें बढ़ा दीजिये।) फिर कपड़ों को १०-१५ मिनट तक इसमें डुबाकर रखिए। दोबारा खंगालिए नहीं। बस सूखने के लिए टांग दीजिये।

मॅक्सिम एक एक पैसे की कीमत अदा करता है।

GMM-23 HIN

*Regd. T.M. Geoffrey Manners & Co., Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उसे देख रहे थे. फिर कमरे में आ गए, "यह आंसू मुझे मत दिखा. किताबें निकाल कर पढ़. मेरे पास फालतू पैसे नहीं हैं कि तेरी फीस भरता रहूं. अगर फेल हो गई तो स्कूल छुड़वा दूंगा."

उस रोज घर के हर प्राणी की जैसे शामत आ गई थी.

आकाश लौटा तो उसे कह दिया गया कि अब घर में पुस्तकें व पत्रिकाएं नहीं आनी चाहिए. वह थोड़ा गरम स्वभाव का था. अतः पिताजी के सामने बोल पड़ा. उस की प्रकाशित तमाम रचनाएं उन्होंने बेच डाली थीं, जिन्हें उस ने बड़े ही प्यार से संभाल कर रखा था.

यों भी पिताजी और आकाश के नक्षत्र नहीं मिलते थे.

आकाश का विवाह तीन वर्ष पूर्व हुआ था, लेकिन आपसी अविश्वास के कारण आकाश व सोना में दूरियां पैदा हो गई थीं. सोना अपनी मां और जीजा के साथ आकाश की अनुपस्थिति में सारे आभूषण व वस्त्रादि ले कर मायके चली गई थी.

पिताजी ने बड़े ही चाव व हसरत से विवाह किया था. पहला अवसर था इसलिए बिरादरी व समाज में नाक ऊंची रखने के लिए उन्होंने जी खोल कर रुपया खर्च किया था. लेकिन दोनों का घर न बस पाया था, जिस का उन्हें खेद था. खेद तो आकाश को भी था.

इसी लिए उस ने कई बार सोना को वापस लौट आने को लिखा था, लेकिन वह लौटी नहीं थी, बल्कि दूरियां बढ़ती ही गई थीं और अब स्थिति यह थी कि आकाश का मन भी सोना से दूर हो चुका था. वह अकसर पिताजी के साथ इस बात पर उलझ जाता था.

जब आकाश को दिन भर का ब्योरा ज्ञात हुआ तो उस ने शांत रहना ही ठीक समझा. वह जानता था कि पिताजी का ऐसा स्वभाव एक तो बीमारी की वजह से है, दूसरे, घर में ही नहीं, दफ्तर में भी वह ऐसा ही किया करते थे. विजय और संजय को भी उस ने समझा दिया कि वे शांत रहें.

ज्यों-ज्यों दिन बीतने लगे, पिताजी घर की दशा से वाकिफ होते गए. आकाश, विजय और संजय अपने काम में मस्त रहते. पिताजी जो कुछ भी कहते, एक कान से सुन कर दूसरे से निकाल देते. कुछ भी पिताजी कहते, उस की हां में हां मिलाते, लेकिन करते अपनी मरजी की.

इस पर भी कभीकभार घर का वातावरण दूषित हो ही जाता. पिताजी दिन में कोई न कोई ऐसी बात कह ही देते, जिस से माताजी रो पड़तीं.

आसपड़ोस वालों के लिए यह एक मनोरंजन का साधन था. पिताजी जब क्रोध में बोलते तो पूरे जोश और ऊंचे स्वर में बोलते. इस पर भी माताजी ने दोपहर के समय पड़ोस में जाना न छोड़ा. पिताजी को हर रोज कमरे में सोफासेट और शीशों पर धूल जमी मिलती. अलमारी में फिर से पुस्तकों व पत्रिकाओं का ढेर लग रहा था. घर में चाय कई बार बनती. पिताजी के मना करने के बावजूद कपड़े धोबी को दिए जाते.

उस दिन की घटना से तो पिताजी का क्रोध सातवें आसमान पर जा पहुंचा. आकाश, विजय और संजय काम पर गए थे. रीता स्कूल गई थी. अजय दोस्तों के साथ घूमने गया था. शीला कमरे में लेटी कोई पत्रिका पढ़ रही थी और माताजी बरतन मल रही थीं. पिताजी ने बरतन मलने वाली नौकरानी को हटा दिया था.

तभी विजय आया. पिताजी पुस्तक पढ़ने में तल्लीन थे. विजय को एक नजर देखा, पर ऐसी मुद्रा बना ली जैसे कि उसे देखा ही नहीं हो. विजय सीधा शीला के पास पहुंचा. वह सिनेमा की टिकट लाया था. उसे तैयार किया और माताजी को बताता हुआ निकल गया.

माताजी भी काम से फारिग हो कर धूप सेंकने चली गईं और पिताजी घर में अकेले रह गए थे. (शेष अगले अंक में)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुन्ने, कल से तुम स्कूल नहीं जाओगे, समझे ?

लेकिन तुम तो कहती थीं कि तुम्हारा मुन्ना पढ़लिख कर इंजीनियर या डाक्टर बनेगा.

अरी छोड़ बहन, कई इंजीनियर और डाक्टर सड़कों पर मारेमारे फिरते हैं. मैं तो अपने मुन्ने को उन से भी बड़ा आदमी बनाऊंगी.

लेकिन बिना किसी क्वालिफिकेशन के वह क्या बनेगा ?

बालयोगेश्वर !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाना बने ऐसा मज़ेदार, आपके पति इसे चाहें बारबार

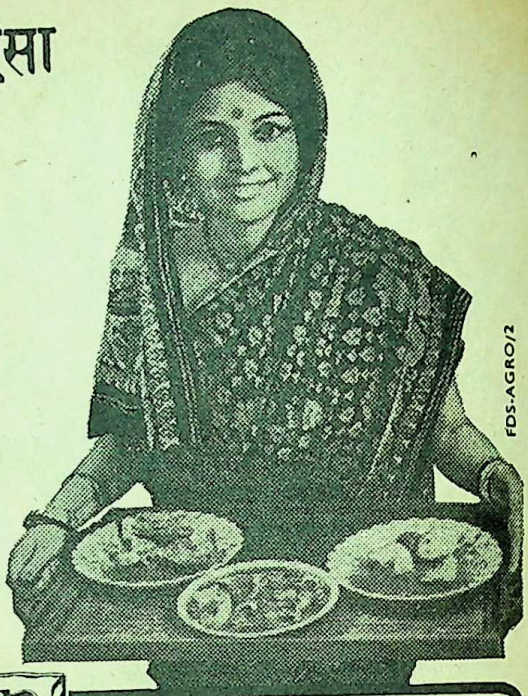

कारण : ★ विशुद्ध और स्वादिष्ट ऐग्रो मसाले के दाने-दाने में है विशुद्धता !

★ ऐग्रो मसाले हर रुचि के अनुकूल है !

★ लार-टपकाने वाली ऐग्रो मसाले की भीनी सुवास !

★ ऐग्रो बनाते हैं हर किस्म के मसाले !

★ हाथ से चुने उत्कृष्ट साबुत मसालों से तैयार किये जाते हैं ऐग्रो मसाले !

यदि सम्भव होता तो दादी अम्मा भी ऐग्रो मसाले ही इस्तेमाल करतीं !

यू० पी० स्टेट ऐग्रो इण्डस्ट्रियल कार्पोरेशन लि० (पि०एफ०डि०)

२२, विधान सभा मार्ग, लखनऊ (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य • गोविंद शर्मा

कच्चातीवू से कश्मीर तक

जब शुरू से हम मार खाते रहे तो अब अपनी उस आदत को कैसे छोड़ दें?

सदस्य : कच्चातीवू श्रीलंका को क्यों दे दिया?

मंत्री : आप जानते ही हैं कि हम कितने परंपराप्रिय हैं. स्वतंत्रता के बाद जबजब भी हम ने किसी देश से सीमा संबंधी बातचीत की है, मार ही खाई है. कच्छ का रन हो या बंगाल का बेरूबाड़ी, हम ने भूदान की परंपरा कायम रखी है.

सदस्य : क्या कच्चातीवू भारत का नहीं था? यदि था तो आप क्यों हार बैठे? नहीं था तो समस्या क्यों खड़ी की गई?

मंत्री : हम ने जब कच्चातीवू पर अपने अधिकार की घोषणा की थी, तब तमिलनाडु में हमारी पार्टी का राज्य था. अब वहां कोई और विरोधी दल सत्तारूढ़ है. भला दूसरों के लिए हम क्यों लड़ें?

सदस्य : महोदय, मैं आप के उत्तर से संतुष्ट नहीं हूं.

मंत्री : आज हरियाणा और पंजाब में हमारे दल की सरकारें हैं. हम चंडीगढ़ और अबोहरफाजिल्का के विवाद को उठने नहीं दे रहे हैं और यथास्थिति बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील हैं. इन दोनों प्रदेशों में या किसी एक प्रदेश में अन्य दल की सरकार बनने दो, फिर देखना, इन मुद्दों पर कैसे लड़वाते और लड़ते हैं.

सदस्य : विरोधी दल के कुछ सदस्यों ने कच्चातीवू के भारतीय होने के बारे में कुछ ठोस सबूत दिए थे. क्या उन में दम नहीं था?

मंत्री : कहते हैं, कच्चातीवू रामनद स्टेट के राजा के अधिकार में था. ऐसे सबूत हम नहीं मानते. हम समाजवादी साम्राज्यवादियों के अधिकारों को महत्त्व नहीं देते. कच्चातीवू लंका को देने का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कारण था. उत्तर-दक्षिण में भावात्मक एकता पैदा करने के लिए ऐसा किया गया है. पहले हम ने मतदाताशून्य क्षेत्र अक्साईचिन चीन को दिया था और अब वैसा ही क्षेत्र दक्षिण में श्रीलंका को. यह परंपरामूलक एकता है.

सदस्य : भुट्टो बंगला देश गए और खाली हाथ लौट आए, लेकिन आप के यहां जब भी आए कुछ न कुछ ले कर गए. ऐसा क्यों?

मंत्री : इस में भी हमारी गलती है क्या? यह तो भुट्टो की कमजोरी है, जो वह बंगला देश से खाली हाथ लौट आए.

सदस्य : राष्ट्रपति श्री गिरि ने कभी कहा था कि जमाखोरों और मिलावटियों को चौराहे पर फांसी दी जानी चाहिए.

संसद में प्रति दिन 12 बजे आधे घंटे के लिए ऐसा समय होता है, जब बिना नोटिस दिए मंत्रियों से प्रश्न पूछे जा सकते हैं. इसे 'जीरो आवर' या 'शून्यकाल' कहा जाता है. इस स्तंभ में कुछ ऐसे प्रश्न प्रस्तुत हैं जो संसद में पूछे नहीं गए, परंतु पूछे जाने चाहिए थे. उन के संभावित उत्तर भी साथ दिए गए हैं—उत्तर जो दिए जाने चाहिए थे, पर दिए नहीं गए.

—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवरेडी न्युलाइट—

—जगमगाती रोशनी में चलिये

सुदृढ़ बनावट, सुन्दर रूप
और अत्यधिक टिकाऊ

UNION CARBIDE

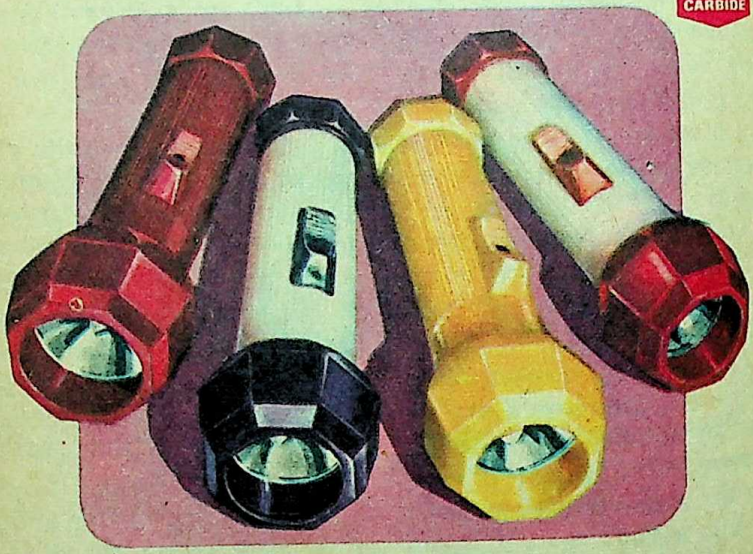

UC 7906A

एवरेडी —हमेशा ही सबसे आगे और लाजवाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज तक कितनों को फांसी दी गई?

मंत्री : लगता है, आप आकाशवाणी नहीं सुनते. एक दूधिए को चार किलो दूध में पांच सौ ग्राम पानी मिलाने पर पकड़ा गया और उसे पांच वर्ष की कड़ी कैद की सजा दी गई. एक परचूनिए की दुकान से साढ़े सात किलो वनस्पति बरामद किया गया और उस का मुंह काला कर के उसे सारे शहर में घुमाया गया.

सदस्य : सवाल फांसी देने का था. सुना है, एक व्यापारी के गोदाम से 5,000 बोरियां सीमेंट की बरामद की गईं. उस में भी मिलावटी सीमेंट की मात्रा अधिक थी. उस को दिया गया दंड आकाशवाणी से क्यों नहीं प्रसारित किया गया?

मंत्री : हम अभी ऐसा करने की सोच ही रहे थे कि व्यापारी ने हमें जन-कल्याण के लिए लाखों रुपए का गुप्तदान दे दिया. इस से फांसी व्यापारी के गले में न पड़ कर आकाशवाणी के गले में पड़ गई.

सदस्य : राष्ट्रपति महोदय काफी समय से जनता की कठिनाइयों का जिक्र अपने भाषणों में करते आ रहे हैं. क्या आप ने उन पर ध्यान दिया?

मंत्री : दिया. तभी तो उन्हें जनता के नजदीक ही रखने की सोची है.

सदस्य : राष्ट्रपति पद के लिए आप के द्वारा श्री अहमद का नामांकन किया गया है. क्या इस में सांप्रदायिकता की बू नहीं है?

मंत्री : नहीं. इस में तो हमारे उच्च आदर्शों की खुशबू है. हमारे दल के वह वफादार सदस्य रहे हैं. वह अल्प-संख्यक समुदाय के सदस्य भी हैं. इस से अल्पसंख्यकों के संदेह दूर करने में बड़ी सहायता मिलेगी.

सदस्य : क्या भारत में केवल मुसलमान ही अल्पसंख्यक हैं?

मंत्री : ये भारत के बहुसंख्यक अल्पसंख्यक हैं. इन्हीं के पास ज्यादा वोट हैं और इन के ही दिमाग में हमारे प्रति ज्यादा शक हैं. दूसरे अल्पसंख्यकों के संदेहों को कोई गरम हवा देने वाला नहीं है, जब कि इन के लिए पड़ोस में ही एक मैट्ठी है.

सदस्य : आप के परमाणु विस्फोट करने पर सारी दुनिया चिल्ला क्यों रही है?

मंत्री : समझ में नहीं आया, जब कि हमारे यहां रोज महंगाई और अभाव के विस्फोट होते रहते हैं और उन की रेडियोधर्मिता जनता को पीड़ित करती रहती है, तब भी किसी देश ने इस की आलोचना नहीं की.

सदस्य : लगता है, दुनिया हमारे इन परीक्षण विस्फोटों की आदी हो गई है.

मंत्री : आप ठीक कहते हैं. एक हमारी जनता है कि महंगाई और अभाव ढोते हुए उसे सत्ताइस वर्ष हो गए हैं तो भी अभ्यस्त नहीं हुई, सदैव महंगाई का रोना रोती रहती है.

सदस्य : आप ने शराब की बोतलों पर 'हानिकारक,' 'जहर' आदि के लेबल लगवाने का आदेश दिया है. क्या इस से शराब कम बिकेगी?

मंत्री : शायद नहीं. लेकिन 'नशा-बंदीनशाबंदी' और 'स्वास्थ्यस्वास्थ्य' चिल्लाने वालों को ठिकाने लगाने के लिए कुछ तो करना ही पड़ता है. शराब विक्रेता निश्चित रहें. पिछले सत्ताइस सालों से अखबार हम पर भ्रष्टाचारी, बेईमान, पदलोलुप होने के लेबल चिपका रहे हैं. इस से हमारी कीमत जरा भी नहीं गिरी है. फिर शराब भला कम क्यों बिकेगी?

सदस्य : आजकल सभी मुख्य मंत्री बढ़चढ़ कर श्री जयप्रकाशनारायण की आलोचना करने में क्यों लगे हुए हैं?

मंत्री : एक कारण तो यह है कि बिहार जैसा आंदोलन उन के प्रदेश में न होने लग जाए. दूसरा यह है कि उन की आलोचना करने से वे सीधे केंद्रीय नेताओं की नजरों में चढ़ जाएंगे. प्रायः सभी की इज्जत उन के प्रदेश में मिट्टी में मिल रही है, गुटबंदियां सिर उठा रही हैं. यदि कभी प्रदेश से निकाले गए तो केंद्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

में शरण पाने के लिए अभी से की गई जीहुजूरी उन के काम आएगी.

सदस्य : मुद्राप्रसार रोकने के लिए आप क्या करने जा रहे हैं?

मंत्री : अभी तो हम इसे रोकने की सोच ही रहे हैं. वैसे एक सुझाव विचाराधीन है, जिसे हम कार्य रूप देने जा रहे हैं. वह है मर्ज को हद से गुजार देना. इतने नोट छापें कि सारा कागज खत्म हो जाए, मशीनें घिस जाएं तथा नए नोट छापने में हम बिलकुल असमर्थ हो जाएं. फिर अपनेआप मुद्राप्रसार रुक जाएगा.

सदस्य : कशमीर में सन '52 की स्थिति लाने के लिए आप शेख अब्दुल्ला से बातचीत कर रहे हैं. यदि वही स्थिति लानी थी तो उसे मिटाने के लिए अरबों रुपए भारत की गरीब जनता का पेट काट कर कशमीर में क्या फूंक गए?

मंत्री : बातचीत तो शेख साहब से हो रही है मारे कशमीर से नहीं. जनता का रुपया लगवाने के लिए कोई और शेख खड़ा हो जाएगा. पूर्वाभ्यास आरंभ हो गए हैं.

सदस्य : निस्संदेह, बातचीत में आप शेख साहब से मार खा जाएंगे. वह गद्दीनशीन होते ही आप के वर्तमान भक्तों को एकएक कर के निकाल फेंकेंगे. इन शरणार्थियों के लिए आप ने कुछ सोचा है?

मंत्री : जी, हां. कई देशों में राजदूत का पद खाली है. कुछ को वहां चिपका देंगे. बहुतों ने तो गत वर्षों में हमारे सहयोग से इतना कुछ बना लिया है कि अब उन्हें सिवा आराम के, किसी चीज की जरूरत नहीं होगी. •

बढ़ती महँगाई के इस दौर में भी आप अपने निजी पुस्तकालय को श्रेष्ठतम कृतियों से सजा सकते हैं

आलोचना-पुस्तक परिवार

चर्चित कृतियाँ • मूल आकार-प्रकार में असंक्षिप्त
पेपरबैक संस्करण • लागत-मात्र मूल्य

कम से कम 10 रुपए के आदेश पर डाक व्यय निःशुल्क
अब तक पेपरबैक संस्करण में 50 पुस्तकें घोषित हो चुकी हैं.
हर महीने चार पुस्तकों का नया सेट!

आज ही 3 रुपए शुल्क भेज कर सदस्य बनिए और पूर्ण विवरण के लिए लिखिए :

व्यवस्थापक,
आलोचना पुस्तक परिवार,
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,
8 नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली-110006.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब! हेराल्डवेर की मदद से अपने रसोईघर को सजाइये और आधुनिक सुविधाओं का आनंद उठाइये।

पकाने के और परोसने के लिये भी काम आने वाले इन बर्तनों के उपयोग से आप गर्व अनुभव करेंगे।

* हेराल्डवेर शानदार दिखते हैं, चाहे वे रसोई घर में हों अथवा खाने की मेज़ पर। आधुनिक गृहणियों के लिये ये बर्तन आदर्श हैं।* हेराल्डवेर बर्तन सुन्दर और मज़बूत होते हैं। इनकी चमक वर्षों तक कायम रहती है, जिससे ये नये से दिखते हैं। ये मोटे गेज के शुद्ध अल्युमिनियम से बनाये जाते हैं।

* हेराल्डवेर बर्तन का तला अधिक मोटा तथा धारीदार होता है। जिससे उसमें गर्मी ठीक तरह से फैलती है और अधिक देर तक कायम रहती है।* हेराल्डवेर के ढक्कनों का उपयोग ज़रूरत पड़ने पर स्टॅन्ड के रूप में किया जा सकता है। जिससे आपकी टेबल पर दाग़ भी नहीं पड़ते।

* हेराल्डवेर श्रेणी में: फ्राइंग पान • सॉस पान • केसेरोल्स केतली आदि भिन्न-भिन्न साइज़ों में मिलते हैं।

किसी भी शुभ अवसर पर देने योग्य आदर्श भेंट

IS:21 SIC * स्तर के अल्युमिनियम से बना हुआ।

निर्माता और विक्रेता:
लल्लूभाई अमीचंद प्रा. लि.
२२५-२७ जे. दादाजी, बम्बई-४०० ००७.

अधिक विवरण के लिए अपने हेराल्डवेर वितरक से मिलिये अथवा हेराल्डवेर पत्रिका मंगाइये। दिल्ली, हरयाना, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू और कश्मीर के क्षेत्रीय वितरक: **जानकीदास एण्ड कम्पनी**, डिपार्टमेंट स्टोर्स, २३/एफ, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली ११०००१ ● पश्चिम बंगाल, बिहार और उड़ीसा के क्षेत्रीय वितरक: **यू एम् बी सेल्स एण्ड सर्विस**, २४, आर. एन. मुखर्जी रोड, कलकत्ता ७०० ००१.

Ratan Batra/LA/HN/04-A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

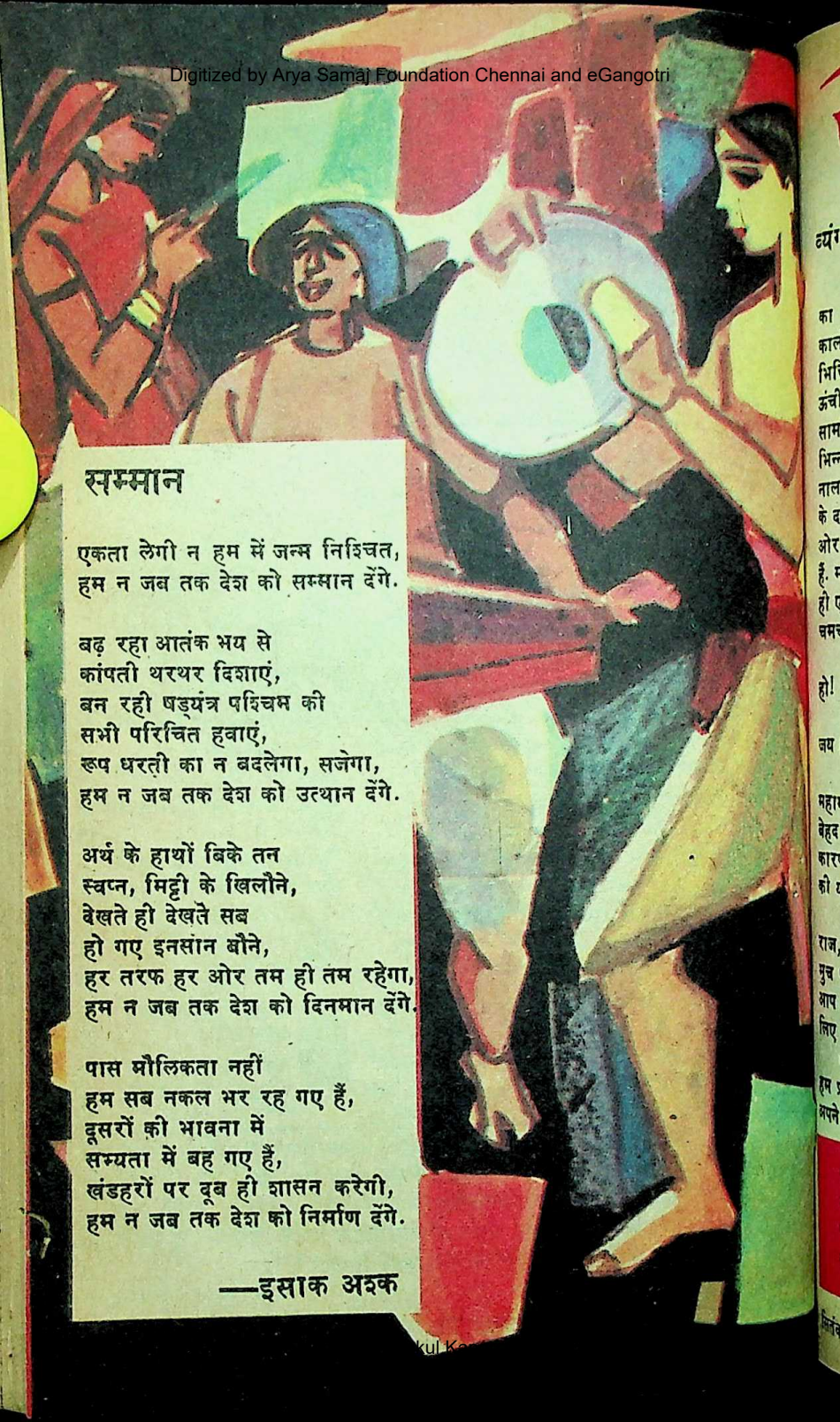

सम्मान

एकता लेगी न हम में जन्म निश्चित,
हम न जब तक देश को सम्मान देंगे.

बढ़ रहा आतंक भय से
कांपती थरथर दिशाएं,
बन रही षड्यंत्र पश्चिम की
सभी परिचित हवाएं,
रूप धरती का न बदलेगा, सजेगा,
हम न जब तक देश को उत्थान देंगे.

अर्थ के हाथों बिके तन
स्वप्न, मिट्टी के खिलौने,
देखते ही देखते सब
हो गए इनसान बौने,
हर तरफ हर ओर तम ही तम रहेगा,
हम न जब तक देश को दिनमान देंगे.

पास मौलिकता नहीं
हम सब नकल भर रह गए हैं,
दूसरों की भावना में
सभ्यता में बह गए हैं,
खंडहरों पर दूब ही शासन करेगी,
हम न जब तक देश को निर्माण देंगे.

—इसाक अश्क

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाजवाद की खोज

व्यंग्य एकांकी • कुसुम गुप्ता

जिस के लिए दरबारियों को दरदर की खाक छाननी पड़ी, उसे योजनाप्रसादजी ने अपनी जेब से निकाल कर लोगों को आश्चर्य में डाल दिया...

(स्थान : महाराजाधिराज प्रियदर्शी का गुप्त मंत्रणाकक्ष. फर्श पर कीमती कालीन बिछा है. दीवारों पर दुर्लभ भित्तिचित्र टंगे हैं. महाराज प्रियदर्शी ऊंची कुरसी पर विराजमान हैं. उन के सामने काली मेज है, जिस पर चार भिन्नभिन्न रंगों के फोन रखे हैं. घोड़े की नाल के रूप में पांच कुरसियां महाराज के दाहिनी ओर और पांच कुरसियां बाईं ओर पड़ी हैं, जिन पर दस सभासद बैठे हैं. महाराज की कुरसी के बिलकुल समीप ही एक और कुरसी है, जिस पर महामंत्री चमचाजी विराजमान हैं.)

महामंत्री : महाराजाधिराज की जय हो!

सब सभासद (समवेत स्वर में) : जय हो!

महाराज (चिंतित स्वर में) : हमारे महामंत्रीजी और माननीय सभासदो, हम बेहद उदास और परेशान हैं और इसी कारण हम ने अपने विश्वस्त सभासदों की यह गुप्त बैठक बुलाई है.

महामंत्री (हाथ जोड़ कर) : महाराज, हम लोग देख रहे हैं कि आप सचमुच परेशान हैं. कृपया आज्ञा दीजिए, आप की प्रसन्नता और सुखसमृद्धि के लिए हम क्या योगदान दे सकते हैं?

सभासद (एक साथ) : हां, महाराज, हम प्रस्तुत हैं. हम आप के एक संकेत पर अपने प्राणों का बलिदान कर सकते हैं.

पात्र परिचय :
महाराज प्रियदर्शी
चमचाजी : महामंत्री
दस सभासद आदि

महामंत्री : यदि हमारे महाराज परेशान हों तो हमारी जिंदगी को धिक्कार है.

एक सभासद (खड़े हो, हाथ जोड़ कर, विनम्र स्वर में) : महाराज, आप अपनी चिंता का कारण बताइए. हम उसे दूर करने का पूरा यत्न करेंगे.

दूसरा सभासद (खड़े हो, हाथ जोड़ कर, विनम्र स्वर में) : महाराज, चिंता मत करें. आप हम पर विश्वास कर सकते हैं.

महाराज : मेरे प्यारे सभासदो, यह दरबार नहीं है इसलिए औपचारिकता निभाने की कोई आवश्यकता नहीं है. आप लोग बैठ कर ही वार्तालाप करें.

(समवेत स्वर में महाराज की जयजयकार करते हैं.)

महाराज : मेरे प्यारे सभासदो, यह तो आप लोगों को पता ही है कि जब से हम गद्दी पर बैठे हैं, तब से हम ने अपनी प्रजा की भलाई के लिए जो कुछ किया, वह अद्वितीय है. हम ने कलकारखाने लगा कर प्रजा की आर्थिक उन्नति की, बांध बना कर उपज बढ़ाई, बिजली को गांव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गांव पहुंचाया, बाहर के देशों से कर्ज लेले कर नाना प्रकार की योजनाएं आज तक कोई राजा ऐसा कर सका है?

सभी सभासद (एक स्वर में) : नहीं, महाराज. आप की इन कोशिशों के कारण ही आज देश में समृद्धि है, प्रजा खुश है और चारों तरफ घीदूध की नदियां बह रही हैं. महाराज, देश के चारों कोनों में आप की जयजयकार हो रही है.

महामंत्री (परेशानी से) : महाराज, जब प्रजा सुखी है तो आप क्यों उदास और परेशान हैं?

महाराज : उसी को स्पष्ट करने के लिए हम ने यह गुप्त बैठक बुलाई है.

एक सभासद : महाराज, आप हमें शीघ्र ही बताइए ...

महाराज : महामंत्रीजी तथा मेरे प्यारे सभासदो, हम से एक छोटी सी गलती हो गई, जिस के लिए आज भी हमें खेद है. हमें वह वादा नहीं करना चाहिए था...

सब सभासद (उत्सकुता से) : कैसा वादा?

महाराज : जब हम गद्दी पर बैठे थे तो हम ने प्रजा से वादा किया था कि हम उस के लिए समाजवाद लाएंगे. वैसे तो हम ने प्रजा को खुश कर दिया है, पर प्रजा अभी भी हमें बारबार हमारे वादे की याद दिलाती है. हमें समाजवाद लाना ही होगा, चाहे किसी भी कीमत पर.

एक सभासद : महाराज, आप प्रजा की परवा मत कीजिए.

महाराज : नहीं, हम अपना वादा पूरा करेंगे और इस काम में हमें आप सब का सहयोग चाहिए.

सभी सभासद (आश्चर्य से) : हमारा सहयोग?

महाराज (दृढ़ता से) : हां, आप लोग तुरंत समाजवाद की खोज में निकल पड़िए, देश का कोनाकोना छान मारिए. समाजवाद जैसा भी हो, जहां भी हो, जिंदा हो या मुरदा, उसे सशरीर पकड़ लाइए और हमारे सामने पेश कर दीजिए.

(दसों सभासदों में आपस में खुसर-पुसर होने लगती है.)

महामंत्री : प्यारे सभासदो, मैं आप को एक बात बताना चाहता हूं. महाराज ने इस काम के लिए पुरस्कार की योजना भी बनाई है. आप में से जो भी इस काम में सफल होगा, उसे ढेर सारा पुरस्कार मिलेगा.

सभी सभासद (एक स्वर में) : कैसा पुरस्कार?

महामंत्री : महाराज उसे मंत्री बना देंगे, घूमने के लिए इंपाला कार दी जाएगी, रहने के लिए विशाल कोठी मिलेगी और उस के रिश्तेदारों को आयातनिर्यात के लाइसेंस दिए जाएंगे.

लौट कर आए सभासदों में से दो के सिर पर पट्टियां बंधी और दो को अनुपस्थित देख कर महाराज ने पूछा, हमारे दो सभासद घायल हो कर आए हैं और दो अनुपस्थित हैं. आखिर यह सब क्या है?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी सभासद (एक स्वर में) : अति सुंदर!

महाराज (गंभीर स्वर में) : पर इस काम को अब अधिक देर तक के लिए नहीं टाला जा सकता. हम आप को एक सप्ताह का समय देते हैं.

सभी सभासद : महाराज, यह तो बहुत कम समय है.

महाराज (उखड़े स्वर में) : एक हफ्ता कम समय है? अरे, श्री कृष्ण भगवान ने पूरा मंदिर रातोंरात बना दिया था. कहावत है, 'रोम एक रात में नहीं बना था.' इस का मतलब है कि रोम को एक दिन में बना दिया गया होगा. तो क्या हम एक हफ्ते में भी समाजवाद को खोज नहीं निकालेंगे?

पहला सभासद : हम कोशिश करेंगे.

दूसरा सभासद : महाराज, उस का कुछ अतापता तो बताइए.

महाराज : अतापता? देखिए, वह देश में, विदेश में, पूर्व में, पश्चिम में, उत्तर में, दक्षिण में, अमीरों की कोठियों या गरीबों की झोंपड़ियों में कहीं भी छिपा हो सकता है.

तीसरा सभासद : महाराज, यदि उस का कुछ हुलिया बताने का कष्ट करें तो शायद हमारा काम कुछ आसान हो जाए.

महाराज (विचारों में डूबे हुए) : हुलिया? समाजवाद के हुलिए का ठीक-ठीक वर्णन करना थोड़ा मुश्किल है. वह इतना चालाक है कि जहां होता है, वहां वैसा ही रूप बना लेता है. वह गरीबों के बीच गरीब बन जाता है, अमीरों के बीच

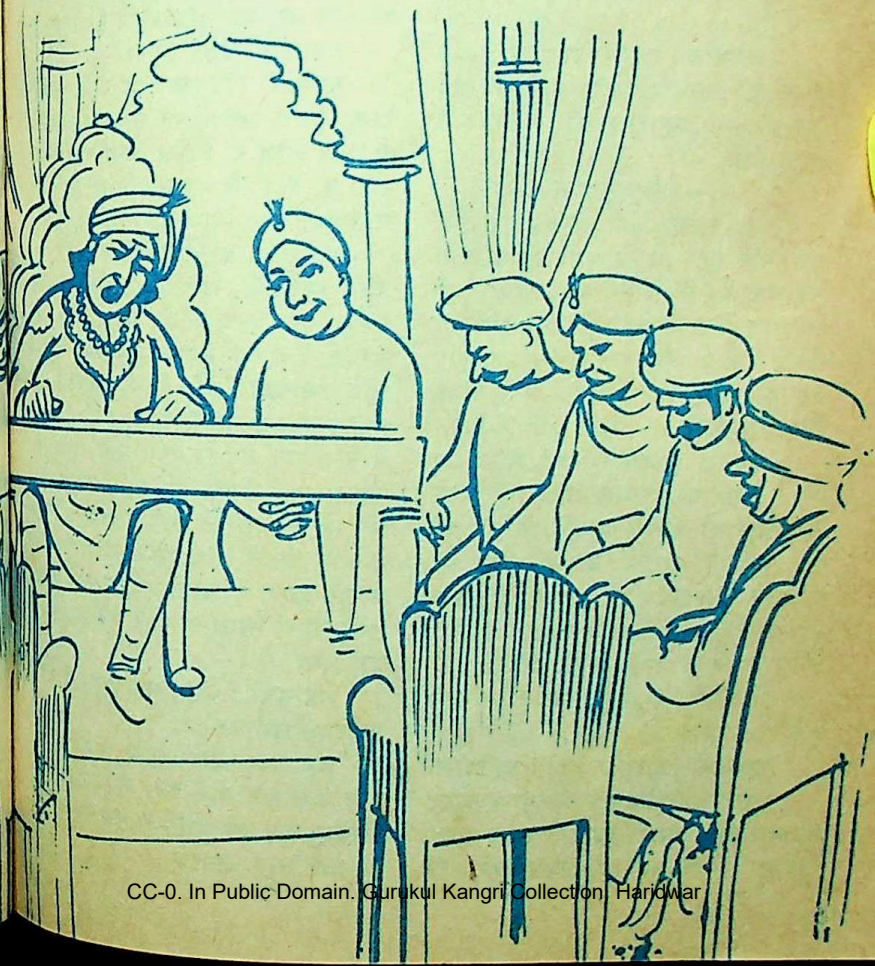

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अमीर, कालों के बीच काला, गोरों के बीच गोरा, लंबों के बीच लंबा, मोटों के बीच मोटा. कहने का तात्पर्य यह है कि वह बहुत मिलनसार है. वह किसी बात का भेदभाव नहीं रखता. वह समानता और स्वतंत्रता का पक्षपाती है.

चौथा सभासद : तब तो हमारा काम और भी मुश्किल हो जाएगा.

महाराज (क्रोध से) : हमारे शब्द-कोश में 'मुश्किल' शब्द का अस्तित्व नहीं है. (खड़े हो कर) अब हम इस गुप्त बैठक को समाप्त करते हैं और आप सब को आज्ञा देते हैं कि आप लोग विभिन्न दिशाओं में जाइए और समाजवाद को खोज कर लाइए. पूरे एक सप्ताह बाद, आज ही के दिन, इसी समय हम सब यहां मिलेंगे. आप लोगों की सफलता के लिए हमारी शुभकामनाएं आप लोगों के साथ हैं.

(महाराज दाहिने द्वार की ओर बढ़ते हैं. महामंत्री और दूसरे सभासद खड़े हो कर महाराज की जयजयकार करते हैं.)

—दूसरा दृश्य—

(एक सप्ताह बाद. वही मंत्रणाकक्ष. इस बार महाराज प्रियदर्शी की बगल में महामंत्री बैठे हैं, लेकिन दस सभासदों में से केवल आठ उपस्थित हैं. दो कुरसियां खाली पड़ी हैं. सभी सभासद मुंह लटकाए बैठे हैं. उपस्थित सभासदों में से दो के सिर और माथे पर पट्टियां बंधी हैं.)

महाराज (चिंतित स्वर में) : यह क्या? हमारे दो सभासद घायल हो कर आए और दो अनुपस्थित हैं. आखिर यह सब क्या है? शीघ्र बताया जाए कि ये लोग समाजवाद को खोजने में सफल हुए या नहीं और शेष दो सभासद हमारी आज्ञा के विरुद्ध क्यों अनुपस्थित हैं?

(सब मौन रहते हैं. उन की गरदनें झुक जाती हैं.)

महामंत्री (भयभीत हो) : महाराज.

महाराज (क्रोध से) : जल्दी बताइए, महामंत्रीजी. हमारी दाहिनी आंख फड़क रही है. दो सभासदों की अनुपस्थिति, दो की घायल अवस्था और शेष की लटकी गरदनें इस बात की साक्षी हैं कि कुछ अनहोनी हो गई है.

महामंत्री (हाथ जोड़ कर, विनम्र स्वर में) : महाराज, क्षमा करें. जो दो सभासद अनुपस्थित हैं, उन के बारे में सूचना प्राप्त हो गई है.

महाराज (बेसब्री से) : तो जल्दी बताइए न.

महामंत्री : महाराज, उन में से एक समाजवाद की तलाश करने दक्षिण की ओर गया था. वहां उस की भेंट समाजवाद के चचेरे भाई साम्यवाद से हुई थी. उस से समाजवाद का अतापता ले कर वह आगे बढ़ा तो रेलों की हड़ताल हो गई. सूचना मिली है कि वह बेचारा दक्षिण के एक छोटे से स्टेशन पर अटका पड़ा है. यात्रा व्यय के लिए उस के पास जो पैसा था, वह भी समाप्त हो गया है.

महाराज : और दूसरा?

महामंत्री (विनम्र स्वर में) : महाराज, दूसरा अनुपस्थित सभासद समाजवाद की खोज में विदेश गया था और उस ने वहां से यह पत्र भेजा है. (एक लाल कागज महाराज की ओर बढ़ाते हैं.)

महाराज (कागज को पकड़ कर खुद धीमे स्वर में पढ़ते हैं) : मैं यहां ठीक समय पर पहुंच गया था. यहां की तरक्की देख कर तबीयत खुश हो गई. ये लोग समाजवाद जैसे किसी व्यक्ति को नहीं जानते हैं, फिर भी खुश हैं. इसलिए मैं ने स्थायी रूप से यहीं बस जाने का फैसला कर लिया है. महाराज से मेरी ओर से क्षमायाचना कर लीजिए. (क्रोध से दांत पीसते और उस लाल कागज को फाड़ते हुए) देशद्रोही कहीं का! अगर कभी मौका मिला तो दुष्ट को गोली से उड़ा दूंगा.

महामंत्री : और, महाराज, ये दोनों उपस्थित सभासद...

महाराज (बीच ही में महामंत्री की बात काट कर, तेज स्वर में) : आप रहने दीजिए. हम इन लोगों से पूछ लेंगे. हां, तो आप लोग बताइए...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबह की सुहानी ताज़गी सारा दिन अनुभव करने के लिए

शीतल सुखद स्नान की अनुभूति...
घंटों–पहरों तक. पॉण्ड्स ड्रीमफ़्लावर टाल्क की बदौलत.

सारे शरीर पर इसे छिड़किए. फिर देखिए... आपका अंग-अंग किस तरह खिल उठता है और मन पुलक उठता है स्वच्छ, शीतल अनुभूति से.

और यह इतना मृदुल और रेशमी कोमल है कि अपने चेहरे के लिए भी आप इसका प्रयोग मजे में कर सकतीं हैं.

पॉण्ड्स ड्रीमफ़्लावर टाल्क

फ़ीनवी-पॉण्ड्स इन्कॉर्पोरेटेड (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में संस्थापित)

P-6863

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घायल सभासद (हाथ जोड़ कर) : महाराज, क्षमा करें. हम भी समाजवाद को ढूंढ़ने में असफल रहे. हम पश्चिम दिशा में गए थे...

महाराज (बात काट कर) : तुम दोनों साथ थे?

घायल सभासद : हां, महाराज, हम दोनों साथ थे. जब हम उस प्रदेश में पहुंचे तो वहां की दशा देख कर हमारी तो हालत खराब हो गई. वहां हड़तालें हो रही थीं. लोगों को खाने के लिए अन्न नहीं मिल रहा था. विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण नहीं कर रहे थे. वहां हिंसा, तोड़-फोड़ और आगजनी का तांडव हो रहा था. जनता प्रदर्शन कर रही थी और पुलिस गोली चला रही थी. बस, समाजवाद की खोज के चक्कर में हम दोनों भी हिंसा की लपेट में आ गए. वह तो खैर हुई, महाराज, जो हमारे प्राण बच गए, वरना वहां से जीवित लौटने की तो कोई संभावना ही नहीं थी.

महाराज : आश्चर्य है.

महामंत्री : अच्छा, चतुरलालजी, आप अपने अनुभव सुनाइए.

चतुरलाल सभासद : महामंत्रीजी, मैं तो ऐसा फंसा कि बस पूछिए मत. मैं ने सोचा, समाजवाद जरूर इन गगनचुंबी इमारतों में मिलेगा. सो मैं राजधानी की एक गगनचुंबी इमारत में घुस गया. ऊपरनीचे, अंदरबाहर सब तरफ तलाश किया. समाजवाद को तो मैं तलाश नहीं कर पाया, पर खुद उस इमारत में गुम हो गया.

महाराज (क्रोध से) : तुम्हारा नाम चतुरलाल नहीं, मूर्खानंद होना चाहिए.

महामंत्री : अच्छा, मेहनतीरामजी, अब आप अपने कारनामे सुनाइए.

मेहनतीराम सभासद (हाथ जोड़ कर, विनम्र स्वर में) : महाराजाधिराज, मैं ने सोचा कि समाजवाद मेहनतकशों का दोस्त होता है इसलिए मैं उस की तलाश में विभिन्न फैक्ट्रियों और उद्योगों में गया. मैं ने देखा कि वह वहां भी नहीं था, क्योंकि फैक्ट्रियां आदि बंद पड़ी थीं.

महाराज (आश्चर्य से) : आखिर क्यों?

मेहनतीराम (विनम्र स्वर में) : इसी लिए कि वहां न कोयला था, न बिजली. हर चीज का अकाल था.

महाराज : पेट्रोल तो होगा.

मेहनतीराम : महाराज, उस का भी अकाल पड़ा हुआ था.

महाराज : आश्चर्य, घोर आश्चर्य!

महामंत्री : अच्छा, प्रेमलालजी, अब आप अपनी साहसिक यात्रा का वृत्तांत सुनाइए.

प्रेमलाल सभासद (कांपते स्वर में): महाराज, मैं अपने प्राणों की भिक्षा मांगता हूं...मैं...मैं...

महाराज (उदास स्वर में) : तो क्या, प्रेमलाल, तुम भी अपनी खोज में असफल रहे?

प्रेमलाल : महाराज, मेरे जीवन की रक्षा कीजिए. मैं खोज ही नहीं कर पाया, महाराज.

महाराज (आश्चर्य से) : फिर तुम हफ्ते भर क्या करते रहे?

प्रेमलाल (लज्जित हो, संकोच से): महाराज, मैं अपनी प्रेमिका की फरमाइश पूरी करने में लगा रहा.

महामंत्री : मतलब?

प्रेमलाल : महामंत्रीजी, आप को तो ज्ञात ही है कि मैं अपनी प्रेमिका से शीघ्र ही विवाह करने वाला हूं. मेरी प्रेमिका ने विवाह के लिए एक शर्त रखी है, लेकिन...

महाराज : चुप क्यों हो गए? क्या शर्त रखी है?

प्रेमलाल : उस ने कहा है कि वह मुझ से तभी शादी करेगी, जब मैं उस के लिए चार किलो का वनस्पति घी का डब्बा, एक कनस्तर मिट्टी का तेल और 40 किलो कोयला जुटा सकूंगा.

महाराज : यह तो बहुत आसान शर्त थी. तुम ने मिनटों में पूरी कर दी होगी.

प्रेमलाल (निराशा से) : कहां, महाराज? पूरे हफ्ते मैं दौड़धूप करता रहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी रोशनी का पैग़ाम

फ़िलिप्स
टी.एल.एफ़. रेफ़्लेक्टालाईट

रेफ़्लेक्टालाईट रोशनी की दुनिया में एक नयी खोज है. दर्पण लगा एक नया ट्यूबलाईट. पहले से कहीं बेहतर और उन्नत इसका ऊपरी भाग अंदर से दर्पण जैसा बनाया जाता है ताकि प्रकाश किरणें ऊपर जाकर बरबाद होने की बजाय नीचे की ओर परावर्तित हो जायँ और आपको ज़रूरतवाली जगह पर ज़्यादा रोशनी मिले. दूसरी ख़ूबी यह कि धूल-गर्द के कारण इसकी रोशनी मंद नहीं पड़ती जैसा कि दूसरे लैम्पों में होता है. मतलब यह कि कम बिजली में ही ज़्यादा तेज़ और चमकीली रोशनी. इस तरह फ़िलिप्स टी.एल.एफ़ रेफ़्लेक्टालाईट आपके पैसे को तो बचाता ही है साथ ही बिजली संकट की समस्या सुलझाने में भी मदद करता है.

आज ही रेफ़्लेक्टालाईट लगाइए और अपने घर, दफ़्तर, दुकान या कारखाने में नयी रोशनी बिखेरिए!

PHILIPS

फ़िलिप्स

फ़िलिप्स इंडिया लिमिटेड

PHL.7288 (A)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कहांकहां नहीं घूमा. नागरिक संभरण के अधिकारियों की मिन्नतें कीं. व्यापारियों की मिन्नतें कीं. जैसेतैसे चार बोतल मिट्टी का तेल मिल पाया. घी और कोयला फिर भी नहीं मिला. मिट्टी का तेल देख कर मेरी प्रेमिका भड़क उठी और बोली, 'इसे क्या कपड़ों पर छिड़क कर आग लगा लूं?' महाराज, मेरी प्रेमिका ने मुझ से विवाह करने का विचार त्याग दिया है.

महाराज : ऐसा?

महामंत्री : अच्छा, सुखदेवजी, अब आप बताइए, आप पर क्या बीती.

सुखदेव (रोते हुए) : महाराज, मैं तो लुट गया, मैं तो बरबाद हो गया. (वह रोने लगता है.)

महाराज (आश्चर्य से) : अरे, आप तो रो रहे हैं. आखिर हुआ क्या? जल्दी बताइए न!

सुखदेव : महाराज, मेरी पत्नी और एकमात्र पुत्र को कुछ लोगों ने मार डाला.

महाराज : मार डाला? वह कैसे?

सुखदेव : महाराज, क्या बताऊं. मैं समाजवाद की तलाश करने के लिए प्रवास का प्रबंध कर रहा था कि मेरे एक मात्र 18 वर्षीय पुत्र को बुखार आ गया. मैं ने डाक्टर को बुलाया. उस ने रोगी को खाने के लिए कुछ कैप्सूल दिए. तीन कैप्सूल खाते ही मेरे पुत्र के प्राणपखेरू उड़ गए. इस आकस्मिक धक्के को मेरी पत्नी सह नहीं पाई. वह बेहोश हो गई. मैं ने उसे अस्पताल में भरती कराया. वहां डाक्टरों ने उसे ताकत देने के लिए ग्लूकोज चढ़ाया. इधर ग्लूकोज ने उस के शरीर में प्रवेश किया, उधर मेरी पत्नी के प्राण निकल गए और इस तरह मैं...

महाराज : यह भला कैसे हो सकता है?

सुखदेव : दवाएं नकली थीं, उन में मिलावट थी.

महाराज : क्या यह सच है?

सुखदेव : हां, महाराज. और जब मैं ने बहुत चीखपुकार की तो नकली दवाओं के निर्माताओं ने मुझे गरदन से पकड़ कर खदेड़ दिया और बोले, 'जो मरजी हो, सो कर लो. तुम समझते हो कि तुम सभासद हो. पर याद रखना, अपनी भी महाराज के खास आदमियों तक पहुंच है.'

महाराज : ओह!

महामंत्री : तो अब कलमकार और योजनाप्रसादजी की बारी है. आप लोग अपनी खोज के बारे में बताइए.

कलमकार : महाराजाधिराज की जय हो. महाराज और महामंत्रीजी को यह सुन कर अपार प्रसन्नता होगी कि हम दोनों, अर्थात मैं, यानी कलमकार और योजनाप्रसादजी ने मिल कर समाजवाद को खोज निकाला है.

महाराज (प्रसन्नता से, आंखों में चमक लाते हुए) : अच्छा. यह तो बड़ा शुभ समाचार है. आप लोगों को इस महान सफलता पर बधाई.

महामंत्री (उतावले स्वर में) : आप को समाजवाद कहां मिला? उस से कहां भेंट हुई?

महाराज : वह है कहां?

कलमकार : महामंत्रीजी, समाजवाद को ढूंढ़ने के लिए हमें कहीं दूर नहीं जाना पड़ा. वह तो हमारे पास ही था, हमारे इर्दगिर्द.

महाराज : अच्छा. पर वह है कहां?

कलमकार : योजनाप्रसादजी की जेब में. हां, महाराज, मैं ने उसे कलमबद्ध कर के कागज में कैद कर लिया है. यदि आप कहें तो मैं योजनाप्रसादजी से कहूं कि वह समाजवाद को आप के सामने पेश करें.

महाराज : अभी नहीं. महामंत्रीजी, हम अपने सुयोग्य सभासदों कलमकार और योजनाप्रसाद के साहसिक प्रयासों से अत्यंत प्रसन्न हैं. हम आज्ञा देते हैं कि इन्हें हमारे राज्य के सर्वोच्च अलंकरण 'वीर रत्न' से सुशोभित किया जाए. आज की यह सभा यहीं समाप्त होती है.

(परदा गिरता है.)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निविया क्रीम की एकमात्र प्रतिस्पर्धी है—

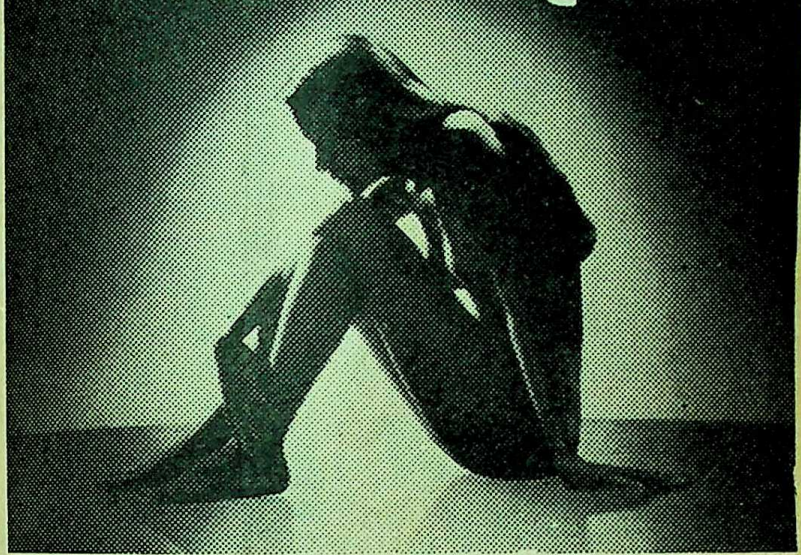

प्रकृति

हरेक बच्चे को मुलायम व स्वच्छ त्वचा वरदान के रूप में मिलती है। पर त्वचा के इस लावण्य को बनाये रखने के लिए जरूरत पड़ती है एक ऐसे तत्व की जो प्रकृति की तरह ही पौष्टिकता प्रदान कर सके। **निविया क्रीम एक ऐसा ही फार्मूला है। निविया में प्रकृति की तरह ही एक अनोखा तत्व है—यूसराइट।** यह त्वचा को नम, मुलायम व सुंदर बनाता है। जिससे आप धूप, हवा और सर्दी का मुकाबला कर सकें। इसके इस्तेमाल से चेहरे पर रूखापन नहीं रहता और झुर्रियां नहीं पड़ती। निविया से आपके शरीर का कोई भी भाग मुलायम हो जाता है। अब यह प्रमाणित हो गया है कि प्रभावकारी होने के लिए क्रीम में चिकनाई होना जरूरी नहीं है। विश्व भर की सुंदरियां अपनी त्वचा की सुरक्षा के लिए इस आश्चर्यजनक क्रीम का उपयोग करती हैं। इतना ही नहीं वे निविया वर्ष भर मेक-अप के लिए आधार के रूप में इस्तेमाल करती हैं। इसी लिये हम निविया को हर मौसम का त्वचा संरक्षक कहते हैं।

स्मिथ एण्ड नेव्यू उत्पादन

निविया—
हर मौसम में त्वचा-संरक्षक

Interpub/SN/2/74 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेफ़िक्री की घड़ियों के लिए कपड़े

और ज़िम्मेदारी की घड़ियों के लिए कपड़े

सरसिल्क

पॉलिएस्टर सूटिंग और शर्टिंग

सरसिल्क सूटिंग और शर्टिंग में आपको बढ़िया कपड़े की वे सभी ख़ूबियाँ मिलती हैं, जो आप चाहते हैं। देखने में शानदार। चलने में टिकाऊ। देख-भाल में आसान। अच्छी पसन्द के बिल्कुल अनुकूल। और बिल्कुल ठीक कीमत।

सरसिल्क के हलके-फुलके और सिलवट न पड़ने वाले कपड़े सादा, चारखाना और धारीदार मिलते हैं। रंग गहरे और साफ़।

ASP/SS-742

दि सरसिल्क लिमिटेड
सिरपुर – काग़ज़ नगर, आन्ध्र प्रदेश

विक्रेता एजेंटस: बम्बई: तुलसीदास कनोरिया एण्ड कं., पहली मंजिल, जाम्बुलवाड़ी पूर्व, कालबादेवी रोड, बम्बई २; **मध्य प्रदेश, विदर्भ और मराठवाड़ा:** रथी एण्ड कं., १७, पाप्युलर होलसेल क्लाथ मार्केट, गांधी बाग, नागपुर; **दिल्ली और हरियाणा:** बॉम्बे ट्रेडिंग कं. प्रा. लि., कटरा अशरफ़ी, चांदनी चौक, दिल्ली; **राजस्थान:** हरीश एण्ड कं., मेहता मार्केट, जोधपुर; **पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और काश्मीर:** ओमेगा इण्डस्ट्रियल कारपोरेशन, कटरा आहलुवाला, अमृतसर; **उत्तर प्रदेश:** केजरीवाल ट्रेडिंग कारपोरेशन, विशंभर हाउस, २५/२९ ए, कराची खाना, कानपुर; **पश्चिम बंगाल:** अश्विनी कुमार एण्ड कं., ४, इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता; **बिहार:** ओरिएंटल ऐंटरप्राइज़िज एण्ड एजन्सीज, बिड़ला मंदिर के पास, पटना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मेरी आयु 20 वर्ष है. पांच वर्ष पूर्व विवाह हुआ था. दो बच्चे भी हुए, पर उन की मृत्यु हो गई. मेरा गृहस्थ जीवन बहुत ही दुखद रहा. पति ने कई बार बेरहमी से पीटा. अब ढाई वर्षों से वह लापता है. ससुराल वाले पूछते नहीं हैं, अतः मांबाप के यहां ही रहना पड़ रहा है. आगे पहाड़ सा जीवन पड़ा है. क्या करूं?

—सरोज, बीकानेर

● आप की समस्या का एकमात्र हल पुनर्विवाह है. आप अदालत में पति द्वारा परित्यक्ता होने का दावा करें ताकि दोएक साल में आप को तलाक मिल सके.

इस दौरान आप अपनी शिक्षा पूरी करें या सिलाईकढ़ाई जैसा कोई महिलोपयोगी प्रशिक्षण ले कर नौकरी ढूंढ़िए. आप के लिए आत्मनिर्भर होना बहुत आवश्यक है.

तलाक मिलने पर आप पुनर्विवाह की कोशिश कर सकती हैं. हालांकि हमारे समाज में यह आसान नहीं है, फिर भी आप प्रयत्न करती रहें, तो सफलता अवश्य मिलेगी.

✦

मेरे घर वाले मेरी शादी करना चाहते हैं. हम हर महीने एक अनाथालय में कुछ बांटने जाते हैं. वहां की लड़कियों में से एक मुझे पसंद है. मैं उस से शादी करना चाहता हूं, पर घर वालों के डर से चुप हूं. मेरी आय चार अंकों में है और घर की काफी संपत्ति भी है. उस लड़की से कोई बात भी नहीं हुई. क्या करना चाहिए?

—महिंद्रपाल, पटियाला

● भावुकता छोड़ कर आप को अपने बराबरी के परिवार में ही शादी करनी चाहिए, फिर चाहे वह प्रेम विवाह हो या घर वालों की खोज. अनाथालय वाली लड़की से आप की कोई बात भी नहीं हुई तो फिर आप ने उसे पसंद कैसे किया? क्या केवल शक्लसूरत देख कर ही? पर्याप्त शिक्षा और घर की अच्छी ट्रेनिंग के अभाव में यदि वह आप के परिवार से सामंजस्य स्थापित न कर पाई तो आप का जीवन दुखी हो जाएगा. इसलिए जब तक सभी बातें अनुकूल न हों, केवल भावुकता में बह कर घर वालों के विरोध में जाने में कोई तुक नहीं. बाद में पछताना पड़े, इस से अच्छा है, पहले ही उधर से ध्यान हटा लें.

✦

तीन वर्ष पूर्व मेरी शादी हुई थी. पत्नी पढ़ीलिखी है, समझदार है, पर वह अपनी समझ या मेरी राय की अपेक्षा अपनी मां की राय पर ज्यादा भरोसा करती है. इसी कारण घर में मेरी मां से भी उस का झगड़ा रहा. मैं अब उसे अपने साथ रखता हूं, पर तनाव के कारण मेरे संबंध अपने ससुराल वालों से बिगड़ गए हैं. उन से मेरा पत्रव्यवहार बंद है, तो पत्नी ने भी मेरी मां व भाईबहनों को पत्र लिखना बंद कर दिया है. अब वह मां बनने वाली है और पीहर गई हुई है. मेरे पत्र का कोई जवाब उस ने नहीं दिया. ससुराल जाना या उन लोगों को पत्र भेजना मैं किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं करूंगा. इस समस्या का समाधान कैसे हो?

—च. न, फिरोजपुर

● जब आप अपने ससुराल वालों से कोई संबंध नहीं रखना चाहते तो पत्नी को वहां क्यों भेजा? प्रसव अपनी मां के पास भेज कर करवाते, उन्हें बुलवाते या उन के इनकार कर देने पर स्वय ही किसी आया आदि का प्रबंध कर के यह जिम्मेदारी निभाते. अब तो इस का हल यही है कि कुछ दिन आप चुप रहें. पत्नी को स्वयं ही पहल करने दें. मां बनने पर वह सूचना दिए बिना नहीं रह सकेगी. बच्चे की जिम्मेदारी के बाद वह आप से भी निभाने का प्रयत्न करेगी.

आप किसी बात को बहुत तूल न दें. कुछ समय के लिए उसे ढीला छोड़ दें व स्वयं ही निर्णय लेने के लिए उसे अवसर दें. बाद में सब ठीक हो जाएगा.

✦

मैं 26 वर्षीय नवयुवक हूं. शादी हुए चार वर्ष हो चुके हैं. अच्छी नौकरी पर हूं. एक बहुत प्यारा लड़का भी है. पर पत्नी के व्यवहार से परेशान हूं. पिछले दो सालों से उस की बातों से मेरे प्रति नफरत झलकती है. बारबार आग्रह किया, हाथ भी जोड़े कि घर में प्यार का वातावरण रखो, पर कोई लाभ नहीं हुआ. अपने बच्चे के प्यार के कारण दूसरा कोई मार्ग भी नहीं अपना सकता. कोई उपाय सुझाइए.

—क. ख. ग., लुधियाना

● पत्नी की नफरत का कारण खोज कर उसे दूर किए बिना केवल समझाने से बात नहीं बनेगी. यह भी हो सकता है कि बच्चे के प्रति आप का अत्यधिक लगाव आप की पत्नी को मां के अधिकारों का हनन लगता हो, या उस के मन में कोई ऐसी चिंता या उलझन हो, जिस के कारण वह अपना व्यवहार सामान्य न रख पाई हो. बहरहाल आत्मनिरीक्षण के साथ पत्नी के मन की थाह पाना भी जरूरी है. तब संभव है, आप को अपनी समस्या का कोई हल सूझ जाए.

—कंचन●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कहानी • नसरीन बशीर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदला

रंजीत के नाम से ही रजिया रूप उस के सामने आया

रजिया ने सब्जी वाले को पैसे दिए और टोकरी ले कर चुपचाप ऊपर चढ़ गई. सामने से रंजीतसिंह आ रहा था. वह उस का सामना नहीं करना चाहती थी. न जाने क्यों, उस की आंखों से उसे बहुत डर लगता था. जब रंजीत नीचे घर में होता, वह कभी नीचे नहीं जाती थी, चाहे कितना भी आवश्यक काम हो. रात को महमूद को यदि काम पर से आने में देर हो जाती तो वह कमरे का दरवाजा बंद कर के बैठी रहती और बिना देखे दरवाजा न खोलती थी.

रजिया लखनऊ के पास एक छोटे से गांव की रहने वाली थी. जब उस की शादी महमूद से हुई तो वह बहुत प्रसन्न थी कि दिल्ली जाएगी. उस के लिए दिल्ली जाना ऐसा ही था, जैसे दिल्ली से कोई इंगलैंड जाए. उस ने बहुत कुछ सुना था दिल्ली के विषय में. मगर उस के सुंदर सपने बिलकुल टूट गए.

दिल्ली का स्टेशन देख कर तो वह बहुत खुश हुई. पर जब महमूद ने कई गलियों में चक्कर लगाने के बाद इस कमरे में ला कर उसे बताया कि यह उस का घर है, तो वह चकरा गई. मानो सोतेसोते उस की आंखें खुल गई हों और सपने में और सचाई में क्या अंतर है, उसे मालूम हो गया हो. कहां गांव का खुला मकान और कहां यह कमरा, जिस में केवल एक खिड़की थी और नल भी नहीं था. पानी भी नीचे से लाना पड़ता था. उस ने जब अपनी गाय गांव में छोड़ी तो सोचा था कि दिल्ली में बड़ा पक्का मकान मिलेगा और वहां जा कर गाय अवश्य पालेगी. मगर यहां वह अपनेआप को पाल ले तो शुक्र करेगी. और जब महमूद ने उसे बताया कि यह कमरा भी नीचे वाले सरदारजी की मेहरबानी से उसे 60 रुपए में मिला है तो वह बेहोश होतेहोते रह गई. 60 रुपए में तो गांव में पूरे महीने की दालसब्जी निकल आती थी.

सब से बड़ा धक्का तो उसे तब लगा, जब वह अपनी मकान मालकिन 'बीजी' के पास गई. आसपास से कुछ औरतें वहां आ गईं. उन में से एक बोली, "बहन, तुम्हारी हिम्मत है जो इस मुसलमान को घर में रख लिया. हम तो चाहे सौ रुपए भी दे, तब भी न रखें."

रजिया के रहेसहे होश भी उड़ गए. क्या यहां मुसलमान नहीं रहते? पर वह चुप रही. इस औरत की हिम्मत तो देखो, सामने ही क्या कह रही है? मगर बीजी ने उस के टूटे दिल को जोड़ने में मदद की, "क्यों न रखते? हम तो 30 साल लाहौर में मुसलमानों के साथ रहे हैं. जिंदगी ही काटी है उन के साथ खेल-कूद कर. अब ये पराए कैसे हो गए?"

"हां, बहनजी, तभी तो अपना घर लुटा कर जीजाजी यहां आ गए," एक भारी आवाज से वह चौंकी. यह रंजीतसिंह था, जो बीजी का दूर का संबंधी था और कोने की कोठरी में रहता था.

"अच्छा, तू चुप रह. जैसे यहां से जो गए हैं, वे सारी दौलत बांध कर वहां ले गए हैं," बीजी ने गुस्से से कहा और रजिया को ऊपर चले जाने का इशारा किया.

रजिया चुपचाप ऊपर चली गई. मगर सीढ़ियां चढ़तेचढ़ते उसे लगा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रंजीतसिंह की आंखें उस का पीछा कर रही हैं. वह घबरा कर सोचने लगी कि जितनी अजीब जगह है, उतने ही अजीब लोग हैं. एक तरफ बीजी का प्यार और दूसरी तरफ रंजीतसिंह और पड़ोसन के चुभते शब्द.

यहां यह भेदभाव क्यों है? उस की सहेलियां ऊषा और कामिनी भी तो हैं. उन्होंने कभी ऐसी बात नहीं की. होली पर उन्होंने उसे और उस के घर वालों को कितना भिगोया था. फिर चाची मिठाई खिलाती थीं. कितनी मजेदार होती थी उन की मिठाई.

दिन बीत रहे थे मगर रंजीतसिंह तो जैसे उन के पीछे ही पड़ा रहता था.

एक दिन एक व्यक्ति वहां मकान की तलाश में आया. रंजीत और सरदारजी उस से बातें कर रहे थे. सरदारजी ने कहा, "भाई, मेरे पास तो छोटा सा मकान है. इस में तो जगह नहीं है."

"अरे, भाई, मेरा तो इतना बड़ा मकान था कि तुम सब को रख लेता मगर इन के भाईबंदों ने वहां से हमें भगा दिया," रंजीतसिंह ने महमूद की

कांप उठती थी, लेकिन दंगे में रंजीत का दूसरा ही तो वह हैरान रह गई.

रजिया चुपचाप ऊपर चली गई, लेकिन उसे लगा कि रंजीत की आंखें उस का पीछा कर रही हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कल के बच्चे के लिए था कल का पाउडर और अब
आज के बच्चे के लिए है—
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नया टेंडर केयर जो कोमल त्वचा के
लिए उचित विधि से बफ़र किया हुआ है

इसीलिये टेंडर केयर आपके बच्चे को खराश और मामूली चर्मरोगों से सुरक्षित रखता है। कल के बिना बफ़र किये पाउडर आपके बच्चे की कोमल त्वचा में खराश पैदा कर सकते थे।

टेंडर केयर में शोषण क्षमता अधिक होती है जो बच्चे की हंसी और आंसुओं मे फर्क ला सकती है। रेशमी मुलायम टाल्क से लेकर बच्चों के अनुकूल सौम्य सुगंध तक—टेंडर केयर में हर चीज़ बड़ी सावधानी से चुनी गयी है—आपके बच्चे के लिए।

आपके
बच्चे के लिए
स्नेह व रक्षा—
टेंडर केयर

CTC.G.I. HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरफ इशारा कर के कहा, जो उसी समय घर आया था.

"रंजीत, तू क्या बकवास करता रहता है?" बीजी अंदर से निकल कर बोलीं.

"बकवास नहीं, बहनजी, सच बात कह रहा हूं. मेरा दिल दुखा हुआ है. उसी दुखी दिल की आवाज है यह. अपनी मेहनत की कमाई को कैसे भूल सकता हूं?"

महमूद चुपचाप ऊपर चला गया. रजिया ने चाय बनाई. दोनों पीने लगे.

"यह रंजीतसिंह तो हमारे पीछे ही पड़ा रहता है," रजिया ने कहा.

"कोई बात नहीं, रजिया. दुनिया में हर तरह के लोग हैं, अच्छे भी और बुरे भी. क्या मालूम उस का दिल कैसी चोट खाए हुए है, जो वह ऐसी बातें करता है. तुम शायद भूल गईं कि हमारी शादी में खालाजान पाकिस्तान से आई थीं तो कह रही थीं कि जालंधर का स्टेशन देख कर वह बेहद रोई थीं. यहीं उन्होंने बचपन के दिन बिताए थे, यहीं वह खेलीं, पढ़ीलिखीं. उस जगह को वह जा कर देख भी नहीं सकतीं. कितनी पराई जगह हो गई. रजिया, यहां तो दोनों तरफ के लोगों के दिल दुखे हुए हैं. कौन खुशी से अपना घर छोड़ता है? खालाजान की पुरानी सहेली कमलेश उन्हें खास तौर पर मिलने आई थी. दोनों सहेलियां मिल कर काफी देर आंसू बहाती रहीं," महमूद ने तकिए का सहारा ले कर कहा.

रजिया चुप थी. उसे यह सब बहुत अजीब लग रहा था.

कुछ दिन और बीते. महमूद ने कुछ दिनों के लिए गांव जाने के लिए छुट्टी ले ली. छुट्टी बिता कर वे फिर उसी जगह लौट आए.

एक दिन महमूद घर लौटा तो बहुत परेशान सा नजर आ रहा था. सरदारजी से घबराया हुआ बातें कर रहा था. रजिया ऊपर से देख रही थी और बेचैनी से उस के ऊपर आने का इंतजार कर रही थी. नीचे से ही वह ऊपर आया, उस ने पूछा, "क्या बात है?"

"कुछ नहीं. किसी लड़की को कुछ लड़कों ने छेड़ दिया. दोनों अलगअलग धर्मों को मानने वाले थे. बस झगड़ा हो गया," महमूद ने कहा.

"न जाने हिंदुस्तान में किसी जगह लड़कियों को लड़के छेड़ देते हैं तो क्यों सब जगह फसाद हो जाते हैं?" रजिया ने भोलेपन से कहा.

"अरे, रजिया, झगड़े का बहाना चाहिए. पहले से सब सोचा हुआ काम होता है," महमूद ने कहा.

"अच्छा, आज तुम बाहर मत निकलना," सरदारजी ने कहा है. "तुम दोनों चुपचाप अपने कमरे में रहना."

दोनों दिन भर कमरे में बंद रहे. उन्होंने पास की एक बिल्डिंग में आग लगते भी देखी. बीजी उन्हें पानी का घड़ा दे गईं और प्यार से समझा गईं, "तुम दोनों फिक्र मत करना. मेरे होते हुए यहां कुछ नहीं होगा." मगर वे परेशान थे कि न जाने क्या होगा. दिन भर लाठीडंडे व गोलियां चलने और लोगों के शोर मचाने की आवाजें आती रहीं. दोनों चुपचाप बैठे थे कि सरदारजी भागेभागे आए, "बेटा, लोग इधर आ रहे हैं. मैं बाहर से ताला लगा देता हूं. कह दूंगा, तुम लोग भाग गए हो."

वह ताला लगा कर चले गए. उन के जाते ही न जाने कितने लोगों की भीड़ उन के घर के पास आ गई.

"ऊपर कोई नहीं है," सरदारजी की आवाज आई.

"यह झूठ बोलते हैं. चलो, ताला तोड़ो. सामान लूट लो," कह कर सब ऊपर आ गए. ताला तोड़ा जाने लगा.

"हटो, इस माल पर और यहां रहने वालों पर मेरा हक है. आज मेरी प्यास बुझेगी," रंजीत के कठोर शब्दों से रजिया और महमूद सहम गए और उन्हें मौत आंखों के सामने नाचती दिखाई दी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"रंजीत, तुझे क्या हो गया है?" सरदारजी बोले.

"इन्हें नीचे ले जाओ," वह बोला और सरदारजी को पकड़ कर लोग नीचे ले गए.

दरवाजा खुला. सामने दोनों सहमे खड़े थे. सब लोग उन की तरफ बढ़े मगर रंजीतसिंह ने डंडे से सब को दूर कर दिया, "इन पर केवल मेरा हक है. आज मैं गिनगिन कर बदले लूंगा."

उस ने आगे बढ़ कर एक हाथ से रजिया को पकड़ा और दूसरे से महमूद को, और दोनों को घसीटता हुआ नीचे ले गया. पीछेपीछे लोग थे. उस ने दोनों को अपनी कोठरी के पास ला कर अंदर को धक्का दिया. रजिया औंधे मुंह जा गिरी, पर महमूद संभल गया और उस ने दीवार का सहारा ले लिया. लोगों ने दोनों के हाथपांव बांध दिए.

"चलो, अब आगे चलते हैं. यह शिकार तो अपने पास आ गया," रंजीत ने कहा और दोनों को छोड़ कर सब बाहर आ गए.

रजिया सोच रही थी, जैसा यह लोग उन के साथ कर रहे हैं, वैसे ही इसलाम के मानने वाले भी इन के बहन-भाइयों के साथ करते होंगे. क्या जमाना आ गया है. इनसान जानवर बन गया है.'

शोर दूर हो गया...

एकदम दरवाजा खुला. सरदारजी और बीजी रंजीतसिंह के साथ खड़े थे. बीजी भाग कर रजिया से लिपट गईं.

"रंजीत, तू ने यह क्या किया? मैं तेरा खून पी जाऊंगी," वह गुस्से से बोलीं.

"खून बाद में पीना. अब समय नहीं है. जल्दी से इन के हाथपैर खोलो और रजिया बहन को साड़ी पहना कर घूंघट निकलवा दो. महमूद भाई, तुम यह पगड़ी बांध लो और पीछे की दीवार से उतर जाओ. मेरा मित्र वहां तांगा ले कर खड़ा है. वह तुम्हें दूर पहुंचा देगा," रंजीतसिंह के इन शब्दों पर चारों उस का मुंह देखने लगे. "हां, महमूद भाई, इसी तरह मैं तुम्हें बचा सकता था. और कोई तरीका मेरी समझ में नहीं आया था. मुझे माफ करना. तुम्हें तकलीफ हुई."

"भाई, मैं तो समझा था कि तुम पिछली बातों का बदला लोगे," महमूद ने कहा.

"मैं बुरा जरूर हूं, मगर इतना नहीं. रजिया बहन को देख कर मैं अपनी मनजीत बहन को याद करता था. और फिर तुम्हारे भाईबंदों का बदला तुम से क्यों लूंगा? तुम ने मेरा क्या बिगाड़ा है? जिन्होंने मेरे साथ बुराई की, वे तो शायद अब मरखप गए होंगे," वह बोला और महमूद के सिर पर पगड़ी बांधने लगा. रजिया को बीजी बराबर वाली कोठरी में ले गईं. ●

बच्चों को तन्दुरुस्त और खुशहाल बनायें

डाबर

ग्राइप वाटर

बच्चों के पेट जनित रोगों एवं दांत निकलते समय होने वाली तकलीफों से राहत पाने के लिए डाबर ग्राइप वाटर का सदा इस्तेमाल करें।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेख • कमला सपोलिया

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कशमकश का सिलसिला

पाश्चात्य संस्कृति की अंधाधुंध नकल करने वाले फैशनपरस्त बच्चे मांबाप को गंवार और रूढ़िवादी क्यों समझते हैं?

बच्चे दूसरे कमरे में बैठे हैं. मुझे उन की आवाजें सुनाई दे रही हैं. वे जरूर यह समझ रहे होंगे कि मेरा ध्यान उन की बातों में नहीं है, इसलिए खूब बोल रहे हैं.

पहला स्वर रीमा का था, "पता नहीं, मम्मी हमें हर वक्त क्यों इतना समझाती रहती हैं."

दूसरा स्वर दीपक का था, "अरे, यह भी कोई समझाना है. यह तो डांटना है. आज तो सुबहसुबह ही मम्मी शुरू हो गईं."

बच्चे मेरे सुबह के व्यवहार पर आलोचना कर रहे थे. मैं ने दीपक से बाल कटवाने के बारे में कहा था. कई बार कहने पर भी उस ने नहीं कटवाए तो मुझे डांटना पड़ा.

"ओ, मम्मी, आप तो कुछ करने ही नहीं देतीं. आजकल लंबे बालों का फैशन है," दीपक ने कहा था.

"होगा," मैं बोली थी, "मैं कब तुम्हारी बात से इनकार करती हूं?"

"तो फिर आप क्यों पुरानी घिसी-पिटी बातें करती हैं? क्यों नहीं मुझे फैशन करने देतीं?" दीपक ने रुआंसे स्वर में मुझ से प्रश्न किया था.

"क्योंकि बुरेभले और सहीगलत में तुम्हें अंतर बताना मेरा कर्तव्य है. यह लंबे बालों का फैशन मुझे पसंद नहीं. यह फैशन तुम्हें लड़कियों जैसा बना देता है."

मेरी बात पर दीपक एकाएक कुछ नहीं बोला था. शायद सोचता रहा होगा कि यह सच ही तो है. आजकल के फैशन कैसे सहज में लड़कों को लड़कियों जैसा बना देते हैं. लेकिन वह हार मानने को तैयार न था, बोला था, "लड़कियां भी तो लड़कों जैसे फैशन करती हैं."

"तुम्हारी बहनें करती हैं क्या?" मैं ने प्रश्न किया था.

वह बोला था, "नहीं, वे तो नहीं करतीं."

"बस, फिर तुम्हें तो अपने घर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

घर वालों से मतलब होना चाहिए. तुम ने संसार भर की लड़कियों का ठेका थोड़े ही लिया हुआ है," मैं ने दीपक से दृढ़तापूर्वक कहा था, "भोजन से पहले तुम्हें बाल कटवाने होंगे. चेहरा साफसुथरा होगा, तभी तुम खाना खाओगे और मैं भी खाऊंगी, अन्यथा दोनों भूखे रहेंगे. मैं हड़ताल कर के बैठ जाऊंगी. युवा वर्ग हड़ताल कर सकता है तो हम बड़ेबूढ़ों को हड़ताल कर के अपनी मांगें पूरी करवाने में क्या हर्ज है?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां की सलाह

मेरी बात पर दीपक बहुत नाराज हुआ और भुनभुनाया. आखिर वह बाल कटवाने चला गया. लौटा तो उस का चेहरा एकदम साफसुथरा, बिलकुल लड़कों जैसा था. उसे देख कर मन बड़ा खुश हुआ, लेकिन वह खुश नहीं था. बाल कट चुके थे—वे बाल जिन्हें हम उस की 'जुल्फें' कह कर चिढ़ाया करते थे.

खाने की मेज पर आया तो उस का मुंह फूला हुआ था.

"क्या हुआ?" उस के पापा ने पूछा तो उस की आंखें भर आईं. वह कुछ बोला नहीं.

उस के बदले रीमा बोल पड़ी, "देखा नहीं, पापा, आज कविराज की जुल्फें कट गई हैं. सुबह मम्मी ने डांटा, हड़ताल करने की धमकी दी." और सुबह का सारा हाल रीमा ने कह सुनाया.

खाने के बाद बच्चे अपने कमरे में चले गए. इस बार सुधा के स्वर ने मेरा ध्यान आकर्षित किया, "तुम लोग कुड़कुड़ क्यों कर रहे हो? मम्मी कोई गलत बात तो कहती नहीं."

दीपक शायद अभी भी नाराज था, बोला, "तुम चुप रहो. फजूल में युधिष्ठिर बनने की कोई जरूरत नहीं. हमें भी मालूम है कि मम्मी अच्छी बातें कहती हैं. तुम्हें ज्यादा सलाह देने की जरूरत नहीं."

बेचारी सुधा चुप हो गई. मेरे पक्ष में कुछ कहना चाहती थी, लेकिन किसी ने उस की एक न सुनी.

"मम्मी तो हमें कुछ भी नहीं करने देतीं," इस बार शिकायत रीमा की थी. "देखो न, हमारे कालिज में लड़कियां क्याक्या करती हैं."

"क्या करती हैं?" सुधा ने जिज्ञासा प्रकट की.

"अरे, सब कुछ करती हैं," रीमा कह रही थी, "सब तरह के फैशन करती हैं, क्लास से भाग कर कैंटीन में बैठी रहती हैं, पिक्चर देखने चली जाती हैं. और एक मैं हूं जो सारे कालिज में प्रसिद्ध हूं कि कभी क्लास मिस नहीं करती. कालिज से भाग कर पिक्चर देखने तो मेरा कोई बड़ा भी नहीं जा सकता. लड़कियां कहती हैं कि मैं अपनी मम्मी से बहुत डरती हूं."

शायद सुधा ने ही मेरी तरफ से बोलने का ठेका ले रखा था, "अच्छा है न. सब जानते हैं कि तुम कोई गलत काम नहीं करतीं. इस में क्या बुरी बात है? अपने मम्मीपापा को धोखा देना कोई अच्छी बात है क्या?"

"अरे, चुप रहो. बेकार बोल रही हो. अपनी बारी पर तो तुम भी रोती हो," दीपक ने सुधा को ताना मारा. "तुम भी तो चिल्लाती हो कि मम्मी यह नहीं करने देतीं, वह नहीं करने देतीं. आज क्या बात है जो मम्मी की तरफ से बोल रही हो?"

अब तक राधा पता नहीं कहां थी. उस ने मेरे विरुद्ध कोई शिकायत नहीं की थी. शायद कमरे में थी नहीं, अपने कुत्ते के साथ खेल रही थी. तभी अचानक उस की आवाज आई, "तुम लोग क्या बातें कर रहे हो? मुझे भी तो बताओ."

"क्या बताएं? तुम्हें नहीं मालूम क्या? मम्मी हमारे साथ कितनी सख्ती करती हैं," दीपक ने कहा.

"ओह, अच्छा," राधा ने अपनी आवाज पर जोर दिया, "मम्मी की बातें कर रहे हो. वे तो मुझे सब मालूम हैं. मुझे तो पापा ज्यादा अच्छे लगते हैं. वैसे मम्मी भी अच्छी हैं, लेकिन गुस्से वाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके रूप पर यह धुंधली छाया ? इसके कारण हैं छुपा मैल और बासी मेक-अप !

त्वचा निखारने के लिए इन्हें हटाइए एन् फ्रेंच डीप क्लेंजिंग मिल्क से-

जो गहराई तक सफ़ाई करके आपकी त्वचा को निखारता है !

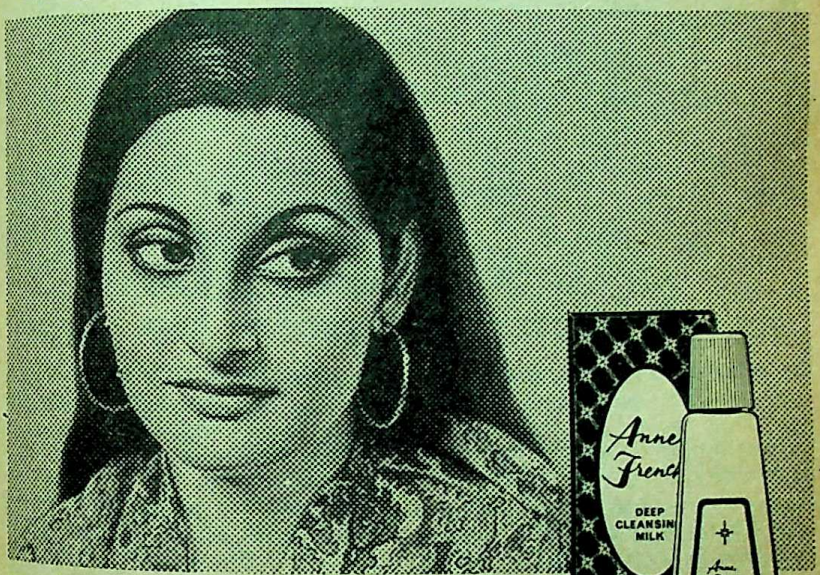

सुन्दरता के लिए ज़रूरी है कि त्वचा की गहराई तक जमा मैल हटाया जाय। एन् फ्रेंच डीप क्लेंजिंग मिल्क ख़ास तौर से अधिक तरल बनाया गया है ताकि यह त्वचा को, चाहे वह कितनी ही चिकनाहट और मैल भरी क्यों न हो, साफ़ कर सके ! एन् फ्रेंच डीप क्लेंजिंग मिल्क में रुई डुबोकर उसे चेहरे और गर्दन पर हौले हौले फेरिए। अब देखिए रुई को ! देखा ? इतना सारा मैल, जिसका आपको पता भी नहीं था !

एन् फ्रेंच सौंदर्य-रक्षा में अनुपम, त्वचा-रक्षा में सर्वोत्तम

128 DCM-182 Hin

Licensed User of TM : Geoffrey Manners & Co. Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विटामिन और खनिज पदार्थ आपके परिवार के स्वास्थ्य के लिये बहुत ज़रूरी हैं

क्या उन्हें ये ज़रूरत के मुताबिक़ मिल रहे हैं?

विटामिनों और खनिज पदार्थों की कमी से आपके परिवार के लोगों का स्वास्थ्य गिर सकता है. थकान, ठंड और जुकाम, भूख की कमी, कमजोरी, चमड़ी तथा दाँतों के रोग अधिकतर जरूरी विटामिनों और खनिज पदार्थों की कमी के कारण होते हैं.

इन की कमी, भोजनों में भी रह सकती है. इस बात के विश्वास के लिए कि परिवार के सभी लोगों को ये जरूरी पोषकतत्व उचित मात्रा में मिलें, उन्हें रोज़ विमग्रान दीजिये.

विमग्रान में आवश्यक ११ विटामिन और ८ खनिजपदार्थ मिले हैं. लोहा — खून बढ़ाने और फुर्ती लाने के लिये, कैल्सियम— हड्डियों और दाँतों को मजबूत बनाने के लिये, विटामिन सी— ठंड और जुकाम रोकने की शक्ति बढ़ाने के लिये, विटामिन ए—चमकदार आँखों और स्वस्थ त्वचा के लिये, विटामिन बी१२—खून बढ़ाने के लिये तथा शरीर को स्वस्थ रखने के लिये दूसरे जरूरी पोषक तत्व! आज से ही रोज लीजिये— विमग्रान!

विमग्रान®

विविध विटामिन एवं खनिजयुक्त गोलियाँ
११ विटामिन + ८ खनिज पदार्थ

SQUIBB®
SARABHAI CHEMICALS PVT. LTD.

● ई. आर. स्क्विब एंड सन्स इन्कॉर्प. का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है जिसके अनुमत उपयोगकर्ता हैं—एस. सी. पी. एल.

केवल एक विमग्रान आपको दिन भर स्फूर्तियुक्त रखता है

Shilpi-HPMA 2A/74 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं. हर वक्त कहती रहती हैं, 'जल्दी सो जाओ, जल्दी उठो, अपना बिस्तर आप बिछाओ, कमरा साफ रखो, सुबह दो घंटे पढ़ो, शाम को दो घंटे पढ़ो, समय बरबाद मत करो, बेकार इधरउधर मत घूमो.' मैं तो मम्मी की बातों की लिस्ट भूल जाती हूं."

बेचारी राधा की बातों पर मुझे बड़ा अफसोस हुआ क्योंकि मैं ने पिछले दिनों वास्तव में यही किया था जो वह कह रही थी. वार्षिक परीक्षाओं के समय मैं उस के पीछे ही पड़ी रही थी, लेकिन करती क्या? वह तो मानो पढ़ना ही नहीं चाहती थी. बस, कालोनी में साइकिल चला ली, कुत्ते को घुमा लिया और कहानियां पढ़ लीं. ऐसे में पास होने की संभावना ही कहां थी. वह तो बच्ची है. लेकिन मुझे तो पता था कि उसे पढ़ना चाहिए, वरना साल बरबाद हो जाता.

"चलो, बाबा, उठो सब. बिस्तर सीधे कर दें," सुधा की आवाज आई. "चार बज गए. अब काम शुरू करें."

"हां, बाबा, उठो. वरना अभी मम्मी आ गईं तो नाराज होंगी, कहेंगी, 'अभी तक फजूल की बातें कर रहे हो, बिस्तर ठीक नहीं किए, कमरा साफ नहीं किया, क्या हाथपांव में जान नहीं है?'" रीमा ने अपना रोना रोया.

"और क्या? मम्मी को तो कहीं थानेदार होना चाहिए. उन की पर्सनैलिटी भी उस के लिए बिलकुल ठीक है," दीपक ने कहा. उस की बात सुन कर मुझे हंसी आ गई और साथ ही अपना बचपन भी याद आ गया. तब बिलकुल ऐसी ही हालत थी. आज मेरे बच्चे वही कर रहे हैं जो हम किया करते थे और हम वह कर रहे हैं जो हमारे मातापिता किया करते थे. यही सख्ती, यही नियम और यही अनुशासन हम पर झाड़ा जाता था. उस समय हम भी कुढ़ा करते थे. आज वे नहीं हैं, लेकिन उन की हर बात हमारी आदतों में, हमारे व्यवहार में जीवित है. आज जो हम हैं, उन की बदौलत और उन के सिखाए हुए तौरतरीकों से हैं.

सिखाने की जिम्मेदारी

आज मेरी आंखों के सामने एकएक कर के चलचित्र की तरह सब बातें घूम रही हैं. मम्मी से तो हम वैसे ही डरते थे. उन्होंने हमें कभी डांटाडपटा नहीं था, लेकिन बात करने का उन का ढंग ही ऐसा था कि हम उस के विरुद्ध चलने की हिम्मत नहीं कर पाते थे. सिखाने और समझाने की अपनी जिम्मेदारी उन्होंने हमेशा और बराबर पूरी की.

राधा की तरह हमें भी डैडी बड़े अच्छे लगते थे. मम्मी भी हर मां की तरह प्यार और ममता भरा दिल लिए थीं, लेकिन वह हमें कहती ही रहती थीं, "बेटा कमल, नौकर हैं तो इस का यह मतलब नहीं कि तुम अपने हाथपांव न चलाओ. तुम्हें स्वयं अपना काम करना चाहिए. कोई तुम्हारी चीजें तुम्हें नहीं

अब आए तुम तो...

आने के वक्त तुम तो कहीं के कहीं रहे,
अब आए तुम तो फायदा? हम ही नहीं रहे.
—मीर

शाम ही से दिलेबेताब का है 'जौक' ये हाल,
है अभी रात पड़ी चार पहर काटने को.
—जौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देगा, कोई उठा कर भी नहीं रखेगा."

और मैं सोचा करती थी कि मम्मी भी कमाल करती हैं. इतने नौकरों का क्या अचार डालना है, जो काम हम खुद करें? और छुट्टी क्या आती है, मम्मी ढेर सारा सिलाई का काम निकाल कर रख देती हैं. सुबह तो नहानेधोने और कमरे साफ करने में ही निकल जाती है. दोपहर मशीन चलातेचलाते बीत जाती है. सहेलियों के घर जाने का भी समय नहीं मिलता.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिंदगी का तरीका

जीवन में एक तरीका होना चाहिए. उस के अनुसार अपना काम करने की आदत डालनी चाहिए. समय बरबाद नहीं करना चाहिए. बाद में पछताने से कोई फायदा नहीं. समय का उचित प्रयोग करो. उस का लाभ उठाओ, यह सब हमें बारबार कहा जाता था और छोटीछोटी बातों के लिए हमें टोका जाता था, 'प्लेट में खाना बरबाद मत करो. उतना ही लो जितना खा सको. याद रखो कि जो भोजन तुम फेंकते हो, वह किसी के मुंह का निवाला हो सकता है.'

कभीकभी तो डैडी भी मम्मी जैसी बातें करते थे. एक बार नए जूते की फरमाइश करने पर पूरा भाषण सुनने को मिल गया, "आओ, मेरी अलमारी देखो. यह जोड़ा चौदह साल पुराना है, यह बारह साल और यह चार साल. तुम्हारे पास कितने जोड़े हैं, बेटे?"

"चार, डैडी," मैं ने बताया तो वह बोले, "आखिरी जोड़ा कब खरीदा था?"

"दो महीने हो गए."

इंतजार में हम...

वो आए भी तो
बगूले की तरह आएगए;
चिराग बन के जले
जिन के इंतजार में हम.

—अहमद नदीम कासमी

"बस!" डैडी ने आश्चर्य से कहा, "मुझे देखो, पिछले दो सालों से मैं ने कोई जूता नहीं खरीदा. तुम्हें भी समझना चाहिए कि पैसे का क्या मूल्य होता है. पैसा इस तरह फेंका नहीं जा सकता. हमारे पास सब कुछ है तो इस का यह मतलब नहीं कि उसे बरबाद किया जाए."

मैं ने जूते नहीं खरीदे. चार जोड़े काफी थे. फैशन तो बदलते ही रहते हैं. उन से कब तक मुकाबला किया जा सकता है?

हमें शिक्षा दी जाती थी कि जीवन में अपना एक धर्म जरूर बना लो, जिस की नींव सचाई और ईमानदारी हो. किसी से धोखा और कपट मत करो. दूसरों से नफरत मत करो. जहां तक भी हो सके, बड़ों की इज्जत, छोटों से स्नेह और जरूरतमंद लोगों की सहायता करो. संसार में इस से बड़ा कोई धर्म नहीं है.

सुधा, रीमा, दीपक और राधा को शिकायत है कि वे कोई बात अपनी इच्छानुसार नहीं कर सकते. हमें भी शिकायत रहती थी कि हम अपनी मरजी नहीं चला सकते. खाने में, पहनने में, शिक्षा में और दूसरों के साथ व्यवहार में हमें टोका जाता था, समझायाबुझाया जाता था, डांटाडपटा भी जाता था. हमें भी यह बहुत बुरा लगता था. लेकिन आज मैं ऐसा नहीं सोचती, क्योंकि मुझे कदमकदम पर यह अहसास होता है कि बच्चों की जिंदगी को उचित ढांचे में ढालना हर मांबाप का एक कठोर कर्तव्य है, जिस का बच्चे जरूर विरोध करेंगे. मेरे बच्चे भी विरोध करते हैं, लेकिन एक वक्त आएगा जब वे समझेंगे कि यह कर्तव्य निभाना कितना मुश्किल है. उस के लिए कभीकभी कठोर भी होना पड़ता है. शायद उस समय वे उस के लिए आभारी भी होंगे जो कुछ मैं ने अब किया है.

वैसे मांबाप और बच्चों के बीच कशमकश का सिलसिला चलता ही रहेगा. •

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

dCP/LVC/1j Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत महंगा है?"

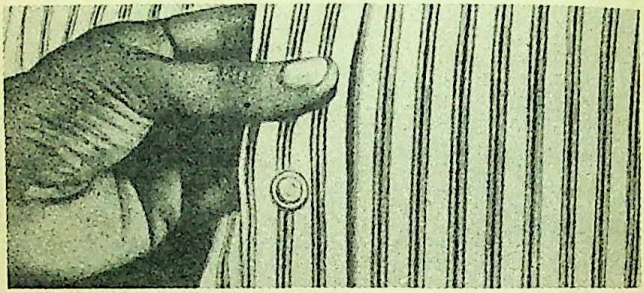

"नहीं, यह कमला का है!"

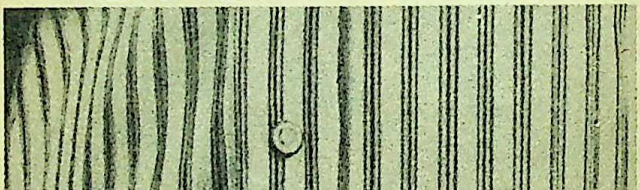

सस्ते दाम-
धनवान सी शान

कमला

पॉलिएस्टर ब्लेंड शर्टिंग्ज़

CU -A 1321

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम का सारा बोझ

अकेली पत्नी पर ही क्यों?

छाया • रमेश र. नाइक

अभी हाल ही में एक लेख पढ़ा था 'सरिता' में कि 'ये काम अपने हाथ से करिए.' पत्नी की व्यस्तता को ध्यान में रखते हुए पति को चाहिए कि वह बटन टांकना, कपड़े धोना, आदि कई अपने छोटेछोटे काम स्वयं कर ले. इस से पत्नी पर अनावश्यक दबाव नहीं पड़ेगा.

यह सही है कि काम का दबाव हर किसी पर पड़ रहा है. घर में काम बढ़ रहा है, इस से समझदार पति कई कामों में पत्नी का हाथ बंटा देता है. पश्चिम में तो साथ में प्लेटें वगैरा धुलवा देने की आम प्रथा है. गृहस्थी तो एक गाड़ी है, जो दो चक्कों पर चलती है और दोनों का सहयोग होता है. एकदूसरे के कार्यभार को देखते हुए कामों में संतुलन बढ़ाना होता है. अब तो एकल परिवार में, जहां परिवार के अन्य सदस्य नहीं होते, पति को बच्चे के कपड़े भी साफ करने पड़ जाते हैं. यदि घर का खर्चा पूरा नहीं होता है तो पत्नी को भी बाहर जा कर धन का उपार्जन करना पड़ता है.

पर इस सब का यह मतलब तो नहीं कि कोई किसी का काम न करे, सब अपनाअपना काम करें. जो काम सारे परिवार के हैं, उन्हें हंसबांट कर करना चाहिए, पर जो व्यक्तिगत कार्य भावात्मक स्तर पर अपना महत्त्व रखते हैं, उन्हें किसी पर टाला नहीं जा सकता—उस पर भी नहीं, जिस का काम है. जब तक इस अंतर को नहीं समझा जाएगा, भावात्मक स्तर पर असंतुलन पैदा होगा और यह किसी के भी हित में नहीं है. पतिपत्नी के लिए तो यह निश्चित ही अहितकर है.

विवाह होने के बाद अनायास ही पत्नी चाहती है कि वह पति का कार्य करे और पति चाहता है कि वह पत्नी के लिए कुछ करे. पत्नी यह सब इसलिए नहीं करती कि उस की कोई मजबूरी है. विवाह के बाद आते ही पत्नी को यह कोई नहीं कहता कि यह करो, वह करो, क्योंकि उसे पति से प्यार होता है इसलिए उस को व्यक्त करने के लिए वह पति का छोटामोटा व्यक्तिगत काम अपने हाथ में ले लेती है, यथा—कपड़ों का ध्यान रखना, टूटे बटन टांक देना, फटे कपड़े

लेख • सरन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सिल देना, उन पर लोहा कर देना, पसंद का नाश्ता बना देना, शाम को आने पर चाय पेश कर देना आदि. दूसरे शब्दों में पत्नी पति पर खुद ध्यान देने लगती है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति भी उसे कुछ चिंताओं से मुक्त कर उस के छोटेमोटे बाहरी काम करने लगता है, यथा—शाम को आते समय उस के लिए बेणी ले आना, उस का मनपसंद कास्मेटिक ला देना, कपड़ेसाड़ी आदि ला देना, शाम को आ कर उसी के साथ चाय पीना, सैरसपाटे के प्रोग्राम बना लेना आदि. अपनी पत्नी के भावनात्मक स्तर का ध्यान कर के वह उस पर उसी प्रकार ध्यान देने लगता है.

इस प्रकार हम देखते हैं कि अनेक छोटे काम पत्नी अपने सिर पर ले लेती है और पति अपने पर. ये काम ऐसे हैं, जिन से आपस का प्यार इंगित होता है. ये काम हैं जो छोड़े तो जा सकते हैं, पर सुखी वैवाहिक जीवन का दांव लगा कर.

विवाह से पहले

जब विवाह नहीं हुआ था तो यह तो नहीं था कि पति अपने काम स्वयं नहीं कर लेता था या पत्नी अपने. कोई कर देता था—भाई, बहन, मां आदि—तो ठीक, नहीं तो अपना हाथ तो जगन्नाथ था ही. पर विवाह के बाद जब साथ रहना है तो आपस में कुछ कामों का आदानप्रदान आवश्यक है—पत्नीयोग्य पति के लिए और पतियोग्य पत्नी के लिए. बड़े काम एकदूसरे को मदद दे कर भले ही करवा लिए जाएं, पर छोटे काम तो व्यक्तिगत होते हैं जो टाले नहीं जा सकते हैं.

वास्तव में यही काम दोनों को याद दिलाते रहते हैं कि धड़कता हुआ दिल कहीं पर है, जिसे किसी का खयाल है. यही कार्य जीवन रूपी मशीन में स्निग्धता प्रदान करने का कार्य करते हैं.

यह कहना कि 'जब मैं नहीं थी या था' बेकार है. आज भी जब कोई नहीं होगा तो प्रकृति के दिए दो हाथ तो हैं, जो सब काम कर लेंगे. पति की आमदनी बंद हो जाएगी तो पत्नी भी मजबूरन कुछ न कुछ कर के पेट भर लेगी. पर जब पत्नी आफिस जाते समय पति के कपड़े तैयार कर के रख देती है, उस का सामान मुहैया कर देती है, टाई बांधने में मदद देती है, दरवाजा खोल कर उसे प्रेमसिक्त आंखों से बिदा देती है तो एकाएक कोमल भावनाओं का स्रोत खुल जाता है. ये ही बातें इस बात का इशारा करती हैं कि शाम कैसी होगी.

उसी प्रकार जब पति बाहर से आता है और पत्नी के लिए बेणी लाता है, या उस की पसंद की कोई चीज लाता है, उसे आलिंगन में बांध लेता है, गाड़ी से उतर कर उस के लिए दरवाजा खोल देता है तो ये भी पत्नी के प्रति उस की कोमल भावनाओं के प्रतीक हैं.

व्यस्तता का बहाना

यह एक अटल सत्य है कि जहां व्यस्तता का आश्रय ले कर इन बातों से ध्यान हटाया जाना आरंभ होता है, वहां दांपत्य जीवन में घुन सा लगने लगता है. यह दिमाग में बिठा लेना कि हमारे पास बहुत काम है और व्यस्तता कोई काम नहीं करने देती, एक गलत चीज है. चाहे पति हो, चाहे पत्नी, सच तो यह है कि जिस को काम करने की इच्छा होती है, वह समय निकाल ही लेता है. योजनाबद्ध व व्यवस्थित ढंग से काम कर के समय उपलब्ध किया जा सकता है. बात यहीं आ कर अड़ती है, 'जहां चाह, वहां राह.'

वस्तुतः होता यह है कि अनेक छोटीछोटी अव्यक्त शिकायतों के कारण दिमाग पर भार रहता है, कुंठाएं जन्म लेने लगती हैं और फिर छोटेछोटे व्यक्तिगत काम करने की अनिच्छा पैदा होने लगती है. फिर 'राह' कहां से निकले? अतः छोटीछोटी शिकायतों तथा परेशानियों को, जो दिन भर पैदा होती रहती हैं, पालना नहीं चाहिए, बात कर के उन्हें निपटा लेना चाहिए. रोज की छोटीमोटी बातों को गंभीरता से नहीं लेना चाहिए.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

होता यह है कि हर कहीं एक चीज के दो मतलब निकाले जाते हैं. उन्हें गंभीरता से ले कर गलत भावनाएं जन्म लेने लगती हैं. जहां दो बरतन होंगे, टकराव लाजिमी है. विवाह के बाद दो विभिन्न परिवेशों में भिन्नभिन्न तरह की शिक्षा पाए दो व्यक्ति मिलते हैं. उन का सोचने का, विचारने का, काम करने का ढंग अलगअलग होता है. उन्हें सहजता से ले कर तालमेल बैठाना होता है. हर कार्य व विचार का, जो हमारे अपने कार्य व विचार से मेल नहीं खाता, गंभीरता से ले कर कुंठाएं पालना सही नहीं है. विनोद का पुट दे कर, अपने पर स्वयं हंस कर, उसे सहजता से ले कर कुछ समय बाद भूल जाना ही अच्छा होता है.

जब बात गंभीरता से ली जाती है तो कई दिनों तक मुंह फूला रहता है, सहजता समाप्त हो जाती है. तब हर कोई कहने के पहले सोचता है कि 'कहूं या न कहूं.' इस से बातचीत का सिलसिला करीबकरीब बंद हो जाता है. इस वातावरण में किसी का किसी के लिए कुछ करना संभव नहीं होता.

जब प्रेम की प्रतीक छोटीछोटी भावनाओं का आदानप्रदान ही अवरुद्ध हो जाता है तो फिर जीवन भारी लगने लगता है. यही कारण आगे चल कर तलाक का कारण बन जाता है. अकसर तलाक के मामलों में छोटीछोटी बातें ही आधार होती हैं. विवाह टूटने के लिए बड़ेबड़े कारण कम होते हैं, छोटीछोटी बातें ज्यादा, जिन पर समय रहते आसानी से काबू पाया जा सकता है.

पति हो या पत्नी, दोनों प्यार के भूखे होते हैं. कोई चिल्ला कर नहीं कहता कि 'मैं तुम्हें प्यार करता हूं.' यदि इस प्रकार किया जाए तो वह भोंडापन होगा. पर इशारों से, एकदूसरे की आवश्यकताओं पर ध्यान दे कर हम हर कदम पर बताते चलते हैं कि हम आपस में प्यार करते हैं. अतः ऐसा कुछ न किया जाए कि गृहस्थी की गाड़ी को स्निग्धता न मिले. लाख व्यस्तता हो, तब भी छोटेछोटे व्यक्तिगत कामों को न भूलें. जहां इस तरह ध्यान नहीं दिया जाता, वहां चाहे जो भी दर्शाया जाए, अंदर कोमल भावनाएं नहीं होतीं. ये कोमल भावनाएं ही दांपत्य जीवन का एक प्रमुख आधार हैं. ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हें भी आजमाइए

. गरम इस्तिरी से कपड़ों पर जलने के निशान पड़ गए हों तो बोरेक्स और ग्लिसरीन मिला कर लेई तैयार कीजिए और धब्बों या दाग पर लगा कर दो घंटे के लिए रख दीजिए. इस के बाद उसे साबुन वाले गरम पानी से धो डालिए. अगर निशान अधिक बड़ा हो और धब्बा मामूली हो तो एक छोटी चम्मच बोरेक्स थोड़े से पानी में मिला कर धीरेधीरे धब्बों पर मलिए, फिर कपड़े को धूप में सूखने के लिए डाल दीजिए. निशान गायब हो जाएंगे.

यदि कपड़े के रेशे जल कर निकल गए हैं तो धब्बा हटाना मुमकिन नहीं है.

छोटे मुंह वाली बोतल साफ करने में कठिनाई हो तो बोतल के भीतर नमक और सिरका डाल कर दो घंटे तक रखा रहने दें, फिर खूब हिलाएं. बोतल बिलकुल साफ और चमकीली हो जाएगी.

✦

धोने या प्रेस करने से कमीजों के बटनों का रंग धुंधला पड़ गया हो तो उन पर थोड़ा सा जैतून का तेल मलिए और बाद में साफ कपड़े से पोंछ डालिए. बटन फिर चमकने लगेंगे.

—सरिताकुमारी छावछरिया, रांची

✦

शादी या अन्य अवसरों पर बचे हुए लड्डू सूख गए हों तो उन्हें तोड़ कर थोड़ा सा दूध डाल कर गरम कर लें. सूखे लड्डू ताजी बूंदी में बदल जाएंगे. —नरेंद्रकौर, नागपुर ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्थॉल का वचन...

*सौंदर्य का निखार

*मनमोहक सुगंध

*शारीरिक दुर्गंध से रक्षा

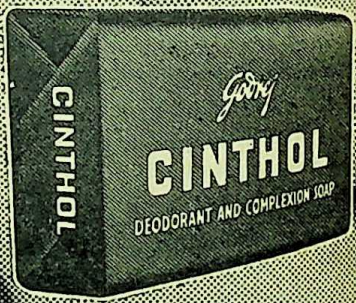

...जो केवल सिन्थॉल ही निभा सकता है.

Interpub/GSCI1/74.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीपियों वाला कुरता

• शकुन

रंगबिरंगी खूबसूरत छोटीछोटी सीपियों का काम आजकल खूब फैशन में है. इन्हें टांकते हुए डिजाइन बनाना भी कुछ मुश्किल नहीं.

सीपी का काम आप एक रंग से बनाएं या कई रंगों से—दोनों तरह से सुंदर लगेगा. एक रंग की सीपियां हों तो काले रंग पर फिरोजी, फिरोजी रंग पर काली और लाल, दोनों, मस्टर्ड रंग पर हरी, आसमानी रंग पर काली आदि खूबसूरत रंगयोजनाओं में नमूने अच्छे लगेंगे या फिर मेल खाते एक समान रंग में ही.

विविध रंगों का नमूना हो तो पृष्ठभूमि हलके रंग की ही लेनी चाहिए. जैसे प्रस्तुत चित्र में गुलाबी क्रेप के कुरते पर लाल, सफेद, फिरोजी, काशनी और काले रंग की सीपियों से घेर के एक किनारे पर एक बड़ा मोटिफ बनाया गया है तथा मुख्य रंग काले की एकएक सीपी से सारे घेर में बुंदकियां फैला दी गई हैं.

गुलाबी रंग पर मुख्य काले रंग को ले कर विविध रंग की सीपियों के काम वाला यह कुरता काले बेलबाटम या गरारे के साथ खूब खिलेगा. आप को जिस रंग के गरारे, शरारे, जीन या बेलबाटम के साथ पहनना हो, सीपियों के डिजाइन में वही रंग मुख्य से आना चाहिए. हलके रंग के टाप या कुरते पर ये बहुरंगी सीप के नमूने खूब खिलते हैं. ●

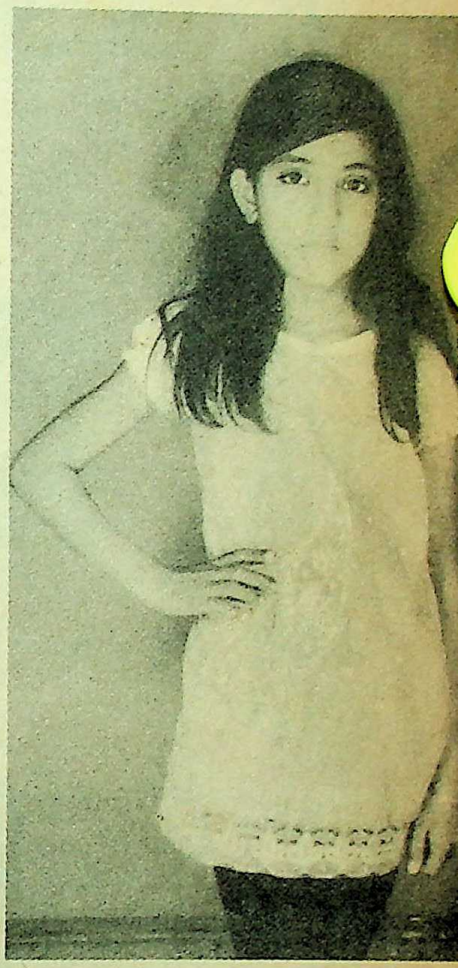

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

डेट धुलाई की टिकिया

सावुनों के मुक़ाबले १½ गुनी ज़्यादा शक्तिशाली
—खारे पानी में भी.

डेट धुलाई का पाउडर

सफ़ेद या नीला— कई साइज़ के पैक में मिलता है.
कपड़ों को इसके घोल में भिगोइये और धो लीजिये.
हाथों को मुलायम भी रखता है.

एन-डेट

दाग़-धब्बे नाशक एनज़ाइमयुक्त
धुलाई का पाउडर, सक्रिय लेकिन हानिरहित.

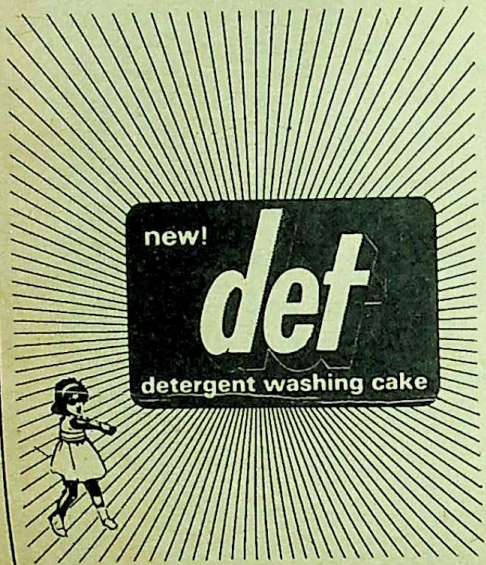

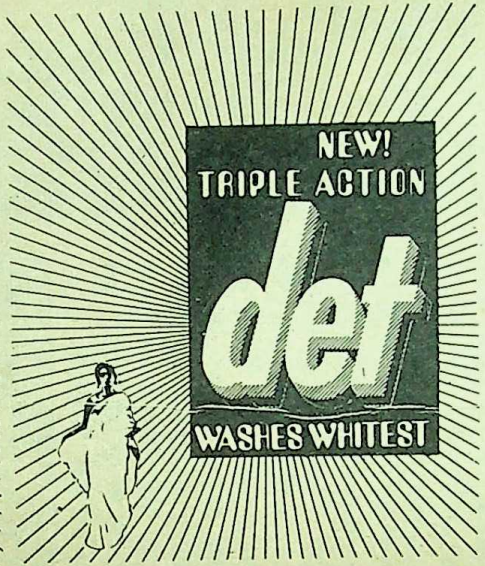

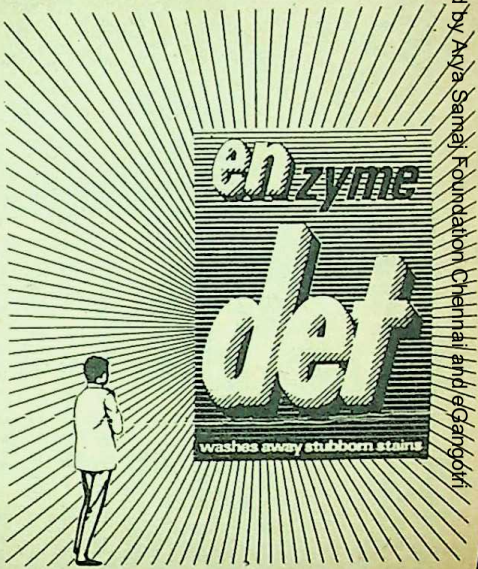

न कभी थी, न मिलेगी; ऐसी सफ़ेदी—डेट उत्तम पदार्थों से

Shilpi HPMA 5A/74 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न कभी थी, न मिलेगी; ऐसी सफेदी—डेट उत्तम पदार्थों से
Shilpi HPMA 8A/74 Hin

बच्चा बिना ताज का बादशाह होता है. माता या अपने बच्चे के संबंध में ऊंची कल्पनाएं करती है—उस का राजा बेटा सुंदर हो, बुद्धिमान और चतुर हो. उस में थोड़ी सी भी कमी उसे असह्य हो जाती है. अपने बच्चे की प्रशंसा करते समय माता उस की प्रगतिहीनता का उल्लेख बड़े कष्ट से करती है.

माता को सब से बड़ी चिंता बच्चे की स्मरणशक्ति के संबंध में होती है, लेकिन यदि उस ने अभी स्कूल जाना आरंभ नहीं किया हो या अभीअभी जाना शुरू किया हो तो उस पर ज्ञान का भारी बोझ लादने की चेष्टा करना उचित नहीं है. अभी उस में शिक्षा के प्रति रुचि होने दीजिए. उसे शिष्टाचार की बातें, सही ढंग से उठना-बैठना, नमस्ते करना आदि सीखने दीजिए.

बच्चे की स्मरणशक्ति कैसे बढ़ाएं?

छाया • प. क. डमरानी

यदि स्मरणशक्ति के संबंध में उस की प्रगति सामान्य है तो चिंता करने की विशेष बात नहीं है, जब उसे अनुकूल और प्रेरणा देने वाला वातावरण मिलेगा तो अपनेआप उचित प्रगति कर जाएगा. उभरते हुए बच्चे को ऊपर उठाने वाला हाथ चाहिए. उसे एक ऐसा सहारा चाहिए जो रोचक रीति से मस्तिष्क पर विशेष बल डाले बिना उस की प्रगति में सहायक हो. बच्चा चाहता है कि उस के आसपास के लोग उस से खेलें और बातें करें और उसे रोचक वातावरण मिले. यदि ये मूल आवश्यकताएं पूरी हो जाएं तो उसे प्रगति करते देर नहीं लगती.

लेख • शिवनंदन कपूर

बच्चे को मांबाप से कहानियां सुनना बहुत भाता है. वह बारबार कहानियां सुनाने या पढ़ने का आग्रह करता है. इस अनुरोध से उस का मनोरंजन ही नहीं होता, उस की स्मरणशक्ति को बढ़ावा भी मिलता है. इस से वह किसी बात या वस्तु के एकएक अंग या भाग से विस्तृत परिचय पाने का अभ्यास करता है. इस प्रकार अंत में उसे एक-एक पंक्ति रट सी जाती है. यदि आप कहें तो वह उसे विस्तार से सुना देगा. यदि आप जानबूझ कर कुछ गलत सुना जाएं या कोई परिवर्तन कर दें तो वह उस में सुधार भी कर देगा. स्मरणशक्ति बढ़ाने का यह भी एक तरीका है.

बच्चे का मस्तिष्क स्पंज के समान सब कुछ सोखने वाला होता है. वह वातावरण, मिलने वाले मनुष्यों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अनुभवों से बहुत कुछ सीखता जाता है. उस के लिए प्रेरणाप्रद वातावरण बनाना आवश्यक है. इस से वह जीवन में शीघ्रता से बहुत कुछ अनुभव प्राप्त कर सकता है और सीख सकता है, लेकिन यदि उस पर सीखने का भार अधिक पड़ जाए, प्रेरणा की सीमा उस की क्षमता से बहुत बढ़ जाए तो उस के कोमल मस्तिष्क को हानि पहुंच सकती है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर बच्चा प्रशंसा और उत्साह का भूखा होता है. इस विषय में सदैव सावधानीपूर्वक उदारता दिखाएं. जब भी आप का बच्चा कुछ याद कर के सुनाए तो उस की तारीफ करना न भूलें. जब आप देखें कि आप की प्रशंसा से उसे प्रेरणा और प्रसन्नता मिली है तो उस का उत्साह बढ़ाते हुए इस प्रकार की कोई और चीज याद करने के लिए कहें. यदि उस ने कोई कविता सुनाई हो तो उसे कोई और रोचक कविता दे दें, यदि कहानी सुनाई हो तो उस से कोई अन्य कहानी याद कर के सुनाने का अनुरोध करें. यदि वह कोई पंक्ति सुनाना भूल जाए तो उसे निरुत्साहित मत करें, और न ही उसे झिड़कें. ऐसा करना उस के लिए घातक होगा. इस से मनोवैज्ञानिक रूप से उस में हीनता की भावना आएगी, उसे अपनी योग्यता पर संदेह होगा और उस में अयोग्यता की भावना बलवती होती जाएगी.

पत्रिका का उप संपादक : अरे, भई, कैसा होचपोच खाना बनाती हो. न चपाती का 'ले आउट' अच्छा है, और न सब्जी की कलर स्कीम. खाना परोसने से पहले मुझे उस की डमी तो दिखा दिया करो.

बच्चा धीरेधीरे अभ्यास करतेकरते अपने ज्ञान का भंडार बढ़ाता जाता है. वह बहुत सी बातें सीख लेता है. कुछ बातें याद कर लेना तो उस के लिए बहुत आवश्यक है—जैसे अपना नाम, पिता का नाम, घर का पता आदि. धीरेधीरे रटातेरटाते वह इन्हें सीख लेगा. फिर आसपास की गलियों में घुमाते हुए उसे उन के नाम स्मरण कराएं. एकदो टेलीफोन नंबर, जो छोटे हों और जिन का याद करना कठिन न हो, उसे याद कराए जा सकते हैं. इस में उस की प्रशंसा भी की जा सकती है. कहा जा सकता है, "मौसीजी का टेलीफोन नंबर तो हमारे यहां बस मुन्ने को ही याद है. बताना तो, बेटे, शाबाश, बहुत अच्छे!" इस तरह टेढ़ी बात भी सरलता से बच्चे को याद कराई जा सकती है. यदि हम उसे संगीतात्मक रीति से गागा कर कुछ रटाएं, उसे मनोरंजक रीति से समझाएं तो कठिनाई पेश नहीं आएगी. अभ्यास और रोचक प्रणाली से वह उसे याद कर लेगा.

बाल गीत

पहले पाठशालाओं में गुरु विद्यार्थियों को लय के साथ पहाड़े आदि रटाया करते थे. निश्चय ही लय से याद करने की परंपरा रोचक ही नहीं, सरल भी है. यदि बाल गीतों के रूप में बच्चों को बातें बताई जाएं तो निश्चय ही वे सरलता से उन्हें सीख लेंगे. इस से उन की स्मरणशक्ति भी बढ़ेगी और वे अधिक से अधिक याद भी करने लगेंगे. इस तरह उन के मस्तिष्क पर जोर पड़ने की अपेक्षा उस में क्षमता ही आती है.

बच्चे को कोई बात याद कराने में सब से बड़ी सहायक उस की मां ही हो सकती है. वह चाहे तो नएनए गीतों या नईनई लयों में बच्चे को बहुत सी चीजें सिखा सकती है. किंतु रटाने या प्रेरणा देने का अर्थ मस्तिष्क पर बोझ डालना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होता. हर बात बच्चे को खेल और गीत के रूप में याद करानी चाहिए, भार के रूप में नहीं. तभी अभ्यास से उस की स्मरणशक्ति का विकास होगा. उस का मस्तिष्क एक अच्छी मशीन के समान कार्य करने लगेगा.

बच्चे ने कोई पाठ रुचि से याद किया है, उस में उसे आनंद आया है. और वह उसे आप को सुनाने के लिए उत्सुक है तो उसे अवश्य सुनिए. इस से उस का उत्साह बढ़ेगा और उसे याद करने की प्रेरणा भी मिलेगी. आप उस के कार्य में जितनी रुचि दिखाएंगे, उस की स्मरण करने और आगे बढ़ने की प्रवृत्ति उतनी ही तीव्र होती जाएगी.

बच्चे में स्मरण करने की जो स्वाभाविक गति है, उसे आवश्यकता से अधिक बढ़ाने की चेष्टा मत कीजिए. उस की स्मरणशक्ति का जो प्रवाह निश्चित हो चुका है, उसे बहुत तीव्र करने की चेष्टा हानिकारक हो सकती है. इस से उस में हीनता की भावना पनपने लगेगी. वह अपने साथ बहुत सी अपरिचित बातों को पचा पाने में अपने को असमर्थ पाने लगेगा. यदि किसी प्रकार उस में आत्मविश्वास का अभाव होता गया तो वह किसी के सामने कुछ सुनाने में घबराहट अनुभव करेगा. यदि एक साथ वह स्मरणशक्ति की कमी के कारण अपना पाठ याद नहीं कर पा रहा है तो उस की सहायता कीजिए, उसे वह पाठ समझा दीजिए. लेकिन उस की सहायता इतनी ही कीजिए, जिस से वह स्वयं भी आगे बढ़ने की चेष्टा करे. आप की पूरी सहायता मिल जाने पर वह एक तो आप पर ही निर्भर हो जाएगा, फिर उस में आत्मविश्वास भी नहीं रहेगा. आत्मविश्वास के अभाव में उस का आगे बढ़ना संभव नहीं है.

बच्चे के विकास के दिनों में उस की मौखिक योग्यता बढ़ना आवश्यक है. वह नित्य प्रति के जीवन में अपने संपर्क में

दाद, एक्ज़ीमा जैसे चकत्तों, स्वार्वों और फुंसियों से आराम पाने के लिए...

इस्तेमाल कीजिये

निक्सोडर्म

निक्सोडर्म एक वैज्ञानिक मरहम है जो त्वचा में अन्दर तक असर करता है और सम्पर्क होते ही कीटाणुओं का नाश करता है। निक्सोडर्म थोड़े ही समय में त्वचा की प्राकृतिक रंगत वापस लाता है।

२ साइज़ों में मिलता है।

और तकलीफ़ न उठाइये, आज ही निक्सोडर्म लगाइये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आने वालों से अनेक शब्द सीखता है. धीरेधीरे उस के शब्दज्ञान को प्रभावशाली बनाया जा सकता है. वह शब्दों का शुद्ध प्रयोग करना सीखता है. धीरेधीरे उन्हें वाक्यों में ढालना भी उसे आ जाता है. कभीकभी वह दो व्यक्तियों की बातचीत में सुने कुछ शब्दों का प्रयोग कर के चकित कर देता है.

बचपन से ही बच्चे में अपना शब्द भंडार बढ़ाने की प्रवृत्ति होती है. कई शब्दों को याद कर के, फिर उन्हें सुना कर वह दूसरों को चकित करना चाहता है. कभीकभी तो किसी के संबंध में कहे गए गूढ़ शब्द, उपनाम या गुप्तनाम भी सुना कर वह विस्मित कर देता है. ऐसा उस समय भी हो सकता है, जब वह व्यक्ति भी उपस्थित हो, जिस का उस बात से संबंध है.

रोचक बात भूलना असंभव

प्रकृति की यह स्वाभाविक देन है कि हम मन को रुचने वाली बात भूल नहीं पाते. रोचक अनुभव, कुछ अरोचक अनुभवों की अपेक्षा मन की सतह पर तैरते ही रहते हैं. संभव हो तो बच्चे को प्रकृति के संपर्क में ले जाएं. झरना, पहाड़ या अन्य वस्तुओं के संपर्क में ले जा कर उसे उन का परिचय दें. फिर उस से उन के बारे में पूछें. उस से बगीचे के कुछ परिचित पेड़ों का परिचय कराएं. सहायता के लिए बाद में उन की पत्तियां सामने रख कर उन के नाम पूछें. यदि वह उस समय न बता पाए तो फिर उसे वहां ले जा कर उन के नाम पूछें. दूसरी बार देखने पर वह अवश्य उन के नाम बता देगा. इस तरह उस की स्मरणशक्ति का विकास होगा. चिड़ियाघर में ले जा कर उसे जानवरों का परिचय कराएं. इस के बाद सरकस में उन्हीं जानवरों को देख कर वह सरलता से उन के नाम बता देगा क्योंकि वहां मस्तिष्क पर हलके और रोचक रूप में पड़ता है. वह उन के खेलों को देख कर प्रसन्नता का भी अनुभव करता है. पशुओं आदि से उसे परिचित कराने में उन के चित्र और खिलौने भी सहायक होते हैं. यदि छोटे बच्चे को किन्हीं पशुओं की बोली सुनवाएं तो उन के चित्र या खिलौने दिखा कर उन की बोली बोलने के लिए कहें. इस से बच्चे की स्मरणशक्ति बढ़ेगी.

नक्शे की सहायता

अपने संबंधियों के शहरों के नाम बता कर बच्चे से उन्हें नक्शे में ढूंढ़ने के लिए कहिए. इस से नक्शे में भी उस की रुचि बढ़ेगी. वह सरलता से याद कर के बता सकेगा कि अमुक स्थान कहां है. धीरेधीरे अन्य प्रमुख स्थानों से भी उस का परिचय कराया जा सकता है. इस क्रिया से उस के परिचय के साथसाथ स्मरणशक्ति की भी वृद्धि होगी.

बच्चे की ज्ञानवृद्धि का प्रयत्न कीजिए, किंतु उस से यह आशा मत कीजिए कि वह आप को सब याद कर के सुना देगा. कभीकभी कुछ बातें प्रत्यक्ष रूप से याद न होते हुए भी अवचेतन मन में समा जाती हैं. अनुकूल अवसर या उस स्थान या वस्तु से साक्षात्कार होने पर उस का स्मरण हो आता है. संगम का परिचय कराए जाने के बाद बच्चा कभी संगम पर जाएगा तो उसे स्मरण हो आएगा कि इस के संबंध में उसे एक बार बताया गया था. शिक्षा और खेल के माध्यम से देखतेसुनते और गुनते हुए उसे अपनी क्षमता बढ़ाने दीजिए.

बच्चे से हर समय यह कहने से उस में हीनता आएगी कि तू सब से पिछड़ा हुआ है, फलां कितना तेज है—किंतु इस के उपाय के प्रयत्न के लिए कुशलता की आवश्यकता होती है, अन्यथा अधिक संभावना इसी बात की होती है कि उस के मन में जीवन भर के लिए हीन भावना की गांठ पड़ जाती है. यह हीन भावना बच्चे के विकास में बहुत बड़ा रोड़ा बन जाती है और वह भविष्य में प्रगति कर ही नहीं सकता. इसलिए जहां तक हो सके बच्चे की तुलना दूसरे होशियार बच्चे से कर के उसे हतोत्साहित न करें. ●

सरिता

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरसात में....

-बेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अब अधिक सजीले सप्ताह के पांच दिन! पीटर पैन द्वारा –

Peter Pan

अलसाया सोमवार?
काहे की सुस्ती! 'क्रॉस योर हार्ट'* में मनचाही चुस्ती। दिनभर, थिरके सांसों में मस्ती! अनूठी पीटर पैन ब्रा की यही तो विशेषता है। सुखद! नाजुक फ़ीता और हल्की फ़ाइबर भरी। कॉटन में भी।

अगर हो मंगलवार, तो निश्चय जानिए...'
बिना 'कॉटोलिना' दिन बेकार।
सदा शीतलता और ताज़गी बनाये रखने का बस एक तरीका। १००% कॉटन। बहुत बारीक, बहुत हलाबना। और अत्यंत शीतल।

बुधवार के लिए बेहतर...
छोटी और सुंदर। आरामदेह 'चोलीब्रा'*

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना 'कॉटीलिना' दिन बेकार।

सदा शीतलता और ताज़गी बनाये रखने का बस एक तरीका। १००% कॉटन। बहुत नाज़ुक, बहुत हल्लाक्स। और अत्यंत शीतल।

बुधवार के लिए बेहतर...

छोटी और सुंदर। आरामदेह 'चोलीब्रा'* छोटी से छोटी चोली में भी बिल्कुल सही ढंग की फ़िटिंग। नाजुक फ़ीता और विशुद्ध नायलॉन वाली।

गुरुवार...बहार ही बहार...

'स्नोफ़्लेक'* के साथ। नायलॉन का फ़ीता। मज़बूत किनारी वाली, अगर आपको यही चाहिए। चाहिए न? अगर नहीं – तो हल्के रंगों में!

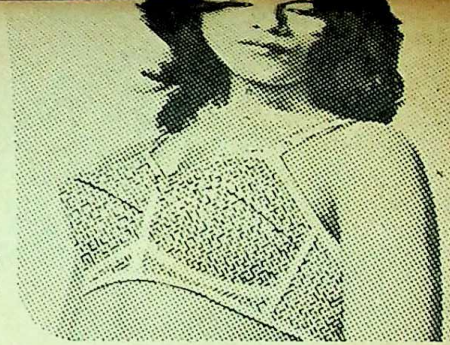

नारी-सुलभ शुक्रवार

सौंदर्यमयी! 'एनचैन्ट्रेस'*। पीटर पैन के ये अनोखे आकर्षण, एक में ही ६ तरह के संयोजन। जैसे चाहिये, पहनिए। सदा सुंदर बनी रहिए। सफ़ेद और काले रंगों में!

और सप्ताह के आख़री दिन? क्या करें, ख़ुद ही कीजिये फ़ैसला। इसमें रविवार का क्या काम भला? हाँ, रह गया शनिवार – तो अपनी पसंद में से कोई भी चुन लीजिये हर बार। सच मानिए, यह तो आप ही जानिए।

पीटर पैन– अमरीका के अग्रणी ब्रा निर्माता

Peter Pan

नारी का एकमात्र सौंदर्य

*एक मेल की पैन्टीज़ के साथ

®रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CHAITRA-PP-65 HIN
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कुछ ऐसा करो...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ ऐसा करो कि
यौवन की चंचल सरिता की तीव्र गति
कुछ धीमी पड़ जाए,
और
इस के द्वारा
यौवन काल की दूरी को
तय करने में लगने वाला समय
कुछ बढ़ जाए.

कुछ ऐसा करो कि
बाहर निकलने की राह न मिलने पर
भाव विभोर मन में भटकते हुए बोलों को
बाहर निकलने की राह मिल जाए,
और
दिल में तीव्र गति से पनपती तुम्हारे प्रेम की अनुभूति
अधरों पर फिसल कर गीत बन जाए.

कुछ ऐसा करो कि
मादकता के बोझ से बोझिल हुआ कल्पना का पंख
कल्पनातीत बुलंद आकाश की बुलंदियों से
प्रयोगात्मक अनुभवों के धरातल पर उतर आए,
और
कुंवारी भावनाओं की क्यारी में
तुम्हारी प्रीति की कली खिल कर पुष्प बन जाए.

कुछ ऐसा करो कि
तुम्हारी महकती हुई सांसें
मेरी गर्म सांसों में घुल जाएं,
और
ठहराव से पूर्व के मधुर इतिहास में
तृप्ति का एक और पृष्ठ जुड़ जाए.

—कुसुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेख • रामकुबेर सिंह

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजाद भारत में ग्रामीण औरतें

जो खुली हवा में सांस लेने के लिए आज भी घुटघुट कर जिंदगी बिता रही हैं...

आजादी के 27 साल बाद भी भारत की अधिकांश आबादी दासता से कहीं अधिक निकृष्ट जीवन व्यतीत कर रही है. इस आबादी में ग्रामीण औरतों का स्थान प्रमुख है. वैसे तो देश की सारी औरतों का दरजा एक सा ही है, पर शहरी औरतों में कुछ चेतना आई है. जिस से उन में कुछ तब्दीली हुई है, लेकिन गांवों में तो कुछ भी फर्क नहीं पड़ा है.

ग्रामीण औरतों को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है : सवर्ण औरतें व छोटी जातियों की औरतें. अवहेलित, दलित और शोषित दोनों हैं, लेकिन दोनों में फर्क है. सवर्णों की स्त्रियां घर की चारदीवारी में कैद रहती हैं. उन का काम सिर्फ बच्चे पैदा करना, पति को खुश रखना और रसोई बनाने तक ही सीमित है. कोई भी राष्ट्र तब तक वास्तव में स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता, जब तक उस की आधी आबादी केवल रसोईघर में और परदे की ओट में रहती हो.

छोटी जातियों की स्त्रियां आम तौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पर खेतों और खलिहानों में काम करती हैं, जिस से उन पर से पर्दे की प्रथा में भी कुछ ढील रहती है. आवारा किस्म के लोग इन औरतों को खेतों और खलिहानों में जाते देख कर गंदे व अश्लील शब्दों का प्रयोग करते हैं, उन के साथ भद्दे किस्म के मजाक करते हैं. कभीकभी ये औरतें कुछ चरित्रभ्रष्ट लोगों की हवस का शिकार भी हो जाया करती हैं. दलित, कमजोर और असहाय होने के कारण वे इस जुल्म को सह भी लेती हैं. उन के पिता, भाई और पति भी देखसुन कर अपनी बेबसी पर आंसू बहा लेते हैं.

छोटी जातियों की औरतें पति के कामों में कंधा से कंधा मिला कर उन की सहायक बनती हैं, लेकिन सवर्णों की स्त्रियां पति पर आश्रित हो कर घर की झूठी मर्यादा और इज्जत के चक्कर में खिलौना बनी रहती हैं.

आधुनिकता या भ्रम?

संपन्नता और आधुनिकता के नाम पर गांवों में एक नई और भ्रामक चीज देखने को मिली है. छोटी जाति की औरतें पहले परदे के बाहर रहती थीं तथा खेतों और खलिहानों में काम करती थीं. लेकिन अब आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी होने पर वह सवर्णों की नकल कर रही हैं और परदे को अपना रही हैं. उन के पति भी अब अपनी पत्नियों को माटीगोबर में काम करते देखना पसंद नहीं करते. सवर्ण औरतों के पुराने ढर्रे के आभूषण पहनने में वे अपनी शान समझती हैं. सवर्णों की स्त्रियां पहले चारदीवारी में काम करती थीं, लेकिन अब कुछ आधुनिकीकरण होने से उन्होंने वह सब छोड़ दिया है. अब वे काम कम करती हैं और सोती ज्यादा हैं. प्राकृतिक वायु के अभाव और खाना बनाते समय लकड़ी व उपले के धुएं से निकलती गैस में रहने से उन की सेहत पर असर पड़ता है, जिस से वे अकसर बीमार रहा करती हैं. गांव का वातावरण स्वास्थ्य के लिए अनुकूल होते हुए भी ग्रामीण औरतें शहरी औरतों से ज्यादा बीमार रहती हैं.

सवर्णों की भी स्त्रियां कहींकहीं आधुनिक परदा प्रथा को छोड़ रही हैं और आधुनिक विचारों को अपना रही हैं. लेकिन दृष्टिकोण बहुत संकुचित होने की वजह से वे हंसी की पात्र बन जाती हैं या अपने आप को बहुत खर्चीली बना लेती हैं. परदा प्रथा को छोड़ने और आधुनिक बनने का मतलब सिर्फ इतना ही रह गया है कि वे पति के साथ बिना परदे के बाहर निकल पड़ी हैं. उलटे पल्ले की साड़ियां पहन रही हैं और फैशन की चीजों का व्यापक रूप से इस्तेमाल कर रही हैं. अगर कभी उन्हें गांव से बाहर जाने का अवसर मिलता है तो वे जो कुछ बाहर देखती हैं, वह सब उन्हें विचित्र सा लगता है. शहरों में पुरुषों और महिलाओं के व्यवहार को देख कर वे शंकित होती हैं. शहरों की चीजें देख कर जब वे अपने गांव वापस जाती हैं तो उलटासीधा व्याख्यान देती हैं और उन सब को अपनाने की कोशिश करती हैं.

शहर की नकल

गांव से शहरों में आई हुई औरतें जब सड़कों पर निकलती हैं तो बहुधा अपनी पहचान करा देती हैं. नकल तो करती हैं शहरी बनने की, मगर आदत और रहनसहन से मजाक बन जाती हैं. पति जब पत्नी को ले कर बाहर निकलता है, तब पत्नी अपनी हरकतों से लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने लगती है. तब पति पत्नी से थोड़ा आगे चल कर लोगों से आंखें चुराने की कोशिश करता है और पत्नी को मन ही मन कोसता है.

ग्रामीण औरतों की समस्याएं बहुत जटिल हैं जिन्हें वे अपनी सहिष्णुता के कारण झेल लेती हैं. सूरज निकलने से बहुत पहले और डूबने के बहुत बाद अंधेरे में वे खेतों में शौच के लिए जाती हैं. उसी समय अगर कोई घर में आ जाए तो रुकना पड़ता है. रास्ते में कोई मिल जाए तो गली के एक ओर खड़े रहना

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमुख हेअर ड्रेसर्स की सिफ़ारिश ग्लीम शैम्पू

बालों के रेशमी निखार और मनचाहे सिंगार के लिए!

नई दिल्ली की हेअर-डिज़ाइनर श्रीमती पी. रॉय ग्लीम शैम्पू से बहुत प्रसन्न हैं। वह कहती हैं, "ग्लीम शैम्पू से बाल बहुत मुलायम हो जाते हैं। लम्बे और छोटे बाल आसानी से सँवारे जा सकते हैं।"

ग्लीम शैम्पू भारी और हलके पानी में एक-सा भरपूर झाग देता है। बालों को पूरी तरह साफ़ करता है। उन्हें रेशम की तरह मुलायम और चमकदार बनाता है।

ग्लीम शैम्पू के इस्तेमाल के बाद आप अपने बालों को बड़ी आसानी से मनचाहे ढंग से सँवार सकती हैं।

और इसकी भीनी-भीनी फ़्रांसीसी सुगन्ध से आपका मन महक उठेगा। पूरी किफ़ायत के लिए ४०० मि.ली. की शीशी खरीदिए।

ग्लीम शैम्पू

भारी और हलके पानी में एक-सा भरपूर झाग देता है

३ साइज़: १०० मि.ली., २०० मि.ली., ४०० मि.ली.

Geoffrey Manners & Co. Ltd.

G.32

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पड़ता है. अगर दिन में बाहर जाने की जरूरत महसूस होती है या बीमार पड़ती हैं तो उन्हें जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, वे अवर्णनीय हैं. बच्चा जनने के वक्त हरिजन महिलाएं, जिन्हें कुछ जानकारी नहीं होती, एक चली आई परिपाटी से बच्चे का नार काटती हैं. वे जिस औजार का प्रयोग करती हैं, वह बहुधा कभी न प्रयोग किया गया, जंग लगा हंसिया होता है, जिस से कभीकभी औरतों अथवा बच्चों की अकाल मृत्यु भी हो जाती है. अगर बच्चे बच भी जाते हैं तो अधिकांश कमजोर और विकलांग हो जाते हैं.

ग्रामीण औरतें सब को खाना खिलाने के बाद स्वयं खाती हैं इसलिए कभीकभी भूखी भी रह जाती हैं. पुरुषों को इस की परवा ही नहीं रहती कि उन के यहां बने भोजन की कितनी मात्रा है और उसी में औरतें भी खाने वाली हैं. गरीब घर की औरतें तो पति और बच्चों को खिला कर आंसू पी कर भी सो जाती हैं. पता नहीं, वे किस भावना से प्रेरित होती हैं. जब तक पति और घर के अन्य पुरुष नहीं खा लेते, वे इंतजार करती रहती हैं. पहले खा लेना वे पाप समझती हैं. अगर खा लेती हैं तो बूढ़ी औरतों की प्रताड़ना और पुरुषों की फटकार का शिकार होती हैं.

गांवों में लोगों के मुख से सुनने को मिलता है, "बैल खबोर सुभागे का, मेहर खबोर अभागे का." कहने का मतलब यह कि इन का शोषण करते हुए इन्हें इतना कमजोर, अवहेलित एवं परा-

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालतूपशुपक्षियों का स्वास्थ्य निरीक्षण

कब, क्यों और कैसे?

कुत्ता, बिल्ली, खरगोश, मुरगी, तोता, मैना आदि पशुपक्षी पालने का शौक तो बहुत से लोगों को होता है, लेकिन अकसर देखा गया है कि जब तक उन का पाला हुआ पशु या पक्षी काफी बीमार नहीं हो जाता, वे उसे पशुचिकित्सक के पास नहीं ले जाते. इस से उस की बीमारी गंभीर रूप ले लेती है और उसे ठीक होने में काफी समय और धन खर्च हो जाता है. कई बार तो अपने पालतू पशु या पक्षी से हाथ भी धोना पड़ जाता है. पशु अत्याचार निरोधक कानून के अनुसार बीमारी की अवस्था में पशु या पक्षी का वांछित इलाज न करवाना भी उस पर अत्याचार करना ही है. इसलिए यह आवश्यक है कि पालतू पशुपक्षियों का स्वास्थ्य निरीक्षण नियमित रूप से करवाया जाए. यदि किसी रोग के लक्षण प्रारंभिक अवस्था में ही ज्ञात हो जाएं तो उन का इलाज ठीक प्रकार से व शीघ्र हो सकता है.

जब भी कोई पशु अथवा पक्षी पालने के लिए लिया जाए, उस का पशुचिकित्सक से निरीक्षण अवश्य करवा लिया जाए. जिस व्यक्ति से कोई पशु या पक्षी लिया जाए, उस से उस के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त कर ली जाए. और साथ ही यह भी कि उसने कबकब, कौनकौन से टीके लगवाए गए हैं.

जहां तक संभव हो सके, पालतू पशुपक्षी की चिकित्सा व स्वास्थ्य निरीक्षण एक ही पशुचिकित्सक से करवाना चाहिए, क्योंकि उस के पास उस पशुपक्षी के स्वास्थ्य व बीमारियों के बारे में पूर्ण जानकारी रहती है और वह सुविधापूर्वक उस की चिकित्सा कर सकता है. पशुपक्षी को कब क्या बीमारी हुई है, उसे कौन सा टीका लगवाया गया या क्या दवाई दी गई, आदि सभी बातों का विवरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रयी बना दिया गया है.

औरतों के चार रूप होते हैं : बेटी, बहन, पत्नी और मां. ये रिश्ते बहुत पवित्र और ये संबंध बहुत निकट के हैं. तब भी इन पर पुरुष समुदाय का विश्वास नहीं रहता है, जिस के फलस्वरूप बेटी और बहन की बाप और भाई, पत्नी की पति और मां की बेटे रखवाली करते हैं.

गांवों में औरतों की शिक्षा का कोई उचित प्रबंध नहीं है. लड़के तो दूरदूर जा कर पढ़ लेते हैं लेकिन लड़कियां अकसर शिक्षा से वंचित रह जाती हैं. कुछ ही लड़कियां, जिन का शहरों में कोई नाते-रिश्तेदार रहता है, पढ़ पाती हैं. अधिकांश गांवों में लोग लड़की को पांचवीं अथवा आठवीं से ज्यादा पढ़ाना बुरा मानते हैं लेकिन वही लोग आज पढ़ीलिखी बहुओं को प्राथमिकता देते हैं.

शिक्षा के साथ उन के मनोरंजन का भी कोई प्रबंध न होने से वे झगड़ा कर के मनोरंजन करती हैं और मन की भड़ास निकालती हैं. खाली दिमाग शैतान का घर होता है, इसलिए उन के दिमाग में भी शैतानियत का जहर पनपता है, जिस से वे कभीकभी घरेलू वातावरण को भयानक बना देती हैं. गांवों में कुछ औरतें ही घर की चारदीवारी से बाहर निकलती हैं, किंतु उन का काम सिर्फ एकदूसरे की शिकायत और चरित्र हनन के सिवा कुछ नहीं रहता. इन का प्रलाप विचित्र ढंग का होता है. पहले जो शोषित और शासित होती हैं, वही बूढ़ी होने पर शोषण और शासन में प्रमुख

पशुपक्षी पालने वालों को स्वयं ही रखना चाहिए.

आम तौर पर पशुपक्षी के स्वास्थ्य निरीक्षण में उस के शरीर का तापमान; हृदय का स्पंदन; आंख, नाक, कान, दांत, पांव और त्वचा आदि देखी जाती हैं. कभी-कभी उस के रक्त और मूत्र का निरीक्षण भी होता है. चिकित्सक पशु के दांतों में जमी मैल को हटा कर उसे दंत रोगों से बचा सकता है. यदि पशु अथवा पक्षी के वजन का मामला हो तो वह उस के लिए आहार तालिका भी बना कर दे सकता है.

पशुपक्षी की उमर बढ़ने के साथ ही वर्ष में दोतीन बार उस का स्वास्थ्य निरीक्षण करवाना आवश्यक होता है. उमर बढ़ने के साथ उसे अधिक बीमारियां होने की आशंका रहती है. किसी रोग के लक्षण नजर आते ही उस की चिकित्सा आरंभ हो जानी चाहिए. यदि पशु अथवा पक्षी को उठनेबैठने में कष्ट होता हो, वह सुस्त हो, उस की आंख, नाक या कान से द्रव्य बहता हो, उस की लार टपकती हो, उस की सांस में बदबू आती हो या उसे खुजली होती हो तो समझना चाहिए कि वह बीमार है.

कुत्ता पालते समय किसी से कुत्ता लेने से पहले उस की नस्ल की शुद्धता की जांच करनी आवश्यक है. यह भी जानना चाहिए कि उस के मातापिता को कबकब, कौनकौन से टीके लगे. पिल्ला चमकीली आंखों और सुंदर त्वचा वाला हो. कान खड़े रखने वाला कुत्ता ही लें. इन गुणों का अभाव उस की मंदबुद्धि का परिचय ही होगा.

पिल्ले को चार माह तक की अवस्था तक स्नान नहीं करवाना चाहिए. उस के आहार में दूध की मात्रा ही अधिक हो. समयसमय पर आवश्यक दवाइयां या टीके भी लगवाने चाहिए. —करुणा सेठी ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भूमिका निभाती हैं. इन के सामने नई पीढ़ी की औरतें अपने पति से खुल कर बात नहीं कर सकतीं. अगर कोई औरत ऐसी हिम्मत करती है तो उस के व्यवहार पर वे दांत तले अंगुली दबा लेती हैं और जहां उस से उन की पटती नहीं, वहां उस के प्रति तमाम अफवाहों का जाल बुन डालती हैं. ये बूढ़ी औरतें उस से ज्यादा संतुष्ट रहती हैं, जो उन का खयाल रखती व चापलूसी करती है. वे ऐसी मनपसंद बहुओं के उदाहरण देदे कर दूसरी बहुओं और बेटियों की नाक में दम कर देती हैं.

गांवों में लड़कियों की शादियां भी अपनेआप में एक बहुत बड़ी समस्या हो गई है. दहेज प्रथा उन के लिए अभिशाप बन गई है. लड़कियों की शादी में सामर्थ्य से ज्यादा खर्च करना पड़ता है, जिस से उन के मातापिता की स्थिति डांवाडोल हो जाती है और वे कर्ज के शिकार हो जाते हैं. लड़के वाले इतने खुले ढंग से लड़कों की कीमत लगाते हैं कि वह सब एक भद्दे किस्म का प्रहसन प्रतीत होता है. लेकिन उस में ही उन की इज्जत होती है और उन के बड़प्पन का स्वरूप बनता है. इस कुप्रथा के कारण कुछ लड़कियों की शादियां उन के जीवन के साथ खिलवाड़ हो जाती है. विडंबना तो यह है कि इसे सभी लोग कुप्रथा कहते हैं, लेकिन अपने मौमले में लड़की वालों का जम कर शोषण करते हैं या दिखावे के चक्कर में बरसों की खूनपसीने की कमाई एक दिन में उड़ा देते हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दहेज प्रथा

इस कुप्रथा से बचने के दो ही तरीके हो सकते हैं. एक तो लड़कों की शादियां छोटी उमर में न हो कर बड़े होने पर होनी चाहिए, जिस से वे मांबाप के हाथ की कठपुतली न बन कर इस कुप्रथा का प्रतिकार कर सकें. दूसरा तरीका यह है कि लड़कियां दहेज ले कर शादी करने वालों के लिए अपने दरवाजे बंद कर दें. यद्यपि यह रास्ता उन के लिए महंगा पड़ेगा, मगर सामर्थ्यवान होगा. उस से लड़कियों को अनेक उपाधियों से 'विभूषित' किया जाएगा और उन के चरित्र पर सीधा प्रहार होगा, लेकिन यह तरीका बहुत हद तक सफल होगा. यह तभी संभव होगा, जब लड़कियों में काफी चेतना आ जाएगी और उन में शिक्षा का विकास होगा और बुराभला समझने की सामर्थ्य होगी.

शादी विवाह में भी सवर्णों और छोटी जातियों में फर्क होता है. शादियां दोनों में खर्चीली हो रही हैं, लेकिन छोटी जातियों में कुछ जातियां ऐसी हैं जिन में यह तय है कि इतने से ज्यादा कोई खर्च नहीं कर सकता. मगर सवर्णों में कम खर्च करने से मानो इज्जत चली जाती है. छोटी जातियों में अगर पति का देहांत हो जाता है तो औरत की दूसरी शादी भी हो जाती है, मगर सवर्णों में शादी के तुरंत बाद भी अगर पति का देहांत हो जाए, तब भी औरत द्वारा दूसरी शादी करना पाप है. उसे विधवा जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य किया जाता है. सिर्फ इतना ही नहीं, उसे अनेक विशेषणों से विभूषित किया जाता है और तथाकथित शुभ कार्यों में उस की अवहेलना की जाती है. ●

सरिता

दांतों को स्वस्थ व सुंदर बनाने के लिए

टुथ पाउडर

वितरक : हंसराज एण्ड कं.
240 पोस्ट आफिस स्ट्रीट, सदर बाजार, दिल्ली-6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर औरत, वो कसमसाहट भरे दिन भूल जाना
चाहती है और केवल कम्फ़िट ही आपकी सारी
बेज़ारी खुद समेट कर आपको चिन्ता मुक्त बनाता है।
अपने से दस गुणा ज़्यादा तरल सोखने वाला
कम्फ़िट, अपने काम में भी पांच गुणा
तेज़ है। नर्म, मुलायम और सुडौल—न बेढ़ौल
उभारों की परेशानी, न हिचकिचाहट! इस्तेमाल के बाद
पानी में बहा दीजिये—घुला दीजिये—भुला दीजिये!
कम्फ़िट सेनिटेरी टॉवल—
खुद को ज़ाहिर न करने वाला राज़दार!

क्रिस्टीन होडन (इंडिया) लि., कोर्तालिम्, गोवा का एक उत्कृष्ट उत्पादन

AIYARS-CH. 4 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीज़ब्रो-पॉण्ड्स इन्कॉर्पोरेटेड (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में संस्थापित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगों का फड़कना

लेख • हरकृष्ण

शुभ या अशुभ?

अभी कुछ दिनों पहले की बात है कि मेरे एक मित्र किसी ऊंची पदवी के लिए प्रार्थनापत्र भेजने जा रहे थे कि उन्हें सामने से एक तिलकधारी ब्राह्मण पूजा की थाली ले कर आते हुए मिले और साथ ही उन की दाईं भुजा भी फड़कने लगी. यह सब शगुन देख कर वह इतने प्रसन्न हुए कि मेरे कहने पर भी उन्होंने साक्षात्कार के लिए विशेष तैयारी नहीं की. परिणामस्वरूप उन्हें असफलता ही हाथ लगी.

एक बार जब मैं ने एक नाटक का निर्देशन अपने हाथ में लिया तथा उस के लिए कलाकारों का चयन कर ही रहा था कि एक सज्जन को, जो वहां बैठे थे, छींक आ गई, जिसे सब लोगों ने बुरा माना तथा नाटक की सफलता में संदेह व्यक्त किया. जब हम लोग उस का स्टेज रिहर्सल करने के लिए रंगमंच की ओर जा रहे थे तो एक बिल्ली, जो हमारे पड़ोसी सिविल इंजीनियर ने पाल रखी थी, हमारा रास्ता काट गई. उसी समय हमें यह भी खबर मिली कि हमारा प्रमुख कलाकार फ्लू की चपेट में आने से बीमार पड़ गया है. इस से सब लोगों ने नाटक न खेलने की सलाह दी. मैं फौज में काम कर चुका था. अगर वहां मैं इन चीजों की तरफ ध्यान देता या किसी आदेश पालन से पहले अच्छे शगुन का इंतजार करता तो शत्रु की गोलियों से स्वर्गलोक पहुंच जाता अथवा मेरा कोर्ट मार्शल हुए बिना न रहता. मैं अपने निश्चय पर दृढ़ रहा और मैं ने एक नया कलाकार ले कर वह नाटक प्रस्तुत कर दिया, जो अब तक मेरे द्वारा निर्देशित सब से अच्छा नाटक बन पड़ा.

इस से साफ प्रकट होता है कि शकुन और अपशकुन केवल अंधविश्वास हैं, जो मनुष्य को आलसी तथा अकर्मण्य बना देते हैं. हमारे शास्त्रों में, खास कर ज्योतिषशास्त्र में, शकुनों का विस्तृत वर्णन किया गया है. उन में अंगों के फड़कने को बहुत महत्त्वपूर्ण बताया गया है. ऐसा सोचा जाता है कि पुरुष का दाहिना तथा स्त्री का बायां अंग फड़कना शुभ होता है और कोई अच्छी खबर मिलती है. इसी प्रकार पुरुष का बायां अंग तथा स्त्री का दाहिना अंग फड़कना अशुभ माना गया है.

मैं ने पिछले एक वर्ष से अपने ऊपर इस का प्रयोग किया. जब भी मेरा बायां या दाहिना अंग फड़कता था तो मैं उस दिन तथा समय को नोट कर लेता था. उस के बाद एक महीने तक कोई भी अच्छी या बुरी घटना नोट कर लेता था. मैं ने देखा कि पिछले एक वर्ष में मेरे बाएं अंग कोई 215 बार फड़के, जिस के दौरान एक बार मुझे बहुत तेज ज्वर हुआ तथा दूसरी बार एक महीने के अंदर मेरी बहुत दिनों से रुकी हुई तरक्की मिल गई. मेरे दाहिने अंग कोई 74 बार फड़के, जिस के दौरान तीन घटनाएं हुईं, एक बार जिस बस में मैं यात्रा कर रहा था, वह दुर्घटनाग्रस्त होतेहोते बची. दूसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बार पानी की खराबी के कारण वर्षा के दिनों में पेट में कुछ शिकायत हुई जो काफी दिनों के बाद ठीक हुई. तीसरी तथा अंतिम बार मेरे एक टेकनीकल लेख की एक इंटरनेशनल मैगजीन में छपने की स्वीकृति प्राप्त हुई. बाकी समय में कोई विशेष बात नहीं हुई.

इस से स्पष्ट है कि अंगों के फड़कने का अच्छी या बुरी घटनाओं से कोई संबंध नहीं है. यह केवल स्नायु उत्तेजनाओं से हमारी शारीरिक क्रियाओं पर होने वाला एक प्रभाव है. यह तो आप को कोई भी डाक्टर बता सकता है कि हमारे शरीर के दाहिने अंगों का संचालन मस्तिष्क के बाएं भाग से होता है और बाएं भाग का संचालन मस्तिष्क के दाहिने भाग से. चूंकि अधिकतर लोग अपने दाहिने हाथ का प्रयोग करते हैं इसलिए दाहिने अंगों का फड़कना शुभ समझा जाता है जब कि वह किसी कारणवश बाएं भाग में स्थित स्नायुमंडल की उत्तेजना के कारण ही होता है.

चूंकि हमारे रूढ़िवादी समाज तथा हिंदू शास्त्रों में स्त्री को पुरुष के समान अधिकार नहीं दिए गए और साथ ही उसे पुरुष का आधा अंग मान कर उसे उस के बाएं भाग में ही बैठने का अधिकार दिया गया है इसलिए स्त्रियों के लिए उन के बाएं अंग के फड़कने को ही शुभ माना गया है.

आशा है कि इस लेख को पढ़ कर पाठक शरीर के अंगों के फड़कने को एक साधारण बात समझेंगे तथा उस से अपने हृदय में आशा या निराशा का भाव नहीं आने देंगे. ●

पासा पलट गया

मेरा शुद्ध शाकाहारी होना मेरे मांसाहारी मित्रों के लिए बड़े मजाक का विषय रहता है. संस्कारों के कारण कहिए या मेरी कमजोरी कहिए, आमिष भोजन पर चर्चा होते ही मुझे उबकाई आने लगती है. इस उबकाई पर ही मेरे मित्र मजा लेते हैं.

एक बार मित्र मंडली गप्पों में मशगूल थी कि राजेश आ धमका. मुझे छेड़ने की गरज से बोला, "बस, मजा आ गया लंच में. क्या खूब पका था. आज तो जम कर सूअर खाया."

अचानक मेरे मुंह से निकल गया, "और सूअर ने क्या खाया था?"

मेरी बात पर सारे दोस्त एक क्षण के लिए हतप्रभ रह गए. फिर हंसी का एक फव्वारा छूटा.

"राजेश, बतलाता क्यों नहीं, सूअर ने क्या खाया था?"

राजेश इस बार मुंह बिगाड़ कर खिसक गया. —देवेश सिंगी, भोपाल

मेरे एक मित्र बहुत ही मेहनती हैं. नौकरी के साथसाथ उन्होंने आय के और भी साधन बना रखे हैं. इसलिए वह बहुत व्यस्त रहते हैं. इस व्यस्तता के कारण उन्हें अकसर दाढ़ी बनाने का ध्यान ही नहीं रहता.

एक दिन उन के बहुत ही निकट के एक अन्य मित्र ने उन की बढ़ी हुई दाढ़ी देख कर 30 पैसे बढ़ाते हुए व्यंग्यात्मक ढंग से कहा, "लो, 30 पैसे और पहले दाढ़ी बनवा लो, फिर तुम से बात करेंगे."

उन्होंने भी मुसकराते हुए 30 पैसे ले लिए और पास की नाई की दुकान में जा कर दाढ़ी बनवा ली.

कुछ दिन बाद उन की दाढ़ी फिर बढ़ गई और संयोग से फिर उसी मित्र से मुलाकात भी हो गई. इस बार उन्होंने मुसकरा कर कहा, "यार, मेरी दाढ़ी फिर बढ़ गई है. 30 पैसे दे दो, दाढ़ी बनवा लूं. फिर बात करेंगे."

इस बार उस मित्र का चेहरा देखते ही बनता था. ●

—हीरालाल साहू, लेंजवारा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

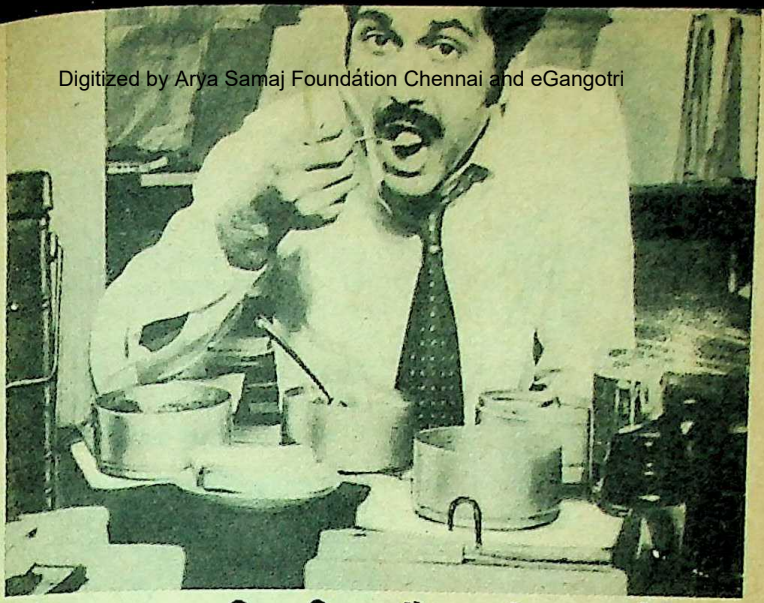

क्या आप विटामिन और खनिज पर्याप्त मात्रा में नहीं ले रहे ?

प्रतिदिन केवल एक 'विटामिनेट्स' फ़ॉर्टे आपकी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है

विटामिनों की कमी ? जी हां, अच्छे से अच्छे खाने में भी विटामिनों और खनिजपदार्थों की कमी बनी रह सकती है. आपके मामले में भी यह संभव है. और आपको इसकी खबर भी नहीं होती. आपको पता तब चलता है जब काफ़ी देर हो चुकी होती है. आपके जैसे परिश्रमी व्यक्ति के लिए अच्छा स्वास्थ्य और शक्ति परम आवश्यक है. सब तरह से स्वस्थ और शक्तिशाली बने रहने के लिए शरीर को चाहिए संतुलित आहार. प्रतिदिन केवल एक 'विटामिनेट्स' फ़ॉर्टे सभी आवश्यक पुष्टि प्रदान करती है— ११ विटामिन तथा ५ खनिज. १५ पैसे से भी कम खर्च में रोज़ाना ज़रूरत के सभी आवश्यक तत्त्वों की पूर्ति. वे सब जिनसे शरीर स्वस्थ और सतेज रहता है.

अपने पास की दवा-दुकान से आज ही
'विटामिनेट्स' फ़ॉर्टे लीजिए.
दिन की शुरुआत सही ढंग से कीजिए.
यानी 'विटामिनेट्स' फ़ॉर्टे से कीजिए.

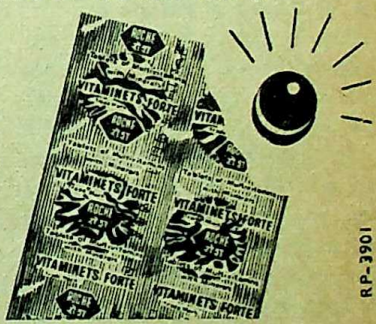

RP-3901

'विटामिनेट्स' फ़ॉर्टे

ट्रेडमार्क रोश

—जीवन-शक्ति से भरपूर चमकदार लाल टिकिया

'रोश' उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाल से बिछुड़े

मैं चौंक पड़ी. मेरे सामने पड़ी छोटी सी मेज पर फटाक से अखबार आ गिरा.

"यह लीजिए. शहद लगा कर इसे चाट लीजिए."

दीपक अखबार पढ़ चुका था. चूंकि मैं ने उस से अखबार वापस कर जाने का अनुरोध किया था, इसी लिए वह क्रोध में भर कर उसे मेरे सामने पटक कर चला गया था.

मैं बुरी तरह उखड़ गई. पर मेरे उखड़ने से क्या बनता. जब मम्मीपापा ने ही मुझे समझने से इनकार कर दिया, सच बोलने की सजा दी, तो मैं दीपक को क्यों दोष दूं?

नैनीताल से लौट कर मैं विचित्र सी उलझन में फंस गई थी. क्या घर वालों को सब कुछ साफसाफ बता दूं या सारा किस्सा छिपा जाऊं?

जब मैं नैनीताल से चली थी तो मैं ने शेखर की आंखों में क्रोध, निराशा तथा घृणा की फूटती चिंगारियों को स्पष्ट रूप से देखा था. कहीं बदले की भावना से वह मुझे ब्लैकमेल न करे. मैं भयभीत थी.

दूसरे, मुझे लगता था कि उस झूठ और असफल प्रयोग के बोझ को मैं अकेली हमेशा के लिए उठा नहीं सकूंगी.

कई रातों तक मैं सो न सकी. तब मुझे उस सचाई का आभास हुआ कि मन में छल-

मम्मी मेरी मनोदशा ताड़ गई थीं. इस का कारण था, मैं पंदरह दिन के लिए नैनीताल गई थी और तीसरे दिन ही वापस आ गई थी.

कई दिन तक मम्मी मुझे कुरेदती रहीं. आखिर झूठ का बोझ ढोना मेरे लिए असह्य हो गया. मैं ने मम्मी को सब कुछ साफसाफ बता दिया.

बस, फिर क्या था. घर में कोहराम मच गया. मम्मी ने अपना सिर पीट डाला. पापा का हाथ मेरे ऊपर उठ गया. दीपक ने जैसे मुझ से नाता ही तोड़ लिया.

मैं रोती रही और सोचती रही, 'कैसी विडंबना है. मैं ने झूठ बोला तो मुझे नैनीताल जाने की आज्ञा मिल गई. वहां से लौट कर मैं ने सच बोला तो मुझे सजा मिली.'

रीना नैनीताल से लौटी तो मम्मी ने अपना सिर पीट बैठे...आखिर रीना को हो

यह कैसा न्याय है? यह कैसा विधान है, जहां झूठ की जीत होती है और सचाई की हार? मेरी मान्यताओं को जबरदस्त धक्का लगा था.

मैं परिवार में सिर्फ रहती थी. मेरा व्यक्तित्व नष्ट हो चुका था. शायद पापा ने मेरे विवाह के विषय में भी सोचना छोड़ दिया था.

फिर इस विज्ञापन के विषय में क्या करूं? क्या पापा से कहूं? यदि वह पत्र लिखने को राजी न हुए तो?

मैं ने फैसला कर लिया, अपने भविष्य का निर्णय मैं खुद करूंगी.

मैं उठी, अंदर गई, सारा सामान ले आई. पत्र लिख डाला. अपनी फोटो साथ में संलग्न कर दी. लिफाफा बंद कर के उसे नौकर के हाथों पोस्ट करा दिया.

तभी मैं ने देखा, पापा तैयार हो कर कहीं बाहर गए हैं. आज तो इतवार है. पापा इतनी सुबह कहां गए हैं? मैं उलझ गई. कुछ समझ में नहीं आया. पूछूं भी तो किस से? कई बार जी चाहता कि मम्मी से बातें करूं. पर अकसर मेरा स्वाभिमान आड़े आ जाता है.

कैसी विवशता है.

तभी रामू चिट्ठी डाल कर वापस आ गया.

"पापा कहां गए हैं, सुबह ही सुबह?" मैं

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या?"

"आगरे वाली बहनजी आ रही हैं."

"दीदी आ रही हैं?" मैं खड़ी हो गई.

"हां. साहब उन्हीं को लेने स्टेशन गए हैं."

"पर, रामू, इस समय आगरे से कौन सी गाड़ी आती है?"

"बहनजी आगरे से नहीं, कश्मीर से आ रही हैं."

"कश्मीर से? वह कश्मीर कब गईं?"

"कोई एक महीना पहले."

"पर दिल्ली हो कर तो गईं नहीं?"

"सीधी चली गई थीं."

मेरा मन कसक गया. यदि मैं किसी से कहूं कि मुझे घर की इतनी भी गतिविधि का पता नहीं रहता तो क्या कोई विश्वास करेगा? बहन

घर में तूफान खड़ा हो गया... साला और पापा सुधबुध खो बैठा गया है?

छोड़ गई है. अब वापस आ रही है, पर उस छोटी बहन को पता नहीं.

कितनी अविश्वसनीय, अनहोनी सी बात है. पर मेरे लिए तो यह एक कटु वास्तविकता है. किस सीमा तक इन लोगों ने मुझे निर्वासित रखा है.

रामू अभी भी खड़ा था.

मुझे कुछ खयाल आया. मैं ने पूछा, "साथ में जीजाजी और बच्चे भी होंगे?"

"जीजाजी तथा सब से छोटा बेबी है."

"ठीक है," कह कर मैं उदास सी हो गई. नैनीताल वाली घटना के बाद तो दीदी से सामना नहीं हुआ, पर उन्हें पता तो चल ही गया होगा. पता नहीं वह क्या सोचती होंगी. न जाने वह कैसा व्यवहार करें? मेरा मन दुविधा में पड़ गया.

मैं उठी. दीदी के आने से पहले नहाधो कर तैयार तो हो जाना चाहिए.

मैं कपड़े ले कर बाथरूम में घुस गई. सारा शरीर पसीने से चिपचिपा रहा था.

मैं शावर के नीचे खड़ी हो गई. शीतल जल के नीचे मुझे आज बड़ा अच्छा लग रहा था.

फिर भी मेरे मन में एक अनाम रहस्य ने कर-

कोई चिंता नहीं करते. वह अपनी जिंदगी से इतनी ऊब गई हैं कि बस मर जाने को जी चाहता है.

और अब? पतिपत्नी कश्मीर की सैर कर के आ रहे हैं. जब तक एकदूसरे से प्रेम न हो, ऐसे पर्यटन का आयोजन कैसे हो सकता है?

तभी मुझे याद आया, नैनीताल के उस कमरे के वह दंपति, जो पिछली शाम को एकदूसरे को जहन्नुम भेज रहे थे और दूसरी सुबह खूब खिलखिला कर हंस रहे थे.

यह विवाहित जीवन क्या पहेली है? यह कैसा रहस्य है? यह कैसा आकाश पटल है जिस में पलपल में रंग बदलते रहते हैं?

दीदी आ गईं.

घर का जैसे सारा माहौल ही बदल गया. ठहरेठहरे, स्तब्ध, घुटन भरे वातावरण में जैसे बहारों के फूल खिल उठे. दीदी मां से लिपट कर मिल रही थीं. दीपक ने दीदी के बेबी को गोद में उठाया हुआ था. वह कभी उसे प्यार करता, कभी हवा में ऊपर उछाल देता, कभी उसे चूम लेता.

मैं ड्राइंगरूम के एक कोने में खड़ी चुपचाप इस मधुर मिलन के दृश्य को एकटक देख रही थी.

"क्यों बेचारे को तंग कर रही हो? जाती क्यों नहीं?" सुन कर मैं भीषण रूप से चौंक पड़ी.

जीजाजी मेरे सामने खड़े थे. उन्होंने अपने दोनों हाथों से मेरे कंधों को जकड़ रखा था. जीजाजी की बात मेरी समझ में नहीं आई. मैं प्रश्नसूचक दृष्टि से उन की ओर देखती हुई बोली, "मैं समझी नहीं, जीजाजी, आप किस का जिक्र कर रहे हैं?"

"अरे, उसी बेचारे का, जिस के पास तुम्हें हमेशा के लिए जाना है. पता नहीं बेचारा कहां खाता होगा? अकेला रातें कैसे बिताता होगा?

पूर्वकथा : सात समुंदर पार की दुनिया के मादक और स्वप्निल सपनों को साकार करने के लिए रीना ने शेखर के साथ स्वच्छंदतापूर्ण जीवन बिताने का विचार तो किया था, पर शीघ्र ही उस का असली रूप उभर आया और वह ऊब कर घर लौट आई...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जीजाजी की अर्थपूर्ण मुसकराहट ने मुझे सब कुछ समझा दिया. मैं ने हंसते हुए धीमे स्वर में कहा, "क्या बात है?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कब तक चलेगी यह तलाश?"

"जब तक वह मिल नहीं जाता."

"कब मिल रहा है?"

"आप भी तलाश में मदद कीजिए न." मैं बेशर्मी पर उतर आई.

"लालाजी, कपड़े बदलिए. नहाधो कर नाश्ता कर लीजिए," मम्मी ने जीजाजी से कहा. शायद उन्हें उन का मेरे साथ इस प्रकार घुल-मिल कर बातें करना अच्छा नहीं लग रहा था.

जीजाजी हट गए तो दीदी आईं और मुझे अपने वक्ष से चिपका, मेरे बालों पर हाथ फेरती हुई, प्यार भरे स्वर में बोलीं, "क्या हाल है तेरा, रीना?"

मैं ने महसूस किया, दीदी मोटी और काफी गुदगुदी हो गई हैं. वह बहुत दिनों बाद मिली थीं. मैं अभिभूत हो बोली, "बस जिंदा हूं, दीदी."

"क्यों, ऐसी क्या बात है?"

"तुम्हें नहीं पता?"

"पता तो है, पर उस में...खैर, दोपहर को हमारी बातें होंगी."

"ठीक है."

सब लोग नहानेधोने, नाश्ता करने में जुट गए. मैं मेहमानों की देखभाल करने में मम्मी का हाथ बंटा रही थी. उन्होंने प्रतिवाद नहीं किया.

दोपहर का खाना खत्म कर के मर्द लोग एक कमरे में और महिलाएं दूसरे कमरे में चली गईं.

दीपक पढ़ाई में लगा था. पापा और जीजाजी व्यापार के विषय में बातें कर रहे थे. मम्मी शायद थक गई थीं, इसलिए वह आंखें मूंद कर लेटी थीं. शायद उन्हें झपकी आ गई थी.

मैं और दीदी नीचे फर्श पर लेटे थे.

"तू ने ऐसा क्यों किया, रीना?"

"दीदी, एक नए प्रयोग की सनक सवार हो गई थी."

"नया प्रयोग?"

"हम दोनों चाहते थे कि हमारा विवाह असफल न हो, इसी लिए हम ने सोचा, क्यों न उस का परीक्षण कर लिया जाए?"

दीदी गंभीर हो गईं. भारी स्वर में बोलीं, "रीना, विवाह एक ऐसा फल है, जिसे खरीदने से पहले चख कर नहीं देखा जा सकता. तुम ने को देख कर भयभीत हो गई थी."

"रीना, हर विवाह एक जुआ है, एक संयोग, अंधेरे में छोड़ा तीर भी कह सकती हो उसे. विवाह से पहले चांदी के फ्रेम में मढ़ा प्रमाणपत्र नहीं मिलता कि तुम्हारा विवाह सफल ही रहेगा. विवाह से पूर्व तुम वैवाहिक जीवन का परीक्षण कर सकतीं. वैवाहिक जीवन में प्रति पल, प्रति पतिपत्नी की परीक्षा होती है. प्यार और के साथ रह कर पतिपत्नी वैवाहिक राजमार्ग पर आगे बढ़ते हैं. इस यात्रा में सुखदुख, कष्ट, अंधेरे सभी आते हैं. हम हैं, उठते हैं, लड़ते हैं, जुड़ते हैं, पर यात्रा रहती है."

"इस सब के बावजूद प्यार बना रहता"

"विवाह से पूर्व का प्यार, रीना, से कोमल पौधे की तरह होता है, जो तेज हवा से जमीन पर बिछ जाता है. के बाद जो प्रेम पनपता है, वह बरगद जैसा विशाल, घना तथा मजबूत होता आश्रय देता है, छाया देता है, सुरक्षित है."

मुझे लगा, मेरे मन में छाया कोहरा छंट है. मुझे नैनीताल वाले दंपति के व्यवहार का उत्तर मिल गया था. के वैवाहिक जीवन की कड़वाहट और से उत्पन्न मधुरिमा के कारणों का गया था.

"रीना, विवाह में सुखसफलता की करने वालों के लिए एक अनिवार्य शर्त शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और भावनात्मक की खाद डाल कर वैवाहिक जीवन में गुलाब के फूल खिलाए जा सकते हैं."

"मैं समझ गई, दीदी."

"हर तूफान के बाद जो शांति उस का आनंद वर्णनातीत है, रीना. पर आ कर मैं यों भी कह सकती हूं—की लड़ाई, जैसे दूध ऊपर जमी मलाई..."

"दीदी, मुझ से बहुत बड़ी गलती"

"यदि तुम्हें ऐसा अहसास होता है झती हूं कि सब कुछ ठीक है. सच्चा पवित्र पुनर्जन्म होता है."

"मैं तो पश्चात्ताप की आग में जल हूं, दीदी. पर इन लोगों ने हद कर दी दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकाल फेंक दिया है. इतनी उपेक्षा, इतना इतना अपमान, इतना कष्ट—सच, दीदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ति पल ये लोग उस आग में घी डाल रहे
में मैं जल रही हूं."
यह गलत है."
कोई मुझ से बात नहीं करता. मुझे इतना
और व्यर्थ बना दिया है इन लोगों ने कि
र जो चाहता है कि..."
नसान से गलती होती ही है. हम सभी
अपूर्णताओं में पूर्ण हैं. क्षमा जीवन का
है."
तुम्हें समझाओ न, दीदी."
समझाऊंगी. तुम्हारे जीजाजी कल चले
मैं अभी कुछ दिन ठहरूंगी."
दीदी से लिपट गई. मेरी आंखों में आंसू
आए.
रो मत, पगली. आंसू दुर्बलता के प्रतीक
मैं सब ठीक कर के ही जाऊंगी. तू मुझ
खयाल रख."
दीदी..." भावावेश के कारण मैं आगे
ल न सकी.
कोई लड़काबड़का देखा तेरे लिए इन
में?"
ने सिर हिला दिया.
तो क्या तुझे जिंदगी भर घर पर ही
रहोगे?"
भी मुझे उस विज्ञापन की याद आ गई.
और विज्ञापन की कटिंग ले आई. दीदी
को दे कर मैं बोली, "यह देखो."

दीदी उसे पढ़ने लगीं.

"मैं ने किसी से पूछेताछे बिना अपना विवरण और फोटो भेज दिया है."

दीदी पल भर को मौन रहीं. फिर गंभीर स्वर में बोलीं, "तू ने ठीक किया, रीना."

मुझे लगा, डूबते को तिनके का सहारा मिल गया है. यह तिनका नहीं, लाइफ बोट थी.

"आप पापा से बात करेंगी?"

"पापा से बात कर के क्या होगा? अगर इस का कोई उत्तर आया तो मैं खुद मम्मीपापा का रोल अदा करूंगी. तू चिंता मत कर, रीना."

उल्लास में भर कर मैं दीदी से लिपट गई.

"मेम साहब का फोन है. काम की न धाम की, ढाई मन अनाज की. ऊपर से इन मेम साहब की टेलीफोन आपरेटरी करो."

दीपक के विष बुझे, अपमान भरे, कटु स्वर को सुन कर मैं समझ गई कि ये सारे व्यंग्य बाण मुझे लक्ष्य कर के ही छोड़े गए हैं.

"अब जाइए न, शेखर साहब फोन होल्ड किए हुए हैं," दीपक बिलकुल मेरे पास आ कर बोला. उस के हर शब्द में घृणा और तिरस्कार के कीड़े रेंग रहे थे.

मेरा फोन? मुझे कौन फोन करेगा? फिर किस का फोन है?

दीदी के आते ही घर का घुटन भरा वातावरण एकदम बदल गया...हर तरफ खुशी नजर आने लगी.

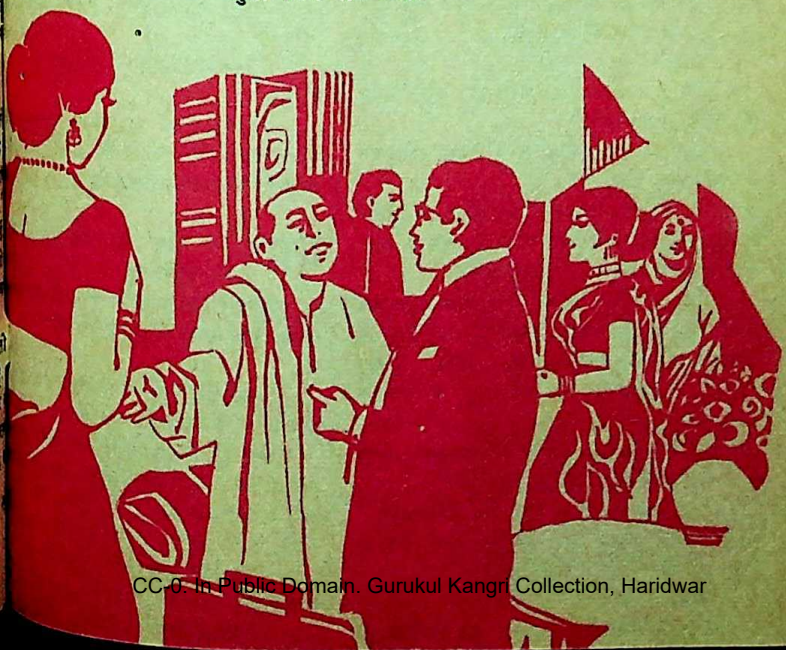

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दीपक, क्या तुम बिलकुल भूल गए हो कि शालीनता क्या होती है? रीना तुम्हारी बड़ी बहन है. क्या बड़ी बहन से इस तरह का व्यवहार .."

दीदी पास ही खड़ी थीं, उन्होंने दीपक की बदतमीजी देख ली थी. वह उसे डांट रही थीं.

मैं इस तरफ इतना ध्यान नहीं दे पाई. मेरा ध्यान तो फोन की तरफ था. मैं ने आगे बढ़ कर रिसीवर उठाया और बोली, "हलो."

"मिस रीना..."

"जी, मैं बोल रही हूं. पर आप?"

"एम. एस. राम."

तो वह शेखर नहीं था. मेरे मन को शांति मिल गई.

"आप का पत्र मिला था. मुझे आप की फोटो अच्छी लगी है. आप का विवरण भी मुझे सूट करता है."

"जी, थैंक्स."

"अब आगे कैसे हो?"

"जैसा आप कहें."

"मेरे खयाल से आप मुझे भी देखना चाहेंगी और मेरे बारे में विस्तार से जानना चाहेंगी."

मैं चुप रही.

"यदि आप को आपत्ति न हो तो अपने मातापिता के साथ हमारे यहां चाय पर आइए."

"यह तो संभव नहीं."

"जब तक कोई बात निश्चित न हो जाए, हम लोग भी आप के घर आने में असमर्थ हैं."

"तो घर से बाहर ही कहीं मिल लेते हैं."

"आज शाम को आप फ्री हैं."

"जी."

"तो क्या आप आज शाम छः बजे 'प्रिंस होटल' में मिल सकेंगी?"

"अवश्य. पर एक बात है? हम एकदूसरे को पहचानेंगे कैसे?"

"देखिए, मेरे साथ मेरी मां होंगी. मैं होटल के नीचे जो बनारसी पान वाला है, उस के पास खड़ा हो कर आप की प्रतीक्षा करूंगा."

"मेरे साथ मेरी दीदी होंगी. हमें पहचानने में आप को कोई दिक्कत नहीं होगी. आप ने लारेल, हार्डी की जोड़ी तो देखी होगी..." कह तो गई पर क्या प्रथम वार्तालाप में मजाक उचित था?

"माई...माई जरा यह तो बताइए, आप में से लारेल कौन है, हार्डी कौन है?"

"वह शाम को आप खुद देख लीजिएगा."

"ओके...शाम को मिलेंगे. तब तक के लिए बाई..."

"थैंक्स...बाई..."

मैं ने रिसीवर रख दिया. एक विचित्र सी उत्तेजना और मदहोशी मेरे ऊपर छा गई थी. मेरे मुख पर जैसे उजली चांदनी थी. कानों में चर्च में बजती प्रार्थना घंटियों के स्वर से गूंजने लगे थे.

"मुझे अफसोस है, दीदी," दीपक का काए, मेरे सामने खड़ा, मुझ से माफी था. स्पष्ट था कि जब मैं फोन पर राम कर रही थी, दीदी ने दीपक को कान झाड़ लगाई होगी. तभी वह मुझ से रहा था.

"ठीक है." मुझे दीपक के शाब्दिक, चारिक हृदय परिवर्तन में ज्यादा रुचि उस समय तो मेरा मन शाम को होने भेंट में उलझा हुआ था. क्या होगा? तो लड़का अच्छा लग रहा है. पता नहीं सूरत का कैसा होगा? क्या वह मुझे लेगा? पत्र में मैं ने फोन नंबर लिख मानी ही की थी. तभी तो पत्र मिलते ने फौरन संपर्क कर लिया.

"तू इस तरह ठगी सी क्यों खड़ी उसी का फोन था?" दीदी ने पूछा.

"हां, दीदी, शाम छः बजे प्रिंस उन से मिलना है."

"तू ने हां कर दी?"

"हां, मैं ने कह दिया कि मैं और दीदी आएंगे."

"तू ने ठीक किया. हम लोग चलेंगे."

दीपक पास ही खड़ा था. उस के उलझन भरे भाव थे. वह कुछ भी नहीं पाया. स्वाभिमानी इतना है कि उस ने कुछ भी नहीं.

"मम्मी को बताना चाहिए?" मैं से पूछा.

"इस सब की तू चिंता मत कर. ठीक कर लूंगी." दीदी के स्वर में एक महिला जैसा आत्मविश्वास था.

शाम को ठीक छः बजे हम लोग होटल पहुंच गए.

बनारसी पान वाले के पास ही एक युवक और एक अधेड़ावस्था की महिला थी.

"यही हैं," मैं ने उल्लास भर कर की कमर में चिकोटी काट ली.

जैसे ही हम लोग पान वाले के पास लड़का आगे बढ़ा और हम दोनों को हाथ कर अभिवादन कर के, हलके स्वर में "जी, आप लारेल, हार्डी.. माई... माई..."

"जी, यह आप क्या कह रहे हैं?" उलझ गई. उन की समझ में कुछ नहीं

"क्षमा कीजिए, बहनजी...पहचान में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंगारू के विशिष्ट पेण्टस्:
'पेण्टोलाइट' सुपर सिन्थेटिक एनेमल – भीतरी और बाहरी इस्तेमाल के लिए।
'कंगारू' हाई ग्लास सिन्थेटिक एनेमल —धातुओं तथा फर्श के लिए खरोंच न पड़नेवाला पेण्ट। पेण्टोलाइट सिन्थेटिक आयल बाउंड वॉशेबल डिस्टेंपर और पेण्टोलाइट पॉली-एक्रायलिक प्लास्टिक एमल्शन पेण्ट-घरों और दफ्तरों के लिए।

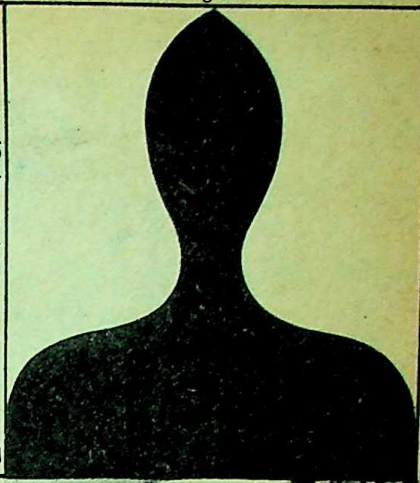

अधिक टिकाऊ और सर्वश्रेष्ठ कंगारू पेन्टस्

बॉम्बे पेन्टस्
अॅन्ड अलाईड प्रॉडक्टस् लिमिटेड

डेन्मार्क के प्रसिद्ध 'हेम्पेल्स' के सहयोग से निर्मित

बंबई ४०००७४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Subhasya-MSC 104 HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने यह सीक्रेट कोड [illegible] मां है मैं उसी के पास रहती हूं.

'तो राम के पापा जीवित नहीं,' मैं ने सोचा और मन थोड़ा दुखी हो गया.

"रीनाजी, मैं पिछले पांचछः साल से इंगलैंड में हूं. एक ब्रिटिश फर्म में मेकेनिकल इंजीनियर के पद पर काम कर रहा हूं. हफ्ते के दो हजार रुपए मिल जाते हैं." राम ने अपने बारे में सूचना दी.

हफ्ते के दो हजार रुपए...महीने के आठ हजार रुपए. ओह! मैं अवाक रह गई. इतना ढेर सारा पैसा. यह भी समस्या हो जाती होगी कि इसे कैसे खर्च किया जाए.

"अविवाहितों पर ब्रिटिश सरकार इतना आय कर लगाती है कि बस माईमाई कमर टूट

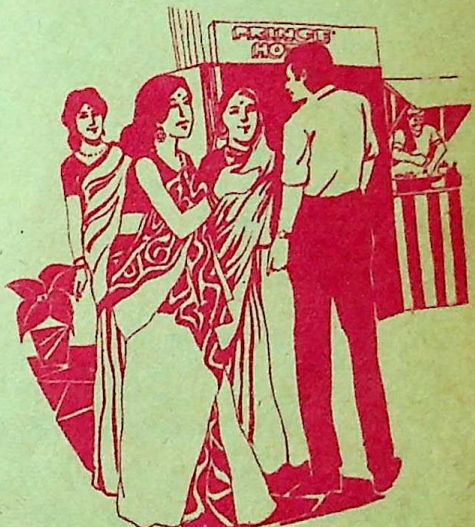

रीना की दीदी राम की मां से परिचय प्राप्त करने में व्यस्त थीं और वह कनखियों से राम को देखे जा रही थी.

जाती है. मैं ने सोचा, सरकार को पैसा देने के बजाए पत्नी पर क्यों न खर्च किया जाए... माईमाई..."

"तो आप लोगों को हमारी रीना पसंद आई?" दीदी ने रहस्यरोमांच की घड़ियों को समाप्त करने के लिए अंतिम प्रश्न पूछ ही लिया.

"हम ने तो पहले ही फैसला कर लिया था. हम लोग तो आप की राय जानने आए थे," राम की मां ने उत्तर दिया.

"यह तो आप लोगों की शराफत है, वरना भारत में लड़की वालों की राय क्या कीमत रखती है."

"माई...माई... आजकल के समानाधिकार के जमाने में ऐसी बातें करना अच्छा नहीं लगता."

दीदी राम की मां से परिचय प्राप्त कर रही थीं, मैं कनखियों से राम की ओर देख रही थी. आयु लगभग 28-30 वर्ष की होगी. हृष्टपुष्ट शरीर, एकदम गोरा रंग, घुंघराले भूरे से बाल, गहरे काले रंग की गहरी आंखें, तीखे नाक-नक्श, होंठों से प्रति पल उभरती मुसकान—सब कुछ स्वप्निल एवं असामान्य था, पर 'माईमाई' का तकियाकलाम और बातें करते समय बार-बार बाईं आंख का झपकना थोड़ा खटकता था.

दीदी राम की मां से बातों में उलझी हुई थीं और मैं सोच रही थी, 'इस नवयुवक को भारत आ कर विवाह करने की क्या आवश्यकता थी? ऐसे आकर्षक व्यक्तित्व वाले के लिए विलायत में मेमों की क्या कमी थी? पर शायद यह व्यक्ति विशुद्ध रूप से भारतीय है. उस में अभी भी भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता का प्रभाव शेष है, तभी वह अंतर्राष्ट्रीय विवाह का समर्थक नहीं है."

"ऊपर चलिए न. माईमाई, क्या नीचे खड़े हो सारी बातें हो जाएंगी?" राम के स्वर से मुझे एक बात का आभास हुआ कि शायद राम ने मुझे पहली निगाह में ही पसंद कर लिया था वरना वह इतना उल्लास और उत्साह न दिखाता.

हम चारों ऊपर पहुंचे. हम लोगों की मेज पहले से ही रिजर्व थी. उस पर ढेर सारा खाने का सामान लगा हुआ था.

"लो, बेटी, खाओ," राम की मां ने पाइन ऐपल केक की प्लेट मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा.

"आप लीजिए न," कहते हुए मैं ने आधा केक अपनी प्लेट में डाल लिया.

"तुम्हारे बारे में तो हम को सब कुछ मालूम हो ही गया है. तुम ने खूब विस्तार से बताया था. मेरे खयाल से तुम राम के बारे में विस्तार से जानना चाहोगी." राम की मां की बात सुन कर मैं शरमा गई. मैं ने अपनी गर्दन झुका ली.

"पहले यह बताओ, राम तुम्हें पसंद है?" राम की मां ने अचानक एकदम ऐसा सीधा प्रश्न पूछ लिया कि मुझे कोई उत्तर नहीं सूझा. मैं मारे लज्जा से लाल हो गए और कान की लौ में गरमाहट दौड़ गई.

"माई...माई..." राम जैसे उछल पड़ा.

"देखो, बेटी, मेरा इस दुनिया में इन दो के अलावा और कोई नहीं. यह तो बिलाकुल ही गया है. दूसरा बेटा कपड़ का व्यापार करता है. उस की करोलबाग में दुकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने पहली बार, वह भी पहली बार, भरपूर दृष्टि से राम की ओर देखा तो वह अद्भुत स्वप्न मेरी मुट्ठी में था.

"बेटी, एक बात है. राम पंदरह दिन बाद विलायत लौट जाएगा. वह रीना बेटी को साथ ले जाना चाहता है. हम चाहते हैं, शादी दस दिन के अंदर हो जाए."

"इतनी जल्दी?" दीदी थोड़ा चकराईं.

"माई...माई...इस में घबराने की क्या बात है? दस दिन तो बहुत होते हैं, लंदन में तो शादी एक दिन में हो जाती है. यहां भी क्या दिक्कत है...माई...माई..."

"मांजी, हम लोग पूरी कोशिश करेंगे. पर एक बात है, हमारे पास देने के लिए रीना के सिवा और कुछ नहीं है."

"बेटी, हमारे पास काफी है. मुझे बेटी चाहिए और कुछ नहीं," राम की मां ने स्नेह भरे स्वर में कहा.

"माई...माई पार्टी भी नहीं ?"

दीदी मुसकरा दीं.

"बेटी, यह थोड़ा मजाकिया है. इस की बात का बुरा मत मानना."

"नहीं, मांजी, यह तो अच्छी बात है."

"तो फिर रीना हमारी हो गई?"

"हां," दीदी ने दृढ़तापूर्वक कह दिया.

मुझे लगा, हीरे जैसे उस अमूल्य क्षण ने मेरा आमूल रूपांतर कर दिया है. वह पल एक झटके से मेरी मांग को रंगीन कर गया है.

"अरी, मांजी के पांव तो छू," दीदी ने मुझे मीठी सी झिड़की दी.

मैं उठी. मांजी की ओर बढ़ी. झुक कर उन के पांवों को छू लिया और हाथ आंखों से लगा लिए.

"सुखी रहो, बेटी, तेरा सुहाग अमर रहे," कह कर मांजी ने मुझे कलेजे से लगा लिया, फिर मुझे अपने पास वाली कुरसी पर बैठा लिया.

दीदी हट कर मेरी वाली कुरसी पर बैठ गई थीं.

"माई...माई..." राम काफी खुश लग रहा था.

मैं ने नोट किया, मांजी की आंखें छलछला आई थीं. खुशी के कारण या अपने सुहाग की स्मृति में? फिर उन्होंने अपनी उंगली से एक अंगूठी उतार कर राम को पकड़ाते हुए कहा, "क्या घुंघुओं की तरह देख रहा है? यह ले. पहना दे न."

"माई...माई..." कहते हुए राम ने मांजी से अंगूठी ली और मेरे सीधे हाथ की उंगली में पहना दी. देर तक वह अंगूठी पहनाने के बहाने मेरा हाथ थामे रहा.

"कितनी लड़कियां देख कर इस ने परेशान किया. कोई पसंद ही नहीं आती कोई मोटी, कोई पतली...नाक में दम दिया था, लड़कियों में दोष निकाल कर...अब मिली तो पल भर में ही मिल इसे कहते हैं संयोग," मांजी ने कहा.

"माई...माई...मैं क्या करता?"

"पंडितजी से शादी की तारीख निकलवा कर हम आप को सूचित कर देंगे. वैसे कल शाम को आप लोग चाय या खाने पर यहां आएं तो पापा को आप से मिल कर खुशी होगी. शादी की तारीख और अन्य के बारे में बातचीत हो जाएगी," दीदी ने

एक बार मेरा मन आशंकित हो गया. मम्मीपापा ने इस संबंध पर सहमति न दी

"पंडितवंडित क्या करेगा? 15 तारीख इतवार है. उसी दिन की शादी रख लेंगे सीधीसादी सी रस्म हो जाएगी. 18 तारीख मेरा राम विलायत लौट जाएगा."

"आप की इच्छा सिरआंखों पर. हां, कल आ रही हैं न?"

"आ जाएंगे. वह भी अपना ही घर है."

राम ने इशारे से वेटर को बुलाया. बिल ले आया. दीदी ने पर्स खोला और कोशिश की बिल चुकाने की, पर मांजी ने की एक न सुनी. बिल का भुगतान कर दिया

हम लोग उतर कर नीचे आए. दीदी अपने पर्स से एक सौ एक रुपए निकाल राम को पकड़ाते हुए कहा, "यह थोड़ा सा स्वीकार कीजिए."

"माई...माई...इतना ढेर सा रुपया लिए?"

"इतना नहीं चलेगा, बेटी," मांजी

"यह तो सगुन है, मांजी."

"माई...माई...सगुन है तो ठीक है. एक रुपया रख लेते हैं."

"अच्छा बेटी, चलते हैं." मांजी ने

मैं एक बार फिर झुकी और मांजी चरणों का स्पर्श कर लिया.

टैक्सी ले कर हम लोग घर आ गए.

रास्ते भर मैं सोचती रही, 'यह जीवन एक अनबूझ पहेली है. उलझेगी तो उलझती चली जाएगी. सुलझेगी तो पल भर भी लगेगा.'

—

अगले अंक में : तमाम कठिनाइयों के बावजूद राम और रीना का विवाह और विश्वासों की इंगलैंड यात्रा...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालन-पोषण सही कीजिए; बच्चों को बोर्नविटा दीजिए!

पढ़ने लिखने में सर्वश्रेष्ठ...खेलकूद में आगे

पढ़ने और खेलने में बच्चों की ख़र्च हुई शक्ति की सही पूर्ति न हो तो इनका मानसिक और शारीरिक विकास अधूरा रह जाता है। रोज़ बोर्नविटा पीने से बच्चों की शक्ति बनी रहती है। पौष्टिक कोको, दूध, मॉल्ट और शक्कर के मिश्रण से बना हुआ बोर्नविटा बहुत ही स्वादिष्ट होता है।

पौष्टिक बोर्नविटा में कोको है जो स्वास्थ्यप्रद है और स्वादिष्ट भी!

शक्ति, उत्साह और स्वाद के लिए—कैडबरिज़ बोर्नविटा!

OBM-0449-HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राहत कार्य पर कौन जाएगा?

व्यंग्य • ओमप्रकाश गुप्ता

पात्र परिचय :
शर्माजी : साहब
राम : क्लर्क
कृष्ण : क्लर्क
किशन : चपरासी

स्थान : आफिस का एक कमरा, जिस राम और कृष्ण के बैठने के लिए मेज-रसियां लगी हैं. दरवाजे के पास किशन बैठने के लिए स्टूल रखा है. एक कोने बड़ी सी मेज भी लगी है, जिस के पीछे वाल्विग चेयर रखी है. यहां शर्माजी ठते हैं. किशन शर्माजी की मेज पर पड़ा मार रहा है. कागजों को ठीक रतेकरते एक लंबे से कागज को देख र वह अचानक रुक जाता है. वह पेपर ढ़ता जाता है और उस के चेहरे पर सन्नता बढ़ती जाती है. तभी राम आता . किशन को कागज पढ़ते देख कर उस ो ओर आकर्षित होता है.)

राम (तेज आवाज में) : कहो, किशन, साहब की मेज पर क्या कर रहे ो?

किशन (हड़बड़ा कर कागज रखते ए) : जी...जी...कुछ नहीं...मैं तो ो...वो सफाई कर रहा था, राम बाबू.

राम (अपनी कुरसी की ओर बढ़ते ए) : अच्छा, अच्छा, ठीक है. मेरी मेज ी साफ की या नहीं?

किशन : जी, आप की मेज तो मैं ब से पहले साफ करता हूं.

राम (बैठते हुए) : क्या बात है, मेरा हुत खयाल रखता है तू? खैर, एक गिलास पानी तो पिला जरा.

किशन : जी अभी देता हूं.

(राम एक फाइल खोल कर पढ़ने लगता है और किशन एक कोने में रखे घड़े से एक गिलास पानी भर कर निकालता है तथा राम की ओर बढ़ता है.)

राम (मुंह ऊपर उठाए बिना) : अरे, क्या हुआ पानी...

किशन (बीच में ही) : जी, यह लीजिए...

(राम पानी पी कर खाली गिलास किशन को देता है, जो गिलास ले कर वहीं खड़ा रहता है.)

राम : कहो, अब क्या बात है?

किशन : जी, बड़ी खुशी की बात है.

राम (उत्सुकता से) : क्या बात है, बोल न फिर? गुमसुम क्यों खड़ा है?

किशन : आप को मालूम है, पिछले दिनों वर्षा कितनी हुई है?

राम : बहुत हुई है, पर इस में खुशी की कौन सी बात है?

बारबार न बाढ़ आती है, न राहत कार्य होता है, इसलिए इस बार जब राहत कार्य की खबर आई तो राम और कृष्ण अपनाअपना 'चांस' बनाने में जुट गए, लेकिन शर्माजी भी अपना चांस कैसे छोड़ते?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशन : अजी, यही तो खुशी का कारण है, राम बाबू. सरकार की ओर से हमारा जिला बाढ़ग्रस्त घोषित हो गया है.

राम (खुशी से) : अच्छा, तुझे कैसे मालूम हुआ?

किशन : वो जो कागज मैं साहब की मेज पर पढ़ रहा था न, उसी में लिखा है.

राम (जल्दी से शर्माजी की मेज पर रखे उस पेपर को पढ़ता है) : अरे, वाह, मजा आ गया, किशन. आज तो तू ने क्या खबर दी है. यह ले पांच का नोट, जा कर बाजार से मिठाई ले आ जल्दी से.

कृष्ण (प्रवेश कर के) : अरे, भई, यह मिठाई किस खुशी में आ रही है?

किशन : आप राम बाबू से ही पूछ लीजिए, साहब.

(किशन चला जाता है.)

राम : मुबारक हो, कृष्ण.

कृष्ण : अरे...लेकिन मुबारकबा किस बात की दे रहा है? कुछ बता त सही.

राम : अरे, यार, यह देख आर्डर हमारा जिला बाढ़ग्रस्त घोषित हो गय है.

कृष्ण (राम से गले मिलते हुए) अरे, तुझे भी मुबारक हो.

राम : अरे, रे...छोड़, यार, क्य कर रहा है? साहब आ गए तो क्य सोचेंगे? चल अपनीअपनी सीटों पर ह बैठते हैं.

कृष्ण : एक बात है, यार राम, य ऊपर वाला भी तो हम लोगों पर ज कर मेहरबान है आजकल!

राम : वह कैसे?

कृष्ण : वह ऐसे कि अभी तक त सूखा पीड़ितों के लिए आया धन भं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राम : हां, यार, यह सही बात है. भई, मुझे तो अब भगवान पर पूरा विश्वास हो गया कि वह दुखी लोगों की अवश्य सुनता है.

कृष्ण : बिलकुल ठीक कहा तुम ने. उसे भी तो मालूम है कि मुझे अपनी बहन की शादी करनी है, इसी लिए क्या जोरदार बारिश की है कि बाढ़ ही आ गई. मान गए ऊपर वाले का न्याय.

राम : अरे, यार, यह बाढ़ तेरी बहन की शादी के लिए थोड़े ही आई है. यह तो मेरे स्कूटर के लिए आई है. भगवान भी जानता है कि मुझे कितना घूमना पड़ता है. पैदल चलतेचलते मेरे पांव भी दर्द करने लगते हैं.

कृष्ण : इस का मतलब यह हुआ कि इस बार राहत कार्य पर हम दोनों चलेंगे!

राम : यह कैसे हो सकता है? हम दोनों में से एक को तो आफिस में रहना ही पड़ेगा. ऐसा करते हैं, इस बार मैं चला जाता हूं. अगली बार जब कोई राहत कार्य करना होगा तो तुम चले जाना. पर इस समय मेरे लिए स्कूटर खरीदना बहुत ही जरूरी है.

कृष्ण : नहीं, राम, इस बार तो मुझे ही जाने दो. तुम्हारा स्कूटर तो अगले साल भी लिया जा सकता है.

राम : तुम्हारी बहन की शादी भी तो अगले साल हो सकती है, यार.

कृष्ण : देखो, राम, तुम तो इस बार अकाल में भी गए थे और वैसे भी तुम्हारी स्थिति काफी अच्छी है, इसलिए इस बार मुझे ही जाने दो, भैया.

राम : पर तुम भी तो पिछले वर्ष भी बाढ़ के समय गए थे. तुम ने कौन सी कसर रखी थी उस समय.

कृष्ण : देख, राम, मुझे गए पूरे दस महीने हो चुके हैं और तुम तो अभी आए ही हो. वैसे भी तुम को मालूम है कि पिछले साल की सारी मेहनत की कमाई तो मैं हार ही गया था. के समय तुम्हारा जाना ठीक भी नहीं है. तुम्हें मालूम है, जब कृष्णजी पैदा हुए थे तो यमुना में बाढ़ आ गई थी. तुम्हारा नाम भी कृष्ण है और तुम्हारे जाने से कहीं बाढ़ अधिक न बढ़ जाए.

कृष्ण : अरे, नाम में क्या रखा है? किस्मत अपनी थोड़े ही कृष्णजी जैसी है. उन के तो ठाठ थे. हजारों गोपियां आगे-पीछे फिरती थीं. उन के यहां तो कोई नजर उठा कर भी नहीं देखता. वैसे भी उन के कितने मजे थे. दिन भर मक्खन खाते थे और यहां तेल तक भी नसीब नहीं होता.

राम : चलो, तुम्हारे नाम से अंतर नहीं पड़ता तो क्या हुआ, शायद मेरे ही नाम से अंतर पड़ जाए. पता है, राम ने तो समुद्र पर ही पुल बनवा दिया था. अब यदि मैं राहत कार्य पर गया तो शायद काम जल्दी समाप्त हो जाए. ऐसी स्थिति में कुछ ही दिनों तक लोगों को राशनपानी देना पड़ेगा, जिस से काफी फंड बच सकता है. उस में से कुछ तुम भी ले लेना.

कृष्ण : राम, तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते.

राम : मैं तो समझता हूं, पर तुम ही नहीं समझते.

कृष्ण (दृढ़ स्वर में) : अब की बार तो मैं ही जाऊंगा, राम.

राम (अपनी बात पर जोर देते हुए) : नहीं, मैं जाऊंगा.

शर्माजी (प्रवेश कर के) : क्या बात है? आज तुम दोनों कहां जाने की तैयारी कर रहे हो?

(शर्माजी अपनी सीट पर बैठते हैं तथा राम और कृष्ण दोनों उन की मेज के सामने जा कर खड़े हो जाते हैं.)

राम : सर, इस बार बाढ़ का जो राहत कार्य शुरू होने जा रहा है, उस के लिए मैं जाना चाहता हूं.

कृष्ण : नहीं, सर. राम इसी अकाल के समय तो गया था. अब की बार मुझे

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

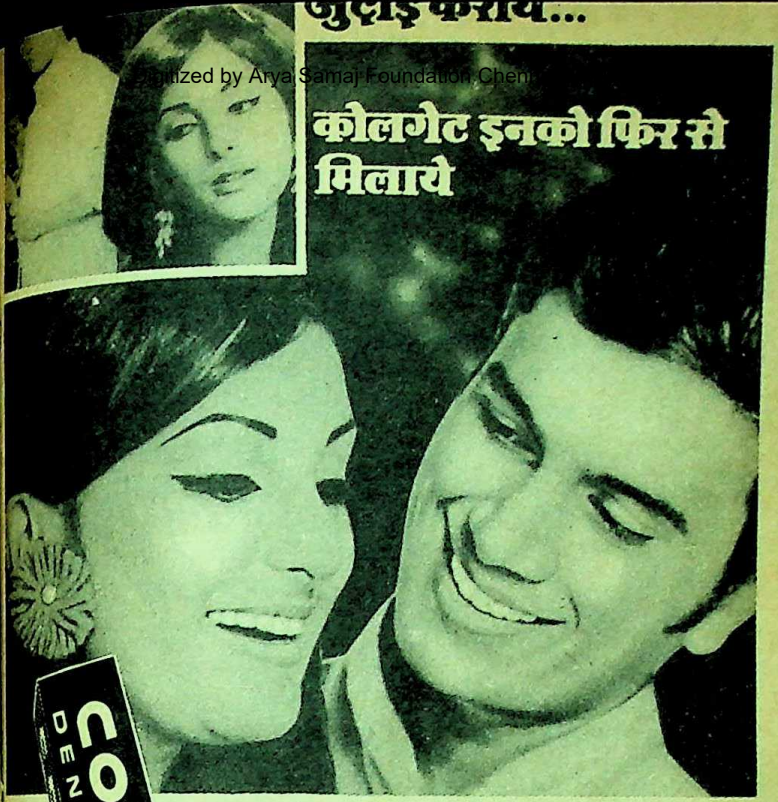

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की दुर्गंध रोकिये... दंतक्षय का दिनभर प्रतिकार कीजिये!

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है और खाना खाने के तुरंत बाद कोलगेट विधि से दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का—अधिक दंतक्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह एक बेमिसाल घटना है। क्योंकि एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेन्टल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंतक्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक कीटाणुओं को दूर कर देता है। इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है—इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए...

दुनिया में अधिक लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही खरीदते हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्माजी : बात किस मिलनी चाहिए और किसे नहीं, यह प्रश्न तो बाद का है. पहले यह बताओ कि तुम लोगों ने बिना पूछे मेरी टेबल पर रखे कागज क्यों देखे?

कृष्ण : जी, वह तो राम ने देखा था, सर.

राम : और तुम ने नहीं देखा क्या? तुम भी तो साथ ही थे.

शर्माजी : खैर, किसी ने भी देखा हो. अब तुम्हें मालूम तो हो ही गया है. हां, तो अब तुम दोनों में से एक को जाना है. तुम लोग आपस में ही निर्णय कर लो कि कौन जाएगा, नहीं तो मुझे अपना निर्णय सुनाना पड़ेगा.

राम : जी, हम से आपस में फैसला नहीं हो पाएगा. आप ही कुछ कीजिए.

हर बार की तरह यहां है [illegible] तुम दोनों में से मेरा अधिक [illegible] रखेगा, वही इस बार के राहत का[illegible] जाएगा.

कृष्ण : जी, मैं दो हजार तक [illegible] रख सकता हूं.

राम : और मैं ढाई हजार [illegible] खयाल रखने की कहता हूं.

शर्माजी : तो ठीक है, हो गया निर्[illegible] इस बार राम पर ही राहत कार्य [illegible] जिम्मेदारी रहेगी और, कृष्ण, तुम [illegible] बार के लिए अधिक बोली के लिए [illegible] रहना.

राम : आप ग्रेट हैं, सर. भग[illegible] आप की आयु हजारों साल की [illegible] और मैं सदा आप का असिस्टेंट [illegible] रहूं.

यह आवश्यक नहीं कि
किसी टॉनिक के द्रव्य
क्या हैं —
आवश्यक बात यह है कि आपके
शरीर को उससे क्या मिलता है?

आपके शरीर को
बहुत कुछ देता है
सिंकारा

सिंकारा में आवश्यक विटामिनों और खनिज पदार्थों के साथ ही १४ जड़ी, बूटियां विशेषकर सम्मिलित हैं जिनसे पाचन शक्ति अच्छा कार्य करती है और जिनकी सहायता से आपका शरीर सिंकारा में सम्मिलित विटामिनों आदि को बहुत तेज़ी से अपने अन्दर समा लेता है। आहार भली-भांति शीघ्र हज़म हो कर आपके शरीर को बहुत जल्द शक्ति प्रदान करता है।

हमदर्द

HDC—3035 A-H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिंटास - GPC.AFL.I-77 HI

अगर वो कानों में मिसरी घोलें,

"बिना मेक-अप तुम्हारा यह रूप...वाह!"

तो आप अपने मेक-अप का भेद क्यों खोलें ?

पाण्ड्स

Angel Face

लिक्विड मेक-अप

एंजेल फ़ेस लिक्विड मेक-अप, उनके लिए जो मेक-अप का फन सीख रही हैं और उनके लिए भी जो मेक-अप के फन में माहिर हैं। यह मेक-अप आपके रूपरंग में एक नई रौनक़ की तरह घुलमिल जाता है। इससे हलके फुलके नुक्स गायब और इसका काम इतना सहज कि त्वचा की स्वाभाविकता भी ज्यों की त्यों... कोई कह तो दे! यह है भी और नहीं भी।

स्वाभाविक सौंदर्य का सहज साधन

फ्रीज़बो पाण्ड्स इन्क. मद्रास-४४ (सीमित दायित्व के साथ यू.एस.ए. में स्थापित) ट्रेडमार्क रजि. भारत में निर्मित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Chennai and eGangotri

शुद्धता का प्रतीक

कविसा

शुद्ध सरसों का तेल

शुद्ध कविसा आपके भोजन को अनूठा, सुखद स्वाद देता है। स्वाद, जो शुद्ध और सन्तोषजनक भी है। अतिरिक्त गुण यह, कि कविसा शुद्ध होने के कारण, पाक क्रिया की उपयोगिता और बढ़ जाती है। इसमें प्राकृतिक विटामिन ए० और डी० भी शामिल हैं जो और अधिक पौष्टिकता प्रदान करते हैं।

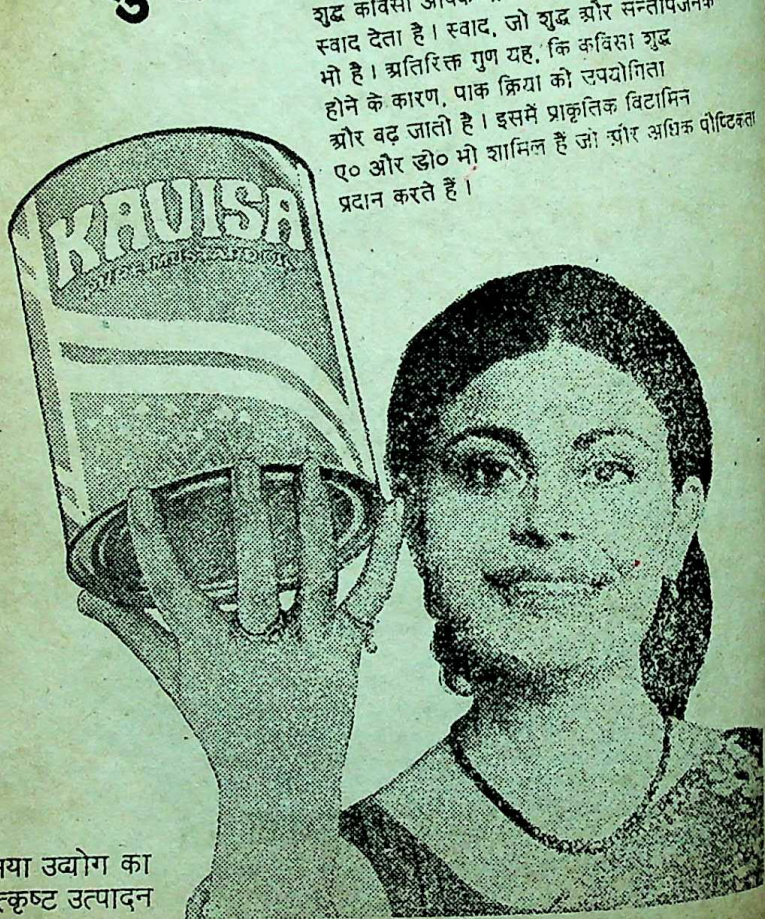

डालमिया उद्योग का
एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

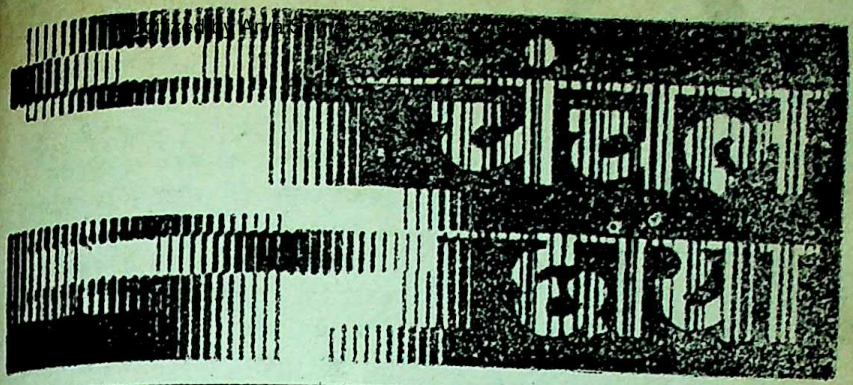

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★★ साधारण ★ बेकार

★★★ कोरा कागज

निर्माता : श्रीजी फिल्म्स
निर्देशक : अनिल गांगुली
कहानी : आशुतोष मुखोपाध्याय
मुख्य कलाकार : जया भादुड़ी, विजय आनंद, नाजनीन, हंगल, अचला सचदेव, मुलोचना, देवेन वर्मा

आशुतोष मुखोपाध्याय की बंगाली कथा पर आधारित 'कोरा कागज' मार-पीट, गोलीबारी, हत्या, बलात्कार के घिसेपिटे फार्मूलों की लीक से अलग स्वस्थ, मनोरंजक व प्रेरक फिल्म है. नवविवाहित पतिपत्नी की कहानी होते हुए भी निर्माता ने इसे अश्लील दृश्यों और अशिष्ट हास्य से भी अलग रखा है.

फिल्म में निर्माता सनत ने दांपत्य जीवन में कटुता लाने वाली छोटीछोटी घटनाओं को बहुत ही स्पष्ट व सजीव रूप में प्रस्तुत किया है. फिल्म दांपत्य जीवन की सफलता के कई नए दृष्टिकोणों को भी सामने रखती है. पतिपत्नी एकदूसरे को पूरक मान कर तथा उस के विचारों में समझौता कर के रहें तो दांपत्य जीवन में अलगाव की स्थिति नहीं आ सकती और परिवार में शांति बनी रह सकती है.

निर्माता ने दांपत्य जीवन में विघटन के विभिन्न कारणों पर दृष्टिपात किया है. अनेक मातापिता भी इस के लिए उत्तरदायी हो सकते हैं, जो विवाहित लड़की व लड़के के पारिवारिक जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप करते हैं और अपने व्यवहार से उन के जीवन में विष घोल देते हैं. दूसरे, समाज में अपने आप को अधिक से अधिक ऊंचा दिखाने की भावना भी पारिवारिक एकता, शांति को नष्ट कर सकती है. सभी स्थितियों में पतिपत्नी को संयम से काम लेना चाहिए, तभी उन का जीवन सुखी रह सकता है.

अर्चना (जया भादुड़ी) अपनी मां (अचला सचदेव) की इच्छा के विरुद्ध प्रोफेसर सुरेश (विजय आनंद) से विवाह कर लेती है. अर्चना की मां अपनी बेटी की सुखसुविधा के लिए कीमती चीजें भिजवाती हैं, लेकिन इस से सुरेश के आत्मसम्मान को चोट पहुंचती है. यही नहीं, अर्चना की मां गरीबी पर बारबार व्यंग्य करती है. अर्चना मां और पति में से किसी का भी पूरी तरह साथ नहीं दे पाती, जिस से सुरेश को और अधिक गुस्सा आता है. इस से अर्चना और सुरेश के बीच कटुता बढ़ती जाती है और तलाक हो जाता है, कुछ समय अलग रख कर निर्माता दोनों को अंत में मिला देता है. फिल्म का अंत सुखांत है. थोड़े समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कोरा कागज' में जया भादुड़ी. अभिनय में कोरापन नहीं.

के लिए मनमुटाव या अलगाव हो सकता है लेकिन यथार्थ में कुछ और ही होता है. अलगाव की स्थिति प्रायः पतिपत्नी दोनों में से किसी एक को भटका देती है और फिर आजीवन घुटन और पीड़ा बनी रहती है.

यहां निर्माता ने सुखांत के लिए दोनों को लंबे समय तक भी अलग रख कर एकदूसरे के लिए 'सुरक्षित' रखा है ताकि अंत में पुनः संबंध जोड़ दिए जाएं. यदि निर्माता अलगाव के समय की स्थिति को भी प्रस्तुत करता तो फिल्म अधिक प्रेरक और यथार्थवादी होती.

म. ज. हशमत के संवाद सुरेंद्र शैलज की पटकथा को गति देते हैं और दर्शकों को प्रेरित करते हैं. हंगल द्वारा बोले गए संवाद दांपत्य जीवन में विकृति की विभिन्न समस्याओं को सुलझाने के लिए विशेष उपयोगी हैं. पतिपत्नी को समय-समय पर परिस्थिति के अनुसार एक-दूसरे के विचारों से समझौता कर लेना चाहिए तभी परिवार में अटूट प्यार और मधुर संबंध बने रह सकते हैं.

जया भादुड़ी ने अर्चना की भूमिका को स्वाभाविक रूप में निबाहा है. परिस्थिति के अनुसार उस के चेहरे की भावाभिव्यक्ति सुंदर व आकर्षक है. विजय आनंद भी अपने गंभीर अभिनय से प्रभावित करता है.

जया की मां के रूप में अचला सचदेव फिल्म का केंद्रबिंदु रही है. अभिनय में भी वह दर्शकों को आकर्षित करती है. अ. कृ. हंगल और नाजनीन ने भी अपनी भूमिकाएं ठीक से निबाही हैं. देवेन वर्मा कुछ सीमा तक हंसाने में सफल रहा है.

कल्याणजी आनंदजी ने म. ज. हशमत के गीतों को मधुर स्वर दिए हैं. प्राकृतिक दृश्यों में विपिन गज्जर का छायांकन बहुत आकर्षक बन पड़ा है. फिल्म का ध्वनि आंकलन भी अच्छा है.

★★सगीना

निर्माता : रूपश्री इंटरनेशनल
निर्देशक : तपन सिन्हा
कहानी : रूपदर्शी
मुख्यकलाकार : दिलीपकुमार, सायरा बानो, अपर्णा सेन, अनिल चटर्जी, ओमप्रकाश, स्वरूप दत्त, कृ. नि. सिंह

'सगीना' में 1942-43 के समय की अंगरेजों के विरुद्ध मजदूरों की अपने अधिकारों के लिए लड़ाई चित्रित की गई है, लेकिन वास्तविकता यह है कि कहानी में चित्रित परिस्थितियां उस समय की अपेक्षा वर्तमान समय से अधिक मेल खाती हैं. 'सगीना' में वर्ग संघर्ष न दिखा कर मजदूरों का आपसी संघर्ष दिखाया गया है कि किस प्रकार पेशेवर मजदूर नेता अपने स्वार्थ के लिए एकदूसरे की टांग खींचते हैं और मजदूरों के हित के नाम पर मजदूरों को बेवकूफ बनाते हैं. मजदूर नेताओं का वास्तविक उद्देश्य मज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों के सरक्षण के लिए नया साधन...

नया हेलो कास्मेटिक शैम्पू इस्तेमाल कीजिये और देखिये—आपके बाल रेशम जैसे मुलायम हो जायेंगे।

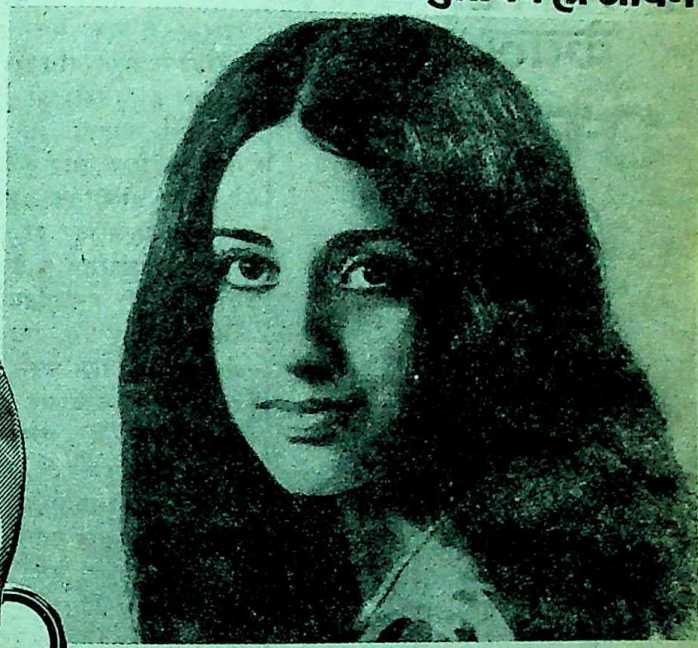

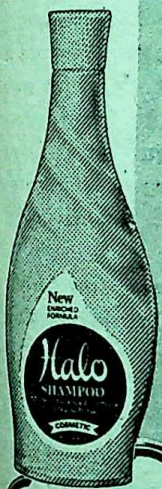

आधुनिक साबुन रहित शैम्पू खास संतुलित तत्वों से युक्त

तीन सुविधाजनक साइज़ों में मिलता है।

आज के फ़ैशन की माँग है कि आपके बालों में रेशम सी कोमलता और चमक हो— पर आज के नगर-जीवन की मैल, धूल, और धुआँ इस माँग को पूरी नहीं होने देते। अब आपका काम पुराने ढंग के शैम्पू से नहीं चल सकता। आपकी जरूरत है हेलो कास्मेटिक शैम्पू की— जो खास संतुलित फ़ार्मूले से बनाया गया साबुन रहित आधुनिक शैम्पू है। यह दो प्रकार से काम करता है— धूल और मैल को बिल्कुल निकाल देता है, और साथ ही— आपके बालों को रेशम जैसा मुलायम बनाकर उनमें स्वाभाविक चमक पैदा कर देता है। वही चमक जो आज के फ़ैशन की माँग है— आपकी माँग है। इसीलिये इसे हेलो कास्मेटिक शैम्पू कहते हैं— बालों के संरक्षण का आधुनिक साधन।

विश्व भर में सौंदर्य का प्रतीक— हेलो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल एक

अवेदन®

प्लस

से जल्दी और निश्चित आराम!

SQUIBB

SARABHAI CHEMICALS PRIVATE LIMITED

SHIP SC 6A 74

दूरों का हित न हो कर अपना राजनीतिक व आर्थिक हित साधना ही होता है.

सगीना (दिलीपकुमार) एक सीधा-साधा व सच्चा मजदूर नेता है, जो मजदूरों के लिए जान तक देने को तैयार है. मजदूर भी उस के इशारे पर नाचते हैं. तभी कलकत्ता में एक बड़ा मजदूर नेता अनुरुद्ध (अनिल चटर्जी) आता है और सगीना की लोकप्रियता से डर जाता है. वह अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करने के लिए सगीना को प्रयोग करना चाहता है और ऐसी चालें चलता है कि मजदूर सगीना से घृणा करने लगते हैं. अंत में सगीना दिल से यह महसूस करता है कि अनुरुद्ध जैसे तथाकथित क्रांतिकारी पेशेवर मजदूर नेता ही मजदूरों के वास्तविक दुश्मन हैं.

इस कहानी में मजदूरों के दो वर्ग दिखाए हैं. एक वर्ग वह, जो शांतिपूर्ण तरीकों से अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहता है, दूसरा, जो तोड़फोड़ की नीति अपनाना चाहता है. कारखानों को नष्ट कर दिया जाए ताकि गरीब मजदूरों के पास आजीविका का कोई साधन न रहे और वे मजबूर हो कर उन की शरण में आएं. वास्तव में इस रूप में नक्सलवादियों व अतिवादियों को ही चित्रित किया गया है और बताया है कि देश की संपत्ति का नाश करने वाले ये लोग देश एवं मजदूरों के दुश्मन हैं.

फिल्म में मजदूर नेता अनुरुद्ध नक्सलवादियों का ही प्रतिनिधित्व करता है. अनेक नौजवान उस के अनुयायी हैं. यहां तक कि एक मिल मालिक की बेटी ललिता (अपर्णा सेन) भी उस की अनुयायी है और पिता की संपत्ति का उपभोग करते हुए भी अनुरुद्ध का साथ देती है और मजदूरों की लड़ाई में सहयोग देती है. अंत में जब उस के सामने अनुरुद्ध का वास्तविक रूप प्रकट होता है तो वही गोली मार कर अनुरुद्ध की हत्या कर देती है. इस प्रकार फिल्म में तथाकथित क्रांतिकारी पेशेवर मजदूर नेताओं के विरुद्ध बड़े ही सशक्त रूप में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवाज उठाई गई है.

अगर 'सगीना' को पूर्णरूप से अपने उद्देश्य पर कायम रखा जाता तो फिल्म बहुत अच्छी बन सकती थी, किंतु सगीना के रूप में दिलीपकुमार का फिल्म का नायक होना उस की बहुत बड़ी कमजोरी बन गया है. अब फिल्म का मूल उद्देश्य दब गया है और सगीना का चरित्रचित्रण ही फिल्म का मुख्य उद्देश्य रह गया है. दिलीपकुमार भी मजदूर नेता न प्रतीत हो कर हिंदी फिल्मों का एक साधारण हीरो ही लगता है, क्योंकि मजदूर नेता हो कर भी वह हिंदी नायक की मूल हरकतें नहीं छोड़ सका. उस का अभिनय भी प्रभावहीन है. अपनेआप को बड़ा अभिनेता सिद्ध करने के चक्कर में वह अभिनय पर इतना अधिक जोर देता है कि वह बोझिल हो गया है और स्वाभाविक नहीं रह गया. उस की अपेक्षा उस की प्रेमिका के रूप में सायरा का काम कहीं अच्छा रहा है.

अनुरुद्ध की भूमिका में अनिल चटर्जी अत्यंत सशक्त अभिनेता के रूप में उभरा है. पेशेवर क्रांतिकारी या नक्सलवादी नेता के रूप में उस का अभिनय इतना जानदार है कि दिलीपकुमार आदि सभी अभिनेता उस के सामने दब गए हैं. हालांकि उस की जानदार भूमिका को दबाने की कोशिश की गई और बेजान सगीना के रूप में दिलीपकुमार को ज्यादा से ज्यादा उभारने की कोशिश की गई है. यही कारण है कि फिल्म बेजान तमाशा हो कर रह गई है, फिर भी अपने जानदार अभिनय के बल पर अनिल चटर्जी फिल्म में छा गया है. वह नक्सलवादियों के विरुद्ध दर्शकों की भावनाएं जगाने में सफल रहा है. वास्तव में अनुरुद्ध (अनिल चटर्जी) को ही मुख्य पात्र बना कर कहानी लिखी जानी चाहिए थी. अभिनय में केवल अपर्णा सेन उस से टक्कर ले सकी है.

मजरूह के गीत व सचिनदेव बर्मन का संगीत साधारण है. बिमल मुखर्जी की फोटोग्राफी सुंदर है.

काम भी और आराम भी?

जी हां, मध्यप्रदेश शासन के आधीन विभिन्न विभागों द्वारा हमारे निम्न उत्पादनों को बिना टेंडर कोटेशन के खरीदा जा सकता है :

साइकिलें, कांटेदार तार, विभिन्न प्रकार के ब्रश, जूते, चप्पल, मिलिटरी एवं पुलिस के लिए जूते, बेल्ट एवं अन्य चमड़े का सामान, क्राकरी सेनिटरी पाइप, फर्शी टाइल्स, फूलदान, स्टील फर्नीचर, पलंग, कुर्सी, टेबल आदि, पिन, जेमक्लिप, छोटे कीले, किट बाक्स, छाते, बिरंजियां, रोलिंग शटर्स, माइल्ड स्टील ट्रसेस, लकड़ी के स्कूली तख्ते एवं बाल्टियां।

यही नहीं, उद्योग एवं वाणिज्य विभाग मध्यप्रदेश शासन के आदेशों के तहत इन उत्पादनों को शासकीय खरीद में अनिवार्य भी कर दिया गया है।

शीघ्रता कीजिए एवं अनावश्यक परेशानी से बचिये।

आप की आवश्यकताओं के लिए संपर्क कीजिए :

मध्य प्रदेश राज्य उद्योग निगम,
माहेश्वरी भवन, सिविल लाइन्स,
भोपाल-३ म. प्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तपन सिन्हा निर्देशित 'सगीना' अपने उद्देश्य से कुछ भटक गई है और फिल्म दिलीपकुमार की उस प्रवृत्ति की शिकार हो गई है, जिस के अनुसार बड़े अभिनेता अपनी मनचाही करते हैं और निर्देशक उन के हाथ में कठपुतली मात्र रह जाता है. आम दर्शक के लिए न बना कर लगता है दिलीपकुमार ने खुद अपने देखने के लिए ही 'सगीना' बनाई है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ काल गर्ल

निर्माता : मुकेश मूवीज
निर्देशक : विजय कपूर
मुख्य कलाकार : जाहिरा, विक्रम, इफ्तिखार, उर्मिला भट्ट, हेलन, शेखर पुरोहित, जानकी दास, केश्तो मुखर्जी, कुलजीत, नाजनीन, जलाल आगा, पेंटल

नाम के अनुरूप फिल्म एक काल गर्ल कामिनी (जाहिरा) की कहानी है, जो एक युवक अमर (विक्रम) से प्रेम करने लगती है. अमर का पिता (इफ्तिखार) रुकावट बनता है. अंत में कामिनी आत्महत्या कर लेती है.

'काल गर्ल' में 'चेतना' की कहानी मात्र दोहरा दी गई है, लेकिन फिल्म का चित्रण उतना प्रभावपूर्ण नहीं रहा. एक सामाजिक बुराई की ओर ध्यान जरूर खींचा गया है, किंतु अंत में नायिका की मृत्यु दिखा देने से फिल्म का सुधारवादी पक्ष समाप्त हो गया है, जो निर्माता मुकेश खन्ना की कायरता का सबूत है. काल गर्ल्स पर बनी फिल्मों में सब से बड़ा दोष यह होता है कि ये लड़कियां ही लड़की दिखाई गई है.

अभिनय की दृष्टि से कोई भी अभिनेता उल्लेखनीय नहीं है. 'आलिंगन' की अपेक्षा 'काल गर्ल' में जाहिरा प्रभावहीन रही है. 'दो चट्टानों' का जानदार नायक विक्रम भी बेजान हो गया है.

नक्श लायलपुरी के गीत व सपन जगमोहन का संगीत नीरस है. ख्वाजा अहमद अब्बास पटकथा एवं संवाद लेखक के रूप में असफल रहा है. फोटोग्राफी साधारण है. निर्देशक विजय कपूर का निर्देशन बचकाना है.

देव आनंद : वही पुराना स्टाइल.

O प्रेम शास्त्र

निर्माता : नालंदा
निर्देशक व लेखक : बाबूराम 'इशारा'
मुख्य कलाकार : देव आनंद, जीनत अमान, बिंदु, इंद्रसेन जौहर, अभि भट्टाचार्य, अनवर हुसैन, अंजू महेंद्रू, असित सेन, डेविड

'चेतना' से ले कर 'प्रेम शास्त्र' तक बाबूराम 'इशारा' केवल सेक्स का घृणित रूप ले कर ही परदे पर आ रहा है. 'प्रेम शास्त्र' में भी ऐसे ही कुछ घृणित सेक्सी प्रश्न उठाए गए हैं, जिन का कहानी की मूलकथा के साथ कोई संबंध नहीं है. 'क्या कोई युवा व्यक्ति अपनी युवा विमाता से शादी कर सकता है?' 'क्या अपनी पत्नी की सौतेली बेटी से विवाह किया जा सकता है, या भाई की बेटी को पत्नी के रूप में स्वीकार किया जा सकता है?' बाबूराम इशारा ने बड़े ही कुत्सित रूप में इन प्रश्नों को उठाया है. केवल फिल्म में सेक्स का अनुचित लाभ उठाने के लिए इन्हें ठूंसा गया है, अन्यथा कहानी के साथ इन का दूर का भी वास्ता नहीं है. यही कारण है कि ये प्रश्न केवल अधर में लटकते रह गए और कहानी निरुद्देश्य हो गई है.

वर्षा (जीनत) को सागर शर्मा (देव आनंद) से गर्भ रह जाता है. वर्षा सागर शर्मा की पत्नी नीलू (बिंदु) की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमनीय और कांतिमय
केशों के लिए
गोल्ड ड्राप शैंपू

केशों की सुंदरता
को चाहिए
सही देखभाल

और मनमोहक, मुलायम केशों की सही साजसंवार के लिए गोल्ड ड्राप शैंपू. यह आप के बालों को प्राकृतिक तेल नष्ट किए बिना साफ और चमकदार बनाता है, फिर उन्हें आप चाहे जिस तरह से संवारें.

प्रस्तुत करते हैं **अफगान स्नो** सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हैं, शानदार बंगलों में रहती हैं और शानशौकत का जीवन बिताती हैं. निर्माता केवल एक छोटी सी मजबूरी साथ लगा देता है ताकि दर्शकों की सहानुभूति जीती जा सके और फिर इस ओट में वह हर तरह के अश्लील दृश्य भरता चला जाता है. 'काल गर्ल' में कामिनी भी एक ऐसी केवल धन के लिए अपना शरीर बेचती बेटी निकलती है. बाद में पता चलता है कि सागर और नीलू की शादी वैध नहीं थी. सागर और वर्षा का मिलन होता है.

इस कहानी में बाबूराम 'इशारा' ने पूरा प्रयत्न किया है कि वह दर्शकों को जीनत और बिंदु के अर्धनग्न वक्ष और टांगों में फंसा ले, पर दुर्भाग्यवश बिंदु मोटी और बेडौल हो गई है और जीनत में कोई लावण्य नहीं है. इस प्रकार सेंसर से जूझने और फिल्म का कुछ भाग कटवाने के बाद भी बिंदु और जीनत की जोड़ी दर्शकों को गुदगुदाने तक में सफल नहीं हो सकी.

कहने को फिल्म की नायिका जीनत है, किंतु फिल्म की वास्तविक नायिका बिंदु है. भूमिका, अभिनय, चरित्रचित्रण, शरीर प्रदर्शन आदि सभी पक्षों से वह फिल्म में छाई हुई है. 'इशारा' ने अपने सभी प्रश्न इसी चरित्र के माध्यम से उठाए हैं. फिल्म का सारा ग्लैमर उसी में समा गया है. जीनत अमान उस के सामने बिलकुल दब गई है. प्रथम तो उस की भूमिका ही दबी हुई है, साथ ही फोटोग्राफर फरीदून ईरानी के कैमरे ने जीनत की बदसूरती ही उभारी है. वह गाती है तो मुंह अधिक खोल लेती है और बदशक्ल हो जाती है. उस का अभिनय बेजान है और संवादों का उच्चारण अस्वाभाविक है. देव आनंद के पुराने स्टाइल और पोपले मुंह में कोई आकर्षण नहीं रह गया है. उसे चाहिए कि अब वह युवा भूमिकाएं न ले. इंद्रसेन जौहर के संवाद कुछ हास्यजनक हैं.

बंबइया फिल्मों के एक आवश्यक मसाले--अदालत के दृश्य--को यहां भी सम्मिलित किया गया है. कहानी यहीं खुलती और अंत होती है. पर इस फिल्मी अदालत का वास्तविक अदालत से कोई संबंध नहीं है--जिस प्रकार फिल्म की कहानी का वास्तविक जीवन से कोई तालमेल नहीं है.

आनंद बख्शी के गीत निरर्थक तुकबंदी मात्र हैं. लक्ष्मीकांत प्यारेलाल का संगीत नीरस है. 'प्रेम शास्त्र' उद्देश्य पक्ष से असफल और मनोरंजन की दृष्टि से व्यर्थ है. वास्तव में फिल्म का नाम 'प्रेम शास्त्र' की बजाए 'मूर्ख शास्त्र' होना चाहिए था, क्योंकि इस में 'इशारा' ने दर्शकों को मूर्ख ही बनाने की कोशिश की है, पर परिणाम उलटा रहा है. दर्शकों द्वारा फिल्म का तिरस्कार किया जाना सिद्ध करता है कि बाबूराम 'इशारा' स्वयं मूर्ख बना है.

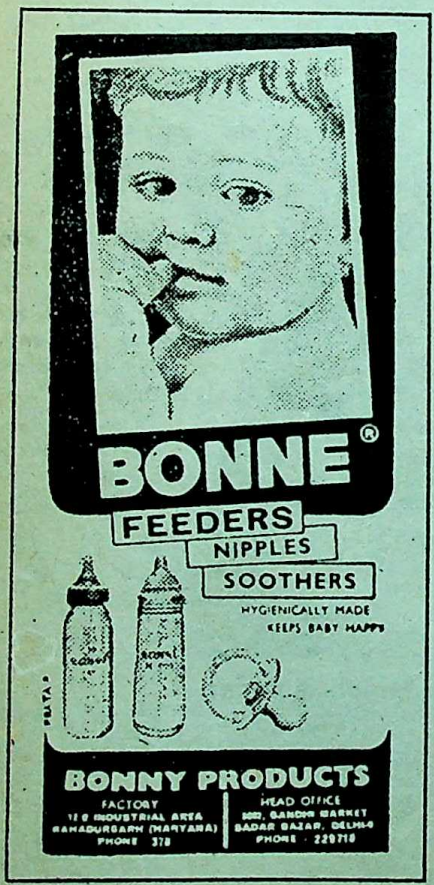

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप के पत्र

जुलाई (प्रथम) के 'सरित प्रवाह' में आप ने धर्म या मजहब के प्रचारकों के संबंध में जो लिखा है, वह पूर्णतया उचित एवं सत्य है. विश्व के किसी भी कोने में ऐसा कोई भी देश नहीं है, जहां धर्म और मजहब की लड़ाई न हो. हमारे देश के लोग 'ईश्वर, अल्लाह' का नाम तो लेते हैं, किंतु धर्म का समुचित एवं सटीक अर्थ समझ नहीं पाते हैं.

'कुंभ' (लेख : कुसुम मेघवाल) अच्छा लगा, लेखिका का कहना है कि अत्यंत कष्ट व दुख भोगते हुए भी कुंभ मेले में लगभग 40 लाख लोग उपस्थित हुए. इस का कारण यह है कि देश में साक्षरता लगभग 35 प्रतिशत ही है और बाकी लोग निरक्षर हैं. ऐसे निरक्षरों में धार्मिक अंधविश्वास कूटकूट कर भरा हुआ है. अधिकांशतः इसी वर्ग के लोग तीर्थयात्रा पर या धार्मिक स्थानों में जाते हैं. और सरकार बेचारी क्या करे? यदि वह समुचित प्रबंध करने में असफल रहती है या प्रबंध नहीं करती तो विरोधी पार्टियां, धर्मावलंबी मठाधीश और तथाकथित जनता के प्रतिनिधि मिल कर शोर मचा देते हैं. अतः सरकार का समुचित प्रबंध करना अपनी जगह जायज है. यदि सरकार प्रबंध न करेगी तो भी लोग तो रुकेंगे नहीं, और हजारों लोग भीड़ में मर जाएंगे और ऐसे रोग फैला जाएंगे जो उस नगर को ही नहीं आसपास के क्षेत्र को भी कुप्रभावित करेंगे.

—प्रकाशचंद्र बरनवाल, आसनसोल

✦

जून (प्रथम) के 'सरित प्रवाह' में हिंदू धर्म में गंगा के बारे में जो ढकोसले बाजी है, उस पर करारा प्रहार कर के आप ने वास्तव में देश की सामाजिक और आर्थिक सेवा की है. कुंभ जैसे मेले शक्ति, धन और समय के अपव्यय के कारण तो है ही, स्वास्थ्य की दृष्टि से भी हानिकारक हैं.

गंगा का महत्त्व वास्तव में सांस्कृतिक रूप से है. भारत के भूगोल, इतिहास तथा अर्थ व्यवस्था पर गंगा का ठीक वैसा ही प्रभाव रहा है, जैसा मिस्र पर नील नदी का.

—सर जीनसारी, देहरादून

✦

जुलाई (प्रथम) में प्रकाशित 'कुंभ' (लेख : कुसुम मेघवाल) धर्मजीवियों द्वारा अपने स्वार्थ के लिए प्रचारित कथाओं एवं करोड़ों रुपयों के सरकारी खर्च का लेखाजोखा मात्र ही रह गया है.

हिंदू धर्मावलंबियों में यदि अंधविश्वासियों की कमी नहीं रही है तो चार्वाक प्रवृत्ति के नास्तिकों व वामपक्षियों की भी अप्रतिष्ठा नहीं हुई. धार्मिक मान्यताओं में विश्वास ही सर्वोपरि है. प्रत्येक धार्मिक संगठन विश्वास के आधार पर ही टिका हुआ है. कुछ लोग विश्वास का दुरुपयोग करते हैं, पर आलोचनाओं से इस का निराकरण नहीं किया जा सकता. जहां तक श्रम, समय, शक्ति, मानवबल आदि के खर्च का प्रश्न है, यह चुनावों में खर्च की जा रही रकमों की तुलना में नगण्य है. प्रत्येक पांच वर्ष की अवधि में गणतंत्र के नाम पर 37 अरब रुपए का खर्च बरदाश्त किया जाता है.

इसी प्रकार विभिन्न नगरों में ईसाई धर्म के अनुयायियों द्वारा निर्मित चर्चों के इर्दगिर्द लाखों एकड़ भूमि, जिस की कीमत 20 अरब रुपए के लगभग है, बेकार पड़ी है. इसे हमें विश्वास के नाम पर सहन करना पड़ता है.

यह कहना कि हमारे देश में अन्य देशों की अपेक्षा साधुसंन्यासी ज्यादा हैं, गलत है. अकेले अमरीका के 86 हजार चर्चों के ईसाई पादरियों की संख्या आठ लाख से ज्यादा है, जो पूर्णतया प्रशिक्षित व धनधान्य से संपन्न हैं. हमारे यहां भीख मांगने वालों को छोड़ दिया जाए तो साधुओं की इतनी बड़ी संख्या नहीं है.

—अविनाश द्विवेदी, आगरा

✦

जुलाई (प्रथम) में प्रकाशित 'संगीत का विवाद' (लेख : दिलीप गुप्ते) में लेखक ने फिल्मी दुनिया में गायकों के साथ खेली जा रही राजनीति का अच्छा वर्णन किया है. किशोरकुमार जब भी गाता है गला फाड़ कर गाता है. महेंद्र कपूर वास्तव में सरकारी भोंपू है, जो राष्ट्रीय गीतों को खूब गला फाड़ कर गाता है. इतना ही नहीं, वह साधारण गीतों को भी उसी तरह गाता है.

लेखक का तलत महमूद को 'गजल किंग' कहना भी सही है. यदि आज कोई गायक फिल्मी दुनिया की राजनीति का शिकार है, तो वह है तलत महमूद.

अपने जमाने के प्रसिद्ध गायक मुहम्मद रफी, जो हर कलाकार को अपनी आवाज देते रहे हैं, आज किशोर के सामने हिल गए हैं किंतु एक दिन ऐसा आएगा जब किशोरकुमार सब गायकों की तरह चुपचाप भूलेभटके ही कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गीत गा सकेगा और रफी फिर अपना खोया हुआ स्थान प्राप्त कर लेगा.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

✦

'संगीत का विवाद' में लेखक ने बताया है कि किशोरकुमार को 'मिस मेरी' फिल्म में रफी का गला उधार लेना पड़ा था, यह सही नहीं है. मुहम्मद रफी ने किशोरकुमार को प्ले बैक 'रागिनी' फिल्म में भी दिया था. उस गीत के बोल थे, 'मन मोरा बावरा, निस दिन गाए गीत मिलन के.'

—बलरामदत्त शर्मा, बीकानेर

✦

जून (द्वितीय) में प्रकाशित 'कोयला भई न राख' (कहानी : लीला रूपायन) बहुत पसंद आई. इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने उन अंधविश्वासी और अभिमानी मातापिता का चित्रण किया है, जो अपने कोरे अभिमान के कारण अपनी ही संतान का जीवन नष्ट कर कर देते हैं. वे स्वयं तो सुखचैन से जीवन व्यतीत करते हैं और अपनी संतान का समस्त जीवन गीली लकड़ी की तरह सुलगता छोड़ देते हैं. समाज भी उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से देखता है, चाहे उस में दोष उन के मांबाप का ही क्यों न हो. आज कई जगह यह सुनने में आता है कि फलां लड़की ने पति को छोड़ दिया, उस का पति शराबी, व्यभिचारी है, वह उसे बसाना नहीं चाहता, आदिआदि. इस से उन का जीवन बोझिल बन जाता है और उन के कदम गलत रास्ते पर चले जाते हैं.

—देवेंद्रकुमार मोहला, मेरठ

मई (प्रथम) में प्रकाशित 'संभवामि युगेयुगे' (लेख : रामस्नेही सिंह) द्वारा पाठकों की आशंकाओं और आपत्तियों का उत्तर काफी सटीक रहा.

लेखकों द्वारा प्रस्तुत उत्तर में कहा गया है कि किसीकिसी रामायण में सीता को राम की बहन और रावण की पुत्री बताया गया है. मैं उस रामायण का नाम जानना चाहता हूं.

—अंजनीकुमार, आरा

● डाक्टर कामिल बुल्के (रामकथा—उत्पत्ति और विकास; प्रकाशक : प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग) के अनुसार निम्नलिखित ग्रंथों में सीता को रावण की पुत्री माना गया है :

1-वसुदेव हिंडि, गुणभद्रकृत उत्तरपुराण, महाभागवत पुराण

2-कशमीरी रामायण, पाश्चात्य वृतांत नं. 16

3-तिब्बती तथा खेतानी रामायण

4-सेरत कांड, सेरीराम का पातानी पाठ

डाक्टर बुल्के के ही अनुसार निम्नलिखित ग्रंथों में सीता दशरथ की पुत्री मानी गई है :

1-दशरथ जातक

2-जावा के रामकेलिंग, मलय के सेरीराम.

डाक्टर बुल्के की 'रामकथा' इस विषय पर बहुत महत्त्वपूर्ण पुस्तक है. जिन पाठकों को रुचि हो, वे इसे दिल्ली बुक कंपनी, एम/12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली से मंगवा सकते हैं. मूल्य 30 रुपए, डाक खर्च (अतिरिक्त).

—संपादक

क्या आप के कपड़ों में सफेदी नहीं आती? तो आप परेशान न हों!
कपड़ों को सफेद और चमकीला बनाने के लिए
डिटर्जेंट्स की दुनिया में एक नया नाम

गिफ्ट

डिटर्जेंट टिकिया
निर्माता : कैमिक्स कारपोरेशन अहमदाबाद
सोल सेलिंग एजेंट्स
टीजे इंडस्ट्रीज, 3481, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-110006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश शासन का संकल्प

जनता की सेवा के लिए एक स्वच्छ, चुस्त और कुशल प्रशासन. प्रदेश का सामाजिक एवं आर्थिक विकास कर राज्य के साथ जुड़े 'पिछड़े' शब्द को हटाना

इस दिशा में शासन के कतिपय सुदृढ़ पग—

- 'भारत रक्षा' और अन्य कानूनों के अंतर्गत 44 जिलों में 14,343 छापे मारे गए. पूरे प्रदेश में तस्करी की रोकथाम के लिए 90 चौकियों की स्थापना.
- पुलिस विभाग, तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी की सरकारी सेवाओं में हरिजनों एवं जनजातियों के लिए 50 प्रतिशत स्थान आरक्षित.
- हरिजनों के उत्पीड़न के मामले में पुलिस तथा सिविल अधिकारियों से अब जवाबतलब की व्यवस्था.
- एक पूर्णकालिक डी. आई. जी. (हरिजन सुरक्षा) की नियुक्ति.
- 54 लाख से अधिक खेतिहर मजदूरों की दैनिक न्यूनतम मजदूरी में 1.20 रुपए की वृद्धि.
- चीनी मिलों के 90 हजार श्रमिकों के महंगाई भत्ते में प्रति माह 32 रुपए तक की वृद्धि.
- चौथी पंचवर्षीय योजना के अंत तक राजकीय सिंचन साधनों की कुल क्षमता 65 लाख हेक्टेयर पहुंच गई.
- वर्ष 1974-75 में लघु सिंचाई योजनाओं के अंतर्गत 1,300 राजकीय, 50,500 निजी नलकूप और 27,900 पंपिंग सेट लगाने का प्रस्ताव.
- सहकारी हथकरघा उद्योग के विकास के लिए पांचवीं पंचवर्षीय योजना में 7.50 करोड़ रुपए का प्रावधान है. इस से सहकारी हथकरघा कपड़े का उत्पादन 18 करोड़ मीटर से बढ़ कर 24 करोड़ मीटर हो जाएगा.
- प्रदेश में सूत की कमी को दूर करने हेतु 30 कताई मिलों के लगाने का प्रस्ताव जिस में 8 मिलों का शिलान्यास हो चुका है.
- ग्रामीण रोजगार की त्वरित योजना के अंतर्गत विगत वित्तीय वर्ष में 4,496 किलो मीटर सड़क और 4,104 पुलियों का निर्माण.

ये हैं हमारी जनप्रिय सरकार के कतिपय सक्रिय पग.

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

18 वर्षीया, माहेश्वरी, निस्संतान, विधवा, सुंदर, स्वस्थ, गृहकार्य में दक्ष, मैट्रीकुलेट के लिए सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2059, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीया, सावर्ण गोत्रज, प्रतिष्ठित मैथिल ब्राह्मण परिवार के एम. एससी., बी. एड., गवर्नमेंट हायर सेकंडरी लेक्चरर, 550 रुपए मासिक वेतन वाले भाई के लिए सुयोग्य वधू चाहिए तथा 25 वर्षीया, एम. ए. पास, स्वस्थ, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष बहन के लिए अच्छी वृत्ति में लगा, सुयोग्य वर चाहिए. दोनों संबंधों के लिए दहेज के आग्रही कृपया पत्रव्यवहार न करें. लिखें : वि. नं. 2459, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीया, अग्रवाल बंसल, बी. काम., गेहुंएं रंग की, स्वस्थ, गृहकार्य में निपुण, कद 5'-2", संपन्न परिवार की कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2529, सरिता, नई दिल्ली-55.

बी. ए. (आनर्स) में अध्ययनरत कन्या हेतु सुयोग्य, राजपूत वर चाहिए. शीघ्र लिखें : वि. नं. 2541, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीया, बीसा अग्रवाल, एम. ए. (मेरिट में पास), मध्य प्रदेश निवासी, कद 5'-3"½, सुंदर कन्या के लिए योग्य वर चाहिए. अच्छी शादी. सविवरण लिखें : वि. नं. 2616, सरिता, नई दिल्ली-55.

23 वर्षीया, सिसोदिया, बी. ए. फाइनल में पढ़ रही, सुंदर, गौरवर्णीय कन्या के लिए वर की आवश्यकता है. विशेष दहेज देने में असमर्थ कृपया उच्च कुलीन राजपूत ही पत्रव्यवहार करें : वि. नं. 2656, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, प्रजापति (कुम्हार), एम. ए., बी. एड., कन्या के लिए योग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 2657, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, खोजा स्माइली, एम. ए. (इंगलिश), सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, राजकीय कार्य में सेवारत, मासिक आय 600 रुपए, कन्या के लिए सजातीय, शिक्षित वर की आवश्यकता है. लिखें : वि. नं. 2658, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, राजपूत, डाक्टर कन्या हेतु राजपूत, डाक्टर वर चाहिए. दहेज के इच्छुक न लिखें : वि. नं. 2659, सरिता, नई दिल्ली-55.

23 वर्षीया, माहेश्वरी, बी. एससी. तथा एम. ए. अर्थशास्त्र में उत्तीर्ण, सुंदर एवं गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सुशिक्षित, व्यवसायरत, सुंदर वर की आवश्यकता है. उत्तम विवाह परंतु बिना किसी प्रकार के बंधन के. लिखें : वि. नं. 2660, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, उत्तर प्रदेशी खत्री, एम. ए., सुंदर, गृहकार्य में दक्ष कन्या के लिए सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. लिखें : वि. नं 2661, सरिता, नई दिल्ली-55.

18 वर्षीया, अग्रवाल, मैट्रिक, 4'-7" कद, रंग साफ. नाकनक्श साधारण, शादी उत्तम, हेतु छोटे कद का अग्रवाल वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2662, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, माहेश्वरी, एम. ए., बी. एड., कद 5'-4", गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष कन्या के लिए सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2663, सरिता, नई दिल्ली-55.

20 वर्षीया, सक्सेना, (मंगली) बी. एड., सुंदर, स्वस्थ कन्या हेतु कायस्थ वर की आवश्यकता है. लिखें : वि. नं. 2664, सरिता, नई दिल्ली-55.

माहेश्वरी वरों की आवश्यकता है दो बहनों के लिए. गृहकार्य में दक्ष क्रमशः एम. ए., बी. एड., बी. ए., बी. एड., कद 5'-5", 5'-2", साफ रंग, संपन्नशालीन एवं पढ़ेलिखे परिवार से संबद्ध, बढ़िया शादियां. लिखें : वि. नं. 2665, सरिता, नई दिल्ली-55.

29½ वर्षीया, हिंदू कुरील, जे. बी. टी., कद 5'-3", सांवला रंग, गृहकार्य में दक्ष, निस्संतान विधवा के लिए सुयोग्य वर चाहिए. विवाह शीघ्र, प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 2666, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, उच्चशिक्षित, नाई परिवार की सुंदर, गौरवर्ण, बी. एससी. कन्या के लिए उच्च पदस्थ वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2667, सरिता, नई दिल्ली-55.

23 वर्षीया, मध्यवर्गीय अग्रवाल, एम. ए., बी. एड., सुंदर, गौरवर्ण कन्या को सुंदर शिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. मध्यमवर्गीय उत्तम विवाह. लिखें : वि. नं. 2668, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, खत्री, स्नातक, शासकीय सेवारत, कद 5'-2", गृहकार्य में दक्ष कन्या के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2669, सरिता, नई दिल्ली-55.

बीसा अग्रवाल जैन, एम. एससी., गुजरात स्थित, पश्चिम उत्तर प्रदेशीय, सुशील, सुंदर तथा संपन्न घराने की कन्या हेतु उच्चस्तरीय, कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2670, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीया, उत्तर प्रदेशीय ब्राह्मण, ग्रेजुएट, अध्यापिका, तलाकशुदा, निस्संतान हेतु 30-35 वर्षीय, आधुनिक विचारयुक्त युवक चाहिए. दहेज नहीं. लिखें : वि. नं. 2671, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 एवं 20 वर्षीया, दिगंबर जैन, एम. एससी. अध्ययनरत, संपन्न परिवार की सुंदर, सुयोग्य कन्याओं के लिए लेक्चरर, इंजीनियर डाक्टर अथवा समकक्ष वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2672, सरिता, नई दिल्ली-55.

33 वर्षीया, सक्सेना, एम. ए., बी. एड., सुंदर, स्वस्थ कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2673, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, गौड़ ब्राह्मण, गौरवर्ण, एम. ए., (मंगली) कन्या के लिए वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2675, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, अग्रवाल, एम. ए, बी. एड., स्वस्थ, सुंदर, इकहरा बदन, गेहुआं रंग, कद 5'-1½", गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु बारोजगार वर चाहिए. अच्छी शादी. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 2655, सरिता, नई दिल्ली-55.

---

24 वर्षीय, मैथल ब्राह्मण, भारद्वाज गोत्र, इलैक्ट्रिकल इंजीनियर (डिप्लोमा), सरकारी सेवारत, आय 500 रुपए, स्वस्थ, सुंदर, कद 5'-6", अच्छा परिवार, उज्ज्वल भविष्य वाले युवक के लिए 21 वर्षीया, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, सुशिक्षित कन्या चाहिए. विवाह शीघ्र. लिखें : वि. नं. 2674, सरिता, नई दिल्ली-55.

29 वर्षीय, राजपूत, एम. ए., बी. एड., आय 800 रुपए, इकहरे, आकर्षक व्यक्तित्व वाले युवक हेतु सुंदरतम कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 2676, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीय, पोस्टग्रेजुएट, मासिक आय 1,000 रुपए, अनाथ, स्वस्थ, सच्चरित्र युवक के लिए गरीब परिवार की सुंदर, स्वस्थ, सच्चरित्र शिक्षित कन्या चाहिए. दानदहेज, प्रांत, जाति का बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2677, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, निगम कायस्थ, डबल एम. ए. लेक्चरर डिग्री कालिज, मासिक आय 700 रुपए, स्वस्थ युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, कायस्थ वधू चाहिए. दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2678, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, बंगाली कायस्थ, ग्रेजुएट, स्टेट बैंक में कार्यरत, मासिक वेतन 600 रुपए, कद 5'-1", युवक हेतु सुंदर, स्वस्थ, सुशील, शिक्षित, गौरवर्ण, स्मार्ट, इकहरे बदन की प्रतिष्ठित व उच्च घराने की कन्या चाहिए. जाति व दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2679, सरिता, नई दिल्ली-55.

35 वर्षीय, राजपूत, बी. ए., विधुर (दो पुत्र आठ वर्ष व एक वर्ष) केंद्रीय सेवारत, आय 500 रुपए, हेतु 24 से 29 वर्षीया कन्या/निस्संतान विधवा चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2680, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीय, मेढ़ राजपूत, मैकेनिकल ओवरसीयर के लिए सुंदर और सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 2681, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीय, उत्तर प्रदेशीय ब्राह्मण, एम. एससी., सरकारी सेवारत, मासिक आय 800 रुपए, विदेशी भाषा में उपाधि प्राप्त, कद 5'-8", अत्यंत सुंदर, गौरवर्ण व आकर्षक व्यक्तित्व वाले कलाकार हृदय युवक के लिए, अत्यंत सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व वाली शिक्षित जीवनसंगिनी चाहिए, जाति, दहेज बंधन नहीं. केवल कन्या को प्राथमिकता. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 2682, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीय, बीसा अग्रवाल, संपन्न, शिक्षित, उत्तर प्रदेशीय व्यावसायिक परिवार के उच्च शिक्षित, आकर्षक, व्यापार में संलग्न, अच्छी आय वाले युवक के लिए, अति सुंदर, सौम्य, सुशिक्षित, कुलीन, गौरवर्ण, लंबी, छरहरी, 18-19 वर्षीया, निपुण कन्या चाहिए. कन्या को ही महत्व. उपजाति व प्रांत बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2683, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, डिप्लोमा इंजीनियर, म. प्र. सिंचाई विभाग में ओवरसीयर के लिए सुयोग्य वधू चाहिए. जाति, दहेज, विधवा का बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2684, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीय, अग्रवाल गर्ग गोत्रीय, मैकेनिकल इंजीनियर (प्रथम स्थान प्राप्त भारत), एम. एस. (अमरीका), न्यूयार्क में इंजीनियर, 10000 रुपए मासिक एवं पीएच. डी. में संलग्न, कद 5'-4", सुंदर, स्वस्थ, गौरवर्ण नवयुवक के लिए सजातीय, उच्च शिक्षा प्राप्त [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 2685, सरिता, नई दिल्ली-55.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

22 वर्षीय, गोयल गोत्रीय बीसा अग्रवाल, मैट्रिक, कद 170 सें. मी. स्वस्थ, सुंदर, युवक के लिए सुंदर कन्या चाहिए. युवक की व्यक्तिगत आय पांच अंकों में है और अच्छी संपत्ति है. लिखें : वि. नं. 2686, सरिता, नई दिल्ली-55.

43 वर्षीय, संभ्रांत आर्यसमाजी अग्रवाल, अति संपन्न, कुंआरा, पायलट के लिए तदानुरूप, रूपशीला, बुद्धिमति, शांत, ग्रेजुएट कुमारी चाहिए. लिखें : वि. नं. 2687, सरिता, नई दिल्ली-55.

23 वर्षीय, मारवाड़ी अग्रवाल बंसल गोत्री, कामर्स ग्रेजुएट, बंगलौर निवासी, कद 5'-5", निजी व्यवसाय में संलग्न, आय 4 अंकों में, सुंदर और स्वस्थ युवक के अति सुंदर, गौरवर्ण, सुशिक्षित, सजातीय कन्या चाहिए. दहेज बंधन नहीं. पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 2688, सरिता, नई दिल्ली-55.

31 वर्षीय, श्रीवास्तव, गजटेड अफसर, मध्य प्रदेश, हेतु लेक्चरर अथवा मेडिको कायस्थ वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 2689, सरिता, नई दिल्ली-55.

35 वर्षीय, आयुर्वेद स्नातक, फार्मर को वधू चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2690, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, माहेश्वरी, सिविल इंजीनियर, शासकीय संस्थान में कार्यरत, सुंदर युवक हेतु स्मार्ट, स्वस्थ, सुंदर, शिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 2691, सरिता, नई दिल्ली-55.

29 वर्षीय, श्रीवास्तव, सरकारी सेवारत, 400 रुपए मासिक आय वाले युवक हेतु शिक्षित कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 2692, सरिता, दिल्ली-55.

27 वर्षीय, सैनी, एम. एससी., राजकीय सेवारत, 500 रुपए मासिक आय वाले युवक हेतु योग्य, ग्रेजुएट कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 2693, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीय, अग्रवाल, स्टेट बैंक में सेवारत, मासिक आय 625 रुपए, सुंदर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाले युवक हेतु अति सुंदर, गौरवर्ण वधू चाहिए. उपजातीय बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2694, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीय, सक्सेना कायस्थ, एम. एससी., पीएच. डी., उत्तर प्रदेश निवासी, 600 रुपए मासिक आय, कद 6', सुंदर, स्वस्थ युवक हेतु सुंदर, स्वस्थ, सुशिक्षित, गौरवर्ण, लंबी, सजातीय लड़की चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 2695, सरिता, नई दिल्ली-55.

40 वर्षीय, माहेश्वरी, विधुर, स्वस्थ, सुंदर, शिक्षित एवं संपन्न युवक के लिए सजातीय निस्संतान विधवा चाहिए, शीघ्र लिखें : वि. नं. 2696, सरिता, नई दिल्ली-55.

35 वर्षीय, कनाडा में इंजीनियर, बारह हजार रुपए वेतन, लंबे कद के युवक हेतु 30 वर्षीया, अति सुंदर कन्या, निस्संतान विधवा अथवा परित्यक्ता की आवश्यकता है. दहेज तथा जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2697, सरिता, नई दिल्ली-55.

33 वर्षीय, राजपूत, संपत्तिहीन, पत्रकार को जीवनसंगिनी चाहिए. जाति बंधन नहीं. क्रिश्चियन भी आवेदन करें : वि. नं. 2698, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, कायस्थ, इंजीनियर अफ्रीका में एक अच्छी कंपनी में मैकेनिकल इंजीनियर हेतु कम से कम 23 वर्षीया कायस्थ या ब्राह्मण, सुशील, देखने में सुंदर तथा कम से कम बी. ए. पास, जो अमरीका में रह कर सुखी जीवन बिता सके, कन्या चाहिए. लिखें : Ravindra Kumar Sinha, 814, Monroe st., River Forest, Dll-60305, U. S. A.

37 वर्षीय, ब्राह्मण, नेत्रहीन, सरकारी कालिज में प्राध्यापक, मासिक वेतन 960 रुपए के लिए सुशिक्षित वधू चाहिए. जाति व दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2699, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, ब्राह्मण, पोस्टग्रेजुएट, शासकीय सेवारत, 500 रुपए मासिक आय, कद 5'-10", स्वस्थ, सुंदर युवक हेतु सुंदर, ग्रेजुएट ब्राह्मण वधू चाहिए. कश्मीरी ब्राह्मण को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 2700, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीय, गोयल गोत्रीय, अग्रवाल, एम. काम., एलएल. बी., कद 6', सुंदर, स्वस्थ युवक, निजी व्यवसाय, मासिक आय 2,000 रुपए से ऊपर के लिए लंबी, सुंदर, शिक्षित कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 2701, सरिता, नई दिल्ली-55.

वैवाहिक व गोद विज्ञापन की दर 1 रु. प्रति शब्द है. विज्ञापन के उत्तर में प्राप्त पत्रों को भेजने के लिए 4 रु. प्रति विज्ञापन अतिरिक्त शुल्क है.
विज्ञापन विभाग, सरिता,
नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिक्स

विश्वसनीय थर्मोमीटर

सहीसही तापमान
मापने के लिए
अद्वितीय है हिक्स—
सौ वर्षों के
अनुभव से सिद्ध

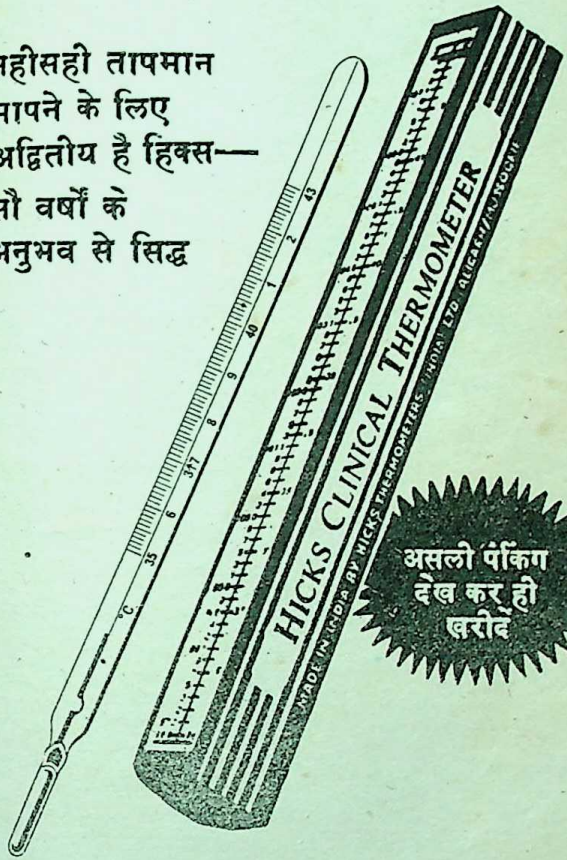

असली पैकिंग
देख कर ही
खरीदें

हिक्स —अंतर्राष्ट्रीय शुद्धता का मानक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

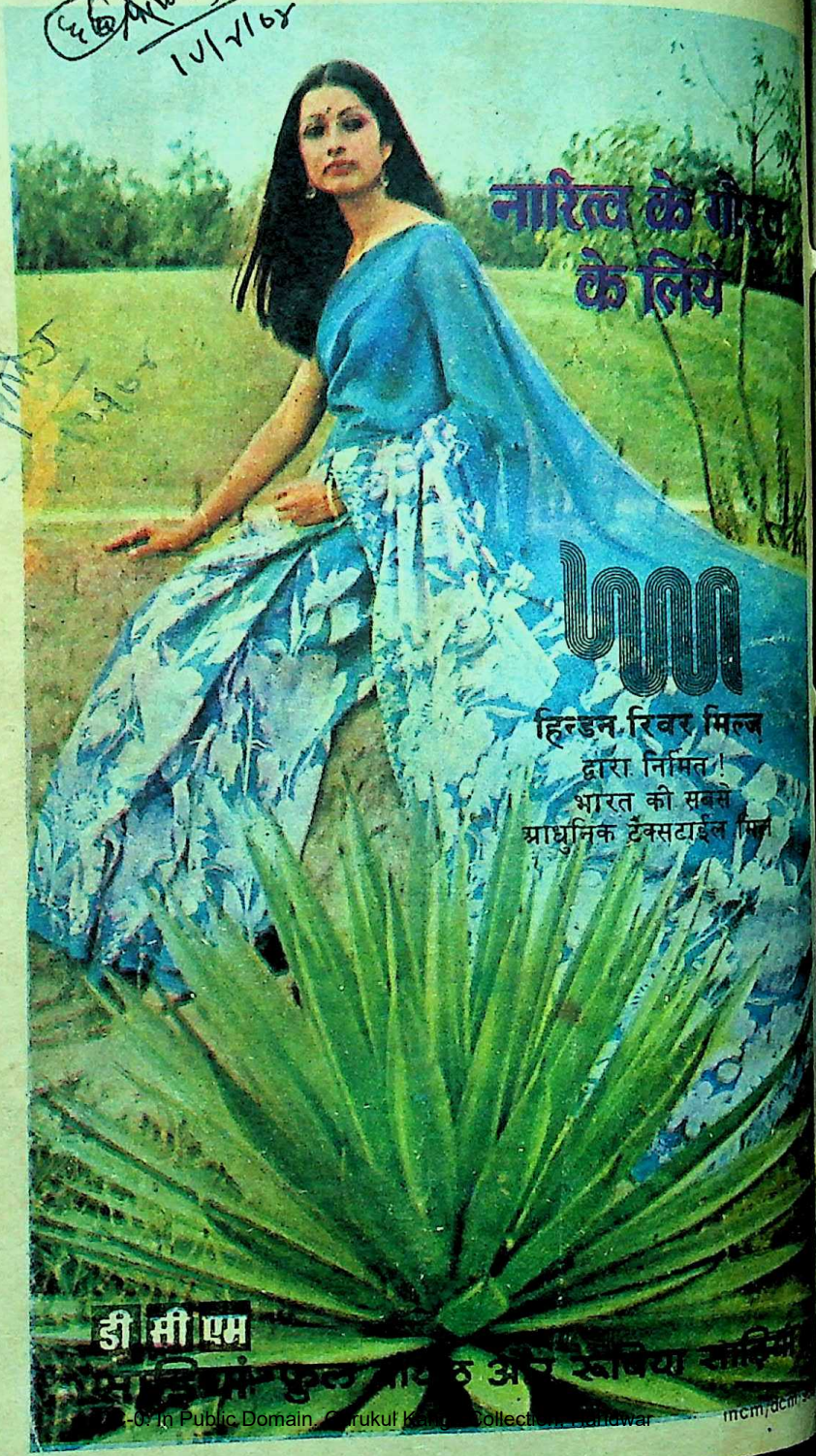

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

जून (द्वितीय) 1974

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी
१५६१६४

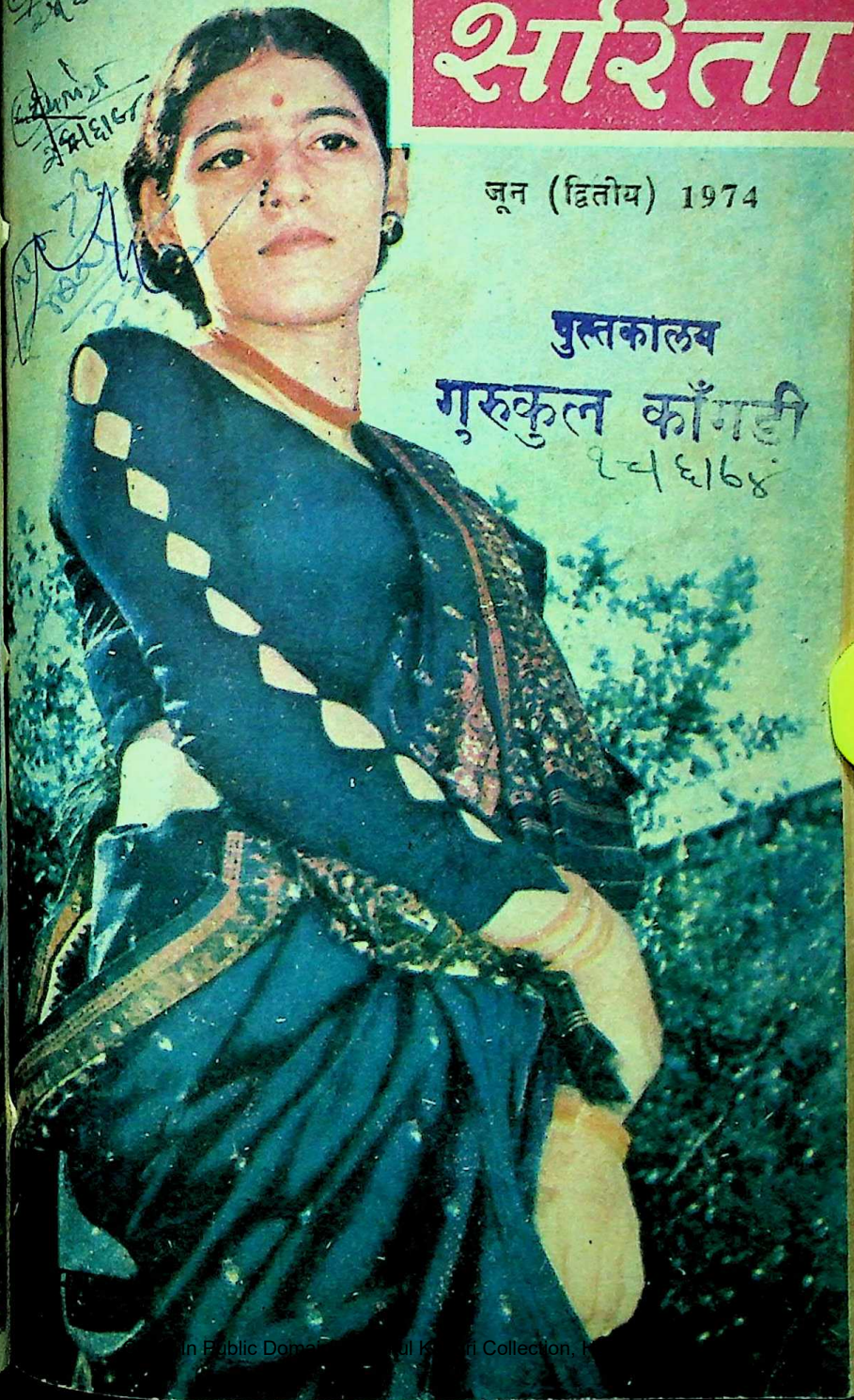

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ौरन आराम देनेवाला पाउडर:

नया जॉन्सन्स* मेन्थोलेटेड पाउडर

गर्मी आ गई, और अपने साथ क्या-क्या परेशानियां लाई है आप जानते हैं. पसीना, उमस, परेशानी और झुंझलाहट. लेकिन अब गर्मी की सारी परेशानियों से फ़ौरन छुटकारा पाने का एक आसान उपाय है—जॉन्सन्स मेन्थोलेटेड पाउडर—एक ऐसा पाउडर जो फ़ौरन अपना कमाल दिखलाता है. सारे शरीर पर इसे छिड़किए. यह पसीना सोख लेता है और घमौरियों तथा गर्मी की चुभन और चुनचुनाहट से आपको आराम दिलाता है. आप फ़ौरन मेन्थॉल की शीतलता अनुभव करते हैं. जॉन्सन्स मेन्थोलेटेड पाउडर—फ़ौरन आराम देनेवाला पाउडर. सारा दिन आराम पाने के लिए इसका नियमित प्रयोग कीजिए. जॉन्सन्स मेन्थोलेटेड पाउडर. आजही खरीदिए. बिना इसके गर्मी काटना मुश्किल है.

फ़ौरन आराम देनेवाला पाउडर लगा कर गर्मी की तकलीफ़ से छुटकारा पाइए.

*ट्रेडमार्क कॉपीराइट जॉन्सन ऐंड जॉन्सन

जॉन्सन ऐंड जॉन्सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

अंक 460
जून (द्वितीय) 1974

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

सम्पादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

सरिता शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है

प्रकाशनार्थ भेजी गई रचनाओं की सुरक्षा के लिए कार्यालय उत्तरदायी नहीं है. टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएं लौटाई जाएंगी.

दिल्ली प्रेस समाचार पत्र के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व गाजियाबाद में मुद्रित व प्रकाशित.

सम्पादन, प्रकाशन कार्यालय : दिल्ली प्रेस बिल्डिंग, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली.

एक प्रति : 2.00 रु.
वार्षिक : 40.00 रु.
दो वर्ष : 75.00 रु.
विदेशों में : (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 60.00 रु.
मुख पृष्ठ : सतीश मल्होत्रा

कथा साहित्य

कोयला भई न राख	लीला रूपायन	35
हाथी के दांत	मदनमोहन भार्गव	44
सुलह	अशोकदत्त 'सुमन'	68
सुबह का भूला	भगवान	83
उस पर हनुमानजी आए	राजेशकांत	93
फासला	मोहम्मद इब्राहीम	102
कफन चोर	तिलक	137

लेख

पुलिस और जनता	उर्मिला मिश्र	22
सोल्झेनित्सिन	ओमप्रकाश	29
दूर के ढोल...	निर्मला जैन	33
सबै रेल गोपाल की	सत्यपाल मुनि	52
भागवत...	रामस्नेही सिंह	61
फ्राक में बाटिक	अरुणारानी व्होरा	99
पत्नी गुमराह न हो जाए!	सावित्रीदेवी वर्मा	115
नाखूनों की सुंदरता	ऊषा चौधरी	127

कविताएं

फिर भटकने लग गया...	कृष्णकांत खंडेलवाल	67
तुम्हारी याद...	क्षमा चतुर्वेदी	110
नयन में खिचने लगे...	अखिलेश 'अंजुम'	114

स्तंभ

सरित प्रवाह	19	मुझे शिकायत है	101
बच्चों के मुख से	57	चंचल छाया	131
हमारी बेड़ियां	58	आप के पत्र	141

रेल अव्यवस्था के कारण सरिता का मई (द्वितीय) '74 अंक प्रकाशित नहीं किया गया था. समयाभाव के कारण यह सूचना जून (प्रथम) '74 अंक में नहीं दी जा सकी. नियमित ग्राहकों का शुल्क एक अंक आगे बढ़ा दिया गया है. —प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सही पालन पोषण का आधार

पराग (स्प्रे ड्राईड) शिशु दुग्ध आहार

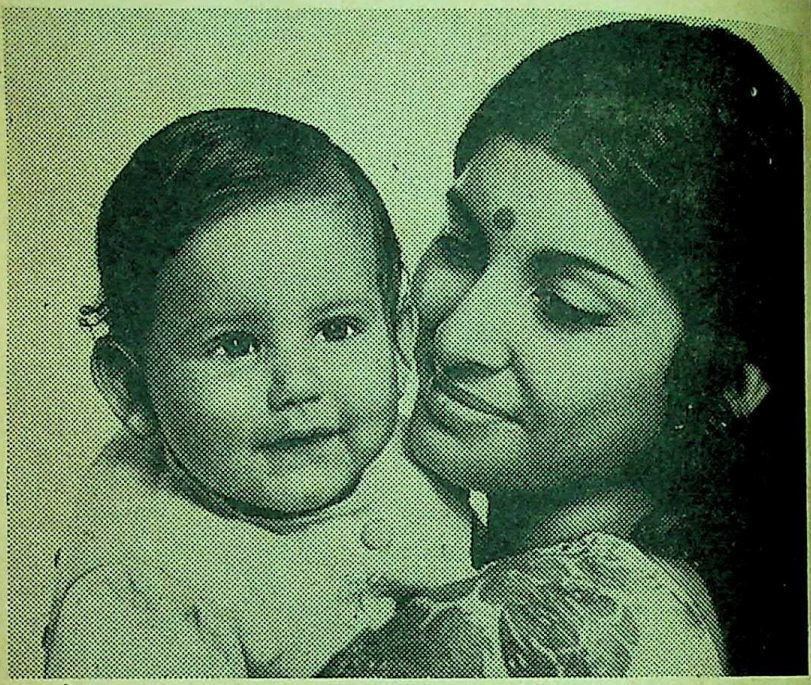

पूर्णतया संतुलित 'पराग' नवजात शिशु के सही पालन-पोषण के लिए विश्वसनीय दुग्ध आहार है। इसे आप शिशु को जन्म के पहले ही सप्ताह से दे सकती हैं। ताज़े दूध से अत्याधुनिक स्प्रे-ड्राईंग द्वारा निर्मित, पल-भर में तैयार प्रोटीन, विटामिनों (आठ), खनिज पदार्थों तथा अन्य पौष्टिक तत्वों से भरपूर 'पराग' को आप अपने शिशु की कोमल पाचन शक्ति के अनुकूल पायेंगी।

एकमात्र वितरक :

स्पैंसर एण्ड कं० लिमिटेड

प्रादेशिक कोऑपरेटिव डेरी फेडरेशन लि० लखनऊ द्वारा इन्फैंट मिल्क फूड फैक्टरी दलपतपुर, (मुरादाबाद) में निर्मित

asian/Pa/73/6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

nd eGangotri

चेहरा है या शबनम में नहाया हुआ फूल?
दिये की लौ सा झिलमिल जगमगाया हुआ रूप!
ग़र हल्के से सहला लें चेहरे पर यह क्रीम,
रच जाए, बस जाए, निखर जाए रूप!

सब देखते रह जाएं,
न राज़ जान पाएं,
बस, आँखों में बस जाए
ये सलोना रूप!

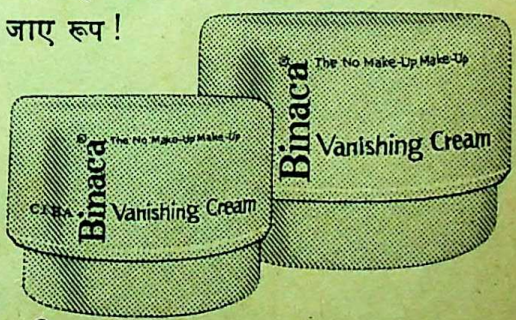

बिनाका® वैनिशिंग क्रीम

cv/23/hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने सौन्दर्य और स्वास्थ्य को सुरक्षित रखिए !

सुन्दरता यों ही नहीं आ जाती – उसके लिए **सन्तुलित आहार भी चाहिए**-केवल क्रीम पाउडर ही नहीं। आधुनिक जीवन की परेशानियों के बावजूद आप अपने सौन्दर्य और स्वास्थ्य की रक्षा कर सकती हैं।

प्रोपॅक आपकी आहार सम्बन्धी इसी आवश्यकता को पूरी करते हैं।

साधारण बिस्किटों से तीन गुने प्रोटीन, दस गुने विटामिन और कई गुने कैल्शियम और आयरन से भरपूर

प्रोपॅक®
स्वीटीज़

आपके मनपसन्द सौन्दर्य रक्षक!
हल्के आसानी से हजम हो जाने वाले प्रोपॅक बिस्किट स्फूतिदायक प्रोटीन, विटामिन, कैल्शियम और आयरन से भरपूर हैं

आपकी प्रिय प्रोपॅक® साल्टीज़ अब नए किफ़ायती डिब्बों में मिलती हैं

युनिकेम का उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

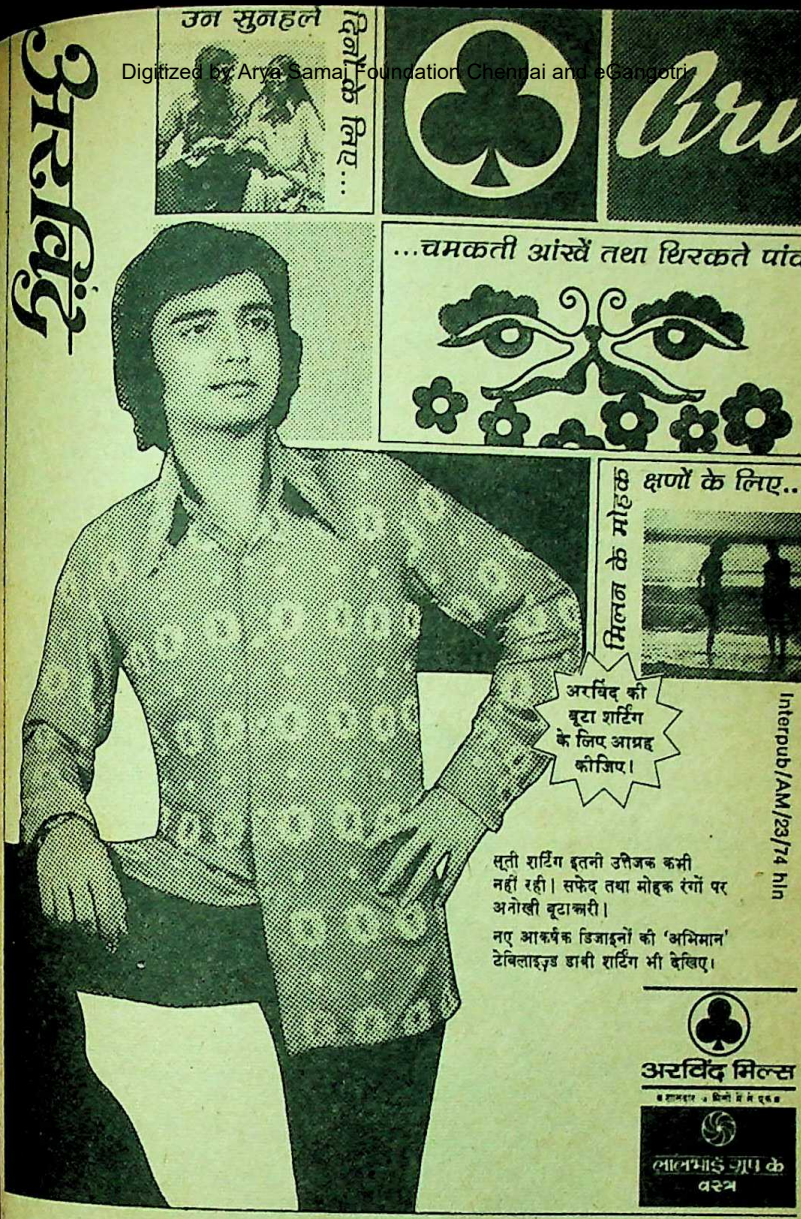

सुन्दर सुहाने कपड़े—अरविंद के कपड़े

[illegible] दुकानें: मे. वेंकटेश, २४३-२४४, नेताजी सुभाष चंद्र बोस रोड, मद्रास-१ ● मे. गौतमकुमार एण्ड कम्पनी, ४२४, कालबादेवी [illegible], रम्बई-२ ● अरविंद मिल्स रिटेल शॉप, रिलीफ रोड, अहमदाबाद ● मे. मोहन ब्रदर्स, क्लाक टावर, चांदनी चौक, दिल्ली-६ [illegible] मोहन ब्रदर्स एसोसिएट्स, १०२११, अजमल खान रोड, लाल माई चौक, करोल बाग, दिल्ली ● मे. भवरलाल मुथा एण्ड सन्स, [illegible] रास्ता, जयपुर ● मे. चंदूलाल दुर्गा प्रसाद, बांकीपुर, पटना-४ ● मे. बंसल ब्रदर्स, जी. टी. रोड, नकोदर चौक, जालंधर सिटी, [illegible] ईश्वरीस, २६-बी, वेस्ट टावर स्ट्रीट, मदुराई. ● मे. आनंद टेक्सटाइल्स, बड़ा बजार, श्रीनगर-८ ● मे. इन्दिरा टेक्सटाइल्स, [illegible] ब्लॉक सी.बी.ए.बी. कॉम्प्लेक्स, डिस्ट्रिक्ट आफिस रोड, बेंगलोर-९.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका बच्चा

संतुलित आहार क्या है?

संतुलित आहार के लिए अच्छे पोषण के ५ मूल तत्वों का उचित मात्रा में होना आवश्यक है। वे तत्व हैं :

प्रोटीन—

शरीर और मस्तिष्क के विकास के लिए। ये दाल, दूध से बनी चीज़ों, डबलरोटी, खिचड़ी, मांस, अंडों तथा मछली में पाये जाते हैं।

कार्बोहाईड्रेट्स—

शरीर में शक्ति बनाने के लिए। ये चावल, गेहूँ, आलू, शक्कर 'जैगरी' तथा केलों में पाये जाते हैं।

चर्बी—

अर्थात शरीर की संचित शक्ति और 'इंधन'। ये घी, मक्खन, असली दूध, मूँगफली, अखरोट, मांस की चरबी और वनस्पति तेलों में पायी जाती है।

विटामिन—

शरीर की अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यप्रणालियों को नियंत्रित करते हैं और बिमारियों का मुकाबिला करने के लिए शरीर की प्रतिरोध शक्ति बढ़ाते हैं। ये अनाज, हरी सब्ज़ियों, मूँगफली, अखरोट, काजू, सरसों व तिल के बीज, फलों, मछली, चर्बी और दूध से बनी चीज़ों में पाये जाते हैं।

गर्भ में आने से लेकर उसके जीवन के पहले पांच वर्षों तक आप उसे जो पौष्टिक आहार देंगी, वही उसे ज़िन्दगी भर अच्छा स्वास्थ्य प्रदान कर सकता है।

खनिज तत्व—

शरीर के विकास और वृद्धि में सहायक होते हैं। ये दूध से बनी चीज़ों, मछली, मेवा, किशमिश आदि, हरी सब्ज़ियों, अनाज तथा सरसों व तिल के बीज में पाये जाते हैं।

क्या संतुलित आहार मंहगा होता है ?

जी नहीं। इसके लिए तो आप को कुछ सूझ-बूझ और थोड़ी सी 'आहार नियोजन' की ज़रूरत है। क्योंकि ये पाचों पौष्टिक तत्व आपके दैनिक भोजन में मिल जाते हैं।

समय बरबाद मत कीजिए। अपने बच्चे का भविष्य सुखी बनाने के लिए उचित कदम अभी से उठाईये ! संतुलित आहार संबंधी मुफ्त पुस्तिका मंगाने के लिये हमें आज ही लिखिये।

मार्डन बेकरीज़ (इंडिया) लि०
(भारत सरकार का एक उद्यम)
लारेन्स रोड, इन्डस्ट्रियल ऐरिया
रिंग रोड, नई दिल्ली-११००३५

mcm/mb/1023

भारत सरकार की ओर से जनता के हित में, पौष्टिक और स्वादिष्ट मार्डन ब्रेड के निर्माता मार्डन बेकरीज़ की ओर से प्रकाशित,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोदी धागा खोज प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार: दो के लिए AIR FRANCE (एअर फ्रांस) द्वारा पेरिस की यात्रा और वापसी

यह मनोरंजन है, और बहुत सरल !

आपको केवल इतना करना है : चित्र में दिखाई गयी प्रत्येक वस्तु को ध्यानपूर्वक देखिये। ऐसी वस्तुओं को छांट लीजिये जिनमें आपके विचार से मोदी धागा उपयोग किया गया है। इन वस्तुओं को रंगदार पेंसिल या स्याही से भर दीजिये। याद रखिये, मोदी धागा केवल कढ़ाई में ही काम नहीं आता।

अब एक आकर्षक नारा सोचिए, जिसमें दस से अधिक शब्द न हों और फार्म भर कर तुरंत इस पते पर भेजिए "Spot the Modithread Contest", Modi Thread Mills, Modinagar (U.P.). आपके फार्म के साथ मोदी धागे की दो गुच्छियों के लेबल या एक रील या एक गोले का लेबल और कैशमीमो भी पहुँचने चाहिएं।

अपने निकटतम मोदी धागा के विक्रेता से फार्म तथा प्रतियोगिता का विवरण मांगिये।

अंतिम तिथि : १५ सितम्बर

मोदी धागे

रंगबिरंगे, पक्के रंग के धागे

OBM 2396

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़्यादा तेज़!

अनोखा स्वाद!

तेज़ लीकर और स्वाद अनोखा है — आइये, 'ताज' की एक प्याली का मज़ा लेकर देखिये। अब यह चाय हवाबन्द सिकाटेनर पैकेट में पहले से कहीं ज़्यादा ताज़ा मिलती है।

ब्रुक बॉंड ताजमहल

भारत की सर्वोत्तम सीटीसी चाय

Brooke Bond Taj Mahal SUPERIOR CTC LEAF TEA

BB 7700

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्वालियर क्रांति!

फैशन पर ग्वालियर सूटिंग का पूर्णाधिकार

ग्वालियर सूटिंग ने फैशन की दुनिया पर अपना आधिपत्य जमा लिया। इस फैशन की क्रांति का अर्थ पुराने फैशन को अलविदा कहना है।

ग्वालियर टेरीन सूटिंग आपके जीवन में नया आल्हाद भरने के लिए तत्पर है। फैशन के क्षेत्र में उसकी पहुंच व शक्ति अद्वितीय है।

चिताकर्षक रंगों, अद्भुत बुनाई और डिजाइनों में वे फैशन की सर्वोच्च चोटी पर हैं।

NPS/GR-4/74HIN

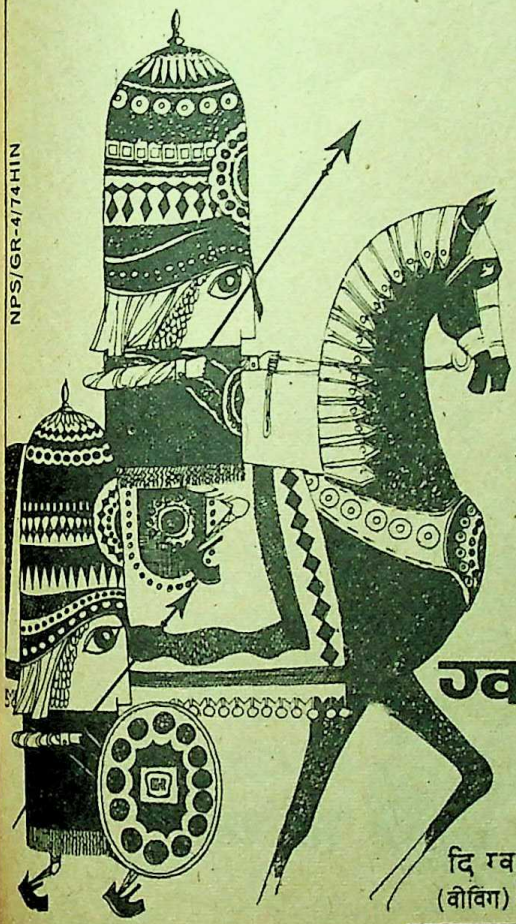

ग्वालियर सूटिंग

दि ग्वालियर रेयन सिल्क मैन्यू० (वीविंग) कं० लि०, बिरलानगर, ग्वालियर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्थॉल पाउडर आपको गर्म से गर्म मौसम में तरोताज़ा बनाये रखेगा। इसकी भीनी भीनी खुशबू आपको दिन भर सुवासित रखेगी।

गोदरेज निर्मित

सिन्थॉल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह नया २ बैण्ड का बुश पॉप्युलर है।

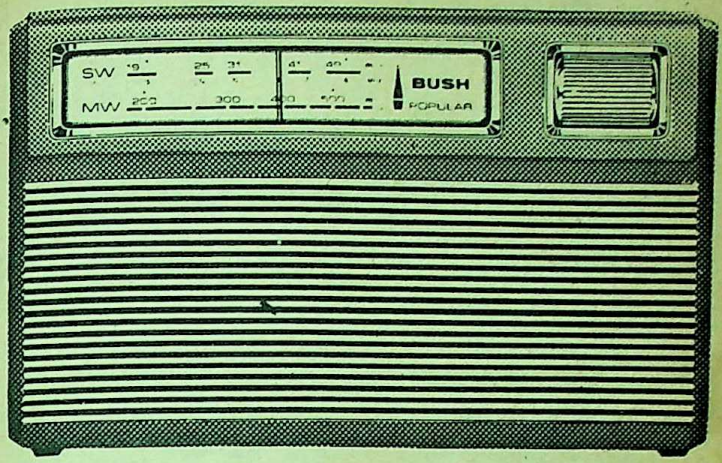

सिर्फ ६ महीनों में यह देश के सबसे अधिक बिकने वाले ट्रांजिस्टरों में से एक हो चुका है।

क्यों?

इसका कोई अच्छा कारण होना चाहिये।

दर असल इसके अनेक कारण है।

पहला कारण तो यह है कि आप बुश पॉप्युलर दो माडलों में खरीद सकते हैं। एक में १६, २५, ३१, ४१ और ४६ मीटर बैण्ड तथा दूसरे में २५, ३१, ४१, ४६, और ६० मीटर बैण्ड है जिससे आप संसार के सभी प्रमुख स्टेशन बड़ी आसानी से सुन सकते हैं।

तकनीकी दृष्टि से बुश पॉप्युलर में आपको सारी खुबिया मिलेंगी। ६ ट्रांजिस्टर तथा डायोड से आप अपना मनपसंद स्टेशन बुलंद और साफ़ आवाज में सुन सकते है।

६० मिलि मीटर के स्पीकर से आपको कार्यक्रम मधुर एवं साफ सुनाई देगा। २०० मिलि मीटर के फेराइट एरियल से आपको आवाज बिना किसी घरघराट के सुनाई देगी। एक लंबी और आसान रौलर ट्युनिंग स्केल तथा रौलर ट्युनिंग नाब की सहायता से आप अपना मनचाहा स्टेशन बड़ी आसानी से लगा सकते हैं। स्टेशन लगाने के बाद में स्थिर रहेगा।

इतना ही नहीं, हमने बुश पॉप्युलर को अनोखी चमकदार एवं मैट फिनिश दोनों में एक ऐसा दिलकश सेट बनाया है जिसे आप देखते ही उस पर मोहित हो जावेंगे। आपका मन और भी लुभाने के लिये. बुश पॉप्युलर ६ मनमोहक रंगों में मिलता है।

इन सबके बाद भी हमने इसकी कीमत बिलकुल वाजिब रखी है। इसकी कीमत केवल १७७* है।

इस सबका परिणाम यह होगा कि जब आप बुश पॉप्युलर देखने आवेंगे तो उसे खरीदे बिना नहीं लौटेंगे।

उच्च श्रेणी का ट्रांजिस्टर **बुश पॉप्युलर**

*कीमत में एक्साइज, ड्युटी शामिल है, बिक्री कर अलग से।

Rediffusion BI/93d hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GEC तूफ़ान

सीलिंग फ़ैन

६ ख़ास खूबियाँ जो ज़्यादा दिन चलने और ज़्यादा हवा को सुनिश्चित करती हैं

१ ताकतवर व ज़्यादा उम्दा काम करने वाली मोटर की वजह से बिजली का खर्च कम व ज़्यादा टिकाऊ।

२ वैज्ञानिक तरीके से मोड़े हुए ब्लेड। नतीजा? बड़े दायरे में ज़्यादा हवा, डोलता बिल्कुल नहीं। ज़्यादा मज़बूत होने से ब्लेड बहुत दिनों तक सही हालत में बने रहते हैं।

३ मोटर के ठीक सिरे पर कण्डेन्सर बैठाया गया है। नतीजा? लगाने और मरम्मत करने में आसान।

४ एक बॉल और एक बुश के बदले दो बॉल बेयरिंग। नतीजा? सहज, निःशब्द और निरापद काम करता है।

५ ऊँचे दर्ज़े का रेगुलेटर। सरफेस और कन्सील्ड दोनों ही तरह की वायरिंग के काबिल। साथ ही पॉजिटिव कन्टैक्ट और दिन पर दिन एक जैसी जोरदार स्पीड।

६ आजकल के फैशन के मुताबिक बना यह फ़ैन आधुनिक घर और दफ़्तर की सजावट के अनुकूल है।

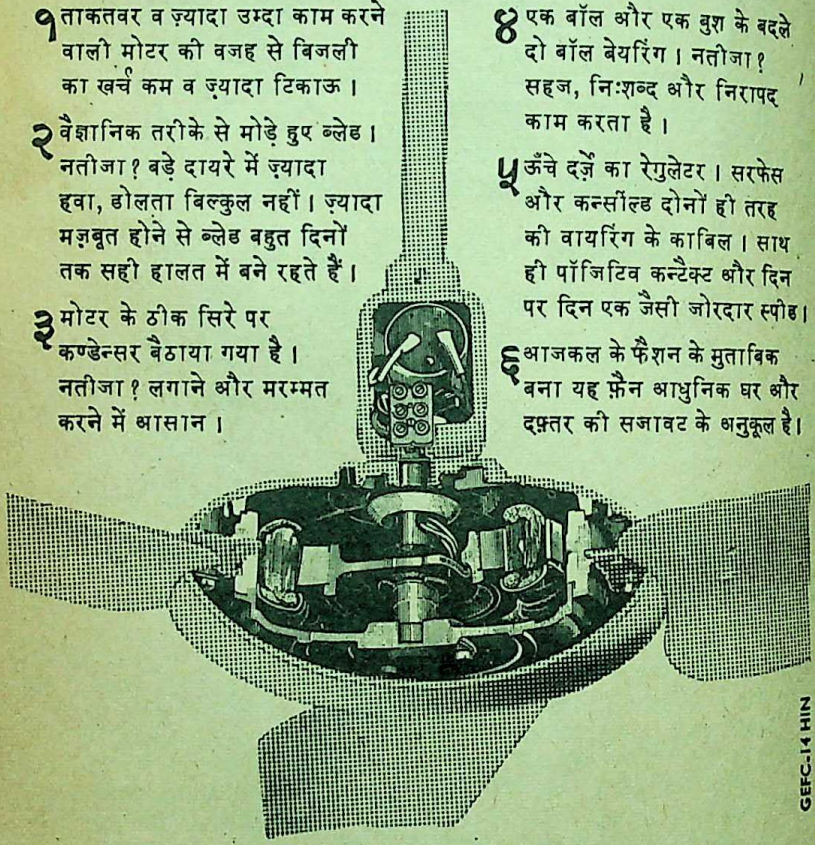

GEFC-14 HIN

आज ही लगा लीजिए—ज़िन्दगी भर आराम कीजिए!

दि जनरल इलेक्ट्रिक कम्पनी ऑफ़ इण्डिया लिमिटेड

ट्रेड मार्क GEC अनुमति प्राप्त प्रयोगकर्त्ता : दि जनरल इलेक्ट्रिक कम्पनी ऑफ़ इण्डिया लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने चेहरे पर [illegible] किसलने वाले ब्लेड और अंतरिक्ष से लाये गये ब्लेड इस्तेमाल किये हैं

[illegible] ब्लेड और अजीब धातुओं से लेप किये ब्लेड भी आज़माए हैं

[illegible] कभी यहाँ कटे, तो कभी वहाँ, चेहरा कट के, जल के रह गया

फिर सिल्वर प्रिंस इस्तेमाल किया ...कोई बड़े बड़े वादे तो नहीं, लेकिन शेव साफ़-सुथरी और मुलायम

सिल्वर प्रिंस

अपना वादा पूरा निभाता है...
आपकी हर शेव साफ़, सुथरी और मुलायम

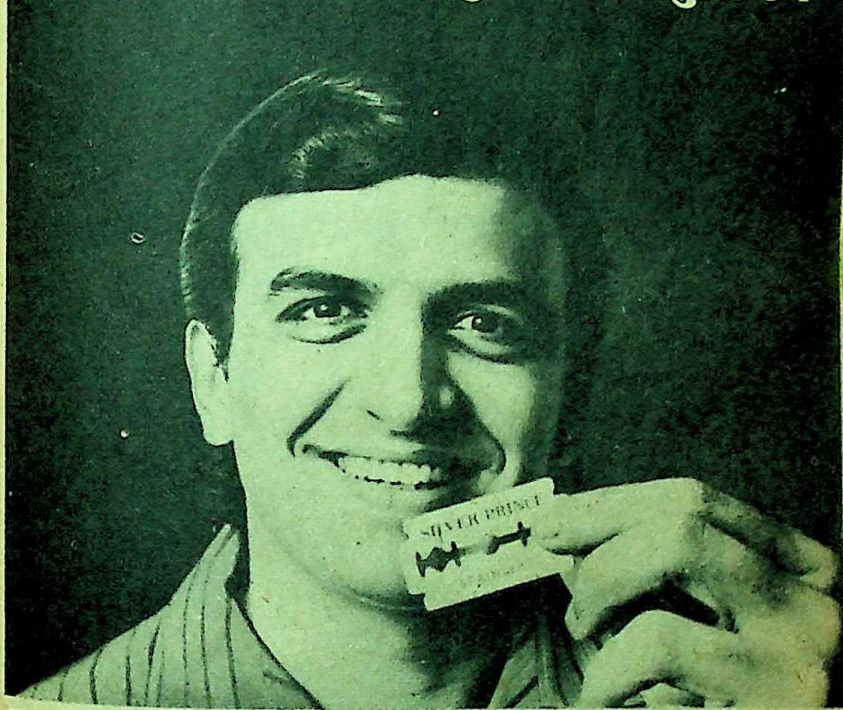

सिल्वर प्रिंस–शेव के बाद शेव–मज़ेदार शेव

सिल्वर प्रिंस स्टेनलेस ब्लेड आपको साफ़ व मुलायम शेव देता है क्योंकि हर ब्लेड सदैव विदेशी स्टेनलेस स्टील और भारत की आधुनिक वैज्ञानिक विधियों से बनता है।

इसी लिये, शेव करते समय आप अपूर्व आनन्द अनुभव करते हैं। तभी तो सिल्वर प्रिंस ब्लेड से शेव करने में इतना मज़ा आता है।

Grant.5 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रायपुर के राजकुमार की पहचान?

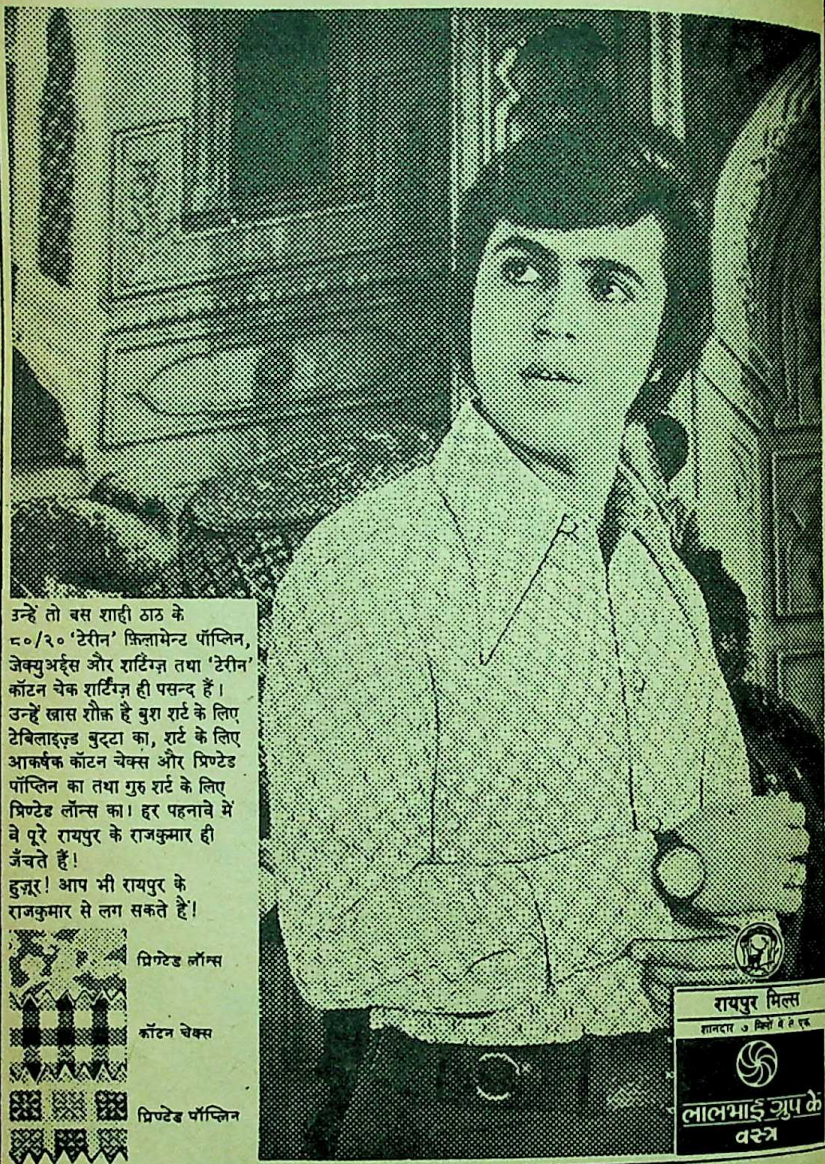

उन्हें तो बस शाही ठाठ के ८०/२० 'टेरीन' फ़्लामेन्ट पॉप्लिन, जेक्युअर्ड्स और शर्टिंग्ज़ तथा 'टेरीन' कॉटन चेक शर्टिंग्ज़ ही पसन्द हैं। उन्हें ख़ास शौक़ है बुश शर्ट के लिए टेबिलाइज़्ड बुट्टा का, शर्ट के लिए आकर्षक कॉटन चेक्स और प्रिण्टेड पॉप्लिन का तथा गुरु शर्ट के लिए प्रिण्टेड लॉन्स का। हर पहनावे में वे पूरे रायपुर के राजकुमार ही जँचते हैं!

हुज़ूर! आप भी रायपुर के राजकुमार से लग सकते हैं!

प्रिण्टेड लॉन्स

कॉटन चेक्स

प्रिण्टेड पॉप्लिन

CMLB.31.172 HN

विक्रेता : मेसर्स अमर टेक्स्टाइल कं., १९९/२००, क्लॉथ मार्केट, दिल्ली-६। मेसर्स गिरधारीलाल हीरालाल, जनरल गंज, कानपुर-१।

रिटेल शॉप्स : मेसर्स मोहन ब्रदर्स एसोसिएट्स, १०२११, अजमलखाँ रोड, करोलबाग, नयी दिल्ली।

मेसर्स मोहन ब्रदर्स, ७५२, क्लॉक टॉवर (घंटाघर), चाँदनी चौक, दिल्ली-६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाद छुप ही नहीं सकता !!

ताज़ा, करारा, व स्वाद में अनोखा - वाह ! यह तो बिल्कुल साठे माल्टएक्स बिस्कुट ही है।

इस अनोखे स्वाद का कारण है मॉल्ट, जो इस बिस्कुट में भरपूर है। पचने मे हलका व पोषक सत्वों से भरपूर यह बिस्कुट चाहे जितने भी खायें, और खाने को जी चाहता है। इसलिये कि इसमे मॉल्ट है !

आज ही खरीदिये और फर्क देखिये !

heros' SBC-50 D

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेलीन कर्टिस पेश करते हैं

टियारा शिकाकाई हर्ब शैम्पू

न टूटने-फूटनेवाली
क्रांतिकारी नई साफ
प्लास्टिक की बोतल

यह सिर्फ शैम्पू ही नहीं है, आप के बालों को साफ, स्वास्थ्यपूर्ण और चमकदार रखने के लिए एक सम्पूर्ण सौन्दर्य प्रसाधन है!

बालों की देखभाल के लिए जगप्रसिद्ध हेलीन कर्टिस ने विशुद्ध शिकाकाई, विशेष जड़ीबूटियों, आँवला और ब्राह्मी के तत्वों के मिश्रण से एक प्राकृतिक, सुगंधित और भरपूर झागयुक्त शैम्पू तैयार किया है। पुरानी मान्यताओं और नई सुविधाओं का अनूठा संगम, टियारा शिकाकाई हर्ब शैम्पू बालों को सजाने-सँवारने के लिए बेजोड़ शैम्पू है। यह आप के बालों के प्राकृतिक तेलों को नष्ट नहीं करता। सिर्फ एक बार धोने पर ही इसका भरपूर झाग आप के बालों को स्वस्थ रखने के साथ-साथ उन्हें अपूर्व चमक भी देता है। आज ही टियारा शिकाकाई हर्ब शैम्पू इस्तेमाल कीजिए और खुद ही देखिए इसकी विशेषताएँ कितनी अनोखी हैं।

TIARA by Helene Curtis

भारत में बनानेवाले: जे. के. हेलीन कर्टिस लि., बम्बई-१

ARMS-HC-012-78

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरित प्रवाह

पिछली 18 मई को भारत के वैज्ञानिकों ने पश्चिमी राजस्थान में परमाणु विस्फोट कर के भारत को संसार के उन पांच बड़े देशों की श्रेणी में ला कर खड़ा कर दिया है, जिन्होंने अब तक परमाणु विस्फोट किए हैं और परमाणु अस्त्र बनाए हैं. वे देश हैं : अमरीका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन.

इस के लिए उन्हें सारे देश ने बधाई दी है और वे इस के वास्तविक हकदार हैं. जहां हमारे नेता और राजनीतिबाज देश को नीचे ले जाने, अधिक गरीब बनाने और कानून व्यवस्था के ढांचे को चकनाचूर करने में लगे हैं, वहां इन्होंने देशवासियों को आशा की एक किरण दिखाई है जिस से वे अपना सिर ऊंचा कर सकने के लायक हो गए हैं.

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी भी इस विषय में बधाई की पात्र हैं क्योंकि चाहे वह ऊपर से 'शांतिशांति' का मंत्र जपती रहीं परंतु उन्होंने अणु अनुसंधान कार्य को जारी रखा और जब समय आया तो इस से डर कर कि विदेशों के लोग तानाकशी करेंगे, आलोचना करेंगे और शायद सहायता भी बंद कर दें, परमाणु विस्फोट को रोका नहीं; उसे होने दिया

भारतीय वैज्ञानिक बिना किसी बाहरी सहायता के परमाणु विस्फोट कर सके, और वह भी बहुत कम लागत में, यह साबित करता है कि भारत के निवासी संसार में किसी अन्य जाति या देश से न बुद्धि में कम हैं, न बाहुबल में पीछे हैं. व्यक्ति से व्यक्ति का मुकाबला हो तो वे सब को पछाड़ सकते हैं. पर हम जब सामूहिक रूप से दूसरों से मुठभेड़ करते हैं तो मुंह की खाते हैं और गुलाम बनते हैं. और जैसा कि 'सरिता' निरंतर प्रचार करती रही है और कर रही है, हमारी गुलामी, गरीबी और पिछड़ेपन का कारण हमारी वैयक्तिक हीनता नहीं है बल्कि हमारा सामाजिक चिंतन, दर्शन, सोचविचार है जिसे बदले बिना हम कभी आगे नहीं बढ़ सकते.

भारतीय परमाणु विस्फोट पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया लगभग हमारी आशंका के अनुसार ही हुई है. जो समृद्ध देश हमारी सहायता कर रहे थे और बड़े अनुदान दे रहे थे, उन्होंने बिना लागलपेट के कहा कि वे भारत को इसलिए धन नहीं दे रहे हैं कि वह अणु अस्त्र बनाने में उस सहायता का दुरुपयोग करे. अमरीका, कनाडा, ब्रिटेन, जरमनी, जापान इत्यादि ने भारत की भर्त्सना की है और अब शायद वे सहायता देना भी बंद कर दें.

उधर रूस और फ्रांस ने इस विस्फोट पर कोई नाराजगी जाहिर नहीं की,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उलट थोड़बहुत शब्दों में इस का स्वागत किया है. ये देश भारत को जो सामान व तकनीकी ज्ञान इत्यादि देते हैं, उस का पूरा पैसा वसूल कर लेते हैं इसलिए इन के लिए अपने पैसे के दुरुपयोग पर आपत्ति करने का कोई प्रश्न नहीं उठता.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे, रूस और फ्रांस ने भारत के इस विस्फोट का स्वागत इस कारण भी किया है कि रूस चीन से खार खाए बैठा है और फ्रांस अमरीका से (चाहे दबे हुए लहजे में). रूस की चीन से किसी समय भी लड़ाई हो सकती है इसलिए यदि भारत के पास परमाणु अस्त्र हों तो उस से चीन की कन्नी दब सकती है. फ्रांस अमरीका को हर प्रकार से नीचा दिखाना चाहता है इसलिए वह खुश है क्योंकि वह जानता है कि अमरीका भारत के परमाणु अस्त्र बनाने पर नाराज होगा.

पर जहां तक देश की सुरक्षा का प्रश्न है, आज के युग में परमाणु अस्त्र के बिना कोई महत्त्वपूर्ण देश अपना बचाव नहीं कर सकता. यदि आप के पास यह अस्त्र नहीं है तो आप सब को कमजोर ही दिखाई देंगे और वे जब चाहेंगे, आप को थप्पड़ मारते हुए निकल जाएंगे और आप सिवा दांत पीसने के और कुछ नहीं कर सकेंगे. इसलिए हमें इस विषय में अमरीका तथा अन्य पश्चिमी देशों की आलोचना की कतई परवा नहीं करनी चाहिए और जल्दी से जल्दी परमाणु अस्त्र व राकेट बनाने चाहिए.

हमारी उपलब्धि से चिढ़ कर यदि अमरीका, कनाडा, जापान आदि सहायता बंद कर देते हैं तो हमें इस का भी स्वागत करना चाहिए क्योंकि यद्यपि इस से कुछ दिक्कतें अवश्य होंगी, पर अंत में हम अपेक्षाकृत अधिक शीघ्र स्वावलंबी हो जाएंगे. वैसे भी एक ओर हम परमाणु विस्फोट करें और दूसरी ओर भूखीनंगी जनता के नाम पर औरों से सहायता मांगें, बिलकुल बेहूदा बात है. यह वैसे ही लगेगा, जैसे बंगला देश हम से सहायता ले और साथसाथ एक सेना भी तैयार करे.

राजनीतिबाज नेताओं के बहकावे में आ कर रेलवे कर्मचारियों ने 8 मई को देशव्यापी हड़ताल कर दी. हड़ताल से पहले रेल मंत्रालय से उन की बातचीत चल रही थी, पर इस बातचीत को भारत सरकार ने अचानक रेलवे कर्मचारियों के नेता श्री जार्ज फर्नांडीस को गिरफ्तार कर के बंद कर दिया. भारत सरकार ने यह इसलिए किया कि श्री फर्नांडीस कहीं दुबक कर न बैठ जाएं और वहीं से हड़ताल का संचालन न करते रहें.

रेलवे कर्मचारियों की 8 मांगों में से दो बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं :

एक यह कि उन्हें या तो 75 प्रतिशत वेतनवृद्धि दी जाए, वरना अन्य सरकारी या गैरसरकारी संस्थानों में जो वेतनमान है, उसे उन पर भी लागू किया जाए.

दूसरी यह कि उन्हें भी अन्य औद्योगिक कर्मचारियों की तरह बोनस दिया जाए, जो कम से कम 8 प्रतिशत हो और अधिकतम 20 प्रतिशत.

सरकार ने उन की अन्य मांगें तो लगभग मान लीं परंतु इन दोनों पर बात करने से भी इनकार कर दिया और जब रेलवे कर्मचारियों के नेताओं को इन पर अड़ते देखा तो हड़ताली कर्मचारियों के खिलाफ काररवाई शुरू कर दी.

भारत सरकार के इस कदम को, सिवा कुछ विपक्षी राजनीतिक व मजदूर नेताओं के, किसी ने गलत नहीं कहा. वास्तव में भारत सरकार का इन मांगों पर विचार करने से भी इनकार करना बिलकुल ठीक है क्योंकि ये मांगें सर्वथा अनुचित हैं और कोई भी सरकार इन को मान कर देश का आर्थिक संतुलन नहीं बनाए रख सकती.

यह भी सर्वविदित ही है कि वर्तमान इंदिरा सरकार किसी भी हालत में पूंजीवादी, प्रतिक्रियावादी या साम्राज्यवादी नहीं कही जा सकती. कम्युनिस्ट लोग भी उसे समाजवादी मान कर ही उस के साथ सहयोग कर रहे हैं. इस प्रकार इस हड़ताल को पूंजीवाद व सर्वहारा वर्ग का

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

संघर्ष भी नहीं कहा जा सकता.

हड़तालियों के नेताओं को आशा थी कि जिस प्रकार अन्य हड़तालों में वे प्रबंधकों और मालिकों को दबा कर व सरकार की सहानुभूति प्राप्त कर के अपनी बात मनवा लेते थे, यहां भी वही होगा. उन के खयाल में इंदिरा सरकार इस समय संकट में है. देश में कीमतें तेजी से बढ़ रही हैं. हर चीज का अभाव है. गुजरात में सरकार ने मुंह की खाई है. उत्तर प्रदेश में वह जीती जरूर, पर हारने के बराबर. बिहार में विस्फोट होने को ही है. इस स्थिति में सरकार के पास सिवा रेलवे वालों के सामने घुटने टेकने के कोई और चारा नहीं है—विशेषतः जब कि देश का सारा जीवन ही रेलों पर निर्भर हो.

✦

परंतु हड़ताली नेता दो बातें भूल गए:

एक तो यह कि यहां मालिक सरकार थी, साधारण पूंजीपति या कारखाने वाला नहीं था. साधारण पूंजीपति से विवाद में सरकार की सहानुभति और शक्ति मजदूरों के पक्ष में प्रयुक्त की जाती है, पर यहां वह स्वयं न्यायाधीश थी, स्वयं अभियुक्त थी, इसलिए किसी तीसरे व्यक्ति या संस्था के दखल का सवाल ही नहीं था.

दूसरी बात यह कि जनसाधारण की सहानुभूति रेलवे कर्मचारियों के साथ बिलकुल नहीं है. प्रायः सभी को रेलवे वालों से वास्ता पड़ता है और सब को उस का कटु अनुभव है. यहां कोई कर्मचारी बिना पैसा ऐंठे काम ही नहीं करता. माल बुक कराइए तो ऊपर से पैसा दीजिए, माल छुड़ाइए तो पैसा दीजिए. वैगन चाहिए तो पैसा, सीट चाहिए तो पैसा. माल पूरा भेजिए, आधा रास्ते में गायब. रेलवे हर वर्ष 20-25 करोड़ रुपए के हरजाने के क्लेम देती है, और लगभग इस से चौगुने के क्लेम तो दायर ही नहीं किए जाते. रेल का कोयला, तेल, इसपात, लकड़ी, पानी, बिजली—सब पर कर्मचारियों का पुश्तैनी हक है. भूतपूर्व रेल मंत्री हनुमंतैय्या ने लोक सभा में कहा था कि लगभग दस करोड़ का कोयला रेल कर्मचारियों द्वारा या उन की मिलीभगत से चोरी हो जाता है और यह सब तब है, जब रेलवे कर्मचारियों को 90 प्रतिशत जनता से कहीं अधिक वेतन व सुविधाएं मिलती हैं.

इस पर जब रेलवे कर्मचारियों की ओर से 75 प्रतिशत वेतनवृद्धि की और एक मास से तीन मास तक के वेतन की बोनस के रूप में मांग की गई तो जनता का कोप स्वाभाविक था. और नहले पर दहला तब लगा, जब रेलवे कर्मचारियों के नेताओं ने कहा कि इस विशाल अतिरिक्त खर्च को रेल भाड़ा व किराया बढ़ा कर पूरा किया जाए, यानी 15 लाख कर्मचारियों के लिए 50 करोड़ उन लोगों की जेब और साफ की जाए जिन को एक समय भी पूरा भोजन नहीं मिलता.

इस के अतिरिक्त यह भी बिलकुल साफ था कि यदि सरकार रेल कर्मचारियों की ये मांगें किसी भी सीमा तक मान लेती तो अन्य सारे सरकारी कर्मचारी भी तत्काल ऐसी ही या इन से भी अधिक भयंकर मांगें रख देते और उन के सामने भी झुकना पड़ता.

ऐसी स्थिति में जब सरकार ने मोर्चा संभाल लिया और रोजरोज की हड़तालों से एक बार ही डट कर मुकाबला करने का फैसला किया तो जनता उस के साथ थी. इसी लिए हड़ताल के दिनों में सरकार ने जब हड़तालियों को बड़ी संख्या में बरखास्त किया, गिरफ्तार किया, रेलवे क्वार्टरों से निकाला और वफादार कर्मचारियों को इनाम दिए तो किसी ने कोई आपत्ति नहीं की. हां, कुछ राजनीतिक व मजदूर नेता जरूर चीखते-चिल्लाते रहे.

देश के औद्योगिक इतिहास में यह हड़ताल बहुत महत्त्वपूर्ण घटना है. इस के महत्त्व पर अगले अंकों में प्रकाश डाला जाएगा. ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेख • उर्मिला मिश्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता और पुलिस

कितने पास, कितने दूर?

अंगरेजों के समय में पुलिस को अंगरेजों का प्रतिनिधि समझा जाता था. उस समय पुलिस के अत्याचारों के प्रति जनता की प्रतिक्रिया बहुत बुरी होती थी. जनता में यह भावना व्याप्त थी कि पुलिस का प्रत्येक कार्य अंगरेजों के आदेश से ही होता है. तब पुलिस प्रशासन तथा न्यायपालिका में इतना अधिक समन्वय था कि वास्तव में पुलिस जनता पर मनमाना अत्याचार करती थी. उन अत्याचारों को न्यायपालिका का पूर्ण सहयोग भी मिलता था. स्वतंत्रता के बाद ऐसी बात नहीं रही. अब पुलिस प्रशासन तथा न्यायपालिका के कर्तव्य अलगअलग हैं. अतएव न्यायपालिका द्वारा पुलिस को सहयोग दिए जाने का प्रश्न नहीं उठता.

पुलिस और सेना

प्रति वर्ष पुलिस के लगभग पांच सौ कर्मचारी तथा अधिकारी मारे जाते हैं. पिछले 25 वर्षों में लगभग साढ़े बारह हजार पुलिस जन ने प्राणों से हाथ धोए हैं. यह संख्या युद्ध काल में सेना के वीरगति पाए जवानों व अधिकारियों से अधिक अथवा बराबर है. फिर भी पुलिस का यह दुर्भाग्य है कि वह सेना की तरह जनता के गले का हार नहीं है.

स्वतंत्रता के इतने वर्ष बाद भी पुलिस जनता की दृष्टि में आलोचना का पात्र ही है. उस की सेवाओं, त्याग, बलिदान तथा कर्तव्यनिष्ठा का मूल्य नहीं समझा जाता. सेना के निशाने प्रायः निश्चित होते हैं. उन पर वार कर वह

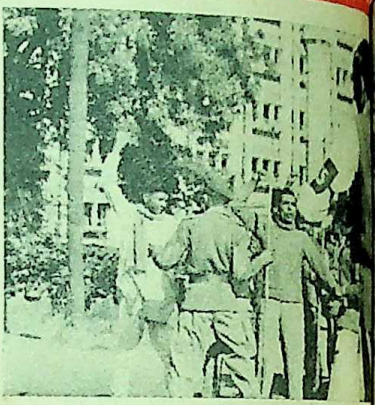

सफलता प्राप्त करने में सफल होती है. सेना को अधिकतम बल प्रयोग की भी छूट रहती है. सेना के दुश्मन भी बाहरी आक्रमणकारी होते हैं, किंतु पुलिस के दुश्मन जनता के बीच अपने ही लोग होते हैं. पुलिस के निशाने भी अनिश्चित होते हैं तथा उसे कम से कम बल प्रयोग की आज्ञा होती है. ऐसी स्थिति में पुलिस अपने निशानों पर सेना की तरह कहां तक सफल हो सकती है? फिर भी वह जनता के सौहार्द की कामना तो करती ही है. हां, सशस्त्र पुलिस की बटालियनें जबजब सीमाओं पर गईं, उन्हें वहां वही सद्भावना मिली जो कि सैनिकों को मिलती है.

पुलिस तथा समय की मांग

आज के युग में अपराधों की संख्या बढ़ने के साथसाथ पुलिस द्वारा जनता को सहायता देने के अवसर भी बढ़ रहे हैं. किंतु जनता को पुलिस का उतना विश्वास प्राप्त नहीं है जिस की अपेक्षा वह करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. यही कारण है कि जनता व पुलिस एकदूसरे के निकट होते हुए बहुत दूर हैं. पुलिस की जिम्मेदारी इस दिशा में जनता की अपेक्षा कहीं अधिक है कि दोनों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध कैसे स्थापित हो. साथ ही जनता के भी कुछ कर्तव्य हैं. इन विषयों पर विचार करने से पूर्व यह आवश्यक है कि जनता को पुलिस की कार्यविधियों, विवशताओं तथा कमियों आदि का भी कुछ अनुमान हो जाए, ताकि जनता के विचार पुलिस के प्रति केवल आलोचनात्मक ही नहीं, सहानुभूतिपूर्ण भी हो सकें.

पुलिस से जनता की आकांक्षाएं

रात्रि गश्त, अपराधों की रोकथाम, घटित अपराधों का विवेचन तथा अन्वेषण, यातायात नियंत्रण, शांतिव्यवस्था, असामाजिक तत्त्वों से निबटना, राजनीतिक स्थिरता बनाए रखते हुए राजनीतिक तत्त्वों से दूर रहना तथा भ्रष्टाचार से दूर रहते हुए भ्रष्टाचार मुख्य कर्तव्य हैं.

जनता यह अपेक्षा करती है कि वह सारी रात शांतिपूर्वक सोए और पुलिस प्रहरी का कार्य करे. लेकिन वह यह नहीं सोचती कि अन्य देशों की अपेक्षा अपने देश में पुलिस की संख्या बहुत कम है. उत्तर प्रदेश में लगभग 1200 की जनसंख्या पर एक पुलिस कर्मचारी नियुक्त है. जनता को यह समझना चाहिए कि रात्रि गश्त के लिए अलग पुलिस नहीं है. दिन भर कठिन कामों में लगे रहने के बाद ही पुलिस कर्मचारी रात्रि गश्त के लिए जाता है. उस समय भी उस के मस्तिष्क में यह बात स्पष्ट रहती है कि बड़े सवेरे से ही उसे फिर दिन भर के कार्यों में चुस्ती के साथ जुट जाना है. इस प्रकार 24 घंटे में उस का अपना समय कोई नहीं होता. जनता यह स्वयं सोचे कि यह कर्मचारी सारी रात जाग कर कहां तक निष्ठापूर्वक गश्त कर सकता है. यही कारण है कि रात्रि में घटित अपराधों में कमी नहीं आ पाती. अतः यह बड़ी भारी आवश्यकता है कि पुलिस की संख्या इतनी बढ़ाई जाए कि रात्रि गश्त के लिए नियुक्त पुलिस कर्मचारी, संकटकालीन स्थितियों को छोड़ कर केवल रात्रि की ही ड्यूटी दे.

पुलिस तथा अपराध

अपराधी का सदैव यह प्रयास रहता है कि वह बिना कुछ साक्ष्य छोड़े, अपराध कर के बच निकले. अपराध करने के बाद भी यह वर्ग जनता के बीच ही छिपा रहता है. पुलिस जन नीरक्षीर विवेक कर इन से निबटने का प्रयास तो करते हैं किंतु सदैव सफल नहीं हो पाते.

इस असफलता का कारण पुलिस की अयोग्यता नहीं होती, बल्कि अनेक कमियां तथा विशताएं पुलिस की राह में रोड़े का काम करती हैं. पुलिस के पास उपलब्ध साधन सीमित हैं, नई वैज्ञानिक खोजों का तुरंत लाभ पुलिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नहीं, अपराधी उठाते हैं. कई स्थानों पर पुलिस चौकियों पर टेलीफोन तक की व्यवस्था नहीं है, जिस से अपराध की सूचना पाते ही पुलिस उच्चाधिकारियों से संपर्क स्थापित कर सके. बहुत से स्थानों पर वायरलेस तथा मोटर गाड़ियों की सुविधा केवल जिला मुख्यालय में ही है. इस के अतिरिक्त अपराधी को पकड़ने की दिशा में पुलिस का जनता के अपेक्षित सहयोग से वंचित रहना भी उस की असफलता का कारण है. उदाहरण के लिए, यदि किसी सड़क पर दिनदहाड़े हत्या होती है तो जनता यही चाहती है कि पुलिस तुरंत अपराधी को पकड़े और शव हटा कर उचित कार्यवाही करे. पुलिस ऐसा करती भी है, फिर भी न्यायालय में प्रायः ऐसे मामले असफल हो जाते हैं. क्यों?

नागरिक भावना की कमी

दिनदहाड़े हत्या होते हुए देखने के बावजूद हत्यारे को पकड़ने का साहस कितनों में होता है? हत्या के कितने प्रत्यक्षदर्शी स्वतः गवाही के लिए सामने आते हैं? शायद कोई भी नहीं. और अंत में सही गवाही के बिना न्यायालय में मामले असफल हो जाते हैं. फिर पुलिस गवाह कहां से लाए? पुलिस का यह भी दुर्भाग्य है कि स्वयं कानून भी उस का विश्वास नहीं करता. अदालत भले ही एक रिक्शा वाले के सामने दिया गया बयान मानती है, किंतु पुलिस कर्मचारी अथवा अधिकारी के सामने दिया गया बयान उसे मान्य नहीं होता. इस कानूनी अविश्वास के कारण पुलिस तंत्र स्वयं ही एक हीन भावना से पीड़ित है तथा मनोवैज्ञानिक रूप से असंतुष्ट भी कि जब कानून ही उस पर विश्वास नहीं करता तो जनता कैसे कर सकती है? क्या पुलिस को कानूनी रूप से इतना दबाए रखना वांछनीय है?

इतना ही नहीं, अपराधी प्राय : भाग कर जनता के बीच में अथवा प्रभावशाली व्यक्तियों के घरों में ही शरण लेते हैं. जनता में कितने ऐसे जागरूक लोग हैं जो अपराधियों के छिपे होने की सूचना पुलिस को देते हैं अथवा उन्हें पुलिस के हवाले करते हैं? फिर, ऐसे मामलों में असफलता की दोषी केवल पुलिस ही क्यों?

पुलिस व जनता के बीच अविश्वास

जनता की दृष्टि में पुलिस की सही या गलत 'इमेज' बनाने में जितना अधिक हाथ सिपाही, हवलदार तथा थानेदार आदि का होता है, उतना कदाचित उच्चाधिकारियों का नहीं. जनता जिन पुलिस जन के अधिकाधिक निकट रहती है, वे ये ही हैं. अतएव जहां सब से अधिक अधिकारों का दुरुपयोग पुलिस के इन तीनों वर्गों में होता है, वहां पुलिस का सम्मान जनता की दृष्टि में घटाने के लिए भी सब से अधिक ये ही उत्तरदायी हैं.

इस बात के अनेक प्रमाण हैं कि थानों में रिपोर्ट लिखाने वालों के साथ वहां नियुक्त पुलिस जन का व्यवहार उचित नहीं होता. यदि कोई ऐसा व्यक्ति जाता है, जिस पर ऊपर से किसी का दबाव होता है तो उस की शिकायत ध्यान से सुनी जाती है, किंतु गरीब तथा असहाय व्यक्ति प्रायः डांटफटकार कर के भगा दिए जाते हैं. उन्हें उलटे दूसरे मामलों में फंसाने की बातें कह कर बहकाया जाता है.

रिपोर्ट लिखने के लिए पैसे मांगे जाते हैं. यदि कोई व्यक्ति थानेदार से व्यक्तिगत रूप से मिलने की बात करता है तो भी ये लोग झूठे बहाने बना देते हैं. स्वयं दरोगा आदि भी प्रायः लोगों की बातें बेरुखी से सुनते हैं या टाल देते हैं— समस्या के हल का या तो कोई आश्वासन नहीं देते या इस प्रकार देते हैं कि सुनने वाला समझ जाता है कि इस मामले में कुछ होना नहीं है. इस प्रकार एक या कुछेक व्यक्तियों का दुर्व्यवहार पूरे विभाग को बदनाम करता है.

पुलिस के इसी वर्ग के लोग अधिकतर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने अधिकारों का दुरुपयोग कर के तथा अपनी वरदी की धौंस दिखा कर के सब्जी बेचने वालों, रिक्शा व ताँगा चलाने वालों आदि तक से अनुचित लाभ उठाने का प्रयास कर के पुलिस को बदनाम करते हैं. अधिकांश मामलों में पुलिस जन किसी स्वार्थवश अथवा किसी प्रभावी व्यक्ति के दबाव के कारण वास्तविक अपराधी को बचाने तथा निरपराध व्यक्ति को दंड दिलवाने में भी सफल हो जाते हैं. उस स्थिति में, जब कि जनता सही बात जानती है, पुलिस द्वारा ऐसा किया जाना जनता की दृष्टि में पुलिस के प्रति विश्वास घटाने का कारण बन जाता है. इसी प्रकार प्रायः किसी विशेष व्यक्ति की दृष्टि में अच्छा साबित होने के अभिप्राय से पुलिस जन जनता को ऐसी बातों का वचन दे देते हैं जिन्हें पूरा करने में वे समर्थ नहीं हो पाते. अंततः वे जनता का विश्वास खो बैठते हैं, झूठे कहे जाते हैं.

कुछ पुलिस जन स्वयं गुंडों, बदमाशों आदि के साथ उठतेबैठते, खातेपीते हैं. शराब पीने, जुआ खेलने तथा दुराचार करने की शिकायतें भी कुछ पुलिस जन के बारे में पाई जाती हैं. जनता की दृष्टि से पुलिस जनों की ये गतिविधियां छिपी नहीं रहतीं. अतएव इन के कारण पूरे पुलिस विभाग की प्रतिष्ठा घटती है.

यह मानते हुए कि पुलिस अधिकारियों का कार्यभार बहुत अधिक है, फिर भी जनता से संबंधित मामलों को निबटाने में प्रायः आवश्यकता से अधिक विलंब तथा कभीकभी उदासीनता बरते जाने के भी प्रमाण मिलते हैं. ऐसे मामलों में जनता को पुलिस द्वारा उचित आश्वासन ही नहीं दिए जाते. अतः जनता को पुलिस पर भरोसा नहीं होता.

भ्रष्टाचार आज पूरे शासनतंत्र में व्याप्त है. पुलिस विभाग भी इस से अछूता नहीं है. अंतर यह है कि अन्य विभागों में व्याप्त भ्रष्टाचार की हरकतें जनता की दृष्टि में उतनी नहीं आतीं, जितनी पुलिस विभाग की. यह विभाग

क्या पुलिस और जनता के बीच की खाई कभी पाटी जा सकती है?

चूंकि जनता के सब से अधिक निकट है, इसलिए इस विभाग की छोटीछोटी बातें भी जनता को पता चल जाती हैं. निर्दोष व्यक्तियों को घूस ले कर किसी मामले में फंसा देना, सही अपराधियों को छुड़वा देना, घूस के बल पर झूठे गवाह बना लेना, तफतीश में भी घूस ले कर केवल कानूनी खानापूरी करना, चकलों व जुआघरों को चलने देना, यातायात में अनियमितताएं होने देना, सार्वजनिक वाहनों व गाड़ियों से रकम वसूलने जैसी कई बातें हैं जो जनता से छिपी नहीं रहतीं और इन के ही कारण संपूर्ण विभाग भ्रष्टाचारी कहा जाता है.

दूसरी ओर जनता को यह भी सोचना चाहिए कि यदि उस से पुलिस के संबंध अच्छे नहीं हो पाते तो इस के लिए पुलिस की कुछ विवशताएं भी हैं.

पुलिस की कुछ विवशताएं

कहा यही जाता है कि राजनीतिक स्थिरता बनाए रखते हुए भी राजनीतिक तत्त्वों से दूर रहना पुलिस का कर्तव्य है, किंतु आज राजनीतिक दलों का प्रभाव सामान्य जनजीवन पर जिस प्रकार है, पुलिस भी उस से बची नहीं. चूंकि पुलिस को शासन के आदेशों का पालन करना होता है इसलिए उस का यह भी कर्तव्य है कि शासक दल के विचारों, आदर्शों तथा कार्यक्रमों को भी ध्यान में रखे.

दूसरी ओर विरोधी दल यह प्रयास करते हैं कि पुलिस शासक दल का विरोध करे. जब उन की स्वार्थसिद्धि नहीं होती,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

है और जनता में पुलिस के विरुद्ध गलत बातें फैलाई जाती हैं. ऐसी स्थिति में तत्त्वों के साथ पुलिस के संबंध अच्छे न होने के कारण जनसाधारण के हित के लिए पुलिस को अकारण ही अपनी निंदा सुननी व सहनी पड़ती है. उस स्थिति में वह चाह कर भी जनता के मन के भ्रम को दूर नहीं कर पाती.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए परिवर्तन

आज सामाजिक जीवन में नित्य नए परिवर्तन स्वीकार किए जा रहे हैं. समाज की नई तसवीर बनाने के लिए सरकार की ओर से नएनए कानून बनाए जाते हैं. पुलिस उन कानूनों का पालन करने के लिए बाध्य है, किंतु अधिकांश जनता उसे पुलिस की ज्यादती समझती है. खाद्यान्नों में मिलावट की रोकथाम, सहकारी खेती, संपत्ति व जोत की अधिकतम सीमा, जमाखोरी का निरोध, खाद्यान्नों के एक राज्य से दूसरे राज्य में ले जाने पर पाबंदी, स्वर्ण नियंत्रण, छुआ-छूत निवारण, शराबबंदी तथा स्त्रियों के अनैतिक व्यापार की रोकथाम आदि ऐसे विषय हैं जिन में सरकार के आदेश से पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ता है, जो जनता को सहर्ष स्वीकार नहीं होता.

अतएव शासन का भी यह कर्तव्य है कि ऐसे कानून बनाने से पहले जनता में उन का काफी प्रचार व प्रसार किया जाए तथा उन का सुधारात्मक दृष्टिकोण समझाया जाए, अन्यथा नित्य नए कानून बनेंगे और पुलिस के हस्तक्षेप के कारण जनता पुलिस विरोधी होती जाएगी. स्वाभाविक है कि जब तक जनता किसी बात को सहज रूप में समझेगी नहीं, उसे स्वीकार भी कैसे कर सकती है?

यह भी कहा जाता है कि जनता के साथ पुलिस जनों के मित्रवत संबंध नहीं रहते अथवा पुलिस जनसाधारण को मित्र नहीं बनाना चाहती. यह भी पुलिस की विवशता है कि वह चाह कर भी किसी व्यक्ति के साथ घनिष्ठता नहीं बढ़ा सकती. दृष्टि में पुलिस की आलोचना का कारण बनता है, दूसरे, मित्रता की स्थिति में पुलिस पर अनावश्यक दबाव पड़ने की आशंका भी रहती है. पुलिस को तो अनुशासन में रह कर ही मित्र संबंध निभाने होते हैं. अतः वह जनता के साथ उस सीमा तक घुलमिल नहीं सकती. अनुशासन निभाना पुलिस का कर्तव्य होने के साथसाथ विवशता भी है, किंतु इस का अर्थ यह नहीं कि पुलिस जनता से तटस्थ रहना चाहती है.

यातायात नियंत्रण के मामले में भी प्रायः पुलिस कुछ नहीं कर पाती, क्योंकि अधिकतर 'बड़े' एवं 'प्रभावी' व्यक्ति ही यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं. पुलिस यदि उन के विरुद्ध कुछ करती है तो उसे अनेक प्रकार की धमकियां दी जाती हैं और हार कर पुलिस को ऐसे मामलों को छोड़ देना पड़ता है.

अनेक मामलों में तो राजनीतिक दांवपेंचों का प्रवेश हो जाता है और दंडस्वरूप कितनी ही बार ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ पुलिस अधिकारियों का स्थानांतरण केवल नेतागणों की कृपा से चौबीस घंटे के भीतर कर दिया जाता है.

अधिकांश जनता को पुलिस के वास्तविक कर्तव्यों का ज्ञान नहीं है, इसलिए वह उन अनेक गड़बड़ियों का संबंध भी पुलिस के साथ जोड़ती रहती है, जिन का संबंध अन्य विभागों से होता है, जैसे—कस्टम, तस्करी तथा खाद्यान्नों में मिलावट आदि.

पुलिस जन का व्यक्तिगत जीवन

अधिकांश जनता की यही राय है कि कभीकभी को छोड़ कर पुलिस जन मौज का ही जीवन व्यतीत करते हैं, किंतु सत्यता यह है कि केवल पुलिस जन ही ऐसे हैं जो अपने कर्तव्य के समक्ष न भूख को महत्त्व देते हैं, न थकान को और न नींद को. वर्ष भर में एक दिन भी उन को अवकाश नहीं मिलता. न उन के लिए रविवार होता है, न ही कोई त्योहार.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्योहारों पर लोग घरों में आनंद मनाते हैं, पर पुलिस जन वर्दी पहन कर शांति व्यवस्था के लिए ड्यूटी देते हैं. त्योहारों के दिन भी भोजन न मिले तो भी कोई शिकायत नहीं. हिसाब लगाया जाए तो पता चलता है कि एक पुलिस कर्मचारी 24 घंटों में 72 घंटों का काम करता है जब कि न उसे ओवर टाइम मिलता है, न ही औरों से अधिक वेतन ही. मनोरंजन की बातें उन के लिए स्वप्न हैं. न वे सामाजिक जीवन जी पाते हैं, न ही पारिवारिक. कईकई दिन बच्चे अपने पिता को नहीं देख पाते.

परिवार की अनेक समस्याओं व उलझनों का सामना करने को उन के पास समय नहीं होता, अतएव सारी जिम्मेदारियां उन की पत्नियां निभाती हैं. पति घर से जा कर कब लौटेंगे, यह उन्हें नहीं पता होता. कईकई दिनों तक जब वे नहीं घर से निकलने के बाद उन का जीवन सुरक्षित नहीं कहा जा सकता.

इंस्पेक्टर साहब, कृपया मुझे घर तक सुरक्षित रूप से पहुंचाने के लिए दो सशस्त्र कांस्टेबल दे दीजिए, क्योंकि मेरे पास एक किलो वनस्पति घी है."

अधिकतर पुलिस जन के बच्चे बिगड़ जाते हैं. पिता की अतिव्यस्तता के कारण बच्चों पर उन का नियंत्रण नहीं हो पाता और वे अपना भविष्य नहीं संवार पाते. पुलिस जन के बिगड़े हुए बच्चों को ले कर जनता व्यंग्य करती है किंतु उन से उसे कोई सहानुभूति नहीं होती. सर्वसाधारण के मन में यदि पुलिस जन के लिए कोई सदभाव नहीं है तो पुलिस वालों के बच्चों व उन की पत्नियों के लिए भी सम्मान नहीं है. जनता की यह भावना पुलिस वालों के परिवारों को मानसिक रूप से पीड़ित करती रहती है तथा स्वयं पुलिस जन को भी. इन भावनाओंका प्रभाव पुलिस जन के कार्यों पर पड़ना क्या स्वाभाविक नहीं?

संबंध सुधारने के लिए कुछ सुझाव

पुलिस का प्रत्येक कार्य ऐसा हो कि उस का यश बढ़े. वह यह प्रयत्न करे कि जनता में पुलिस से कतराने की भावना दूर हो. आज जनता पुलिस से कतराती है. उसे पुलिस पर भरोसा नहीं है, अतः वह पुलिस से दूर ही रहना चाहती है. यही नहीं, पुलिस के प्रति जनता के मन में भय की भी भावना है. जनता को चाहिए कि ऐसी भावनाएं मन से दूर कर के पुलिस को सेवा करने के अवसर दे क्योंकि पुलिस की सहायता लेना उस का अधिकार है.

यदि पुलिस जन उसे सहायता नहीं देते हैं तो वे अपराधी हैं. जनता को ऐसे लोगों की शिकायतें प्रमाण सहित उच्चाधिकारियों तक पहुंचानी चाहिए.

पुलिस कर्मचारी को सदैव जनता की पहुंच में होना चाहिए तथा उसे उस प्रत्येक व्यक्ति की बात धैर्यपूर्वक सुननी चाहिए जो उस के पास सहायता के लिए आता है. चाहे वह धनी हो या निर्धन, उस से पक्षपातरहित तथा विनम्रतापूर्ण व्यवहार करना पुलिस कर्मचारी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पहला कर्तव्य है. ऐसे आचरण के प्रमाण उपस्थित कर के ही पुलिस जनता का मन जीत सकेगी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता से संबंधित मामले शीघ्र से शीघ्र निबटाए जाने चाहिए. इस संबंध में देखी जाने वाली उदासीनता का व्यवहार पुलिस को बदनाम करवाता है. पुलिस के उच्चाधिकारी स्वयं अपने उच्चादर्श उपस्थित कर के कर्मचारियों का पथप्रदर्शन करें तथा भ्रष्ट पुलिस जनों को तुरंत दंड दें.

पत्रपत्रिकाओं की भूमिका

जनता व पुलिस के संबंध सुधारने की दिशा में समाचारपत्रों व पत्रिकाओं का भी सहयोग हो सकता है; किंतु यह भी पुलिस का दुर्भाग्य है कि अपराधों के समाचार तो समाचारपत्रों में बड़ेबड़े अक्षरों में छपते हैं मगर पुलिस के त्याग-बलिदान की बातें जनता जानती ही नहीं है. प्रेस वालों के साथ पुलिस वालों के संबंध अच्छे रहने चाहिए ताकि पुलिस जनों के सुकार्यों को भी वे जनता के सामने लाएं.

पुलिस में व्याप्त भ्रष्टाचार का एक कारण उस के वेतन की कमी तथा आवश्यकता से अधिक कार्यभार है. इस के साथ ही जनता की घूस देने की प्रवृत्ति भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है. अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए पुलिस को घूस देने की प्रवृत्ति यदि जनता छोड़ दे तो पुलिस विभाग में भ्रष्टाचार कम हो और वह अपना सम्मान बढ़ा सके.

पुलिस जन सार्वजनिक स्थानों में भी अपने आचरण पर ध्यान रखें, खड़े होने, चलने, उठनेबैठने तथा बात करने के अच्छे तौरतरीके अपनाएं. पुलिस वाले वरदी धारण करते ही नागरिक का रूप खो देते हैं और केवल पुलिस कर्मचारी रह जाते हैं. वरदी धारण करने के बाद सिगरेट पीना, पान खाना, थूकना, आवारा लोगों की तरह घूमना, गाली बकना, बदमाशों की संगति करना तथा बल प्रयोग के अधिकार का दुरुपयोग करना बहुत अनुचित है. ये छोटीछोटी बातें जनता की दृष्टि में पुलिस को गिरा देती हैं.

जनसंपर्क के अच्छे कार्यक्रमों द्वारा पुलिस जनता के निकट आए और यह साबित करे कि वह निकम्मी व भ्रष्ट नहीं है. पुलिस को अपने वचनों पर दृढ़ रहना चाहिए तथा जनता से संपर्क के प्रत्येक अवसर पर न्यायप्रियता तथा ईमानदारी के सिद्धांत का पालन करना चाहिए. यदि कोई अकेले में बात करना चाहे तो सहर्ष की जाए. हो सकता है, वह कोई महत्त्वपूर्ण सूचना दे रहा हो.

जनता भी उन व्यक्तियों से सदैव सावधान रहे जो केवल पुलिस विरोधी प्रचार करते हैं. जनता केवल उन्हीं बातों पर विश्वास करे जिन्हें वह स्वयं देखे, सुने या झेले. किसी एक पुलिस जन के कुकृत्य के आधार पर पूरे विभाग को ही भ्रष्ट समझना जनता की भूल है.

सरकार का कर्तव्य

पुलिस विभाग को भ्रष्टाचार का पर्यायवाची समझा जाने का एक कारण पुलिस जन के कार्यभार के अनुपात से कम वेतन तथा उन की दिनरात की कार्यव्यस्तता है. इन दोनों बातों का प्रभाव जनता के साथ संबंधों पर भी पड़ता है. 'श्रम अधिक तथा वेतन कम' की भावना उन्हें भ्रष्टाचार की ओर प्रवृत्त करती है, जिस से वे जनता में बदनाम होते हैं.

सरकार को चाहिए कि वह पुलिस की संख्य पर्याप्त रूप से बढ़ाए और उस की कमियां व विवशताएं दूर करे, ताकि पुलिस जन का कार्यभार कम हो और वे कुछ समय अपने परिवार को भी दे सकें. उन के श्रम को देखते हुए उन का उचित वेतन निर्धारित करे, जिस से उन्हें किसी प्रकार का असंतोष न रहे. तभी शारीरिक व मानसिक रूप से तृप्त रह कर वे जनता की अधिकाधिक सेवा करने के लिए निःस्वार्थ भाव से तत्पर रह सकेंगे. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोल्झेनित्सिन का सांस्कृतिक बधियाकरण

अलेक्जेंडर सोल्झेनित्सिन ने अपनी नोबेल पुरस्कार प्राप्त कृति 'द फर्स्ट-सर्कल' में एक पात्र से कहलवाया है, "किसी लेखक को उस की जमीन से काट देने का अर्थ है उस का सांस्कृतिक बधियाकरण कर देना." पर रूस के इस महान लेखक ने अपने देश की तानाशाह सरकार के दुस्साहस भरे कारनामे (अपने देशनिकाले) से पूर्व एक ऐसा वातावरण तैयार कर दिया जिस पर रूसी शासन झल्लाने के सिवा कुछ न कर सके.

रूसी क्रांति के वर्ष में जनमे इस 55 वर्षीय उपन्यासकार ने रूसी आतंकवाद के विरुद्ध अपना संघर्ष 1962 में 'इवान डेनिसोविच के जीवन का एक दिन' नामक उपन्यास से शुरू किया. इस उपन्यास में उस ने स्टालिन द्वारा स्थापित यातना शिविरों के घिनौने जीवन का चित्रण किया है. इन शिविरों में स्टालिन ने लाखों लोगों को मौत से बदतर जिंदगी जीने पर विवश किया. इन लोगों का कुसूर यह था कि ये स्टालिन के विचारों में विश्वास नहीं रखते थे. उस ने यह जिहाद 'कैंसर वार्ड' और 'द फर्स्ट सर्कल' में भी जारी रखा.

लेकिन जब गत दिसंबर में पेरिस में 'द गुलग आरकीपीलागो' (रूस के

स्टालिन ने लाखों लोगों को मौत से बदतर जिंदगी जीने के लिए विवश किया और सोल्झेनित्सिन ने उस दमन चक्र का भंडाफोड़ किया...साम्यवादी देशों में अपने देश के शासन की बुराइयों का विरोध करना अपराध है और इसी लिए वह आज बेघर है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रकाशित हुआ तो सारी दुनिया के सर्वहारा वर्ग का ठेका लेने वाली रूसी सरकार हिल गई. दो लाख, 60 हजार शब्दों वाला 'गुलग' स्टालिन के उन अत्याचारों का जीवित दस्तावेज है जो उस ने 1918-56 में लाखों रूसियों पर ढाए. सोल्झेनित्सिन ने एक स्थान पर लिखा है : "स्टालिन का यह कार्य तथाकथित साम्यवाद के विकास के लिए कोई परंपरा से हट कर कदम नहीं था. यह तो उस व्यवस्था की देन है, जिसे लेनिन ने स्थापित किया, स्टालिन ने मजबूत किया और क्रेमलिन के वर्तमान नेता सुरक्षित रख रहे हैं."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासन का विरोध घातक

रूसी इतिहास भी हमें यही बताता है. आज से 125 वर्ष पूर्व फ्योदोर दोस्तोयवस्की को इसी जुर्म में भून दिया गया था. उस के बाद अलेक्जेंडर हरजेन, मिखाइल बकुनिन और स्वयं लेनिन को शासन विरोधी विचारों के कारण देश छोड़ना पड़ा था. पर जबरदस्ती देशनिकाला सोल्झेनित्सिन से पहले केवल लीओन ट्रॉटस्की को ही दिया गया था. सिन्यावस्की, गलास्कोव, बोगोरेज, शालीद्ज, यकीर, ग्रीगोरेंको, अमालरिक और मेडवेदेव उन अन्य लाखों स्वतंत्र विचारकों में से थे जिन्हें या तो जान से मार दिया गया या जिंदगी भर के लिए यातना शिविरों में ठूंस दिया गया.

सोल्झेनित्सिन के विरुद्ध अभियोगपत्र में लिखा गया : "उस से सर्वोच्च सोवियत के आदेशानुसार रूसी नागरिकता छीनी जाती है और उसे देशनिकाला दिया जाता है क्योंकि उस ने योजनाबद्ध तरीके से ऐसे कार्य किए जो रूसी नागरिक होने के लिए अनुचित थे."

यह आरोप बिलकुल सही है क्योंकि उस ने स्टालिन के यातना शिविर में 11 वर्ष भुगतने के बाद 23 साल के संघर्ष में विश्व को यह बता दिया कि रूस में अपनी बात कहने की आजादी की क्या

यही कारण है कि 'गुलग' के प्रकाशित होने के कुछ ही दिनों बाद इस चर्चा का बाजार गरम हो गया था कि सोल्झेनित्सिन को गिरफ्तार कर लिया जाएगा.

यथार्थ की मजबूरी

इस उपन्यास के प्रकाशित होते ही रूस के प्रचारवादियों ने सोल्झेनित्सिन के विरुद्ध जहर उगलना शुरू कर दिया था. 'प्रावदा' और 'इजवेस्तिया' में अगले ही दिन से लेखक के विरुद्ध पत्र छपने लगे थे. रूसी संवाद समिति 'तास' ने विश्व भर में इस महान लेखक के विरुद्ध प्रचार करना शुरू कर दिया था. इसी फरवरी की एक दोपहर को सात सिपाहियों ने सोल्झेनित्सिन की पत्नी नताल्या के मास्को स्थित फ्लैट को घेर लिया और अगली सुबह उस ने अपनेआप को फ्रैंकफर्ट हवाई अड्डे पर पाया.

बोन और मास्को के बीच इस बात पर पहले ही सहमति हो गई थी कि सोल्झेनित्सिन को पश्चिम जरमनी भेज दिया जाए, जहां अब वह अपने नोबेल पुरस्कार विजेता मित्र, जरमन उपन्यासकार हैनरिक बोल के साथ रह रहा है. वैसे इंगलैंड, नार्वे, स्विट्जरलैंड और अमरीका ने भी उसे अपने यहां बसने का निमंत्रण दिया.

सोल्झेनित्सिन के जीवन का प्रारंभ एक विरोधी के रूप में नहीं हुआ था. शायद उस ने कभी सोचा भी न होगा कि वह इतना बड़ा विद्रोही लेखक बन जाएगा. वह एक सैनिक अधिकारी के घर पैदा हुआ. रूसी क्रांति से वह बहुत प्रभावित था. पढ़ाई के दौरान उस ने सोचा था कि वह इस क्रांति का इतिहास लिखेगा. मार्क्सवाद पर उस का अटूट विश्वास था. 1936 में उस ने गणित पढ़ने के लिए रोस्टोव विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया. उन दिनों उस के देश में दो विभागों की भरती बहुत तेजी पर थी. एक पुलिस के गुप्तचर विभाग में और दूसरी यातना शिविरों में. पर सोल्झेनित्सिन इन दोनों से बेखबर था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1941 में उसे लाल सेना में भरती कर लिया गया. उन दिनों के बारे में सोल्झेनित्सिन लिखता है : "मैं भी अन्य अफसरों की तरह यह सोचे बिना मक्खन और पेस्ट्रियां खाया करता था कि जब जवानों को यह सब नहीं मिलता तो मुझे इस का क्या हक है?" तीन लड़ाइयों में हिस्सा लेने के बाद उसे तोपखाने वाली फौज में कैप्टन बना दिया गया. पर तब तक उस के मन में स्टालिन के विरुद्ध रोष उत्पन्न होने लगा था. उस के जागरूक मन को स्टालिन की तानाशाह प्रवृत्ति कभी नहीं भाई. वह अपने दोस्तों के नाम पत्रों में स्टालिन की आलोचना करने लगा. यह दोस्तों के बीच एक वैचारिक आदानप्रदान मात्र था, परंतु 1945 में उसे गिरफ्तार कर लिया गया.

इस गिरफ्तारी से सोल्झेनित्सिन के जीवन में एक नया मोड़ आया. वह लिखता है : "इतिहास के उस चौराहे पर पूरा रूस दो खेमों में बंट गया : आक्रांत और आक्रांता. अगर मुझे गिरफ्तार न किया गया होता तो शायद मैं भी अत्याचारियों के साथ मिल गया होता."

जेल में सोल्झेनित्सिन का लेखक जागा. कई वर्षों से जो लावा उस के भीतर उबल रहा था, उस ने उसे शब्दों का रूप देना शुरू कर दिया. वह हजारों कैदियों से मिला. उस की आत्मा कांप उठी.

मार्क्स और लेनिन से उस का विश्वास उठने लगा. उस ने गणित पढ़ा था. उसे डिस्कार्ट का उद्घोष याद हो आया : "किसी चीज पर अंधविश्वास मत करो—किसी भी चीज पर."

सोल्झेनित्सिन को बोध हुआ और उस ने लोकतंत्र में दिलचस्पी लेनी शुरू की. उसे पता चल गया कि किस प्रकार सोवियत क्रांति के मसीहाओं ने विरोधी विचार वालों को 1920-30 में सीखचों में बंद कर दिया था. उन का केवल एक कुसूर था : अंतरात्मा की आवाज पर जिंदा रहने की चाह. कैदियों की कहानियां सुनसुन कर वह बौखला उठता था.

कुछ समय बाद उसे लुब्यांका जेल से मास्को की बुटयर्की जेल में भेज दिया गया. यहां वह उन युद्धबंदियों से मिला जिन्हें जरमन फौज ने गिरफ्तार किया था. इन्हें सीधे स्टालिन की जेलों और यातना शिविरों में भेज दिया गया. जरमनी ने 57 लाख रूसियों को बंदी बनाया था. इन में से 20 लाख तो भूख और दमन से मर गए थे. जो बच कर लौटे थे, उन का यहां और भी बुरा हाल हुआ.

"इन्हें देशद्रोही कहा गया. लेकिन इन्होंने देश के साथ द्रोह नहीं किया, बल्कि देश ने इन के साथ द्रोह किया और तीन बार किया." पहली बार उस समय जब रूसी नेताओं की मदांध नीतियों के कारण रूस हारतेहारते बचा और लाखों रूसियों को बंदी बना लिया गया. दूसरी बार तब, जब इन नेताओं ने इन कैदियों को जरमन जेलों में सड़ने दिया और तीसरी बार तब, जब इन्हें झूठे आश्वासनों पर घर बुलाया गया और शिविरों में डाल दिया गया.

सोल्झेनित्सिन ने स्वीकार किया है कि इन में से कुछ सैनिक जरमन फौज में भरती हो गए थे. पर ऐसा तभी हुआ, जब रूस ने युद्धबंदियों से संबंधित जेनेवा सम्मेलन के निर्देशों की स्पष्ट अवहेलना करते हुए इन युद्धबंदियों की जिम्मेवारी लेने से इनकार कर दिया. रूसी नेताओं के इस कदम के बाद हिटलर ने इन से बहुत बुरा व्यवहार किया. इस पर मजबूर

समाजवाद

दो ही स्थानों पर समाजवाद काम करता है—एक तो मधुमक्खियों के छत्ते में और दूसरा चींटियों के बिल में.

—सूक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हो कर इन्होंने जरमन सेना में सेवा करने का निश्चय किया. पर ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम थी. रूसी नेताओं ने सब को दसदस वर्ष का कारावास दिया. इन बंदियों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाओं ने शोल्झेनित्सिन के हृदय पर अमिट छाप छोड़ दी.

"गुप्तचर विभाग का एक घुड़सवार एक बंदी पर चाबुक बरसा रहा था. वह कमर से ऊपर नंगा था. उस के पूरे शरीर से खून बह रहा था. वह मुझे देख कर चिल्लाया, 'कप्तान साहब, मुझे बचाइए.' दुनिया की किसी भी फौज का कोई भी अफसर उस पाशविकता को रोकने की कोशिश करता. लेकिन मेरे कायर मन ने चूं तक नहीं की. वह तसवीर आज तक मुझे कचोटती है. इसी ने मुझे 'गुलग' लिखने पर विवश किया."

लाशों पर खड़ा साम्यवाद

'गुलग' को ले कर रूसी अधिकारियों ने शोल्झेनित्सिन को जरमन गुर्गा कहा. उस पर आरोप लगाया गया कि उस ने युद्ध में सोवियत बलिदानों का मजाक उड़ाया है.

इन आरोपों से क्रेमलिन ने अपने देश की जनता को गुमराह करने की कोशिश की है—उस जनता को जिसे वह पिछले तीन दशकों से यह समझाता आया है कि द्वितीय विश्वयुद्ध में मृत दो करोड़ रूसियों की लाशों पर 'वर्तमान साम्यवादी ढांचा' खड़ा है.

शोल्झेनित्सिन ने स्पष्ट घोषणा की : "यह कोई इतिहास लिखने का तरीका नहीं है. मैं यह बताना चाहता हूं कि आखिर क्यों इस देश के नौजवानों ने अपने बर्बर दुश्मन की तरफ से मातृभूमि के विरुद्ध हथियार उठाए. इस के लिए कौन जिम्मेवार था? रूसी जनता या रूसी तानाशाह? इसे इन लोगों की पाशविक प्रवृत्ति कह कर टाला नहीं जा सकता. इस युद्ध ने हमें बताया कि दुनिया में सब से बुरी चीज है रूसी होना."

अगर क्रेमलिन का बस चलता तो वह शोल्झेनित्सिन को गोली से उड़वा देता. पर आज वह दुनिया के 'स्वतंत्र विचार का प्रतीक' है. उस के देशनिकाले के बाद की घटनाएं बताती हैं कि रूस अपनी चाल में सफल हो गया है. जब शोल्झेनित्सिन को ले कर रूस का नीला और सफेद एयरोफ्लोट जेट मास्को से फ्रैंकफर्ट जा रहा था, तभी जेनेवा में यूरोप के 34 देश अपने महाद्वीप की सुरक्षा पर विचार कर रहे थे. पर यह सम्मेलन निराशा की एक लंबी सांस छोड़ने के सिवा कुछ न कर सका.

बदनाम करने की साजिश?

रूस इस बात को जानता था कि अमरीका इस संबंध में कुछ नहीं कहेगा, निक्सन चुप रहेगा. किसिंजर ने सिर्फ यह कह कर अपनी चमड़ी बचा ली, "रूस और अमरीका के बीच शांति समझौते की आवश्यकता का अर्थ यह नहीं है कि अमरीका रूस की राजनीतिक व्यवस्था का समर्थक है. वास्तव में इन दोनों बातों में कोई संबंध नहीं है."

शोल्झेनित्सिन पर यह भी आरोप लगाया गया कि 'गुलग' को एक खास वक्त पर प्रकाशित कर के उस ने रूस को अंतर्राष्ट्रीय जगत में बदनाम करने की कोशिश की. पर यह गलत है. लेखक का उद्देश्य शुरू से ही राजनीतिक होने की बजाए नैतिक रहा है. उस ने अपने नोबेल पुरस्कार भाषण में लिखा था : "मानव जाति का उद्धार इसी में है कि सब लोग सब चीजों को समान रूप से भोगें. पूर्व और पश्चिम को एकदूसरे को समझने का अवसर दिया जाना चाहिए. साहित्य एक ऐसा साधन है जो मानव और मानव के बीच विकसित हो रही समझदारी को अभिव्यक्ति प्रदान करता है."

शोल्झेनित्सिन के भावी जीवन पर कई प्रश्नचिह्न लगे हुए हैं. क्या वह उसी प्रतिबद्धता और तेजी के साथ लिख सकेगा? इस बारे में निश्चित रूप से तो भविष्य ही बताएगा. ●

सरिता

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • निर्मला जैन

दूर के ढोल

कभी गरमी की त्रिपचिपाहट, कभी बरसात की पिचपिचाहट और कभी ठंड की किटकिटाहट—हर मौसम से शिकायत है, लेकिन...

मौसम बेईमान हो तो साधारण जन क्या, फिल्मी हीरो तक शिकायत करने लगता है. शिकायत की उस की अपनी अदा है. हर चीज को इश्क के नजरिए से देखने के कारण वह मौसम की बेईमानी पर गागा कर रीझेगा. प्रेमिका के साथ सड़ती गरमी में उसे वसंत की बहार नजर आती है. तूफान प्रिया का संदेश ले कर आता है. भयानक सर्दी में वह मिलन के उपाय सोचता है और बरसात में भीगते हुए नाचनागाना तो उस का प्रिय व्यसन है. इधर जनता का दृष्टिकोण इतना विकसित नहीं हुआ है, वह अभी मौसम से समझौता नहीं कर पाई है.

बला की गरमी हो तो सब से पहले दिमाग पर छुरियां चल जाती हैं. उस पर नल और पंखे गायब हों तो लोकयुद्ध की पूरी तैयारी हो चुकी समझो. वास्तव में गरमी के सिर चढ़ने पर गालीगलौज या सिरफुटव्वल के बिना चैन आ ही नहीं सकता. स्वभाव न आप का बुरा है, न हमारा. यह सब कमबख्त मौसम की करतूत है. लू, धूप और धूल की मार अच्छेभले आदमी को उस के असली रूप में प्रकट होने को विवश कर देती है. जमीनआसमान एक रंग हों तो बाहर निकलने की बात सोची भी नहीं जा सकती. दिनरात लू की तलवार सिर पर लटकी रहती है. हैजे की प्रियतमा ग्रीष्म ऋतु को स्वास्थ्य से जन्मजात बैर है. गरमी की दवा है बरसात. वर्षा देवी पधारें तो सब कष्ट कट जाएं.

गरमी धरना देने नहीं आती. अब वह चली गई और वर्षा मैदान में उतरी है. बड़े चाव से उस का स्वागत हुआ है. आखिर बड़ी मानमनौती के बाद आई है. थोड़े दिनों जब तक गरमी की स्मृति शेष रही, वर्षा रानी मन को भाती रही. पर, अरे, कितना बरसेगा? कीचड़ और गंदगी के मारे बुरा हाल है. यहां शहरों में ज्यादा बरसने की क्या आवश्यकता है, खेतों में बरसे. हर समय की टपटप से सब कामकाज ठप्प हो गए. कितनी असुविधा है! अब घर में बैठ कर हर समय आसमान का मुंह जोहते रहिए. बाहर निकलना हो तो हाथ जोड़ कर उस की कृपादृष्टि की प्रार्थना कीजिए. उधर मक्खी, मच्छर, कीड़ेमकोड़े ऐसे छा गए कि आदमी के लिए स्थान ही नहीं बचा. आए दिन कोई न कोई बीमारी पीछा किए रहती है.

स्वास्थ्य का आदर्श मौसम आ गया है. गुलाबी सर्दी धीरेधीरे उभार पर आ रही है. नई समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, जिन से लगता है, लोगों का उत्साह मिट गया है. मिलने पर दांत किटकिटाते, हथेलियां मलते, कोहरे तले वे कह रहे हैं, "अखबार में छपा है कि कल इस मौसम का सब से ठंडा दिन था. अरे, राम, आज तो कल से भी अधिक सर्दी है. एक महीने से भयानक सर्दी पड़ रही है. हम ने अपनी जिंदगी में ऐसा कड़ाके का जाड़ा कभी नहीं देखा. सुना है, पिछले सौ साल से ऐसी सर्दी नहीं पड़ी. बड़ा अन्याय है. बर्फ पड़े शिमला में और मरें दिल्ली वाले.

भाई साहब, यह चालीस दिन का चिल्ला बिल्ला बना कर छोड़ेगा. हम को तो गरमी का मौसम अनुकूल रहता है. नहाने, सोने, हलके कपड़े पहनने और आम खाने के भी वही दिन हैं. बाबा, अब तो सर्दी से जल्दी जान छूटे." ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाँतों के डाक्टरों की राय में

नियमित रूप से दाँत ब्रश करने और मसूढ़ों की मालिश करने से मसूढ़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न दूर ही रहती है

दाँतों के डाक्टर की राय में मसूढ़ों को मजबूत और स्वस्थ रखने का सर्वोत्तम उपाय है उनकी नियमित मालिश...और दाँतों को सड़ने से बचाने का सबसे बढ़िया तरीक़ा है दाँतों को हर रात और सवेरे व हर भोजन के बाद नियमित रूप से ब्रश करना ताकि सड़न पैदा करनेवाले सभी अन्न कण दाँतों में फँसे न रहें।

अपने बच्चे को दाँतों के डाक्टर द्वारा ख़ास तौर से बनाए गये फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट से नियमित रूप से दाँतों को ब्रश करना और फ़ोरहॅन्स डबल एक्शन जूनियर टूथब्रश से मसूढ़ों की मालिश करना सिखाइए।

फ़ोरहन्स से दाँतों की देख-भाल सीखने में देर क्या, सबेर क्या

फ़ोरहॅन्स

दाँतों के डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

मुफ़्त! "आपके दाँतों और मसूढ़ों की रक्षा" नामक रंगीन सूचना-पुस्तिका* मुफ़्त प्राप्त करने के लिए २५ पैसे के टिकट (डाक-ख़र्च के लिए) इस कूपन के साथ इस पते पर भेजिए: मैनर्स डेण्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-४०० ००१

नाम.....उम्र ६-१.....

पता.....

*कृपया जिस भाषा की पुस्तिका चाहिए, उसके नीचे रेखा खींच दीजिए: हिन्दी, अंग्रेज़ी, मराठी, गुजराती, उर्दू, पंजाबी, बंगाली, आसामी, तामिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़.

130F-162

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

D... ...ngotri

कोयला भई न राख

कहानी : लीला रूपायन

मेरे सामने दो पत्र खुले पड़े हैं, मां! एक तो वह जो मेरी ससुराल से आया है, दूसरा वह जिस का तुम ने उत्तर दिया है. तुम्हें अगर पता चल जाए कि ये पत्र मैं ने तुम्हारे पर्स में से चुरा लिए हैं तो न जाने तुम मेरे साथ कैसा सुलूक कर बैठो. उस समय तुम यह भी भूल जाओगी कि रचना तुम्हारी इकलौती बेटी है. तुम्हारे अंदर जलने वाली ईर्ष्या और दंभ की आग तुम्हें कुछ भी सोचने का अवसर ही कहां देती है? छोटेबड़े, ऊंचनीच, अपनेपराए का भेद कहां जानने देती है? लेकिन एक बात बता दूं, मां! इन पत्रों की चोरी कर के मैं ने अच्छा ही किया है. इन्होंने मुझे नई दिशा का ज्ञान कराया है. इन में से एक पत्र तो मैं तुम्हारे पर्स में रख दूंगी लेकिन दूसरे को अग्नि की भेंट कर दूंगी. तुम्हें तो तुम्हारे पर्स में दो ही पत्र मिलेंगे, मां!

मुझे रात को ही शक हो गया था कि कोई अनहोनी होने वाली है. जब मैं बाथरूम जा रही थी तो पापा की और तुम्हारी तकरार के कुछ अंश मेरे कानों में पड़ गए थे. पूरी बात क्या है, इसे मैं नहीं समझ सकी थी. तुम से सुबह नाश्ते के समय उस बात के विषय में जानना चाहा, तो तुम ने आंखें तरेर कर कहा था, "हर बात में दखलंदाजी मत किया करो. जो कुछ होगा, वह तुम्हारे सामने आ जाएगा."

मेरा दिल तभी से धड़कने लगा था, मां! घर में लेदे कर एक मैं ही तो हूं जिस के लिए तुम अच्छाबुरा कर सकती हो. दूसरे हैं पापा. उन के पास अपना

अपनी मां के बताए हुए रास्ते पर चलते हुए रचना एक ऐसे मोड़ पर पहुंच गई, जहां उसे खुद फैसला करने के लिए मजबूर हो जाना पड़ा...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बचा ही क्या है जिस को तुम बिगाड़ सको. पापा का व्यक्तित्व, सुख, विश्वास, प्यार, समझाना, सभी तो तुम्हारी मुट्ठी में बंद हैं. पापा को तो शायद यह भी पता नहीं कि उन का अपना भी कोई अस्तित्व है. हां, मां, बुरा मत मानना. मैं ने कुछ गलत नहीं कहा. नहीं कहा न? पापा तो टकसाल होते हुए भी तुम्हारे पास गिरवी हैं.

तुम ऐसी क्यों हो, मां? तुम्हें ऐसा बन कर क्या मिला? जहां तक मैं समझती हूं, तुम्हें जीवन में न आत्मिक सुख मिला है, न संतोष. तुम ने मुझे भी अपने जैसा बना डाला. मुझे अपने सांचे में क्यों ढाल दिया? क्या मां इतनी संगदिल भी हो सकती है जो अपनी संतान की खुशियां व अच्छाईबुराई को आग में झोंक दे? मेरा अपना तो कोई अस्तित्व ही नहीं था. मैं भी तुम्हारे चरणचिन्हों पर चलती गई. आज तुम्हारी दी हुई शिक्षा का जब हिसाब करने बैठी हूं तो बचपन से ले कर आज तक की एकएक बात, मेरी निगाहों के सामने चलचित्र की तरह नाचनाच कर, मेरा मुंह चिढ़ा रही है. ओफ, मां! तुम ने मेरे जीवन को तमाशा क्यों बना दिया?

बचपन में तो मैं कुछ समझती ही नहीं थी. तुम्हारी हर बात में तुम्हारा साथ देती थी. एकएक की शिकायत लगा कर मैं मजा लेती थी. यही मुझे अच्छा लगता था क्योंकि तुम ने मेरे खून में अपनी आदतों को पीसपीस कर मिला दिया था. तब शायद मैं आठ बरस की थी, जब पहली बार घर में तुम्हारा वह घिनौना रूप देखा था. उस दिन तुम्हारी सहेली की बेटी की शायद सालगिरह की पार्टी थी. बूआ और उस की बेटी नीतू भी हमारे साथ जाने वाली थीं. बहुत सुंदर है नीतू, इसे मैं आज भी स्वीकार करती हूं परंतु तुम उसे हमेशा ही कलमुंही कहती हो. हां तो, जब बूआ नीतू को ले कर तुम्हारे सामने आईं तो तुम्हारी आंखें फैली की फैली रह गईं. तुम ने पल भर मुझे देखा, फिर नीतू को फिर बूआ से बोली थीं, "कांता, गाड़ी में इतने लोग कैसे बैठ सकेंगे? नीतू को यहीं छोड़ दो."

"वह अकेली घर में रहेगी, भाभी?" बूआ हैरानी से बोली थीं.

"नौकर जो हैं घर में, उन के पास रह जाएगी," तुम ने कहा था.

"नहीं, नहीं. मैं उसे नौकरों के पास नहीं छोड़ सकती. न जाने, वे कैसे हैं. आया होती, तो अलग बात थी," बूआ ने अपना तर्क दिया था.

"वे क्या तेरी बेटी को खा जाएंगे?" तुम ने चिढ़ कर कहा था.

"भाभी, अपमान क्यों करती हो? सीधी तरह क्यों नहीं कहतीं कि तुम हमें साथ ही नहीं ले जाना चाहतीं. तुम्हें डर है कि कहीं रचना नीतू से हलकी न पड़ जाए," बूआ ने तिरस्कार से कहा था.

"तुम्हारी नीतू मेरी रचना का क्या मुकाबला करेगी? तुम्हें हिम्मत कैसे हुई मेरी रचना का नाम लेने की? अपनी कलमुंही का मेरी चांद जैसी बेटी से मिलान करती है!" तुम अपने दंभ में पागल हो गई थीं.

"गलती मेरी है, भाभी, जो मैं भाई साहब के प्यार में बह कर तुम्हारे यहां चली आई. मैं यह भी भूल गई कि मैं जहां प्यार पाने जा रही हूं, वहां लावे का दरिया भी बहता है," बूआ ने कितने दुख से यह बात कही थी.

"आगे के लिए याद रखना. चलो, बेटी!" और तुम मेरी उंगली पकड़ कर गाड़ी में आ कर बैठ गई थीं.

गाड़ी में बैठते ही तुम ने मेरा मुंह चूम कर अपने दंभ का विष मेरे अंदर उतार दिया था. तुम बड़बड़ा उठी थीं, "किस की मजाल है जो मेरी बेटी को नीचा दिखाए? मुंह नोच लूंगी उस का."

पार्टी में जा कर तुम न जाने कैसे एकदम सहज हो गई थीं. तुम यह भी भूल गई थीं कि अभीअभी झगड़ा कर के

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम बूआ को अपमानित कर आई हो, जो कुछ दिनों के लिए हमारे यहां मेहमान बन कर आई हुई हैं.

जब बहुत देर होने के बाद भी तुम घर चलने को तैयार नहीं दिखीं तो मैं ने तुम्हें कहा था, "मम्मी, घर चलो, बूआ अकेली हैं."

"खबरदार, उसे बूआ कहा तो, घर में उसे कोई खा नहीं जाएगा," तुम तड़प कर बोली थीं.

मैं तुम्हारे इस उत्तर से सहम गई थी. परंतु मेरा ध्यान पूरा समय बूआ की तरफ रहा था क्योंकि वह मुझे बहुत प्यार करती थीं. जब रात को हम घर वापस आए थे तो बूआ की जगह एक पत्र लिए पापा खड़े थे. बूआ वहां से जा चुकी थीं. पापा ने तुम्हें देखते ही आंखों से अंगारे बरसाते हुए कहा था, "तुम ने निक्की का अपमान किया था?"

"तो निक्की ने आप के कान भरे हैं. चलिए, मैं उस से पूछती हूं, मैं ने उस का क्या अपमान किया है," तुम ने भी

बचपन में तो मैं कुछ समझती ही नहीं थी. तुम्हारी हर बात में तुम्हारा साथ देती थी. जब पहली बार घर में तुम्हारा वह घिनौना रूप दखा तो...

उसी तरह लालपीली हो कर कहा था.

"निक्की चली गई है और यह पत्र तुम्हारे लिए छोड़ गई है," पत्र को पापा ने तुम्हारे मुंह पर फेंकते हुए कहा था.

तुम जलतीभुनती पापा के सामने जा खड़ी हुई थीं और तुम ने ऊंची आवाज में पूछा था, "तुम्हारी बहन को क्या हक है जो मेरा इस तरह अपमान करे?"

"तुम्हें क्या अधिकार है कि तुम मेरी बहन का अपमान करो. क्यों नहीं उसे साथ ले गईं जब कि उस को अलग से निमंत्रण मिला था," पापा गुस्से में भरे थे.

"उस ने अपनी बेटी को जानबूझ कर इतना सजाया था जैसे मेरी रचना को नीचा दिखाना चाहती हो."

"यह तुम्हारी अपनी ही आग है जिस में तुम हर समय सुलगती रहती हो. कोई तुम्हारा और तुम्हारी बेटी का मुकाबला नहीं करता. तुम हमेशा यही चाहती हो कि बस, जो कुछ हो, तुम्हारा हो. तुम दूसरों का सुख देख कर जलती हो."

"क्या कहा? मैं जलती हूं? यह लो, यह लो, यह लो," और तुम ने दीवार पर सिर को पटकना शुरू कर दिया था.

सारे पासपड़ोस वाले इकट्ठे हो गए थे. मैं तुम्हारी टांगों से चिपक कर चीख रही थी, "मम्मी, ऐसा मत करो; खून निकल आएगा."

तुम थीं कि जैसे होश ही नहीं था. पापा तुम्हारी बांह पकड़ कर तुम्हें घसीटते हुए बेडरूम में ले गए थे और तुम्हें पलंग पर पटक दिया था. इस के बाद बाहर आ कर बोले थे, "इन्हें कभीकभी दौरा पड़ जाता है."

उस दिन पापा पर मुझे भी गुस्सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आया था. मैं पूरे आठ बरस की थी. इतना तो समझती थी कि पापा ने तुम्हें डांटा है. मैं भी तुम्हारे साथसाथ पापा से नहीं बोली थी. दूसरे दिन पापा ने जब मुझे अपने पास बुलाया था तो तुम ने धीरे से मुझ से कहा था, "कह दो, मैं नहीं बोलूंगी, आप अच्छे नहीं हैं."

मेरे ऐसा कहने पर पापा कितने उदास हो गए थे और तुम से बोले थे, "क्यों उस के दिल में बाप के लिए जहर घोल रही हो? मैं तो बलि का बकरा बना ही, उस का जीवन मत खराब करो. वह लड़की है. तुम्हारा तो गुजारा हो गया, कहीं उसे यह स्वभाव ले न डूबे."

तुम ने बड़ी हिकारत भरी निगाहों से पापा को देखा था. फिर तो मैं जैसे-जैसे बड़ी होती गई, तुम्हारे इतिहास के पन्ने मेरे सामने खुलते गए. कैसे तुम ने मेरी एक मौसी से इसलिए झगड़ा किया कि उस के पति को पापा से पहले तरक्की मिल गई थी. तुम उस की खुशी से जल उठी थीं. कैसे तुम ने पापा को उन के परिवार से अलग किया था क्योंकि तुम्हारी एक देवरानी बड़े अमीर घर से आई थी और तुम से अधिक सुंदर थी. तुम यह कैसे सहन कर सकती थीं कि तुम्हारे सामने कोई चाची की प्रशंसा करे. मैं ने सुना था, एक बार दादी मां ने किसी के सामने यों ही हंसतेहंसते कह दिया था, "मेरी बड़ी बहू तो सुंदर थी ही, छोटी उस से भी नंबर ले गई. बहुएं हों तो ऐसी हों; आदमी देखे तो देखता ही रह जाए."

तब तुम ने दादी मां को कड़े शब्दों में कहा था, "छोटी बहू से मेरी तुलना करने की कोई जरूरत नहीं. वह मेरे पांवों के बराबर भी नहीं."

"मैं तो सच में आप के पांवों के बराबर नहीं हूं, दीदी! अम्माजी तो यों ही मेरी तारीफ करती रहती हैं. मैं तो आप की छोटी बहन हूं," चाची ने बड़े नम्र स्वर में कहा था.

"चल, चल, बड़ी आई लल्लोचप्पो करने वाली. मैं सब तुम्हारी माया जानती हूं. चल रानी, मैं भी किसी ऐसे-वैसे बाप की बेटी नहीं," तुम ने तुनक कर कहा था.

फिर जब चाची के घर लड़का हुआ था तो तुम्हारे तनबदन में आग लग गई थी. उस समय भगवान तुम्हारे सामने नहीं पड़ा, नहीं तो तुम उस के भी पुरखे उड़ा देतीं क्योंकि सिर्फ चार महीने पहले तुम बेटी को, यानी मुझे, जन्म दे चुकी थीं. यह कैसे हो सकता था कि चाची पुत्र पैदा कर के तुम से ऊंची उठ जाए! चाची जच्चा थी. दादी मां को उस की सेवा करते देख तुम तूफान खड़ा कर देती थीं, "वह बड़े घर की बेटी है, उस ने बेटा पैदा किया है. इसी लिए सब उस की सेवा में जुटे हैं. मुझे कोई पूछता ही नहीं क्योंकि मैं ने बेटी पैदा की थी. मेरी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बेटी भी किसी से कम नहीं. वह इन के दस लड़कों के बराबर है.''

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस दिनरात की चखचख से तंग दादी मां ने जायदाद के हिस्से कर के पापा को अलग कर दिया था. दादी मां को चाचीचाचा ने अपने हिस्से में ले लिया था. चाचा के घर लड़का होने की खुशी में जब बूआ को बुलाया गया था तो तुम ने कैसेकैसे नाटक कर डाले थे, ''मैं जानती हूं, यह मेरे खिलाफ मोर्चा तैयार हो रहा है, पर मैं बता दूं, मेरा कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा.''

पापा तुम्हें कितना समझाते न जाने तुम किस माटी की बनी थीं. उन को मरने की धमकी दे कर उन्हें डसती चली गईं, वह जितना झुकते गए, तुम उतनी ऊंची उठती चली गईं. वही तुम्हारे गुण मुझ में भी समा गए क्योंकि मैं ने तुम्हारा दूध पिया था न. 'जो कुछ है, हम हैं, दूसरे हमारे सामने तुच्छ हैं' की भावना की मैं शिकार हो गई. तुम्हारी तरह मेरी भी किसी से नहीं पटी. स्कूल से ले कर कालिज तक मैं सब से कटीकटी रही. मुझे सब लड़कियां 'दंभी, घमंडी' के विशेषणों से अलंकृत करतीं परंतु मैं अपने घेरे को तोड़ कर कभी बाहर नहीं निकल पाती. किसी भी लड़की को मैं अपने से अधिक सुंदर या अधिक पढ़ते देखती तो मेरे तनबदन में आग लग जाती. फिर मैं उसे नीचा दिखाने के लिए क्याक्या नहीं करती? जब मेरा अभिमान पूरा हो जाता तो मैं खुशी से भर उठती. मैं यह भी भूल जाती कि उसे नीचा दिखाने के लिए स्वयं कितनी नीचे गिर गई थी.

तुम ने मुझे हमेशा यही एहसास

''तुम ने मेरी मां का अपमान किया है. मैं जा रही हूं. जब तक मेरी मां से क्षमा नहीं मांगोगे मैं इस घर में कदम नहीं रखूंगी,'' रचना ने कहा.

CC-0. In Public Domain. Sarayu Kanoria Collection, Kolkata

कराया कि 'तुम सब से श्रेष्ठ हो,' इसी श्रेष्ठ होने की भावना ने मेरे अंदर ईर्ष्या की आग पैदा कर दी. जैसे तुम लकड़ी की तरह धीरेधीरे धुआं देती जलती रहीं उसी तरह मैं भी अंदर ही अंदर सुलगती रही. यह मैं इसलिए कह रही हूं, मां, कि तुम नींद की गोली लिए बिना सो नहीं पातीं और मैं ने भी तुम्हें हमेशा यही कहा, 'मम्मी, मुझे भी नींद क्यों नहीं आती. बड़ी बेचैनी में रात कटती है,' तुम्हीं बताओ, मां! हमेशा सुलगने वाला आदमी कैसे चैन से जी सकता है?

मुझे याद है, मां! तुम्हारी एक सहेली थी. वैसे तुम्हें किसी से दोस्ती रास ही नहीं आती क्योंकि दोस्ती करने वाले तुम से कतराते हैं, या ऐसा कहूं, तुम्हारी जबान की तेज धार किसी से दोस्ती कर ही नहीं पाती. जितने लोग भी तुम से बोलते हैं या हमें पार्टियों में बुलाते हैं, मैं समझती हूं, वह पापा की वजह से ही बुलाते हैं. आज मैं यह कहने से नहीं चूकूंगी, 'पापा महान हैं. तुम जितनी ईर्ष्यालु और दंभी हो, पापा उतने ही निश्छल और निर्मल हैं.'

हां, तो तुम्हारी वह सहेली, जिस के लिए तुम अकसर सब में बैठ कर कह डालती थीं, "हमारी दोस्ती तो एक उदाहरण है. ऐसी मित्रता किसी में हो ही नही सकती." तुम्हारी उसी सहेली की किसी पत्रिका में एक कहानी छप गई थी तो क्या दशा हो गई थी तुम्हारी? तुम्हारी रातों की नींद उड़ गई थी. तुम ने पापा का उठनाबैठना दूभर कर दिया था, "देखा, उस का पति उस के लिए क्याक्या करता है! आप ने आज तक मेरे लिए क्या किया?"

पापा ने तुम्हें कितना समझाया था, "ऐसी चीजें रसूख से नहीं छपतीं, यह तो एक आर्ट है. उस की कला ने जन्म लिया है, उस ने लिखा है. संपादक को कहानी भा गई और उस ने छाप दी. तुम भी लिखो. जलने से क्या फायदा?"

तुम्हारी कोशिशें बेकार हो गईं, तुम में कुछ होता तो तुम लिखतीं. बस, तुम्हारी मिसाल वाली, मित्रता भाड़ में फुंक गई. फिर तुम उस सहेली से नहीं बोलीं क्योंकि उस ने तुम्हारे दंभ को चुनौती दी थी. हां, यदाकदा तुम ने उसे तानों से अलंकृत किया.

किसी पार्टी में तुम ने एक बांके सजीले नौजवान को देखा. तुम देखती ही रह गईं. तुम्हें किसी से पता चला कि फलां साहब उसे दामाद बनाने वाले हैं. जैसे लड़का सुंदर है, उसी तरह लड़की भी सुंदर है. खूब जोड़ी जमेगी. तुम सुनो, और चुप हो कर बैठ जाओ. दूसरों का सुख बरदाश्त कर लो. तुम ने न जाने क्या सोचा कि लड़के को अपने घर दावत दे डाली और मेरी जानपहचान करवा दी. पैसे का अधिक चारा फेंक कर तुम ने उसे मेरे लिए जाल में फंसा लिया. फिर तो फटाफट उन लोगों की हमारे यहां दावतें उड़ने लगीं. पापा को तुम ने सोचने और बोलने तक का अवसर नहीं दिया. कहीं लड़का हाथ से न निकल जाए, तुम ने शादी भी आननफानन में रचा डाली. बड़ी खुश थीं तुम. तुम ने किला जो जीत लिया था.

मैं भी बहुत खुश थी, घर अच्छा था, घर के लोग अच्छे थे और पतिदेव भी बहुत अच्छे थे. बस तुम्हारी निगाहों में उन में एक ही बहुत बड़ा ऐब था. 'वे' कोई भी काम करते तो अपने मातापिता से पूछ कर करते. यह तुम्हारी आत्मा को कैसे सहन होता कि तुम्हारी बेटी एकदम किसी की गुलाम हो जाए. इस का इशारा तुम ने मुझे कितनी बार किया था, "पति के हाथ की कठपुतली मत बन जाना. उसे अपने काबू में रखना." पापा ने तुम्हें कितनी बार समझाया था, "लड़की अब पराई हो गई है. उस के ऊपर अपना अधिकार मत जताओ. हर काम एक सीमा तक अच्छा लगता है. अब वह उस घर की बहू है. जैसा वे चाहें, करें."

"मैं ने उस घर में लड़की की भांति

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह उन का मन करे, उस के साथ सुलूक करें," तुम ने कड़े स्वर से कहा था.

"कोई बुरा सुलूक किया है उन्होंने? रचना तो बहुत खुश नजर आती है." पापा ने हैरानी से पूछा था.

"खाक खुश है? कह रही थी, 'क्या करूं, मम्मी, मेरे क्या वश की बात है कि उठूं और तुम्हारे पास आ जाऊं? अब तो जैसा ससुराल वाले कहेंगे, वैसा ही करना पड़ेगा."

"तो इस में बदसुलूकी कहां से आ गई?" पापा ने बात को टालना चाहा था.

"वह मेरी बेटी है. मैं उस के अंतर की पीड़ा को खूब समझती हूं. उस ने इसलिए दुख व्यक्त नहीं किया कि उस की मम्मी का जी न दुखे."

"तुम जानो, तुम्हारा काम जानें. तुम ने आज तक पांवों पर पानी नहीं पड़ने दिया. अब मेरी क्या सुनोगी? अपनी तरह उस के जीवन को भी नरक बना डालोगी."

सच में वही हुआ जिस का पापा को डर था. तुम मुझे लेने आई थीं तो मेरे पति ने तुम से कहा था, "मम्मीडैडी से पूछ लीजिए. उन की 'हां' हो तो मुझे क्या इनकार हो सकता है? और, रचना, तुम क्या कहती हो?"

"मुझे भेज दीजिए न. एक महीना हो गया है उधर गए हुए. मम्मी के लिए भी तो मेरे सिवा कोई नहीं. मैं आठ दिन बाद आ जाऊंगी," मैं ने तुम्हारा पक्ष लिया था.

"मिल तो तुम लेती ही हो, रचना! हां, वहां गए पंदरहबीस दिन हो गए हैं. फिर भी मम्मी से पूछ लो. अगर वह 'हां' करें तो चली जाना."

"बच्चे भी क्या मम्मी से पूछ कर पैदा करोगे?" तुम ने एकदम भड़क कर कहा था, "मेरी बेटी को क्या इतना भी अधिकार नहीं कि वह मां के पास अपनी इच्छा से चली जाए?"

"आप तो एकदम गुस्सा हो गई हैं, मम्मी! हमारे घर में जो रिवाज है, उस को तो हम तोड़ नहीं सकते. मेरी बड़ी भाभी शादी के आठ साल बाद भी मेरी मां से पूछे बिना कहीं नहीं जातीं," मेरे पति ने सहजता से कहा था.

"वह होगी कोई टटपूंजिए की लड़की, जो तुम्हारी मां से डरती है."

"देखिए, आप रचना की मां हैं, मेरी पूज्य हैं इसलिए मैं चुप हूं. यदि किसी और ने मेरी भाभी की शान में कुछ कहा होता तो उसे इस का पूरा जवाब देता."

तुम कहां दबने वाली थीं. तुम्हारे अंतर की आग ने रौद्र रूप धारण कर लिया था. तुम आपे से बाहर हो गई थीं. पति को शांतचित देख कर उस समय मैं भी यही समझी थी कि उन्होंने तुम्हारा अपमान किया है. मैं भी तड़प कर बोली थी, "तुम ने मेरी मां का अपमान किया है. यदि तुम्हारी निगाहों में मां का दर्जा ऊंचा है, तो यह मेरी भी मां है. मैं जा रही हूं. जब तक मेरी मां से क्षमा नहीं मांगोगे मैं इस घर में कदम नहीं रखूंगी."

फिर बिना पति की ओर देखे और बिना कुछ साथ लिए मैं तुम्हारे साथ चली आई थी. पापा को तुम ने गुस्से में सब कुछ बता दिया था. पापा कितने व्यथित स्वर में बोले थे, "तुम ने यह क्या किया, बेटी? मैं तो समझा था, तुम समझदार हो गई हो. तुम ने मेरी सब उम्मीदों पर पानी फेर दिया. सच कहते हैं, बेवकूफ की दोस्ती जी का जंजाल होती है." और पापा सिर झुकाए वहां से चले गए थे.

पापा को यकीन था कि उन की बेटी एक दिन अपनी गलती महसूस करेगी और वापस पति के पास चली जाएगी. लेकिन समय निकलता गया, पापा की उम्मीदें मिटती गईं और तुम मेरे दिल में दर्द के शोलों को हवा देती

(शेष पृष्ठ 135 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमतीजी

पा०।

तुम मुझे अभी तक बेवकूफ और फिजूलखर्ची समझते रहे हो न ?

इस में क्या शक है ।

लेकिन आज मैं ने एक ऐसा काम किया है, जिस की तुम्हें तारीफ करनी पड़ेगी.

वह क्या ?

मैं पढ़ने के लिए जितनी भी पत्रपत्रिकाएं खरीदती थी तुम उसे फिजूलखर्ची कहते थे. ... कहते थे न ?

बिलकुल !

दस रुपए प्रति माह के हिसाब से पिछले पांच वर्षों में हम ने पत्रपत्रिकाओं पर कितने रुपए खर्च किए ? जरा हिसाब लगाना ...

.. जल्दी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी • मदनमोहन भार्गव

हाथी के दांत

खाने के और दिखाने के और...

अपने खेत के पुआल के ढेर के पास लाजो और दीना को बतियाते देख कर चौधरी रामरिख का बड़ा लड़का भजन भाग कर गांव तक गया और दोचार जगह फुलझड़ी छोड़ कर 'कांड' को देखने के लिए फिर उसी रफ्तार से वापस चला गया. इस बार उस के साथ दोचार और फालतू किस्म के छोकरे भी चल दिए. बात ने रंग दिखाया और वह जल्दी ही गांव भर में फैल गई. वैसे यह गांव वालों के लिए घटित होने वाली नई खबर नहीं थी. चौथा मौका था कि लाजो और दीना बतियाते पकड़े गए थे, अलबत्ता प्रतिक्रिया इस बार कुछ तेज रही.

खबर मिलने के साथ ही औरतें अपने घरों से निकल कर पड़ोस के घरों में घुसने लगीं. जल्दी ही एक रहस्य का सा वातावरण सारे गांव पर छा गया. पास खड़े बच्चे अपनी मां के कान के पास मुंह ले जा कर फुसफुसाते, देखते और कुछ सुनने की उत्सुकता से पास खिसक आते. लेकिन मां झिड़क देती तो बेचारे सहम कर पीछे हट जाते.

करमू की मां किसी को पंडिताइन के घर में घुसते देख कर मक्की की रोटी हाथ में लिए लपकी. देखा तो कौशल्या पंडिताइन को रहस्यभरी बात बता रही थी, "क्या हुआ, री, कौशल्या?" उस ने रोटी को हाथ से थपकते हुए पूछा. तभी बराबर वाली चंदा गोबर सने हाथों से भाग आई, "क्या हुआ, चाचीजी?"

करमू की मां ने हाथ की रोटी पंडिताइन के खाली तवे पर डाल दी. तब तक कौशल्या चारों ओर से घिर चुकी थी. उस ने फिर से बात दोहरा दी, "होना क्या था? वही लाजो और दीना का इश्क."

तभी करमू की मां ने अधपकी रोटी उठा कर आधीआधी दोनों लड़कों को दे कर एकएक धौल जमा दी जो रोटी मांगते पीछेपीछे आ गए थे. लड़के रोटी ले कर मार को भूल कर भाग गए. फिर करमू की मां कौशल्या का हाथ पकड़ कर उसे पंडिताइन के घर में और अंदर को खींच कर ले गई, "अरी, जल्दी बता न. मेरा तो तवा भी जल रहा है." पंडिताइन और चंदा भी साथ ही अंदर को लपकीं.

कौशल्या बोली, "होना क्या था!" रामरिख के खेत में पुआल के पास दोनों को बतियाते देखा है भजन ने!

"हाय राम," पंडिताइन ने ठंडी सांस भरी. "क्या जमाना आ गया है!"

पंडिताइन के आंगन से सूखी मिट्टी उठा कर अपने हाथों का गोबर उतारते हुए चंदा बोली, "अरी, वह जमाना तो गया, जब चौदह साल की लड़की विधवा होने पर सारी उमर काट देती थी. अब तो..."

"अजी, विधवा हुए ढाई साल भी नहीं हुए और अभी से आंखें लड़ाने लगी—वह भी गैरजात के लड़के से. न आगा, न पीछा," कहतेकहते कौशल्या चली गई. करमू की मां और चंदा भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमाने को कोसतेकोसते खिसक गई. गांव में एकदूसरी से पहले खबर सुनाने की होड़ लग गई.

स्त्रियों का 'संवाददाताओं' वाला काम पूरा भी नहीं हुआ था कि गांव में जहांतहां बैठे पुरुषों और युवकों की टोलियां बनने लगीं.

"अरे, तुम ने कुछ सुना, प्रीतम? दीना और लाओ आज फिर..."

"अरे, तो क्या कोई नई खबर है. रोज का काम है. जिस दिन कोई देख ले, चर्चा हो जाती है. और फिर तुम क्यों बेकार में सूख रहे हो? मियांबीवी राजी, क्या करेगा काजी. गांव वालों को पता नहीं दूसरों के मामले में टांग अड़ाने में क्या मजा आता है?" प्रीतम ने रूखा सा जवाब दिया. वह फौज में रह चुका था. वह कई देशों में घूमाफिरा था इसलिए उस ने इस बात को अधिक गंभीरता से नहीं लिया.

उस की इस उपेक्षा से खीझ कर नन्हे फिर बोला, "ऐसी की तैसी, ऐसी मरजी की. तुम तो घाटघाट का पानी पिए हो, तुम को इस में कैसी लाज? गांव की इज्जत का मामला है. हमारी बहूबेटियों की इज्जत की बात है. आंख से देख कर मक्खी निगली जाती है भला! एक तो विधवा, लड़का गैरजात, और फिर सरेआम, तौबा! तौबा! आज पंचायत जुड़ेगी." और नन्हे लाठी उठा कर जैसे आया था, वैसे चला गया.

चौपाल पर बैठ कर ताश खेलते और हुक्का पीते बुजुर्ग किस्म के लोग कुछ ज्यादा उत्तेजित थे. "रामदीन, यह तेरी गलती है. तू ने ऐसे बदमाश को मकान में रखा क्यों है? मैं ऐसे आदमी को अपने मकान में चार घड़ी भी न टिकने दूं," केसरदास पत्ता फेंकते हुए बोला.

"भई, हमें तो किराए से मतलब है और फिर वह मेरे घर में बैठ कर तो बदमाशी करता नहीं. बाहर जो मरजी करे, अपनी बला से," रामदीन बोला.

"अरे, यार, छोड़ो, क्या भागवत ले बैठे हो! दोनों को बुला कर पंचायत में चादर डलवा दो, सब ठीक हो जाएगा," प्रेमलाल ने लापरवाही से कहा. "हां, यदि वह चादर डालने को तैयार न हो तो गांव से निकाल दो."

लाजो के दोनों भाई उस दिन गांव में नहीं थे, वरना दोनों लाठी उठा कर मूंछ उमेठते चल पड़ते, भले ही अकेला दीना उन को बेरंग लौटा देता.

पिछली बार जब लाजो दीना की दुकान से निकली थी तो किसी ने उस के भाइयों को खबर कर दी थी. दोनों तुरंत लाठी ले कर आ पहुंचे थे. मगर जब दीना ने ललकारा था तो दोनों बीचबचाव कराने वालों की आड़ ले कर किसी तरह खिसक गए थे. वैसे लाजो को उन्होंने खूब पीटा था. दीना का गुस्सा भी उस दिन लाजो पर उतरा था.

आज जब भजन भाग कर गांव में खबर करने आया था तो दीना और लाजो भी अलगअलग रास्तों से गांव में आ गए थे. दीना तो अपनी दुकान पर आ बैठा मगर लाजो को उस की भाभी ने घर में नहीं घुसने दिया, "जा, जा, अब उसी खसम के पास जा कर रह, तुझे हमारी लाजशर्म की कोई परवा नहीं? आने दे तेरे भाइयों को, तेरी बोटीबोटी

> लाजो और दीना का प्यार जब पूरी तरह रंग पर आ गया तो गांव की जर्जर मान्यताएं चरमराने लगीं... क्या विधवा को प्यार करने का अधिकार है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नहीं.''

लाजो मन में डर कर दीना की दुकान पर ही आ गई. दीना समझ गया कि आज कोई गुल खिलेगा जरूर, उस ने दुकान के अंदर के हिस्से में लाजो को बैठा दिया और संभावित खतरे से निपटने के लिए अपनी लाठी ढूंढ़ कर पास में रख ली.

पिछली बार अपने भाइयों के हाथों मार खाने के बाद एक दिन चोरीचोरी जब लाजो ने अपनी चोटें दीना को दिखाई थीं तो वह उस की कमर और कंधों पर के नीले निशान देख कर कांप कर रह गया था और बाकायदा चादर डालने की रस्म पूरी करना चाहता था. वह पंचायत के सामने हर बात को स्वीकार करना चाहता था ताकि किसी को शक की गुंजाइश न रहे.

दीना इस गांव में 25 साल से रह रहा था. उस के मांबाप भारत विभाजन के समय अमृतसर के पास के किसी गांव से उठ कर आए थे. उन के यहां आने के बाद दीना का जन्म हुआ था. वह जब 18 वर्ष का था तो उस के मांबाप किसी मेले में अपनी ठेलागाड़ी ले कर गए हुए थे. वह पीछे दुकान की सारसंभाल को रह गया था. मेले से लौटते समय रात को रेल के फाटक के पास मोड़ पर एक ट्रक से ठेलागाड़ी की टक्कर होने से उस के मांबाप मर गए थे. दीना ने बड़ी मुश्किल से काम संभाल लिया था. गांव वाले उस पर बड़ी दया करते थे.

अब दोचार दोस्तों के सिवा सभी उस से जलते थे—बेचारी लाजो के कारण. वह छोटी उमर में विधवा हो गई थी और उस का दुख नहीं देखा जाता था. वैसे तो गांव के कई जवान लड़के लार टपकाते फिरते थे लेकिन कोई उस से शादी करने को तैयार नहीं था. वह सोच रहा था, भले ही उसे गांव छोड़ना पड़े, वह लाजो को दुखी नहीं होने देगा. वह उसे उस की चुड़ैल भाभी और जल्लाद भाइयों के हाथों नहीं पड़ने देगा.

लाजो के भाई मंडी गए हुए थे. कुछ घर का सौदा लाना था, कुछ आढ़ती से पैसे लेने थे. जब वे दोपहर बाद गांव में पहुंचे तो सभी उन की तरफ अजीबअजीब नजरों से देख रहे थे. जब वे घर पहुंचे तो सारी खबर नमकमिर्च लगा कर शांति ने सुनाई दी. सरजू और फत्ता एकदम गुस्से में पागल हो उठे. साथ ही जब सुना कि वह घर भी नहीं आई और दीना की दुकान में ही घुसी बैठी है तो और ताव खा गए. दोनों अपनीअपनी लाठी संभाल कर, सिर पर कपड़ा लपेट कर चल दिए. शांति ने सोचा कि कहीं बात बढ़ गई और दीना ने ही दोनों को चित्त कर दिया तो क्या होगा. इसलिए उस ने दोनों की लाठी पकड़ ली, ''सुनो, उस नकटी ने तो

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हमारी नाक कटवा ही दी. दुनिया की बेटियां विधवा होती हैं. कोई इस तरह से तो बेशर्मी नहीं करती. इसे तो ज्यादा ही आग लगी है. तुम क्यों रार बढ़ाते हो? आज सांझ को पंचायत कर लो."

फत्ता कड़क कर बोला, "तुम बीच में मत बोलो, भाभी! आज दोनों को ठिकाने लगा देंगे. रोजरोज की इस बेइज्जती से तो डूब मरना बेहतर है," और उस ने एक झटके से लाठी छुड़ा ली.

"अरे, तो अपनी लाजो 'बहन को क्यों नहीं मार देते? न रहे बांस, न बजे बांसुरी. दीना कौन उसे घर से उठा कर ले जाता है," शांति ने लपक कर फिर उसे पकड़ लिया. फिर सरजू के हाथ की लाठी लेते हुए बोली, "पंचायत कौन अंधी है? सब देखतेसुनते हैं. बहूबेटियां उन की भी तो हैं. तुम अभी बैठो."

दोनों भाई मन मार कर बैठ गए.

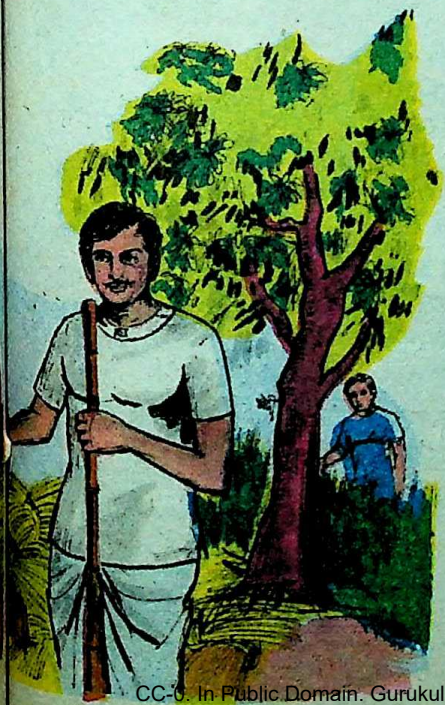

न खाने की सुध रही, न पीने की, झट जा कर सरपंच से मिले. सरपंच भी इस झगड़े को निपटाना चाहता था. उस ने चौकीदार भेज कर सभी पंचों को खबर करवा दी. पड़ोस के गांव से भी सरपंच को बुला भेजा गया.

गांव भर में दीना की अकेली परचून की दुकान थी. वह ठेलागाड़ी पर लोगों का अनाज मंडी तक ढोता और मंडी से रोजाना जरूरत की चीजें ला कर गांव में बेचता था. इसलिए लोगों के हित उस से बंधे हुए थे. कभीकभार लोग उस से दसपांच रुपए उधार भी ले लेते थे. घर की औरतें भी अपने मर्दों से चोरीछिपे सेर, दो सेर अनाज जा कर बेच आया करती थीं. ऊपर से चाहे लोगबाग सरजू और फत्ता की तरफदारी करते हों लेकिन अपने हितों की खातिर अंदर से दीना के मददगार थे.

पंचायत होने की खबर दीना के पास भी पहुंचती. वह सरपंच से मिल कर स्थिति स्पष्ट करना चाहता था. सरपंच ने उसे सही निर्णय का आश्वासन दिया और साथ ही लाजो के साथ शादी करा सकने के लिए कोशिश का भी.

शाम को चौपाल में पंचायत जुड़ी. मारपीट, झगड़ाफसाद या खेत के पानी के झगड़े पर तो पंचायत आम बात थी परंतु यह मामला नया था इसलिए भीड़ काफी जुटी थी. दूसरे गांव के सरपंच के पास भी जब खबर गई तो उस गांव के भी दोचार आदमी साथ चले आए. चौपाल में तिल धरने की भी जगह नहीं थी. सभी जातियों के लोग अलगअलग टोलियों में बैठे थे. गांव को आज एक अजीब निर्णय लेना था.

थोड़े देर में सरपंच, उस के पीछे दीना और पीछेपीछे घूंघट काढ़े लाजो चली आ रही थी. वैसे तो वह इस गांव

और जब लोगों ने दीना और लाजो को छिपछिप कर बातें करते देखा तो उन के सब्र का बांध टूट गया.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

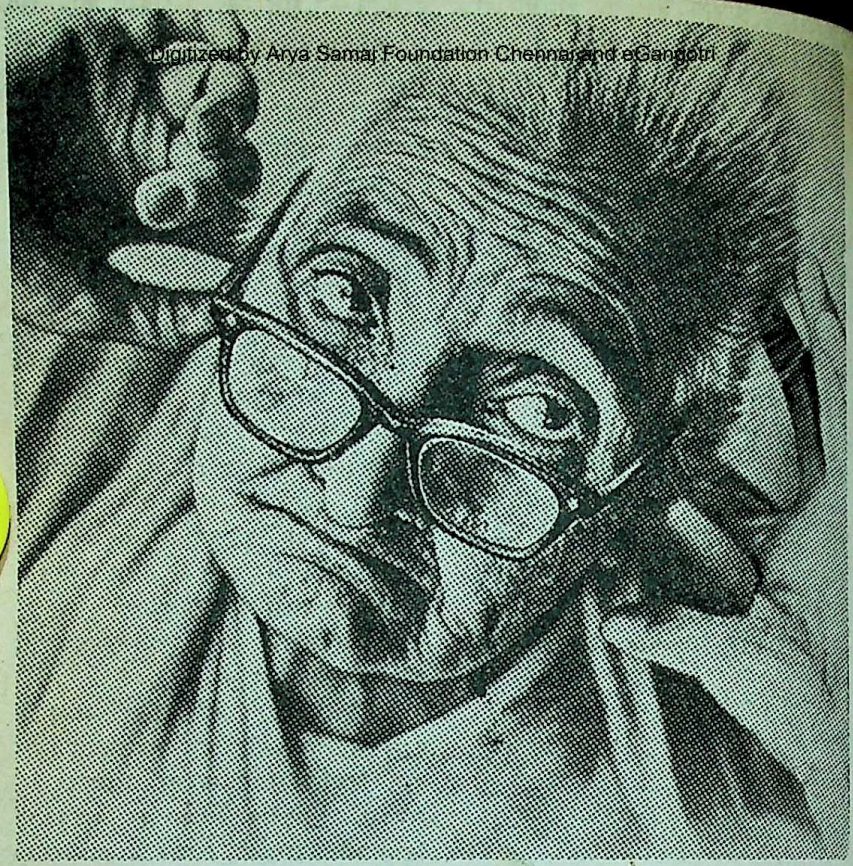

अपने ट्रान्सिस्टर और टेप-रेकार्डर की आवाज का फर्क—जो कमाल था, नई शक्तिशाली निप्पो हायपर और हाइ-टॉप बैटरियों का !
आखिर क्यों न हो, निप्पो बैटरियां, जापानी निर्माता नॅशनल के अनोखे पेटन्टेड फॉर्मूले से बनी हैं.

- **एक सा वोल्टेज ... एक सी आवाज**
- **मेटल कवर ... लीकेज से बचाता है**
- **ज्यादा समय चलती है, बिना इस्तेमाल भी अधिक टिकती है.**

हाइ-टॉप—थोड़े से ज़्यादा खर्च में बहुत ज्यादा टिकाऊ

निप्पो **अद्भुत आवरण में अपार शक्ति**

जापानी संस्था मत्सुशिता इलेक्ट्रिक के सहकार्य से,
इन्डो नॅशनल लिमिटेड द्वारा निर्मित

everest/829/INL-hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

की बेटी थी इसलिए उस का घूंघट बेमानी था मगर आज वह बहू बनने जा रही थी. कम से कम अपनी ओर से तो वह ऐसा सोच ही चुकी थी.

नीम के नीचे बने चबूतरे पर जगह साफ कर के बड़ी दरी बिछा कर पंचों और सरपंचों के लिए जगह बना दी गई थी. चबूतरे के एक ओर दीना तथा लाजो बैठे थे तथा दूसरी ओर सरजू और फत्ता.

कारवाई शुरू होने पर एक पंच ने उठ कर सारी बात लोगों को बताई और फिर सरजू से बोला, "तुम पंचायत से क्या चाहते हो?"

सरजू बोला, "मेरी बहन को दीना ने भगा कर अपने पास बैठा रखा है. हम उसे वापस चाहते हैं." उस की आंखें धरती में गड़ी जा रही थीं.

पंच ने दीना की ओर देखा और पूछा, "तुम क्या कहते हो?"

"मैं ने इसे भगा कर नहीं रखा, यह अपनी मरजी से आई है और मैं इस पर पंचायत से इजाजत ले कर चादर डालना चाहता हूं," दीना ने साफ शब्दों में कहा.

दीना की बात पर गांव के बड़े बूढ़ों में खुसरपुसर शुरू हो गई, "विधवा का विवाह! रामराम, क्या जमाना आ गया. अरे, ऐसी बेशर्मी तो हम ने अपनी उमर में कभी देखी, न सुनी."

"लेकिन गांव में विधवा के विवाह को ठीक नहीं समझा जाता. तुम ने मर्यादा के विरुद्ध काम क्यों किया?" एक पंच ने उस से पूछा.

मैं ने कोई मर्यादा के विरुद्ध काम नहीं किया. आज तक लाजो के शरीर को मैं ने नहीं छुआ. यदि यह विवाह के लिए तैयार न हो तो मुझे कोई उज्र नहीं. तब सरजू इसे ले जा सकता है," दीना ने चारों ओर दृष्टि डालते हुए कहा.

दोचार बातें और पूछने के बाद जैसे ही पंच न्याय करने के लिए उठने लगे, लाजो उठी और घूंघट को थोड़ा ऊपर सरका कर बोली, "मैं इन के साथ अपनी मरजी से आई हूं और अब दोबारा अपने घर जाने से पहले अपनी जान दे दूंगी."

पंचायत कुछ देर बाद फैसले के लिए तैयार हो गई. चारों पंच दीना को शादी से रोकना चाहते थे, वरना उसे गांव से निकलना पड़ेगा. गांव का सरपंच भी अपने पंचों के फैसले के विरुद्ध कैसे जाए! दूसरे गांव से आया सरपंच भी फैसले के बारे में कुछ नहीं बोला.

सरपंच ने फैसला सुनाया, "लाजो ने अपने भाइयों तथा भाभी की मरजी के खिलाफ काम किया है. वे लाजो के संरक्षक हैं. उन की मरजी के बिना यह शादी नहीं हो सकती. आगे से दीना अपनी हरकतों को बंद कर दे और लाजो से कोई संबंध न रखे. लाजो सरजू के साथ घर लौट जाए. इस के फैसले के खिलाफ कोई कुछ बोलना चाहे तो बोल सकता है."

फैसले की दोतरफा प्रतिक्रिया हुई. सरजू, फत्ता और उस पक्ष के आदमी मूंछ उमेठउमेठ कर दीना को देखने और पंचायत के न्याय की प्रशंसा करने लगे. दूसरे पक्ष के आदमी निराश हो गए. तभी लाजो शेरनी की भांति गरज कर आगे आई, "यदि कोई विधवा शादी करे तो गांव की मर्यादा को धक्का लगता है लेकिन गांव के छोकरे किसी विधवा को हर समय तंग करें, तब गांव की मर्यादा बनती है! यदि विधवा भाइयों और भाभी के जुल्म सहती और मार खाती रहे तो गांव के नियम ठीक रहते हैं लेकिन वह एक सच्चे इनसान का सहारा ढूंढ़ ले तो नियम टूट जाते हैं! आज सारा गांव हमारे खिलाफ है, लेकिन मुझे इस से बचाने कौन आया था?" और उस ने अपनी पीठ से कुरता उठा दिया. कालीकाली धारियों से पीठ पटी पड़ी थी.

कुछ रुक कर लाजो फिर बोली, "आप में से कितने आदमी अपनी बेटियों को बिना सहारे रख सकते हैं? आज भाई मुझ पर हाथ उठाते हैं. वे जरा भाभी को साल, दो साल अकेली छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

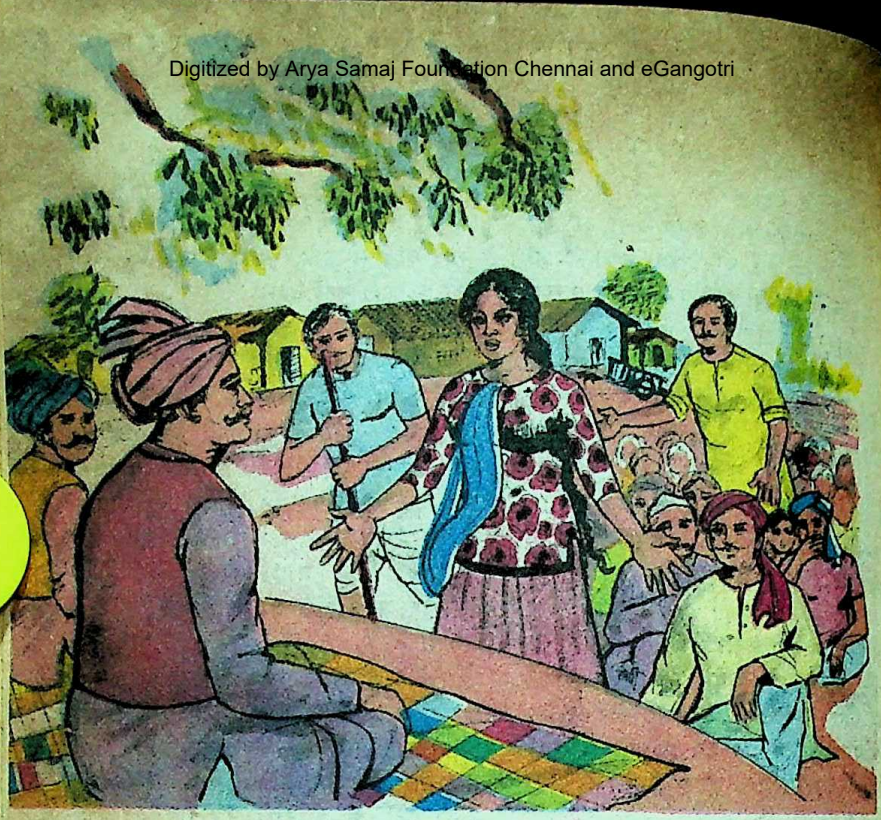

"यदि कोई विधवा शादी करे तो गांव की मर्यादा को धक्का लगता है लेकिन गांव के छोकरे किसी विधवा को हर समय तंग करें, तब गांव की मर्यादा बनती है?" लाजो की बातें सुन कर पूरी पंचायत में सन्नाटा छा गया.

दें. इनसान दूसरों को उपदेश दे लेता है मगर खुद पर बीते, तब पता चलता है. हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के और होते हैं. इनसान दूसरों के बारे में नियम और तरह से बनाता है लेकिन खुद के लिए और तरह से."

लाजो बैठ गई तो दूसरे गांव वाले सरपंच उठे और लाजो की ओर देख कर बोले, "बेटी, तू ने मेरी आंखें खोल दीं. मैं ने अपनी बेटी को, जो दस वर्ष की उमर में विधवा हो गई थी, अब तक घर में बैठाए रखा है. वह कैसा दुख भोगती होगी, मैं ने आज समझा. तुम मेरे साथ चलो, मैं तुम्हारा कन्यादान करूंगा."

सब ओर सन्नाटा छा गया. फत्ता ने सरजू को कोहनी मार कर कहा, "भाई, बात बिगड़ेगी. तुम खुद ही लाजो की शादी दीना से करने को कह दो. अब वह घर तो जाएगी नहीं. अपने सिर पर कलंक भी क्यों लेते हो?"

सरजू तुरंत उठा और बोला, "लाजो हमारी बहन है, उस के कन्यादान की रस्म हम ही करेंगे."

लाजो दौड़ कर भाई से लिपट गई. लोग कभी दीना को देख रहे थे, कभी सरजू और फत्ता को.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DC.G.49 HN (R)

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की दुर्गंध रोकिये... दंतक्षय का दिनभर प्रतिकार कीजिये!

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है और खाना खाने के तुरंत बाद कोलगेट विधि से दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का—अधिक दंतक्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह एक बेमिसाल घटना है। क्योंकि एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेन्टल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंतक्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है।

इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है — इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए...

दुनिया में अधिक लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही खरीदते हैं!

अधिक सफ़ेद दांतों, अधिक स्वस्थ मसूढ़ों व मुंह में अधिक ताज़गी के लिये **कोलगेट टूथ ब्रश** इस्तेमाल कीजिये। ११ विभिन्न किस्मों में— आपके परिवार में हरक के लिये अनुकूल!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब रेल

व्यंग्य

सत्यपाल मुनि

जब से इस धर्मप्राण देश भारत में रेलगाड़ियां चल गई हैं, साधुसंतों के लिए तीर्थयात्रा का पुण्य अर्जित करना सरल हो गया है. 'सबै रेल गोपाल की यामे अटक कहा, जाके मन में अटक है, सोई अटक रहा.' सारी वस्तुएं भगवान की हैं. यदि भगवान के नाम पर चलने वाले उन का उपयोग नहीं करेंगे तो कौन करेगा? संसारी मनुष्य सोचते हैं कि रेलगाड़ियां सरकार की हैं और उन का प्रयोग करने के लिए निर्धारित किराया देना चाहिए. जो माया में फंसे जीव हैं, वे तो ऐसा सोचेंगे ही. वे तीर्थयात्रा का पुण्य भी अपनी माया के बल पर अर्जित करना चाहते हैं. धनवान सब जगह अपने धन का घमंड दिखलाते हैं और टिकट ले कर तीर्थयात्रा करते हैं.

साधुसंतों ने माया को छोड़ रखा है. उन्हें तो धन का गर्व है ही नहीं. वे तो भगवान के सहारे तीर्थों की यात्रा करते हैं. भगवान के दरबार में जाने के लिए भी अगर पैसा खर्च करना पड़ा तो फिर धर्मकर्म और सांसारिक कार्यों में अंतर ही क्या रहा! अगर पैसे से ही पुण्य खरीदा जा सकता हो तो धनी ही सब से अधिक पुण्य खरीद लेंगे. आप ही विचार कीजिए कि जिन साधुसंतों ने संसार को छोड़ रखा है, धन कमाने का कोई काम नहीं करते हैं और धन को छूना भी पाप समझते हैं, वे भला टिकट ले कर तीर्थयात्रा कैसे कर सकते हैं!

आखिर सरकार ने भी तो अपने एम. एल. ए. और एम. पी. लोगों को उच्च श्रेणी में बिना टिकट यात्रा की छूट दे रखी है और इस सुविधा का सरकारी नाम 'पास' रख छोड़ा है. आप कहेंगे कि एम. एल. ए. और एम. पी. आदि जनता के सेवक और प्रतिनिधि हैं. तो क्या साधुसंत जनता के शत्रु हैं? उन्हें भी सरकार वैसी ही सुविधा क्यों नहीं देती है? साधुसंतों को भी 'रेलवे पास' दे दिया जाए तो बिना टिकट यात्रा करने का तथाकथित सरकारी अपराध उन्हें न करना पड़े.

मगर साधुसंतों को भगवान के सिवा और किसी सरकार से मतलब है नहीं. ये सरकारें तो आज हैं, कल नहीं रहेंगी. वास्तव में संसार का सारा राज्य भगवान का है, वही सब का मालिक है, साधुसंत तो उसी को 'सरकार' कहते हैं. और फिर भगवान तो केवल भाव देखते हैं. जैसे-तैसे भी उन का नाम लेने और उन की शरण में पहुंच जाने पर वे अपने भक्तों को स्वीकार कर ही लेते हैं. बिना टिकट यात्रा करने के अपराध पर वे ध्यान नहीं देते. वे तो अपराधों को क्षमा करने वाले और पापियों का उद्धार करने वाले पतित-पावन हैं.

भगवान की मरजी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता. धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा भगवान ही देते हैं. साधुसंतों के हृदयों पर तो उन्हीं का शासन है. वह ही सब कर्ताधर्ता हैं. अपने साधनहीन भक्तों को भी वे अपने दरबार में बुला ही लेते हैं. रेलगाड़ियां चल गई हैं तो उसी पर बुला लेते हैं. भगवान जैसे चलाता है वैसे ही साधुसंत चलते हैं. वह जैसे रखता है वैसे रहते हैं. वही उन को सारी सुविधाएं देता है. 'अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम, दास मलूका कह गए सब के दाता राम.' उसी भक्तवत्सल के भरोसे वे निर्विघ्न रूप से अपना जीवन-यापन, धर्मकर्म और तीर्थव्रत करते रहते हैं.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपाल की

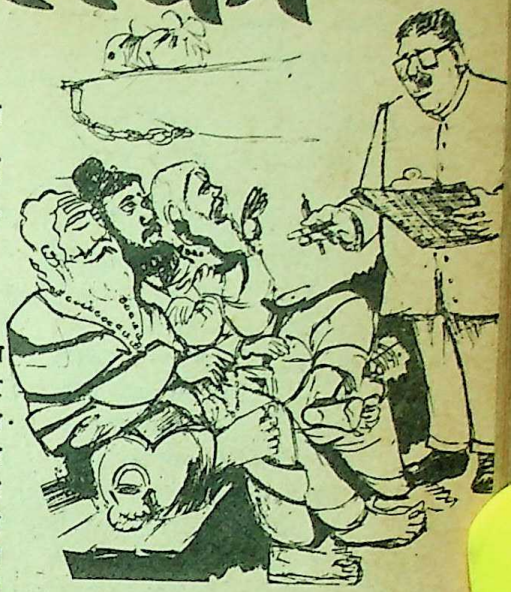

तब अगर गोपाल के भक्त बिना पैसे दिए तीर्थयात्रा करते हैं तो भला क्या बुरा करते हैं?

हां, उन लोगों के लिए अवश्य कठिनाई है जो सदियों से अभी धरती पर ईश्वरीय राज्य स्थापित होने की राह देख रहे हैं. जब तक भगवान शासन सूत्र अपने हाथ में नहीं ले लेते हैं तब तक उन को उसी शासन में रहना होगा जो धरती पर है, और उसी के नियमों का पालन करना होगा. ईश्वरीय राज्य में संतों को भी एम. एल. ए. और एम. पी. लोगों की तरह सम्मानपूर्वक बिना टिकट रेलयात्रा ही नहीं, बल्कि बसों, टैक्सियों, जलयान और वायुयान से भी यात्रा करने की छूट मिली रहेगी. मगर भारत के साधुसंत तो सदा से ही भगवान के राज्य में रहते हैं और उसे ही धरती की सारी सामग्रियों का स्वामी मान कर उन का उपयोग करते रहते हैं.

इस घोर कलियुग में भी भारत की पवित्र भूमि पर भगवान से डरने वालों और साधुसंतों को मानने वालों की कमी नहीं है. लोग भरसक साधुसंतों की सेवा करते रहते हैं. फिर भी रेलगाड़ी में यात्रा करते समय कभीकभी कोई नास्तिक और अविश्वासी टी.टी.ई. मिल जाता है तो वह टिकट न रहने पर किसी साधु को अपमानित कर के रेलगाड़ी से उतार भी देता है. इस से साधु का तो कुछ बिगड़ता नहीं, वे तो मानअपमान से परे होते हैं. हां, वह टी.टी.ई. अपनी ऐसी अश्रद्धा के कारण अवश्य पाप का भागी हो जाता है. भला साधुसंतों को सताने वालों को भगवान कभी क्षमा करेंगे? भगवान सब कुछ देखते हैं. सभी जानते हैं कि साधुसंतों के पास रुपयापैसा नहीं होता है फिर कौन उन से टिकट का चार्ज मांगे और उन की अकृपा का भाजन बने.

फिर वह टी.टी.ई. भी कौन दूध का धुला है! जब से बिना टिकट पकड़े जाने पर जुर्माना कम से कम दस रुपया हो गया है, तब से कौन किराया और जुर्माना भर कर टी.टी.ई. से रसीद लेता है! बुद्धिमान यात्री सिर्फ किराया दे कर चुपचाप समझौता कर लेते हैं. जुर्माना न देने की आप की मजबूरी पर टी.टी.ई. को दया आ ही जाती है और वह भी किराया जेब में डाल कर रसीद काटने और एकएक पैसे का हिसाब कर के रकम रेलवे खजाने में जमा करने के झंझट से बच जाता है. आप भी प्रसन्न होते हैं, चलो सिर्फ किराया दे कर छुट्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मिली और टी.टी.ई. भी प्रभु को धन्यवाद देता है कि उसे अतिरिक्त आमदनी का मौका मिला. इस लेनदेन में दोनों को आत्मसंतोष रहता है. कई बार तो बेचारे टी.टी.ई. को यह किराया भी नहीं मिलता. सज्जनता के नाते कितने ही लोगों से केवल उन का अभिवादन स्वीकार कर के जाने देना पड़ता है. 'साहब, सलाम' या 'बाबू, नमस्ते' कह कर कितने ही बिना टिकट महानुभाव उस की कृपा के भागी बन जाते हैं. रेलवे कर्मचारियों के कितने ही इष्टमित्रों, परिचितों और संबंधियों को केवल अनुरोध मात्र पर वह बिना टिकट जाने देता है. फिर कुछ साधुसंत ही बिना टिकट चले गए तो क्या हुआ! उस जैसा सांसारिक जीव अकारण महात्माओं की अकृपा का भाजन क्यों बने? उसे साधुसंतों की कृपा और उन का आशीर्वाद पाने का इस से सरल और बढ़िया सुअवसर कहां मिलेगा? साधुसंतों के तीर्थाटन और धर्मकर्म में बाधा न डाल कर बिना एक पैसा खर्च किए वह उन की सेवा का पुण्य पा जाता है.

साधुसंतों में भी जो गद्दीधारी महंत हैं, किसी संस्था के संचालक हैं, योग और आध्यात्म के प्रचारक हैं, ज्योतिषी, कर्मकांडी, उपदेशक या कथावाचक हैं, वे वैभवशाली भी हैं. वे रेलगाड़ियों में टिकट ले कर उच्च श्रेणी में आरक्षित शयनयान में आराम से यात्रा करते हैं. उन के प्रेमी और भक्तगण सहर्ष अपने धन से उस की व्यवस्था कर देते हैं पर ऐसे पहुंचे हुए संपन्न महात्माओं की संख्या बहुत कम है. अधिकांश साधुसंत तो भगवान के नाम पर श्रद्धालु टी.टी.ई. और धार्मिक जनता के भरोसे बेखटके यात्रा करते हैं.

रेलवे प्रशासन कहता है, कि रेलगाड़ियां राष्ट्रीय संपत्ति हैं. उन की रक्षा करना हर भारतीय का कर्तव्य है. रेलवे सामग्रियों की चोरी करना, उन की तोड़फोड़ करना अवश्य राष्ट्र के हित में नहीं है. हर भारतवासी को उस के लिए सजग रहना चाहिए. जो रेलवे को नुकसान पहुंचाएं, उन्हें रोकना सब का कर्तव्य है. लेकिन विचारणीय बात यह है कि एक ट्रेन के चलने में जितना कोयलापानी, डीजल या बिजली खर्च होती है और ड्राइवर, गार्ड या उस से संबंधित रेलवे कर्मचारियों को जो वेतन दिया जाता है, वह तो खर्च होगा ही—चाहे उस ट्रेन में पांच सौ यात्री चलें या एक हजार. इसलिए दसबीस साधुमहात्माओं या चतुरसुजान व्यक्तियों के चलने से रेलवे के खर्च में कोई वृद्धि नहीं हो जाएगी. अगर वे न भी चलें तब भी रेलवे का खर्च उतना ही होगा. इसलिए रेलगाड़ियों पर बिना कुछ अतिरिक्त खर्च बढ़ाए उन का उपयोग करना अपराध नहीं माना जाना चाहिए.

इस पर आप कहेंगे कि कुछ आदमियों के चलने न चलने से रेलवे का खर्च घटताबढ़ता नहीं है, यह ठीक है, लेकिन बिना टिकट यात्रा करने से रेलवे की आमदनी तो कम हो जाएगी. पर सोचिए तो जरा, हम तो राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा की बात कर रहे थे और आप मुनाफाखोर पूंजीवादी व्यवस्था की बात करने लगे. पैसा रेलवे के खजाने में न जा कर समाज के किसी व्यक्ति के पास सुरक्षित रहा, इस में राष्ट्रीय क्षति कहां हुई? यदि आप रेलवे के ही लाभ और बचत की बात करते हैं तो हमारा कहना है कि बिना टिकट यात्रा करने वालों को पकड़ कर जुर्माना करने और किराया वसूल करने से रेलवे को प्रति वर्ष जितनी आमदनी होती है उस से कहीं अधिक टी.टी.ई., चेकिंग स्टाफ और रेलवे मजिस्ट्रेट के वेतन इत्यादि पर खर्च हो जाता है. बिना टिकट यात्रियों की धरपकड़ और उस से होने वाली आमदनी का प्रचार तो रेलवे करती है मगर उस पर होने वाले सरकारी खर्च के आंकड़े कभी नहीं बताती.

इस से अच्छा तो होगा कि रेलवे प्रशासन बिना टिकट यात्रा करने वालों

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पॉयज़ नहाने के तुरन्त बाद की ताज़गी को दिनभर बनाये रखती है

पॉयज़ सुगन्धित डियोड्रण्ट आपके सामीप्य को सदा सुहावना बनाती है। नहाने के बाद बगल में पॉयज़ इस्तेमाल कीजिए। आप दिनभर ज़िस्म को महकता और खुद को तरोताज़ा महसूस करेंगी। नये सुविधाजनक स्प्रे पॅक या रॉल-ऑन कन्टेनर में। पॉयज़ में घुली मोहक और मधुर महक आपके माहौल को मनोहर बनाये रखती है। पॉयज़ त्वचा को उत्तेजित नहीं करती और इससे कपड़ों पर दाग नहीं पड़ते। बस आप सुहावनी सुगन्ध की मनचाही बाहों में घिरी रहती हैं।

पॉयज़

रैलि ग्रुप का उत्पादन

ULKA-PD-8 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

You'll always look smart
Shapely & elegant
You feel Comfortable
and yet free
When you
SHAPE YOUR FIGURE...
With

BRASSIERS
Bridal Form
Regd.

Under-Garments

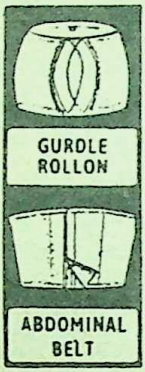

Made
From
Imported
Stretch
Fabric

Gurdle Panty
Bra sweeto
Stretch strap

FOR REDUCING
STOMACH & HIPS!
USEFUL AFTER
MATERNITY

Per Piece

GURD. Panty 35=90	GURD. ROLL. 33=90	ABD. BELT 29=00

V. P. P. Order executed.
Send your waist-
Measurement with order.

Mfrs. K. R. VITHAL
13-Kitchen Garden Lane, Bombay-2

Available at all leading stores

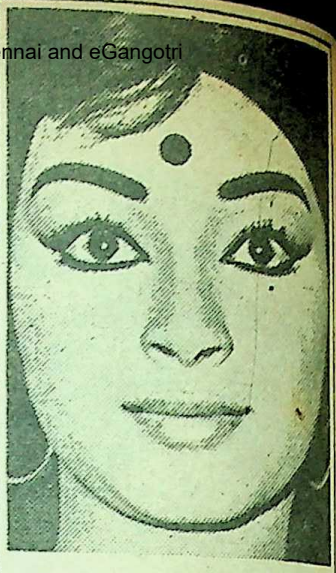

उसकी
सुन्दरता का
रहस्य हो
ऐटेक्स्
सौंदर्य प्रसाधन

तीस साल से ज़्यादा मशहूर
"ऐटेक्स्" श्रेष्ठ गुणों के लिए
विश्वसनीय

Aravind Laboratories
MADRAS-33
AL-1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

से किराया और जुर्माना वसूल करने का हर ट्रेन का सालाना ठेका दे दिया करे. ऐसा करने से अधिक आमदनी होगी और अलग से चेकिंग स्टाफ नहीं रखना पड़ेगा. टी.टी.ई. का काम ठेके पर करने के लिए बहुत से लोग तैयार हो जाएंगे.

इस देश में बिना टिकट यात्रा करने वालों में साधुसंतों के बाद छात्र समुदाय का दूसरा नंबर है. अन्य सज्जन थोड़ी संख्या में तीसरे नंबर पर आएंगे. छात्र हमारे देश के भावी कर्णधार हैं इसलिए अगर उन्हीं को देशहित का यह काम सौंप दिया जाए तो बड़ा अच्छा रहेगा. बिना टिकट यात्रा करने वालों को पकड़ कर उन से किराया और जुर्माना वसूल करने वाले छात्रों को मासिक 'पास' निःशुल्क दिया जाए और अधिक अच्छा कार्य करने पर नकद पारितोषिक देने की व्यवस्था भी हो. इस से छात्रों को पढ़ाईलिखाई के खर्च में सहायता मिलेगी और उन पर बिना टिकट यात्रा करने का आरोप भी नहीं लगेगा.

मगर ऐसे ठेकेदारों या छात्रों को भी साधुसंतों से छेड़छाड़ करने की मनाही होनी चाहिए, जिस से किसी की धार्मिक भावना को ठेस न पहुंचे.

इसी देश में एक ऐसे भी महात्मा हुए थे जिन्होंने कहा था कि यदि मैं रेलवे का उच्च अधिकारी हो जाऊं तो उस समय तक किसी ट्रेन को नहीं चलने दूंगा जब तक एक भी यात्री उस में बिना टिकट होगा. सचमुच वह दिन कितना अच्छा होगा जब हर भारतवासी टिकट ले कर ही ट्रेन में सफर करेगा. वह महात्मा तो खुद हमेशा टिकट ले कर तीसरी श्रेणी में यात्रा करते थे मगर उन के अहिंसात्मक ढंग से सर्वसाधारण का हृदय परिवर्तन करने में बहुत समय लगेगा. और उतनी देर तक ट्रेनों को रोक रखने से राष्ट्र का बहुत नुकसान होगा. इस के लिए ऐसा आंदोलन चलाया जाए कि यदि बिना टिकट सफर करने वाले, डाकुओं के समान आत्मसमर्पण कर दें, तो उन से जुर्माना नहीं लिया जाएगा, बल्कि उन का सम्मान किया जाएगा.

यदि यह सब संभव न हो तो यह अच्छा होगा कि बसों की तरह रेलगाड़ियों के हर डब्बे में एकएक टी.टी.ई. रखा जाए, जो यात्रियों के चढ़ते समय ही टिकट की जांच कर लिया करे और उन की सुविधा का ध्यान रखे. इस से अधिक संख्या में टी.टी.ई. रखे जाएंगे और देश में बेकारी की समस्या काफी हद तक दूर होगी तथा रेलगाड़ियों में बिना टिकट यात्रा बंद हो जाएगी. लेकिन ऐसी दशा में भारत साधुसमाज को प्रयास कर के अपने रजिस्टर्ड साधुओं को रेलवे यात्रा का निःशुल्क 'पास' सरकार से दिलवा देना होगा जिस से कि उन के तीर्थाटन और धर्मकर्म में बाधा न पड़े. ●

बच्चों के मुंख से

मेरी बहन का सात वर्षीय लड़का भोलू बहुत शैतान और हाजिरजवाब है. एक दिन हम लोग उन के घर में फिल्मों की बातें कर रहे थे. जीजाजी कहने लगे, "राज कपूर की पिछली दो पिक्चरें 'फ्लाप' हो गई थीं."

भोलू ने पूछा कि, "डैडी 'फ्लाप' माने क्या होता है?"

उन्होंने जल्दी में उसे टालने के लिए कह दिया, "जो फिल्म न चले उसे 'फ्लाप' कहते हैं."

दूसरे दिन अपनी बड़ी बहन के साथ वह मूंगफली खरीदने गया तो चबन्नी कुछ खराब थी, मूंगफली वाले ने 'नहीं चलेगी' कह कर लौटा दिया.

घर आते ही भोलू बोला, "पिताजी, हमारी चबन्नी 'फ्लाप' हो गई, दूसरी दीजिए."

उस की बात जब हमें समझ में आई तो हमारा हंसतेहंसते बुरा हाल हो गया.

—शारदा छाबड़ा, फरीदाबाद. ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

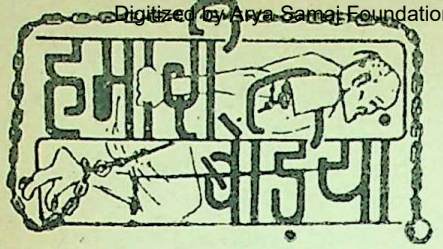

पिछले वर्ष अत्यधिक वर्षा से चावल की फसल में काफी मात्रा में माहो (कीड़ा) हो गया था. फसल में माहो हो जाने से पैदावार में कमी आ जाती है. मेरे कसबे से करीब डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर एक छोटा सा गांव है. वहां मेरी भी पांचछः एकड़ जमीन है. उस गांव में भी माहो ने अपना असर दिखाया. मैं ने ग्रामवासियों से पूछा कि माहो को भगाने के लिए कौन सी दवा छिड़कनी चाहिए, तो वे लोग कहने लगे, "माहो तो माता (देवी) का प्रकोप है. वह दवाई आदि से भागने वाला नहीं. उस के लिए तो माता के नाम से उपवास करना पड़ेगा. खेतों में जा कर होम देना पड़ेगा तथा नीम की डाली से जल का छिड़काव करना पड़ेगा."

मैं ने उन्हें समझाया कि उपवास आदि से कुछ नहीं होता, बल्कि उस के लिए तो कृषि अधिकारी से सलाह लेनी चाहिए.

पर उन्होंने मेरी एक न मानी और अधिकांश लोगों ने उपवास कर लिया. करीब 10 दिन के बाद मैं ने उस का परिणाम पूछा तो वे लोग कहने लगे कि उस से कोई लाभ नहीं हुआ और अब कोई दवा भी काम नहीं आ सकती क्योंकि तब तक बालें निकल चुकी थीं.

—वीरेंद्रकुमार जैन, अकलतरा

✦

हमारे घर एक मुसलिम महरी काम करती थी. एक दिन उस की नन्हीं सी लड़की को तीव्र ज्वर हो गया. वह उसे एक बाबा के पास ले गई. बाबा ने कहा कि इस के शरीर में कोई रूह प्रवेश कर गई है. उस ने बताया कि खौलते हुए कड़वे तेल में इस के दाएं हाथ की पहली उंगली डाल दो, रूह निकल कर भाग जाएगी.

एक पतीले में कड़वा तेल खौलाया गया. नन्हीं बच्ची की उंगली पकड़ कर उस की मां ने बड़ी बेरहमी से उबलते हुए तेल में डाल दी. बच्ची के मुख से अत्यंत भयानक चीखें निकलीं. बाबा ने कहा, "चिंता की कोई बात नहीं है, बुरी रूह शरीर छोड़ते समय शोक प्रकट कर रही है."

थोड़ी देर में उस की वह उंगली गल कर तेल में गिर गई. अब वह लड़की दाएं हाथ की पहली उंगली न होने की वजह से कोई कार्य पूरी कुशलता से नहीं कर सकती.

—कृष्ण धींगड़ा, लखनऊ

✦

उस दिन मैं गांव के चौक वाले मंदिर के चबूतरे पर बैठा था. तभी गंदे से कपड़े पहने, दाढ़ी बढ़ाए एक 20 वर्षीय युवक आया और बोला, "आज तो रोटी नहीं मिली, रोटी दिलाओ, सुबह से भूखा हूं."

वह युवक अच्छे खातेपीते परिवार से संबंधित था. परिवार की 100 बीघे जमीन भी थी सो मैं ने उस से कहा, "भाई, तुम अपने घर क्यों नहीं रहते और काम क्यों नहीं करते?"

उस ने जवाब दिया, "मुझे घर वाले रखते ही नहीं."

खेत में काम करवाने के लिए मुझे मजदूर की आवश्यकता थी. अतः मैं ने कहा, "चलो, मेरे घर, मैं तुम्हें रोटी और तीन रुपए दूंगा, काम करो. क्यों, ठीक है न?"

"यदि काम ही करना होता तो मेरे घर ही 100 बीघा जमीन है. घर पर ही नहीं रहता! आप को रोटी दिलानी है तो दिला दीजिए, नहीं तो रहने दीजिए," उपेक्षा व कटुता के साथ कह कर वह दूसरी ओर चलता बना.

—शिवकुमार सुनार, खेतड़ीनगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाद, एक्ज़ीमा जैसे चकत्तों, खार्नों और फुंसियों से आराम पाने के लिए...

इस्तेमाल कीजिये

निक्सोडर्म

निक्सोडर्म एक वैज्ञानिक मरहम है जो त्वचा में अन्दर तक असर करता है और सम्पर्क होते ही कीटाणुओं का नाश करता है। निक्सोडर्म थोड़े ही समय में त्वचा की प्राकृतिक रंगत वापस लाता है।

२ साइज़ों में मिलता है।

JAISONS-316 Hin.

और तकलीफ़ न उठाइये, आज ही निक्सोडर्म लगाइये।

रेशम-से मुलायम, सघन काले बालों के लिये

केएमपी

नारियल तेल
व्यवहार कीजिये

२२५ ग्राम, ४५० ग्राम और ६०० ग्राम के मुहरबंद डिब्बों में मिलता है।

देखिये कि यह शुद्ध है
—देखिये कि यह केएमपी है

कालूराम महादेव प्रसाद

प्रधान कार्यालय : कलकत्ता, शाखायें : गौहाटी, कटक, रायपुर, पटना, नई दिल्ली, कोचीन।

KMP/C/189

भोजन में विशिष्ट स्वाद और अतिरिक्त पौष्टिकता लाने के लिये लीजिये केएमपी तिल तेल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़्यादा चाय गाढ़ी चाय

जवाब है—

रिचब्रु चाय

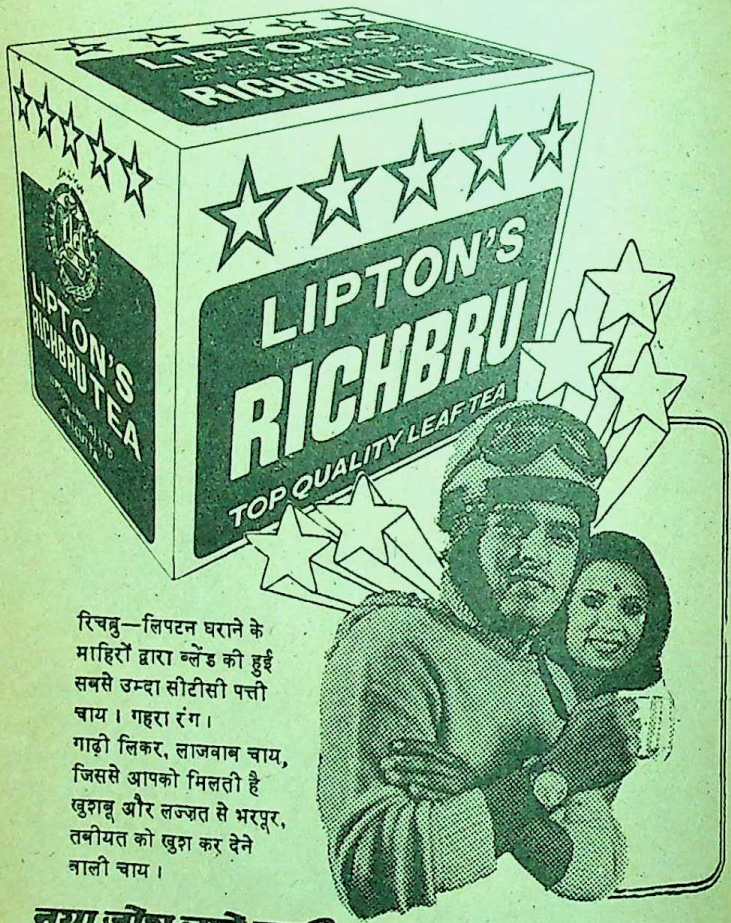

रिचब्रु—लिपटन घराने के माहिरों द्वारा ब्लेंड की हुई सबसे उम्दा सीटीसी पत्ती चाय। गहरा रंग।
गाढ़ी लिकर, लाजवाब चाय, जिससे आपको मिलती है खुशबू और लज्ज़त से भरपूर, तबीयत को खुश कर देने वाली चाय।

नया जोश लाने वाली

लिपटन की रिचब्रु

उम्दा तेज़ और ऊँचे दर्ज़े की चाय

सिर्फ़ पैकेट की चाय ही रहती है तरोताज़ा और खुशबू से भरपूर।

LRC-15/74 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

• रामस्नेही सिंह

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागवत के अविश्वसनीय प्रसंग

आलोचनाओं व आपत्तियों का उत्तर

दिसंबर 1973 के द्वितीय अंक में प्रकाशित मेरे लेख 'भागवत के अविश्वसनीय प्रसंग' के संबंध में 'सरिता' के कुछ पाठकों की प्रतिक्रियाएं हुई हैं और उन्होंने पत्रों द्वारा अपने विचार एवं आपत्तियां भेजी हैं. लेखक का कर्तव्य है कि वह पाठकों की आलोचनाओं व आपत्तियों का उत्तर दे ताकि उन में फैले भ्रमों का निवारण हो जाए.

जितने भी पाठकों ने आपत्तियां भेजी हैं, उन में से लगभग सभी ने यह लिखा है कि भागवत पुराण आज से हजारों साल पहले की रचना है और उस में उस युग की सामाजिक, राजनीतिक एवं वैज्ञानिक उन्नति का इतिहास है, काल्पनिक उड़ानें नहीं हैं और उस में वर्णित बातें आज के विज्ञान से मेल खाती हैं.

इस आपत्ति के विषय में मुझे यही कहना है कि भागवत पुराण हजारों साल पहले की रचना नहीं है. स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थप्रकाश' के ग्यारहवें समुल्लास में 'हिमाद्रि' नामक ग्रंथ के प्रमाण के आधार पर बोपदेव को भागवत का लेखक घोषित किया है. बोपदेव और 'गीतगोविंद' के रचयिता जयदेव कवि ग्यारहवीं शताब्दी के शुरू में हुए थे. इतिहासकारों द्वारा वर्णित और उस समय की सामाजिक, राजनीतिक एवं वैज्ञानिक उन्नति के इतिहास के आधार पर हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि भागवतकार की बातें काल्पनिक उड़ानें मात्र हैं. पाठकों का यह कहना कि पुराण की हर बात आज के विज्ञान से मेल खाती है, सर्वथा गलत है. भागवतकार लिखते हैं :

"सूर्य की किरणों से एक लाख योजन (तीन लाख मील) ऊपर चंद्रमा है (8), चंद्रमा से तीन लाख योजन ऊपर अभिजित सहित 28 नक्षत्र हैं (11), इन से दो लाख योजन ऊपर शुक्र दिखाई देता है (12), शुक्र से दो लाख योजन ऊपर बुध है (13), इस से भी दो लाख योजन ऊपर मंगल है (14), इस से ऊपर दो लाख योजन की दूरी पर बृहस्पति है (15), बृहस्पति से दो लाख योजन ऊपर शनिश्चर दिखाई देता है (16), इन के बाद 11 लाख योजन ऊपर कश्यपादि सप्तर्षि दिखाई देते हैं (17) (भागवत स्कंध 5, अध्याय 22).

पाठक भागवत के उपर्युक्त खगोल विज्ञान संबंधी बातों पर विचार करें कि क्या वे सत्य हैं? क्या वे आज की खगोल-विज्ञान संबंधी खोजों से मेल खाती हैं? यह कितनी गलत बात है कि पृथ्वी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के नजदीक सूर्य है और इस से दो लाख योजन ऊपर चंद्रमा है. आज जो ग्रहों की खोज की गई है, उस के अनुसार पृथ्वी से सूर्य की दूरी 9 करोड़, 30 लाख मील है और चंद्रमा पृथ्वी से 2 लाख, 50 हजार मील दूर है. चंद्रमा को सूर्य से दूर बताना भागवतकार की कितनी बड़ी अज्ञानता है. इस पर तो थोड़ा भी पढ़ालिखा व्यक्ति विश्वास नहीं करेगा. आज की खोज के अनुसार सूर्य से विभिन्न ग्रहों की दूरियां निम्न प्रकार हैं :

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुध	3	करोड़	60	लाख मील
शुक्र	6	,,	70	,,
पृथ्वी	9	,,	30	,,
मंगल	14	,,	20	,,
वृहस्पति	48	,,	30	,,
शनि	88	,,	70	,,
अरुण	178	,,	50	,,
वरुण	279	,,	70	,,
प्लेटो	367	,,	50	,,

पाठक अब तुलना कर के देख लें कि भागवतकार ने जो ग्रहों की दूरी बताई है, वह सही है या गलत.

इसी तरह भागवत के स्कंध 5, अध्याय 16, श्लोक 7 में बताया गया है कि स्वर्ण का मेरु पर्वत (हिमालय पर्वत) एक लाख योजन (तीन लाख मील) ऊंचा है. क्या यह भंग की तरंग में लिखी गई बात नहीं है? आज की खोज के अनुसार तो हिमालय पर्वत की ऊंचाई लगभग 29 हजार फुट है. अब पाठक खुद विचार करें कि भागवतकार की यह बात आज की खोज से मेल खाती है या नहीं.

जीने का आधार?

एक पाठक लिखते हैं कि हमारे इतिहास को ही गलत साबित कर दिया जाएगा तो हमारे पास जीने के लिए एवं देश की उन्नति करने के लिए बचेगा ही क्या.

इस के उत्तर में मुझे यही कहना है कि मैं ने अपने लेख में इतिहास को न गलतसाबित किया है और न गलत साबित करने का प्रयास ही किया है प्रत्युत पुराणों में वर्णित अविश्वसनीय प्रसंगों की समालोचना मात्र की है. दूसरी बात, अगर कोई इतिहास गलत हो तो उसे साबित करने में किसी तरह की हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए. हम भारतीयों की यह पुरानी आदत है कि जब भी कोई देश किसी नई चीज की खोज या नया आविष्कार करता है तो हम कहने लगते हैं कि यह बात हमारे अमुक ग्रंथ में लिखी हुई है. हाथी बिक गया, हथसार टूट गया और हम रस्सा लिए घूम रहे हैं कि कभी हमारे पास भी हाथी था. अब क्या है, सो नहीं देखते हैं. हमारे ग्रंथों में सब चीजों की जानकारी दी गई है मगर हम लोग आविष्कार नहीं कर पाते हैं और जिन के ग्रंथों में कुछ नहीं लिखा हुआ है, वे आविष्कार करते हैं. इस से तो यही साबित होता है कि हम में झूठा अहंकार है.

बेकार की डींग

जब अमरीका ने 1969 में चांद पर अपोलो-11 भेजा तो कुछ भारतीयों ने यही कहना आरंभ कर दिया था कि चांद पर जाना कोई नई बात नहीं है; हमारे शास्त्रों में लिखा है कि नारदजी चौदहों भुवनों की यात्रा विमान द्वारा करते थे. इस तरह की बातों से प्रशंसा के बदले उपहास ही होता है. 'एकां लज्जां परित्यज्य सर्वत्र विजयी भवेत' (एक लज्जा को छोड़ कर सर्वत्र विजयी हो जाओ) यह उक्ति ऐसे ही लोगों पर चरितार्थ होती है.

मैं ने अपने लेख में लिखा था कि राजा प्रियव्रत ने रात को दिन बनाने के संकल्प से अपने ज्योतिर्मय रथ को आकाश में सूर्य के पीछेपीछे घुमाया तो रथ की लीक से धरती पर समुद्र कैसे बन गया क्योंकि रथ तो आकाश में घूमा था. इस पर एक पाठक लिखते हैं कि इस में आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है, क्योंकि आज अमरीका आदि देश अपने यान चांद, मंगल, शुक्र आदि ग्रहों पर भेज रहे हैं और बाद में उन का लक्ष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमदर्द का ज़ुलामला

सिर धोने का पाउडर

अद्वितीय शैम्पू पाउडर जो बालों को धोता ही नहीं बल्कि प्राकृतिक तेल पदार्थों का मिश्रण होने के कारण बालों का पोषण भी करता है।

साबुन और कैमिकल शैम्पू से आप के बालों को कोई आहार नहीं मिलता बल्कि इस से बालों की जड़ों को क्षति पहुँचती है। जुलामला में मिली हुई जड़ी-बूटियां आप के बालों को प्राकृतिक तेल पदार्थ उपलब्ध करती हैं और बालों के बढ़ने में सहायता करती है। जुलामला आपके सिर की खुश्की को दूर करता है, बालों को गिरने से रोकता है। और समय के पूर्व बालों को सफ़ेद होने से बचाता है।

ज़ुलामला
सिर धोने का पाउडर

HD-3300-HR

हमदर्द

स्वस्थ और मुलायम बालों के लिये हमदर्द हेयर आयल प्रयोग कीजिये, जो बालों को प्राकृतिक आहार उपलब्ध करता है और उनकी जड़ों को दृढ़ बनाता है।

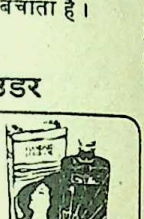

हर घर के लिए आवश्यक

झंडु की विशेष रूप से निर्मित

पारद गोलियां

(पारे से तैयार)

प्रयोग करें और अपनी खाद्य सामग्री, अन्न, आटा, मसाले, मेवे आदि को कीड़ों से सुरक्षित रखें.

थोक तथा खुदरा व्यापारियों के लिए वरदान

झंडु
फार्मस्युटिकल वर्क्स लि.
बंबई-400025

सभी जगह प्राप्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सूर्य भी हो सकता है. एक पाठक लिखते हैं कि हो सकता है कि तब आजकल के हेलीकाप्टर जैसा कोई धाम रहा हो.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं इस बात से इनकार नहीं करता हूं कि रात को दिन बनाने के संकल्प से राजा प्रियव्रत ने अपना रथ सूर्य के पीछे-पीछे घुमाया होगा. इस बात को भी मैं मानता हूं कि तब हेलीकाप्टर भी रहा होगा. लेकिन मैं ने तो आश्चर्य इस बात पर प्रकट किया था कि रथ घूमा आकाश में और समुद्र बन गया उस की लीक से धरती पर. वह रथ कितना बड़ा था जिस का पहिया धरती पर था और वह घूम रहा था सूर्य (9 करोड़ 30 लाख मील दूर) के पीछेपीछे. क्या यह आश्चर्य करने की बात नहीं है? सब से बड़ा आश्चर्य तो यह है कि लीक से समुद्र बन गया. इस बात पर कोई वैज्ञानिक विश्वास नहीं करेगा. अगर लीक से समुद्र बनता तो उस की लंबाई, चौड़ाई एवं गहराई समान होती, लेकिन बात ऐसी नहीं है अतः पाठक निश्चित समझें कि लीक से समुद्र बनना भागवतकार की दूसरी गप्प है.

"पंडितजी, अब आप ही मूर्ख जनता को समझाइए कि हमारे शास्त्रों के अनुसार धनदौलत मिट्टी के समान होती है. इसलिए मेरा लाखों रुपए जमा करना कोई महत्त्व नहीं रखता."

कितने विश्वसनीय?

भागवत में अनेक ऐसे प्रसंग हैं जिन पर कोई भी सही दिमाग का आदमी विश्वास नहीं करेगा. कुछ प्रसंगों का नाम नीचे दे रहा हूं :

सातों समुद्रों में विभिन्न पेय पदार्थ (स्कं. 5, अ. 1, श्लोक 33), शिव के वीर्य से सोनेचांदी की उत्पत्ति (स्कं. 8, अ. 12, श्लोक 32-33), ब्रह्मा के मुख से चारों वेदों की उत्पत्ति (स्कं. 3, अ. 12 श्लोक 34), जांघ से असुरों की उत्पत्ति (स्कं. 3, अ. 20, श्लोक 23), नाक से सूअर की उत्पत्ति (स्कं. 3, अ. 13, श्लोक 18-19), बाल से सर्प की उत्पत्ति (स्कं. 3, अ. 20, श्लोक 47-48), मृत पुरुष के शरीर से बच्चे की उत्पत्ति (स्कं. 4, अ. अ. 14, श्लोक 43-45), बुढ़ापा और जवानी की अदलाबदली (स्कं. 9, अ. 18), ग्यारह सौ योजन ऊंचा पेड़ (स्कं. 5, अ. 16, श्लोक 12), उग्रसेन के एक नील सैनिक (स्कं. 10, अ. 90, श्लोक 42), पृथ्वी से सूर्य निकट और चंद्रमा दूर (स्कं. 5, अ. 22), गर्भाशय के अंदर से बालक का बोलना (स्कं. 9, अ. 20, श्लोक 36), शंकर की अरबों-खरबों नारी सेविकाएं (5.17.16.), दिति का 100 वर्ष तक गर्भ धारण किए रहना (3.15.1), औरतों के गर्भ से जड़जंगम सृष्टि (6.6.26-29), हिरनी के गर्भ से श्रृंग ऋषि का जन्म (11.8.18) आदि बातों पर कोई बुद्धिमान विश्वास नहीं करेगा.

उपर्युक्त प्रमाणों से पाठक निश्चित रूप से समझ गए होंगे कि भागवत किसी गपोड़ी ने भांग के नशे में लिख डाला है, जिस पर कोई भी सही दिमाग का आदमी विश्वास नहीं कर सकता. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाँत पर
लगाएं
और चुस्ती का
अनुभव करें

इप्को®
तंबाकुकी
पेस्ट

NAVNIT-102

BONNE®
FEEDERS
NIPPLES
SOOTHERS
HYGIENICALLY MADE
KEEPS BABY HAPPY

BONNY PRODUCTS
FACTORY
12 B, INDUSTRIAL AREA,
BAHADURGARH (HARYANA)
PHONE 378
HEAD OFFICE
5463, GANDHI MARKET
SADAR BAZAR, DELHI-6
PHONE 229718

दांतो को स्वस्थ व सुंदर बनाने के लिए

स्टार®
टुथ पाउडर

वितरक : हंसराज एण्ड कं.
240 पोस्ट आफिस स्ट्रीट, सदर बाजार, दिल्ली-6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भटकने लग गया मन...

फिर भटकने लग गया मन देह की अमराइयों में.

प्यार का कोई निमंत्रण दे रहा फिर से सुनाई,
मौन मरुथल में किसी ने सरस मधुधारा बहाई.
फिर किसी के वक्ष की परछाइयां तक कसमसाईं,
फिर किसी की दृष्टि के आकाश ने बिजली गिराई.
फिर भटकने सा लगा मन देह की अमराइयों में.

जिंदगी को जी सकूं फिर मिल गया कोई बहाना,
स्वप्न का संसार फिर से आ गया मुझ को सजाना.
भीड़ का मेरा अकेलापन न जाने खो गया कब,
फिर नए से अर्थ ले भाने लगा मुझ को जमाना.
फिर बहकने सा लगा मन गूंजती शहनाइयों में.

फिर मुझे फैला हुआ आंचल किसी का घेरता सा,
फिर मुझे हंसता हुआ आंगन किसी का हेरता सा.
लग रहा थम सी गई है आज मन की प्यास मेरी,
बालपन, यौवन कहीं से लौट आया टेरता सा.
फिर अटकने सा लगा मन गेह की पहुनाइयों में.

—कृष्णकांत खंडेलवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बराती खाना खा चुके थे और झुंड बना कर पंडाल से बाहर निकल कर आंगन में एकत्र हो रहे थे. कुछ नवयुवक फिल्म देखने चले गए थे. बड़ेबूढ़े, जिन्हें विवाह संपन्न कराना था, आंगन में बिछी खाटों पर सुस्ताने लगे थे. समीप ही वेदी बनी हुई थी. डेढ़ बजे से चार बजे का समय फेरों के लिए निश्चित था.

घर के मुख्य द्वार पर रंगबिरंगे बल्बों की लड़ियां जलबुझ रही थीं. 'स्वागतम' का बोर्ड कभी लाल और कभी नीला प्रकाश फेंक रहा था. लाउड स्पीकर पूरे वेग के साथ आधुनिक गीतों की लय में गूंज रहा था.

घर के सभी प्राणी, लड़की के पक्ष वाले, पल भर को भी कहीं नहीं टिक रहे थे. हरेक को उस का कार्यभार सौंपा गया था. सब अपनाअपना फर्ज निभाने में लगे थे.

चेतना खाट पर पड़ी अपने साढ़े तीन वर्षीय पुत्र चीकू को थपकियां दे कर सुलाने का प्रयत्न कर रही थी. लेकिन चीकू था कि वहां की गहमागहमी में खेलना चाहता था. दो बार वह खेलताकूदता घर से बाहर निकल गया था. चेतना का ममेरा भाई महेश उसे पकड़ लाया था वरना अपरिचित स्थान पर नासमझ चीकू शहर की गलियों में भटक जाता. चेतना इसी लिए चीकू को सुलाने का प्रयत्न कर रही थी.

"ए, चेतना!" एकाएक समीप आता स्वर चेतना के कान में पड़ा. लेटे ही लेटे उस ने गरदन उठा कर देखा कि एक युवती लहराती हुई उस के समीप आ खड़ी हुई थी. वह उस पर थोड़ा झुकती हुई, उस का कंधा पकड़ कर बोली, "चेतना!"

चेतना ने देखा, सामने उस की सखी शिप्रा खड़ी थी. वह उठ बैठी. शिप्रा उस के समीप ही खाट की पाटी पर बैठ गई, "तू यहां, चेतना?"

"और तू यहां?" वह थोड़ी पुलकित हो उठी.

"मैं तो विवाह के बाद यहां आ गई हूं," शिप्रा बोली. "मेरे पति यहीं नौकरी करते हैं. पर, तू?"

"मैं बरात के साथ आई हूं," चेतना ने बताया. "दूल्हा मेरी मौसी का लड़का है. मुझे विश्वास नहीं था कि हम कभी मिल पाएंगी. तू तो मुझे भूल ही गई शिप्रा! विवाह पर बुलाया तक नहीं," चेतना का स्वर कुछ गंभीर हो गया. "खैर, तू क्या लड़की वालों की तरफ से है?"

"हां, अचला मेरी उतनी ही प्रिय सखी है जितनी कि तू," शिप्रा ने कहा और वह अपलक चीकू को देखने लगी जो सिर उठा कर देख रहा था. वह एकाएक कहीं रुक गई. उस का मुखड़ा गंभीर हो गया. वह हाथ बढ़ा कर चीकू के सिर पर फेरने लगी, "चेतना, जीजाजी की हत्या के बाद तू आज मिली है. तीन वर्ष तू ने बड़े संघर्ष में काटे होंगे."

चेतना की आंखें सजल हो गईं. बोली, "शिप्रा, उन की हत्या के बाद से

कहानी • अशोकदत्त 'सुमन'

सुलह

चेतना की नजरों में योगेश उस के पति का खूनी था, लेकिन योगेश अपनेआप को निर्दोष समझता था... और एक दिन दोनों के बीच गलतफहमी की जो दीवार थी वह ढह गई...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन छिन्नभिन्न हो गया है.

"और हत्यारा?"

"न्याय रक्षकों ने उसे हत्या न कह कर दुर्घटना मात्र बताया," चेतना ने आंसू पोंछते हुए कहा. "वह अदालत से बच निकला. पर मैं उसे कभी भी क्षमा न कर सकूंगी. मेरी आहें उसे नष्ट कर देंगी, शिप्रा!"

खामोशी का एक लंबा अंतराल फैल गया.

इसी समय शिप्रा के पति वहां आ पहुंचे, परिचय हुआ. थोड़ी देर ठहर कर वह काम की व्यस्तता बता कर अंदर चले गए. फिर दोनों अकेली रह गईं. शिप्रा ने पुनः अरविंद की चर्चा छेड़ी तो चेतना चीकू को थपकियां देते हुए बोली, "शिप्रा, खुशी के अवसर पर क्यों उन के बारे में बातें चला कर मूड खराब करना चाहती हो? चलो, दुलहन के पास चल कर बैठें."

चीकू को नींद आ गई तो चेतना ने गहरा निश्वास छोड़ा. दोनों सखियां हाथ पकड़ दुलहन के कमरे की तरफ चल पड़ीं. दो कमरे लांघ कर जब वे दुलहन के कमरे में प्रवेश करने को थीं कि चेतना के कदम गतिहीन हो गए. शिप्रा ने देखा, वह एकटक काम में व्यस्त जोगेश को देख रही थी. उस की बगल में कुहनी मारती हुई बोली, "चल, यहां दहेज सजाया जा रहा है. बाद में देख लेना."

"वह सिगरेट पीता व्यक्ति कौन है?"

"जोगेश है, अचला का भाई."

"जो...गे...श..." चेतना का चेहरा विकृत हो उठा. भौचक्की सी प्रस्तर प्रतिमा बनी वह उसे देखने लगी. सनसनाती हुई एक पुरानी घटना उस के जेहन पर तड़पने लगी.

"क्यों, क्या बात है, चेतना?"

उपेक्षित दृष्टि जोगेश पर जमाए नितांत शुष्कता से वह बोली, "हत्यारा... शिप्रा, मेरे पति का हत्यारा तुम्हारी सखी का भाई है."

"चेतना, कहीं कोई गलती हो गई

'चेतना!" आवाज सुन कर चेतना ने पीछे मुड़ कर देखा तो उस की सखी शिप्रा खड़ी थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

है तुम से, पहचानने में."

"नहीं, शिप्रा! मैं अपने पति के हत्यारे को नहीं भूल सकती," वह दोगुने वेग से बोली. उस की पुतलियों के सामने वह घटना कौंध गई. स्मृतियों का तेज बवंडर उस के इर्दगिर्द फैल गया. अपने पति की हत्या का बदला चुकाने का यही सुअवसर था.

"मैं अपने भैया का विवाह अपने पति के हत्यारे की बहन से कभी नहीं होने दूंगी," दृढ़ निश्चय के साथ चेतना के कदम वापस मुड़ पड़े.

उधर शिप्रा का चेहरा गंभीर और चिंताकुल दिख रहा था. उस ने लपक कर उसे रोका तो वह ठिठकी, "नहीं, शिप्रा! आज मेरे मन को शांति मिलेगी. मैं इसी समय बरात वापस ..."

"मगर, चेतना! यह जो तुम करने जा रही हो, क्या यह अक्लमंदी का काम है? बरात वापस ले जा कर तुम अचला का जीवन नष्ट कर दोगी. जोगेश के अपराध की सजा तुम निरपराध अचला को क्यों देना चाहती हो?"

चेतना एकटक शिप्रा की आंखों में देखने लगी, "नहीं, शिप्रा! ऐसी बातें कर के मुझे भावनाओं के जाल में मत फंसाओ. मेरा घर उजाड़ा गया है, भरी बहार में मैं विधवा बनाई गई हूं."

"मानती हूं, पर, चेतना, अचला का घर उजाड़ कर तुम अपना घर बसा सकोगी?" शिप्रा ने उस का हाथ पकड़ लिया. "तुम तो औरत हो. तुम जानती हो, हमारे देश में तिरस्कृत औरत को कैसेकैसे ताने और घुड़कियां सुननी होती हैं. चेतना, घर आई बरात लौट जाए तो क्या फिर वह लड़की सम्मानपूर्वक जी सकती है? तब व्यर्थ ही कई बातें जन्म लेती हैं. अचला का जीवन उजाड़ दोगी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो तुम्हें हासिल क्या होगा? ठंडे दिमाग से सोचो और...

चेतना मन में अंतर्द्वंद्व और आंखों में वितृष्णा लिए जोगेश की ओर देखने लगी थी जो बड़े ही चाव और उत्साह से अचला का दहेज सलीके से सजा रहा था. अचला का काल्पनिक रूप उस के जेहन पर उभरता और मिट जाता. शिप्रा के शब्दों ने उसे कुछ सोचने पर विवश कर दिया था.

क्रोध, घृणा, प्रतिशोध और कर्तव्य के कंचुए उस के मन की गीली मिट्टी पर रेंगने लगे. तीन वर्ष के अंतराल की मनहूस यातनाएं, समस्त पीड़ाएं एकबारगी उभर आईं.

अरविंद को बच्चे की बहुत चाह थी. उस ने, अभी विवाह हुए एक वर्ष भी नहीं व्यतीत हुआ था, चेतना को मां बना दिया था.

अरविंद को शिकार का भी शौक था. दिल्ली के आसपास कोई ऐसा जंगल तो था नहीं जहां वह शेर आदि का शिकार करता, पर वह राइफल कंधे पर टांगे स्कूटर पर सवार हो अवकाश के दिन कहीं शिकार की तलाश में निकल जाता था. जब वह सांझ को लौटता तो तीतर या जंगली खरगोश मार कर ले आता.

चेतना की ससुराल लुधियाना में थी. वृद्ध सास थी, पर श्वसुर नहीं थे. दोनों ननदें विवाहित थीं. अरविंद का छोटा भाई सुरेंद्र बी. ए. का छात्र था. छुट्टियों में वह कभीकभार दिल्ली आ जाता था.

अरविंद के चाचा अमरीका जा बसे थे. वहीं उन्होंने एक गोरी स्त्री से विवाह कर लिया था. वह अरविंद के शौक से परिचित थे. उन्होंने उस के जन्मदिवस पर वहां से एक रिवाल्वर भेजा था

जोगेश अभी उलटपुलट कर रिवाल्वर को देख ही रहा था कि अचानक धमाका हुआ और अरविंद की चीख निकल गई ..

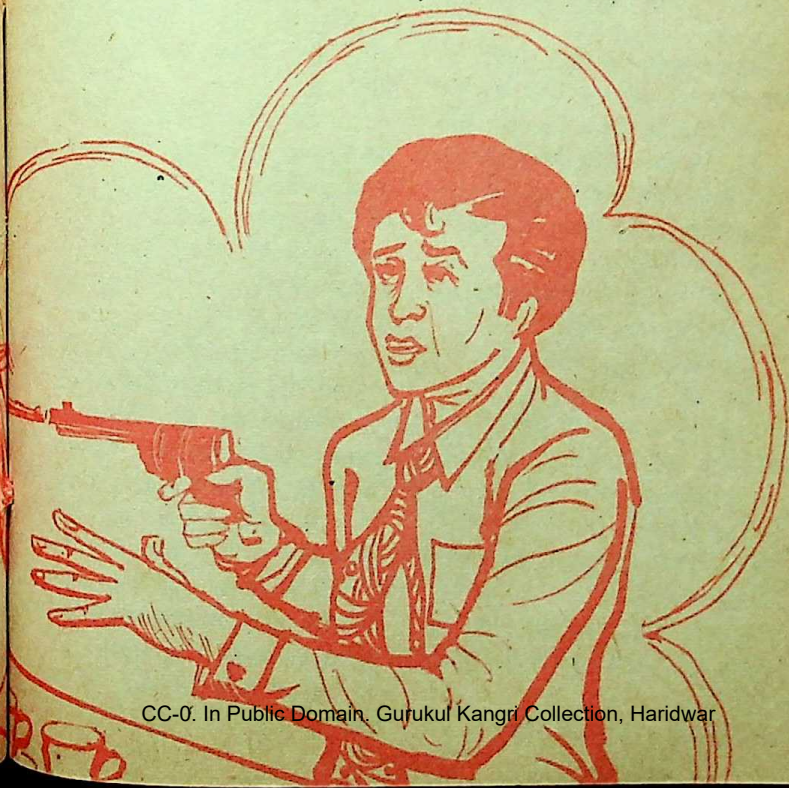

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन बीत चुकने पर वह अभी तक नहीं पहुंचा था और वह बेसब्री से उस की प्रतीक्षा कर रहा था.

जोगेश अरविंद का अभिन्न मित्र था. विवाह से पूर्व दोनों एक साथ ही रहते थे. चेतना के आ जाने पर जोगेश ने अलग मकान ले लिया था. पर दोनों की मित्रता में कोई अंतर नहीं पड़ा था. कभीकभी जोगेश भी शिकार में उस का साथ देता था लेकिन शिकार में उस की दिलचस्पी नहीं थी.

उस दिन सायंकाल चीकू को गोद में लिए चेतना पति की व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रही थी. चाचाजी का भेजा रिवाल्वर आ गया था. उस ने कस्टम का बिल चुका कर पार्सल छुड़ा लिया था.

जोगेश को साथ लिए दफ्तर से जब लौटा तो अरविंद व्यग्रता से पार्सल खोलने लगा और जोगेश किलकता सा मुंह से सीटी बजाने लगा था. चेतना तब तक चाय बनाने के लिए रसोईघर में चली गई थी.

चेतना जब चाय ले कर लौटी तो अरविंद रिवाल्वर को हाथ में ले कर देख रहा था और जोगेश उस के पास बैठा था. चाय देख कर उस ने रिवाल्वर मेज पर रख दिया. मनचाही वस्तु पा कर वह बेहद प्रसन्न प्रतीत होता था. जोगेश ने अभी तक रिवाल्वर को हाथ नहीं लगाया था, पर उस की भी इच्छा थी कि वह उसे परख कर देखे.

"यह कितने का होगा, अरविंद?"

"कम से कम छः हजार का," अरविंद ने कहा. "जरा इसे उठा कर तो देखो," और उस ने गर्व से रिवाल्वर उठा कर जोगेश की ओर बढ़ा दिया.

जोगेश उसे हाथ में ले कर परखने लगा तो अरविंद उसे उस के प्रयोग करने के ढंग बताने लगा.

जोगेश ने कहा, "अरविंद, तुम तो यों समझा रहे हो जैसे मुझे कोई शिकार करना है."

"फिर भी, जोग, समझ लेने में क्या हर्ज है? कभी अपनी हिफाजत ही करनी पड़ जाती है." ट्रिगर की ओर संकेत करते हुए अरविंद बोला, "यह ट्रिगर है. इसे दबाने से गोली चल जाती है."

अब जोगेश की उंगली ट्रिगर पर जमी थी. अरविंद बोला, "दबा कर देखो ट्रिगर को."

जोगेश ने मुसकराते हुए चेतना की ओर देखा जो पास ही चीकू को गोद में लिए खड़ी थी. वह मुसकरा दी, "जोगेश, तुम तो रिवाल्वर हाथ में लेते भी डरते हो. मैं तो इसे चलाना भी सीखूंगी."

"नहीं, भाभी! मैं जीवहत्या के पक्ष में नहीं," वह ट्रिगर की ओर देखते हुए बोला. "वैसे चाचाजी ने बहुत सुंदर रिवाल्वर भेजा है."

उस ने ट्रिगर पर उंगली का दबाव बढ़ा दिया.

एकाएक धमाका हुआ. चीकू हड़बड़ा कर जाग गया. चेतना के चेहरे का रंग फीका पड़ गया और वातावरण अरविंद की चीख से गूंज उठा. जोगेश के हाथ कांपे और रिवाल्वर छिटक कर नीचे गिर पड़ा.

अरविंद के सीने से रक्त की धारा बह निकली. वह दोनों हाथ सीने तक ले जा कर चीखा, "ओह, जोग! तुम ने यह क्या किया?" उस के दोनों हाथ लटक गए. कुरसी पर बैठेबैठे उस का सिर बाईं ओर लुढ़क गया और स्थिर पुतलियां चेतना पर जम गईं.

चेतना पति का निर्जीव शरीर देख कर चीखती हुई बाहर निकल गई.

पुलिस आई तो जोगेश पत्थर सा बना कुरसी पर बैठा था. पड़ोसनें रोती-चिल्लाती चेतना को सहारा दे रही थीं.

पुलिस ने अरविंद का मृत शरीर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया, रिवाल्वर व अन्य आवश्यक चीजें अपने कब्जे में ले लीं और जोगेश एकटक चेतना को देखता पुलिस की गाड़ी में जा बैठा.

जोगेश को अदालत ने बरी कर दिया. उस ने करार दिया कि अरविंद की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवानी के साथ-साथ दर्द और तकलीफ़ की परेशानी भी आती है

तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन आपके आड़े समय काम आती है

आप अपने कॉलेज का कोई भी उत्सव छोड़ना नहीं चाहतीं। परन्तु आज जबकि कॉलेज में एक शानदार फ़िल्म-शो होने वाला है, आप कमर के दर्द, बेचैनी और बेआरामी के कारण मुरझाई हुई-सी हैं। तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन ऐसे ही नाज़ुक अवसरों पर काम आती है।

एनासिन बहुत गुणकारी है, क्योंकि यह केवल दर्द से आराम नहीं दिलाती बल्कि दर्द के साथ होने वाली उदासीनता को भी दूर करती है। एनासिन आपको जल्दी आराम और चैन दिलाती है और आपके चेहरे पर फिर वही मुस्कान आ जाती है।

अपने नाज़ुक दिनों में दर्द की बेचैनी और बेआरामी से पड़े रहना पुराने ज़माने की बात है। आज ज़माना बहुत आगे जा चुका है। तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन आपको जल्दी आराम दिलाती है। और आप अपना रोज़ का काम-काज आराम से कर सकती हैं।

लड़की होना भी कभी-कभी एक मुसीबत मालूम होती है। परन्तु आप ऐसे आड़े समय एनासिन से काम लेकर अपनी उलझन दूर कर सकती हैं, और जीवन का पूरा आनन्द ले सकती हैं। ज़रूरत के समय के लिए अपने पर्स में हमेशा एनासिन रखिए—यह बहुत बड़ी सुविधा है।

तेज़ असर और विश्वसनीय

एनासिन

भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा

Regd. User of TM: Geoffrey Manners & Co. Ltd.

A-57

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

NOW...

Extra-thick, extra-rich Sunsilk Egg-Protein Shampoo...

Most egg shampoos are watered down.

SUNSILK Egg-Protein Shampoo is so thick, we had to put it in a special squeezy bottle. Its concentrated richness leaves your hair silky-soft, full of life. And its vital proteins make it the ideal shampoo for undernourished hair.

Now SUNSILK has 4 ways of making hair beautiful—Beauty for normal hair, Lemon for greasy hair, Tonic for dry hair... and Egg-Protein for undernourished hair. One is right for you.

leaves your hair silky-soft, full of life!

A Quality Product by HINDUSTAN LEVER

LINTAS-SS.16.77

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

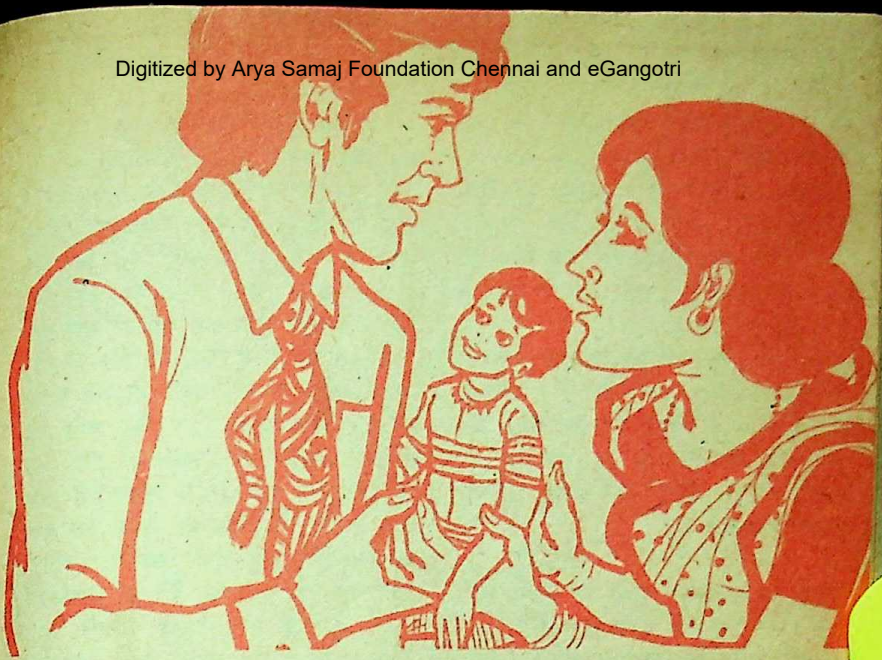

"चीकू को साथ लाई हो?" जोगेश ने पूछा तो चेतना ने चीकू को उठा कर उस की गोद में दे दिया.

मौत दुर्घटना के कारण हुई थी.

जोगेश बरी हुआ तो चेतना के हृदय की आग और अधिक भड़क उठी. कुछ दिनों बाद जब वह उस के घर आया तो चीकू के लिए बहुत से खिलौने लाया. आंखों में आंसू लिए वह द्वार से लग कर देर तक रोता रहा, पर चेतना हत्या के हालात समझने के स्थान पर उस पर बरस पड़ी. उसे तुरंत वहां से चले जाने पर मजबूर होना पड़ा.

समय बीतने लगा. इस बीच कई अशुभ व असहनीय घटनाएं घटित हो गईं. अरविंद के चले जाने से चेतना पंगु हो गई, उस का सब कुछ छिन गया. वह कुछ दिनों के लिए लुधियाना गई, पर वहां से तिरस्कृत हो कर पुनः दिल्ली आ गई. एक दिन फिर जोगेश उस के पास आया, पर वह उस पर बरस पड़ी, "तू फिर आ गया? मेरा सुहाग उजाड़ कर तुझे चैन नहीं मिला?"

"भाभी, क्या तुम मुझे दोषी समझती हो? पर मुझ पर विश्वास करो कि यह सब अनजाने ही हुआ है, मुझे स्वयं इस पर गहरा दुख है."

चेतना रोने लगी. पति की मृत्यु के बाद उस ने इतने कम समय में जीवन का कड़वापन देख लिया था. जोगेश उस के समीप आ कर सहमे स्वर में बोला, "भाभी, मुझे मेरी भूल के लिए क्षमा कर दो जो कि अनचाहे ही हो गई. मैं कब से तुम्हारे लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था. मैं एक प्रार्थना करना चाहता हूं..."

चेतना बिलखबिलख कर रो रही थी और कभीकभी उस पर उपेक्षित दृष्टि डाल देती थी.

"भाभी, जो कुछ हुआ है, यही होनी को मंजूर था. मैं तुम से विवाह करना चाहता हूं."

"जो...गे..श!" वह गरज उठी.

"हां, भाभी! वरना मैं जीवन भर चैन से न जी सकूंगा. मैं ने तुम्हें बेसहारा कर दिया है, भाभी! तुम मेरी बात स्वीकार कर लो."

देर तक आग्नेय दृष्टि से वह उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देखती रही, फिर वह उस के समीप आई और एकाएक उस के हाथ हथौड़ों के समान उस के आंसुओं से भीगे चेहरे पर बरस पड़े. वह आंखें मूंदे खड़ा रहा. जब चेतना थक गई तो दोनों हाथों से चेहरा ढांप कर चिल्ला उठी, "निकल जा यहां से, हत्यारे! मुझे आज तेरे मनहूस विचारों का पता चला है." वह चीकू को उठा कर अंदर भाग गई. उस ने अंदर से द्वार बंद कर लिया.

जोगेश की मर्माहत आवाज निकली, "नहीं, भाभी, सुनो तो!" दर्दभरी रेखाएं उस के चेहरे पर फैल गईं. देर तक वह बंद किवाड़ के साथ माथा टिकाए खड़ा रहा, फिर आंसू पोंछता बाहर निकल गया.

यही करुणाजनक व्यथा थी चेतना की. तीन वर्ष बाद आज वह जोगेश को देख रही थी. कितनी बार उस ने विगत को भूल जाना चाहा था, पर जोगेश से बदला लेने की उस की भावना बलवती ही होती जाती थी.

"चेतना! क्या सोचने लगी हो?" शिप्रा ने उसे झकझोर सा दिया. "व्यर्थ मन पर बोझ मत डालो. आओ, थोड़ी देर छत पर चल कर बैठें."

चेतना का हाथ थामे वह छत की सीढ़ियों की ओर बढ़ने लगी. दोनों ही मुंडेर पर आमनेसामने बैठ गईं. देर तक खामोशी रहीं.

मौन भंग करते हुए शिप्रा ने कहा, "चेतना, तुम ने मेरी बात मान ली है न? अचला के जीवन से..."

"शिप्रा, मैं अपनेआप में उलझ गई हूं. मुझे समझ नहीं आता कि मैं क्या करूं."

"बस, अब अतीत को भूल जाओ." शिप्रा को भय था कि आवेश और बदले की भावना से चेतना कोई गुल न खिला दे और अचला के लिए कोई बदनुमा दाग न छोड़ती जाए.

"आजकल किस के पास रहती हो?"

"अकेली."

"क्यों?" शिप्रा थोड़ा चौंकी. "मायका, ससुराल..."

"सब कुछ पराया हो गया, शिप्रा," वह बुझे स्वर में बोली. "मां तो थी ही नहीं. मैं विधवा का लिबास पहने घर में पड़ी रहती थी कि मेरी सास मुझे लुधियाना ले गई. मैं ने भी सोचा, अब शेष जीवन सास और देवर की निगरानी में काट दूंगी. लेकिन बाद में मुझे पता चला कि मेरे लिए किसी के दिल में कोई स्थान नहीं. उन्होंने पहले तो मेरे गहनों पर अधिकार किया, फिर मेरे पति की तमाम दौलत और सामान पर हक जमाया और मुझे घर में नौकरानी बना कर रखा. मैं दिनरात सास की सेवा करती लेकिन वह मुझे 'नागिन' कहती और घर से निकाल देने की धमकियां देती. मैं यह सब सहन करती रही. सोचा, ऐसे ही दिन काटने होंगे. पर एक रोज जब मां घर में नहीं थी, मेरा देवर सुरेंद्र घर आया तो मुझे अकेली देख कर बोला, 'देखो, चेतना, भैया तो रहे नहीं. हमारा संबंध तो भैया के नाते तुम्हारे साथ था. मां तुम्हें अब घर में नहीं रखना चाहती. यदि तुम यहां रहना चाहती हो तो एक काम करना होगा.'

"कहो, क्या काम?"

" 'रात को मेरे बिस्तर पर आ जाया करो' वह बोला. 'मैं ही अब घर का स्वामी हूं. मां मेरी मरजी के बिना कुछ नहीं कर सकेगी.' "

" 'सुरेंद्र, तुझे यह सब कहते शर्म नहीं आती?' मैं ने उस की आंखों में वासना झलकती देख ली थी. इस से पूर्व कि मैं संभलती, उस ने मुझे बांहों में भर कर विवश करना चाहा."

चेतना पल भर के लिए रुक गई. उस ने थूक निगला और फिर कहने लगी, "तभी मां लौट आई और मेरे सम्मान की रक्षा हुई. लेकिन अब मेरे लिए वहां रहना हर पल खतरे से खाली न था. सुरेंद्र मां से दृष्टि बचा कर मेरे साथ छेड़खानी करने लगा. मां से मैं शिकायत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ के प्यार जैसा प्यारा
मुन्ने के मन का दुलारा

पूप-सी® फ़ीडर

पूप-सी®
फ़ीडर्स और निपल्स

हर बच्चे की पसंद के लिए
पूप-सी फ़ीडर्स ८ आकारों
में मिलते हैं।

निर्माता :
बॉम्बे लेटेक्स एण्ड डिस्पर्शन्स प्राइवेट लिमिटेड
८३–सी, डा. एनी बेसेंट रोड, वरली, बम्बई ४०० ०१८ □ फ़ोन: ३९१७०५/३७४८७८ □ तार: POOPCEE

Ratan Batra/BLD/H/31-B

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

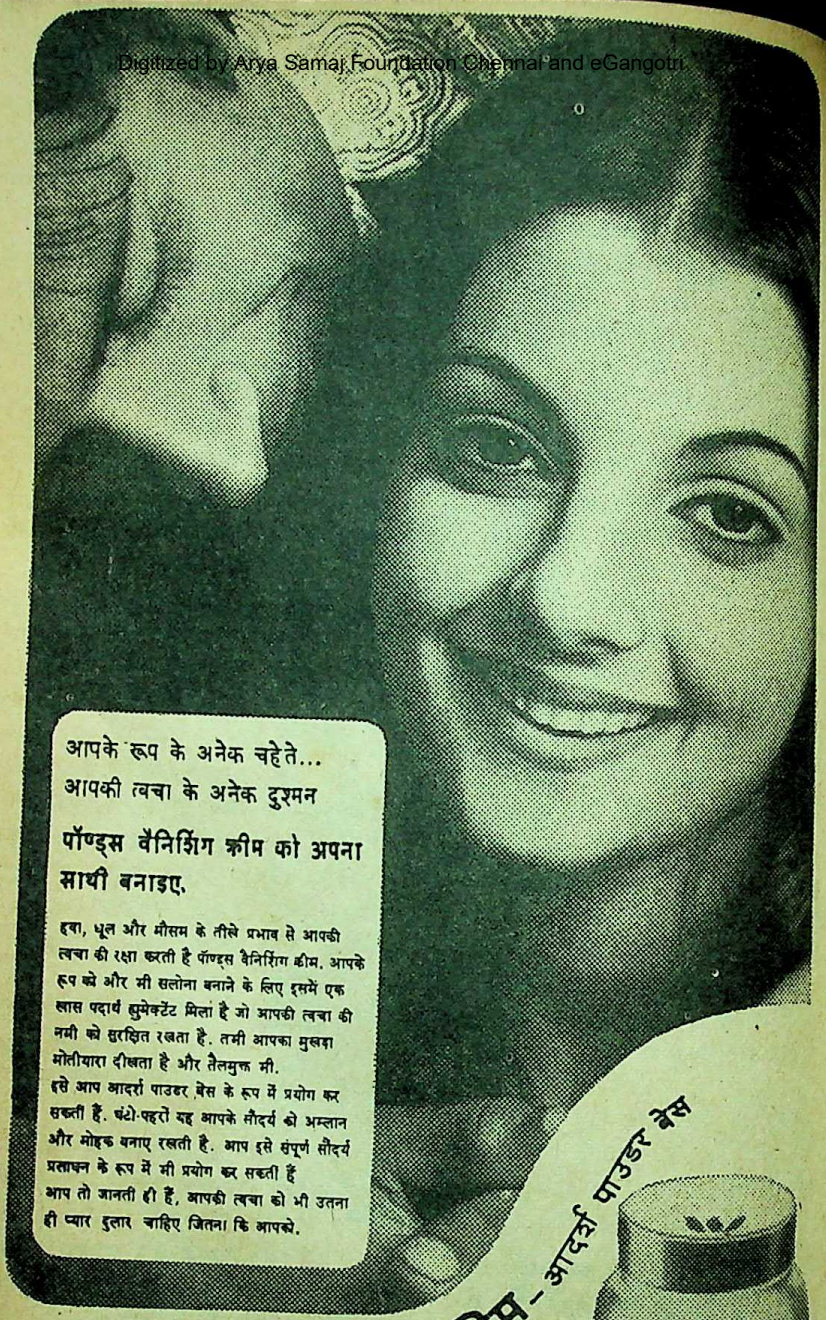

चीज़ब्रो-पॉण्ड्स इन्कॉर्पोरेटेड (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. मे संस्थापित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वह घर से निकाल बाहर न कर दे. पर एक रात जब सुरेंद्र ने मुझे विवश करना चाहा तो मैं ने मां को आवाज लगा दी. मां आई तो वह बोला, 'मां, भाभी मुझे रोज अपने कमरे में आने को कहती थी. इसे शर्म और अपने घर के मानसम्मान का खयाल तक नहीं है.'

"'क्यों, री?' मां का कमजोर हाथ मेरे गाल पर पहाड़ बन कर पड़ा. मुझे अनेक उपाधियों से विभूषित किया गया.

"अब मैं ने वह घर छोड़ना ही ठीक समझा और चीकू को ले कर मैं दिल्ली लौटी तो जोगेश आया मेरे पास विवाह का प्रस्ताव ले कर, मुझ जली को और जलाने, मेरा सुहाग मिटा कर मुझे सुहागिन बनाने."

चेतना के हावभाव से स्पष्ट था कि उस का मस्तिष्क उपेक्षा, घृणा और वितृष्णा से भरा है.

वह फिर कहने लगी, "शिप्रा, मैं ने दिल्ली में एक प्राइमरी स्कूल में नौकरी कर ली है. मेरी सास ने मेरे सारे आभूषण और सारी नकदी छीन ली है. मेरे पास अब दिल्ली वाला मकान रह गया है. वह मैं ने न जाने किस भावना से उस के नाम नहीं किया वरना मेरे पास सिर छिपाने को भी जगह न रहती. शिप्रा, मैं ने इन वर्षों में जीवन के वे दिन देखे हैं, जिन्हें मैं पति के साथ रहते सोच भी नहीं सकती थी. शिप्रा, कोई भी औरत विधवा न हो, वह भी युवावस्था में."

फिर कुछ देर तक खामोशी छाई रही. शिप्रा भी सोच में डूब गई. चेतना फिर बोली, "शिप्रा, चीकू का जीवन अलग नष्ट हो रहा है. चार वर्ष का होने को आया है, पर पढ़ने का नाम तक नहीं लेता. बिगड़ता जा रहा है. अपने पिता को देखने के लिए कभीकभी मचलता है, रोता है. किसी पुरुष को घर के पास से निकलते देखता है तो कहता है, 'मां, देखो, पिताजी आ रहे हैं.' अबोध मन हरेक को पिता मान बैठता है. चाहती

चेतना के आंसू बह निकले थे, "मैं रात को अकेले में डरती हूं, शिप्रा! कोई अंधेरे में मुझे आ घेरे तो मैं क्या कर लूंगी. उधर चीकू का जीवन भी नष्ट हो रहा है."

एकाएक शिप्रा बोली, "चेतना, तुम विवाह क्यों नहीं कर लेती?"

"शिप्रा..."

"हां, चेतना! इस में कोई बुरी बात नहीं है. आज तो बड़ीबड़ी विधवा औरतें विवाह कर लेती हैं, तुम तो अभी युवा हो, स्वस्थ और सुंदर हो."

"लेकिन, शिप्रा, एक बच्चे की मां भी तो हूं. मुझे अपनाने वाले तो मिल जाएंगे, पर चीकू को उस के पिता नहीं मिलेंगे. यही सोच कर मैं ने सदा इस विचार का दमन किया है."

"नहीं, चेतना, तुम गलत समझ रही हो. चीकू को भी प्यार करने वाला पिता मिल सकता है. तुम जीवन को संवारने का प्रयत्न करो."

चेतना गुमसुम बैठी रही. शिप्रा भी कुछ न बोली. फिर दोनों उठ कर नीचे आ गईं. जोगेश उस समय दहेज सजा रहा था. शिप्रा बोली, "चलो, दहेज देख लें."

"नहीं, वहां .."

"तो क्या हुआ?"

"वह मेरे पति का..."

"गलत है, चेतना! तुम ने स्वयं घटना का जो विवरण मुझे लिखा था, उस से साफ जाहिर होता है कि वह दुर्घटना मात्र थी."

चेतना एकटक शिप्रा को देखने लगी. शिप्रा ने उस का हाथ पकड़ा और कमरे में ले गई. जोगेश को उन के आने की आहट मिली तो उस ने पलट कर देखा. सामने शिप्रा थी. "आओ, शिप्रा!" उस का स्वर गंभीर था.

"भैया, तुम ने तो बहुत ढंग से दहेज सजाया है," वह बोली. फिर चेतना का हाथ पकड़ कर उस ने परिचय कराया, "यह मेरी सहेली है, चेतना."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने देख कर वह चौंका, "आप... तुम...भाभी... मुझे क्षमा कर दिया?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन कुछ उत्तर दिए बिना ही चेतना कमरे से बाहर निकल गई. शिप्रा यही सब देखने के लिए चेतना को जोगेश के सामने ले गई थी. वह भी चेतना के पीछे हो ली. चेतना चीकू की बगल में खाट पर शिथिल सी लेट गई. शिप्रा उस के पास जा बैठी.

"क्या यह बुरा लगा, चेतना?"

"मेरा यहां दम घुट रहा है, शिप्रा! मैं पागल हो जाऊंगी. मुझे यहां से निकालो."

"क्यों?" वह बोली. "आज मुझे ज्ञात हुआ कि भैया एकाएक दिल्ली से बुलंदशहर क्यों लौट आए थे. कई वर्ष बीत गए, उन के चेहरे पर मुसकान नहीं आई. हंसमुख चेहरा सदा दर्द और विषाद की परतों से ढका रहता है. विवाह के नाम पर यह बहकने लगते हैं. चेतना, इन सब के पीछे तुम हो."

"क्या मतलब?"

"मतलब यह, चेतना, कि भैया से जब भी विवाह की बात की जाती है तो वह कहते हैं, 'मैं इन्हीं हाथों से एक सुहागन को विधवा बना बैठा हूं. अब इन्हीं हाथों से मैं सुहाग का सिंदूर कैसे भर सकता हूं? मैं किसी अभागिन का संसार उजाड़ कर अपना जीवन सुखमय नहीं बना सकता.' चेतना, आज तक भैया ने कभी कुछ नहीं बताया, पर आज ज्ञात हुआ कि तुम ही वह अभागिन हो जो भैया के हाथों अनजाने उजड़ गई और भैया की अपनी जिंदगी एकाएक रुक गई."

जोगेश कमरे से निकल अपने कमरे की तरफ गया तो चेतना निश्चेष्ट सी पड़ी उसे देखती रही.

"चेतना, तुम भैया को बहुत सजा दे चुकी हो. वह अपने को दोषी मान कर दिनबदिन मौत की तरफ जा रहे हैं. दुनिया की खुशियों से वह वंचित हो रहे हैं. उन्हें समझने की कोशिश करो,"

शिप्रा ने चेतना का हाथ पकड़ा और उस ओर चल दी जिधर जोगेश गया था. उस के कमरे में जा कर शिप्रा बोली, "भैया के आंसू इस बात के प्रमाण हैं, चेतना, कि वह निर्दोष हैं. वह इसी लिए दुखी हैं कि उन्होंने तुझे आश्रयहीन कर दिया. रोते हैं तो घंटों आंसू नहीं रुकते. पूछने पर कुछ बताते नहीं."

चेतना का मन जोगेश की दशा देख कर कांप गया. उस की बरबादी का कारण वह स्वयं थी. वह क्यों उसे व्यर्थ की सजा दे रही थी?

फेरों का समय समीप आ रहा था. लंबे अंतराल पर शिप्रा ने खामोशी तोड़ी, "चेतना, अचला के विवाह में फसाद न खड़ा कर के तुम ने मुझ पर एहसान किया है. तुम से मुझे यही उम्मीद थी."

"शिप्रा, क्या बात करती हो? क्या मैं इतनी नीच हूं? मैं ने बहुत बड़ा संघर्षमय जीवन बिताया है. वह तो केवल क्षणिक आवेश था."

"एक बात और मानोगी?" शिप्रा ने कहा. "अतीत को भूल कर भविष्य और वर्तमान को संवारो, चेतना! तुम्हारे विवाह की बात कर रही हूं. चेतना, मेरी दृष्टि में जोगेश ही तुम्हारे लिए वफादार और उपयुक्त पति हो सकता है."

"शिप्रा, यह तुम..."

"हां, चेतना! मुझ से भैया की दशा देखी नहीं जाती. वह केवल तुम्हारे लिए ही जीवन को नष्ट कर रहे हैं. वह जीवन यों ही खपा देंगे."

"मगर, शिप्रा..."

"मगर मत कहो, चेतना! वास्तविकता को पहचानो. जोगेश के पतन की जिम्मेदार तुम हो."

चेतना का मस्तक झुक गया था. शिप्रा बोली, "चलो, मैं तुम्हें भैया से मिलवा दूं. उन्हें अपना सर्वस्व स्वीकार कर लो. चीकू को उस का पिता मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्मे

एक्ज़ोटिका टैल्क

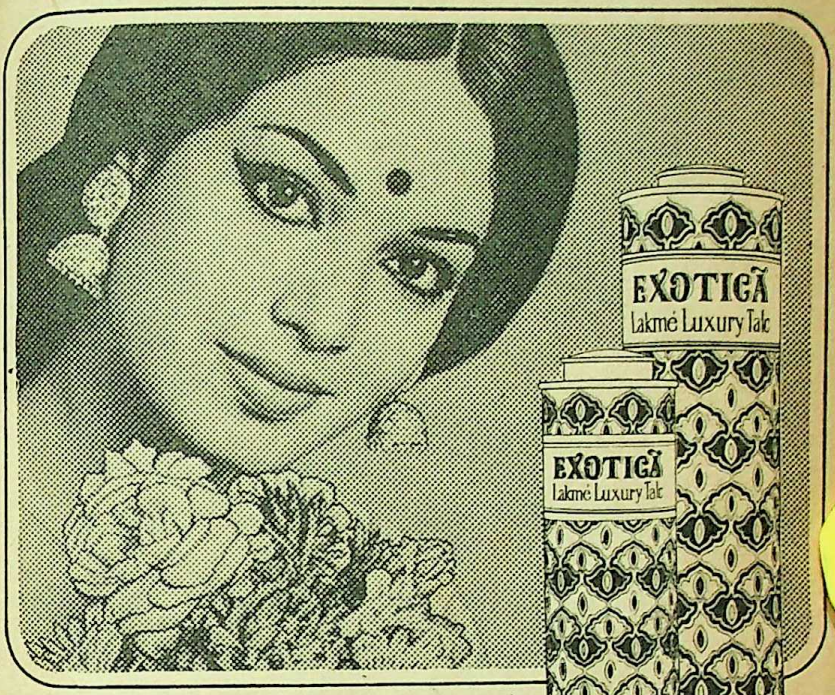

छाया रहे सुहाना हर पल

महकता ही जाए महकता ही जाए महकता ही जाए
महकता ही जाए महकता ही जाए महकता ही जाए
महकता ही जाए महकता ही जाए महकता ही जाए
महकता ही जाए महकता ही जाए महकता ही
महकता ही जाए महकता ही जाए महकता
महकता ही जाए महकता ही जाए महकता ही जाए
महकता ही जाए महकता ही जाए ही जाए

लक्मे

dCP/LE/3j Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भविष्य.

दोनों जोगेश के सामने खड़ी थीं. उन की आंखें सजल थीं. शिप्रा बोली, "भैया, आज सब राज खुल गए हैं. चेतना को आप ने गलत समझा. उस ने कभी अरविंद की हत्या का दोषी आप को नहीं समझा. क्यों, चेतना?"

चेतना ने मस्तक उठाया. पल भर को पलकें फड़कीं. उस ने जोगेश की आंखों में झांक कर देखा. जोगेश के चेहरे पर मुसकान फैल गई. वह बोला, "कुछ दिन यहां रह लेना."

"कुछ दिन क्यों, अब चेतना यहां सदा के लिए रहेगी—मेरी भाभी बन कर."

"क्यों, चेतना?" जोगेश ने जैसे दुस्साहस किया.

उस रोकने को हाथ बढ़ाया, पर वह मुंह न खोल सकी. मस्तक झुकाए जोगेश के सामने खड़ी रही, छुईमुई सी.

"चीकू को साथ लाई हो?" वह पूछ बैठा. "कैसा है, कहां है?"

"वहां सो रहा है," वह लजाई सी बोली और बाहर की ओर चल दी. जोगेश उस के पीछेपीछे था.

जब चेतना ने चीकू को उठा कर जोगेश को पकड़ाया तो दोनों के हाथ छू गए. स्पर्श की सिहरन से उन के शरीर झनझना उठे. जोगेश बोला, "तुम अब यहीं रहोगी न मेरे पास?"

चेतना का मस्तक झुक गया मौन स्वीकृति से. उस ने ऐसा अनुभव किया जैसे सारा शरीर पिघला जा रहा था. ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्राचीन भारत में मंत्रों के बल पर वाहन चलते थे. आप अगर अनुदान दें तो हम भी तेल की जगह मंत्रों के प्रयोग की संभावना पर रिसर्च करें."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबह का भूला

भगवान

दोस्तों के चक्कर में सुबोध यह भूल जाता था कि घर में उस की पत्नी उस का इंतजार कर रही होगी... आखिर एक दिन पत्नी के सब्र का बांध टूट ही गया...

मायके से लौटने के बाद पूर्वनिश्चित कार्यक्रम के अनुसार वह सुबोध के साथ आ गई थी. सारा सामान करीने से लगा कर रसोई अपने ढंग से ठीक की. शादी से पहले सुबोध भोजन होटल में करता था इसलिए रसोई-घर में स्टोव और चाय के सामान के अतिरिक्त कुछ नहीं था. साथ लाए हुए बरतनों को यथास्थान रख कर उस ने भोजन के लिए आवश्यक वस्तुओं की सूची बना कर सुबोध को दे दी.

सुबह जल्दी उठ कर वह घर के छोटेमोटे काम निबटा देती. आरंभ में दोतीन दिन उस ने सुबोध को भी अपने साथ जल्दी उठाने का प्रयत्न किया. किंतु आठ बजे बिस्तर छोड़ने के आदी सुबोध को छः बजे बिस्तर से उठाने में वह सफल न हो सकी.

सात बजे के लगभग दूध वाला आ जाता था. उस के आने के बाद चाय तैयार कर के वह सुबोध को जगाने लगती. तब भी यदि सुबोध उठने में आनाकानी करता तो वह जबरदस्ती चादर खींचते हुए कहती, "इस से ज्यादा समझौता नहीं करूंगी. अब उठो और चाय पी लो."

सुबोध मजबूरी जताता, अंगड़ाई लेता हुआ उठता, चाय पीता, उसे छेड़ता, गुदगुदाता, प्यार करता और फिर निवृत हो कर शेव बना कर स्नान करता. तब तक वह भोजन तैयार कर लेती. दोनों साथसाथ भोजन करते. इस के बाद सुबोध दफ्तर चला जाता. वह दरवाजे पर खड़ी हो कर तब तक उसे देखती, जब तक वह आंखों से ओझल न हो जाता. सुबोध का बारबार पीछे मुड़ कर उसे देखना उस के मनप्राण में गुदगुदाहट भरता रहता.

सुबोध के दफ्तर जाने के बाद वह नितांत अकेली होती और सामने होता रबड़ की तरह खिंचता उकताहट भरा दिन. कुछ समय सो कर, कुछ समय पत्रिकाएं व उपन्यास पढ़ कर किसी प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह दिन गुजारती. बाद में पड़ोसियों से परिचय हो जाने पर यह समस्या कुछ कम हो गई, मगर फिर भी दिन काटना उस के लिए दूभर हो जाता.

किसी तरह पांच बजते. हाथमुंह धो कर, हलका प्रसाधन कर के कपड़े बदल कर वह चाय का पानी रख देती और सुबोध की प्रतीक्षा करने लगती. दरवाजे के बाहर सुबोध की पदध्वनि का आभास होते ही कुंडी खटखटाने से पहले ही वह द्वार खोल कर एक मृदु मुसकान के साथ उस का स्वागत करती. इस के बाद दोनों मिल कर चाय पीते. कपड़े बदल कर हलका हो कर सुबोध पलंग पर लेट कर सुस्ताता और वह उस के निकट बैठ कर गपशप करती.

यहां तक सब कुछ सुखद था—मोतियों सी जलराशि पर अठखेलियां करते हंसों की तरह सुहावना. किंतु इस से आगे? इस से आगे ही तो वास्तविक समस्या थी, आशंकाओं के तीव्र थपेड़े थे.

सात बजते न बजते सुबोध के दोतीन मित्र आ धमकते थे और फिर यों लगता था, जैसे सुबोध उस का कुछ भी तो नहीं होता. वह कपड़े पहन कर उन के साथ घर से निकल जाता. तब का गया हुआ सुबोध कब घर लौटेगा, यह बात सुबोध स्वयं भी बताने की स्थिति में नहीं होता था. गनीमत थी कि दफ्तर से लौटते हुए वह अपने साथ सब्जी लेता आता था. वह सब्जी बना कर उबासियां लेते हुए भूखी बैठी उस की प्रतीक्षा करती रहती कि कब वह आए, कब भोजन हो. घड़ी की सुइयां आगे सरकती जातीं. दस, ग्यारह, बारह कुछ भी बज जाए घड़ी में, पर सुबोध के लौटने पर कोई पाबंदी नहीं थी.

दोतीन बार उस ने शिकायत की तो सुबोध ने हंस कर टाल दिया. उस ने जोर दे कर कहा तो हलकेपन से बोला, "यार लोग शादी से पहले दोदो बजे तक बैठे गप्पें मारते रहते थे या सड़कों पर मटरगश्ती करते रहते थे. शादी के बाद अगर उन के साथ उठनाबैठना बंद कर दूंगा तो सब लोग मजाक उड़ाएंगे." और वह मासूमियत से हंस दिया.

"शादी के बाद अगर उन के साथ उठनाबैठना बंद कर दूंगा तो सब लोग मजाक उड़ाएंगे," सुबोध यह कह कर मासूमियत से हंस पड़ा.

"मगर आप के कारण मुझे भी भूखी रहना पड़ता है."

"तुम मेरी प्रतीक्षा क्यों करती हो? खुद भोजन कर के मेरे लिए रख कर सो जाया करो. जब आऊंगा, खा लूंगा."

वह चुप रह गई थी. इस अनपेक्षित कठिनाई का हल उसे सूझ नहीं रहा था. अधिक कहासुनी या झगड़ा करने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कड़ता ही बढ़ेगी, लाभ कुछ नहीं होगा. ऐसा सोच कर उस ने स्वयं को नियंत्रित कर लिया.

वातावरण में व्याप्त मौन, हांफती रात. अकेलेपन में डसने को सन्नद्ध दुविचार. हर कोने से दौड़ता सन्नाटा. उसे लग रहा था कि क्षणों की लंबाई युगों में बदल गई है और भय का भूत उसे निगलने को तत्पर है.

अपनी यह व्यथा किसी से कह भी नहीं सकती. वह सुबोध का व्यवहार, उस का आचरण सब कुछ तो अच्छा है. आज की दुनिया में रहते हुए भी सिगरेट तक नहीं पीता वह. किसी से कहेगी भी तो गलती उसी की मानी जाएगी कि वह सुबोध को संभाल नहीं पा रही है.

शिकायतबाजी से कुछ नहीं होगा. मगर कुछ न कुछ किए बिना भी तो काम नहीं चलेगा. कुछ करना होगा और वह भी स्वयं, बिना किसी की सहायता के करना होगा. स्थिति को लावारिस नहीं छोड़ा जा सकता. अपनेआप यदि

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri

कभी सब कुछ ठीक हुआ भी तो इस में बहुत समय लगेगा. इस जमते पानी और गरम कमरे में डरती हुई रात के बारहबारह बजे तक भूखी बैठी कब तक प्रतीक्षा करेगी वह?

बहुत सोचविचार के बाद अंत में उस ने एक उपाय ढूंढ निकाला.

रात देर गए जब सुबोध लौटता था तो काफी थका हुआ होता था. सब्जी तैयार होती ही थी. वह उठ कर जल्दी से रोटी सेंक देती थी. और होता यह था कि सुबोध के लौटने के बाद आधे घंटे के अंदरअंदर भोजन से निवृत्त हो कर वे दोनों बिस्तर पर लेट चुके होते थे.

दूसरे दिन रात को जब सुबोध लौटा तो कमरे की रोशनी बुझी हुई थी. वह योजनापूर्वक बिस्तर पर लेटी हुई थी. डर और दुश्चिंताओं के कारण नींद उस से कोसों दूर थी. सुबोध ने द्वार खटखटाया तो वह ज्यों की त्यों लेटी रही. दूसरी बार सुबोध ने आवाज लगाने के साथसाथ द्वार खटखटाया. इस बार भी वह नहीं उठी. इसी प्रकार तीसरी, चौथी, पांचवी और छठी बार यह क्रम दोहरातेदोहराते आठदस मिनट व्यतीत हो गए. अब खटखटाहट बहुत तेज हो गई. स्वर की ऊंचाई बढ़ गई तो वह बिस्तर से उठी. आंखें मलते हुए उस ने दरवाजा खोल दिया.

आवाज को घबराहट का पुट दे कर उस ने कहा, "आप को अधिक देर प्रतीक्षा तो नहीं करनी पड़ी न? आज पता नहीं कैसे नींद आ गई!"

"कम से कम तीस आवाजें लगाई होंगी. ऐसा भी क्या सोना?" झुंझलाहट और क्रोध मिश्रित स्वर में कमरे के अंदर पांव रखते हुए सुबोध ने कहा.

"जागने की कोशिश तो बहुत की लेकिन आंख लग गई." फिर किंचित मुसकरा कर बोली, "आप तो वैसे भी कहते हैं न कि सो जाया करो, जागते रहने की जरूरत ही क्या है?"

"कहता हूं लेकिन इस का अर्थ यह तो नहीं है कि घोड़े बेच कर सोया जाए. लो, अब जल्दी करो, खाना लगाओ."

"आप हाथमुंह धो कर आइए. अभी लगा देती हूं."

सुबोध ने हाथमुंह धोए और तौलिए से मुंह पोंछता हुआ रसोईघर में गया. "लाओ, अब झटपट खाना."

किंतु तभी उस की ओर देख कर वह ठगा सा अपने स्थान पर खड़ा रह गया.

"क्या बात है? अभी तक आलू ही काटे जा रहे हैं?"

"आप के आने तक सब्जी बिलकुल ठंडी हो जाती है. ठंडी सब्जी को कितना भी गरम कर लो, खाने में वह आनंद नहीं आता जो आना चाहिए. इसलिए मैं ने सोचा है कि आगे से आप को गरम-गरम सब्जी बना कर खिलाया करूंगी."

सख्त भूख और थकावट के बावजूद सुबोध के तमतमाते चेहरे पर मुसकराहट बिखर गई, "लड़ाई करने का इरादा है?"

प्रत्युत्तर में उस ने कुछ नहीं कहा. बस किंचित सी मुसकरा कर काम में लग गई.

"आप खड़े क्यों हैं? बैठिए न," सुबोध के लिए चटाई बिछाते हुए उस ने वाणी में प्यार घोल कर कहा.

सुबोध के बैठ जाने के बाद उस ने आलू धो कर अंगीठी सुलगानी शुरू कर दी. सारा रसोईघर धुएं से भर गया. किंतु इस स्थिति से अनभिज्ञ सी वह मनोयोगपूर्वक सिगड़ी को पंखे से हवा करती रही.

सुबोध से जब धुएं में बैठा नहीं गया तो उठते हुए बोला, "मैं कमरे में बैठा हूं. खाना बन जाए तो बुला लेना."

अंगीठी सुलगा कर, आलू चढ़ा कर लगभग आधे घंटे के बाद वह सुबोध के पास आ गई. सुबोध बिस्तर पर तकिए के सहारे अधलेटा सा हो कर जागने का प्रयत्न कर रहा था. उस की निद्रा से बोझिल आंखें बारबार झपक जाती थीं.

"अब रसोई में धुआं नहीं है. आप

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफ़ेद कपड़े पीले ?

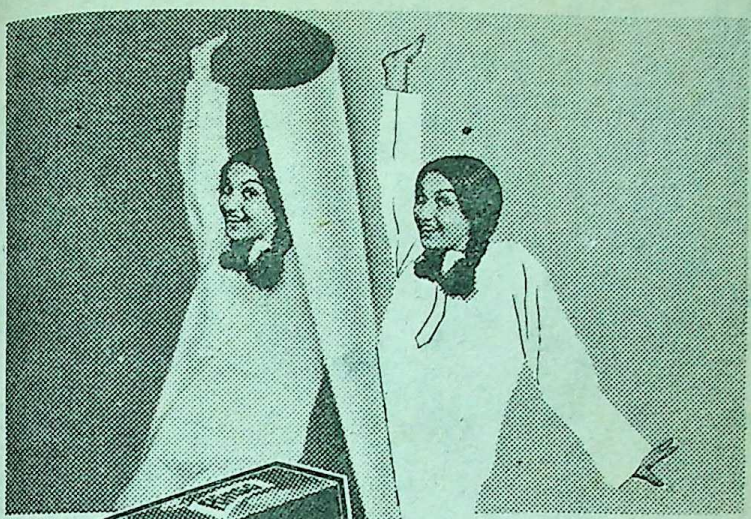

ये पीली परत उतारे नया रिन्सो

अपने सफ़ेद कपड़ों पर जमी पीली परत आपको ज़रूर खटकती होगी। रिन्सो इस परत को उतार फेंकता है, क्योंकि डिटर्जेंट तकनीक में रिन्सो एक नई खोज है। और अपने वादे के मुताबिक यह चकाचौंध सफ़ेद धुलाई करता है। ऐसी बढ़िया धुलाई—सबसे वाजिब दाम में।

चकाचौंध सफ़ेद धुलाई के लिए रिन्सो

लिंटास - RINSO. 1-77 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वहीं चल कर बैठिए न. मुझे अकेले में डर लगता है."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबोध की बांह से खींच कर उस ने बिस्तर से उठाया और उसे वह वापस रसोईघर में ले आई. अपने पास बैठा कर वह उस से इधरउधर की बातें करती रही. कुछ देर तक तो सुबोध उस की बातों में रुचि लेता रहा किंतु अधिक समय तक उस से बैठा नहीं गया.

"मुझे तो बहुत नींद आ रही है. भई, अब और बैठा नहीं जाता. तुम खाना बना कर आवाज लगा देना. तब तक मैं सोता हूं."

उस ने सुबोध को रोकने की कोई चेष्टा नहीं की. धीरेधीरे खाना तैयार कर के आखिरी रोटी सेंक कर जब वह उठी तो घड़ी रात के दो बजा रही थी. कमरे में आ कर उस ने सुबोध को गहरी नींद में सोता हुआ पाया.

उसे हिलाते हुए वह जोर से बोली, "उठिए, भोजन कर लीजिए."

"भई, सोने दो. बड़ी नींद आ रही है."

"उठिए न, भूखे ही सोएंगे क्या?"

"अब भूख नहीं है. सुबह खा लेंगे," सुबोध ने करवट बदलते हुए कहा.

"कम से कम तीस आवाजें लगाई होंगी. ऐसा भी क्या सोना?" झुंझलाहट और क्रोध भरे स्वर में सुबोध ने कहा तो वह मुसकरा उठी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूख नहीं थी तो पहले क्यों नहीं बताया? अब तो खाना बिलकुल तैयार है." उस ने जबरदस्ती करते हुए सुबोध को सीधा किया.

"सच, अब बिलकुल भूख नहीं है." सुबोध ने टालने का अंतिम प्रयास किया.

"मैं ने कहा न, इस तरह नहीं चलेगा. पहले उठ कर भोजन करिए, फिर आराम से सो जाइएगा. कौन मना करता है?" सुबोध को खींच कर उस ने बैठा दिया.

सुबोध अनमना सा उठ कर उस के साथ रसोईघर में गया. थाली में भोजन लगा कर वह भी उस के साथ बैठ गई. भोजन समाप्त करने के बाद सुबोध की ओर कटाक्ष करते हुए वह बोली, "खुद तो जनाब भूखे सो ही रहे थे, साथ में मुझे भी भूखा सुला रहे थे."

"मुझे तो तुम खाना खिलाना ही नहीं चाहती थी."

"वाह! खिलाना न चाहती तो आप को जबरदस्ती उठा कर क्यों लाती भला?"

"वह तो मैं आ गया इसलिए तुम ले आई. मगर यह सच है कि आज तुम्हारी खाना खिलाने की इच्छा नहीं थी."

"कैसे?"

"अगर होती तो हमेशा की तरह खाना बना कर रखती नहीं तुम?"

"मैं ने तो फिर भी आप का खयाल रखा है. आप को गरमगरम खाना खिलाया है. आप बताइए, आप मेरा खयाल रखते हैं इस तरह कभी?"

सुबोध एकटक उस की ओर देखता रहा.

"मैं आधीआधी रात तक भूखी बैठी आप की राह देखती रहती हूं. आप को कभी मेरी तकलीफ का ध्यान आया? यहां अगर आप ही मेरी चिंता नहीं करोगे तो कौन करेगा?" बात समाप्त करते-करते उस की आवाज भीग गई, आंखों में आंसू छलक आए.

सुबोध कुछ देर तक स्नेहसिक्त दृष्टि से उसे निहारता रहा. फिर उठ कर निकट आ कर एकाएक उस ने झुक कर उस के आंसुओं को चूम लिया.

अगले दिन संध्या को सदैव की भांति सुबोध के मित्र आए किंतु उन के साथ बाहर जाने की बजाए वह उन्हें कह रहा था, "यह कहने में मुझे अब कोई संकोच नहीं है कि मेरा विवाह हो गया है. इसलिए पहले की तरह आधीआधी रात तक बाहर रहना अब मेरे लिए संभव नहीं है."

प्रसन्नता की सिर तक उठ आई लहर के वशीभूत वह इस से आगे कुछ भी न सुन सकी. उसे लग रहा था, कदम बहुत हलके हो गए हैं और जिंदगी के लंबे. जटिल रास्ते बहुत छोटे हो गए हैं, बहुत सरल हो गए हैं. ●

कब तुम ने किया याद...

तुम आ गए जब याद तो कुछ भी न रहा याद
कब तुम ने भुलाया मुझे कब तुम ने किया याद
—जगन्नाथ 'आजाद'

✦

जुदाई हाय मुहब्बत की क्या बुरी है [illegible]
कि दिल न बज़्म में बहले न खुश लगे है [illegible]
—[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SISTA S-NG-409 HN B

नायसिल छिड़किये... घमौरी की बेचैनी आप महसूस नहीं करेगें।

डाक्टरी परीक्षणों के अनुसार अधिक पसीने द्वारा त्वचा छिद्र बन्द हो जाने से घमौरी की परेशानी हो सकती है। इससे खुजली और बेचैनी हो जाती है–जो बढ़ती जाती है। क्लोरफैसिन और बोरिक पाऊडर युक्त नायसिल 'ब्ल्यू' इसकी रोकथाम करता है– और इसमें मिलाया हुआ जिंक आक्साईड त्वचा को आराम व सुरक्षा देता है।

ग्लैक्सो का
नायसिल*
*ट्रेड मार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एस्ट्रेला - शक्ति

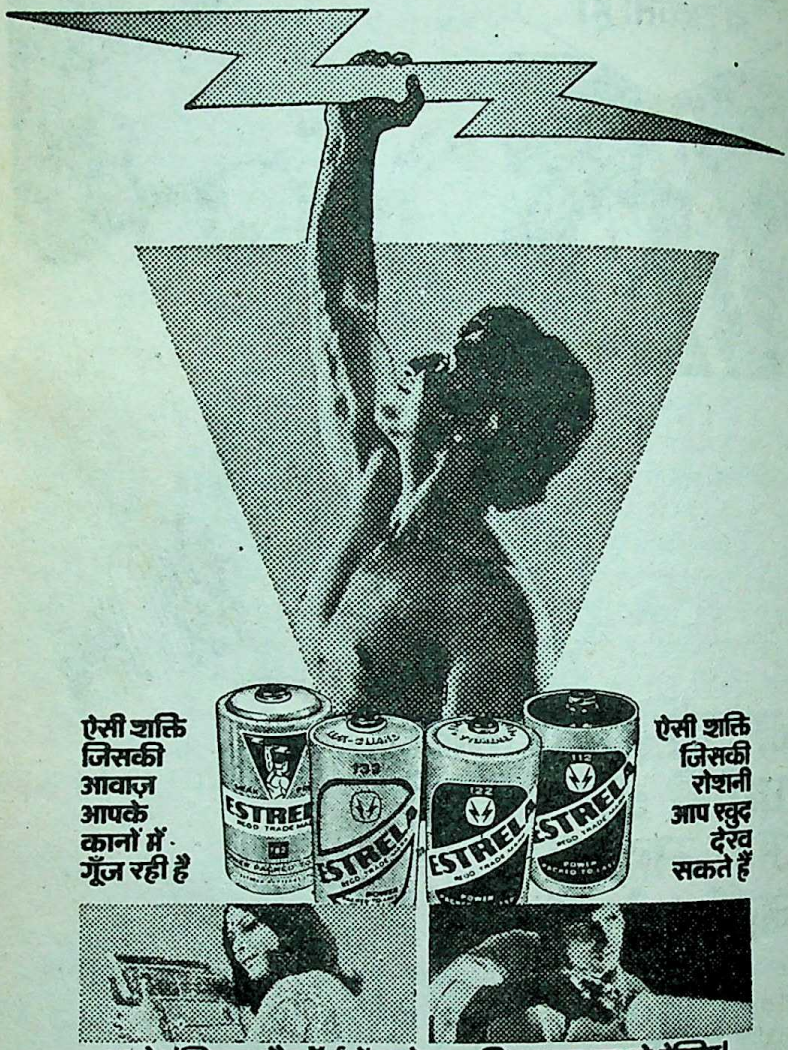

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य : राजेशकांत

उस पर हनुमानजी आए

और वह मंदिर में चोरी करने चला गया लेकिन इस दुनिया में उस से भी बढ़ कर चोर हैं...

कुछ महीने हुए, हमारे महल्ले में एक छोटी सी झुग्गी बन गई. महल्ले के बच्चों के खेलने के लिए एक काफी बड़ा मैदान था. उसी मैदान के बीचोंबीच यह झुग्गी बन गई थी.

बच्चों के खेल में विघ्न पड़ता था इसलिए उन्होंने इस का विरोध किया, पर वे उस झुग्गी को हटाने में सफल नहीं हो सके क्योंकि वह एक झुग्गी ही नहीं एक मंदिर भी था.

मंदिर नहीं हट सका तो बच्चों का खेलना कम हो गया. हम महल्ले वाले खुश हो गए, बच्चे अब पढ़ाई में ध्यान दिया करेंगे. पर हमारी यह खुशी नेताओं के आश्वासनों की तरह ही फलीभूत नहीं हो सकी. मंदिर में लगभग हर समय पूजा होती रहती थी और पुजारी महाशय शायद भगवान को बहरा समझ कर ही पूजा करते समय एड़ीचोटी का जोर लगाते थे. इस से बच्चों की पढ़ाई में बाधा पड़ती थी. अब बच्चे न तो खेल ही सकते थे और न पढ़ ही सकते थे.

फिर वह झुग्गी तेजी से फैलने लगी, जैसे भारत में महंगाई, बेकारी और भ्रष्टाचार फैल रहे हैं. हर महीने महल्ले वालों से चंदा लिया जाता और झुग्गी का विस्तार हो जाता. जो चंदा न देता, उसे मंदिर के पास से अछूतों की तरह ही भगा दिया जाता. एक दिन उस झुग्गी ने सारा मैदान घेर लिया.

एक दिन इसी मंदिर में एक आदमी आया और आते ही उस ने अच्छीखासी भीड़ जमा कर ली. शोरगुल सुन कर मैं भी वहां पहुंच गया.

उस आदमी ने एकएक कर के अपने सारे कपड़े उतार दिए थे. बस, एक कच्छा ही उस के बदन पर शेष था. मैं ने भीड़ इकट्ठी करने का यह तरीका पहली बार ही देखा था. सारी भीड़ की नजर अब उस के कच्छे पर थी.

वह आदमी कभी नीचे मिट्टी में लेट रहा था, कभी नाले में मुंह दे रहा था और मंदिर के एक कोने में सहमे से बैठे हुए पुजारी के लिए उचित विशेषणों का प्रयोग कर कहता था, "अबे ओ, गंदे! तू चोर है, स्त्रियों को ठगता है..."

पुजारी बेचारा एक कोने में सहमा सा चुपचाप बैठा था. सोच रहा होगा, अब तो भगवान ही उस की रक्षा करेगा. मंदिर के प्रधान, मंत्री, कोषाध्यक्ष आदि मुझे कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे. शायद वे अपनेअपने घरों में दुबके बैठे थे.

भीड़ में से तरहतरह की आवाजें उठ रही थीं.

कोई कह रहा था, "माता का प्रकोप है बेचारे पर."

दूसरा पहले का विरोध कर रहा था, "अजी, कहां की माता? पागल है, पागल, और क्या?"

तीसरा दूसरे से सहमत था, "हां, हां, बिलकुल गधा है."

चौथा दूसरे व तीसरे के लिए कह रहा था, "अजी, लग तो आप जैसा ही रहा है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंस्पेक्टर ने अपना रूल उस पर जमाते हुए कहा, "कुत्ते के बच्चे, यह क्या कर रहा है?"

कोई कह रहा था, "अजी, हनुमानजी आए हैं इस पर."

पहले चाहे उस पर हनुमानजी नहीं आए थे, पर इन महाशय की बात सुन कर उस पर हनुमानजी आ गए. वह बारबार हनुमानजी की तरह ही अपनी छाती को चीरने का प्रयास करने लगा. सब को विश्वास हो गया कि इस पर हनुमानजी आए हैं और जल्दी ही वह अपनी छाती चीर कर सीताराम की मूर्तियां दिखा देगा. पर काफी देर तक भी वह अपनी छाती नहीं चीर सका.

तभी एक शब्द सुनाई दिया, "पुलिस!"

पुलिस सचमुच आ गई थी. भीड़ पुलिस को देख कर उसी तरह खिसकने लगी जैसे बिल्ली को देख कर चूहे.

मैं और चारपांच आदमी अभी भी वहीं खड़े थे. इतने में इंस्पेक्टर जीप में से उतर आया और उस आदमी की ओर बढ़ने लगा. वह आदमी अभी भी अपनी छाती को चीरने का असफल प्रयास कर रहा था. हां, उस के चेहरे पर भय की रेखाएं स्पष्ट दिखाई दे रही थीं.

इंस्पेक्टर को उस की ओर बढ़ते देख किसी ने कहा, "उस के पास मत जाइए. हनुमानजी आए हैं उस पर."

अब तक उस आदमी ने अपने हाथ फैला कर इधरउधर घुमाने शुरू कर दिए थे, जिस से उस का एक हाथ इंस्पेक्टर पर पड़ गया. अब तो इंस्पेक्टर का क्रोध फूट पड़ा. अपना रूल उस पर जमाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिंटास-CPC.AFL.1-77 HI

अगर वो कानों में मिसरी घोलें,
"बिना मेक-अप तुम्हारा यह रूप...वाह!"

तो आप अपने मेक-अप का भेद क्यों खोलें?

पाण्ड्स
Angel Face
लिक्विड मेक-अप

एंजेल फ़ेस लिक्विड मेक-अप; उनके लिए जो मेक-अप का फन सीख रही हैं और उनके लिए भी जो मेक-अप के फन में माहिर हैं। यह मेक-अप आपके रूपरंग में एक नई रौनक़ की तरह घुलमिल जाता है। इससे हलके फुलके नुक्स ग़ायब और इसका काम इतना सहज कि त्वचा की स्वाभाविकता भी ज्यों की त्यों... कोई कह तो दे! यह है भी और नहीं भी।

स्वाभाविक सौंदर्य का सहज साधन

चीज़ब्रो पाण्ड्स इन्क. मद्रास-४४ (सीमित दायित्व के साथ यू.एस.ए. में स्थापित) ट्रेडमार्क रजि. भारत में निर्मित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

VOLTAS

कॉस्मोपॉलिटन... सर्वाधुनिक, १·५ टन रूम एयर कंडीशनर

कॉस्मोपॉलिटन, शीतलता प्रदान करने में तो सर्वाधिक कार्यक्षम है ही, अपनी श्रेणी के एयर कंडीशनर्स में सर्वश्रेष्ठ भी है। इसकी अन्य असाधारण विशेषताओं में है:

- ☐ सबसे अधिक दूर तक ठंडी हवा का फैलाव
- ☐ शीतलता के प्रभावी क्षेत्र के लिए स्वयंचालित फ्लिप-टॉप ताकि हवा फ़ौरन और एक-सी फैल सके
- ☐ 'छूते ही चले'—इतना सरल
- ☐ पूरी क्षमता (१.५ टन) पर शीतलता देने पर भी बिजली की कम खपत।

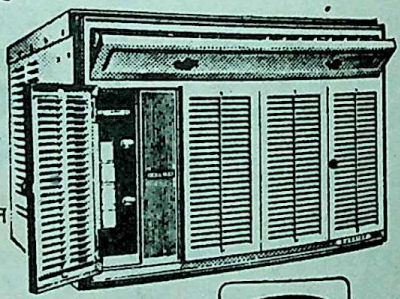

Carrier
कॉस्मोपॉलिटन
१·५ टन
रूम एयर कंडीशनर

वोल्टास लिमिटेड बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • नयी दिल्ली • बंगलोर • लखनऊ • पटना • अहमदाबाद • सिकन्दराबाद • कोचीन • कानपुर • जमशेदपुर

आपके क्षेत्र में हमारे अधिकृत विक्रेताओं के लिए कृपया आपके पास के वोल्टास कार्यालय से सम्पर्क कीजिए

आपका ही वोल्टास: शीतलता प्रदान करने में सर्वाग्रणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CMVAC-60-182-HIN.

हुए वह चीखा, "कुत्ते के बच्चे, यह क्या कर रहा है?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी चार कांस्टेबल भी जीप में से उतर आए और लाठियों से उस आदमी की ठुकाई करने लगे. अब तो उस आदमी के हनुमानजी जाते रहे. वह इंस्पेक्टर के पैरों पर गिर कर गिड़गिड़ाने लगा, "माफ कर दो, माईबाप!"

इंस्पेक्टर चीखा, "माईबाप के बच्चे, यहां तू करने क्या आया था?"

"कुछ भी नहीं, माईबाप!"

"झूठ बोलता है? सचसच बता दे, नहीं तो जेल की चक्की पिसवा दूंगा," डंडा घुमाते हुए इंस्पेक्टर चीखा.

"सच बताऊं, हुजूर? मैं यहां चोरी करने आया था."

"चोरी करने मंदिर में?"

"हां, माईबाप!"

"अबे, प्रधान, मंत्री, कोषाध्यक्ष और पुजारी आदि मर गए हैं क्या इस मंदिर के, जो तुझे यहां चोरी की जरूरत आ पड़ी?"

"हुजूर, आगे से ऐसा नहीं करूंगा."

"अच्छा, तेरे पास कुछ है क्या?"

"है, माईबाप!" और वह आदमी कहीं से अपनी पेंट ढूंढ़ कर ले आया. उस की जेब में दो दसदस के नोट निकाल कर उस ने इंस्पेक्टर की ओर बढ़ा दिए.

इंस्पेक्टर ने नोट लेते हुए कहा, "जा, अब भाग जा. आगे से यहां चोरी करने मत आइयो, चोरी करनी हो तो किसी कोठी में करियो, जहां से कुछ माल हाथ लगे. यहां तो पहले ही सब साफ हो जाता है."

अब तक सब लोग वहां से जा चुके थे. वह आदमी भी अपने कपड़े पहन कर चला गया. वहां अकेला खड़ा रह गया था. बस! मुझे देख कर इंस्पेक्टर बोला, "तू यहां क्या कर रहा है, बे? चल भाग यहां से."

और मैं सिर पर पैर रख कर वहां से अपने घर की ओर भाग लिया. ●

शरबत

रूहअफ़ज़ा

गर्मी के मुकाबले के लिये एक ही शरबत

ताज़ा फ़लों के रस और १६ ठंडक देने वाले पदार्थों से बना हुआ!

हमदर्द

HDR-3137H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर ठंडा रखने के लिए महा भृंगराज'
अद्वितीय।

भृंगल

'महा भृंगराज' सिर में लगाने का तेल
विशुद्ध आयुर्वेद सम्मत कैलकटा केमिकल के
आधुनिक कारखाने में बना।

भृंगल

सिर में लगाने के तेल में है भृंगराज पत्ते
का रस, तिल तेल एवं अन्य १२ जड़ी
बूटियों का निर्यास। ये सभी
सिर को ठंडा रखते हैं।
केश को और सजीव
करते हैं।

विशुद्ध आयुर्वेद सम्मत
बना सुगंधित
भृंगल
महा भृंगराज सिर मे
लगाने का तेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • आशारानी व्होरा

फ्राक में बाटिक एक नया प्रयोग

दो रंग के या अधिक रंगों में बाटिक के सामान्य नमूने यदि आप बनाना जानती हैं तो बाटिक में यह नया प्रयोग भी कर के देखिए. इस में शेष सारे फ्राक पर रंग चढ़ा कर केवल चार कलियों में बाटिक का नमूना डाला गया है. उस के साथ ही सामने गले पर 'चैरी' का एक गुच्छा बना कर उस पर बाटिक से ही 'चैरी' लिख दिया गया है. इस दो वर्षीय बच्ची का नाम 'चैरी' है इसलिए आप भी इसी तरह अपनी बच्ची का नाम लिख सकती हैं.

दो वर्षीय लड़की के अनुमानित 45 सेंटीमीटर लंबे स्ट्रेट फ्राक के लिए 55 सेंटीमीटर बड़े पने (36 इंच या 90 सेंटीमीटर पने) का कपड़ा लीजिए, सफेद केमरिख या रूबिया या पापलीन जो भी चाहें. कपड़े को पटरे पर फैला कर पहले चारों कलियों के निशान पेंसिल से बनाइए. बटनपट्टी पीछे की ओर रखते हुए दो कलियां पीछे व दो कलियां सामने भाग

फ्राक का नमूना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आपके बालों के पोषण के लिए तेल से बढ़कर भी कुछ हो सकता है ?

जी हाँ—है ! तेल और सिल्विक्रिन का मिश्रण !

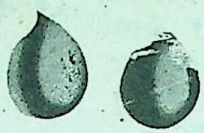

कारण ?

तेल से लाभ

सिल्विक्रिन हेयर ड्रेसिंग में जो हल्का सा तेल होता है, वह आपके बालों को बिना चिपचिपा बनाए स्वाभाविक रूप से संवारे रखता है।

सिल्विक्रिन आपके लिए क्यों जरूरी है

प्योर सिल्विक्रिन में वो १७ आवश्यक प्रोटीन सम्पूरक शामिल हैं जो बालों के पूर्ण स्वास्थ्य के लिए जरूरी हैं। एक वैज्ञानिक खोज से सिद्ध हो चुका है कि प्योर सिल्विक्रिन बालों की जड़ों तक पहुँच कर उनका पोषण करता है।

सिल्विक्रिन हेयर ड्रेसिंग, प्योर सिल्विक्रिन और तेल का मिश्रण होने के कारण आपके बालों को घना करने में सहायता देता है।

बालों के सौन्दर्य और सुविन्यास के लिए सिल्विक्रिन हेयर ड्रेसिंग इस्तेमाल कीजिए।

घने रेशमी बालों के लिए

सिल्विक्रिन हेयर ड्रेसिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में. सामने की दोनों कलियों के ठीक बीच में गले से नीचे मोम लगाइए व गले के नीचे चेरी का गच्छा (चित्र अनुसार) या जो भी नमूना बनाना चाहें, ट्रेस करिए. गले व मुड्ढे की कटाई बाटिक बना लेने के बाद करनी है. कलियों के भीतर भी तीन रंगों के लिए नमूना (चित्र अनुसार या अन्य किसी रूप में लें) ट्रेस कर लें.

अब सब से पहले कलियों में दिखाए गए सफेद हिस्सों पर मोम लगाइए और पूरे कपड़े को पीले रंग में रंग लीजिए. सूखने के बाद दूसरी क्रिया में चेरी के फलों को छोड़ केवल डंडियों पर मोम लगाइए. मोम से ही 'चेरी' लिखिए. फिर कलियों में आसपास की आउट-लाइन पर तथा बीच के नमूने पर जहां पीला रंग लिखा है, वहां मोम लगाइए और पूरे कपड़े को लाल रंग में रंग लीजिए.

तीसरी क्रिया में. (सूखने के बाद) 'चेरी' के फलों पर मोम लगाइए तथा कलियों की आउटलाइन में व बीच के नमूने में जहां लाल रंग लिखा है, वहां मोम लगाइए. इस के बाद काला रंग चढ़ाने पर पूरा फ्राक गहरे कत्थई रंग में तैयार हो जाएगा. बाटिक का काम समाप्त हो गया. इसे उबलते पानी में जरा सा साबुन घोल कर उस में डालिए और लकड़ी की डंडी से हिलाहिला कर पूरा मोम छुड़ा लीजिए. इस के बाद सुखा कर प्रेस कर लीजिए.

अब इसे 'मंग्यार' बांहों व गोल गले में 'ए' शेप या स्ट्रेट फ्राक की तरह काट कर सिलाई कीजिए. बटनपट्टी पीछे की ओर पूरी खुली रहेगी. गले व बांहों पर तिरछी पाइपिन काट कर भीतर की ओर लगाइए. कलियों का नमूना ट्रेस करते समय ही इस बात का ध्यान रख लेना होगा कि नीचे का 'हेम' कली के नमूने से अतिरिक्त रहे. लगभग 8 सेंटीमीटर का यह हेम बगलों की सिलाई के बाद तुरप लीजिए. फिर प्रेस करिए व बटन टांक लीजिए. एक आकर्षक फ्राक तैयार है. पूरे कपड़े में बाटिक बना कर अन्य नमूने भी बना सकती हैं. ●

मुझे शिकायत है

मुझे शिकायत है ऐसी सासों से जो पुत्र और बहू के एक साथ घूमने जाने पर यह सोचती हैं कि बहू शायद पुत्र को अपने साससुर और ससुराल के अन्य लोगों के विरुद्ध कान भरती है.

—प्रवीण चोपड़ा, कानपुर

✦

'मुझे शिकायत है उन शिक्षकों से जो विद्यार्थियों से खुली लाइन की कापी पर भी एक लाइन छोड़ कर लिखने के लिए कहते हैं. आजकल कागज इतना महंगा हो रहा है, इस का ध्यान रखते हुए कम से कम अब उन्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए.

—सुदेश मलिक, नई दिल्ली

मुझे शिकायत है उन माताओं से जो गुस्से में आ कर अपने बच्चे को खूब मारती हैं और फिर बाद में खुद रोने बैठ जाती हैं. उन्हें चाहिए कि बच्चे को प्यार से समझाएं और वह न माने तो सिर्फ डांट या एकाध थप्पड़ ही लगाएं.

—हरचरनसिंह, जमशेदपुर

✦

मुझे शिकायत है बिजली विभाग के अधिकारियों से जो अपने कार्यालय में लेखाजोखा की भली प्रकार जांच करवाने में तो असमर्थ रहते हैं लेकिन बिजली के उपभोक्ताओं को 'बिल का भुगतान नहीं हुआ' का आरोप लगा कर तरहतरह से परेशान करते रहते हैं. बाद में त्रुटि इंगित करने पर भी यह अनुभव नहीं करते कि उन की असावधानी उपभोक्ता के लिए कितनी असुविधा का कारण बनी.

—सुशील 'अनामिका,' आगरा ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कहानी • मोहम्मद इब्राहीम

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फासला

फरीदा से मुलाकात आज की नहीं, बरसों पुरानी है. उन दिनों हम लोग एक ही महल्ले में रहते थे. उस के घर और मेरे घर में यही कोई 50-60 कदम की दूरी रही होगी. फरीदा उन दिनों नौ साल की एक मासूम सी लड़की थी, पर आज वह 21 साल की युवती होगी.

हम दोनों साथसाथ प्राइमरी स्कूल में पढ़ते थे. साथ ही अरबी व उर्दू की तालीम भी ले रहे थे. वह मुझे प्यार से 'अनु' कहती थी और मैं मुसकरा कर हौले से उसे 'बेबी' कहता था. इस पर वह कृत्रिम गुस्से में कहती, "क्या मैं वाकई में बेबी हूं?" और मैं उस के इस तेवर को देखते हुए हंस कर कहता, "नहीं, भई, तू तो समझदार लड़की है, पांच फुट की." इस पर वह मुसकरा देती. ऐसे ही वातावरण में हम दोनों पल रहे थे. मैं उसे देख कर यों महसूस करता था कि वह सिर्फ मेरे लिए है, पर वे बचपन की बचकानी हरकतें थीं. वैसे भी हम दोनों एक कौम के हो कर बंटी हुई इकाई थे. वह कट्टर सुन्नी बाप की बेटी और मैं शिया बाप का बेटा. सुन्नी और शिया में तो निकाह होते ही नहीं.

अनवर और फरीदा के बीच जो बचपन का प्यार था वह जवानी में आ कर और गहरा गया लेकिन दोनों एकदूसरे के नजदीक हो कर भी बहुत दूर थे...

मैं ने कभीकभी फरीदा के अब्बा रहमान साहब की आंखों में घृणा के जलतेसुलगते चिह्न देखे थे. शायद वह मेरा और फरीदा का खेलनाकूदना पसंद नहीं करते थे. पर बचपन में बच्चे इन चीजों से अनभिज्ञ रहते हैं. मैं भी इसी चीज को समाए अनभिज्ञ रहा.

फिर कुछ दिनों के बाद अब्बा का उस शहर से तबादला हो गया और मैं अब्बाअम्मी के साथ नए शहर चला आया, पर पिछली यादें विस्मृत नहीं हो पाईं. अनवर के साथ फरीदा का अंश भी पलता जा रहा था—खाली क्षणों में उस की यादें. लगता, मैं उसे भूलने की बजाए बेहद प्यार करने लगा हूं.

पर, पढ़ाई के साथ बचपन की धुंधली तसवीरों से प्यार? कभीकभी मुझे इन हरकतों पर बहुत आश्चर्य होता था.

और इन्हीं यादों को लिए मैं जवान हो गया. कैंसर से पीड़ित होने के कारण 45 साल की उमर में अब्बा का इंतकाल हो गया और अपने पीछे वह अम्मी को और मुझे सूनेपन का अबाध सिलसिला दे गए. इस सूनेपन में अम्मी का साथ मुझे पल भर के लिए राहत दे जाता, पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इस के पीछे और भी कुछ था—एक किस्म की घुटन. सुन्नी मजलिसों में शिया का आनेजाना लोगों को भाता नहीं था. अतः ऐसी मजलिसों में मैं ने जाना ही छोड़ दिया.

सिर्फ घर और कालिज का दायरा मेरे लिए काफी था. इस दायरों में मैं भूल जाता था कि मैं शिया हूं, मैं सिर्फ दो चीजें जानता था—एक, मां के प्रति अपना उत्तरदायित्व और दूसरी, शिक्षक होने के नाते विद्यार्थियों का भविष्य निर्माण. मुझे इन दो चीजों से जुड़ते हुए किसी किस्म की बोरियत महसूस नहीं होती थी.

अम्मी भी मुझे गुमसुम देख कर चुप रहतीं और कभीकभी ममता भरे अंदाज में पूछतीं, "तबीयत खराब है क्या, बेटा?"

मैं मां के सहलाते हुए हाथों को थाम कर कहता, "अम्मी, यह शिया-सुन्नी का भेद किन लोगों ने किस मकसद

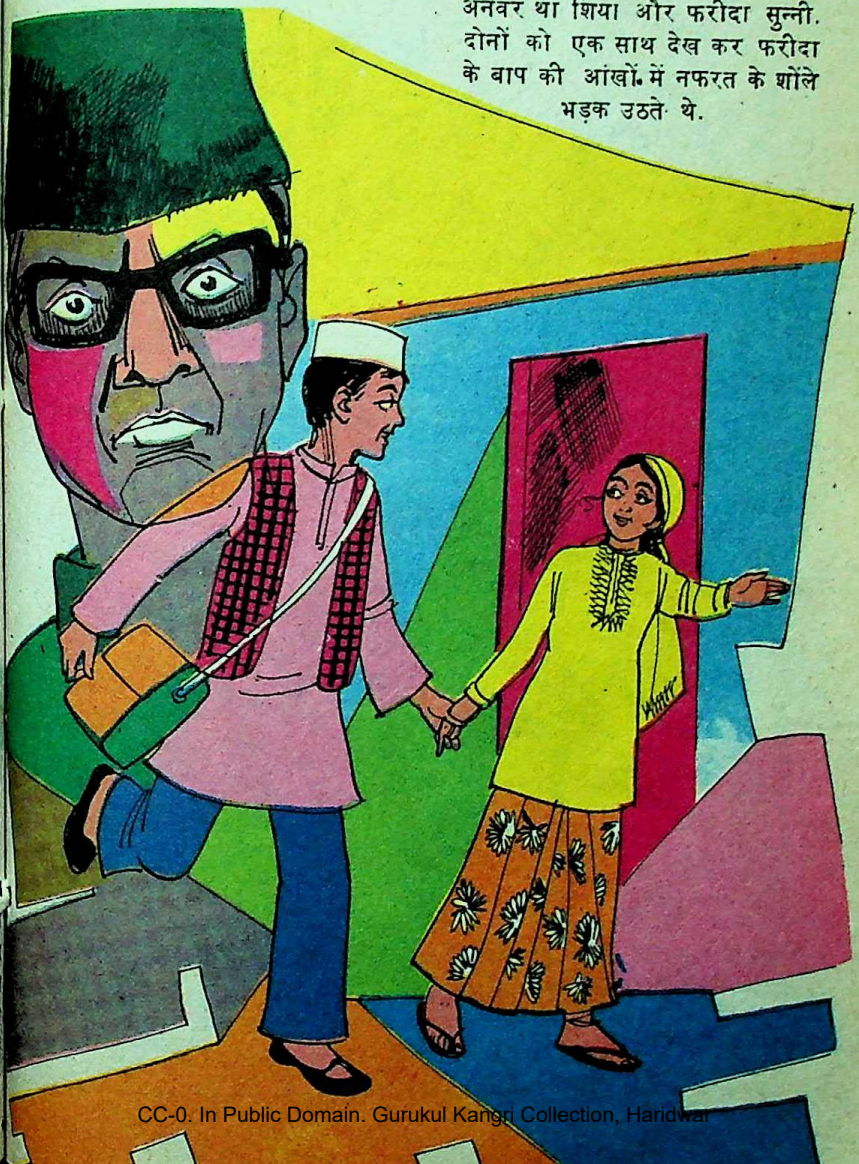

अनवर था शिया और फरीदा सुन्नी. दोनों को एक साथ देख कर फरीदा के बाप की आंखों में नफरत के शोले भड़क उठते थे.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेवर स्विश का

मौत से खेल कर "आत्मघाती छलांग" लगाना :

सर्कस के खेमे में खलबली...

हमारे मोटर साइकल-बाज की पीठ लचक गई है और पाँच मिनट में उसकी बारी है !

अब क्या होगा ? वही तो सर्कस की जान है ! उसके बिना लोग भड़क कर पैसे वापिस मांगने लगेंगे !

यह रहा शेवर स्विश ! यह काम तो वही कर सकता है।

गुडलक मेरे जाँबाज महबूब ! उफ ! हुजूर — अभी तक आपने आत्म विश्वास जगाने के लिये शेव भी नहीं की ?

स्विश की जय ! लम्बे हैंडल वाले स्विश रेज़र की पकड़ ज्यादा मज़बूत है। और यह स्विश ब्लेड ज्यादा साफ़ और ज्यादा आरामदेह दाढ़ी बनाते हैं

स्विश, "भला हो इन स्विश ब्लेड्स का ! इनकी पॉलिमर का आलेप बढ़ी अद्भुत धार इतनी तेज़ है कि ३ ब्लेड ५ साधारण ब्लेड्स का काम देते हैं।"

और अब साहेबान, देखिये, मौत का खेल — यानी आत्मघाती छलांग ! जिंदगी और मौत का खेल देखिए !

उफ़ ! देखा नहीं जाता !

लोग साँस रोके बैठे हैं। इधर मोटर साइकल ने मंदगति से छलांग ली — उधर वक्त जैसे रुक गया !

ओ..... ओह ! देखा ? स्विश का जवाब नहीं !

यह हमेशा की बात है : स्विश से दाढ़ी बनाने वाले को कोई मात नहीं दे सकता। (परन्तु आप उसके साथ शामिल अवश्य हो सकते हैं उसके अगले पराक्रम में)

mcm/ci/113 hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के लिए किया है?"

अम्मी मेरे प्रश्न को सुन कर खामोश रहतीं, मानो उन्हें भी टीस पहुंचती इन शब्दों को सुन कर. वह आहिस्ता से कहतीं, "यह तो हर कौम की बात है, बेटा! हर मजहब में विभिन्न उपजातियां होती हैं. समझ लो, हमारे मजहब में भी ऐसा कुछ है."

मैं अम्मी की तर्कहीन बातें सुन कर तसल्ली नहीं बल्कि एक तरह से घुटन और बोरियत महसूस करता था.

इन सब बातों में याद थी फरीदा की, जो आज बड़ी हो गई होगी. पर इन बातों से फरीदा को क्या लेनादेना? वह भी तो सुन्नी है. तब क्या वह उस से घृणा नहीं करती? . जरूर करती होगी.

एक प्रोफेसर की जिंदगी भी कितनी नीरस है! और घर में मां की रट, "बेटा, हड्डियां बूढ़ी हो गई हैं. शादी कर ले ताकि मुझे कुछ राहत मिल जाए."

मैं अम्मी की बातें सुनते ही खामोश हो जाता हूं. इस कुरबानी के लिए मुझे कितनी कुरबानी देनी पड़ रही है, यह अम्मी नहीं जानती. फिर भी अम्मी के दिल को तसल्ली देने के लिए मैं कह उठता हूं, "अम्मी, तुम्हें जो लड़की पसंद हो, उसे बहू बना कर ले आओ. मेरी तरफ से इनकार नहीं होगा."

इस पर अम्मी की मुसकराती आवाज आती है, "अरे, बेटा, कालिज में पढ़ाने जाता है. एक की क्या पूछो, दस मिल जाएंगी."

अम्मी के इन शब्दों पर मुझे हंसी आ जाती है, "अम्मी, मैं वहां पढ़ाने जाता हूं, लड़कियां छांटने नहीं. वैसे, अम्मी, लड़कियां यहां मिलना मुश्किल है. अगर ईरान चले जाएं तो यह मुश्किल आसान हो जाएगी. वहां सब शिया हैं, लड़की ढूंढ़ने में आसानी रहेगी."

मां मेरे इस व्यंग्य को सुन कर चुप रह जाती हैं. शायद मां को घरगृहस्थी संभालते हुए अब कष्ट होता था. वह जल्द से जल्द इस से मुक्ति पाना चाहती थीं. पर बहू मिले तो कहां?

एक दिन मैं जब कालिज से लौट कर घर आया तो अम्मी दहलीज में बेजार सी बैठी थीं. आते ही मुझे चाय का प्याला थमा कर खामोश सी मुझे देखने लगीं.

"आज बहुत ज्यादा खामोश हो, अम्मी?" मैं ने हौले से मुसकरा कर पूछा.

"क्या करूं, अनवर, ज्यादा बोल कर? तेरे अब्बा के इंतकाल के बाद मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता. सोचती हूं, कहीं जा कर दोचार दिन रह आऊं. इस से आबोहवा बदल जाएगी."

मैं ने कह दिया, "जैसी आप की मरजी. कल सवेरे की गाड़ी से रवाना कर दूंगा."

दूसरे दिन सवेरे मैं अम्मी को ले कर स्टेशन पर पहुंच गया और वेटिंग रूम में सारा सामान रखवा कर मैं उन के पास बैठ गया. ट्रेन आने में एक घंटे की देरी थी.

"आज कालिज नहीं जाएगा, अनवर?"

"आज मेरा पांचवां पीरियड है. अतः दो बजे के बाद ही जाऊंगा," मैं ने नीरस भाव से कहा.

अचानक अम्मी किसी को देख कर उसी ओर चली गईं. मैं उन के इस अप्रत्याशित चले जाने से चौंक गया. अम्मी दूर किसी से बातें करने में मशगूल थीं. मैं भी अनिच्छा से उठ कर उधर ही चला गया.

अम्मी उन्हें मुझे दिखा कर कहने लगीं, "वह अनवर है."

मैं विस्मय से उन तीनों को देखने लगा. उन में दो तो बुजुर्ग थे और तीसरी 20-21 साल की एक युवती.

"अरे, इन्हें नहीं पहचाना, अनवर? ये तेरे फूफाफूफी रहमान और जुबेदा हैं, और यह फरीदा," अम्मी ने कहा.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं फरीदा के नाम से चौंका. फिर संभलते हुए मैं ने उन दोनों को सलाम किया.

अम्मी और रहमान में बातें हो रही थीं और मैं फरीदा को देखे जा रहा था. गोरीचिट्टी बाकायदा पांच फुट की युवती. साथ ही आईं बचपन की यादें. अचानक रहमान ने कहा, "कहां काम करते हो, बरखुरदार?"

"यहीं डिग्री कालिज में प्रोफेसर हूं," मैं ने अनमने ढंग से कहा.

"वाह, मियां! तरक्की कर गए, पर अब तक दुलहन नहीं लाए. सकीना यही शिकायत कर रही थीं."

इस प्रश्न पर फरीदा हंस दी और मैं भौचक्का सा दोनों को देखने लगा.

"फरीदा कहां तक पढ़ी है?" मैं ने बेकार प्रश्नों को टालने की गरज से कहा.

इस का उत्तर स्वयं फरीदा ने दिया, "मैट्रिक तक पढ़ी हूं, अनु!"

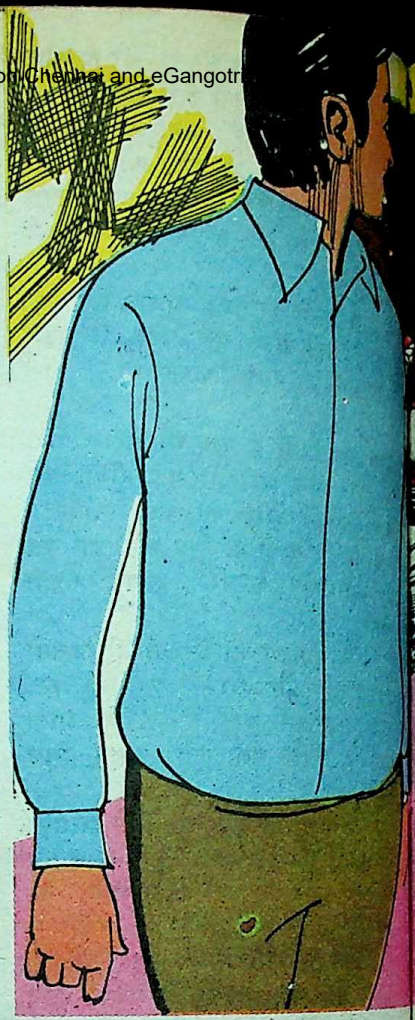

अम्मी अजमेर से लौटीं तो उन के चहरे पर मुरदनी छाई हुई थी. उन्होंने मायूसी से कहा, "वे अपनी बेटी शिया लोगों को नहीं देना चाहते." यह सुन कर अनवर को एक झटका लगा.

'अनु!'... बचपन में फरीदा मुझे इसी नाम से संबोधित करती थी. आज ग्यारह सालों बाद इसी नाम को सुनने में कितना आनंद आया!

"फरीदा की शादी हुई है या नहीं, फूफा?" मैं ने दोबारा प्रश्न किया.

"इस साल हो जाएगी, बेटा! लड़का देख रहे थे. एक नजर में आया है." फिर बातों के रुख को बदल कर उन्होंने कहा, "तुम लोगों को काफी याद करती थी फरीदा, और आज तुम लोगों को देख कर बड़ी खुश हुई."

मैं कुछ कहने की बजाए चुप रहा. मां इधर आ कर धीरे से कह उठीं, "भाई जान अजमेर जा रहे हैं. मैं भी इन्हीं लोगों के साथ चली जाऊंगी. अच्छा रहेगा, तू अजमेर का ही टिकट ला दे."

अजमेर का टिकट ला कर मैं ने अम्मी को दे दिया. अम्मी को रुखसत कर के मैं घर वापस आ गया.

आज का दिन मुझे अन्य दिनों की अपेक्षा स्वस्थ और सुंदर लग रहा था.

दो बजे के करीब मैं ने कालिज में पांचवां पीरियड लिया और अनमने ढंग से पढ़ा कर घर आ गया.

20 दिनों के बाद अम्मी अजमेर से लौटीं तो उन के चेहरे पर खुशी के बदले एक किस्म की मुरदनी थी. जब मैं ने उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

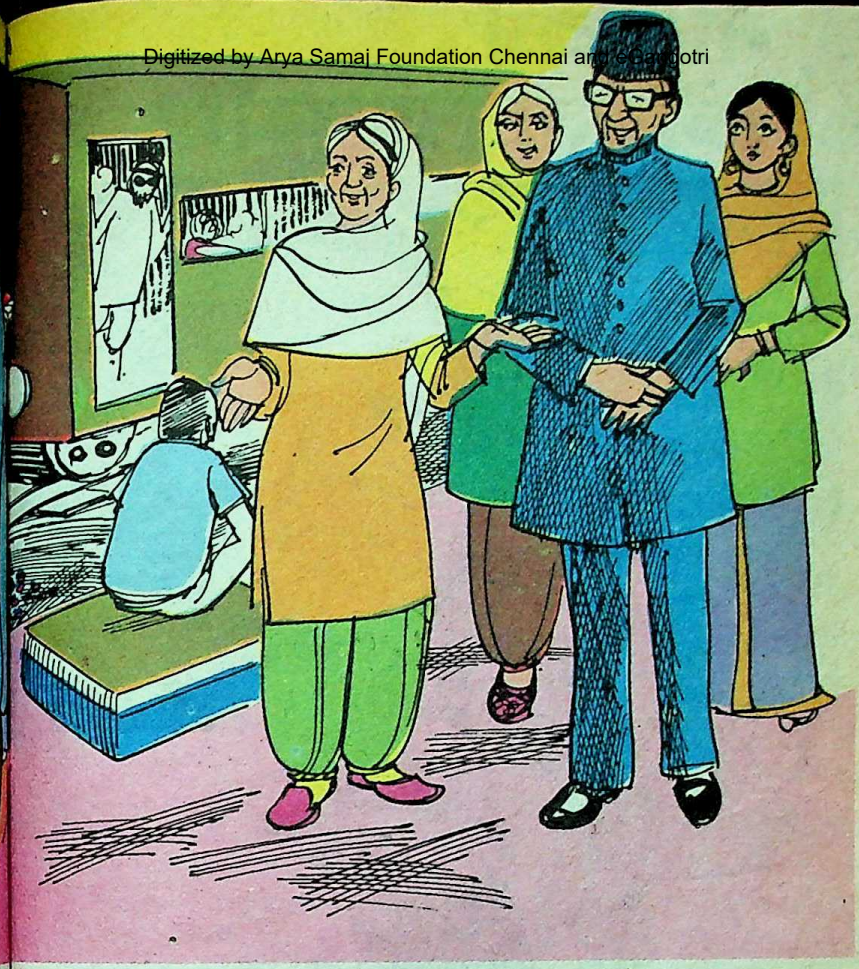

से पूछा तो उन्होंने मायूसी से कहा, "अनवर, उन लोगों ने मुझे डांट दिया. वे अपनी बेटी शिया लोगों को नहीं देना चाहते. लेकिन फरीदा को मंजूर है यह रिश्ता. सही मायने में वह नेकदिल लड़की है."

अम्मी के इस उत्तर से मेरे सपनों को झटका लगा. वाह रे हमारी कौम! यहां चचेरे भाईबहनों में शादी हो सकती है, पर अपनी ही कौम के दूसरे अंग से नहीं. जी में आया कि फरीदा को भगा कर ले आऊं, पर नहीं. इस से मेरे सम्मान को धक्का लगेगा. एक बार फिर मायूसी ने मुझे जकड़ लिया.

अचानक एक दिन मुझे फरीदा के निकाह का कार्ड मिला. दिल में आया कि न जाऊं. निकाह में जा कर मिलेगा भी क्या? जो मिलना था, वह तो मिल ही गया. फिर भी निश्चय कर लिया कि जरूर जाऊंगा निकाह में. ठीक निकाह के दिन पहुंचूंगा और शाम तक लौट आऊंगा. दो दिन की छुट्टी की अर्जी मैं ने कालिज भिजवा दी.

लखनऊ पहुंच कर मैं ने जो कुछ देखा, उस से मैं सकते में आ गया. ऐन निकाह के वक्त लड़के के अब्बा ने फरीदा के अब्बा से जो कुछ कहा, उस को सुन कर उन के होश उड़ गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीबू की कोमल ताज़गी !

ज़रा सोचिए तो त्वचा को नाज़ुक, मुलायम बनाने वाली एक ऐसी कोल्ड क्रीम के बारे में जिसमें मौजूद हो बिना चिपचिपाहट वाली नीबू की ताज़गी . . . पेश है अब, नई लेमन पाण्ड्स कोल्ड क्रीम !

इसमें गर्मियों के लिए सौंदर्य-तेलों का अनुकूल मिश्रण है. बिना चिपचिपाहट यह त्वचा को मुलायम कर देती है. कोमल नीबू के मुलायम स्पर्श से अपनी त्वचा संवारिए. यह एक ताज़गीदायक नया उत्पादन है !

पाण्ड्स लेमन कोल्ड क्रीम

त्वचा की कोमल ताज़गी के लिए

भारत में निर्माता चीज़ब्रो-पाण्ड्स इन्क. मद्रास ४४ (सीमित दायित्व के साथ यू. एस. ए. में स्थापित) ट्रेडमार्क रजि.

लिटास-CPC/LC. 1-77 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैं अपनी कुरसी से उठ कर उन के पास आया, "ये लोग क्या कह रहे हैं, फूफा?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"15० हजार की मांग है, अनवर! मैं कहां से लाऊं, बेटा, इतने पैसे?"

"मैं दूंगा, फूफा!" मैं ने निश्चयात्मक स्वर में कहा.

"तुम?"

"हां, मैं. मगर पैसे यहां तो हैं नहीं, घर से लाने पड़ेंगे," मैं ने कहा.

इधर लड़के के अब्बा ने शोर मचाना शुरू कर दिया, "रुपए तो हमें फौरन चाहिए."

मुझे क्षण भर के लिए गुस्सा आया. जी में आया एक तमाचा रसीद कर दूं इस लालची के मुंह पर, खून का घूंट पीते हुए मैं ने कहा, "देखिए, आप को मुझ पर विश्वास नहीं है तो मैं लिख कर दे सकता हूं. इस शादी के 24 घंटों के अंदर आप को पैसे मिल जाएंगे. मेहरबानी कर के निकाह न रोकिए."

मेरे इस प्रस्ताव को उन्होंने मान लिया.

अचानक औरतों के हुजूम में से शोर उठा. मुझे स्वयं चौंकना पड़ा, सामने से आती हुई फरीदा को देख कर.

"अब्बा, मैं यह शादी नहीं करूंगी. यह सौदा है, महज सौदा, निकाह नहीं. इन लोगों को पैसा चाहिए."

"यह तू क्या कह रही है, फरीदा?" रहमान कांपते हुए कह उठे.

"एक बार जो कह दिया, उस पर मैं दृढ़ हूं. मुझे यह निकाह मंजूर नहीं. मैं उस इनसान से निकाह करना चाहती हूं जो किसी की मजबूरी का फायदा नहीं उठाना चाहता बल्कि उस की मजबूरियों को अपने हिस्से में बांट लेता है. मैं अनु से निकाह करूंगी."

"फरीदा, यह क्या कह रही हो? मैं शिया हूं और तुम सुन्नी हो," मैं ने कहा.

"तुम्हारी भावनाएं दब गई हैं, अनु! तुम्हारे जेहन में सिर्फ शिया होने की चोट है. आदमी मजहब और जातों में बंटने से पहले कुछ और होता है, और वह है इनसान," फरीदा ने जोर से कहा.

फरीदा की इस हरकत से मजलिस में हड़कंप मच गया. लड़के के अब्बा, मियां मंसूर चीखचीख कर कहने लगे, "यह लड़की बेहया है जो सरे आम बेपरदा हो कर निकल आई है. मुझे ऐसी लड़की से अपने बेटे का निकाह नहीं करना है."

मियां मंसूर की बातों को सुन कर मैं चुप न रह सका. आवेश में भर कर मैं बोला, "मियां, आप जबान संभाल कर बात करिए. सही बात कहने पर आप उसे बेहया कह रहे हैं. आप जो खुले आम 15 हजार रुपए के लिए हाथ फैला रहे हैं, गला दबा रहे हैं, यह क्या बेहयाई नहीं है?"

मजलिस में मेरी इस आवाज से क्षण भर के लिए सन्नाटा रहा. फिर मियां मंसूर अपने लड़के को मसनद से उठा कर बाहर ले गए और इस के साथ एकएक कर के सारे बराती लौटने लगे. उन्हें रोकने का प्रयत्न किसी ने भी नहीं किया.

क्षण भर हताश रहने के बाद मैं ने खीझ भरे स्वर में कहा, "तुम ने बहुत गलत निर्णय ले लिया, फरीदा! मैं फूफा को रुपए देने का वादा कर ही चुका था."

"मैं ने गलत निर्णय नहीं लिया है, अनु, सही निर्णय लिया है. आज तुम 15 हजार रुपए दे देते, पर कल उन की बढ़ती मांगों को पूरा नहीं कर सकते थे."

"पर तुम्हारे बोलने से कुछ नहीं होता. फूफा का फैसला भी तो होना चाहिए."

रहमान फूफा ने कुछ कहने की बजाए हमारे निर्णय को मुसकरा कर मान्यता दे दी.

जो फासला मुझे लंबा लग रहा था, आज स्वयं फरीदा ने उसे खत्म कर दिया. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तुम्हारी याद.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न जाने कौन कब
छू गया मन का सरोवर,
मचलते वृत्त
व्याकुल हो गए हैं.

उस पार
गरम सांसों के जंगल में
वे चांदनी रातें
तैरती नावें
भटके बनपाखी
तुम्हें भी याद होंगे—
जब मिली थी सार्थकता
तुम्हारा साथ पा कर.

फिर हवा ने आज
गुपचुप बांसुरी बजाई है,
तुम्हारी याद
प्रार्थना बन कर
अधर पर लौट आई है.

—क्षमा चतुर्वेदी

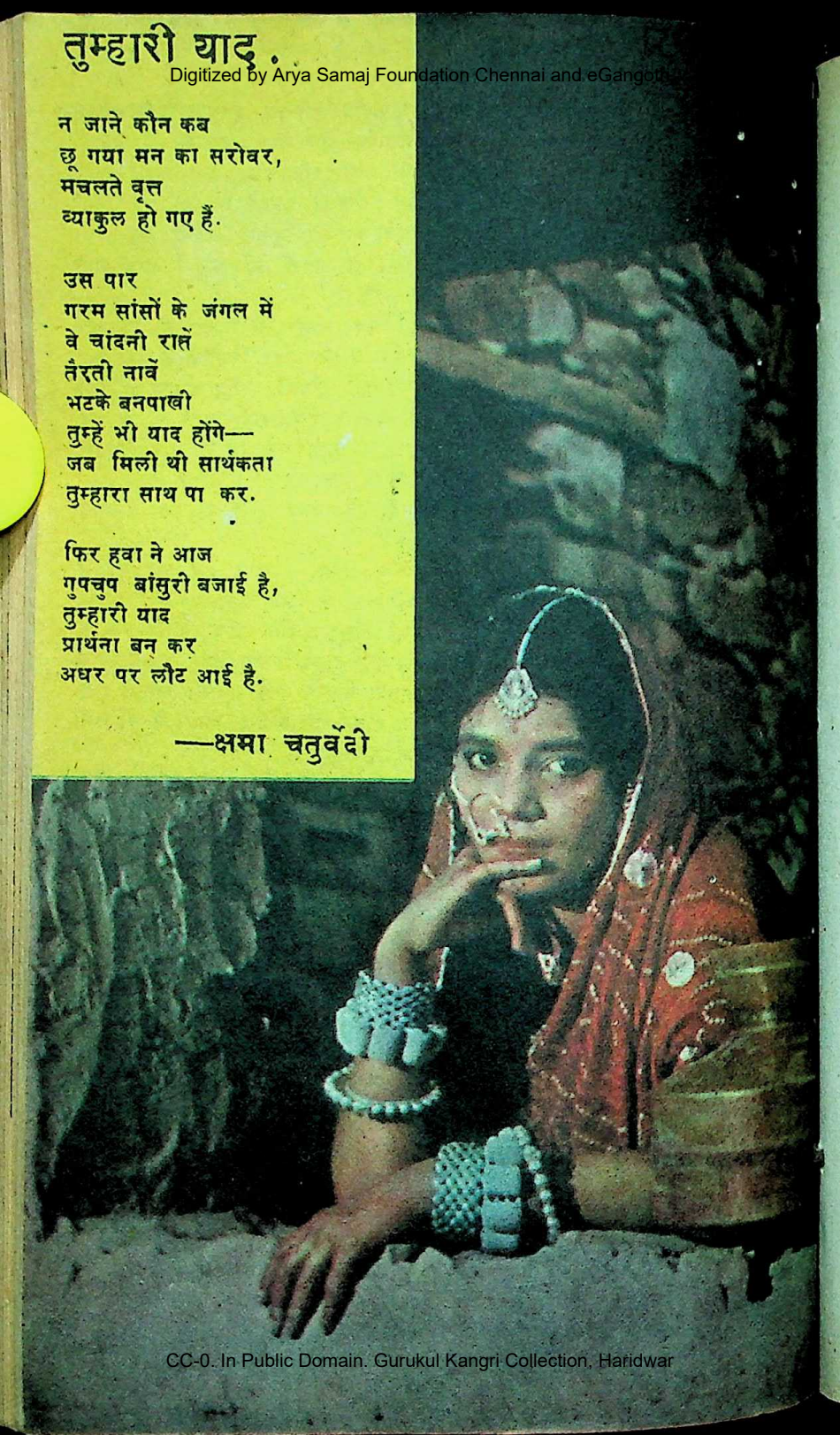

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

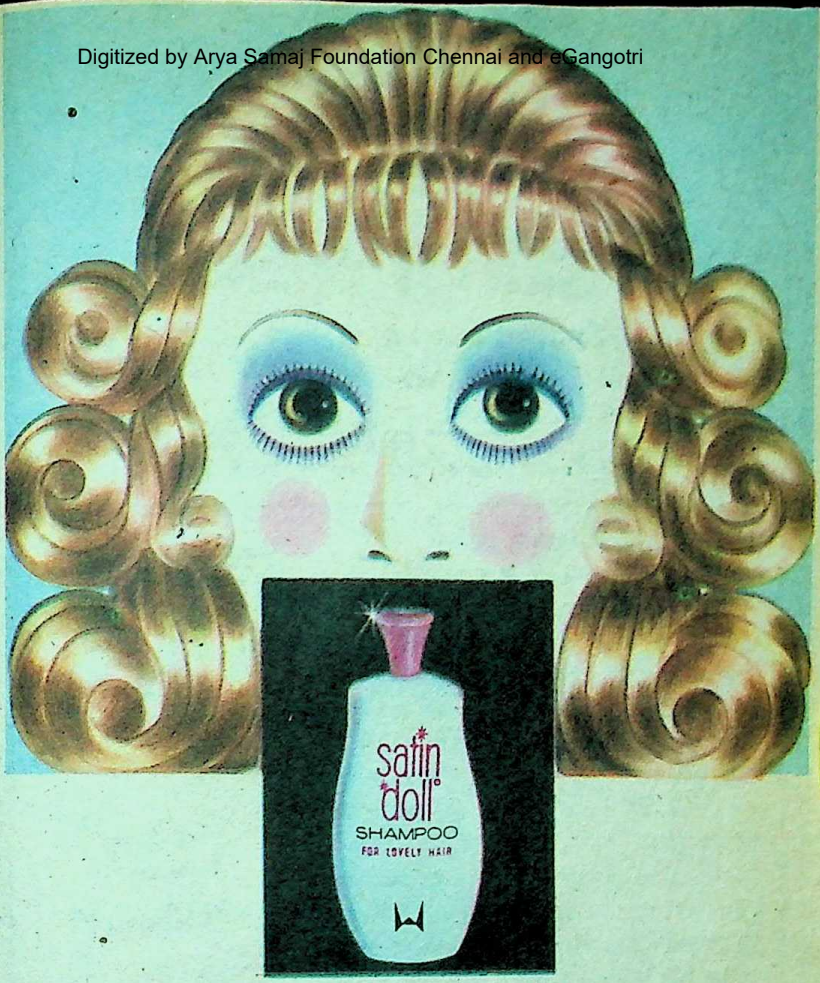

नया कॉन्सन्ट्रेटेड

सॅटिन डॉल शैम्पू

तुम जैसी प्यारी परियों के लिए!

ज़्यादा असरदार कॉन्सन्ट्रेटेड शैम्पू • साफ रेशम से मुलायम बालों के लिए भरपूर झाग देता है.

• बालों को फूलों सी भीनी भीनी महक देता है.

everest/823/ACW-hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हफ़्ते का हर दिन (फ़लों की लज़्ज़त से भरपूर) रेक्स जेली का दिन!

बनाने में बिल्कुल आसान...
न दूध की ज़रूरत, न शक्कर की।

१ पिन्ट पानी उबालिए और उसमे १ पैकेट रेक्स जेली क्रिस्टल डालिए। क्रिस्टल घुल जाएँ तो कुछ देर ठंडा कीजिए और उसके बाद रॅफ़्रिजिरेटर में या बर्फ़ पर रख दीजिए जमाने को। जब अच्छी तरह जम जाए तो परोस दीजिए खाने को। चाहे तो ऐसे, या फिर फल, कस्टर्ड, केक, रबड़ी और खीर जिसके साथ आप चाहें, वैसे। देखा, न चीनी की ज़रूरत पड़ी न दूध की।

बढ़िया पदार्थों और सावधानी से तैयार किए रेक्स जेली क्रिस्टल्स बहुत ही बढ़िया जेली क्रिस्टल्स हैं। रेक्स जेली का १ पैकेट हमेशा घर में रखिए—हफ़्ते के हर दिन पुडिंग और डॅज़र्ट्स की लज़्ज़त चखिए!

रेक्स

जेली क्रिस्टल्स

कॉर्न प्रॉडक्ट्स कम्पनी (इंडिया) प्रायवेट लिमिटेड, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

OBM-1893 Hin.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया राज नया अन्दाज़!

सोमवार की सौग़ात

चेरी
बच्चों के मूँ लगी।
छोटी छोटी प्लेटों में
लबालब भरी
...हर एक के लिए
अलग अलग !

मंगलवार का मनोरंजन

अनानास
क्या खट्टी खट्टी
मिठास !
थोड़ी और...
थोड़ी और...
थोड़ी और.....

बुधवार की बहार

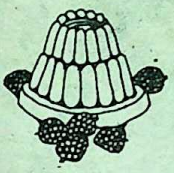

रास्पबॅरी
चमकीली लाल लाल...
जब भी जी चाहे
खाइए,
खिलाइए !

बृहस्पतिवार का बोनस

स्ट्रॉबरी
फिर काहे की देरी
दादी माँ को
बेहद भाए.
औरों का भी
जी ललचाए !

शुक्रवार की शान

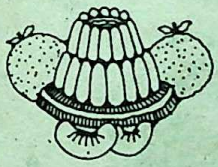

संतरा
रस भरा खटमिठ्ठा
स्वाद, जो देर तक
रहे याद !

शनिवार की सनसनी

नीबू
का चटख़ारा
क्या मज़ा
आता है।

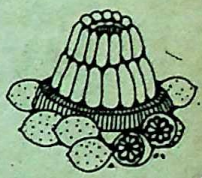

रविवार की राहत

रेक्स फलों के स्वाद वाली जेली—घर भर की चाहत,
क्रीम और नट्स के साथ. लज़्ज़त ही लज़्ज़त।
ढेर सारी बनाइएगा !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नयन में खिंचने लगे...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी की याद का जंगल.

कस गए मुझ पर
किसी के मरमरी घेरे,
नयन में खिंचने लगे
फिर रेशमी डोरे,
छू गया मुझ को
किसी का धनुकिया आंचल.

स्वास होंठों पर किसी की
फिर लगी तपने,
गंध मेहंदी की मेरे
अस्तित्व पर रचने,
हृदय के गंभीर जल में
हो गई हलचल.

विकल कितना हो गया है
आज अंतर्मन,
फिर नुकीला हो गया है
आज सूनापन,
छलने को हो गया आतुर
मेरा दृगजल.

—अखिलेश 'अंजुम'

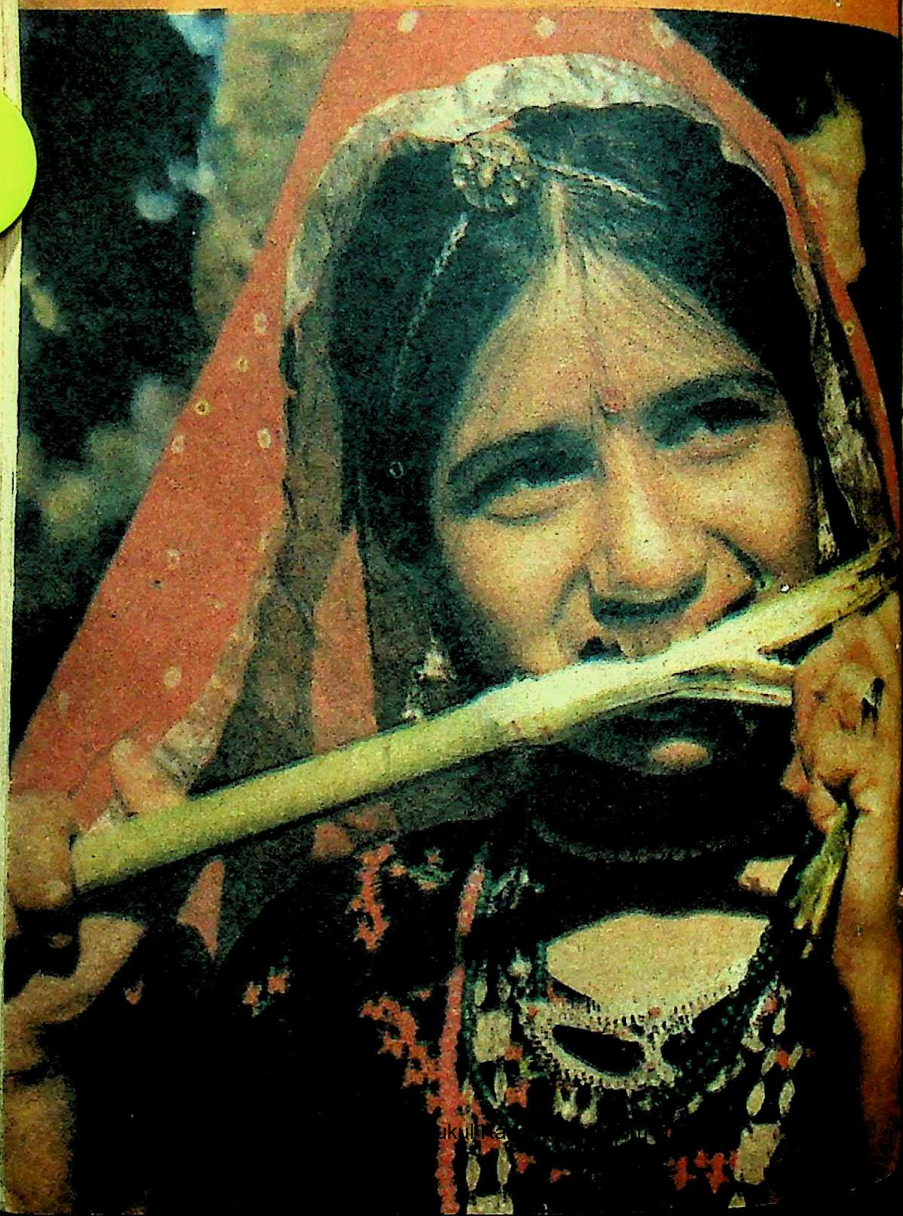

akulka

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • सावित्रीदेवी वर्मा

पति द्वारा इच्छाओं और भावनाओं का सम्मान न करने पर कहीं...

पत्नी गुमराह न हो जाए!

जमाना बड़ी तेजी के साथ बदल रहा है. अब शिक्षित वर्ग में महिलाएं चारदीवारी के अंदर बंद नहीं हैं. वे भी सब क्षेत्रों में पुरुषों के कंधे से कंधा मिला कर होड़ करने के लिए खड़ी हैं. ऐसी सूरत में उन के मित्रों का दायरा बढ़ गया है. अब न केवल महिलाएं ही बल्कि उन के सहयोगी पुरुष भी उन के मित्र हैं. इस में कोई बुराई तो है नहीं. हां, पति को तुलनात्मक दृष्टि से परखने का नारी को अधिक मौका मिलने लगा है. अब मैथिलीशरण गुप्त का यह कथन उन्हें सचेत करता है कि :

"नरकृत शास्त्रों के सब बंधन हैं नारी ही को ले कर,
अपने लिए सभी सुविधाएं पहले ही कर बैठा नर."

सच है, पुरुषों ने अपनी सुविधा के लिए नियम, आदर्श और धर्म व कर्तव्य के पाठ केवल स्त्रियों तक ही सीमित रखे हैं और अपने लिए पूर्ण स्वतंत्रता की सुविधा बना छोड़ी है. परिवर्तनशील संसार में अब चाक घूमने पर प्रकाश की ओर पहुंचा है. नारियों ने इन बंधनों को तोड़ फेंका है. अब तो पतिपत्नी का संबंध मित्रता के स्तर पर ही दृढ़ रहता है. परस्पर संतुलित आदानप्रदान, सुखदुख का संगी भाव, सम्मान और विश्वास ही प्रेम की आधारशिला को मजबूत बनाते हैं. अब अपने अधिकार या डंडे के जोर पर पति पत्नी का मन नहीं जीत सकता. पत्नी आप से मित्र भाव, हमदर्दी और एक प्रेमी के व्यवहार की अपेक्षा करती है. इन के अभाव में पत्नी कुढ़ती है, उसे अपना वैवाहिक जीवन कटु और एक बंधन लगता है जिस में वह एक हिरनी की तरह तड़पती है. ऐसा अनुभव होने पर मार्ग में प्रलोभन आने पर लोकलाज को तिलांजलि दे कर किसी ऐसे पुरुष को, जिस से उस के मन की भूख शांत हो सके, मन दे बैठती हैं. वह मार्ग से बहक जाती है. उस का मन पति से उखड़ा तो रहता ही है, ऐसे मौके पर हमदर्दी जताने वाले किसी सहयोगी या पति के मित्र, बहनोई, ननदोई, देवर आदि के संग मित्रभाव और आकर्षण बढ़ जाता है.

यदि ऐसे कगार पर खड़ी पत्नी को पति, अपनी भूल समझ में आने पर, प्रेम और विश्वास में लपेट ले तो बिगड़ी बात सुधर जाती है, अन्यथा पति को उमर भर पछताना पड़ता है. पत्नी बहुत भावुक होती है. उसे पति का आदरभाव, विश्वास, सहारा, मित्रता बड़ीबड़ी मुसीबतें सहने का आत्मबल देता है. लेकिन यदि उस का पति अपनी ऐसी सेवापरायण जीवनसंगिनी की बेकद्री करता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उस की रुचि और सेवा की उपेक्षा करता रहा है, उसे घर की दासी मात्र समझता है तो वह धनवभव में रह कर भी असंतुष्ट रहती है. सभी नारियों में संतान और पतिप्रेम का बड़ा भारी बंधन है, वह लोकलाज से भी बंधी है. इन्हीं कारणों से बहुत सी महिलाएं कराहता हुआ जीवन बिताते हुए भी अपने भाग्य को दोष दे कर जिंदगी काट देती हैं. पर ऐसी स्थिति पुरुष के लिए बहुत लज्जा की बात है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमुखता के कारण

नीचे मैं उन मुख्यमुख्य कारणों का संक्षेप में विवेचन करती हूं, जिन की वजह से पत्नियां पति से विमुख हो जाती हैं और प्रलोभन में पड़ जाती हैं.

सभी नारियों को मन का मीत चाहिए पर मानसिक तृप्ति के साथ ही वे शारीरिक तुष्टि की भी कामना करती हैं. इसलिए जीवनसाथी के चुनाव के समय कदकाठ, उमर का अंतर, रूपरंग, रुचि और योग्यता की परख होनी जरूरी है. एक हृष्टपुष्ट, पूर्ण विकसित सुंदर युवती का विवाह यदि दुबलेपतले, कुरूप अधेड़ उमर के व्यक्ति से हो जाएगा तो चाहे वह कितना भी धनी हो, पत्नी को तृप्ति नहीं दे सकता. ऐसे पति भी हीन भावना से ग्रस्त रहते हैं. कई पुरुष स्वस्थ और सुंदर तो होते हैं, उन की आमदनी भी अच्छी होती है पर शारीरिक स्वच्छता की ओर ध्यान नहीं देते. उन के शरीर से पसीने की गंध और मुंह से पायरिया की बास आती है, उन के प्रेमव्यवहार में कोमलता का अभाव रहता है. उन की 'अप्रोच' बड़ी बेहूदी होती है. काम विषयक रुचि की संतुष्टि की ओर से बेपरवा होना पत्नी को शारीरिक तुष्टि नहीं दे पाता. काम क्रीड़ा अपनेआप में एक कला है. जो पति इस में निपुण होते हैं, वे अपनी पत्नी को हमेशा प्रफुल्ल रखते हैं.

इस से दोनों की मानसिक और शारीरिक तुष्टि होती है. देखने में आता है कि यदि जवानी के दिन इस प्रकार की तुष्टि और आनंद में बीत जाएं और पति-पत्नी में परस्पर विश्वास और एकरूपता स्थापित हो जाए तो प्रौढ़ावस्था के बाद कई पुरुष जब शारीरिक रूप से दुर्बल या अयोग्य हो जाते हैं तब भी उन की स्वस्थ और सुंदर पत्नी प्रेम और विश्वास की दृढ़ शिला पर खड़ी होने के कारण एक पुरुषव्रती ही बनी रहती है. वह कभी बहकती नहीं.

पत्नी की मदद

आजकल के जमाने में जब कि केवल दोतीन संतानें ही पैदा करना उपयुक्त समझा जाता है और नारियां अपनी काया की सुडौलता और रूपरंग का विशेष ध्यान रखती हैं, वे पचास वर्ष की उमर में भी काफी आकर्षक दिखती हैं. पुरुष को इस उमर में नारी की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए. वह उस के गुणों की प्रशंसा करे. एकांत में बैठ कर कुछ हंसी-मजाक, प्रेमालाप भी करे. उस के सुंदर व्यक्तित्व की सराहना करे. वार्षिक छुट्टियां उस की रुचि के अनुसार कहीं बाहर बिताए. इस से जीवन में ताजगी आ जाती है. शाम को साथसाथ घूमने जाना चाहिए. इस से समय खुशीखुशी कटता है.

दैनिक जीवन में पत्नी का हाथ बंटाने या सलाह लेने से भी नारी को आत्मतुष्टि मिलती है. यह सब बातें बुढ़ापे को रंगीन बना देती हैं. पर आम तौर पर इस के विपरीत देखने में आता है. पति को अपने व्यवसाय से फुरसत नहीं कि पत्नी की ओर ध्यान दे. सरकारी नौकरी से रिटायर हो कर कई पति इतने नीरस हो जाते हैं कि पत्नी उन के लिए घर की केवल व्यवस्थापिका मात्र रह जाती है. इस का परिणाम यह होता है कि जीवन में ऊब भर जाती है और पत्नी प्रशंसा और जिंदादिली के लिए अन्य पुरुषों में रुचि लेने लगती है. जो महिलाएं वैवाहिक जीवन से विरक्त हो जाती हैं, वे संतानों में रुचि लेने लगती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Interpub/BB/48/74 hin

बिन्नी आपके लिए पेश करती है नाना प्रकार के मोहक टेरीन मिश्रित कपड़े जिससे आप अवसर के अनुकूल परिधान पहन सकें— खास तौर से अविस्मरणीय अवसरों पर।

हम काफी बदल गये हैं-
आपकी तरह!

बिन्नी टेरीन® मिश्रित

®कैम्फी का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेरिडॉन और सरदर्द

सरदर्द का मुक़ाबला सेरिडॉन से कीजिए. सिर्फ़ एक टिकिया काफ़ी है. केवल सेरिडॉन ऐसे ख़ास नुसख़े से तैयार की गयी है जो सरदर्द, शरीरदर्द, तनाव और तकलीफ़ से छुटकारा दिलाती है और आप आराम, चैन और ताज़गी महसूस करते हैं. यह है रोश का अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान जो हमेशा आपकी सेवा में लगा है.

सिर्फ़ एक **सेरिडॉन** और आपका सरदर्द ग़ायब.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाओं के लिए विवाह गुनाह बेलज्जत ही हो जाता है. [illegible] ऐसे स्वार्थी, निर्मम और क्रूर आदमी के साथ हम ने यौवन के सुंदर दिन कैसे बिताएं! भावुक महिलाओं को ऐसे पति का संग बुरा लगता है.

गर्भवती से व्यवहार

पत्नी जब गर्भवती या बीमार हो तो पति उस के प्रति विशेष सहानुभूति दिखाए. मैं कई पुरुषों को जानती हूं जो अपनी गर्भवती पत्नी की बेहद उपेक्षा करते हैं. वह रोरो कर दिन काटती है और तड़पतड़प कर पति को बुराभला कहती है. यदि ऐसे मौके पर उस के पीहर वाले न संभालें तो वह सचमुच मर ही जाए. हर सवा साल बाद

रोक नहीं लगा सकते तो फिर गर्भवती पत्नी के प्रति यह उपेक्षापूर्ण व्यवहार कहां तक ठीक होगा? ऐसे पति से वह लोकलाज के मारे चाहे निभाए चली जाए पर मन ही मन वह कराहती है कि हाय, शरीर तो ब्याहा गया पर मन की साध कुंआरी ही रह गई.

सब के सामने पत्नी पर रोब गांठना, अपनी मां, बहन और भाभी के सामने डांटडपट करना उचित नहीं है. यह दिखाना कि मैं ने बीवी पर कितना रोब रखा हुआ है और मां को यह कहने का मौका देना कि मेरा बेटा बीवी का गुलाम नहीं है, कोई अच्छी बात नहीं है. अगर पुरुष अपनी सुघड़ पत्नी को अपनी वासना की पूर्ति का साधन और घर की व्यवस्थापिका मात्र समझता है तो वह अपनी पत्नी का मन नहीं जीत सकता है, केवल शरीर का मालिक बन कर ही रह जाता है.

जो पति हमेशा पत्नी की आलोचना करते रहते हैं, दूसरों की पत्नियों के संग उन की तुलना कर उन की कमियों का

आप अपनी पत्नी पर नियंत्रण रख सकते है लेकिन डांटफटकार कर नहीं, प्यार से.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ही उल्लेख करते रहते हैं, वे मात्र मूर्ख करते हैं. इस के अतिरिक्त कई पति बड़े गैरजिम्मेदार और कंजूस होते हैं. घर में नौकर नहीं है, राशन नहीं है, बच्चे बीमार हैं, तब भी वे कुछ उचित व्यवस्था नहीं करते. यहां तक कि सहयोग भी नहीं देना चाहते. बस, काम का बहाना कर के दफ्तर से देर से आएंगे. ऐसी सूरत में पत्नी को किसी पड़ोसी का सहारा लेना पड़ता है. जो व्यक्ति दुख के समय किसी महिला को सहयोग देता रहेगा, उस के प्रति स्त्री का झुकाव हो जाना स्वाभाविक है. इस दुर्बलता को परपुरुष भी समझ जाता है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति की उपेक्षा के कारण

कई बार समदुखी व्यक्ति पड़ोसी या मित्र भी एकदूसरे के प्रति सहज ही अनुरक्त हो जाते हैं. जब अपने पति से उपेक्षित या सताई गई पत्नी अपनी बहन, सखी, ननद, सहेली और पड़ोसिन को उस के पति के द्वारा सम्मानित होते और स्नेहसूत्र में बंधी देखती है तो उसे भी उस सुख को पाने की लालसा लगी रहती है. जो महामूर्ख पति होते हैं, वे सब के सामने अपनी पत्नी का तिरस्कार करते हैं, उसे डांटते रहते हैं, छोटीछोटी भूल या अज्ञानता पर उस की मजाक उड़ाते हैं, उस के रूपरंग की आलोचना करते हैं, उस के भोजन या गृहव्यवस्था में खामियां निकालते हैं, उसे प्रायः जलीकटी सुनाते हैं तो उन की पत्नी उन के प्रति बहुत कटु हो जाती है और वह किसी परिजन के प्रति जो उसे सहानुभूति दिखाता है, उस पर तरस खाता है, उसे सहयोग देता है, धीरेधीरे अनुरक्त होने लगती है.

यदि पति दुराचारी और व्यसनी हो तो उस की पत्नी दुखी हो कर परपुरुष के प्रति अनुरक्त हो जाती है या फिर तलाक का मार्ग अपनाती है. कई मूर्ख पति 'आधुनिक' कहलाने की धुन में पहले अपनी पत्नी को बहुत अधिक आजादी दे देते हैं, क्लब में ले जा कर पीनेपिलाने, [illegible] कर उत्तर देने की प्रेरणा देते हैं. इस में [illegible] स्वार्थ होता है. वे यही आजादी अपने मित्रों की पत्नियों के साथ लेते हैं. पर धीरेधीरे उन की पत्नी इस रंग में इतनी रंग जाती है कि वह मर्यादा का उल्लंघन कर जाती है. हाथ से छूटा हुआ तीर फिर वापस नहीं आता.

कामकाज में व्यस्त पति

कई पुरुष तरक्की पाने के लिए अपनी पत्नी को माध्यम बनाते हैं. उस के मारफत अपने अफसर से सिफारिश करवाते हैं. ऐसे अफसर आसानी से उस सुंदरी को अपना शिकार बना लेते हैं. पति आंखें मूंदे रहते हैं. इस से पत्नी को पति की दुर्बलता का पता चल जाता है.

कई व्यवसायी पति धन कमाने में इतने मशगूल रहते हैं कि उन्हें पत्नी की ओर ध्यान देने की फुरसत ही नहीं रहती. वह शापिंग के लिए जाना चाहती है, कार चलाना सीखना चाहती है, सिनेमा देखने का शौक रखती है लेकिन व्यस्त पति महोदय अपने किसी जूनियर को यह सब काम सौंप देते हैं. वह नवयुवक शौकीन मेम साहब का अर्दली बनने में ही फायदा समझता है, क्योंकि इस तरह उस की तरक्की भी होने की संभावना रहती है और मेम साहब उस की बांहों के घेरे में भी आ सकती हैं. अब आप ही सोचिए, एक शौकीन नवयुवती और सुंदर नौजवान का साथ, जो हरदम जी-हुजूरी करता रहे, दोनों को एकदूसरे के कितने समीप ला देता है. कुछ दिनों में यह घनिष्ठता प्रेम में बदल जाती है और अपनी पत्नी को खुश देख कर पति भी संतुष्ट हो जाता है. पत्नी तो खैर संतुष्ट रहती ही है. यह सब किस की गलती से होता है? पति की ही. पति महोदय की आंखों पर तो धन के प्रलोभन की पट्टी बंधी है. फिर ऐसे गोलमटोल तोंदवाले अधिक उमर वाले पति शारीरिक रूप से भी असमर्थ होते हैं. पत्नी तो उन के लिए एक 'डेकोरेटिव पीस' मात्र होती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

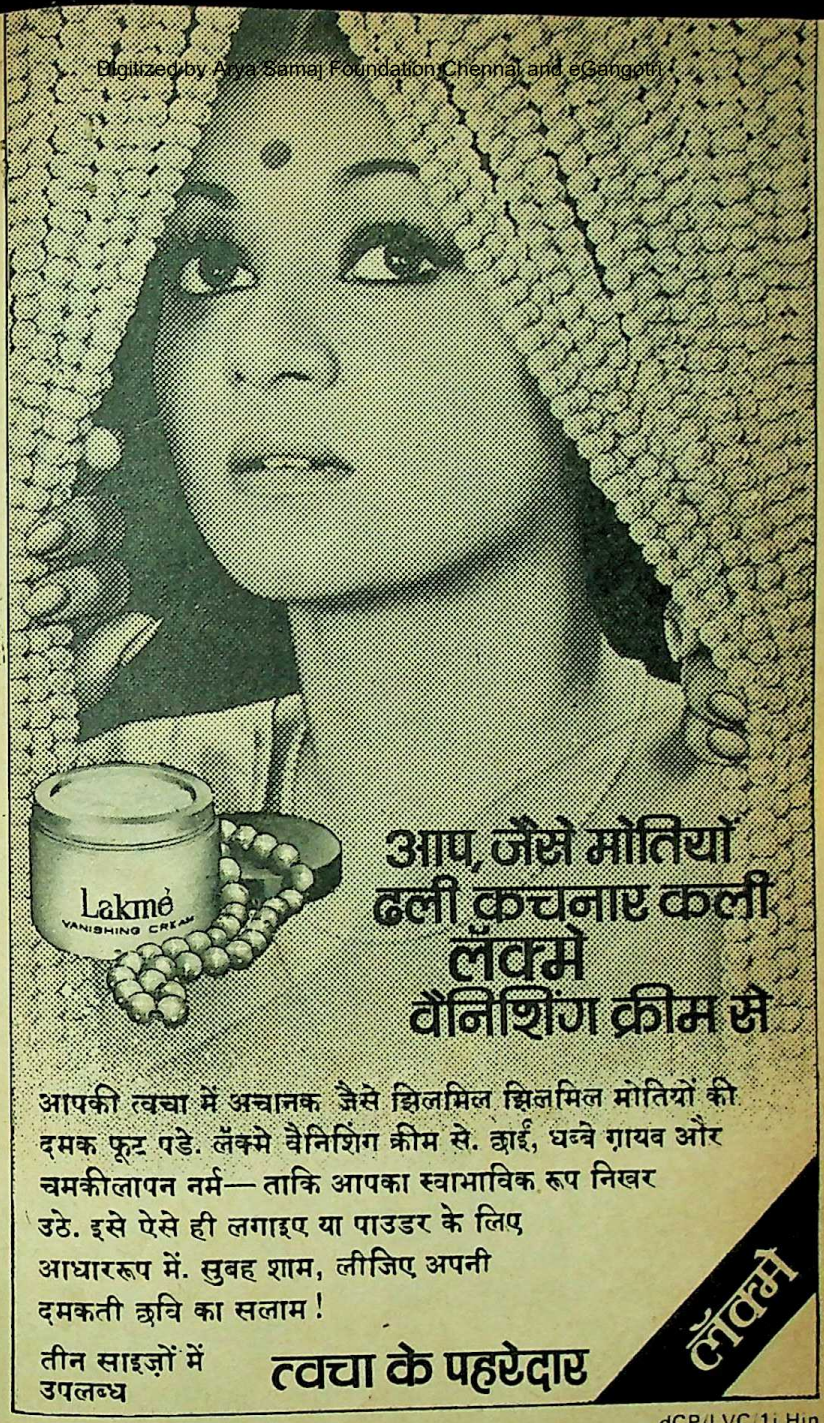

dCP/LVC/1j Hin.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमुख हेअर ड्रेसर्स की सिफ़ारिश ग्लीम शैम्पू बालों के रेशमी निखार और मनचाहे सिंगार के लिए!

ग्लीम शैम्पू भारी और हलके पानी में एक-सा भरपूर झाग देता है। बालों को पूरी तरह साफ़ करता है। उन्हें रेशम की तरह मुलायम और चमकदार बनाता है।

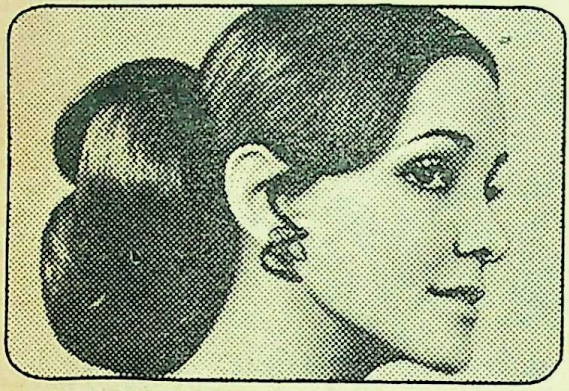

नई दिल्ली की हेअर-डिज़ाइनर श्रीमती पी. रॉय ग्लीम शैम्पू से बहुत प्रसन्न हैं। वह कहती हैं, "ग्लीम शैम्पू से बाल बहुत मुलायम हो जाते हैं। लम्बे और छोटे बाल आसानी से सँवारे जा सकते हैं।"

ग्लीम शैम्पू के इस्तेमाल के बाद आप अपने बालों को बड़ी आसानी से मनचाहे ढंग से सँवार सकती हैं।

और इसकी भीनी-भीनी फ़्रांसीसी सुगन्ध से आपका मन महक उठेगा। पूरी किफ़ायत के लिए ४०० मि.ली. की शीशी ख़रीदिए।

ग्लीम शैम्पू

भारी और हलके पानी में एक-सा भरपूर झाग देता है

३ साइज़: १०० मि.ली., २०० मि.ली., ४०० मि.ली.

Geoffrey Manners & Co. Ltd.

G.32

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

घनिष्ठता सहयोगी आ मिलता है और यदि वह अपनी पत्नी को, जो एक धनवान, कुरूप और विपरीत रुचि वाले व्यक्ति से मरजी के विरुद्ध ब्याही गई है, दुःखी देखता है और सहानुभूति पा कर पत्नी उस से अपनी मन की पीड़ा कह बैठती है तो उन का पूर्वप्रेम जोर पकड़ कर चोरीचोरी बढ़ने लगता है. बाद में जब इस का पता पति को चलता है तो वह छटपटाता है. घर में कलह होती है. परस्पर लांछन लगाए जाते हैं. पर बाल-बच्चों और लोकलाज के मारे वह चुप हो जाता है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटीछोटी बातें

पत्नी के लिए जीवन में छोटीछोटी बातें भी बड़े महत्त्व की होती हैं. यदि पत्नी का जन्मदिवस है, विवाह की वर्ष-गांठ है, कोई व्रत या तीजत्योहार है अथवा बच्चे का जन्मदिवस है तो पति को उस का खयाल रखना चाहिए. कुछ तोहफा चाहे वह फूलों का गजरा ही हो, ला कर देना चाहिए. पत्नी ने यदि विशेष भोजन या नाश्ता बनाया है, घर को विशेष रूप से सजाया है, वह स्वयं सजी-संवरी है तो पति को उस की प्रशंसा करनी चाहिए. अगर पति में पत्नी को प्रेमी भी मिल जाए तो उस का वैवाहिक जीवन पूर्ण हो जाता है. बिना प्रेमी बने आप पत्नी का मन बांध कर नहीं रख सकते. मन की भूख एक प्रेमी ही पूरी कर सकता है. उसी के साथ पत्नी अपना यौवन, प्रौढ़ावस्था और बुढ़ापा सुरक्षित समझती है.

अगर आप की पत्नी सुंदर, सुघड़, सुशील और वाक्पटु है तो आप निश्चय ही अपने सामाजिक जीवन में अधिक लोकप्रियता प्राप्त करेंगे. प्रशंसा की भूख सभी को होती है. जब पति अपने मित्रों के मुख से अपनी पत्नी की प्रशंसा सुनता है तो उसे गौरव का ही अनुभव होता है. पर जो पति अपनी पत्नी के गुणों की सराहना नहीं करते, उस के किए हुए खटटा कर देते हैं, उन की पत्नी के हृदय में यह विश्वास धीरेधीरे जम जाता है कि मेरे पति मेरे गुणों को परख नहीं पाए. परिणामस्वरूप उस का मन उस प्रशंसक मित्र की ओर सहज आकृष्ट हो जाता है.

कई युवतियां बहुत कलाप्रिय होती हैं. वे नृत्य, संगीत, चित्रकारी, घर की सजावट, बागवानी आदि में विशेष निपुण होती हैं. लेकिन उन के पति कला के प्रति कोई रुचि नहीं रखते. वे इसे बेकार की बात और निठल्लों का काम समझते हैं.

इस नकारात्मक दृष्टिकोण का पत्नी पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है. उस की रचनात्मक प्रवृत्ति घुटी रहती है. उन्हीं के माध्यम से वह अपने कोमल भावों को प्रकट करती थी, पर पति के रूखे व्यवहार से उस की प्रगति रुक जाती है. ऐसे समय में जब वह रुचि वाले पुरुष के संपर्क में आती है तो उस के प्रति अनुरक्त हो जाती है.

अनावश्यक संदेह क्यों?

कई पुरुष बड़े कामी और संदेह करने वाले होते हैं. वे दूसरों की पत्नियों के प्रति भी बुरी दृष्टि रखते हैं और उन्हें अपनी पत्नी पर भी संदेह करने की आदत होती है. संदेह प्रेम में विष घोल देता है और पति के ऐसा करने, निर्दोष पर लांछन लगाने से उस का मन पति की ओर से कटु हो जाता है. कहावत है—बद से बदनाम बुरा. इनसान बदनामी से ही डरता है.

जब अपना पुरुष ही नारी को बदनाम करने लग जाए तो तंग आ कर वह उस व्यक्ति से, जिस को ले कर उसे बदनाम किया गया है, सहानुभूति प्राप्त करने के लिए अपनत्व का नाता जोड़ लेती है. पुरुष को चाहिए कि अपनी पत्नी को ऐसी परिस्थिति में कभी न धकेले. कहीं भूलचूक होने पर वह आप का सहारा न खो बैठे. 90 प्रतिशत पुरुष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सहयोगिन, सेक्रेटरी आदि के प्रति अनुरक्त रहते हैं. कुछ ने तो शारीरिक संबंध भी स्थापित किए होंगे. लेकिन अगर उन्हें अपनी पत्नी के किसी अनुरक्त सहयोगी का पता चल जाए तो फिर उस बेचारी की खैर नहीं. कई पुरुष अपनी पत्नी को तो शृंगार करने नहीं देते, उसे कभी 'मिक्स्ड सोसाइटी' में साथ नहीं ले जाते, पर दूसरों की सजीसंवरी, हंसोड़ और हाजिरजवाब पत्नी उन्हें बड़ी पसंद होती है. ऐसे पुरुषों के दृष्टांत आप को क्लबों में अकसर मिल जाएंगे. चिढ़ कर उन की पत्नी भी फिर उन के प्रति बेवफा हो जाती है. और खुद भी नएनए मित्र बनाने लगती है.

कामकाजी महिलाएं

यदि पत्नी नौकरी करती है तो उसे अन्य पुरुषों के संपर्क में आने का मौका अवश्य मिलेगा. उन के पतियों को अपनी पत्नी पर भरोसा रखना चाहिए ताकि पत्नी अपनी प्रत्येक बात उन से कह सके. यदि आप अपनी पत्नी के प्रति विश्वास भरा और मित्रवत व्यवहार नहीं करेंगे तो फिर वह अपने दफ्तर में अपने किसी सहयोगी से अपना दुखड़ा रोएगी. वह सहयोगी भी उस के प्रति सहानुभूति जताएगा. धीरेधीरे यह सहानुभूति घनिष्ठता और प्रेम में बदल सकती है. पत्नी को ऐसी परिस्थिति में धकेलने के जिम्मेदार पति ही हैं. अगर पत्नी के सहयोगियों को यह पता चला कि अमुक महिला का पारिवारिक जीवन सुरक्षित है तो कोई उस के प्रति बुरी नियत नहीं रख सकता.

कई बार देखने में आता है कि पति और पत्नी दोनों डाक्टर, प्रोफेसर या वकील अथवा लेखक हैं. पत्नी में मौलिकता और लोगों के प्रति व्यवहार कुशलता अधिक होती है तो उस का धंधा अधिक चमक उठता है. इस चिढ़ के मारे पति उस पर झूठे लांछन लगाता है. उस की प्रशंसा करने के बदले उसे नीचा स्थिति में अपना जीवन दूभर होते देख पत्नी या तो तलाक की मांग करती है या फिर पति की उपेक्षा कर के मनचाही जिंदगी जीती है.

उपेक्षित नारी

कई बार पति का वियोग भी पत्नी को किसी पुरुष मित्र के प्रति अनुरक्त होने के लिए बाध्य करता है. ऐसे दृष्टांत आप को सैनिक या टूरिंग अफसरों के घरों में अधिक मिलेंगे. सोचने की बात है कि आखिर नारी भी एक इनसान है. परिस्थितियां उसे मजबूर कर देती हैं. पुरुष तो बाहर महिलाओं से संबंध जोड़ते हैं, पर स्त्री यदि किसी को मित्र भी बना ले तो पुरुष को तकलीफ होने लगती है. यह उस की भारी भूल है.

कई पुरुषों में कुछ दोष होता है. जैसे कुछ पुरुष संतान पैदा करने में असमर्थ होते हैं. ऐसे पति अपनी कमी पर सोचने की बजाए पत्नी को व्यंग्य सुनाते हैं. उस के रिश्तेदार भी पत्नी को कोसते हैं, उस की उपेक्षा करते हैं. उपेक्षित नारी मौका पा कर परपुरुष से संबंध स्थापित कर अपने मातृत्व को प्रमाणित कर देती है.

उपरोक्त कारण हैं, जो महिलाओं को भटका देते हैं. इन्हीं की वजह से पुरुष उन की दुखती नस को पहचान कर उन्हें अपना शिकार बना लेते हैं. मैं ने उन सब कारणों पर और उस के रोकथाम पर साथ ही साथ प्रकाश डाल कर पतियों को सावधान किया है कि वे किस प्रकार अपनी पत्नी को गुमराह होने से रोक सकते हैं.

कई एक कारण तो ऐसे हैं जिन के लिए पति स्वयं ही दोषी हैं. कारण और उपाय दोनों को समझ कर पुरुषों को उचित कदम उठाना चाहिए. कापुरुष ही बाजी हारते हैं, बुद्धिमान और दूरदर्शी व्यक्ति पहले से ही सावधान रहते हैं.

सरिता

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबह की सुहानी ताज़गी सारा दिन अनुभव करने के लिए

शीतल सुखद स्नान की अनुभूति...
घंटों–पहरों तक. पॉण्ड्स ड्रीमफ़्लावर टाल्क की बदौलत.
सारे शरीर पर इसे छिड़किए. फिर देखिए...
आपका अंग-अंग किस तरह खिल उठता है और मन पुलक उठता है स्वच्छ, शीतल अनुभूति से.
और यह इतना मृदुल और रेशमी कोमल है कि अपने चेहरे के लिए भी आप इसका प्रयोग मजे में कर सकतीं हैं.

पॉण्ड्स ड्रीमफ़्लावर टाल्क

चीज़ब्रो-पॉण्ड्स इन्कॉर्पोरेटेड (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में संस्थापित)

P-6863

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आइए और देखिए, फ़िन्ले ने आपके लिए और क्या-क्या बनाया है...ऐसे कपड़े जिन में आपकी मर्दानगी उजागर हो उठे। शाही शान से लहराती धोतियाँ। कुर्तों के लिए मुलायम कॉटन। शानदार लट्ठे। सुहाने सूटिंग। सीने से लगा लेने के काबिल सेरिफ़ कमीज़ें।

'फ़िन्ले' में हमेशा बात बनती है

Finlay's

फ़िन्ले मिल्स लि./गोल्ड मोहर मिल्स लि.

ASP-FM-41-A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख ऊषा चौधरी

नाखूनों की सुंदरता

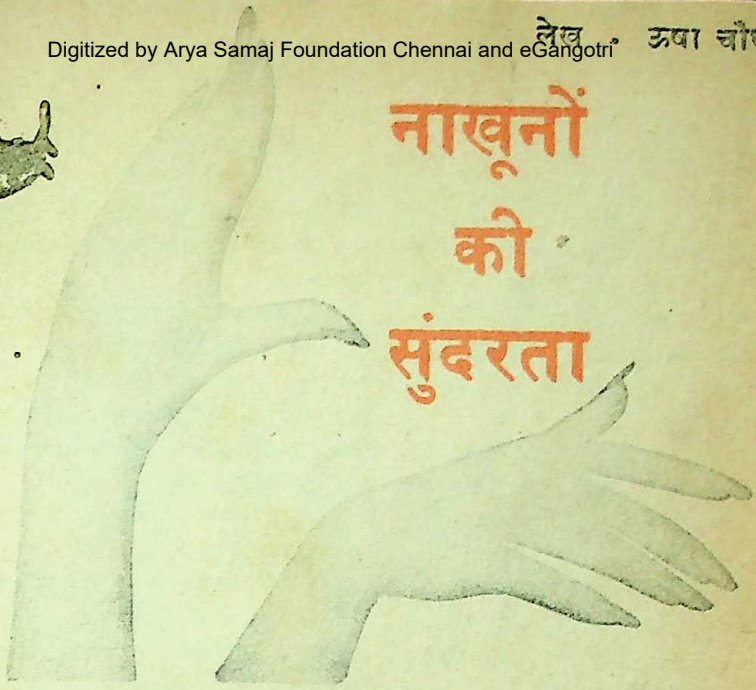

लंबे लंबे नाखून एक आधुनिका के हाथों का प्रथम सौंदर्य है. लेकिन क्योंकि आम तौर पर भारतीय महिलाएं रसोईघर में ही अपने काम का आधे से ज्यादा समय काटती हैं इसलिए अपने नाखूनों की ओर ध्यान देना भूल जाती हैं. आप भी शायद इस समस्या से परेशान हों. यहां नाखूनों की सारसंभाल और उन्हें खूबसूरत बनाए रखने के कुछ आसान तरीके बताए जाते हैं. इन में न ज्यादा समय लगता है, न ज्यादा पैसा.

आप शायद अपने लान का काम स्वयं करती होंगी और काम करते वक्त बेहद परेशान हो जाती होंगी क्योंकि नाखूनों में मिट्टी भर जाती होगी या आप के नाखून टूट जाते होंगे. इस परेशानी से बचने के लिए आप लान में काम पर जाते समय अपने नाखूनों को साबुन की टिकिया पर रख कर उस से साबुन खुरच लें. इस से साबुन आप के नाखूनों में भर जाएगा और उन में मिट्टी या मैल के लिए कोई जगह नहीं रह जाएगी.

जहां पेंचकश या बुरुश से काम चल जाए, वहां नाखूनों का उपयोग न करें.

उंगलियों को कठोर वस्तु से न टकराएं और काम करते समय नाखूनों का विशेष ध्यान रखें. उन पर कोई अतिरिक्त जोर न पड़े.

आप नाखूनों की सफाई का विशेष खयाल रखें क्योंकि इस का आप के स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ता है. कैलशियम लेने से नाखूनों की वृद्धि और चमक अच्छी होती है. दूध अधिक पिएं क्योंकि दूध में विटामिन ए, विटामिन डी,

अपने चेहरे को आकर्षक बनाने के लिए आप तरहतरह के प्रसाधनों का इस्तेमाल करती हैं. क्या कभी आप ने नाखूनों पर भी ध्यान दिया है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विटामिन बी कंप्लेक्स, विटामिन ई आदि जैसे स्वास्थ्यवर्धक तत्त्व होते हैं. ये विटामिन सिर्फ नाखूनों को ही नहीं बल्कि सारे शरीर की जरूरत को पूरा करते हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष अवसर

ब्याहशादी, पार्टी या किसी भोज के अवसर पर आप अकसर नाखूनों को भी हाथों और चेहरे की भांति खूबसूरत देखना चाहती होंगी. यह कोई बड़ी बात नहीं. इस के लिए आप पहले इन वस्तुओं को जुटा लें :

टायलेट साबुन का घोल, काफी का प्याला भर गरम पानी, साफ रूई, क्यूटेक्स, नेलपेंट रिमूवर या वार्निश, नेल फाइल और एमरी बोर्ड.

● पहले अपने हाथों और उंगलियों के अनुरूप नेल फाइल (रेती) से नाखूनों को संभाल कर रगड़ लें. किनारों पर नाखूनों को अधिक न घिसें.

● अब एक माचिस की तीली के इर्दगिर्द रूई लपेट कर नेल पेंट रिमूवर में उसे डुबो कर नाखूनों पर लगा कर उन का पहला पेंट निकाल कर उन्हें बिलकुल साफ कर लें.

● अब उंगलियों को टायलेट साबुन के घोल में अच्छी तरह से धीरेधीरे मल कर नरम पानी में धो लें और साफ तौलिए या टिश्यू पेपर से पोंछ कर सुखा लें.

● अब नया पेंट लगाएं. पेंट लगाते समय हाथ हिलें नहीं, इसलिए हाथों को एमरी बोर्ड पर टिका कर कोटिंग करें.

● पेंट या क्यूटेक्स की दो बार कोटिंग करें लेकिन एक कोटिंग के सूख जाने के बाद ही दूसरी कोटिंग करें.

● उंगलियों के आसपास लगाते समय जो बाहर लग जाए, चोंटें नहीं बल्कि रूई को रिमूवर में डुबो कर उस से अनावश्यक जगह लगा क्यूटेक्स निकाल दें.

● हाथों पर वेनिशिंग क्रीम लगाएं या कोई खुशबू और फिर हलकी सी खूबसूरत अंगूठी पहनें. लीजिए, आप के हाथ पार्टी के लिए तैयार हैं. आप अपने सुंदर नाखूनों और मरमरी हाथों को देख कर खुश हो रही होंगी.

नाखूनों के संबंध में कुछ बातें याद रखने योग्य हैं :

● नाखूनों को कभी दांत से न कुतरें.

● नाखूनों से कभी कोई चीज न खुरचें, न कुतरें और न खुजाएं. इस से नाखूनों के किनारे बिगड़ते हैं और उन में मैल भी घुसता है.

● नाखून आप के चरित्र का आईना हैं. यदि आप के नाखूनों का रंग मोती के रंग की गुलाबी आब लिए हुए है तो इस से अनुमान होता है कि आप का स्वभाव मृदु और स्वास्थ्य ठीक है. यदि आप के नाखून दबेदबे, खुरदरे, पतलेनीले या पीले अथवा सफेद रंग के हैं तो ये आप के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की अक्षमता का साफ विज्ञापन हैं, आप के स्वभाव की कठोरता और मानसिक अस्वस्था के प्रमाण हैं. यह सब आयरन तथा विटामिनों की कमी से होता है.

● स्वभावगत कठोरता व शुष्कता भी इस का कारण हो सकती है. अगर ऐसा है तो आप को अपने स्वभाव को बदलना होगा और अपने डाक्टर की सलाह लेनी होगी. अगर आप में ऐसी कोई त्रुटि है तो चिंता करने की बात नहीं. आप धीरज से अपने में परिवर्तन लाएं और डाक्टर की सलाह पर चलें. आप के नाखून जल्द ही अपना सही आकार और रंगरूप पा लेंगे.

● सरिता

गुबारे राह...

काफिले या मिट गए
या बढ़ गए,
अब गुबारे राह भी
उठता नहीं.

—फिराक गोरखपुरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भव्यता का स्पर्श!
रंगों का समूह!!
मिनटों का काम!!!

क्राइलिन कॉरेसपॉन्डन्स स्कूल
कैमलिन प्राइवेट लिमिटेड
आर्ट मेटीरियल डिविज़न
जे. बी. नगर, बम्बई-४०००५९

Vision HN. 731

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विटामि
आदि जै
ये विटा
बल्कि
करते हैं.

विशेष अव

ब्याह
अवसर प
हाथों
देखना
नहीं.
को

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे सी कोमल त्वचा के लिए
बच्चे की बात मानिए

जान्सन्स* बेबी पाउडर

आप अनूप सी बाला हों या रूपसी महिला, आप अपनी त्वचा में बचपन का कोमल स्पर्श अब भी पा सकती हैं। त्वचा को कोमल, नर्म और शीतल रखने के लिए आपको चाहिए एक ऐसा पाउडर जो हल्का और मुलायम हो, जैसे—जान्सन्स बेबी पाउडर। बच्चों और सुन्दर स्त्रियों को सब जगह इसका प्रयोग भाता है। अपनी त्वचा की देखभाल के लिये जान्सन्स पर भी आप अपने जैसा ही भरोसा रख सकती हैं।

आपकी त्वचा के लिए
जन्मजात कोमलता।

Johnson & Johnson*

* Trade Mark
© Johnson & Johnson.

लिटास-J & J.3-77 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

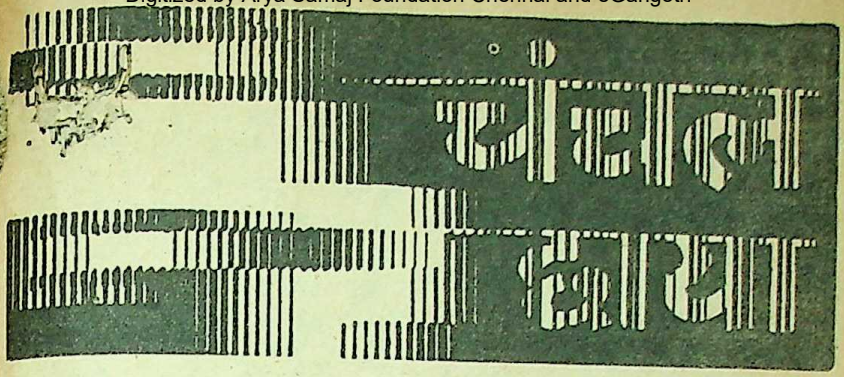

★ बदला

निर्माता : सेंचुरी फिल्म्स
कहानी व निर्देशन : विजय
मुख्य कलाकार : शत्रुघ्न सिन्हा, मौसमी चटर्जी, अलका, जानी वाकर, अजीत, पद्मा खन्ना, महमूद, शेटी, मोहन चोटी

हिंदी फिल्मों के नायक और खल-नायक के कारनामों को जोड़ कर अपराध फिल्म 'बदला' की कहानी गढ़ ली गई है, जिस में राजू उर्फ कुमार (शत्रुघ्न सिन्हा) को अपराधी एवं गुंडा दिखा कर भी दर्शकों की सहानुभूति उस से जोड़ दी गई है. पहले भाग में हर तरह से राजू के चरित्र को ही उभारा गया है और कहानी को बिना आगे बढ़ाए ही घटनाएं घटती चली गई हैं. इसी भाग में निर्देशक राजू और कल्पना (मौसमी चटर्जी) के प्रेम दृश्य डाल गया है जो अनावश्यक हैं. राजू और कल्पना में जिस प्रकार प्रेम होता और बढ़ता गया है, उस में स्वाभाविकता नहीं है.

नाम के अनुरूप बदले की कहानी तो बहुत बाद में आ कर शुरू होती है, जब रणधीर (अजीत) राजू की बहन आशा (अलका) की इज्जत लूटने की कोशिश करता है और आशा बिल्डिंग से नीचे कूद कर आत्महत्या कर लेती है. शेष कहानी राजू द्वारा रणधीर से बदला लेने की ही कहानी है जिस के अंत में दोनों की मारपीट के दौरान रणधीर एक चट्टान से गिर कर मर जाता है. कहानी के इसी भाग को कुछ उलझाया भी गया है, जब राजू रणधीर की चालों में फंसता चला जाता है.

अभिनय में शत्रुघ्न सिन्हा साधारण है. नायक हो कर भी वह एक खल पात्र है. मौसमी चटर्जी एक नाजुक गुड़िया सी बना दी गई है. अलका अपने अभिनय द्वारा प्रभावित करती है. मुख्य अपराधी के रूप में अजीत में भूमिका और अभिनय, दोनों दृष्टियों से कोई नयापन नहीं है.

आनंद बख्शी के गीत और लक्ष्मीकांत प्यारेलाल का संगीत, दोनों बेजान हैं. जगदीश कंवल के संवाद साधारण हैं. राजेंद्र मालोने की फोटोग्राफी अच्छी है. पटकथा और निर्देशन की दृष्टि से विजय सफल नहीं रहा. निर्माता कुमार ने 'बदला' बना कर दर्शकों से कोई बदला ही लिया है.

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★½ मध्यम ★★ साधारण ★ बेकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्माता : [illegible]
निर्देशक : हरि वालिया
मुख्य कलाकार : संजीवकुमार, रेशमा, सुरेश, फरियाल, प्रदीपकुमार, दुर्गाखोटे, मारुति

अत्यंत धीमी गति से चलने वाली निरुद्देश्य सी कहानी को ले कर निर्माता-निर्देशक हरि वालिया ने फिल्म 'दूर नहीं मंजिल' का निर्माण किया है. कैबरे, बलात्कार, मारपीट आदि सभी फार्मूले होने पर भी फिल्म में उकताहट भरी हुई है.

प्रथम तो कहानी ही आगे खिसकने का नाम नहीं लेती, उस पर फिल्म के गाने और भी बोझ बन गए हैं. कलाकारों का अभिनय, घटनाओं का चित्रण एवं फिल्मीकरण, निर्देशन, संवादों का उच्चारण और भावाभिव्यक्ति आदि सभी पक्ष इतने बचकाने हैं कि फिल्म कहीं भी हृदय को छूती नहीं है.

एक विमानचालक केवल (संजीव-कुमार) अपने बड़े भाई (प्रदीपकुमार) की खुशी के लिए अपनी प्रेमिका, अंजलि (रेशमा) का त्याग करने को तैयार हो जाता है, पर अंत में [illegible] ही दोनों को मिला देता है. इ[illegible] नायक शंकर (सुरेश) की बेसिर-पैर की भूमिका जोड़ दी गई है.

अभिनय की दृष्टि से सभी असफल रहे हैं. संजीवकुमार के नाम पर यह फिल्म एक कलंक है. नई अभिनेत्री रेशमा को इस फिल्म में अत्यंत भावुक भूमिका निभानी पड़ी है जिस में वह सफल नहीं रही. अच्छा होता अगर वह कोई हलकीफुलकी भूमिका स्वीकार करती.

पटकथा, संवाद फोटोग्राफी आदि सभी दृष्टियों से फिल्म असफल है. गीत कुछ अच्छे हैं. उन का फिल्मीकरण प्रभावहीन है. कहानी का प्रवाह इतना धीमा है कि 'दूर नहीं मंजिल' में दर्शकों को फिल्म समाप्त होने की मंजिल नजर नहीं आती. ●

बवासीर के मस्सों को बिना ऑपरेशन सुखाने की अनोखी दवा

प्रेपरेशन एच*

अमरीकी डाक्टरों की आज़मायी हुई

- इससे खुजली मिनटों में रुक जाती है
- दर्द से फ़ौरन राहत मिलती है
- यह बवासीर के बहुत ही बिगड़े रोगों को छोड़ कर, बवासीर के मस्सों को बिना ऑपरेशन सुखाने में मदद देती है
- इससे चिकनाहट मिलती है और [illegible] कष्टरहित होता है

मुफ़्त ! बवासीर के बारे में जानकारी देनेवाली मुफ़्त पुस्तिका के लिए (लिफ़ाफ़े में २५ पैसे के डाक-टिकट साथ में भेजकर) आज ही इस पते पर लिखिए : डिपार्टमेंट PH-37 पो. ऑ. बॉक्स १०१३३, बम्बई-४०० ००१

* Regd. User of TM : Geoffrey Manners & Co. Ltd.

743 PH 37

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके बालों को स्वस्थ, आकर्षक, और बिल्कुल मुलायम रखने के लिये-

प्रोटीन से भरपूर,

हेलो एग शैम्पू

सुनहरी मखमल की तरह चमकदार और मुलायम—हेलो एग शैम्पू। इसका परिपूर्ण एग फार्मूला आपके बालो को कंडिशन करता है—उन्हें स्वस्थ और आकर्षक बनाता है। इसकी भरपूर क्रीम जैसी झाग आपके सर की त्वचा को शक्ति देती है, और आपके बाल स्वच्छ व चमकदार रहते हैं। हेलो एग शैम्पू आपके बालों को नयी सुन्दरता—नया जीवन देता है।

विश्व भर में सौंदर्य का प्रतीक—हेलो।

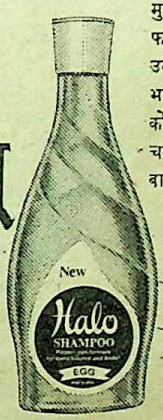

एग प्रोटीन से भरपूर, बालों को स्वस्थ रखने वाला, बेजोड़ फार्मूला।

अब तीन सुविधाजनक साइज़ों में मिलता है।

HES.G.3.HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोनी, कानपुर

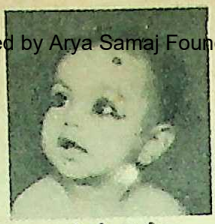
रिंकी, रांची

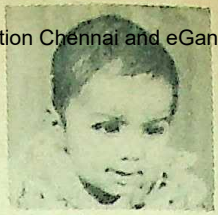
संदीप, जबलपुर

मनीषा, दिल्ली

हेमा, हरिद्वार

रितु, अंबाला

जसवीर, बंबई

प्रवीण, नीलोखेड़ी

नीता, बरेली

मनीष, बालाघाट

आसीमा, मकराना

कृष्ण, लखनऊ

सरिता शिशु संगम के अंतर्गत हर माह पुरस्कार

अपने हंसतेखेलते बच्चों को सरिता शिशु संगम का सदस्य बनाइए, हर अंक में सदस्यों के चुने हुए फोटोग्राफ प्रकाशित किए जाते हैं, साथ ही आप का बच्चा जन्म दिन उपहार योजना में निःशुल्क हिस्सा ले सकता है.

आप अपने बच्चे का नाम, जन्म तिथि, वजन, पिता का नाम व पता लिख कर भेज दीजिए, आप के बच्चे को सरिता शिशु संगम का सदस्य बना लिया जाएगा. बच्चे का फोटोग्राफ प्रकाशित करवाने के लिए पासपोर्ट आकार का फोटोग्राफ भेज दें.

यदि आप के बच्चे की जन्म तिथि जुलाई 2, 4, 6, 8 में से किसी भी दिन है तो आप पुरस्कार प्राप्त करने के लिए अपने बच्चे का नवीनतम फोटोग्राफ, जन्म तिथि, सदस्य संख्या का उल्लेख करते हुए भेजिए. एक सदस्य के 20 कूपन आने आवश्यक हैं.

पुरस्कार के लिए 30 जून, 1974 तक लिखें.

शिशु संगम, सरिता, नई दिल्ली-55.

उपहार कूपन

बेबी का नाम.....

सदस्य संख्या.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोयला भई न राख

(पृष्ठ 41 से आगे)

रहीं ताकि उन के ऊपर राख की परत न जम जाए.

पहले तो तुम मेरे इर्दगिर्द घूमती रहीं ताकि मेरा जी लगा रहे, फिर तुम ने मुझे यों समझ लिया जैसे मैं एक खिलौना हूं, तुम्हें फुरसत मिले तो उस के साथ खेल लो, उस से बातें कर के अपने मन की आग ठंडी कर लो, फिर अपनी दुनिया में मस्त हो जाओ. तुम मुझे बाहर भी कम ले जातीं, शायद तुम डरती थीं कि लोगबाग मुझे देख कर तुम से कोई प्रश्न न कर बैठें, तुम्हारी आलोचना न करें.

तुम रात को पापा के साथ जब खिलखिला कर हंसतीं तो मैं अंदर ही अंदर रोती. पापा तुम से कितने भी नाराज हों, न जाने शाम ढलते ही क्यों पापा तुम्हारे सामने दुर्बल पड़ जाते. रात होते ही पापा का शरीर तुम्हें पाने के लिए मचल उठता और वह तुम में खो जाते. तुम अपने पति की इस दुर्बलता से खूब वाकिफ हो, मां! इसी लिए उस समय तुम पापा को कभी इनकार नहीं करतीं और पापा से जायजनाजायज सब कुछ मनवा लेतीं. तब जानती हो, मैं तुम्हारी उसी हंसी के तेल में तिलतिल जलती हुई किसी को अपने पास पा लेने को छटपटाती?

अगर मैं कुंवारी होती तो शायद मेरे दिल में किसी को पाने की कसक न होती परंतु एक शादीशुदा लड़की, जो किसी की बांहों में सिमट चुकी हो, जिस ने पति के सीने पर सिर रख कर उस की सांसों की आवाज सुनी हो, जिस ने पति के धड़कते दिल को प्यार से सहलाया हो, ऐसे माहौल में कैसे खामोश रह सकती है? मैं ने इसी लिए तुम से बोलना कम कर दिया था. यह तुम्हें कहां छोड़ती?

बस, ऐसे में ही इस पत्र की भनक मेरे कानों में पड़ी. पूरी बात तो नहीं सुनी लेकिन लगा, बात मेरी ही है, और इस घर में है ही कौन. मेरे पूछने पर तुम ने कुछ बताया नहीं. तुम नहाने चली गई थीं तो मैं ने तुम्हारी चाबी चुरा ली थी. तुम सोच भी नहीं सकतीं कि तुम्हारी बेटी तुम से चोरी कर सकती है. अब तुम क्लब गई हो तो मैं ने तुम्हारी अलमारी में रखे पर्स में से ये दोनों पत्र चुरा लिए हैं. एक पत्र था मेरी सास का, जिस में बहुत सी बातों के साथ लिखा था, "रचना को जल्दी भेज दीजिए, दो बरस हो गए हैं, नहीं तो हमें अपने बेटे की दूसरी शादी का फैसला करना होगा."

दूसरा पत्र था तुम्हारा. तुम ने उत्तर दिया था, "आप खुशी से दूसरी शादी कर सकते हैं. मेरी बेटी के लिए लड़कों की कमी नहीं है."

पत्र पढ़ते ही मेरे हाथ कांपने लगे थे और मेरा मन तुम्हारे प्रति विद्रोह से भर उठा था. यह कैसी मां है जो अपने ही हाथों से अपनी बेटी के संसार में आग लगा रही है! पापा की दफन की हुई उम्मीदों को मैं ने पूरा करने का फैसला कर लिया. मैं ने तुम्हारा वाला पत्र जला दिया है, मां! उस के बदले अपना पत्र रख रही हूं. तुम क्लब की मीटिंग में अपनी प्रशंसा के पुल पर बैठ कर ठहाके लगा रही हो. तुम्हें यह भी पता नहीं, तुम्हारी बेटी ने क्या फैसला किया है.

एक बात बताओ, मां! लकड़ी जलती है तो कोयला बन जाती है. कोयला जल कर राख हो जाता है. तुम सारी उमर जली हो. तुम न कोयला बनी, न राख. मैं अब तुम्हारी इस आग से बच कर जा रही हूं. मां, तुम समझ गई होंगी, मैं कहां जा रही हूं. बुरा मत मानना कि मैं तुम्हारे नक्शकदम पर नहीं चल सकी. ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल बिनाका टॉप टूथपेस्ट ही मुँह की पूरी रक्षा करता है।

देखिये! बिनाका टॉप का विशेष फैलने वाला तत्व किस प्रकार काम करता है।

एक काँच की प्लेट में थोड़ा-सा पानी डालिए। थोड़ा-सा कोयले का चूरा या रंगीन पाउडर पानी पर छिड़किए।

थोड़े-से पानी में बिनाका टॉप घोलिए। अब इस मिश्रण की एक बूंद काँच की प्लेट के बीचों-बीच डालिए।

अब देखिए कि बिनाका टॉप कितनी तेजी से चारों तरफ फैलता है .. पानी की सतह पर फैले हुए मैल को काटता है और पानी कितना साफ़-सुथरा हो जाता है।

बिनाका टॉप बिल्कुल इसी तरह आपके मुँह में काम करता है। इसमें एक विशेष फैलने वाला तत्व होता है जो तुरंत आपके मुँह में फैल जाता है और दांतों में सड़न पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करता है और सांस की दुर्गंध को दूर करता है। यह आपके मुँह की पूरी रक्षा करता है।

मुँह की पूरी रक्षा के लिए–

बिनाका टॉप टूथपेस्ट।

एक सीबा गायगी उत्पादन

ARMS CDT-14-143-HN.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कफन चोर

चोरी होती है धन की, रोटी की, कपड़े की...पर उस ने तो मुरदे का कफन चुराया था. ऐसी भी क्या मजबूरी थी?

आज के इस नुमाइशी युग में भी चौक [illegible] जान पड़ता है—नगर निर्माण, स्वास्थ्य, सफ़ाई और आधुनिकता के संपर्क से सर्वथा वंचित सा. गोल दरवाजे के अंदर सड़क के नाम पर एक तंग टेढ़ीमेढ़ी सी गली है, जिस के दोनों तरफ मिठाई, तंबाकू, बिसाती, गल्ले और सर्राफे की बेतरकीब दुकानें और ऊपर के कोठों से झांकती हुई मजबूरियां हैं, और समूची फिजां में एक अजीब सी गलाजत.

मेले की रात है. पास और दूर के महल्लों से लोगों के दल के दल उमड़े चले आ रहे हैं. दुकानदारों का हाथ नहीं रुकता. अपनेअपने ढंग से सभी व्यस्त जान पड़ते हैं. बच्चों को चटोरापन पागल किए है और युवतियां बिसाती की दुकानों पर टूटी पड़ती हैं. बड़े मियां खरीदारी से तंग आ चुके हैं. खोपड़ी पर गरदन तोड़ बोझ लद चुका है, मगर रहीमा की मां को अभी भी तृप्ति नहीं है.

एक अजीब सी धक्कापेल है. सारी की सारी भीड़ गर्द को रौंदे डालती है और कोलाहल ऐसा कि कान पड़ी बात सुनाई नहीं देती. सहसा भीड़ में एक जोरदार रेला आया और कुछ लोग एक-दूसरे को धकियाते हुए दौड़ने लगे.

"मारो साले को...पकड़ो... वह गया...जाने न पाए...?" और ऐसी ही मोटीपतली आवाजें एकदूसरे से टकराईं और गली में हलचल सी मच गई. जिज्ञासाओं की एक लहर सी आ गई. कुछ लोग कानाफूसी करने लगे और कुछ तमाशबीन कामकाज भूल कर भेड़ चाल में शामिल हो गए.

मोड़ पर लोगों का जमघट लग गया और अधिकांश लोग उधर ही टूट पड़े, जैसे इसी काम के लिए यहां आए हों. दुकानदारों के दिलों पर सांप लोट गया. मगर वहां हानि, लाभ, जेब और पैसे की चिंता किसे थी. तेरहचौदह साल के एक छोकरे पर बेतहाशा मार पड़ रही थी. जिसे देखो वही गुस्से में पागल नजर आ रहा था.

लड़का सिर बचाता तो पीठ पर धमाका होता. और पीठ बचाने का मौका ही कहां था! एक ने कमीज का कालर पकड़ रखा था, दूसरे ने उस के बड़ेबड़े खुश्क बालों को जकड़ रखा था. बांहें पहले ही बेकाबू थीं.

और करबला के इमाम साहब गुस्से से तमतमा रहे थे.

"कफनचोर है साला!" एक ने कहा.

"चोरी की सजा मिलनी ही चाहिए!" दूसरे ने फैसला सुनाया. और लड़के के मुंह, पीठ और कंधे पर एक साथ दसबीस घूंसे, तमाचे बरस पड़े.

"मुरदे का कफन!" दुन्नी खलीफा ने आश्चर्य प्रकट किया. "लाहौल! क्या जमाना आ गया है!"

बीस साल पहले

सरिता, जून 1954

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

स्वर में कुछ कहना चाहा.

"मैं... मैं नहीं रंग दो साले को लहू से," दांत पीसते हुए एक अधेड़ उमर के सज्जन ने कफन की चादर दिखाई.

लड़के के उतरे हुए मुंह पर एक घूंसा और पड़ा. आंसुओं में खून की सुर्खी बह चली.

"आखिर यह क्या तरीका है?" नजीर मियां ने बीच में पड़ते हुए कहा.

"आप को क्या मतलब, जी?" एक सूरमा गुस्से में बड़बड़ाए.

"तेरी भी..." नजीर मियां ने एक ही सांस में कई चुनिंदा गालियां दे डालीं. "मतलब पूछता है हम से?"

नजीर पहलवान की लाललाल आंखें, भीमकाय शरीर, कलफदार मूंछें और भयंकर मुद्रा देखते ही भीड़ में सन्नाटा छा गया.

"छोड़ दो इसे!" हुक्मराना ढंग से उन्होंने कहा. "हमारे सामने से नहीं भागेगा."

नजीर के कहे पर तत्काल अमल हुआ. लड़के ने आंसुओं की पनचादर से नजीर मियां पर कृतज्ञतासूचक दृष्टि डाली और दूसरे ही क्षण कमीज के फटे दामन से मुंह पोंछने लगा. कमीज का दामन और गरेबां अब तक करीबकरीब तर हो चुका था.

"चोरी का इलजाम सही है?" नजीर मियां ने अपनी भारीभरकम आवाज में सवाल किया. "कफन चुराया था तू ने?"

"मैं...हुजूर..." लड़का गिड़गिड़ाया.

"सही बात पूछता हूं. याद रखना, नजीर का गुस्सा बहुत खराब है. समझा?" पहलवान ने मूंछ का दाहिना सिरा उमेठते हुए कहा.

"हां." लड़के ने शरम और सहमति से गरदन झुका ली.

"सजा का खौफ नहीं था तुझे?" नजीर ने बड़ी आत्मीयता से कहा. "चोरी—और वह भी कफन की!"

स्वर में रुकरुक कर कहा. "मेरी मां बहुत बीमार है."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बकता है साला!" एक बुजुर्ग ने शिकायत की. "देखा, पहलवान, नंबरी बहानेबाज मालूम होता है. मां बीमार है इस की!"

"ठीक तो है—कफन का इंतजाम पहले, मौत बाद में," नुक्कड़ वाली दुकान से लालाजी ने फब्ती कसी.

"सुना तू ने?" पहलवान ने लड़के का कंधा झकझोरा. "क्या नाम है तेरा?"

"शबराती," लड़के ने धीरे से कहा.

"रहता कहां है?"

"यहीं, शामीना साहब के अहाते में."

"बाप क्या करता है?"

"बाप तो रहा नहीं."

"और तू?"

"मेहनतमजूरी," शबराती ने डरते-डरते कहा. "जो मिल जाए, बाबू."

"तेरी मां बीमार है?" नजीर ने प्रश्न किया.

"हां," लड़के ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया.

"कफन तुझे कहां मिल गया?" पहलवान ने आश्चर्य से आंखें फैलाई.

इस से पहले कि शबराती कुछ कह पाता, इमाम साहब बोल पड़े, "हुजूर, मजार खोद कर निकाला है बदबख्त ने. अंधेरी रात होती तो भला यह हाथ आता!"

नजीर पहलवान ने भीड़ पर दृष्टि डाली और उन की आंखें पुनः शबराती पर आ टिकीं.

"तो, जनाब, कफन किस लिए लाए थे?" पहलवान ने शबराती की पीठ पर एक थपकी रसीद की.

"मेरी मां..." शबराती की आंखों से आंसू छलक आए. "गरीब आदमी हूं. उस की पीठ और पसलियों में दर्द है. बुखार बहुत तेज है, बाबू," लड़के ने बड़ी दयनीयता से कहा.

"इलाज कराया होता. इस के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

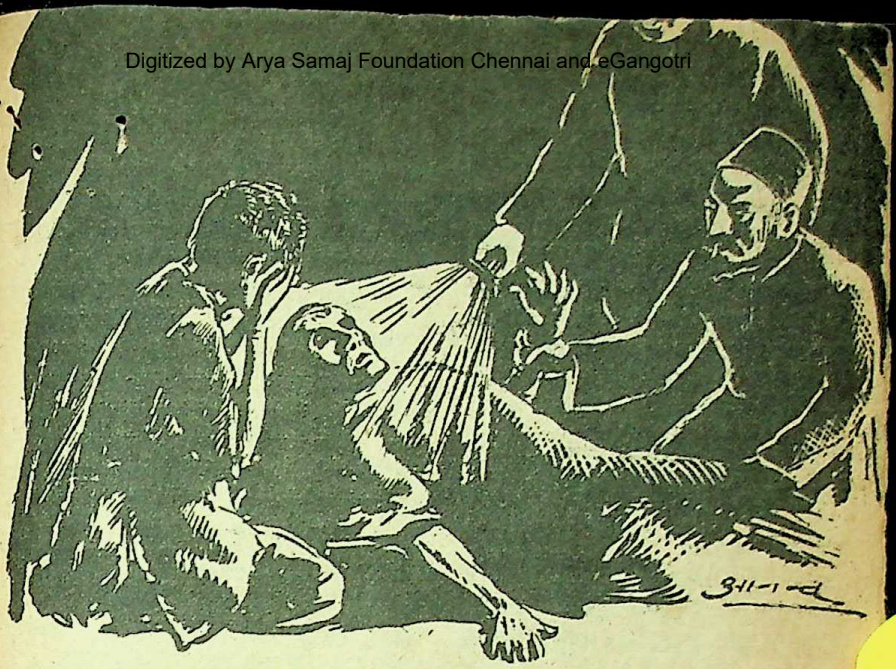

टार्च के प्रकाश से झोंपड़ी में उजाला हो गया और नजीर मियां ने देखा कि...

कफन की क्या जरूरत थी?" पहलवान ने लापरवाही से कहा.

"अस्पताल गया था. सवेरे डाक्टर को फुरसत नहीं थी," शबराती बोला.

"शाम को नहीं गया?" पहलवान ने पूछा.

"गया था, बाबू. दिन छिपे नंबर आया तो पर..." लड़के ने हिज्जे से करते हुए कहा. "डाक्टर कहते हैं कि मरीज को यहां ले आ, बिना देखे दवा नहीं मिल सकती."

"ठीक तो कहा उन्होंने," खद्दरधारी महाशय बोले. "घर क्यों नहीं बुला लिया?"

"बाबू," लड़के ने ठंडी सांस ली. "घर पर दिखाने की फीस पड़ती है. मेरी मां..."

"अबे, तो अस्पताल ले जाता," समाजसेवी ने झुंझला कर कहा. "हर ऐरेगैरे के घर डाक्टर थोड़े ही आ सकता है."

"ठीक कहते हैं, नेताजी. इस ने जेल कहां काटी है!" एक आवाज आई.

"तो सरकार कहांकहां एंबुलेंस भिजवा दे? देश क्या स्वतंत्र हुआ, दिमाग खराब हो गया सब का," समाजसेवी बड़बड़ाए.

"लेक्चर बंद कीजिए," पहलवान ने टोकते हुए कहा. "चल, दिखा, कहां है तेरी मां."

लड़के की बांह पहलवान ने अपने हाथ में ले ली. जो भीड़ अब तक खामोश खड़ी थी, उस में जिंदगी जैसी हरकत शुरू हो गई. तमाशबीनों को अक्लमंदी छांटने का मौका मिल गया. जिसे देखो वही कुछ न कुछ अंदाज भिड़ाए जा रहा था. कुछ खामोशी से मुंह लटकाए चल रहे थे, कुछ आगे निकल जाने के लिए उतावले थे. राहगीर और दुकानदारों की शंकाएं जितनी मिटतीं, उस से कहीं ज्यादा पैदा हो जातीं.

"यह लो, शामीना साहब का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कते हुए कहा. "असलियत अभी मालूम हुई जाती है."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीड़ की धक्कापेल में कोलाहल स्वाभाविक था, यद्यपि यहां आतेआते बहुत से तमाशबीन कम हो गए थे.

इस अहाते में पीर साहब का एक मजार है, जहां जुमेरात के दिन बड़ा शगल रहता है. शहर के रईस और नवाबों से ले कर मामूली औकात के हजारों मुरीद अपनीअपनी साधना के दीप जलाते हैं. पीर के मजार पर घटिया, बढ़िया, सूती, ऊनी और रेशमी चादरें पड़ती हैं. मनौतियां मनाई जाती हैं और खैरात भी होती है. इसी लिए सैकड़ों की तादाद में फकीर, भिखमंगे, अंधेलूले और अपाहिज यहां पड़े रहते हैं.

भीड़ को आते देख अहाते के लोग —स्त्रियां, पुरुष और बच्चे—भयातुर हो गए. सब के सब घबराए से रास्ता

बवासीर
की पीड़ा
और जलन से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिए
हडेन्सा
मरहम
इस्तेमाल कीजिए !

OBM: 2670 HIN

"कहां है तेरी मां?" पहलवान ने आतेहार के लहजे में सवाल किया.

शबराती ने एक जर्जर से झोंपड़े की ओर संकेत किया. झोंपड़ा क्या, एक पुरानाधुराना सा टूटा छप्पर दीवार के सहारे टिका हुआ था. झोंपड़े तक पहुंचते ही पहलवान और उस के साथसाथ सारी भीड़ रुक गई.

"मेरी मां अंदर है," लड़के ने कहा. "देख लीजिए."

लोगों की उत्सुकता फिर भी शांत नहीं हुई.

"चिराग नहीं जला?" पहलवान ने लड़के की बांह छोड़ते हुए ऊंचे स्वर में कहा, "टार्च है किसी के पास?"

एक साथ बहुत सी टार्चों की रोशनी ने उस टूटे हुए झोंपड़े पर भी आलीशान कोठियों की चकाधौंध पैदा कर दी. अंधेरा दूर हो गया.

लड़के के पीछेपीछे पहलवान, इमाम साहब और कई लोग अंदर घुस गए.

"अम्मीं!" लड़के ने बुढ़िया के माथे पर हाथ फेरा. "अम्मी!"

अम्मी के प्राणपखेरू उड़ चुके थे. हाथपांव ढीले, पेट पीठ से सटा हुआ शरीर विवस्त्र. कमर पर टाट का एक फटा सा टुकड़ा ही शेष था.

"यह तो मर गई," इमाम साहब ने नब्ज छोड़ते हुए कहा. लड़का फूटफूट कर रोने लगा.

नजीर मियां उदासी से मुंह लटकाए बाहर आए. "अस्पताल जाने के लिए जिस्म पर कपड़ा भी तो चाहिए." भीड़ पर दृष्टि डालते हुए नजीर मियां ने सक्रोध कहा, "कहां गए नेताजी?"

"बुढ़िया को...भूख और...सर्दी से...निजात मिल गई," पहलवान ने भर्राए स्वर में रुकरुक कर कहा.

"मुरदे का कफन," इमाम साहब ने ठंडी सांस ली, "मुरदे के काम आ गया."

मजमे में सन्नाटा छा गया और झोंपड़े के भीतर सिसकियां सुनाई देने लगीं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ कर हर्ष हुआ कि कर्नाटक राज्य के बहुत से लोग अपना नाम बदल रहे हैं और नामों के साथ जुड़े जातिसूचक शब्द (पई, रेड्डी, राव आदि) हटा रहे हैं. इस कार्य के लिए कर्नाटक के लोगों की प्रशंसा की जानी चाहिए. 'सरिता' ने इस समाचार का प्रकाशन एवं प्रचार कर सराहनीय कार्य किया है.

नाम के साथ जातिसूचक शब्द लिखने की परंपरा भारतीय नहीं है. राम, कृष्ण, अर्जुन, गौतम, अशोक, अकबर तथा शाहजहां आदि के नाम के साथ ऐसा शब्द नहीं लगा था. संभवतः अंगरेजी गुलामी के दौरान इस प्रथा का चलन हुआ और अब यह प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है.

व्यक्ति के विकास, राष्ट्रहित एवं आदर्श सामाजिक रचना के लिए इस प्रवृत्ति का विरोध होना चाहिए. मैं ने अपने गांव में लड़कों एवं लड़कियों के सुरुचिपूर्ण नामों की सूची घरघर टंगवा दी है और लोग अपने बच्चों के नाम इसी सूची में से रखने लगे हैं. किंतु व्यक्तिगत कार्यक्षेत्र सीमित ही रहता है. मेरा सुझाव है कि आप 'सरिता' का एक 'नाम' विशेषांक निकालें. उस अंक में नाम बदलने तथा जातीय लेबल हटाने व कानूनी काररवाई की जानकारी भी दें. सुलझे विचारों के अनेक लोग अपना नाम बदल कर जातीय पुछल्ला हटाना चाहेंगे. हमारा विश्वास है कि 'सरिता' का यह विशेषांक जातीयता की बढ़ती प्रवृत्ति पर करारी चोट करेगा.

—डाक्टर सोहनलाल सेठ, रांची

✦

अप्रैल (द्वितीय) में प्रकाशित 'वह भी किसी की बेटी है' (कहानी : लीला रूपायन) बहुत पसंद आई. पुरानी और रूढ़िवादी विचारधारा अब भी हर घर में व्याप्त है, जिस का अंत कई सदियों और कई पीढ़ियों के बीत जाने के बाद ही संभव है. ऐसी ही कहानी मेरे घर से संबंध रखती है. मेरी पत्नी के साथ ऐसा ही व्यवहार होता है.

—देवेंद्रकुमार मोहला, मेरठ कैंट

✦

मार्च (द्वितीय) में 'सरित प्रवाह' के अंतर्गत हिंद महासागर में अमरीका द्वारा डिएगो गार्सिया में सैनिक अड्डा बनाने के संबंध में आप ने लिखा है कि भारत के लिए यह खेद की बात हो सकती है, चिंता की नहीं. शायद आप यह लिखते समय भूल गए कि 1971 के भारत-पाक युद्ध में भारत ने निरंतर सफलताएं प्राप्त करने के बावजूद युद्धविराम की घोषणा केवल इसलिए की कि अमरीका का सातवां बेड़ा हिंद महासागर में आ गया था. सातवें बेड़े को आने में काफी समय लगा और भारत ने उस

समय तक काफी सफलता प्राप्त कर ली थी. अगर यह बेड़ा उस समय डिएगो गार्सिया में होता तो शायद भारत इस युद्ध में थोड़ी भी सफलता प्राप्त न कर पाता.

—जोगेश्वरकुमार, फिरोजपुर छावनी

✦

मार्च (द्वितीय) में प्रकाशित 'मृत्युभोज' (कहानी : प्रेमचंद्र जैन) आज के समाज के लिए प्रेरणादायक है. भूपेंद्र ने मृत्युभोज न दे कर जो अस्पताल बनवाया, वह न जाने कितने लोगों को जीवनदान देगा जब कि मृत्युभोज से सिर्फ कामचोर, निखट्टू ब्राह्मणों को प्रोत्साहन मिलता.

—श्यामबिहारी अग्रवाल, नई दिल्ली

✦

मार्च (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'विदेशी फिल्मों से नकल' (लेख : मनमोहन वशिष्ठ) पढ़ा. फिल्म जगत के संबंध में आप के गिनेचुने लेखकों के विचार प्रायः संकीर्णता की परिधि में रहते हैं.

यह सत्य है कि आज फिल्म जगत में अनेक खामियां हैं जिन की आलोचना होनी ही चाहिए. किंतु जिस वातावरण में कुछ गिनेचुने निर्माता छोटे बजट वाली फिल्में प्रस्तुत कर रहे हैं और विदेशों की अच्छी बातों को आधार बना कर फिल्में प्रस्तुत कर रहे हैं, वहां उन की आलोचना करना सर्वथा अनुचित है. आज के प्रख्यात निर्देशकद्वय हृषिकेश और गुलजार ने अपनी फिल्मों में मनोरंजन प्रस्तुत किया है. भारत में बनी आज की 90 प्रतिशत फिल्मों में कैबरे का प्रदर्शन अवश्य होता है जब कि सामाजिक जीवन में कैबरे दोचार बड़े महानगरों में ही होता है. इस मुद्दे को ले कर यदि फिल्म निर्माता पर छींटाकशी की जाए तो ठीक है. किंतु किसी सुंदर एवं स्वस्थ कथानक का भारतीयकरण कर के उसे जनसाधारण के समक्ष प्रस्तुत करने के कार्य की खिल्ली उड़ाना शोभा नहीं देता है.

अच्छाई को ले लेना तो हर समझदार व्यक्ति का कर्तव्य है. हां, उस पर 'मौलिक' का लेबल चिपकाना अपनेआप में गलत बात है.

—प्रफुल्लकुमार त्रिपाठी, गोरखपुर

✦

मार्च (प्रथम) के 'सरित प्रवाह' में गुजरात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आधारहीन जान पड़ी. राजनीतिबाजों को समय के अनुसार फूल और पत्थर दोनों ही सहने पड़ते हैं. आज उन्हें पत्थर सहने पड़ रहे हैं तो कल उन पर फूल भी बरसाए जा सकते हैं. वस्तुतः यह विरोध व समर्थन ही प्रजातंत्र की जान है. दूसरी ओर जनता द्वारा सैनिकों के स्वागत ने तानाशाही को आमंत्रण नहीं दिया है, बल्कि उन के आपसी संबंधों में एक असाधारण मधुरता ला दी है.

धारावाहिक रूप से प्रकाशित 'बंगला देश की तसवीर' (रिपोर्ताज : बसंत चटर्जी) बहुत पसंद आया. मौलाना भाषानी की भांति बंगला देश की अन्य हस्तियों से भी हमारा गहरा परिचय करवा दें तो यह हमारे लिए बहुत ही लाभदायक होगा.

—रमेश तोसनीवाल, राधानगर

✧

अप्रैल (द्वितीय) में कागज की भारी कमी के कारण कम प्रतियां छपने की सूचना दी गई है लेकिन 146 में से 40 से अधिक पृष्ठ विज्ञापनों से भरे हुए हैं.

यदि इन की संख्या कम (या समाप्त) कर दी जाए तो समस्या कुछ हद तक सुलझ सकती है.

—राजन बजाज, नई दिल्ली

● इन्हीं विज्ञापनों के कारण ही सरिता की यदि ये विज्ञापन निकाल दिए जाएं तो एक प्रति का मूल्य कम से कम पांच रुपए होगा.

सरिता के अंकों और उस जितनी पाठ्य सामग्री वाली साधारण पुस्तक का मूल्य आजकल सातआठ रुपए से कम नहीं होता.

—संपादक

✦

मार्च (प्रथम) के 'सरित प्रवाह' में प्रकाशित गुजरात की स्थिति पर आप के विचार प्रशंसनीय हैं.

गुजरात की स्थिति पर गहराई से सोचने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि आज हमारे देश में कोई भी सरकार नाजायज रूप से शक्ति का प्रयोग कर के जनता को दबा कर नहीं रख पाएगी. हमारे कथित समाजवादी नेता, अगर कभी रूस जैसी शासन व्यवस्था बनाने का स्वप्न भी देखें, तो उन्हें पहले गुजरात की इन घटनाओं पर गहराई से विचार करना होगा. गुजरात जैसी शांतिप्रिय जनता को भी पुलिस, केंद्रीय रिजर्व पुलिस व अंत में फौज भी किसी रूप से नहीं दबा सकी. सब प्रकार के अत्याचार के बावजूद मंत्री मंडल के इस्तीफे की मांग से ले कर विधान सभा भंग करने की मांग तक का आंदोलन सुचारु रूप से चलता रहा.

—केशरीचंद पारख, लिलुआ

✦

कुछ लोगों से सुना भर था कि 'सरिता' धार्मिक ग्रंथों का उपहास उड़ाती है. इसी जिज्ञासावश मैं ने इसे पढ़ना प्रारंभ किया. बात ही कुछ अलग निकली. जो बात वैज्ञानिक आधार पर कुछ खरी नहीं उतरती, हमारा बुद्धिजीवी समाज उसे कैसे मान सकता है? हम ने इतना अंधानुकरण किया है कि पाश्चात्य देशों के सामने हम उपहास के पात्र बन कर रह गए हैं. हम ने समाज में इतनी कुरीतियां भर रखी हैं कि हमारे विकास के मार्ग अवरुद्ध हो गए हैं. हम अपने धर्मग्रंथों का स्वार्थवश उलटा अर्थ निकाल कर समाज को ठगते रहे हैं. 'सरिता' अंधानुकरण और पौराणिक धर्मग्रंथों की उन भ्रांतियों पर प्रहार कर रही है जो हमारे समाज में कुरीतियों को जन्म दे कर आर्य ग्रंथों को बदनाम करने पर तुली हैं.

—देवीशंकर शर्मा, पाढ़म (मैनपुरी)

✦

कहानी संबंधी पत्रिकाओं में मुझे सरिता सब से अधिक पसंद है. इस का कारण यह है कि इस की कहानियां हर पाठक के लिए कोई न कोई संदेश दे जाती हैं. सभी कहानियां मुझे बहुत पसंद आती हैं. किसी एक की चर्चा क्या करूं?

—रेखा, चंदौसी ●

सरिता के लेखक

उर्मिला मिश्र

इस अंक के पृष्ठ 22 पर प्रकाशित लेख 'पुलिस और जनता' की लेखिका 39 वर्षीया उर्मिला मिश्र, बी. ए., उत्तर प्रदेश के एक पुलिस अधिकारी की पत्नी व तीन बच्चों की मां हैं. लेखन में बचपन से ही रुचि रही है. अब तक लगभग तीन सौ रचनाएं हिंदी की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं.

संगीत, बांसुरी वादन तथा रायफल शूटिंग में भी इन की रुचि है. जिला स्तर की प्रतियोगिताओं में कई बार प्रथम पुरस्कार भी प्राप्त कर चुकी हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

18 वर्षीया, माहेश्वरी, निस्संतान, विधवा, सुंदर, स्वस्थ, गृहकार्य में दक्ष, मैट्रिकुलेट कन्या के लिए सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2059, सरिता, नई दिल्ली-55.

19 वर्षीया, दिगंबर जैन, सुंदर, सुशील, बाल विधवा हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2179, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीया, श्रीवास्तव, एम. ए., बी. एड., कन्या के लिए योग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2297, सरिता, नई दिल्ली-55.

33 वर्षीय, गौड़ ब्राह्मण, एम. ए., फर्मों के मालिक, मासिक आय 2000 रुपए वाले उत्तर प्रदेशीय, कद 1.73 मीटर, सुंदर, अविवाहित युवक को स्वतंत्र तथा आधुनिक विचारशीला जीवनसंगिनी चाहिए. जाति, शिक्षा, दहेज बंधन नहीं. केवल सुंदरता विचारणीय. प्रथम बार में ही आवश्यक पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 2253, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, बी. ए. द्वितीय वर्ष में अध्ययन-रत, सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्य में निपुण, निस्संतान बाल विधवा, कद 5', हेतु राजपूत अथवा खत्री जीवनसाथी चाहिए. लिखें : वि. नं. 2303, सरिता, नई दिल्ली-55.

30 वर्षीया, शिवहरे, वैद्यविशारद, सुंदर, स्वस्थ, गौरवर्ण, कद 4'-10", प्रतिष्ठित कन्या के लिए सुयोग्य, बारोजगार वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 2304, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीया, अग्रवाल, गर्ग गोत्र (मंगलीक), कद 4'-7", एम. ए. (फाइनल), गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु वर चाहिए. सविवरण पत्र-व्यवहार करें : वि. नं. 2305, सरिता, नई दिल्ली-55.

21½ वर्षीया, गौड़ ब्राह्मण, वशिष्ठ, एम. ए. कन्या हेतु उपयुक्त वर की तलाश है. विवाह साधारण. पूर्ण विववरण सहित लिखें : वि. नं. 2306, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीया, पोरवाल, बी. ए., सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष एवं संभ्रांत परिवार की, कद 4'-11", निस्संतान विधवा कन्या के लिए सजातीय वर की आवश्यकता है. लिखें : वि. नं. 2307, सरिता, नई दिल्ली-55.

19 वर्षीया, अग्रवाल, सिंघल, खूबसूरत, गृहकार्य में दक्ष, एम. ए. प्रीवियस, प्रतिष्ठित परिवार की कन्या हेतु सुयोग्य, दहेज विरोधी वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2308, सरिता, नई दिल्ली-55.

30 वर्षीया, (तेलगू भाषी बल्जी परिवार, मध्य प्रदेश निवासी) एम. ए., कद 5'-3", शासकीय सेवारत, गृहकार्य, चित्रकला में निपुण, सुंदर कन्या के लिए गजटेड अफसर, इंजीनियर लेक्चरर या योग्य सजातीय वर चाहिए. दहेज नहीं. शादी विधि पूर्ण. लिखें : वि. नं. 2309, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, तायल गोत्रीय, एम. ए., बी. एड., कद 5'-1", कन्या के लिए सुंदर एवं गौरव पूर्ण वर की तलाश है. डाक्टर एवं इंजीनियर को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 2310, सरिता, नई दिल्ली-55.

20 वर्षीया, गौड़ ब्राह्मण, एम. ए. (हिंदी), सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्य में निपुण, कद 5'-4", कन्या हेतु कार्यरत वर चाहिए. उपजातीय बंधन नहीं. शादी उत्तम. लिखें : वि. नं. 2311, सरिता, नई दिल्ली-55.

19 वर्षीया, खत्री कन्या के लिए सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. अच्छी शादी. पत्र-व्यवहार करें : वि. नं. 2312, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, ब्राह्मण, स्वस्थ, सुंदर, रंग गेहुंआं, कद 5'-4", एम. ए., शिक्षिका कन्या के लिए समान शिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. विवाह साधारण. उत्तर प्रदेशीय ब्राह्मण (शुद्ध) शीघ्र लिखें : वि. नं. 2313, सरिता, नई दिल्ली-55.

23 वर्षीया, अग्रवाल गोयल, कद 5', रंग गेहुंआं, सुंदर, गृहकार्य में निपुण, साइंस ग्रेजुएट, लखनऊ विश्वविद्यालय में कानून छात्रा कन्या हेतु वर चाहिए. शादी अच्छी. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 2314, सरिता, नई दिल्ली-55.

20-21 वर्षीया, माथुर, बी. ए., सुंदर, स्वस्थ, लंबी, मधुर स्वभाव वाली कन्या के लिए सुयोग्य वर चाहिए. विवाह शीघ्र. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 2315, सरिता, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

24 वर्षीया, अग्रवाल, एम. ए., [illegible], सुंदर, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2316, सरिता, नई दिल्ली-55.

18 वर्षीया, बंगाली ब्राह्मण, सामान्य शिक्षित, गोरी, इकहरा बदन, गृहकार्य में निपुण, अत्यंत गरीब कन्या हेतु स्वयं उपार्जनशील, सादगी से विवाह पसंद, ब्राह्मण (हिंदी या बंगला भाषी) वर चाहिए. दहेज या उपहार के इच्छुक पत्र न लिखें : वि. नं. 2317, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीया, सक्सेना, एम. ए., सुंदर, निस्संतान विधवा हेतु योग्य वर चाहिए. निस्संतान विधुर भी पत्रव्यवहार करें : वि. नं. 2318, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीया, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, एम. ए., बी. एड., उत्तर प्रदेशीय राजकीय सेवारत कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 2319, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीया, सिसोदिया राजपूत, एम. ए. (अंगरेजी), कद 5'-4", सुंदर, सुशील, उच्च खानदान की कन्या के लिए, लंबा, सुंदर, पढ़ा-लिखा, कमाऊ वर चाहिए. इंजीनियर व डाक्टर को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 2320, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, कान्यकुब्ज (मंगली), गौरवर्ण, साहित्यरत्न, एम. ए. (फाइनल), उत्तर प्रदेशीय, कन्या के लिए सजातीय वर चाहिए. डाक्टर, इंजीनियर या गजेटेड अधिकारी को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 2321, सरिता, नई दिल्ली-55.

29 वर्षीय, राजपूत स्नातकोत्तर, वेतन 650 रुपए, हेतु कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 2322, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीया, गौड़ ब्राह्मण, एम. ए. हिंदी, तथा 30 वर्षीया, अग्रवाल, एम. ए., बी. एड., शिक्षक, सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्य में दक्ष कन्याओं के लिए सजातीय योग्य वरों की आवश्यकता है. लिखें : वि. नं. 2323, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीय, श्रीवास्तव, संपादक, निजी प्रेस, सांवला, स्वस्थ, सुंदर, लंबा नवयुवक हेतु सुंदर, गृहकार्य में दक्ष कन्या चाहिए. दहेज नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें : वि. नं. 2324, सरिता, नई दिल्ली-55.

30 वर्षीय, क्षत्रिय ठाकुर, सरकारी सेवा में सुपरवाइजर, मासिक आय 200 रुपए, अविवाहित युवक के लिए, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष लड़की चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2325, सरिता, नई दिल्ली-55.

[illegible], पद 5-11, कंट्रोल फोर्स में इंस्पेक्टर, 650 रुपए मासिक वेतन, कावेरी तलाकशुदा युवक हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए. जाति व दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 23[illegible], सरिता, नई दिल्ली-55.

संपन्न माहेश्वरी परिवार के शिक्षित 1500 रुपए मसिक पा रहे नवयुवक के लिए कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 2327, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, माहेश्वरी, प्रैक्टीसिंग चार्टर्ड एकाउंटेंट, 174 सें. मी., हेतु सुंदर, शिक्षित, संभ्रांत परिवार की कन्या चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2328, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, एल. एल. बी., केंद्रीय सेवा में कार्यरत युवक के लिए सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 2329, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, माहेश्वरी (राठी), जयपुर निवासी, निजी व्यवसाय में संलग्न, स्वस्थ व सुंदर युवक के लिए सजातीय, सुंदर कन्या चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 2330, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, तलाकशुदा, सरकारी संस्थान में 550 रुपए वेतन पाने वाले युवक के लिए मुसलमान तवायफ की पाकदामन, सुंदर, पढ़ी-लिखी कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 2331, सरिता, नई दिल्ली-55.

32 वर्षीय, मैथिल ब्राह्मण, एम. एससी., पीएच. डी. (यू. एस. ए.), प्राध्यापक, आय 1100 रुपए मासिक, अच्छी पारिवारिक पृष्ठभूमि वाले युवक के लिए पोस्टग्रेजुएट अथवा मेडिकल डिग्री प्राप्त, सेवारत, सुशील, सुंदर, कन्या की आवश्यकता है. उन की 29 वर्षीया, एम. ए. डिप-इन-एड., बहन के लिए सर्वथा सुयोग्य तथा स्वावलंबी वर भी चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 2332, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीय, इंटर व उच्चकुलीन, सरकारी सेवारत, मासिक आय 300 रुपए पाने वाले युवक के लिए सुशील वधू चाहिए. जाति व दहेज बंधन नहीं. पिता पी. डब्ल्यू. डी. में ओवरसीयर. लिखें : वि. नं. 2333, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीय, मित्तल, बी. आर्कीटेक्ट, स्मार्ट, खूबसूरत, कद 5'-7", अमरीका में बसे युवक के लिए, जो विवाह करने के लिए, जुलाई 1974 में भारत आ रहा है, डाक्टर/आर्कीटेक्ट, सुयोग्य, स्मार्ट, अति सुंदर, जीवनसंगिनी चाहिए.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति और [illegible] ही मुख्य आधार. लिखें : वि. नं. 2335, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, वैश्य, गर्ग गोत्र, एम. बी., बी. एस., उत्तर प्रदेश निवासी, 1000 रुपए मासिक वेतन, गजटेड अफसर हेतु सुंदर तथा इकहरे बदन की वधू चाहिए. एम. एससी. को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 2334, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीय, राजपूत, दिल्ली विश्वविद्यालय में कार्यरत, मासिक आय 350 रुपए वाले युवक हेतु सजातीय, सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. दहेज नहीं. लिखें : वि. नं. 2336, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीय, सनाढ्य, (सरकारी) ग्रे आयरन फाउंड्री में सेवारत, गौरवर्ण, सुंदर युवक हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 2337, सरिता, नई दिल्ली-55.

युवा लेखक एवं प्राध्यापक (इंटर कालिज) के लिए उच्च शिक्षित लड़की चाहिए. नाक-नक्श आकर्षक. दहेज, प्रदेश एवं जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2338, सरिता, नई दिल्ली-55.

32 वर्षीय, मारवाड़ी अग्रवाल, शिक्षित, स्वस्थ, कुंआरा, मासिक वेतन 3500 रुपए, आकर्षक युवक हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित, कुंआरी कन्या चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2339, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीय, अग्रवाल, वैश्य, ग्रेजुएट, सुंदर, कद 5'-6", मेरठ ज्वेलरी शाप, आय चार अंकों में, युवक के लिए, सुंदर, सुयोग्य वधू चाहिए. दहेज, उपजाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2340, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीय, कुलीन, कुर्मी, क्षत्रिय, आर्मी में कैप्टेन, पिता केंद्रीय सरकार में प्रथम श्रेणी अधिकारी, कद 5'-6", युवक के लिए, सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्य में निपुण कन्या चाहिए. जाति बंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित पत्र-व्यवहार करें : वि. नं. 2341, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, राजपूत, केंद्रीय सेवारत, युवक हेतु योग्य, कुलीन कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 2342, सरिता, नई दिल्ली-55.

कान्यकुब्ज, इंजीनियर, व्यापार से 3000 रुपए आय, कद 5'-5", हेतु सुशील, ब्राह्मण कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 2343, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, गौड़ ब्राह्मण, बी. एससी.,

सरिता

1972 के छमाही सेट

अब केवल 10 रुपए में

हर सेट में लगभग 80 कहानियां, 150 लेख, 40 कविताएं, धारावाही उपन्यास तथा ढेरों अन्य रोचकसामग्री, जो आज भी आप का मनोरंजन तो करेगी ही, साथसाथ आप का ज्ञानवर्धन भी करेगी. यदि इन अंकों को आप ने अभी तक नहीं पढ़ा है तो आज हीं मनीआर्डर भेजिए.

मनीआर्डर कूपन पर यह लिखें : "प्रथम/द्वितीय, 1972 के सरिता के सेट के लिए धन."

दिल्ली प्रकाशन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

मुक्ता

1972 के छमाही सेट

केवल 10 रुपए में

83 कहानियां, 108 लेख, 39 कविताएं, एक धारावाही उपन्यास तथा ढेरों अन्य रोचक सामग्री.

जनवरी से जून और जुलाई से दिसंबर तक मुक्ता के बारह-बारह अंकों के सेट प्राप्य हैं. प्रत्येक सेट का मूल्य 10 रु. मात्र है. (साधारण डाक खर्च सहित).

आज ही मनीआर्डर द्वारा धन भेजिए.

मनीआर्डर कूपन पर यह लिखें : "प्रथम/द्वितीय, 1972 के मुक्ता के सेट के लिए धन."

दिल्ली प्रकाशन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लिखें : वि. नं. 2344, सरिता, नई दिल्ली-55.

43 वर्षीय, संपन्न अग्रवाल व्यवसायी विधुर लेकिन स्वर्गीय पत्नी से कोई छोटी संतान पालनीय नहीं, को 30 से 40 वर्ष की आयु में उपयुक्त जीवनसंगिनी चाहिए. जाति बंधन नहीं. निस्संतान विधवा या परित्यक्ता भी स्वीकार्य. सुख और सुरक्षा की पूर्ण तसल्ली. पूर्ण विवरण के साथ लिखें : वि. नं. 2345, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीय, पंजाबी सिक्ख, सुशिक्षित, उद्योगपति, कद 5'-3", युवक के लिए, सुंदर, सुशिक्षित, मृदुभाषिणी वधू चाहिए. दहेज, जाति, राज्य बंधन नहीं. गैर सिक्ख परिवार को प्राथमिकता दी जाएगी. लिखें : वि. नं. 2346, सरिता, नई दिल्ली-55.

30 वर्षीय, उत्तर प्रदेश के जाट, संभ्रांत, संपन्न, एयर फोर्स में सर्विस से मासिक आय 500 रुपए, तीन संतानयुक्त विधुर के लिए, सुयोग्य, सुशिक्षित एवं संभ्रांत परिवार की निस्संतान विधवा, संतोनोत्पत्ति में असमर्थ अथवा परित्यक्ता की आवश्यकता है. दहेज, जाति एवं प्रांत बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2347, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, इंजीनियरिंग स्नातक, कद 5'-3½", खेती, निजी कारखाने से चार अंकों में आमदनी वाले युवक के लिए कन्या चाहिए. मेडिको को प्राथमिकता. जाति, धर्म, दहेज का कोई बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2348, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, श्रीवास्तव, केंद्रीय कर्मचारी, आय 500 रुपए, के लिए कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 2349, सरिता, नई दिल्ली-55.

वैवाहिक व गोद विज्ञापन उत्तरदाताओं के लिए सूचना

वैवाहिक विज्ञापनों का उत्तर देते हुए यदि आप निम्न बातों का ध्यान रखें तो आप को, हमें और विज्ञापनदाताओं को काफी सुविधा रहेगी :

1. लिफाफे पर 'विज्ञापन विभाग,' 'संपादक सरिता' आदि न लिखें. केवल 'वि. नं.—सरिता, नई दिल्ली-55,' पते के रूप में लिख देने पर पत्र हम तक पहुंच जाएंगे.

2. यदि आप कई विज्ञापनदाताओं से पत्रव्यवहार करना चाहते हैं तो सब विज्ञापनदाताओं के विज्ञापन नं. लिखें लिफाफे एक बड़े लिफाफे में रख कर 'वैवाहिक विज्ञापन विभाग, सरिता, नई दिल्ली-55' के पते पर भेज दीजिए.

अधिकारी, 1700 रुपए मासिक वेतन, के लिए 25 वर्ष से ऊपर की शिक्षित कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 2362, सरिता, नई दिल्ली-55.

18 वर्षीया, भूमिहार ब्राह्मण, सुंदर, गौर-वर्ण, गृहकार्य में दक्ष, आई. ए. द्वितीय वर्ष में पढ़ रही तथा 16 वर्षीया, कानवेंट स्कूल के 8 वें स्टैंडर्ड में पढ़ रही कन्याओं हेतु वरों की आवश्यकता है. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2363, सरिता, नई दिल्ली-55.

29 वर्षीया, अग्रवाल, एम. ए., बी. टी., दिल्ली निगम में अध्यापिका, कद 5', सुंदर, सुशील व गृहकार्य में दक्ष, संपन्न परिवार की कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 2364, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, श्रीवास्तव, इंटरमीडिएट, सरकारी संस्थान में सेवारत, मासिक आय 600 रुपए, स्वस्थ एवं संपन्न युवक हेतु अति सुंदर, साफ रंग, सुशील, सुशिक्षित, शाकाहारी वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण सहित शीघ्र लिखें : वि. नं. 2365, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीय, भारद्वाज गोत्र, कान्यकुब्ज, एम. ए. (अंगरेजी), केंद्रीय सेवारत, मासिक आय 550 रुपए वाले युवक हेतु, सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्य कुशल वधू चाहिए. घर में 24 बीघा काश्त है. लिखें : वि. नं. 2366, सरिता, नई दिल्ली-55.

30 वर्षीय, ब्राह्मण, इलेक्ट्रिक तथा माइनिंग डिप्लोमा होल्डर, 600 रुपए मासिक वेतन, कालिज तथा उड़ीसा सरकार द्वारा खेलकूद में पुरस्कृत (सम्मानित), हृष्टपुष्ट युवक के लिए सुशील एवं सुचरित्र, स्वस्थ जीवनसंगिनी चाहिए. पूर्वी उत्तर प्रदेशीय को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 2367, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीया, पंजाबी ब्राह्मण, निस्संतान, विधवा (शादी के डेढ़ वर्ष बाद), सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाली ग्रेजुएट युवती (स्थायी अध्यापिका, राजकीय कालिज) के लिए सजातीय उपयुक्त वर चाहिए. 30-35 वर्षीय, कुंआरे, तलाकशुदा या निस्संतान विधुर पत्राचार कर सकते हैं. सैनिक अधिकारियों तथा राजपत्रित अधिकारियों को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 2368, सरिता, नई दिल्ली-55.

गोद विज्ञापन

राजपूत घराने के एक मास के आयु वाले लड़के को गोद लेने के इच्छुक व्यक्तियों से पत्राचार आमंत्रित है. लिखें : वि. नं. 2369, सरिता, नई दिल्ली-55.

सरिता

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

411हिन्दी

~~Delhi Press Bhavan~~

Delhi Press Patra Prakashan

Delhi

59

2/84
147134
92

110464

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar